प्रकाशक
नागरीप्रचारिणी सभा
वाराणसी

प्रथम संस्करण

नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी
मूल्य

मुद्रक
सीमा प्रेस, ईश्वरगंगी, वाराणसी
फोन नं० ५२०६२

प्रकाशकीय

नागरीप्रचारिणी सभा ने अपनी जिन ग्रंथमालाओ द्वारा हिंदी को श्रीसंपन्न बनाने का प्रयत्न किया है उनमे नागरीप्रचारिणी ग्रंथमाला का विशिष्ट योगदान है। प्राचीन ग्रंथो के खोजकार्य का आरंभ होने पर खोज-विवरण के प्रकाशन के साथ ही हिंदी के विशेष लाभ की दृष्टि से सभा ने यह भी अनुभव किया कि खोज में प्राप्त चुने हुए ग्रंथों का प्रकाशन भी हो। उसने सवत् १९५७ वि० (सन् १९०० ई०) से इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए 'नागरीप्रचारिणी ग्रथमाला' का प्रकाशन आरम किया। उस समय इसकी पृष्ठसंख्या ६४ और मूल्य आठ आने स्थिर किए गए। वर्ष मे इसके चार अंको के प्रकाशन का भी निश्चय किया गया था। सवत् १९७६ तक इस ग्रथमाला के ६४ अक प्रकाशित हुए। इस समय तक इस ग्रंथमाला के सपादक क्रमश श्री राधाकृष्णदास (सवत् १९६१ तक), महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी (सवत् १९६५ तक), श्री माधवप्रसाद पाठक (सवत् १९६७ तक) और श्री श्यामसुंदरदास (संवत् १९७६ तक) थे। प्रातीय सरकार ने इस ग्रंथमाला की उपयोगिता के कारण ३०० रु० वार्षिक की सहायता पाँच वर्षों के लिये सवत् १९६१ मे देना स्वीकार किया। फलस्वरूप इसकी पृष्ठसख्या ८० कर दी गई पर मूल्य आठ आने ही रहने दिया गया। इस ग्रंथमाला मे पूरे ग्रंथो का प्रकाशन आरंभ हुआ। अलवर नरेश श्रीमंत महाराज सवाई जयसिंह ने इस ग्रंथमाला के लिए ६,००० रु० सभा को प्रदान किया, तब से यह ग्रंथमाला निरंतर प्रकाशित हो रही है और हिंदी के भाडार को संपन्न कर रही है।

इस ग्रंथमाला मे अब तक ८५ ग्रथ प्रकाशित हो चुके हैं। पृथ्वीराजरासो जैसा वृहद् ग्रंथ सभा ने इसी माला मे प्रकाशित किया। इसमे छपे अब निम्नाकित ग्रंथ ही ही प्राप्य हैं—

१. भक्तनामावली, २ हम्मीररासो, ३ भूषण ग्रथावली, ४ जायसी ग्रंथावली, ५ तुलसी ग्रंथावली, ६ कबीर ग्रथावली, ७ सूरसागर, ८ खुसरो की हिंदी कविता ९ प्रेमसागर, १० रानी केतकी की कहानी, ११ नासिकेतोपाख्यान, १२ कीर्तिलता, १३ हमीरहठ, १४ नददास ग्रंथावली, १५ रत्नाकर, १६ रीतिकालीन कवियो की प्रेमव्यंजना, १७ हिंदी टाइपराइटिंग, १८ हिंदी साहित्य का इतिहास, १९. घनानंद स्वच्छंद काव्यधारा, २० प्रतापनारायण ग्रंथावली, २१ तुलसीदास, २२ हिंदी मे मुक्तक काव्य का विकास, २३ रसरतन, २४ नाटक के तत्व मनोवैज्ञानिक अध्ययन, २५. खालिकबारी, २६. हस्तलिखित हिंदी पुस्तको का सक्षिप्त खोज विवरण (१९००–१९५५ ई०), २७ तोप और सुधानिधि, २८ द्विजदेव और उनका काव्य, २९ नाटक और यथार्थवाद,

३०. उग्र और उनका साहित्य, ३१ भोसला राजदरबार के हिंदी कवि, ३२. आचार्य शुक्ल के समीक्षासिद्धात, ३३ कृपाराम और उनका साहित्य, ३४ विलग्राम के मुसलमान हिंदी कवि, ३५ चितामणि, ३६ लक्षदासकृत कृष्णरससागर, ३७. विडंवना, ३८. वेदात दर्शन, ३९ हिंदी और मराठी के ऐतिहासिक नाटक, ४० हिंदी और फारसी काव्य का तुलनात्मक अध्ययन, ४१ फ्रेडरिक पिंकाट, ४२ हित चौरासी और उसकी प्रेमदास कृत व्रजभाषा टीका, ४३ मधुस्रोत, ४४ भारतेंदु की खडी वोली का भाषाविश्लेषण, ४५ क्रोचे का कलादर्शन, ४६. आधुनिक हिंदी काव्य पर अरविंद दर्शन का प्रभाव, ४७. घनानंद का काव्यशिल्प, ४८. वीसवी शताव्दी : दो दशक, तथा ४९ चरितचर्चा जीवनदर्शन। प्रस्तुत कृति इस ग्रंथमाला मे प्रकाशित होनेवाला ८६वाँ पुष्प है।

कविवर केशवदास हिंदी के अत्यत प्रौढ, कुशल एवं पडित कवि प्रसिद्ध है। हिंदी मे काव्यागो के वर्णन-विवेचन की परंपरा का प्रवर्तन एक प्रकार से उन्ही के द्वारा हुआ। सस्कृत साहित्य के वे अच्छे पंडित थे। उनके परिवार के लोग संस्कृत के अच्छे जानकार थे। उक्ति प्रसिद्ध है—'भाषा भनै न जानही जिनके कुल के दास।' ऐसे महानुभाव ने हिंदी मे उच्चस्तरीय महाकाव्यो, काव्यागो और अन्यान्य विषयो के मौलिक ग्रंथों का प्रणयन किया, यह विशेष रूप से उल्लेखनीय हे। वे अपने क्लिष्ट और दुरूह प्रयोगो के लिये भी प्रसिद्ध हैं। पर वहुत-सी उनकी रचनाएँ अत्यत सरस एवं रमणीयार्थ-प्रतिपादक भी है। उनकी समस्त नौ रचनाओ मे प्रयुक्त शव्दो और पदो का यह कोश डा० विजयपाल सिंह जी ने अत्यंत अध्यवसाय के साथ, वड़ी लगन और निष्ठा के साथ प्रस्तुत किया है। कवि-विशेष की शव्द-सपत्ति और एक ही शव्द को एकाधिक अर्थो मे प्रयुक्त करने की उसकी क्षमता का विवेचन केशवकोशकार ने अत्यंत निपुणतापूर्वक किया है। हिंदी मे ऐसे कोशो की सख्या अधिक नही है। इस उत्कृष्ट कोश के प्रणयन पर इसके विद्वान् रचयिता को वधाई देते हुए मैं आशा करता हूँ कि हिंदी के विद्वज्जन इसका यथोचित समादर करेंगे और अपने सुझाव नागरीप्रचारिणी सभा को देंगे जिससे इसका दूसरा संस्करण और अधिक अच्छा एवं प्रामाणिक हो सके।

होली,
सं० २०३३ वि०

करुणापति त्रिपाठी
प्रकाशन-मंत्री
नागरीप्रचारिणी सभा, काशी।

भूमिका

किसी समय आचार्य केशव का काव्य उस बीहड वन की भाँति था जिसमे प्रवेश करने के लिये साहस और जीवट की आवश्यकता थी। उन्हे 'कठिन काव्य का प्रेत' कहा गया। उनके नाम पर 'कवि को देन न चहै बिदाई, पूछे केशव की कविताई' जैसे पद लोक मे प्रचलित हो गए। आचार्य रामचंद्र शुक्ल जैसे महारथी उस महावन मे जाने से हिचके, अन्यथा तुलसी, सूर, जायसी के बाद आशा यही थी कि वे केशव की काव्यश्री का प्रकाश करेंगे। लाला भगवानदीन ने वडे पौरुष के साथ केशव-काव्य-कान्तार के मनोरम प्रदेशो की यात्रा की और अपने अर्थावगाहन के वल पर पाठको के उक्त भ्रम का निवारण किया।

कहते हैं, एक बार आचार्य केशव से सम्राट् अकवर ने पूछा कि हिंदी का श्रेष्ठ कवि कौन है तो उन्होंने अपना नाम लिया। फिर प्रश्न हुआ, सूर और तुलसी का कौन सा स्थान है। आचार्य ने कहा—'वे भक्त है'। इस कथन मे किसी पूर्वग्रही आलोचक को आचार्य केशव की गर्वोक्ति की गंध मिल सकती है पर इससे जिस महत्वपूर्ण तथ्य की ओर सकेत है उसका भाव यही है कि उन कवियो के काव्य मे कलात्मकता कम है। जो हो, इन बातो ने आचार्य केशव के प्रति मेरे मन मे कुतूहल पैदा किया। विद्यार्थी जीवन से ही मैं उनके काव्य की जाँच-पडताल करने का सकल्प-विकल्प करता हुआ शक्ति बटोरने लगा। पी-एच० डी० शोध-कार्य का अवसर मिलते ही मेरी आकाक्षा को रास्ता मिल गया। 'केशव और उनका साहित्य' मेरा पी-एच० डी० का शोध-प्रवन्ध है। फिर विचार हुआ कि केशव-काव्य की सच्ची परख के लिए उनके आचार्यत्व से परिचित होना आवश्यक है। 'केशव और उनका साहित्य' तथा 'केशव का आचार्यत्व' नामक दो शोध-प्रवन्धो को प्रकाशित करने के उपरात मेरे मन मे यह कचोट रह गई कि केशव का कवि-पक्ष छूट गया है। श्रम से जो कार्य किया वह तो शोध-प्रवन्धो मे आ गया किन्तु सहज रूप मे कविता का पाठक बनकर मैंने जो अनुभव किया, उसे मैं अव तक व्यक्त न कर सका। रचनाओ के माध्यम से रचयिता की पहचान नही हो सकी। अत मैने केशव की रचनाओ का स्वतत्र रूप से विश्लेपण किया। समस्त रचनाओ मे कविता का सृजन करते समय कवि का अतर्मन कवि रूप मे जो अनुभव करता रहा है, उसका उद्घाटन करना कवि की काव्य-चेतना को स्पष्ट करना है। अत मैंने 'केशव की काव्यचेतना' नामक ग्रन्थ को प्रकाशित किया। 'केशव का आचार्यत्व' नामक डी० लिट्० का शोध-प्रबन्ध जटिल कार्य था। अभ्यास से जटिलता ऋजु हो जाती है। उसमे मन रमने लगता है, वस्तु रमणीय होकर सरस वन जाती है। यह उक्ति मेरे प्रयोग मे सत्य निकली। इसे मेरा विनम्र निवेदन समझा जाय। माना जाय कि कोमल रज्जु ने अपने हठवश पाषाण मे मार्ग प्रशस्त किया। इसमे हेतु बुद्धि का निरतर अभ्यास हो सकता है। जैसे ही मुझे शोध-निर्देशन करने का अवसर मिला, मैने केशव-काव्य के अन्य पक्षो पर कार्य कराना प्रारभ किया जिसके परिणामस्वरूप 'केशव की भाषा', 'केशव मे समाज, संस्कृति एव दर्शन', 'केशव-काव्य मे दार्शनिक शब्दावली' तथा 'केशव की शैली तात्विक अध्ययन' जैसे शोध-प्रबंध तैयार हुए। 'केशव सुधा' तथा 'केशवदास' नामक ग्रंथो का

संपादन किया। इसके साथ-साथ 'केशव कोश' की ममता मेरे मन मे पलती रही। प्रस्तुत ग्रथ उसी जिज्ञासा का एक स्कध है।

किसी एक कवि की सपूर्ण काव्य-सामग्री से शब्दो को चुनकर शब्दकोश बनाने की प्रवृत्ति का विकास हिंदी जगत् मे अभी शुरू हुआ है। जहाँ तक हमे पता है, इस प्रकार का सर्वप्रथम प्रयास सन् १६०६ मे 'मानस-कोश' के रूप मे हुआ था जिसे नागरीप्रचारिणी सभा के कतिपय सभासदो ने सभा के आज्ञानुसार सपादित किया था और जिसे इडियन प्रेस, प्रयाग ने प्रकाशित किया था। इसमे रामचरितमानस मे प्रयुक्त शब्दो के अर्थ मात्र दिए गए है, उनका सदर्भ नही है। इसी प्रकार का दूसरा प्रयत्न सन् १६२५ मे स्व० श्री रामदास गौड ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'श्री रामचरितमानस की भूमिका' के चौथे खंड मे 'मानस-शब्द-सरोवर' के नाम से किया था जो हिंदी पुस्तक एजेसी, कलकत्ता से प्रकाशित हुई थी। इसमे भी रामचरितमानस मे प्रयुक्त कठिन शब्दो के केवल अर्थ, विना संदर्भ के, दिए गए हैं। तदनतर १६४६ ई० मे सूरदास की कृतियो से शब्दो को लेकर श्री प्रेमनारायण टंडन ने 'ब्रजभाषा कोश' की रचना की। यह ग्रथ चार खडो मे प्रकाशित है। सन् १६४८ ई० मे लखनऊ से 'रामायण कोश' प्रकाशित हुआ। सन् १६५४ ई० मे प्रयाग से श्री हरिगोविंद तिवारी ने 'तुलसी शब्दसागर' तथा श्री सुधाकर पाडेय ने 'प्रसाद-काव्य-कोश' प्रकाशित किया। ऐसे ही एकाध और गभीर प्रयत्न हुए। इनके पश्चात् ऐतिहासिक क्रम से 'केशव कोश' का नाम आता है।

किसी भी जीवित और गतिशील भाषा की कोशरचना के लिये यह आवश्यक है कि जीवन और जगत् के विभिन्न क्षेत्रो से उस भाषा के प्रचलित शब्दो को सीधे लिया जाय तथा कवियो की रचनाओ से शब्द ग्रहण किए जायँ। होता यह है कि अनेक हिंदी कोशकार सस्कृत के पुराने कोशो को सामने रखकर हिंदी-कोश-लेखन का कार्य शुरू कर देते हैं। इस पद्धति का सबसे बडा दोष यह है कि ऐसे कोश मे भाषा के कुछ ऐसे शब्द आ जाते है जिनका प्रयोग इतिहास की सामग्री होता है। सस्कृत के 'गो' शब्द को लीजिए। गोशाला, गोवर, गोमूत्र, गोमय, गोरस, गोरज आदि पदो मे 'गो' शब्द सुरक्षित है पर प्रचलित हिंदी मे अकेले 'गो' शब्द का प्रयोग नही होता, साथ ही 'गो' शब्द के अनेक अर्थो मे से कुछ प्रचलित अर्थ ही हिंदी मे ग्रहण किए गए हैं। इसलिये सस्कृत कोश के आधार पर 'गो' शब्द के २५-३० अर्थो को हिंदी कोश मे स्थान देना उचित नही। इन दोषो से बचने का उपाय यही है कि गतिशील भाषा के विभिन्न व्यावहारिक क्षेत्रो से शब्दो का सीधा संग्रह किया जाए। मेरा विश्वास है कि प्रत्येक हिदी कवि की कृतियो के आधार पर बने कोशो का यदि किसी दिन समावेश होगा तो हिंदी की वास्तविक समृद्धि का कुछ ठीक आकलन हो सकेगा। तब हिंदी शब्द-कोश-लेखन सस्कृत-कोश का पिछलग्गू न होकर स्वत स्फूर्त होगा। वह दिन हिंदी के लिये कितना गौरवमय होगा, इसकी सहज कल्पना की जा सकती है। ऐसे प्रयासो की कमी का मुख्य कारण उसका अत्यंत श्रमसाध्य, व्ययसाध्य तथा समयसाध्य होना है। पर जैसे भी हो,

इससे इतर कोई अन्य रास्ता नही दिखाई देता। आवश्यकता इस बात की है कि अनेक परिश्रमी विद्वान् संचार, उद्योग, कृषि, रेडियो, यातायात, नाच, गान, शिक्षा, विज्ञान, कला, इंजीनियरी आदि अनेक क्षेत्रो से सीधा संबंध स्थापित कर जीवित प्रयोगो के संग्रह का महाव्रत लें, तभी हिंदी-कोश-रचना का कार्य अपनी चरम परिणति को प्राप्त कर सकता है।

अंग्रेजी कोश-रचना का कार्य कितना वैज्ञानिक और समृद्ध हो गया है, इस विषय की चर्चा का अवकाश यहाँ नही है। किसी भी नए अंग्रेजी कोश को खोलकर देखिए, शब्द के व्याकरण, उच्चारण, अर्थभेद, इतिहास से लेकर उसका गोचर चित्र निदर्शन दिखाई देगा। हमारे यहाँ कोश-रचना की ऐसी पद्धति नही अपनाई जा सकी है। मैं अपने इस कोश की इन कमियो के प्रति सजग हूँ पर मुझ जैसे अकेले व्यक्ति के प्रयास से अधिक शक्तिसाध्य यह कार्य है। पर जैसा मैंने निवेदन किया है, यह हिंदी के भावी महाकोश की रचना मे एक छोटा अशदान होगा, यही ज्ञान मुझे किंचित् तोष देने के लिए सप्रति पर्याप्त है। इस कोश को लिखते समय दो बातो की ओर ध्यान दिया गया है। पहली बात, केशव के काव्य को समझने के लिये अपेक्षित अर्थो की सूची देना तथा उनके व्याकरणिक परिवेश का ज्ञान कराना था। दूसरी बात, केशव के विभिन्न ग्रंथो मे कोई शब्द कहाँ-कहाँ आया है, इसका निर्देश करना था। यह काम इस दृष्टि से अर्थपूर्ण समझा गया कि वह शोधछात्रो के लिये उपयोगी होगा तथा यदि कोई अनुसधित्सु उन प्रसगो का नए सिरे से विमर्श कर किसी नए अर्थ की उद्भावना कर सकेगा तो आचार्य केशव को अधिक पूर्ण रूप मे देखने और समझने का अवसर मिलेगा।

वस्तु का सौंदर्य उसकी आगिक सहति मे निहित होता है। प्रासाद की भव्यता की छटा उसकी लघु इष्टिका मे निहित होती है। इसलिये सच्चा सौंदर्यप्रेमी उसके मूल्य और सौंदर्य का पहले निर्णय करता है। ईंटो का रूप, आकार, उनकी द्रव्यवस्तु, उनका परिमाण आदि महत्व की चीजें होती है। साहित्य-प्रासाद की भव्यता का ज्ञान उसकी शब्द-इष्टिका की परीक्षा से हो सकता है। शब्द मे जितनी अधिक अर्थशक्ति होगी, काव्य उतना ही शक्तिशाली होगा। शब्द मानव की सास्कृतिक यात्रा के पदचिह्न होते हैं। केले के खभे पर जैसे पत्तो की पर्त चढी होती है, वैसे ही मानव की सास्कृतिक यात्रा के अविस्मरणीय चिह्नो की पर्त शब्द के ऊपर चढी होती है। वे जिज्ञासु को अपनी ओर आकृष्ट करते हैं और अपनी अर्थच्छटा से उसे विमोहित करते है। वे सकेत देते हैं कि 'अलक' और 'भ्रमरक' का अर्थ 'केश' कैसे हुआ। गुप्तकालीन सस्कृति के यौवनकाल मे भ्रमरो या अलियो की पक्ति के सदृश केश-रचना को अलक या भ्रमरक कहते थे। उस रचना-विशेष की ओर ध्यान दो और देखो कि वह तुम्हे इतिहास के किस अध्याय का दर्शन कराता है, मानव चित्तवृत्ति की किस सौदर्य भावना का उद्घाटन करता है। आवश्यकता केवल इतनी है कि शब्दो से अर्थदोहन की अभिवृत्ति का विकास किया जाए और इस अथाह सागर की जीवन-राशि, लोल-लहरियो और सीप-मोतियो का आनंदलाभ किया जाय। 'नगा लुच्चा' पर सस्कृति

और मानव-चित्तवृत्ति की कैसी परत चढी है, इसे शब्द-साधक ही जान सकता है। शब्द और अर्थ के द्वारा मानव मन की गहराई और उसके अंतरतम मे उतरने का अवसर मिलता है। शब्द का महत्व इस बात मे है कि वह समाज मे ज्ञान का कितना प्रकाश फैलाता है। ज्ञान का स्वयं प्रकाश शब्द है। हमे चाहिए कि हम इस प्रकाश को ग्रहण करने के निमित्त अपनी मानसिक आँखो को प्रशिक्षित करें। उनका नित्य मनन करें। मन के भावों और विचारो को व्यक्त करने का शब्द के अतिरिक्त दूसरा कौन सुलभ साधन है? उस शब्द से प्रकाश ग्रहण कर जगत् के लिये हम स्वयं काव्य-विज्ञानादि के माध्यम से नया प्रकाश विकीर्ण करें। कहा है कि सारे जगत् का ज्ञान शब्द का ही पसारा है; इसलिये,

संतो, शब्द साधना कीजै!

केशव कोश का कार्य मैंने श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति के हिंदी विभाग मे सन् १९६५ मे प्रारंभ किया था। एक योजना बनाकर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, दिल्ली को भेजी थी। उन्होने योजना का स्वागत किया, परंतु अत्यल्प धनराशि स्वीकृत की। पुन लिखा, परंतु सब व्यर्थ। मैंने कार्य प्रारंभ कर दिया था। अत आयोग से निराश होकर भी काम पूरा हो गया। अब दो खडो मे 'केशव कोश' आपके समक्ष प्रस्तुत है।

प्रस्तुत प्रयास मे अनेक लोगो ने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से मेरी सहायता की है, उन सबका मैं अनुगृहीत हूँ। विशेष रूप से श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के तत्कालीन सहयोगी एवं छात्र-छात्राओ के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिन्होने मुझे समय-समय पर सहायता दी। बंधुवर श्री सुधाकर जी पाडेय, प्रधान मत्री, नागरी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी ने इसे सहर्ष प्रकाशित किया है, अतः वे साधुवाद के विशेष पात्र है।

विजयपाल सिंह
आचार्य एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी

होलिका,
संवत् २०३३ वि०

संकेताक्षर

अ० = अकर्मक, अव्यय
उदा० = उदाहरण
एक० = एकवचन
क्रि० = क्रिया
दे० = देखिए
पुं० = पुल्लिग
प्र० = प्रयोग
वहु० = वहुवचन
सं० = संज्ञा, संयुक्त, संस्कृत
स० = सकर्मक
सर्व० = सर्वनाम
स्त्री० = स्त्रीलिंग
वि० = विशेषण

ग्रंथसंकेताक्षर

क०, क० प्रि० = कविप्रिया
छं, छ० = छंदमाला
ज० = जहाँगीरजसचंद्रिका
न० शि०, शि० = नखशिख
र० = रतनबावनी
र० प्रि० = रसिकप्रिया
रा० = रामचंद्रिका
वि०, वि० गी० = विज्ञानगीता
वी० = वीरसिंहदेवचरित

केशव कोश

अ

अंक—[सं० अक्+अच्] सं० पुं० एक०। (१) गोद। र० प्रि० १-२०-४। ३-२५-२। ५-५-२। ५-३४-४१। क० प्रि० ११-३८-१। ११-६६-१। रा० १८-२५-१। २०-४-२। २१-३०-३। २२-१६-२। छं० मा० १-४२-३। १-७०-३। वी० च० २८-१६। जहाँ० ७। वि० गी० १-५३-३। २१-३७-३। (२) सं० पु० एक०। देह या शरीर। र० प्रि० १०-१६-३। १४-१६-४। क० प्रि० १४-३३-४। रा० १०-६-१। १४-१२-१। १५-४१-३। २०-१४-१। (३) सं० पु० एक०। निशानी या दाग। क० प्रि० ६-३२-६। १४-३६-१। १५-६०-१। (४) सं० पु० एक०। (अ) वक्षस्थल—नारायण के पक्ष मे। (आ) अ अक्षर—मुंदरी के पक्ष मे। रा० १३-८०-१। (५) सं० पु० एक०। परिच्छेद। र० बा० १-३१-४। (६) सं० पु० बहु०। चिह्न। क० प्रि० ६-६६-३। १४-२५-२। १५-२२-२। वी० च० ३-२८। ८-६०। २३-६। (७) सं० पु० बहु०। अग। वी० च० २८।१६। मुहा०—अक पसारना—अगो का स्पर्श करना। उद्धरण—"प्रतिभट अकनिते अक पसारत है (वी० च० २८-१६)। मुहा०—"अंक भरना"—आलिंगन करना। उद्ध०—"उन भरि उठाइके अक-भरी" (रा० १०-६-१)। मुहा०—"अक लगाना"—आलिंगन करना। उद्ध०—"रामचद्र हँसी अक लगाई लीनी।" रा० २१-१४-१।

अंकुर [सं० √अक्+उरच्]—(१) सं० पु० एक०। रोआँ। वी० च० २२-४। (२) सं० पु० बहु०। अँकुआ या अँकुडा। क० प्रि० ५-१३-२। ५-१५-३। वि० गी० २०-३-१।

अंकुराली —सं० स्त्री० एक०। (अंकुरावली)—अकुरो का समुदाय। रा० २०-४५ १।

अंकुस [सं० √अक्+उशच्]—सं० पु० एक०। लोहे का काँटा या एक तरह का भाला जिसे महावत हाथी के सिर पर चुभोकर उसे चलाता है। र० प्रि० ६-१६-१। क० प्रि० १५-६०-१। रा० १५-४३-४। ३५-३७-४। वी० च० १-४०।

अँखियाँ [सं० अक्षि]—सं० स्त्री० बहु०। आँखे। र० प्रि० २-१२-३। ७-१८-१। ८-७-१। १२-२७-२।

अँखियान—सं० स्त्री० बहु०। आँख=आँखे, नेत्र। र० प्रि० ८-५७-४।

अँखियानि—सं० स्त्री० बहु०। लोचन। र० प्रि० ८-७-१। ८-५०-१।

अंग [सं०√अम् (गति आदि)+गन्]—(१) सं० पु० एक०। शरीर का अवयव। रा० ६-४४-१। ६-६०-३। ६-६२-२। ११-५-३। ११-६-२। ११-३३-३। १३-५६-२। २०-३-१। २०-४-१। २१-२३-४। २६-७-२। र० बा० १-२७-५। वि० गी० २-४-१। १६-४५-१ (२) शरीर। र० प्रि० ३-३-१। ३-५४-२। ३-५८-३। ६-३८-३। ६-४७-४। ७-१२-२। ७-२६-२। ७-३०-१। क० प्रि० १-५९-१। ३-२५-२। १०-४-२। १२-७-१। १२-१५-४। १५-३५-१। १४-४०-३। १५-२-२। रा० ४-२५-२। ६-४४-१। ६-६०-३। ६-६२-२। ७-२-३। ११-६२-१। १२-४२-२। १३-२५-२। १३-६५-२। १४-४-२। १४-१२-२। १८-२४-२। १८-१२-२। ३०-३८-२। ३२-४८-१। छं० मा० १-४२-३। १-४८-५। १-७-१। वि० गी० ८-१०-१। ८-१२-२। ८-१३-१। (३) गोद। रा० २९-३०-२। (४) सं० पु० बहु०। विभाग। "अंग छः सातक आठक" (रा० ५-१९-३)—छः षडंग—वेदांग १ शिक्षा २ कल्प ३ व्याकरण ४. निरुक्त ५. ज्योतिष ६ छंद। सात—राज्यांग। १ राजा २. मंत्री ३ ४ खजाना ५ देश ६ दुर्ग ७ सेना। आठ—योगांग १ यम २ नियम ३ आसन ४ प्राणायाम ५ प्रत्याहार ६ धारणा ७ ध्यान ८ समाधि। (५) अंगदेश (समस्त पद)। वि० गी० १२-७-१। (६) सं० पु० एक०। संगीत की श्रेणियाँ। क० प्रि० १-५५-१। (७) सं० पु० एक० प्रणाम, मर्दन। क० प्रि० ८-१२-२। (८) सं० पु० बहु०। महलों के बुर्ज, कंगूरे या कलश। क० प्रि० ६-१३-१। (९) मन, हृदय। क० प्रि० १२-१२-२। (१०) पु० बहु०। चतुरंग बल—रथ, हाथी, घोड़ा, पैदल। क० प्रि० ११-१०-२। (११) पु० एक०। (अ) विधान (दान के पक्ष में), (आ) मूठ (तलवार के पक्ष में)। क० प्रि० ११-४०-२। (१२) सं० पु० बहु०। भेद, प्रकार। क० प्रि० १५-१-१। (१३) सं० पु० एक०। जाति, वंश। र० प्रि० ७-४४-१।

अंग-अंग—सं० पु० एक०। प्रत्येक भाव या अवयव। र० प्रि० ७-११-२। १२-४-२। क० प्रि० १-४४-२। ३-३४-२। १२-६-४। १४-२५-१। १५-६४-१।

अंगऊ—(अंग+ऊ)—"अंग"। सं० पु० एक०। प्रधान या अंगी का सहायक। क० प्रि० ६-५६-२।

अंगत्रान—सं० पु० एक०। कवच। रा० ६-६४-२।

अंगद—सं० पु० एक०। किष्किंधा के वानर राजा वालि तथा तारा का पुत्र जो रामायण के परंपरानुसार वानर या राम की ओर से रावण से लड़ा था। उसने रावण की सभा में चरण रोपकर प्रतिज्ञा की थी कि यदि रावण का कोई योद्धा मेरा चरण हटा देगा तो मैं सीता को हार जाऊँगा। बहुत

प्रयत्न करने पर भी रावण के योद्धा उनका चरण न हटा सके। इसी कथा से "अंगद का चरण" न डिगनेवाली प्रतिज्ञा के अर्थ में मुहावरा बन गया। (—हिंदी विश्वकोश, नागरीप्रचारिणी सभा) क० प्रि० १३-११-३। रा० १३-५-१। १३-३५-१। १४-१६-१। १४-१८-१। १४-३८-३। १५-२२-२। १५-४१-४। १६-१-१। १६-३-१। १६-४-२। १६-६-३। १६-१५-४। १६-३२-१। १६-३४-१। १७-१-१। १७-२-१। १७-१७-२। १८-३३-१। १९-१०-१। १९-४३-१। १९-४६-३। २१-३२-२। २१-४०-१। २१-५६। २२-१९-१। २६-२५-१। २६-३३-४। ३६-३७-१। ३८-७-१। ३८-८-१। ३८-११-१। (२) लक्ष्मण का पुत्र। रा० ३९-२२-२। ३९-३६-१।

अंगदनगर—लक्ष्मण के पुत्र अंगद को मिला हुआ राज्य। रा० ३९-२७-१।

अंगदेश—सं० पु० एक०। एक प्राचीन जनपद जो बिहार राज्य के वर्तमान भागलपुर और मुंगेर जिलों का समवर्ती था। अंग की राजधानी चंपा थी। आज भी भागलपुर के एक मुहल्ले का नाम चंपानगर है। महाभारत की परंपरा के अनुसार अंग के वृहद्रथ और अन्य राजाओं ने ... पीछे बिंबसार और मगध की बढ़ती हुई साम्राज्यलिप्सा का वह शिकार हुआ। राजा दशरथ के मित्र लोमपद और महाभारत के अंगराज कर्ण ने वहाँ राज किया था। बौद्धग्रंथ अंगुत्तरनिकाय में भारत के बुद्धपूर्व सोलह जनपदों में अंग की गणना हुई है। (हिंदी विश्वकोश, नागरीप्रचारिणी सभा)। क० प्रि० १५-११५-१।

अंगद्वार—सं० पु० एक०। शरीर के नौ द्वार या छेद—मुख, दो कान, दो नेत्र, नाक के दो छेद, गुदा, उपस्थ। क० प्रि० ११-२०-१।

अंगन—सं० पु० एक०। आँगन, चौक। क० प्रि० ११-३८-४। रा० १-४५-२। छं० मा० १-६६-४। वि० गी० २०-१। २०-६।

अंगनानि—सं० पु० बहु०। मकान, घर। क० प्रि० १५-९८-१।

अंगना—[सं० √अंग+न+टाप्] सं० स्त्री० एक०। सुंदर अंगोंवाली स्त्री, नारी। क० प्रि० ६-३४-३। १३-१०-४। रा० ४-६-१।

अंगनानि—सं० स्त्री० बहु०। औरतें, स्त्रियाँ। क० प्रि० १५-११५-२।

अंगनि—सं० पु० बहु०। शरीर के अवयव। र० प्रि० १३-३-४। क० प्रि० ८-४३-४। १५-१३०-१।

अंगनु—सं० पु० बहु०। अवयव। क० प्रि० १५-८-१।

अंगभंग—सं० पु० एक०। अंगों को ऐंठना। वि० गी० २१-२४-१।

अंग रचना—सं० पु० एक०। शारीरिक शृंगार। रा० ३४-१७-२।

अंगराग—सं० पु० बहु०। अंगों में विविध रंगों से कुछ चिह्न बनाना।

इसके अंतर्गत पाँच सिगार हैं—१ मांग मे सिंदूर भरना, २ भाल पर खौर, ३. गाल और चिबुक पर तिल बनाना, ४ उरस्थल पर केशर मलना, ५. हाथो मे मेहँदी लगाना। र० प्रि० ३-४३-२। क० प्रि० ४-१७-२। १५-४४-१। रा० ११-६-२। १२-६२-२। २१-५-७। ३४-१६-१। छं० मा० १-४२-४। १-६१-५। वी० च० २०-१३। २०-२०।

अंगराग रंजित—विशेषण। विशेष्य—देह। चदन, केशर आदि के लेप से रजित। रा० ३-३६-१।

अंग राग रए—विशेषण। विशेष्य—पट-भूषण। अगराग अर्थात् केशर चद-नादि से रँगे हुए। रा० १५-३०-१।

अंगरागु—स० पुं० एक०। सुगंधित लेप। क० प्रि० १५-४३-१। १५-४५-१।

अंगलाल धुलधारी—विशेषण। विशेष्य—भरत। जिनका शरीर धूल से युक्त हो। रा० २१-२२-१।

अंग-सुवासनि (अग-सुवास+नि)—सं० स्त्री० एक०। शरीर की नैसर्गिक सुगंध। र० प्रि० ७-१२-२।

अंगहि—स० पु० एक०। शरीर को। र० प्रि० १-४३-४।

अंगा—स० पु० एक०। अँगरखा। वि० गी० १-२९-५।

अंगार—[स० √अग+आरन्] सं० पु० एक०। दहकता हुआ कोयला। र० प्रि० ११-७६-४। क० प्रि० ७-२३-४। १६-३२-१। रा० २१-२५-१। ३०-३५-४।

अंगारनि—सं० पु० बहु०। अग्निकण। र० प्रि० ८-७-४। क० प्रि० ५-२३-४।

अँगिया— [स० अंगिका] स० स्त्री० एक०। कचुकी, चोली। र० प्रि० ३-१९-२। ६-३१-२। रा० ३१-३६-१। वि० गी० ६-१३, २२-८६।

अँगियाऊ—(अँगिया+ऊ)=अँगिया। सं० स्त्री० एक०। चोली। क० प्रि० १२-७-१।

अंगिरा—[√स० अग्+असि, इरुट्] स० पुं० एक०। (१) एक ऋषि जो ब्रह्मा के १० मानसपुत्रो मे से एक पुत्र है और सप्तर्षियो मे से एक ऋषि तथा एक स्मृतिकार कहे जाते हैं। रा० २३-४-१। (२) स० पु० एक०। एक सवत्सर। वि० गी० १६-५८-२।

अंगीठी—[स० अंगिष्ठिका] सं० स्त्री० एक०। आग रखने का बर्तन। र० प्रि० ९-७२। १६-७-४। क० प्रि० ३-३४-२।

अंगु—सं० पु० एक०। भाग। क० प्रि० १४-३२-१।

अंगुर—[स० अगुल] स० पु० एक०। अगुल का परिमाण। "काहू अगलो न अगु रहू पै"। रा० ३-३४-३।

अंगुरि—[स० अगुलि] स० स्त्री० एक०। अँगुली। रा० ३१-२७-१।

अंगुरिनि—स० स्त्री० बहु०। उँगलियाँ। क० प्रि० १५-२९-१।

अंगुरी—स० स्त्री० बहु०। (१) उँगलियाँ। र० प्रि० ३-७३-३।

क० प्रि० ३-११-१। (२) उँगली। र० प्रि० १०-५-३। १४-३-१। वी० च० २२-७५।

अंगुरीन—(१) सं० स्त्री० वहु०। उँगलियाँ। क० प्रि० १३-४०-४। (२) सं० स्त्री० एक०। मुहा०—"अंगुरीन पसारना"—उँगली दिखाना या बुरा समझना। र० प्रि० १६-३-४।

अंगुल—सं० पु० एक०। अगुष्ठप्रमाण। वी० च० १७-५४। १७-५५। १७-५६। १७-५७।

अंगुली—सं० स्त्री० एक०। (१) उँगली। क० प्रि० १-५-३-३। १५-११-१। १५-१३-१। रा० ३१-३४-३। ३४-२३-१। (२) सं० स्त्री० एक०। नदीविशेष। वि० गी० ६-१६-१।

अंगूठनि—सं० पु० वहु०। हाथो की पहली या सबसे मोटी उँगलियाँ। र० प्रि० ४-५-२।

अंगोच—सं० पु० एक०। अंगवस्त्र। वी० च० २२-७।

अंगोछ—(अंगोछे) क्रियापद। पोछकर। र० प्रि० ४-५-२। क० प्रि० ६-१७-२।

अंचल—स० पु० एक०। ओढनी, साडी आदि का वह छोर जो छाती और पेट पर रहता है। र० प्रि० ३-२३-१। ४-७-४। ५-९-३। ६-३१-२। ६-४०-२। क० प्रि० ६-१०-२। रा० ९-४४-३। २१-३६-२। छ० मा० १-६४-५। वी० च० ८-४७। १२-२७। वि० गी० ६-३४-२।

अंचलमेलि दुरावै—सयुक्त क्रिया। अचल डालकर छिपाती, घूँघट मे मुँह छिपा लेती है। र० प्रि० ६-४०-२।

अंचलु—[स √अञ्च् + अलच्] स० पु० एक०। आँचल। र० प्रि० १२-२५-४।

अंजन—[स० √अञ्ज् + ल्युट-अन] स० पु० एक०। काजल। र० प्रि० ३-४४-२। ४-५-३। ६-३१-३। ६-५५-४। क० प्रि० ५-२६-४। १४-५३-३। १५-५७-२। १५-५८। रा० ११-२९-१। छ० मा० २-२४-४। वी० च० २०-२०। वि० गी० ८-२२-१। ८-२७-३।

अंजन आँजि—सयुक्त क्रिया। काजल लगाकर। र० प्रि० ६-५५-४।

अंजन जुत—विशेषण। विशेष्य—लोचन। काजल से युक्त। क० प्रि० १५-५५-२।

अंजनरंजित—विशेषण। विशेष्य—नैन। काजल से सुशोभित। र० प्रि० ६-३१-३।

अंजलि—स० स्त्री० एक०। करसपुट, अभिवादन का एक सकेत। वी० च० ४-१। २०-३२। ३२-१७। क० प्रि० ४-७-२।

अंजित—क्रियापद। अजन लगाकर, अजित करके। रा० २-२०-२।

अंजुली—[स० अजुलि] स० स्त्री० एक०। हथेलियो को जोडकर बनाया गया सपुट। रा० १६-३४-४। १८-३०-१। १९-१-१। २१-२२-४।

अंड—स० पु० एक०। ब्रह्माड, अडाकार भुवन, क्रोध जिससे, मनुस्मृति आदि के अनुसार, पितामह ब्रह्मा की उत्पत्ति हुई, विश्वगोलक, खोपडी, अडा आदि। ये सभी "केशव" के अनुसार

"वर्ण्यालंकार" के "सुवृत्त वर्णन" के अंतर्गत आते हैं। क० प्रि० ६-१३-२।

अंत—(१) सं० पु० एक०। समाप्ति, अवसान। क० प्रि० ५-१५-३। रा० ६-२०-२। १०-४०-१। छ० मा० १-१३-१। १-१६-१। १-१६-४। १-२१-१। १-१३-१। १-२५-१। १-२६-१। १-३०-३। १-३६-३। १-४०-१। १-४१-१। वि० गी० ६-३१-१। १६-२३-२। १६-२४-१। (२) अंतःकरण, मन। क० प्रि० १६-६-३।

अंतक-लोक—सं० पु० एक०। यम-लोक। क० प्रि० ६-५६-४। रा० १६-२६-४।

अंतर—[सं० अंत√रा+क] सं० पु० एक०। भेद। क० प्रि० १५-६५-२। वि० गी० १६-१२-३। १७-१२-३। २१-३०-१।

अंतरजामी—[सं० अंतर्यामी] (१) विशेषण। विशेष्य—जगदीश। जो सब कुछ से परिचित हो, अंतर्यामी। वि० गी० १७-४१-२। (२) विशेषण। विशेष्य—राम। सबके हृदय में बसनेवाला, सबका मर्म जाननेवाला। रा० २०-१५-१। ३३-३८-२।

अंतरति—सं० स्त्री० बहु०। अंतर्रति, अभ्यंतर रति, सात प्रकार के संभोग के बंधन। र० प्रि० ३-४०-२। ३-४२-१।

अंतरधान—सं० पु० एक०। गायब होना। वि० गी० १५-६०-२।

अंतर्धान—सं० पु० एक०। गायब होना। वि० गी० १३-८५-२। १४-६३-२।

अंतर्ध्यान—सं० पु० एक०। गायब होना। वि० गी० १८-३१।

अंतर बाहिर हीन—विशेषण। विशेष्य—परम प्रकाश। अंतर और बाहर रहित। वि० गी० २०-५८-१।

अंतरमन—सं० पु० एक०। हृदय। रा० ६-५५-२। १०-१८-४। ३३-२१-२।

अंतरलापिका—सं० स्त्री० एक०। अंतर्लापिका; वह पहेली जिसका उत्तर उसी के अक्षरों में मिलता हो। क० प्रि० १६-८३-२। उद्धरण—"कौन जाति सीता सति दयी कौन को तात, कौन ग्रंथ बरन्यो हरी, रामायण अवदात"। ऊपर के उद्धरण में तीन प्रश्न तीन चरणों में हैं और चौथे चरण के "रामायण" में उनका उत्तर है।

अंतरहि—(अंतर+हि) अंतर। सं० पु० एक०। भेद, अलगाव। क० प्रि० १५-६५-२।

अंतरिच्छ—[सं० अंतर√ईक्ष्+घञ्] सं० पु० एक०। पृथ्वी और स्वर्ग के बीच का स्थान, आकाश। र० प्रि० ४-११-१।

अंतरिक्ष—सं० पु० एक०। आकाश। रा० १३-४०-२। १८-२१-४।

अंतरिक्षमग—सं० पु० एक०। आकाश-मार्ग। रा० २६-१३-२।

अंतहीन—विशेषण। विशेष्य—देव।

जिसका अंत न हो, अनंत। वि० गी० १५-४५-२।

अंत्यज—सं० पुं० एक०। चांडाल, निम्न जाति में उत्पन्न। र० प्रि० ७-४४-१। रा० ६-६-२।

अंध [सं० अव+अच्]—(१) सं० पुं० एक०। एक प्रकार का काव्यदोष। कवियों की बँधी हुई रीति से विरुद्ध कहना अंध दोष है। क० प्रि० ३-६-१। ३-६-२। १६-२-२। (२) सं० पुं० एक०। अंधकार। क० प्रि० ८-२६-२। (३) विशेषण। विशेष्य—तम। घोर। र० प्रि० १४-३२-३। (४) नेत्रहीन; अंधा। र० प्रि० ३-१३-१। १०-२२-२। क० प्रि० ७-११-४। ६-५०-२। रा० १२-३२-२। २०-४०-४। छं० मा० २-३३-२। वी० च० १३-१५-२। १४-८१। १६-४। वि० गी० ३६-२६-२। ६-४८-१। (५) अज्ञानी, बाहरी आँखों के होते हुए भी जिसे ज्ञानचक्षु प्राप्त न हों। क० प्रि० १०-२५-४। रा० ८-१६-३। १२-४-२। १५-१४-२। १६-३३-३। वि० गी० ८-८-१। १७-२७-१।

अंधक [सं० अव+कन्]—सं० पुं० एक०। एक दैत्य जो शिव जी के हाथों मारा गया। रा० १८-३३-४।

अंधकार [सं० अव√कृ+अण्]—सं० पुं० एक०। अँधेरा। वी० च० १४-१३। १४-२२। १४-४६।

अंधनि—सं० पुं० बहु०। नेत्रहीन व्यक्तियों का समूह। वि० गी० ६-४८-१।

अँधियार—[सं० अंधकार] सं० स्त्री० एक०। अंधकार। वी० च० २७-१४।

अँध्यारे—सं० पुं० एक०। अंधकार, अँधेरा। र० प्रि० ५-२८-४।

अंब—सं० स्त्री० एक०। अंबा, पार्वती। वी० च० २६-६।

अंबर—[सं० अंब√रा (दाने)+क] (१) सं० पुं० एक०। (अ) आकाश (वसंत के पक्ष में), (आ) वस्त्र (शिव-समाज के पक्ष में)। क० प्रि० ७-२८-१। (२) पुं० एक०। (अ) वस्त्र (कालिका के पक्ष में), (आ) आकाश (वर्षा के पक्ष में)। क० प्रि० ७-३२-४। (३) सं० पुं० एक० (अ) वस्त्र (शारदा के पक्ष में), (आ) आकाश (शरद ऋतु के पक्ष में)। क० प्रि० ७-३७-७। (४) पुं० एक०। (अ) आकाश (चंद्रमा के पक्ष में)। (आ) वस्त्र (सीता के पक्ष में)। क० प्रि० १४-३६-३। (५) पुं० एक०। आकाश। र० प्रि० ६-६-४। क० प्रि० ८-४५-३। १५-८४-३। रा० १३-२५-१। १५-३८-१। वी० च० ११-१७। वि० गी० १०-१०-२। १०-१२। (६) पुं० एक०। वस्त्र। र० प्रि० ७-३१-१। क० प्रि० १३-३६-२। १४-३५-१। १५-८४-३। रा० ८-११-३। १३-२५-१। वि० गी० ३-३-२। १०-१२-७।

अंबरन—सं० पुं० बहु०। कपड़े, वस्त्र। क० प्रि० १४-२१-२।

अंबरविहीन—विशेषण। विशेष्य—वपु। वस्त्रों से रहित; दिगंबर। क० प्रि० ७-२८-१।

अंबर विलास—विशेषण। विशेष्य–दोऊ (रत्नाकर तथा सीता) श्लेष से। (अ) चद्रमा के पक्ष मे—आकाश मे जिसका विलास हो। (आ) सीता के पक्ष मे—सुदर वस्त्रो से शोभित। रा० ९-४०-३।

अंबर-विलासु—सं० पु० एक०। आकाश का सौदर्य। क० प्रि० १५-८४-३।

अंबरीष—स० √अंब (पाक) +अरिष] स० पुं० एक०। अयोध्या के एक सूर्यवंशी राजा जो विष्णुभक्त थे। जहाँ० ११८।

अंबेश—विशेषण। विशेष्य—नरवेश। आकाश का ईश्वररूपी चद्रमा जहाँ० १-२।

अंबिका—[स० अम्बा+कन्] सं० स्त्री० एक०। पार्वती। क० प्रि० १५-३२-४। वी० च० ९-१८। वि० गी० १२-५-४।

अंबु—स० पु० एक०। जल। क० प्रि० १०-२६-२।

अंबुज—(१) स० पुं० एक०। कमल। क० प्रि० ६-४-२। (२) सं० पु० बहु०। कमलपुष्प। क० प्रि० १५-३२-४।

अंबुद—स० पु० एक०। बादल। मेघ। र० प्रि० ६-६-४।

अंबुसाई—स० पुं० एक०। अंबुशायी। नारायण। क० प्रि० १५-३२-४।

अंमृत—सं० पु० एक०। सुधा। क० प्रि० ८-३१-३।

अंस—[सं० √अंश+अच्] (१) सं० पुं० एक०। भाग। क० प्रि० १०-३२-१। रा० ६-१६-३। जहाँ० १७२। वि० गी० १-५-४। २-२३-३। १४-१८-२। १५-१९-२ (२) पुं० एक०। कंधा। क० प्रि० १५-१२-२।

अंसतीर्थ—सं० पु० एक०। एक पुण्य क्षेत्र। वि० गी० ६-१०-२।

अंसु—[स० अशु+क] सं० पुं० एक०। किरण। रा० १५-४०-४। १७-५३-१। २०-४२-२। २३-१४-२। २७-६-८। जहाँ० ३६। वि० गी० २०-१५।

अंसुनि—सं० पु० बहु०। किरणे। क० प्रि० ५-३७-२।

अंसुमाली—सं० पुं० एक०। सूर्य। रा० १७-५२-१।

अँसुवन—सं० पुं० बहु०। नेत्रजल, आँसू। रा० २२-१६-२।

अँसुवा—स० पु० बहु०। आँसू; नेत्र-जल। र० प्रि० ७-२१-४। ९-५-४। वि० गी० १०-६-२।

अँसुवानि—स० पु० बहु०। आँसू की धाराएँ। र० प्रि० ८-४७-२।

अंसु सहित—विशेषण। विशेष्य—हस। किरणो से युक्त। रा० १५-४०-४।

अ—स० पु० एक०। विष्णु। क० प्रि० १६-१०-१।

अकंटक—विशेषण। विशेष्य—राज। बाधा रहित, शत्रुओ के भयादि काटो से रहित। वि० गी० १९-४-२।

अकंपन—स० पु०। राक्षसविशेष। रा० २१-४१-२।

अकथ्य—[अकथ्य] विशेषण। विशेष्य—विधि की चित्तचातुरी। अकथनीय। जिसे कहा नही जा सकता। रा० ५-२५-२।

अकपट—विशेषण। विशेष्य—तुमहि मित्र। कपट से रहित, सीधा साधा। वी० च० १०-४७-३।

अकबक—स० पु० एक०। चकित होना। क० प्रि० ८-३५-३।

अकबकाई—स० स्त्री० एक०। प्रलाप जहाँ० ५९।

अकबर—सं० पुं० एक०। मुगल वश मे प्रसिद्ध अकबर बादशाह (१५५६-१६०५) जिसने हिंदू मुसलमान मे एकता लाने का प्रयत्न किया था। क० प्रि० १-२४-१। १-३२-२। १-३८-२। वी० च० २ ३८। २-४२। २-५२। ३-४०। ४-४। ४-१८। ५-४। ५-१२। ५-८५। ५-९८। ६-२५। ६ ३५। ७-१०। ७-४०। ७-५३। ९-७। ९-१२। २३-२२। जहाँ० ३, ३८, ६३, ७३, ७५, ८५, १३५, १५८।

अकब्बर साहि को चेला—विशेषण। विशेष्य—दूलह राम। अकबरशाह का शिष्य। जहाँ० ७३-२।

अकर—विशेषण। विशेष्य—रामचद्र। हाथहीन, जो किसी को कर, दड या जुर्माना न देता हो। रा० २७-४-३।

अकर्मनि—स० पु० वहु०। कर्म को न करना।

अकलंकित—विशेषण। विशेष्य—साधु। कज्जल-चिह्न-रहित; निर्दोष। रा० २५-२०-२।

अकल—स० स्त्री० एक०। बुद्धि। जहाँ० १६८। वि० गी० १९-५७-२।

अकल अविद्या रहित—विशेषण। विशेष्य—अद्भुत हरिभक्त। बुद्धि और अविद्या दोनो से रहित, बुद्धि-हीन या विद्याहीन व्यक्ति भी श्रद्धायुक्त भक्ति द्वारा हरिपद प्राप्त कर सकता है—इस ओर केशवदास ने सकेत किया है।) वि० गी० १६-५७-१।

अकह—[स० अकथ्य] विशेषण। विशेष्य—कहानी। अकथनीय, जो कहा नही जा सकता। क० प्रि० ५-२६-३।

अकाम—विशेषण। विशेष्य—दान। इच्छाशून्य, कामनारहित, निस्पृह भाव से किया गया। रा० २१-१०-१।

अकामन के हेतु—विशेषण। विशेष्य—हर। निष्काम भक्तो का हितैषी। क० प्रि० ११-४४-२।

अकाल—स पु० एक०। कुसमय, अशुभ काल। वि० गी० ११-३६-३। १३-९-३।

अकास—[सं० आकाश] स० पु० एक०। (१) आकाश—पच महाभूतो मे से एक जो शब्दगुणवाला माना जाता है। र० प्रि० ३-१९-३। ३-४३-३। ५-२०-२। १०-१६-३। क० प्रि० ३-२३-२। ३-२५-३। ५-३५-२। ५-३८-२। ६-६१-२। ७-३३-१। ९-

१८-४। १०-२५-१। १०-३०-४। १०-३३-२। १०-३५-५। १४-२७-१। १५-७५-३। (२) स० पु० एक०। शून्य प्रदेश। रा० ४-३०-१। ५-२६-२। १०-१६-१। १५-२६-१। २१-१६-१। २६-२६-२। ३०-२०-१। ३२-१४-१। ३५-६-३। क० प्रि० ६-२२-१। (३) वी० च० १२-२२। १२-२०। १२-२६। १६-३। १६-२३। २१-२०। २२-३७। २३-१०। २३-१८। (४) छं० मा० २-४३-३। वि० गी० ८-४६-१। १०-१६-१। ११-८-३। १२-१२४। १२-१७-१। १३-७८-१। १३-७६-१। १४८-२। १५-५१-१। १६-४५-१। १६-१२-१। २०-५४-२।

अकासचंदु—स० पु० एक०। चद्रमा, शशि। क० प्रि० १५-३६-४।

अकासदियो—सं० पुं० एक०। आकाश-दीप। वी० च० २२-५६।

अकासहि—(१) स० पु० एक० (कर्म-कारक)। आसमान को। र० प्रि० १२-३-४।

अकासहुँ—स० पु० एक०। आकाश भी। वि० गी० १०-१५-२।

अकुलाइ—क्रियापद। अकुलाकर, आकुल होकर। र० प्रि० ३-३१-४। ४-२३-४। ५-२-१। ५-२६-१। ६-४४-४। ७-१४-६। ७-३०-३। ८-४४-६। २४-२४-३। रा० १-१६-१। ५-४-२। ७-२-१। २७-४१-१। १२-३१-२। ३४-२२-१। ३५-१५-४।

अकुलाइ उठी—सयुक्त क्रिया। व्याकुल होकर उठी। र० प्रि० ४-१३-४।

अकुलाइ कह्यो—संयुक्त क्रिया। आकुल होकर कहा। र० प्रि० ३-३१-४।

अकुलाइ मिली उठि—सयुक्त क्रिया। व्याकुल होकर उठी और भेट किया। र० प्रि० १४-१६-३।

अक्रूर—स० पु० एक०। अक्रूर। यादव वशी कृष्णकालीन एक मान्य व्यक्ति थे। ये सात्वत वश मे उत्पन्न वृष्णि के पौत्र थे। इनके पिता का नाम श्वफलक अफलक था जिनके साथ काशी के राजा ने अपनी पुत्री गादिनी का विवाह किया था। इन्ही दोनो की सतान होने से अक्रूर "श्वाफलिक" तथा "गादिनीनदन" के नाम से भी प्रसिद्ध थे। मथुरा के राजा कस की सलाह पर वे वलराम तथा कृष्ण को वृदावन से मथुरा लाए थे। (भागवत—६-४०)। शमतक मणि से भी इनका वहुत सबध था। अक्रूर तथा कृतवर्मा द्वारा प्रोत्साहित होने पर शतधन्वा ने कृष्ण के श्वसुर तथा सत्यभामा के पिता सत्राजित का वध कर दिया। फलत वृद्ध होकर श्रीकृष्ण ने शतधन्वा को मिथिला तक पीछा कर मार डाला, पर मणि उसके पास नही मिली। वह मणि अक्रूर के ही पास थी, जो डरकर द्वारिका से वाहर चले गए थे। उन्हे मनाकर कृष्ण मथुरा लाए तथा अपने वधुवर्गो मे वढनेवाले कलह को उन्होने शात किया। (भागवत—१०-५७, हिंदी

विश्वकोश, नागरीप्रचारिणी सभा)। क० प्रि० ३-३४-२।

अकृत—विशेषण। विशेष्य—देव। कृत्यो से परे। वि० गी० १५-४७-१।

अक्ष—स० पु० एक०। अक्षयकुमार; रावण का एक पुत्र जिसे हनुमान ने मारा था। रा० १०-४-४। १४-१-१। १६-१३-२।

अक्ष के घातक—विशेषण। विशेष्य—हनुमत। अक्षयकुमार को मारनेवाला, अक्षयकुमार रावण का एक पुत्र था जिसे हनुमान ने लका का प्रमोदवन उजाडते समय मार डाला था। रा० १४-१-१।

अक्षत—सं० पु० एक०। अच्छत, अखडित चावल, मागलिक अवसरो मे काम मे लाया जानेवाला चावल। रा० ७-३२-२। २७-८-२। ३५-६-१। वी० च० १-१। २६-१२।

अक्षमाल—सं० स्त्री० एक०। रुद्राक्ष की माला। वि० गी० ३-९-१।

अक्षय—विशेषण। विशेष्य—वान। जिसका क्षय न हो। रा० १६-३७-३।

अक्षय वान—विशेषण। विशेष्य—तून। अक्षय वानो से युक्त। रा० १९-३७-३।

अक्षर—(१) सं० पु० एक०। वर्ण। क० प्रि० १६-४४-१। १६-५४-१। (२) स० पु० वहु०। वर्ण। क० प्रि० १६-३-२। रा० २०-४६-४। ३८-६-१। (३) स० पु० एक०। वर्ण। छ० मा० १-६-१। १-२१-२। १-२४-२। १-२५-२। १-२८-२। १-२९-२। १-३० २। १-४४-२। १-४७-२। १-५१-२। १-५५-२। १-६१ २। १-६४-२। १-६९-२। १-७४-२। २-४८-२। त्रि० गी० १७-१५-२। (४) विशेषण। विशेष्य—चिदानद। न-क्षर-अच्। अच्युत। अविनाशी। नित्य। वि० गी० १८-२५-३।

अखंड—विशेषण (१) जो खडित न किया जा सके। विशेष्य—जलेश पासु। रा० ४-९-२। (२) वहुत वडा। विशेष्य—विक्रमवाद। रा० ४-१६-१। (३) न-खड-थ। पूरा, सागोपाग (परब्रह्म के विशेपण के रूप मे)। क० प्रि० ६-५-१। रा० ४-१२-३। ७-१३-१। २९-२१-३४-१४-१। वी० च० ३-७-१। १५-३-२। १६-३३-३। १७-६८-२। २०-१५-१। २२-३४-२। ३३-३२-१। जहाँ० ३४-४। १८६-३। १८७-१। वि० गी० १-९-१। ४-३४-१। ४-३७-१। ६-४०-२। १२-३-२। १६-९२-२। २१-४४-२।

अखंड आखंडन लोकधारी विशेषण। विशेष्य—सुनाट्य पूजा। समस्त इद्रलोक जिसके अधिकार मे है, जिसको समस्त इद्रलोक प्राप्त होता है। रा० २१-२०-१।

अखंड कीर्तिलेय—विशेषण। विशेष्य—हैहयाधिराज। अखड कीर्ति को लेनेवाले। रा० ७-१६-१।

अखंडता—सं० स्त्री० एक०। समग्रता। क० प्रि० १५-३९-३।

अखंडि—विशेषण। विशेष्य—देव। अखंडित। वि० गी० १५-४७-१।

अखरानि—स० पु० बहु०। अक्षर या वर्ण। र० प्रि० ८-५-४। ६-५-४।

अखर्व—विशेषण। विशेष्य—गर्व। बहुत बडा, भारी। रा० ४-६-१।

अखारा—स० पु० एक०। अखाडा, नृत्यशाला, रगशाला। र० प्रि० १४-६-४। क० प्रि० १-४१-१। १३-२०-४।

अखिल—विशेषण। विशेष्य—लोक। समस्त, सपूर्ण, पूरा। रा० १२-६८-१। ३१-२६-१। वी० च० २-२१-१।

अखेद—विशेषण। विशेष्य—विवेक। खेद-रहित; सुखी; जिसे प्राप्त करने पर सुख मिलता हो। वि० गी० ११-१४-१।

अगति—स० स्त्री० एक०। स्थिर पदार्थ, अगति वर्णन, वर्ण्यालकार का एक भेद। क० प्रि० ६-३-१।

अगति महा पति—विशेषण। विशेष्य—गोदावरी। निजपति समुद्र को महा अगति मे लानेवाली (समुद्र सदैव सम भाव से स्थिर ही रहता है, गतिवान् नही होता)। रा० ११-२५-२।

अगन—स० पु० बहु०। पिंगल के चार गण—ज गण, त गण, र गण, स गण—जो छद मे अशुभ माने जाते है। क० प्रि० ३-१४-१। ३-१७-१। ३-१७-२। ३-२६-१। ३-३१-२। १६-२-२।

अगम—विशेषण। विशेष्य—आगम। अनेक, असंख्य। रा० ३०-६-३।

अगम्यागौन—स० पु० एक०। (१) जिसके साथ सपर्क निषिद्ध हो, ऐसी स्त्री से सहवास करना। (२) अगम्य स्थानो मे जाना। क० प्रि० ८-५-२। ११-४३-२। रा० २६-२-३। २७-३-३।

अगरु—स० पु० एक०। एक पेड जिसकी लकडी से सुगध होती हो। क० प्रि० ५-२-१-१।

अगस्त्य—स० पु० एक०। अगस्त्य महर्षि। रा० १-५०-२। २६-४-२।

अगस्ति—सं० पु०। (१) अगस्त्य ऋषि जिन्होने समुद्र का पान किया था। रा० ११-६-१। ११-१०-१। ११-१४-१। २०-२८-२। वी० च० १८-१२-१। (२) एक घास का फूल। वी० च० २३-१२-२।

अगाय—विशेषण। विशेष्य—बुध। अति गभीर, अथाह, गहरा। रा० १-४-३। (२) अत्यधिक। र० प्रि० ८-४२-१। क० प्रि० ३-१-१। ७-२०-३। ६-१८-२। रा० ३४-२४-१। र० बा० २३-५। ३७-५। जहाँ० २१-१। वि० गी० १-८-१। १७-८-१।

अगाधा—[स० गाध्+घञ्] विशेषण। विशेष्य—साध। अपार, बहुत अधिक। वि० गी० ८-३७-२।

अगाधि—विशेषण। विशेष्य—भक्ति। अपार, बहुत अधिक। वि० गी० १३-३०-२।

अगाधु—विशेषण। विशेष्य—चक्र का व्यूह। अति अगम। क० प्रि० ३-४२-४। रा० २५-१०-१। वि० गी० ४-३६-४। १३-५४-३। १३-८०-१। १६-११४-१। २०-३४-२। २०-४७-१। २०-६२-२।

अगाधौं—विशेषण। विशेष्य—व्याधौ। अपार, बहुत अधिक। वि० गी० ११-२६-२।

अगार—सं० पु० एक०। मकान। रा० १-४५-१।

अगि—सं० स्त्री० एक०। आग। र० प्रि० १२-१२-४।

अगिनि—(अग्नि) सं० स्त्री० एक०। आग। क० प्रि० ६-११-४।

अग्नि अर्चा—सं० स्त्री०। दाहक्रिया, शवदाह। रा० १०-११-१।

अग्निज्वाल—सं० स्त्री० एक०। आग की लपटे। रा० १७-६-२।

अग्निबान—सं० पु० एक०। वह बाण जिससे आग की लपटे निकले। रा० ३०-३४-२।

अगूढ—विशेषण। विशेष्य—कामकला। अप्रत्यक्ष। र० प्रि० २-१०-१। ३-६९-२। ८-४३-१।

अघ—सं० पु० एक०। (१)—अघासुर नामक एक असुर। यह दानव पूतना और बकासुर का कनिष्ठ भ्राता था। कृष्ण का वध करने के लिये कंस ने अघासुर को वृंदावन भेजा। इसलिये भी अघासुर के मन मे अतिशय आक्रोश था कि पूर्व मे कृष्ण ने पूतना और बकासुर का विनाश किया था। वृंदावन के गोष्ठ मे जहाँ गोपाल गौ आदि पशु चरा रहे थे वहाँ अघासुर पहुँचकर बडे अजगर की तरह मुँह फैलाकर बैठ गया। कृष्ण ने निर्भयता से उसके मुँह मे प्रवेश किया और दानव का श्वासरोध होने से ब्रह्मतालु फट गया। (भागवत १०।११२। हिंदी विश्वकोष, स० श्री नगेंद्रनाथ-बसु, भाग १)। र० प्रि० १४-२६-१। क० प्रि० १६-१७-१। (२) स० पु० बहु०। पाप। क० प्रि० १६-२०-२। रा० २४-१७-३। ३६-१४-१। वी० च० २७-११-२। जहाँ० ११६-२। वि० गी० ६-३-१। ६-६२-२। १६-१०७-२। ९-३४-२। १०-२७-२। २१-५२-२।

अघओघ—स० पु० बहु०। पापो का समूह। रा० ११-१८-३। १५-२४-२। २८-१३-२।

अघओघनास—सं० पु० एक०। पापो के समूह का विनाश। वि० गी० १०-१७-१।

अघओघविनासी—विशेषण। विशेष्य—सब पुरवासी। पापो के समूह को नाश करनेवाले। रा० १-२३-२।

अघओघहारी—विशेषण। विशेष्य—सनाढ्य पूजा। समस्त पाप समूह को हरनेवाली। रा० २१-२०-१।

अघात—स० पु० एक। (१) चोट, प्रहार। क० प्रि० १२-५-२। (२) स० पु० एक०। तृप्ति। र० प्रि० ८-१३-२।

अघाति—क्रियापद। थकति। र० प्रि० १४-३१-६।

अज्ञ—विशेषण। विशेष्य—गौतम तिय। (१) जड। रा० ३३-३६-१। (२) ज्ञानरहित। वि० गी० १-३४-१। ८-३४-१। १३-३२-१।

अज्ञान—सं० पु० एक०। (१) मिथ्या+ज्ञान। वि० गी० १६-२०-१। १७-१-२। १७-४७-१। (२) ज्ञान (वेंकट काशी)

चंदोवा—सं० पुं० एक०। शामियाना। वी० २०-६-१। २१-५-२।

चंदाविक—सं० स्त्री० एक०। चन्द्रावली-(राधा की एक सखी)। र०प्रि० ७-३१-४।

चंद्र—१-सं०पु० एक०। चन्द्रमा। र० प्रि० १-२५-१। ७-२६-३। ७-३८-१। ८-३५-२। क० प्रि० १-१२-२। ४-७-२। ७-२६-३। २-पु० एक०। श्रीरामचंद्र जी। क० प्रि० १३-१६-३। रा० ६-४६-२। ८-११-२। ६-३१-४। छं० १-२१-३। वी० २१-१८-२। ज० ३५।

चंद्रक—१-सं० पुं० एक०। कपूर-र०प्रि० ८-२६-२। रा० २६-२५-२। २-जल-क० प्रि० ७-३६-२।

चंद्रकला—१-सं० स्त्री० एक०। चंद्रमा का १६वाँ भाग। र० प्रि० ६-२६-२। क० प्रि० ११-६१-१। २-स्त्री० एक०। चन्द्रमा की किरण। रा० २३-३-२२। ३-वर्ण वृत्त।

चंद्रकेतु—सं० पु० एक०। लक्ष्मण का पुत्र। रा० ३६-२६-२।

चंद्रचूड—सं० पुं० एक०। महादेव। रा० ५-३६-२।

चंद्रबदनि—वि० (विशेष्य-वाम) चंद्र के समान मुखवाली। रा० ६-२३-२।

चंद्र ब्रह्म छंद—सं० पुं० एक०। छंद विशेष। छं० १-३६-३, १-पृ० स० ४४८-३८।

चंद्रमाता—सं० स्त्री० एक०। चंदमाता नदी। वि० गी० ६-२०-२।

चंद्र मंडल—सं० पुं० एक०। चंद्रबिंब। चन्द्रमा के चारो ओर कभी-कभी दिखाई देनेवाली गोलाकार परिधि। क० प्रि० १५-५४-२।

चंद्रमा—१-सं० पुं०एक०। चाँद, चंद्रबिंब, चन्द्रमा के चारो ओर। क० प्रि० ७-२६-४। ११-६६-४। रा० २७-६-७। ३०-६-४

चंद्रमुखी—१-सं० स्त्री० एक०। चन्द्रमा के समान मुखवाली। वि० गी० ८-४२-१। २-स्त्री० बहु०। चंद्रमुखीन वि० गी० ८-४२-१।

चंद्ररेखा—सं० स्त्री० एक०। चंद्रलेखा, चंद्रकला। रा० २०-१०-२।

चंद्रसहित—वि० (विशेष्य-राजा दशरथ की पुरी)। रामचन्द्र सहित। रा० १-४६-२।

चंद्रसेन—सं० पुं० एक०। राजा चन्द्रसेन। क० प्रि० ११-३८-४।

चंद्रहास—सं० पु० एक०। एक पौराणिक पुरुष। ज० १६-२।

चंद्रातप—सं० पु० एक०। चाँदनी। रा० ३२-४४-१।

चंद्राननी—वि० (विशेष्य-भागीरथी) चंद्र समान मुखवाली। रा० १०-३६-१ वी० ११-१६-१।

चंद्रिकनि चर्चित—वि० (विशेष्य-हास)। चंद्रिका से युक्त। वी० २०-१२-२।

चंद्रिका—१-सं० स्त्री० एक०। चाँदनी, ज्योत्स्ना। र० प्रि० ४-७-२। ६-३८-१। क० प्रि० ४-७-२। ६-३८-१। १५-४१-१। रा० १-५-२। १-६-२। ४-६-२। वी० १५-७। ज० ३५-७।

वि० गी० १०-१८-१ । २—पु० एक० शिरोभूषण विशेष । क० प्रि० ६-९-१ ।

चंद्रिका प्रकाश—सं० पु० एक० । चादनी की क्रांति । रा० २७-६-८ ।

चंद्रिका समेत—वि० (विशेष—चंद्र) चाँदनी युक्त । रा० २८-२०-१ ।

चंद्रिका सिन्धु—सं० पु० एक० । चाँदनी रूपी क्षीर । रा० ३०-४५-१ ।

चंपक—[चप् + ण्वुल् + अक्] सं० पु० एक० । चंपा (पुष्प विशेष) । र० प्रि० ७-२४-१, ८-२१-२ । १४-२२-२ । क० प्रि० ५-१६-२ । ५-१९-३ । ६-१६-२ । रा० ३२-६-१ । वी० २०-१५ । चंप—र० प्रि० ३-८-४ । १४-२०-१ । चंपै (पु० बहु०) । र०प्रि० ५-३१-४ । क० प्रि० १५-३१-४ ।

चंपक कली—सं० स्त्री० एक० । चंपे की कली । र० प्रि० ५-२७-४ ।

चंपक दल—सं० पु० एक० । चंपक पुष्पों का दल । वी० २१-९ ।

चंपक मार—(१) स० स्त्री० एक० । चंपे की माला । रा० ६-४-३-१ । (२) वि० (विशेष्य—वहे) चंपक-माला मय । रा० ६-४३-१ । उदा० "अमल कपोलै आरसी वाहे चम्पक मार । चम्पक माल-वी० २०-१४

चंपतराय—सं० पु० एक० । वीरसिंह का दरबारी । वी० ४-४७-१ ।

चंपत है—क्रि० पु० बहु० । दबते हैं । व्याकुल होते है । रा० १३-८८-३ ।

चंपावली—सं० स्त्री० बहु० । चंपक कलियाँ । र० प्रि० ३-१०-२ । क० प्रि० १५-१३-१ ।

चंपकली-दल—सं० पु० बहु० । चंपक कलियों के ऊपर की पंखुडियाँ । क० प्रि० १५-१३-१ ।

चंपानैर—सं० पु० एक० । स्थान विशेष ज० १००-२ ।

चँपि—क्रि० । चँपकर, दबकर । क० प्रि० ४-९-१ ।

चँवर—[चामर] सं०पु० एक० । सरगाय की पूँछ के बालो का गुच्छा, व्यजन, पंखा । र० प्रि० ८-४२ । क० प्रि० ५-७-१ । ८-२२-१ । रा० २७-११-१ । ३९-९-२ । वी० ५-१०४ । चमर—रा० ६-६५-२ ।

चाँदनी—सं० स्त्री० एक० । चंद्रिका । वी० ६-४८ । ११-१५ । २२-३७ । २३-३५ ।

चाँदपुर—सं० पं० एक० । एक स्थान का नाम । वी० ३-१७ ।

चक्र—१—सं० पु० एक० । सुदर्शन चक्र । क० प्रि० ६-६-२ । कुम्हार का चक्र—क० प्रि० ६-७-२ । चाक—चाक—क० प्रि० १६-६१-२ । बवंडर—क० प्रि० १०-२७-१ । सूर्य की पहिया—क० प्रि० ११-५-१ । रा० ३७-२-४ । चक्र-वाक पक्षी—रा० ३७-२-४ । वी० १५-१९ । चक्रायुध—रा० १९-४६-४ । (२) सं० पु० बहु०—दिशाएं । र० प्रि० ८-६-४ । क० प्रि० ६-६१-३ । पहिया—र० प्रि० ५-२०-२ । १५-५-१ । चक्र—क० प्रि० १५-२०-१ ।

चक्रधारी—सं० पु० एक० । चक्र को धारण करने वाला (विष्णु) । वि० गी० २-८-४ ।

चक्रवर्ती—सं० पु० बहु० । छ चक्रवर्ती-वेणु, बलि धुधुमार, अजपाल, प्रवर्तक और मान्धाता । क०प्रि० ११-१५-२ ।

चक्रवाक—सं० पु० एक० । चकवा (एक पक्षी जो भारतवर्ष मे जाडे के दिनो मे जलाशयो के किनारे पाया जाता हे और जिसके विषय मे यह प्रसिद्धि है कि रात मे जाडे से उसका वियोग हो जाता है । क० प्रि० ५-१७-२ । १५-२४-२ । ज० ३ । चकवा—र० प्रि० ११-१८-२ ।

चक्री—(१) स० पु० एक० । सर्प । रा० १२-५०-१ । (२) पु० एक० । वह जो चक्र धारण करे (विष्णु) । छं० २-२६-५ । वी० १-१-५ ।

चकई—सं० स्त्री० एक० । चकवी । र० प्रि० ७-३१-३ । वी० ३२-४-४६ ।

चकचौध—सं० स्त्री० एक० । आश्चर्य चकित । र० १-३८-४ ।

चकरी—स० स्त्री० एक० । चक्की (आतशबाजी की चक्की) । क० प्रि० । ६-६-२ ।

चकारि—क्रि० गरज गरज कर । रा० १६-८-२ ।

चकित—वि० (विशेष्य–चित्त) चकाए हुए । र० प्रि० ८-४४-१ ।

चकोर—[चक् (तृप्त होना)+ओरन्] (१) सं० पुं० एक० । तितरी की जाति का एक पक्षी जो चन्द्रमा का परम प्रेमी माना जाता है । र० प्रि० ३-७३-३ । क० प्रि० ५-३०-१ । ५-३३-४ । १४-२१-४ । रा० ५-६-२ । ५-११-२ । ६-३१-४ । ६-३६-२ । ६-४३-१ । ११-३३-२ । छं० १-७८-५ । वी० १५-१६ । २०-२५ । ३३-४६ । ज० १०-५ । वि० गी० १६-६८-४ । (२) पुं० बहु० । चकोर । र० प्रि० ७-३१-४ । क० प्रि० १५-५५-१ । १५-५६-२ । १६-३२-२ ।

चकोर तनया—वि० (विशेष्य–सीता) चकोर पुत्रीवत्, सोदर्य या प्रेम पात्री । रा० ५-३३-२ ।

चकोर-विलोचन-भा—सं० स्त्री० एक० । चकोर की आँखो की आभा । र० प्रि० ३-७३-३ ।

चकोरन—सं० पु० बहु० । पक्षी-विशेष (दे० चकोर) । क० प्रि० ११-३६-२ । वि० गी० ८-४२-१ । चकोरनि—र० प्रि० ६-५६-२ । क० प्रि० ७-२५-२ ।

चकोरनि—सं०स्त्री० एक० । मादा चकोर । छं० १-७८-५ । २-३८-६ ।

चक्षु—[चक्ष् + उस्] सं० पुं० बहु० । नेत्र । वि० गी० १६-६२-४ ।

चढ्यो—क्रि० पुं० एक० । चढा । र० प्रि० ८-२६-४ । १५-५-८ । रा० १६-२४-१ । १६-२४-२ । १६-२४-४ । २१-१७-१ । चढ्योई—रा० १६-२४-२ ।

चढ्योह रह्यो—स० क्रि० । चढकर रहो । रा० १५-२४-३ ।

चढ़—क्रि० चढकर, चढ़ा हुआ । रा० ७-५४-३ ।

चढ़ति—क्रि० स्त्री० एक० । चढती है । र० प्रि० ८-५-५ ।

चढ़ाई—१-क्रि० पु० एक । चढाया । र० प्रि० २-६-२ । २–चढाकर । क०

(३) विशेषण। विशेष्य—विभासी। वी० च० १०-३६-१। अज्ञानतापूर्ण वी० च० ११-२८ २।

अच्छति—क्रियापद। उछालती हुई। रा० १५-३१-१।

अचल—स० पु० बहु०। (१) पहाड, पर्वत। क० प्रि० ७-७-४। ७-६-१। (२) विशेषण। विशेष्य—वित्त। र० प्रि० ३-५-१। जो चंचल न हो, दृढ। र०प्रि० ३-४८-२। १४-३४-३। क०प्रि० ७-७-४। १४-२७-२। १४-२७-३। १६-८-१। वी० च० १-१७-३। १७-४१-१।

अचला—स० स्त्री० एक०। पृथ्वी। क० प्रि० ५-२६-३। रा० ५-४३-२। वी० च० १-१७-३, २६-१६-३, वि० गी० १०-१५-२।

अचलाचल दामिनी को दुखदाई—विशेषण। विशेष्य—पावस काल। पृथ्वी तथा दामिनी को दुख पहुँचानेवाला। वि० गी० १०-५-२।

अचलु—(१) स०पु०एक०। पर्वत। जहाँ० ११०-१। (२) विशेषण। विशेष्य—राजा दशरथ। रा० २-१०-१। स्थिर मनवाला। जहाँ० ११०-१।

अचिरज—[स० आश्चर्य] स० पु० एक०। आश्चर्य की बात। क० प्रि० ६-२८-३।

अचेत—विशेषण। चेतनहीन। क० प्रि० १२-२४-४। वि० गी० ३-४२-४। ८-२६-४।

अच्छ—(१) सं० पु० एक०। (अ)—अक्षयकुमार। रा० १४-३४-१। (आ) अविनाशी (ब्रह्म के पक्ष मे)। लिपि (सुदरी के पक्ष मे)। रा० १३-८१-१। (२) विशेषण। विशेष्य—गति। श्रेष्ठ। वि० गी० २०-३६-४।

अच्छा—विशेषण। विशेष्य—भूमि। उत्तम कोटि की। वि० गी० ११-८-२।

अच्युत—विशेषण। विशेष्य—चिदानद। जिसका कभी क्षय न हुआ, न होता और न होगा, सनातन ब्रह्म। वि० गी० २१-१५-२, १८-२५-२।

अज—(१) स० पु० एक०। बकरा। क० प्रि० ६-४३-१। (२) सं० पुं० एक०। ब्रह्मा। र० प्रि० १४-४०-२। क० प्रि० १६-८-३। वि० गी० १४-६-४। (३) विशेषण। विशेष्य—राम। रा० २०-५५-१। अजय, जिसको कोई जीत न सकता हो। क० प्रि० १६-८-३। वि० गी० १४-२६-२। १८-१५-१।

अजगर—सं० पु० एक०। साँप। जहाँ० १७।

अजचंद तनय—विशेषण। विशेष्य—दशरथ। राजा अज का पुत्र। अयोध्या के सूर्यवशीय राजा रघु के पुत्र थे अज, उनकी स्त्री का नाम इंदुमती था जिसके गर्भ से दशरथ उत्पन्न हुए थे। रा० १३-७३-२।

अजन्म—विशेषण। विशेष्य—देव। जन्म से परे। वि० गी० १५-४५-१।

अजय—स० पु० एक०। छंदविशेष, छप्पय छद के ७२ भेदो मे से पहला जिसमे ७० गुरु और १२ लघु मिलाकर ८२ वर्ण और २४२ मात्राएँ होती है। छं० मा० २-३०-१, २-३१-१।

प्रि० ४-१०-५ । र० ५-२७-४ । ६-३५-३ । ७-३१-१ ।

चढ़ाइकै—क्रि० चढ़ाकर । रा० ४-६-४ । चढाएँ—र० प्रि० ७-२६-५ । चढ़ा ।

चढ़ाइबो—क्रि० पुं० एक० । चढाऊँगा । रा० ४-१६-४ ।

चढ़ाउ—क्रि० चढाओ । रा० ४-२१-१ । ५-३६-२ । ७-२३-२ । चढाव—र० प्रि० ८-४-५ ।

चढ़ाए—क्रि०पुं० बहु० । चढ़ाये । रा० १६-८-२ । चढाओ । रा० ३-३४-३ ।

चढ़ावई—क्रि० पुं० एक० । चढा सकता है । रा० ५-३६-२ ।

चढ़ावत—क्रि० चढ़ाने मे, चढ़ाते हुए । रा० ७-११-१ ।

चढ़ि—क्रि० चढाई करना । र० प्रि० ५-२०-३ । ६-२३-१ । १०-२१-७ । क० प्रि० १-२३-१ । १-२३-२ । रा० १३-१५-१ । २०-२७-२ । १६-२४ १ । (चढा) १७-४२-२ । (चढ़ना) ।

चढ़िजे—क्रि० चढिये । क०प्रि० ३-४८-२ ।

चढ़िबे—क्रि० चढने के लिए । रा० १०-२०-२ ।

चढ़ीं चढ़ीं—क्रि० स्त्री० बहु० । चढ गयी । रा० २२-८-१ । २२-६-१ ।

चढ़ी चढ़ी क्रि० स्त्री० एक० । चढ़ी हुई । र० प्रि० ६-३४-४ । ७-२३-२ । रा० ८-६-१ । १४-७-२ ।

चढ़े चढ़े—क्रि० पु० बहु० । चढ गये । र० प्रि० ५-३१-२ । रा० ३-३३-२ । ८-१४-१ । १०-१५-२ । १०-१८-२ ।

चढ़ैगी—क्रि० स्त्री० बहु० । चढेगी । र० प्रि० ३-१६-३ ।

चढ़ौ चढ़ौ—क्रि० पुं० एक० । चढ़ गया । रा० ५-१३-१ ।

चढ़ौई—क्रि० चढ़कर । रा० २४-२२-१ ।

चढ़ौवे—क्रि० चढा के । र० प्रि० ६-४०-१ ।

चतुर्दस—वि० (विशेष्य-लोक) । चौदह । रा० २०-१५-१ ।

चतुर्भुज—सं० पुं० एक० । विष्णु (चार भुजाएँ है जिनके) । वी० १६-२७ । १६-२२ । १६-२३ । १६-३४ ।

चतुरमुख—(१) १—स० पुं० एक० । शारदा के पक्ष मे । २—पुं० बहु० । चारो ओर, शरद ऋतु के पक्ष मे । क० प्रि० ७-३४-३ । (२) १—पुं०एक० । ब्रह्मा—नरसिंह के पक्ष मे । (२) १—पुं० बहु० । चारो ओर—अमरसिंह के पक्ष मे । क० प्रि० ११-३०-१ । (३) पुं० एक० । चार मुखो वाला ब्रह्मा । क० प्रि० १५-३८-३ ।

चतुर—(१) सं० पुं० एक० । होशियार । क० प्रि० ११-४७-१ । (२) १—वि० (विशेष्य—विधि) चार । र०प्रि० १५-१-२ । क० प्रि० ४-३४-३ । ११-११-२। ११-३०-१ । वि०गी० १-२५-३ । १०-२१-३ । १६-५८-१ । १६-१२४-१ । २—(विशेष्य—सुत) चालाक । रा० १-२२-२ । र० प्रि० १४-१-२ । (विशेष्य—चित्त) । क० प्रि० ४-८-२ । (विशेष्य—विचार) । रा० २५-६-१ । (विशेष्य—प्रतिहार) । छं० २-२६-६ । (विशेष्य—उर) । वी० १-१-५ । (विशेष्य—उर) । वि०गी० १४-५१-१ । (विशेष्य—प्रतिहार)

चतुरंग—सं० पुं० एक० । चतुरंगिनी सेना । क० प्रि० ५-३५-१ । ज० १८७ । सेना के चार विभाग-रथ, तुरग, ध्वज और पदाति ।

चतुरंग सेनहि—सं० स्त्री० बहु० । चतुरंग सेना (दे० चतुरंग) । वि० गी० १६-६८-४ ।

चतुरअति—वि० (विशेष्य-पूत) अत्यन्त बुद्धिमान । र० प्रि० १४-१६-३ ।

चतुर पंच षट सहस मुख—सं० पु० बहु० । चतुर मुख—ब्रह्मा । पंच मुख—शिवजी । षटमुख—कार्तिकेय । सहस्र मुख-कार्तवीर्य । वि०गी० १०-२१-३ ।

चतुरबदन—सं० पुं० एक० । चार मुख वाले-ब्रह्मा । विस्तार के लिए दे० चतुरानन । रा० २०-३१-१ ।

चतुरमुख—सं० पुं० एक० । (दे० चतुरानन) । वि० गी० १-२५-२ ।

चतुर व्यूह—सं० पुं० बहु० । चार प्रकार के व्यूह । शकट व्यूह । क्रौंच व्यूह । धनुष्य व्यूह । चक्र व्यूह । क० प्रि० १-११-२ ।

चतुराई—सं० स्त्री० एक० । चालाकी । र० प्रि० २-६-४ । ७-२६-१ । १२-२८-२ । क० प्रि० ११-४७-१ । १५-५१-३ ।

चतुराईमय—वि०(विशेष्य-सिंगार) । चतुराई से युक्त । वी० २०-१७-२ ।

चतुरानन—सं० पुं० एक० । चार मुख वाले ब्रह्मा । रा० २५-७-२ । ३३-१-४ । ३३-३-२ । वि० गी० १६-५८-१ । (मत्स्य पुराण के तृतीय अध्याय मे ब्रह्मा के चतुर्मुख होने का कारण इस प्रकार लिखा गया है—ब्रह्मा के शरीर से एक कन्या उत्पन्न हुई । ब्रह्मा उस कन्या को देखकर काम से पीडित हुए । पश्चात् वे कन्या की ओर सतृष्ण दृष्टि से देखते रहे । वह कन्या घबराकर उनके चारो तरफ प्रदक्षिणा देने लगी । चारो ओर से कन्या दृष्टिगोचर हो इस विचार से ब्रह्मा के चारो ओर चार मुख हो गये । (मत्स्य पुराण, अध्याय ३)

अधिकांशत. पुराणो में ब्रह्मा के चतुर्मुख होने के कारण इस प्रकार है—वामन पुराण मे लिखा है कि सृष्टि-संहार के बाद परब्रह्म सहस्र वर्ष निद्रा वस्था मे पडे थे । नीद टूटने पर उन्होंने रजोगुण से पंचवदन ब्रह्मा की ओर तमोगुण से पंच वदन शंकर की सृष्टि की । लेकिन शंकर ने उत्पन्न होते ही तपस्या करना शुरू कर दिया । भगवान् ने शंकर की योग प्रभा देखकर सोचा कि इनसे इस प्रकार सृष्टि का कार्य नहीं चलेगा । तब उन्होंने अहंकार की सृष्टि की । ब्रह्मा और शंकर अहंकार के वशीभूत होकर आपस मे झगड़ा करने लगे । तब शंकर ने अपने नख से ब्रह्मा का एक मस्तक काट डाला था । तभी से ब्रह्मा चतुर्मुख हुए ।)

चतुरानन रूप रयो—वि० (विशेष्य-ब्रह्मा) चार मुखो के रूप से रंजित । रा० २१-१७-२ । (दे० चतुरानन) ।

चतुराश्रम—सं० पु० बहु० । जीवन के चार आश्रम । ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और संन्यास । वी० १-३१-१ ।

चतुष्कला—सं० पुं० बहु० । चतुष्कलाएँ । गीत, वाद्य, नृत्य और नाद । छं० २-२ -१ । २-२५-१ । २-३४-१ ।

चतुष्पद—सं० पुं० एक० । एक उपाधि । वी० १७-१ । २७-२ । ज० ४१-११८ ।

चपत—[सं० चपट] क्रि० पु० बहु० । दब जाते है । र० प्रि० ७-३२-१ । ११-१८-४ ।

चपल—[√चुप् (रेंगना)+कल] १–वि० (विशेष्य—नैनी) चंचल । र० प्रि० १४-१३-४ । क० प्रि० ६-३४-१ । २–(विशेष्य—गति) तीव्र । वी० ५-१०-१ ।

चपलता—सं० स्त्री० एक० । चपलाई (एक व्यभिचारी भाव; मात्सर्य, द्वेष, अनुराग आदि के कारण चित्त की अस्थिरता को चपलता कहते हैं) । र० प्रि० ६-१२-२ । चपलाई—वि० गी० १४-२१-१ ।

चपल नैनि—सं० स्त्री० एक० । चंचल नेत्रवाली । र० प्रि० १४-१३-४ ।

चपला—सं० स्त्री० एक० । बिजली । र० प्रि० ५-२६-२ । ६-२३-१ । ६-२६-१ । क० प्रि० ६-२७-४ । ८-४३-२ । १०-२८-३ । रा० १३-१२-२ । १३-१७-१ । १३-१८-४ । वी० ८-३६ ।

चपि—क्रि० दबकर, कुचली जाने से । रा० १६-१३-२ । ३५-९-१ । चपे—रा० ३६-१६-१ ।

चपैं—क्रि० दबने लगे । रा० १८-२१-२ ।

चबूतर—स० पु० एक० । ऊँचा स्थान । वी० ७-६ ।

चमक—सं० स्त्री० एक० । छटा । कांति । र० प्रि० ६-३७-२ । रा० ३१-७-२ ।

चमकत—१–क्रि० पु० एक० । चमकता है । र० प्रि० १४-१३-६ । १५-५-१ । रा० ३२-४६-२ । २–क्रि०स्त्री०एक० । चमकती है । चमकति—र० प्रि० १०-२१-१ । चमकै—रा० १३-१२-२ ।

चमू—[√चम् (नष्ट करना)+णिच्+ऊ] सं० स्त्री० एक० । सेना का वह भाग जिसमे ७२९ हाथी, ७२९ रथ, २१८७ सवार और ३६४५ पैदल होते थे । क० प्रि० ५-३५-१ । ८-२३-१ । ८-१४-४ । ११-११-२ । १२-१९-१ । १५-८१-२ । रा० १०-१६-१ । १०-१८-२ । ३४-२९-२ । ३४-४६-२ । २४-९-१ । ३५-१४-१ । वी० ७-७ । ज० १८७ । चमूचय (सेनाओं का समूह) पु० एक० । रा० ३४-८-१ ।

चमूप—सं० पुं० एक० । सेनानायक । रा० ३६-१६-१ । चमूपति—क० प्रि० ८-१४-४ ।

चमेली—सं० स्त्री० एक । पुष्प-विशेष जो अत्यन्त सुगन्धित है । क० प्रि० १२-२४-२ । १३-२६-३ । १४-८-३ । वी० २३-१४-२ ।

चय—सं० पु० बहु० । समूह । र० प्रि० ११-६-३ । क० प्रि० ८-२३-१ ।

चयन—सं० पु० एक० । चैन । आराम । रा० २८-१५-१ ।

चर—[चर् (गमन)+अच्] (१) १–सं० पुं० एक० । दूत । वि० गी० । १२-१२-३ । २–सं० पुं० बहु० ।

अस्थिर जीव, चलनेवाले प्राणी । क० प्रि० ६-६८-२ । ७-३०-३ । (२) वि० (विशेष्य--शरीर) चलनेवाले, जीवित । क० प्रि० ६-१२-४ । रा० १६-१७-२ । वी० २५-१६-२ ।

चरचै—क्रि० चर्चित, लगा हुआ । रा० १-२८-२ ।

चरन—१-स० पु० बहु० । पैर । र० प्रि० ३-११-१ । क० प्रि० ४-९-१ । ४-११-२ । ५-३०-२ । ११-२५-३ । छं० २-२-२ । र० १-१-२ । २-सं० पु० एक० । पंक्ति (छंद का एक पाद) क० प्रि० ३-३९-१ । रा० १०-२७-२ । (पैर) छं० १-१०-१ । (छंद का एक पाद) र० १-१-२ । (पैर)। वी० १-१-१ । (चरण) । ३-सं० पु० बहु० । (दिशाएँ) । वि० गी० २९-५-२ । चरननि—र० प्रि० ७-३२-१ ।

चरन कमल—सं० पुं० एक० । चरण रूपी कमल । रा० २१-५४-१ । २१-५८-२ ।

चरणोदक—सं० पु० एक० । वह जल जिसमे किसी के पैर पखारे गये हो । रा० ६-२१-२ । चरनोदक । छ० १-३२-४ । वि० गी० १-१६-१ । चरनोदकानि पुं० बहु० । वि० गी० ८-४३-२ ।

चरहूँ—सं० पुं० एक० । दूत, सेवक । वि० गी० १२-१२-३ ।

चराइये—क्रि० चराना । र० प्रि० १३-५-८ । (यहाँ आस्वादन के लिए स्वच्छन्द छोड देना, विचरण कराना) ।

चराचर—सं० पु० एक० । आकाश । क० प्रि० १२-२६-१ ।

चराचरहंस—वि० (विशेष्य--राम) । चराचर या स्थावर जंगम के मालिक । रा० ३४-२४-२ ।

चरावत—क्रि० । चराते हुए । र० प्रि० ६-४३-४ ।

चरावैं—क्रि० । चराए । र० प्रि० ३-१०-३ ।

चरित—(१) सं० पु० एक० । शील । रा० २७-१०-१ । (२) पु० एक० । आचरण । र० १-३-१ ।

चरित्र—(१) १-सं० पुं० एक० । चाल चलन, आचरण । र० प्रि० ८-५४-२ । क० प्रि० ६-३१-२ । १०-३१-३ । रा० २-२५-२ । वी० १-३३ । (कहानी) वी० गी० १६-४४-२ । (स्वभाव) वी० गी० १०-९-१ । पु० बहु० (आचरणो के) । २-पुं० बहु० । व्यवहार, कर्मकलाप । र० प्रि० ३-७-४ । (२) वि० (विशेष्य--नैननि) । चंचल स्वभाववाले । र० प्रि० १२-१६-२ । चरित्रनि-र० प्रि० ६-२३-२ ।

चर्चा—सं० स्त्री० एक० । कथा, वृत्तान्त । रा० २१-१६-२ । "सुने सु सीतापति साधु चर्चा ।"

चर्न—सं० पु० बहु० । चरणो (का) । वि० गी० ७-१२-२ ।

चर्म—सं० पु० एक० । चमड़ा, त्वचा । क० प्रि० ६-२१-२ । रा० १९-४५-३ ।

चर्मवती—सं० स्त्री० एक० । नदी विशेष । वि० गी० ६-१३-१ ।

चर्मानिला—सं० स्त्री० एक० । चर्मानिला नदी । वि० गी० ६-१३-१ ।

चलैहूं—क्रि० चलने पर । र० प्रि० २-७-२ । "चित्त चलै हूँ ना चलै" ।

चलंति—क्रि० स्त्री० एक०। चलती है। रा० १-२६-२। चलति–रा० १४-३७-१।

चल—(१) सं० पु० एक०। चंचल बुद्धि-वाले। वी० १-१६-२। (२) वि०। (विशेष्य–ध्वजा) चंचल। रा० १०-२४-१। र० प्रि० १-२३-२। क०प्रि० ३-८-२। रा० ३१-३६-२। वी० २२-८७-२। ज० ५६-३। वि० गी० १०-५-२।

चलचित्त—वि० (विशेष्य–प्रानरपद) चंचल चित्त वाला। वि० गी० २०-५-१।

चलत—क्रि० चलते ही, चलते वक्त। र० प्रि० ५-१६-२। ६-२५-८। ६-३६-१। क० प्रि० ६-७-४। रा० २-२७-१। ६-३०-१। २७-१५-३।

चल तरंग तुङ्गावली चारु संचारिनी–वि० (विशेष्य–गोदावरी)। चंचल और ऊँची उठनेवाली तरंगो की सुन्दर पंक्तियो सहित बहनेवाली। रा० ११-२३-१।

चलदल—सं० पु० एक०। पीपल का पत्ता। क० प्रि० ६-२५-१। रा० २८-८-१। ज० ५६। वि० गी० १-२७-२१।

चलदल-दल—सं० पु० एक० वहु०। पीपल के पत्ते। क०प्रि० १५-२१-१। चलदलै–रा० १-४६-१।

चलन—क्रि०। चलने। रा० १३-४७-१।

चलनि—(१) सं० स्त्री० एक०। चाल। र० प्रि० २-१६-२। क० प्रि० ४-१७-३। (२) क्रि०। चलना। र० प्रि० ६-२४-१।

चलहि—क्रि०। चलो। र० प्रि० ८-४४-५।

चलाइहौ – स० क्रि०। चलाओगे। र० प्रि० ५-१४-३।

चलाई—क्रि०। चलाया। क० प्रि० ५-३५-३। चलायो। रा० १२-६५-२। ३६-२३-१। चलाइयो। रा० २१-४-७।

चलाचल—वि०। (विशेष्य–नैननि की गति)। स्थिर तथा चंचल (कभी कभी चंचल)। र० प्रि० ३-१६-३।

चलाव—क्रि०। चलाओ। र० प्रि० ८-४-३।

चलावत—क्रि०। चलाते। र० प्रि० १६-३-२।

चलावत ही—क्रि०। चलाते ही। रा० १७-४०-३।

चलि—क्रि०। चलो, चले जाओ। र० प्रि० ५-२३-३। रा० १२-१५-१।

चलिये—क्रि०। चलिये। रा० ६-१३-१।

चलियै—क्रि०। चलना चाहिए। र० प्रि० १०-५-२।

चलीं—क्रि०। चली। र० प्रि० ७-३१-४।

चली—क्रि० स्त्री० एक०। जा रही है, चल दिया, चला। र० प्रि० ६-५२-१। क० प्रि० ३-१३-१। रा० १-३६-३।

चली अकुलाइ कै—सं० क्रि० स्त्री० एक०। व्याकुल होकर चली गई। र० प्रि० ७-२४-६।

चलैं सुनि के—सं० क्रि०। चलने की बात सुनकर। र० प्रि० १-२३-२।

चले—क्रि० पुं० वहु०। चले गये। र० प्रि० ३-३६-२। ५-२८-६। ५-३०-२। ११-१२-१। १३-११-७। क० प्रि० ३-१२-३। रा० ३-३४-४। ४-२८-२। ५-३-२। ५-७-१। ७-५३-२। ६-५-

२। ६-७-१। ७-५३-२। ६-५-२। १७-४४-१। १८-३२-३। १६-३६-१। २६-१५-१। ३१-२-१। ३२-४६-१। ३६-५-१। ३७-२-२। ३८-१८-२। र० ४५-१-१। वी० ६-४६-२।

चलै—(१) वि०(विशेष्य—पिप्पलै) चंचल। रा० २०-३८-१। वि०गी० १०-६-१। (२) क्रि०। चलेगे, चलो। र० प्रि० १-२०-३। रा० २-१७-२।

चलो—क्रि० पु० एक०। चलूँगा। रा० २४-२७-१।

चहति—क्रि० स्त्री० एक०। चाहती। र० प्रि० ११-१७-६। रा० १४-२६-१।

चहुँ—वि० (विशेष्य–दिसि) चारो। र०प्रि० ५-२८-३। ५-३। १-२। ८-४४-१। क० प्रि० ५-३३-४। ७-२७-४। ६-३०-४। रा० १३-६६-१। ज० ३०-३। ४०-१।

चहु—वि०। (विशेष्य—ओर)। चारो। वि० गी० १६-६६-२। चहूँ-र० प्रि० ३-७३-३ (विशेष्य–दिसि)।

चहे—क्रि०। चाहता है। रा० ७-३१-४।

चादनी—सं० स्त्री० एक०। ज्योत्स्ना। र० प्रि० ८-२६-२।

चांपत—क्रि० दबाते। रा० २७-१३-३। 'चंचु चांपत आँगुरी सुक ऐंचि लेत डेराई।'

चाँपि—क्रि०। दबाकर। रा० १६-६-२। ३०-३५-४।

चाक—[स० चक्र] १–सं० पु० एक०। चक्र। र०प्रि० ८-२६-४। २–पु०एक०। (१) पहिया। (२) आस्तीन या दामन का खुला हुआ भाग। क० प्रि० १५-२०-१।

चाकर—स० पु० एक०। सेवक। नौकर। क० प्रि० ६-३४-१।

चाखि—क्रि० चखकर। र० प्रि० १४-३६-३।

चाखौ—क्रि०। चखा। र०प्रि० १४-२६-२। चाख्यो–६-१५-४।

चाटत—क्रि०। चाटता है। रा० २०-४०-१।

चाटैं—क्रि०। चाटने पर। र० प्रि० ५-१०-२।

चाणूर—सं० पु० एक०। कृष्ण के हाथो मारा गया कंस का एक मल्ल। क० प्रि० १६-१७-१।

चातक—सं० पु० एक०। पपीहा (एक पक्षी जो स्वाति नक्षत्र मे होनेवाली वर्षा का जल पीता है, फलतः सदा बादलो की ओर टकटकाये रहता है)। र० प्रि० ६-२६-३। १२-१२-३ क० प्रि० ७-३१-१। ८-५३-३ १५-६६-२। रा० १३-१७-१। २६-३५-१। ३०-१८-३। वी० १०-१५-२। ११-३-१। ११-६-२। २३-३७-१। ज० ११७-२। वि० गी० १०-८-४। २–पु० बहु०। पपीहे। क० प्रि० १५-५५-१।

चातकचय—सं० पु० एक०। चातको का समह। रा० ३०-३२-३।

चातक-चित—सं० पु० एक०। पपीहे रूपी मन। र० प्रि० ६-२६-३।

चातकी—[चत् (माँगना) + ण्वुल-इक] सं० स्त्री० एक०। मादा पपीहा।

र० प्रि० ११-१७-३ । १३-१२-४ । क० प्रि० १२-१७-४ । रा० १४-२९-३ । चातिक-र० प्रि० ६-६-४ ।

चातुरी—सं० स्त्री० एक० । चालाकी । र० प्रि० १-१७-१ । ३-४३-३ । क० प्रि० ४-१७-३ । १४ ३१-४ ।

चातुरी की साला—वि० (विशेष्य-वाला) चतुर । क० प्रि० १४-३१-४ ।

चातुर्य साला—वि० (विशेष्य-चित्त) । चतुराई का धाम । रा० ६-२७-२ ।

चाप—सं० पु० एक० । धनुष । रा० ३-३३-२ । २-१९-४ । ७-२३-२ । ७-२४-१ । ७-५४-२ । १२-१३-२ । वी० ८-१२-१ । १९-७-२ ।

चामर—[चमरी+अण्] सं० पुं० एक० । चँवर, मोरपंख । रा० १२-६२-३ । वि० गी० १३-४१-१ ।

चामर छंद—सं० पुं०एक० । छंद विशेष । छं० १-५३-२ । चामर के चरणमे रगण, जगण,रगण, जगण और रगण अर्थात् गुरु लघु वर्णों के क्रम से १५ वर्ण होते हैं । आठवें पर यति होती है (संस्कृत) । उदा० 'अप्रमेय को न शुद्ध वंधिके बनाइये ।

चमीकर—सं० पुं० एक० । सेना । ज० १५० ।

चाय—सं० पुं० एक० । प्रेम । अनुराग । र० प्रि० ७-२९-३ ।

चार—वि० (विशेष्य-मुख) चार ४ संख्या विशेषण । रा० १-२४-४ । २५ ९-१ । र० ३९-२-१ । वी० ३१-२२-१ ।

चारन—सं० पु० एक० । चारण वंश विशेष, गाने वाला भाट । रा० ३-१०-१ ।

चारि—वि० (विशेष्य-पौरि) । चार । र० प्रि० १-४-४। १२-२१-२। १४-४१-२ । क० प्रि० १-१५-१ । रा० २९-२६-१ । ज० ३०-३-१ । वि० गी० ४-६-१ ।

चारि कर्म जुत—वि० (विशेष्य-विप्रकुल) । चार कर्मो से युक्त । वि० गी० २९-४३-१ । (पुराणो के अनुसार भजन-भाजन, अध्ययन-अध्यापन, दान और प्रतिग्रह विप्रो के चार कर्म हैं, अर्थात् जो सर्वथा अपने और यजमान के यागादि कार्य संपन्न करते हैं और दूसरो को पढ़ाते हैं तथा सत्पात्र को दान देते हैं और सत्पात्र से दान लेते हैं अथवा जिनमे धर्म बीज अंकुरित होता हे उन्ही को विप्र कहते हैं ।)

चारि बाहें धरै—वि० (विशेष्य-विष्णु) । चार भुजावाले । रा० १६-१०-२ । (विष्णु के चतुर्भुज रूप का कारण ब्रह्म-वैवर्त पुराण मे यो निहित हे—एक दिन नारद ने लक्ष्मी की उत्पत्ति का विषय पूछा । नारायण ने कहा था कि सृष्टि के पहले रास-मण्डल स्थित परमात्मा श्री-कृष्ण के वाम भाग से लक्ष्मी देवी उत्पन्न हुई । वे अत्यन्त सुन्दरी थी । यह देवी उत्पन्न होते ही ईश्वर की इच्छा से दो रूपो मे विभक्त हो गयी । दोनो रूप गुण मे एक सी थी । उनका नाम राधिका और लक्ष्मी रखा गया । कृष्ण की वामाश-संभूता मूर्ति लक्ष्मी और दक्षिणाश संभूता देवी राधिका कहलायी ।

राधिका ने उत्पन्न होते ही श्रीकृष्ण की कामना की, पीछे लक्ष्मी ने भी प्रार्थना की। दोनों की अभिलाषा पूर्ण करने के हेतु श्रीकृष्ण दक्षांश से द्विभुज और वामांश से द्विभुज इन दोनों भागों में विभक्त हुए। पीछे द्विभुज मूर्ति में कृष्ण ने राधिका को ग्रहण किया और स्वीय चतुर्भुज नारायण मूर्ति लेकर लक्ष्मी की प्रार्थना पूरी हुई।

चारि लाख—वि० (विशेष्य-जोजनै) चार लाख (४,००,०००) वि० गी० ४-२२-१।

चारि वेद—सं० पुं० बहु०। चार वेद—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। वी० १-५२-१।

चारु—(१) सं० पुं० एक०। सदाचारी वि० गी० ५-८-१। (२) १-वि० (विशेष्य—पद) सुन्दर। क० प्रि० १-५४-१। रा० १-७-१ (विशेष्य—दरसन)। २-(विशेष्य—चित्त) शुद्ध, पवित्र। रा० १-२२-२।

चारुमति—वि० (विशेष्य—सुत) पवित्र चित्तवाला। रा० १-२२-२।

चारुमय—वि० (विशेष्य-सिंगार)। सुन्दर। वी० २०-१७-२।

चारु संचारिनी—वि०(विशेष्य गोदावरी। सुन्दर गतिवाली। रा० ११-२३-१।

चार्वाक—सं० पुं० एक०। चार्वाक दर्शन के रचयिता जो नास्तिक मत के प्रवर्तक और बृहस्पति के शिष्य बताये जाते हैं। वि० गी० ५-८-१।

चाल—१-सं० स्त्री० एक०। चलने की क्रिया, गति। र० प्रि० ७-२६-१। १५-७१-१। क० प्रि० ३-१३-१। १४-२५-१। रा० २६-६-१। २-पुं० एक० व्यवहार। रा० ३३-१६-२। चलहि-क० प्रि० १५-१२५-१। चालि-र० प्रि० ३-११-२।

चालनी—सं० स्त्री० एक०। चलनी। रा० २८-१८-१।

चालि आतुरी—सं० स्त्री० एक०। चपलता। रा० ३१-३७-२।

चलौं—क्रि०। डिगा हूँ। रा० ७-४१-३२।

चासु—सं० पुं० एक०। नीलकंठ। पक्षी। क० प्रि० ५-३०-१।

चाहत—क्रि० पुं० बहु०। चाहते हैं। र० प्रि० ८-३३-२। ६-१४-४। १०-८-७। रा० ५-३४-१। ७-२१-३। ७-२७-२।

चाहत चाख्यो—सं०क्रि०पुं० बहु०। चखना चाहते हैं। र० प्रि० ६-१४-४।

चाहति—क्रि० स्त्री० एक०। चाहती है। र० प्रि० ३-५६-४। रा० २२-११-४।

चाहन—(१) सं० स्त्री० बहु०। लालसाएँ, इच्छाएँ। र० प्रि० ८-११-३। (२) क्रि०। चाहने। रा० १३-३१-३।

चाहि—क्रि०। चाहकर। र० प्रि० ८-६-४। रा० ११-३६-२।

चाहिये—क्रि०। चाहिए। र० प्रि० ८-११-१।

चाहै—क्रि० पुं०एक०। चाहता है। र०प्रि० ३-१०-२। ८-१०-१। ८-२६-२। १०-२२-८। रा० १३-५८-१।

चाहौ—क्रि०। चाहते हो। रा० १३-२८-२। १३-२८-३।

चिंचु—(१) सं० स्त्री० एक० । चोंच । क० प्रि० ५-३०-१ । (२) स्त्री० बहु० । चिंचुनि । क० प्रि० ५-३-४ ।

चिंड—सं० पु० एक० । तलवार अथवा त्रिशूल घुमाते हुए जोर-जोर से गान करते हुए नाचना । रा० ३०-४५-२ ।

चिंतत—सं० पु० एक० । चिन्ता, फिक्र । रा० १३-४५-२ ।

चिंता—[चित + णिच् + अङ्] सं० स्त्री० एक० । खेद, दुःख । र० प्रि० ६-१२-२ । क० प्रि० ८-३८-१ । रा० ५-४०-२ । वी० ४-११ । वि०गी० ५-१०-२ ।

चिंतामणि—सं० पु० एक० । एक कल्पित रत्न जो जिसे माँगे उसे देता है । वी० ६-१३ । ज० २१-४० । चिंतामनि—क० प्रि० ६-६२-२ । रा० १-४५-१ । वि० गी० १६-८१-१ ।

चिकुर—[चि√कुर् (शब्द करना) + क] १–सं० पु०बहु० । बाल । वी० ११-१६-२ । २–पु०एक० । मन, अन्त करण । छं० १-६५-६ । वि० गी० ६-१६-२ । ६-३-२ । १०-२-२ । १४-२-२ । ३ पु० एक० । चितवन । वि० गी० १३-२३-१ ।

चितई—१–सं० स्त्री० एक० । दृष्टि, नजर र० प्रि० ६-५२-१ । २–क्रि० स्त्री० एक० । देखी । र० प्रि० ६-५२-१ । १४-१०-३ ।

चित चातुरी—सं० स्त्री० एक० । मन की अभिलाषा । क० प्रि० १५-४३-२ ।

चित-चारु—वि० (विशेष्य–सुत) शुद्ध चित्त-वाला । रा० १-२२-२ ।

चित-चाहन—सं० स्त्री० बहु० । मन की अभिलाषाएँ । र० प्रि० ८-११-३ ।

चित चोर—वि० (विशेष्य—चंचरीक) । आकर्षक, मनोहर । क० प्रि० १५-२०-१ । १५-४५-३ । १५-५६-२ । रा० ८-३-२१ । वी० १६-१५-२ । १७-४-२ ।

चित-चौरै—वि० । (विशेष्य—सुकतुंडनि की रुचि) । चित्त को आकर्षित करनेवाली क० प्रि० ५-३३-३ ।

चितयो—क्रि० देखो । र० प्रि० २-६-३ । ३-२५-४ । ७-३६-१ । ८-६-२ । १०-१५-१ । १४-६-२ । क० प्रि० ३-११-४ ।

चितवति—क्रि० स्त्री० एक० । देखती । र० प्रि० ८-४२-२ ।

चितवनि—वि० (विशेष्य—नायिका) । दृष्टि-वाली । र० प्रि० १३-१८-३ ।

चितवाए—क्रि० । देखने पर (देखने को प्रेरित करने पर) । र० प्रि० ३-६१-१ ।

चितवै—क्रि० । हेरना, देखा । र० प्रि० ५-५-१ । ७-१०-२ । ८-४१-१ । रा० २३-३६-२ ।

चितवो—क्रि० । देखती हो । र०प्रि० ३-६१-१ ।

चितसत्ता—सं० स्त्री० एक० । मन की शक्ति । वि० गी० २०-१३-२ ।

चितसारी—सं० स्त्री० एक० । चित्रशाला, शयनगृह । र० प्रि० ६-३४-४ ।

चिता—सं० स्त्री० एक० । मुर्दों को जलाने के लिए चुनकर रखी हुई लकडियों का समूह । र० प्रि० ८-२६-२ । क० प्रि० ११-७३-२ । रा० ५-६-२ । वी० ११-२३-२ ।

चिताएं—क्रि० । सचेत करने से, संतोष दिलाते रहने से, सुलगाने से । र० प्रि० ४-१०-८ ।

चिता दुचिताई—सं० स्त्री० एक० । द्विविधा । रा० १४-५-१ ।

चित—(१) १–सं० पु० एक० । अन्त.-करण, मन । र० प्रि० १-१४-२ । १-२१-२ । २-७-२ । ३-५-१ । ४-१०-४ । ५-१८-४ । ६-२६-३ । ८-५१-२ । १०-२३-१ । १३-१०-३ । १४-१३-४ । १५-१०-२ । क० प्रि० २-१-२ । ३-३०-२ । ४-६-२ । ६-१-२ । १०-२४-६ । ११-२-५ । १३-१८-३ । १५-५८-३ । १६-४-१ । रा० १-१४-१ । ३-१-४ । ४-३-२ । ५-६-२ । ६-१-१ । ७-३२-१ । ८-१२-१ । ९-३२-२ । १०-३२-१ । ११-५-३ । ११-३९-२ । १३-७-३ । १६-२४-४ । १७-२३-२ । १८-६१-४ । १९-१३-१ । २०-३४-१ । २४-५-१ । ३१-२-२ । ३२-४१-१ । ३६-२२-२ । छं० १-२-१ । १-२१-२ । र० १-३२-५ । वी० १-४३ । ३-५ । ४-४ । ५-५८ । ७-२० । ९-५२ । १०-२४ । ११-३६ । १३-३ । १४-६३ । १५-६ । १६-२९ । १७-४ । १९-६ । २०-६ । २२-२३ । २३-३७ । २४-१ । २८-३७ । २९-१ । ३०-५ । ३१-४ । ३२-१० । ३३-३६ । वि० गी० १-२८-६ । २-२१-१ । ५-२२-२ । ६-२८-२ । ७-१४-४ । ८-११-४ । १०-९-१ । १५-३५-२ । २०-४-३ । २१-५९-१ । चित–र० प्रि० १-२-५ । ३-७१-३ । ६-३४-४ । ९-१३-४ । क० प्रि० ३-२६-२ । ६-३४-३ । ११-२२-३ । रा० ३९-३८-१ । २–पुं० एक० । (चित) चित्र । र० प्रि० ६-३४-४ । ३–पुं० एक० (चित) सत् चित् । आनन्द-स्वरूप ब्रह्म । रा० ३०-३५-३ । ३१-२१-३ । ४–पुं० एक० । (चित) चितवन । रा० १२-२३-२ । ५–पुं० बहु० । हृदय । र० प्रि० ६-५६-२ । (चितनि) र० प्रि० १२-१६-२ । छं० २-४७-५ । (२) वि० (विशेष्य–मनुष्य) । चित्तवाले । र० प्रि० १४-१-८ ।

चित्तक्षोभ—सं० पुं० एक० । मानसिक व्याकुलता । रा० ३९-३२-२ ।

चित्तचित—सं० स्त्री० एक० । कोध । रा० ३८-७-२ ।

चित्तचिन्ता—सं० स्त्री० एक० । मानसिक चिन्ता । रा० १३-५५-१ ।

चित्त चातुर्य चिन्ता प्रहारी—वि० (विशेष्य–जीव) चित्त के चातुर्य से दूसरो की चिंता का अपहरण करनेवाले । रा० २८-५-१ ।

चित्त चातुर्यशाला—वि० (विशेष्य–जनक) । जिनका चित्त चतुराई का धाम हो । रा० ६-२७-१ ।

चित्तचोर—वि० (विशेष्य–मृगमन) । चित्त को मोहने वाला, आकर्षक । रा० १६-२७-१ ।

चित्तचौधिनी—वि० (विशेष्य–चमक) जिसे देखकर चित्त चौंधिया जाता है । रा० ३१-७-२ ।

चित्तत्याग—सं० पुं० एक० । चित्त का त्याग । वि० गी० १६-१००-२ ।

अजर—देवगण, सं० पु० वहु०। स्वर्ग के निवासी। र० प्रि० ८-५४-२। १४-४०-२। क० प्रि० १६-८-३। वी० च० १६२। (२) विशेषण। विशेष्य—चरित श्री रघुनाथ जो सदा एक रस हो। र० प्रि० ८-५४-२। १४-४०-२। क० प्रि० १६-८-३। वी० च० १-६२-१। वि० गी० १८-१५-२।

अजलोक—स० पुं० एक०। (१) दशरथ के पिता राजा अज का स्थान। (२) ब्रह्मलोक। रा० ३२-२२-२।

अजादि—(१) सं० पुं० एक०। वकरी, हरिण, इत्यादि जतु। क० प्रि० ६-५०-२। (२) स० पु० वहु०। वकरे इत्यादि जनुसमूह (निदा के पक्ष मे)। (आ) ब्रह्मादि देवगण (स्तुति के पक्ष)। क० प्रि० १२-२५-३।

अजान–[स० अज्ञान] विशेषण। विशेष्य–नृप। अज्ञानी, बिना ज्ञान का। (श्रीमद्-भागवत के मत से सृष्टिकाल मे ब्रह्मा ने पाँच प्रकार के अज्ञानो की कल्पना की थी। यथा—तम, मोह, महामोह, तमिस्र, अधतमिस्र। वेदात मत से सत् और असत् समझाने के लिये जो त्रिगुणात्मक भावरूप ज्ञान है, उसके विरोधी को अज्ञान कहते है)। वी० च० ३०-२०-१।

अजिर—स० पु० एक०। आँगन। र० प्रि० ५-२६-४।

अजीत—विशेपण। (१) विशेष्य–लक्ष्मण। रा० १८-३४-१। जिसे कोई जीत न सकें। क० प्रि० ८-१२-२, १५-२८-१। १६-५७-३। वी० च० १७-४६-२। जहाँ० ६३-२। १३४-१। वि० गी० १६-१२२-१। २१-१७-१। (२) विशेष्य—छाजन। उत्तम स्वरवाले। रा० २६-२१-१।

अजीति–स० स्त्री० एक०। हार, अपजय। क० प्रि० ८-५-४।

अजुक्त—स० पु० एक०। अयुक्त अर्थांतर-न्यास अलकार। प्रस्तुत कार्य का बोध कराने के लिये अप्रस्तुत के कारण का कथन ही अयुक्त अर्थांतरन्यास अलकार है। क० प्रि० ११-६७-२। ११-७०-२।

अजुक्ता-जुक्त—स० पु० एक०। अयुक्तायुक्त। अर्थांतरन्यास अलकार। जहाँ अशुभवर्णन मे अर्थांतर से शुभवार्ता प्रकट हो वहा अयुक्तायुक्त अर्थांतर-न्यास अलकार है। क० प्रि० ११-६७-२।

अजुक्तैजुक्त—स० पु० एक०। (देखो—अजुक्ताजुक्त)। क० प्रि० ११-७२-२।

अजेय—विशेषण। विशेष्य—ब्राह्मण जाति। जिसे जीत नही सकते। रा० ३३-१०-४। २८-१६-२। वि० गी० १५-४६-१।

अटकायो—क्रियापद। अटकाया।

अटकि—क्रियापद। अटक गई। र० बा० ७-३२-६।

अटकुत—क्रियापद। अटकता है। क० प्रि० ४-६-२।

अटतु—क्रियापद। समाना।

अटनि—स० स्त्री० वहु०। अटारियाँ, अट्टालिकाएँ। क० प्रि० ७-५-२।

चित्तवृत्ति—सं० स्त्री० एक० । मनोवृत्ति । रा० ३-१६-२ । वि० गी० ६-६०-१ ।

चित्त समुद्र—सं० पुं० एक० । मन रूपी समुद्र । रा० ६-१८-२ ।

चित्त हर—वि० (विशेष्य-मंजुघोषदि) । मन को हरनेवाली, मनोहर । ज० ११४-३ ।

चित्त हितकारी—वि० (विशेष्य-कुचनि) । चित्त का हित चाहने वाला । क० प्रि० ६-१४-१ ।

चित्र—(१) १-सं० पुं० एक० । तस्वीर र०प्रि० ३-६-२ । ८-६-४ । १२-१७-४ । १३-६-४ । क० प्रि० १४-१३-३ । रा० १२-२०-२ । १६-२८-१ । १३-१-३ । वी० २०-१९-२ । २०-२९-१ । २०-३०-२ । ज० ७५ । वि० गी० १८-२८-३ । २-पुं० एक० । चित्रालंकार—अलंकार-विशेष जिसमे शब्द या शब्दो द्वारा चित्र निर्माण होता है । क० प्रि० १६-१-१ । १६-८७-२ । ३-पुं० बहु० । तस्वीरें । र० प्रि० ३-४४-२ । ६-५५-४ । ७-२९-२ । क० प्रि० १०-३१-३ । १५-९३-४ । चित्रन-क० प्रि० १०-१४-२ । चित्रनि-र० प्रि० ६-४७-२ । (२) वि० (विशेष्य—मति) विचित्र । रा० ६-८-४ ।

चित्र आभा—सं० पु० एक० । चित्रालंकार रूपी भूषण । क० प्रि० १६-७-२ !

चित्र-कवित्त—सं० पुं० एक० । चित्रालंकार की कविता । क०प्रि० १६-३-१ । १६-४-२ । १६-८७-२ ।

चित्रकूट—सं० पुं० एक० । पर्वत-विशेष (चित्रकूट पर्वत) । रा० ९-४६-२ । १०-१३-२ । ११-१-१ । २०-२८-३ । ज० १०० ।

चित्रकेतु—सं० पुं० एक० । लक्ष्मण का पुत्र । रा० ३९-२२-२ ।

चित्रगेह—सं० पुं० एक० । चित्रशाला । रा० ३०-२-१ ।

चित्र-चित्रित—वि० (विशेष्य—चन्द्रसेन) । चित्र मे चित्रित किया गया जैसा सुदर । ज० ७५-१ ।

चित्रपुरी—सं० स्त्री० एक० । चित्र में चित्रित सी पुतली । रा० २०-१०-१ ।

चित्रमई वि० विशेष्य—संकुचन) । चित्रो से युक्त । रा० २६-४०-२ ।

चित्ररेफ—सं० पु० एक० । खण्ड विशेष । एक वर्ष या भूविभाग का नाम । वि० गी० ४-९-२ ।

चित्रविभ्रमा—सं० पु० एक० । विचित्र-विभ्रमा प्रौढा । क० प्रि० ३-५०-१ ।

चित्र समुद्र—स० पु० एक० । चित्रालंकार रूपी समुद्र । क० प्रि० १६-१-१ ।

चित्र साला—१-सं० स्त्री० एक० । वह भवन जिसमे बहुत से चित्र लगा रखे गए हों । र० प्रि० ५-२९-१ । २-स्त्री० एक० । रगशाला । रा० १३-५१-१ ।

चित्रनी—सं० स्त्री० एक० । कामशास्त्र मे माने हुए स्त्रियो के पद्मिनी आदि चार भेदो मे से एक । यह कला-निपुण और बनाव-सिंगार की शौकीन होती है । र० प्रि० ३-२-१ । (चित्रिणी) । वी० २०-१८ ।

चित्रसारी—सं० स्त्री० एक० । रगमहल । रा० ७-३३-२ ।

चित्रित—(१) वि० । (विशेष्य—कपोल) । चित्रों से चित्रित । क० प्रि० ९-१२-२ । (२) क्रि० स्त्री० एक० । बनाती (चित्र बनाना) । र० प्रि० ७-२९-३ ।

चित्रिनी—(१) सं० स्त्री० एक० । (देखो चित्रनी) र० प्रि० ३-६-२ । ४-१-४ । क० प्रि० १०-१४-२ । (२) वि० (विशेष्य—सुन्दरी) । चित्रिणी नायिका के समान चित्रो मे चित्रित । रा० २८-६-२ ।

चित्री—क्रि० पुं० एक० । चित्रित किया । रा० ३०-१-३ ।

चित्री बहु चित्रनि परम विचित्रानि—वि० (विशेष्य—अगारनि) । अत्यन्त विचित्र चित्रो से चित्रित । रा० १-४५-३ ।

चित्रे—क्रि० पु० बहु० । चित्रित किये गये हैं, चित्र बनाए गए हैं । रा० २९-२७-२ ।

चित्रोत्पला—सं० स्त्री० एक० । उडीसा की एक नदी जिसे आजकल चितरतला कहते हैं । वि० गी० ६-१५-१ ।

चिति--१-सं० स्त्री०एक० । चित्त । वि०गी० १४-१६-२ । चितु । र० प्रि० १-२५-२ । क० प्रि० १५-३३-१ । २-(चितु) इच्छा । क० प्रि० १०-३२-६ ।

चितेर—सं० पु० एक० । चित्रकार । वी० २१-६ ।

चितै—(१) सं० पु० एक० । (दे० चित्त) । छं० १-७६-५ । (२) क्रि० । देखकर । र० प्रि० ═-७३-२ । ४-४-२ । ८-२८-२ । ११-१७-४ । १२-२१-३ । क० प्रि० ६-७-४ । रा० १३-६९-१ । (देखो) । १३-८८-२ ।

चितैबौ—क्रि० । देखने । र० प्रि० ६-२२-२ ।

चित्याइ—क्रि० । चिल्लाकर । र० १२-१२-३ ।

चितै के भए—सं०क्रि० । देखते ही हो गए । र० प्रि० १२-२१-३ ।

चितैयै—क्रि० पु० एक० । देखा । र० प्रि० ४-१०-७ ।

चितोंनि—सं० स्त्री० बहु० । चीटियो की पंक्तियाँ । क० प्रि० १५-२१-२ ।

चितौनी - (१) सं० स्त्री० एक० । चितवन, किसी की ओर देखने का ढंग, दृष्टि । र० प्रि० ३-४३-३ । ११-८३-२ । क० प्रि० ९ ९-३ । १४-३४-३ । (२) क्रि० पु० एक० । देखा । र० प्रि० ३-४३-५ ।

चिदानन्द—(१) सं० पु० एक० । चित्+आनन्द (चेतना और आनन्द से युक्त) । वि०गी० ९-४६-१ । ११-२५-१ । ११-४९-२ । १५-५५-२ । १७-६८-२ । चिदानद रूप । वि० गी० १८-२३-१ । (२) वि० (विशेष्य—श्री विन्दुमाधौ) । चेतना और आनन्दमय । वि० गी० ११-२५-१ ।

चिदानंद भावापि साँचे—वि० (विशेष्य—गगे) । भावो को पैदा कर शाति प्रदान करने वाली । वि० गी० ११-४९-२ ।

चिद्रूप—सं० पु० एक० । (चित्+रूप) ब्रह्म । वि० गी० २१-३०-१ ।

चिह्न—सं० पु० बहु० । निशानियाँ । र० प्रि० ९-३-१ ।

चिवुक - [√चीव्+ड,+कन] सं० पुं० एक० । ठुड्डी । क० प्रि० १५-३५-२ ।

१५-३६-४ । र० प्रि० ५-३१-४। १४-१३-३ ।

चिरंजय—सं० पुं०एक० । एक आशीर्वाद। वी० ३३-१५ ।

चिरंजीव—सं० पु० बहु० । सात व्यक्ति-चिरंजीव माने जाते है—अश्वत्थामा, वलि, व्यास, हनुमान विभीषण, कृपाचार्य और परशुराम। क० प्रि० ११-१८-२ ।

चिरंजीवि—वि० (विशेष्य—जीव) बहुत समय तक जीनेवाला। रा० २८-४-१ ।

चिलक—सं० स्त्री० एक० । चमक, झलक र० प्रि० ६-३७-१ । क० प्रि० ७-३४-३ । १५-६६-१ । रा० ३१-१८-१ । वि० गी० १०-२१-३ ।

चिलकत—क्रि० पुं० एक । चमकता है। र० प्रि० १४-१३-२ ।

चिलक सों सनि—वि० (विशेष्य झलक) चमक से युक्त, चमकीले । रा० ३१-१८-१ ।

चिलकैं—क्रि० । चमके । वी० ६-१३-२ ।

चीकने—वि० (विशेष्य—कटाक्ष)। सुन्दर। र० प्रि० १२-२१-३ । क० प्रि० १५-७५-१ । वी० १६-४८-२ ।

चीकने चौगुने—वि० (विशेष्य—कटाक्ष) अत्यन्त सुन्दर । र० प्रि० १२-२१-३ ।

चिट्ठी—सं० स्त्री० एक० । पत्र र० प्रि० ६-७-१ । १६-७-३ (२) स्त्री० बहु० । चिट्ठियाँ, पत्र । र० प्रि० ५-१४-१ ।

चीते—सं० पुं० बहु० । एक तरह का बाघ जिसकी खाल पर लम्बी-लम्बी, काली-पीली धारियाँ होती हैं । क० प्रि० ८-३२-१ । चेत्का—र० प्रि० १४-७-२ ।

चीर—[√चि (ढँकना)+क्रन्] १—सं० पुं० एक० । 'चीड' नामक वस्त्र जो नील मे रंगा होता है, जिसे नीच जाति की स्त्रियाँ पहनती है । क० प्रि० ५-२२-१ । रा० ६-१०-२ । ६-६३-२ । १३-२-२ । ३७-३-२ । छं० १-६१-४ । ज० १५० । वि० गी० । ८-१३-२ । ११-११-३ । १२-२१-२ । २—पुं० बहु०। वस्त्र-विशेष । र०प्रि० ६-२२-३ । क० प्रि० १६-७१-२ ।

चुम्बक—[√चुम्ब+ण्वुल] सं०पुं० एक० । अयस्कात । वि० गी० १७-२१-४ ।

चुम्बत—क्रि० पुं० बहु० । चूमते हैं । रा० ३२-१०-२ ।

चुम्बन—सं०पु० एक० । चूमने की क्रिया । र० प्रि० ३-४१-१ । ६-२०-३ । चुम्बनादि । र० प्रि० ६-७-३ ।

चुकरैंड—सं० पुं० एक० । दो मुहाँ साँप । क० प्रि० । ११-७-२ ।

चुटकि—सं० स्त्री० एक० । चुटकी (बीच की उँगली पर अँगूठे को दबाने और चटकाने से होनेवाली आवाज) । र०प्रि० ५-११-३ ।

चुनियत—क्रि० । चुनता । र० प्रि०५-१८-६ । (चाहता) ।

चुनै—क्रि० । चुने, चुनते हैं । रा० २०-३५-१ ।

चुन्यो—क्रि० । चुनकर । रा० १०-१३-२ ।

चुप—[सं० चुप्] स० पुं० एक० । चुप्पी । रा० १४-२६-२ ।

चुप ह्वै—पू० क्रि० । चुप होकर । रा० १४-२६-३ ।

चुप ह्वै रहति है—सं० क्रि०। चुप होकर रह जाती है। र० प्रि० ११-१७-४।

चुभी—क्रि०। धँस गई। र०प्रि० ८-२४-१।

चुरहेरनी—सं० स्त्री० एक०। चूड़ियाँ। पहनने वाली स्त्री। १९-१-२।

चुराएँ—क्रि०। चुराने पर। र० प्रि० १३-५-७। (यहाँ 'नैननि चुराएँ होने के कारण छिप-छिप कर देखने के अर्थ मे प्रयुक्त है। नेत्र चुराना। आँख चुराना आदि मुहावरे है।)

चुरावति—क्रि०। चुरा लेती है। र० प्रि० ४-११-७।

चुरी—सं० स्त्री० एक०। चूड़ी—काँच लाह, सोने, हाथीदाँत आदि का बना वृत्ताकार आभूषण जिसे स्त्रियाँ कलाई पर पहनती हैं। क० प्रि० १५-८६-२।

चूक—सं० स्त्री० एक०। भूल। र० प्रि० ९-१४-१। रा० २२-२०-२।

चूकति—क्रि०। चूकती। र०प्रि० १४-३५-८।

चूक्यो—क्रि०। चूक गया। रा० २६-१४-३।

चूड—[√चुल् (ऊँचा होना)+अड्] सं० स्त्री० एक०। चोटी। शिखा। वि० गी० ८-१३-२।

चूडा कर्म—सं० पुं० एक०। हिन्दू बच्चे का पहली बार सिर मुँडाकर चोटी रखने का संस्कार। रा० २८-८-२। वी० १८-१०।

चूडामनिछंद—सं० पुं० एक०। छंद-विशेष। छं० २-४१-२।

चूडाला—सं० स्त्री० एक०। राजा का एक नाम। वि० गी० १६-५-१।

चूनो—सं० पुं० एक०। चूना-पत्थर, कंकड़, सीप आदि को फूँककर प्रस्तुत किया जाने वाला तीक्ष्ण क्षार जो पान मे खाने और पलस्तर करने आदि के काम आता है।) र० प्रि० १-२३-४। (चुन)-क० प्रि० ५-८-२।

चूमि—क्रि०। चूमकर। र०प्रि० ५-३१-७। क० प्रि० ३-१२-३। रा० ३१-३०-३।

चूमिवे—क्रि०। चूमने। र०प्रि० ५-१०-१।

चूमे क्रि०। चूमे। र० प्रि० ५-१०-१। (चूमने पर)।

चूर—[सं० चूर्ण] सं० पुं० एक०। चूर्ण। रा० ८-१६-४। चूरण—वी० २२-७७-१। चूरनि—छं० २-४-६।

चेटक—[√चिट्+ण्वुल] सं० पुं० एक०। जादू, इन्द्रजाल। र० प्रि० १९-१६-२। रा० १९-१३-३।

चेटकी—१—सं० पुं० एक०। नाम विशेष। वि० गी० १३-७२-४। २—वि० (विशेष्य—चंडार) कौतुकी। वि० गी० १३-७१-२। १३-७२-४।

चेटी—सं० स्त्री० एक०। दासी। र० प्रि० ५-३५-४। क० प्रि० १६-१६-१। रा० ३८-७-२।

चेटुवा—सं० पुं० एक०। बच्चा। र० प्रि० ६-२५-२। क० प्रि० ३-३६-२।

चेत—[सं० चित्+असुन्] १-सं० पुं० एक०। चित्त, मन। रा० ३१-२२-१। २—चेतना। वि० गी० ९-४९-१।

चेत भयो—क्रि०। चेत हुआ, होश मे आया। रा० १७।४१-२।

चेति—क्रि०। चेत जा। रा० १६-२६-४।

चेतिका—सं० स्त्री० एक०। चिता। वि० गी० ८-४-३।

चेतन—वि० (विशेष्य—परब्रह्म)। जीवन शक्ति से युक्त। वि० गी० २१-४-१।

चेद - सं० पुं० एक०। चेदि देश। ज० १००-१।

चेरा—सं०पुं०एक०। चाकर। १६-२६-१।

चेरी—सं० स्त्री० एक०। सखी। र० प्रि० १२-६-३। क० प्रि० १५-१२५-४। रा० १६-१४-४। चेरिन—स्त्री० बहु०। र० प्रि० १२-६-३।

चेरे—सं० पुं० एक०। सेवक, दास। र० प्रि० १२-२१-३। छं० १-१६-३। वि० गी० २-८-२। पु० बहु०। र० प्रि० १२-१६-२। क०प्रि० ६-५६-१।

चैत्ररथ—सं० पुं० एक०। बाग—विशेष, कुबेर के बाग का नाम जो चित्ररथ का बनाया हुआ और इलावृत्त खण्ड के पूर्व मे अवस्थित माना जाता है। वि० गी० ४-३२-१।

चेला—[सं० चेट] सं० पुं०। शिष्य। वी० ७-४३-२।

चोप—सं० पुं० एक०। चाव, इच्छा। र० प्रि० २-८-१। रा० ३०-२१-८। चोप—क० प्रि० ७-११-३।

चोखे—वि० (विशेष्य—कटाक्ष)। तीक्ष्ण। र० प्रि० १२-२१-३।

चोट—सं० स्त्री० एक०। आघात, मार, प्रहार। क० प्रि० ६-१६-२।

चोटी—सं० स्त्री० एक०। स्त्री के सिर के गूँथे हुए और पीठ की ओर या अगल-बगल लटकने वाले बाल। क० प्रि० १५-२३-३।

चोर—[सं० √चुर (चुराना) + णिच्] (१) १-सं० पुं० एक०। तस्कर (छिपकर दूसरे की चीज हथिया लेनेवाला)। र० प्रि० १४-३६-१। क० प्रि० ५-२१-२। ६-३६-१। ७-२३-२। १४-५०-१। रा० १३-३६-४। २८-३६-१। छं० २-२९-५। वि० गी० ९-२७-३। १०-१४-३। २-चोरी करने वाला, बेईमान, दुर्भाव, आदि के भीतर छिपी विकृति। खराबी। एक गन्ध-द्रव्य, चोरक संकीर्णोपमा के बोधक। क० प्रि० १४-४९-१। ३-पुं० बहु० (चोरन), वि० गी० १०-९-३। (२) १-वि० (विशेष्य—मरतार)। दूसरो का माल हड़पने वाला। रा० ९-१६-५। २-वि० (विशेष्य—नैन)। चुराने-वाला। र० प्रि० १२-२३-२।

चोरटी—सं० स्त्री० एक०। चोर की स्त्री। क० प्रि० १६-८२-१।

चोर मिहचनी—सं० स्त्री० एक०। आँख मिचौनी (खेल विशेष)। र० प्रि० ५-२६-४।

चोरही—क्रि० स्त्री० एक०। चुरा लेती है। रा० ८-८-३।

चोरइ—क्रि० चुराकर। रा० १५-६-१।

चोरी—सं० स्त्री० एक०। चोर का काम, छिपाव। र०प्रि० २-१७-१। १३-१९-२। क० प्रि० ८-५-२। १५-३२-३। रा० २८-११-१। वि० गी० ५-२०-३। चोरि—क० प्रि० १३-२२-२।

चोरे—क्रि०। चुराये। रा० २०-३५-१।

चोरै—क्रि० चुराता है। रा० ३०-३५-३।

चोल—[√चुल् (ऊँचाई, +घञ्] सं० पु० एक० । चोल देश । ज० १०० ।

चोली—सं० स्त्री० एक० । वह अँगिया जिसमे पीछे की ओर बन्द नही होते । क० प्रि० ७-६-१ ।

चौषै—क्रि० । चोषण करना । रा० २०-४०-१ (पीना) ।

चौकति—क्रि० । चौकती । र० प्रि० ८-४१-१ ।

चौकि—क्रि० । चौक कर । र० प्रि० ६-२२-२ ।

चौकि चौकि—सं० क्रि० । चौक-चौक कर ।

चौ—वि० (विशेष्य—दाँत) । चार । वी० १७-६६-१ ।

चौक—स० पु० एक० । आंगन, पूजन आदि मे आटे आदि की रेखाओ से बनाया जाने वाला क्षेत्र । क० प्रि० १६-६४-१ । रा० १६-२७-१ ।

चौकट—सं० पु० एक० । देहरी । रा० २६-४२-२ ।

चौकी—सं० स्त्री० एक० । गले मे पहनने का आभूषण । पदिक । र० प्रि० १-२०-३ ।

चौगान—सं० पु० एक० । गेद का खेल जो सवारी पर चढकर खेला जाता है । रा० २७-१५-३ । वा० ११-१ ।

चौगुने—वि० । (विशेष्य—चौगुने) । अत्यधिक । र० प्रि० १२-२१-३ ।

चौदह भुवन—स० पु० बहु० । चौदह लोक—भू-लोक, भुव-लोक, स्वर्ग, महालोक, जन-लोक, तपो-लोक, सत्य-लोक, अतल, वितल, तलातल, रसातल, महातल तथा पाताल । वि० २-३५ ।

चौदह विद्या - स० स्त्री० बहु० । ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्वेद, शिक्षा, व्याकरण, छंद, निरुक्त, ज्योतिष, कल्प, मीमासा, न्याय, पुराण और धर्म शास्त्र । वी० १-५२ ।

चौदह लोक समेत-- वि० (विशेष्य—हरि) । जिनमे चौदहो लोक निहित हो । क० प्रि० ७-२०-२ । (अग्निपुराण, वराह पुराण आदि के मत से जब परब्रह्म के सत्व ध्यान से हरि की सृष्टि हुई तब उनमे चौदहो लोक विद्यमान थे ।

चौपरि—सं० स्त्री० एक० । चौपड । गोटो और पासो के सहारे बिसात पर खेला जाने वाला एक खेल । क० प्रि० ३-७१-२ । चौपरी-वी० १८-२५ ।

चौबीस—वि० (विशेष्य—संख) । बीस और चार २४ । वी० १७-७-२ । १७-७१-२ ।

चौरो—वि० (विशेष्य—नगर) । चौड़ा । वी० १७-१-१ । १७-२४-२ ।

चौली—सं० स्त्री० एक० । बहरा । रा० २६-१७-२ ।

चौवालीस—वि० (विशेष्य—अगुल) । चवालीस । वी० १७-५५-१ ।

चौहुँ—वि० । (विशेष्य—जन) चारो । क० प्रि० ६-७-३ । रा० २१-१६-२ । वी० १७-५-१ ।

छ

छंड्यो—क्रि० पुं० एक०। छोडा, छोडिये। रा० ३४-४१-२। ३६-२२-१। छडिय-र० १९-१। छंडिये-र० ११-६। १३-६। छंडियो-रा० ३५-१९-१। छाँड्हु-रं० प्रि० १६-७-३। छाँडिये-रा० ३-६-२। ७-७-२ (छोडिये)। छोड्यो-चौ० ६-५८-१।

छंडई—क्रि० छोड़ना। र० १५-६। छंडि-रा० ६-६०-२। १३-३३-१। छाड-रा० ७-३७-४। छाडयिव-र० २८-५-२।

छंडाई—क्रि० छुडाकर। रा० ३५-२५-३। ३५-२६-१।

छंडे—क्रि०। छोड़कर। रा० १९-४९-२। छाँड्यो-र० प्रि० ५-२१-४। रा० १७-३९-१। छाँडि-र० प्रि० २-१४-१। क० प्रि० ३-५१-२। रा० १-३-२। ३-५-४। वि० गी० १६-४६-२। १६-६८-१। छाँड़े-रा० २६-६-२।

छंद—[√छंद + घञ्] सं० पु० एक०। वह वाक्य जिसमे वर्ण या मात्रा की गणना के अनुसार विराम आदि का समय हो। जिस छंद के प्रति पाद मे अक्षरो की सख्या और लघु गुरु के क्रम का नियम होता है, वह वर्णिक या वर्णवृत्त और जिसमे अक्षरो की गणना और लघु, गुरु के क्रम का विचार नहीं केवल मात्राओ की संख्या का विचार होता है, वह मात्रिक छंद कहलाता है। (यति आदि नियमो से युक्त नियम)। क० प्रि० ३-७-१। १५-७३-४। छंद० १-३-१। १-४-२। १-६-२। २-४३-२। छंदहु-छं० २-४३-२। पुं० बहु० छंदन-छदो की-छं० १-३-२। छंदनु-क० प्रि० १५-१२७-२।

छंद तरनिजा—सं० स्त्री० एक०। तरनिजा छंद-विशेष--वर्णिक छंद के समवृत्त का एक भेद। इस वृत्त के प्रत्येक चरण मे नगण और गुरु का योग होता है। छं० १-७-८। १-पृ०सं० ४४८-४।

छंद तामरस—सं० पु० एक०। वर्णिक छदो मे समवृत्त का एक भेद। यह वृत्त नगण, दो जगण और यगण के योग से बनता है। छं० १-३६-२।

छंद पंकज वाटिका—सं० स्त्री० एक०। वर्णिक छंदो मे समवृत्त का एक भेद। यह छंद भगण, नगण, जगण, जगण और लघु के योग से बनता है। इसकी लय चौपाई के समान है। छं० १-४४-२।

छंद विरोधी—वि० (विशेष्य--पंगुदोष)। छद शास्त्र के विरुद्ध जहाँ छद रचना की गयी है। क० प्रि० ३-७-१।

छंद भुजग प्रयात—स० पु० एक०। वर्णिक छदो के समवृत्त का एक भेद। चार यगणो से यह वृत्त बनता है। छं० १-३५-२।

छंद-माला—सं० स्त्री० बहु० । छंदो की रचना (हिं०) । छं० १-२-२ ।

छंद मौक्तिकदास—सं० पुं० एक० । वर्णिक छंदो मे समवृत्त का एक भेद । इसका लक्षण—इस वृत्त मे चार जगण होते हैं । छं० १-२१-२ ।

छंदो ग्रथनि—सं० पु०एक० । पिंगल शास्त्र, छंद रचना संबंधी शास्त्र । क० प्रि० ३-२६-२ ।

छंदो भंग—सं० पु० एक० । काव्यगत दोष-विशेष, छद मे वर्ण, मात्रा आदि के नियम का पूर्ण पालन न होना । क० प्रि० ३-१०-२ । छं० २-७-२ ।

छिछि—सं० स्त्री० एक० । उछले हुए पानी की धार । रा० १५-३१-१ ।

छ—वि० (विशेष्य—रिक्त) । छः ६ । वी० १-२८-६ । १७-५७-१ ।

छए—क्रि० । छा गए । रा० ७-४८-४ ।

छक्यौ—क्रि० । चखकर । रा० ६-३५-१ ।

छगोड़ी—स० स्त्री० एक० । मौरी । र० प्रि० १४-३२-१ ।

छटा—सं० स्त्री० एक० । लडी । रा० ३२-४०-१ ।

छडायो—क्रि० । हटाया, छुडाया । रा० ५-३२-२ ।

छत—सं० पुं० एक० । घाव । र० प्रि० १६-५२-२ ।

छत्रपति—सं० पुं० एक० । राजा । क० प्रि० । १०-३०-३ । छत्रपति—वी० ७-६-१ ।

छतिया—सं० स्त्री० एक० । छाती । र० प्रि० ८-४१-१ ।

छत्तीस—वि०(विशेष्य—अंगुल) । संख्या विशेष—३६ । वी० १७-५५-१ ।

छत्र—[छद् (ढँकना) + णिच् + ष्ट्रन] (१) १-सं० पुं० एक० । छतरी । र० प्रि० १६-५-२ । क० प्रि० ५-७-२ । ५-१०-१ । ६-७-४ । ८-२२-१ । ८-२६-२ । रा० ४-१२-२ । ५-१०-४ । ६-६५-२ । ७-३७-२ । १२-२८-२ । छत्त्रु-वी० १०-३५ । छतरी-वी० १७-१२ । २-राजाओ के ऊपर लगायी जानेवाली राजचिह्न रूपी छतरी । छं० २-२७ । वी० ५-१०४ । वी० गी० १०-१-६ । १३-४१-१ । पुं० बहु० छत्रनि । क० प्रि० । ८-४५-३ ।

छत्र छवि—सं० स्त्री० एक० । छतरी की छाया । क० प्रि० ८-२१-१ ।

छत्रमाला—सं० स्त्री० एक० । छाताओ की पक्ति । रा० १७-३८-२। छत्रावली—रा० १६-३५-३ ।

छत्रिय—सं० पुं० बहु० । राजा, नृपति । क० प्रि० १८-८-२ ।

छत्री—[छत्र + इनि] (१) १-सं० स्त्री० बहु० । महलो की कुंजियाँ । रा० १४-७-१ । ३५-२०-२ । २-क्षत्रिय वी० १३-११ । १७-४४ । १७-४६ ।

छद्म—[छद् + मनिन] सं० पुं० एक० । कपट । वी० गी० २१-५-२ । २१-६२-२ ।

छन—स० पुं० एक० । क्षण, पल । क० प्रि० ११-७१-३ । रा० १६-३१-२ । २-पुं० एक० । क्षण (पद्य मे प्रयुक्त) वि० गी० ६-५४-३ ।

छन-छवि—सं० स्त्री० एक० । बिजली । र० प्रि० १३-११-२ । क० प्रि० ६-४२-१ ।

छनदा—सं० स्त्री० एक । रात्रि । ज० ११० ।

छनदान प्रिय—स० पुं० एक० । सूर्य । ज० ११० ।

छनभा—सं० स्त्री० एक० । विजली । वि० गी० १०-१०-२ ।

छप्पन—वि० (विशेष्य—अंगुल) । संख्या विशेपण ५६ । क० प्रि० १३-३१-२ । वी० १७-५५-२ ।

छप्पय—सं० स्त्री० एक० । छप्पय । छ चरणो वाला एक मात्रिक छन्द । क० प्रि० १०-२३-२ । छं० २-३३-६ ।

छप्पर—[सं० छत्वर] सं० पुं० एक० । फूस पत्र आदि की छाजन । वी० २०-४।

छपानाथ—सं० पुं० एक० । चन्द्र । रा० १६-११-२ ।

छपावति—क्रि० । छिपाती । रा० १३-११-२ ।

छबि उज्जल—वि० (विशेष्य—मंचन की अवली) । उज्ज्वल छविवाली । रा० ३-१५-१ ।

छबिले—वि० (विशेष्य—लाल) । सुंदर, प्यारा । र० प्रि० १२-२६-४ । १४-७-३ । क० प्रि० १०-२०-३ । ११-७१-३ । शिख० १-४ । २१-४ । वी० १७-३०-१ । २२-८३-१ ।

छबीलो—वि० (विशेष्य—छत्र) । छविमान, शोभासनी । छं० १-३३-१ । वी० ५-१०७-२ । ज० ५-२ । ७७-३ ।

छमा—सं० स्त्री० एक० । दया । क० प्रि० ८-४-२ ।

छमिजहु—क्रि० । क्षमा करो । रा० २२-२०-२ । छमिजो–क० प्रि० ३-१-२ । छमो–रा० ३७-८-२ ।

छमिहैं—क्रि० । क्षमा करेंगे । रा० १८-१८-१ ।

छमी—१–सं० पु० एक० । क्षमावान आदमी । वी० १-२९-२ । २–वि० । (विशेष्य—नायक) । क्षमाशील । र० प्रि० २-१-२ ।

छमे—क्रि० । क्षमा किया । रा० २७-२१-१।

छम्यो—क्रि० । क्षमा किया । रा० २७-२१-२ ।

छय—सं० पु० एक० । क्षय, नाश, ह्रास । क० प्रि० १६-५९-३ ।

छर्यो—क्रि०। छल किया । रा० २०-२१-२ ।

छरी—सं० स्त्री० । एक लकडी का बना हुआ छोटा पतला डंडा (छडी) । रा० २२-२-१ । २३-१२-१ । २६-२७-२ । २९-५-२ । वी० १९-१० ।

छल—[छो (काटना) + कलच्) (१) १–सं० पुं० एक० । व्याज, मिस, बहाना । र० प्रि० ५-२५-२ । ८-५३-१ । १२-२६-४ । क० प्रि० ५-२५ २ । ११-३-४ । वी० १-२८-४ । २९-४-३१ । १४-४७ । २–पुं० एक० । दोष, छिद्र, पाप । र०प्रि० ३-२३-४ । क० प्रि० ९-३२-२ । छलनि–क० प्रि० १२-२३-४ । ३–कूटनीति । रा० १६-११-२ । १९-२३-१। ४–धोखा । वि० गी० । ६-७३-१ । ७-३-२ । (२) वि०

(विशेष्य–छलपूर्वक)। र० प्रि० ११-५-४।

छलके निवास—वि० (विशेष्य–स्याम)। कपट-क्रीड़ा मे कुशल। र० प्रि० ३- ३-४।

छली—वि० (विशेष्य–सम्पत्ति)। दूसरो को फँसाता हो। रा० १८-१०-२३।

छवाइबे – क्रि०। छुलाने। र० प्रि० ५-१०-४।

छवि—[छो (छेदन) + क्विन्] (१) १–सं० स्त्री० एक०। शोभा, चमक, कांति। र० प्रि० ४ ११-१। ५-६-३। ६-२८-१। क० प्रि० ६-७६-३। ७-३६-३। ८-४५ ३। छवि–रा० ३-१५-१। ६-२६-१। १२-४०-१। १५-३८-१। छ० २-२७-३। २–स्त्री० एक०। सजावट, शृंगार। क० प्रि० १५-१०५-१। ३–स्त्री० एक०। छाया। क० प्रि० ८-२३-६। ४–स्त्री० एक०। शान। क० प्रि० १६-१५। ५–स्त्री० एक०। सफाई, स्वच्छता। र० प्रि० ५-३७-४। ६–पुं० एक०। सौन्दर्य। रा० ८-१६-४। १३-४८-१। छविता–क०प्रि० १५-४७-४। ७–स्त्री० एक०। कीर्ति। रा० १५-२-२।

छवि आस—सं० स्त्री० एक०। शोभा पाने की इच्छा। र० प्रि० ११-५-२।

छवि छाए—वि० (विशेष्य–राजकर्म)। सुन्दर। र० प्रि० ५-१०-२। ६-२८-१। क० प्रि० ६-४२-१। ६-६७-३। वी० ३३-८-१।

छवि मद—सं०पु० एक०। सौन्दर्य से उत्पन्न खुमारी। रा० ६-३५-१।

छांडत—क्रि० पु० एक०। छोड़ता। रा० ४-२६-३। ३२-४-१। ३३-३४-२।

छाडन—क्रि०। छोडने को। रा० ३३-३६-२।

छांडहुगे—क्रि०। छोड़ोगे। रा० ३३-३७-१।

छांडिजाइ—सं० क्रि०। छोड जाता। रा० ३-५-४।

छांडि दे छाँडि—सं० क्रि०। छोड़ दो। रा० ३५-१६-१।

छांडियो—क्रि० पुं० एक०। छोडा। रा० ३३-४०-२। छाड्यो–र० प्रि० ३-५६-२। ५-१६-७।

छांडे—क्रि०। छोडे, छोड़कर। र० प्रि० १०-७-१। क० प्रि० ५-२७-८। रा० २६-७-२। वि० गी० १६-४२-१।

छांडों– क्रि० पुं० एक०। छोड़ूँगा। रा० ७-२८-२। ३७-१४-१।

छांडौ—क्रि० छोडो। वि० गी० १६-६४-१।

छांह—स० स्त्री० एक०। छाया। क० प्रि० ५-२१-१। ६-२६-१। ६-३२-२। १२-६-४। रा० १७-४१-१। ३६-३३-२। छं० १-६४-३। छाँही–र० प्रि० ८-४१-१। छाँहि–वि० गी० १७-४८-२।

छाई—क्रि० स्त्री० एक०। छा गई। क० प्रि० ४-१०-२। ५-३५-१। रा० ६-२६-१। १३-११-१। वी० ६-१५-३।

छाए—वि० (विशेष्य–कलस)। नवीन, नये। रा० ८-६-२। (२) क्रि०। छा जाना। रा० ६-१०-१। १३-१५-१। १५-२-२। ३५-१५-१।

छाजत—क्रि०। शोभित है। र० प्रि० ५-३६-२।

अटपट—स० पु० एक०। मुश्किल, कठिनाई। क० प्रि० ८-३५-२।

अटपटी—विशेषण। विशेष्य—कालगति। टेढी, कुटिल। वी० च० ६-५७-१।

अटा—स० स्त्री० एक०। अटारी, अट्टालिकाएँ। क० प्रि० ७-४-१। रा० १४-६-१।

अटानि—सं० स्त्री० एक०। अट्टालिका। क० प्रि० १०-१६-२।

अटारी—[स० अट्टालि] स० स्त्री० एक०। महल का ऊँचा स्थान। वी० च० १४-१५। १६-२०।

अटी—क्रियापद। अड गई। र० प्रि० १-१४-१।

अटें—क्रियापद। अड जाने पर, बाधा देने पर। र० प्रि० १-२३-३। ७-४१-२।

अठाउ—स० पु० एक०। शरारत; नटखटपन। र० प्रि० ५-१६-२, ८-३६-२।

अठारहौ—विशेषण। विशेष्य—पुराण। सख्याविशेष। क० प्रि० १-१५-२।

अडास—सं० पु० एक०। एक तरह का नाच। नियत स्थान से उछलकर अधर मे किसी पक्षी के पखो की तरह फैलाकर घूम जाय और फिर नियत स्थान पर ही आ गिरे। ऐसा करते समय ताल और सम न चूके। यह अडाल नृत्य है। (केशवकौमुदी, उत्तरार्ध)।

अतल—सं० पु० एक०। सात अधोलोको मे पहला। रा० १४-३८-४।

अति—विशेषण। विशेष्य—निपट। अत्यत, बहुत अधिक। र० प्रि० १-२-३। १-१७-१। ३-५३-१। ५-२६-१। ७-२८-३। ८-५६-१। १०-१४-१। १२-२१-१। १३-१४-२। १४-१२-२। १४-२०-२, १५-५-२। १६-७-३। क० प्रि० १-४३-१। ३-४४-१। ४-१२-१। ६-२४-२। ८-१४-१। ८-३५-१। ११-६०-३। ११-८२-१। १२-२५-३। १४-१६-२। १४-४३-२। १५-२८-१। १५-६४-२। १५-६०-४। १६-७५-१। रा० १-२७-१। १-३६-३। १-४७-१। २-१३-२। ३-१-६। ३-२१-१। ४-१५-१। ४-२९-२। ५-७-१। ५-२२-४। ७-७-१। ७-५१-३। ८-६-१। ६-३७-१। ६-४१-४। १०-१७-१। ११-२०-१। ११-३२-४। १२-२३-१। १३-३६-३। १३-७५-१। १४-२०-१। १४-३४-१। १५-१६-१। १५-३१-६। १६-५-४। १७-१६-२। १६-४२-२। २१-१५-२। २१-५३-२। २२-५-१। २२-१२-१। २३-६-२। २३-३०-२। २४-४-१। २५-२२-१। २७-१५-२। २६-१४-१। ३०-१३-२। ३१-८-१। ३१-२८-१। ३२-१८-१। ३३ १०-४। ३३-३१-१। ३४-३५-२। ३६-१५-१। ३६-२७ १। ३७-१४-१। ३८-८-१। ३६-११-१। छ० मा०। १-२०-२। १-४६-३। १-७२ ५। २-३३-२। न० शि० २-१। ११-१। र० बा० ३-२। ६-१। २१-१। २८-१। २६-५। ३७-५। वी० च० १-१-२। १-१४-४। २-१-१। २-३-१। २-१३-२। ३-१४-१। ४-६-२। ५-२२-२। ५-१०५-२। ६-१३-२। ६-३६-२। ७-४७-२। ८-२३-१। ८-६०-३। ६-

छाड़हु—क्रिया। छोड़ो। र० प्रि० ३-३६-१। क० प्रि० २-१५-२। रा० ६-२०-३। छोड़ो–र० प्रि० ५-३५-२।

छाडि—(१) सं०स्त्री० एक०। चिह्न। र० प्रि०। ८-३-२। (२) क्रि०। छोड़कर। र० प्रि० ७-१४-५। ७ १४-६। रा० १६-१०-४। १९-४९-१।

छाडियो— क्रि० पुं० एक०। छोड़ा। रा० ३५-६-११।

छाडे—क्रि०—छोड़ें। रा० २५-१९-२।

छाडेगी—क्रि०। छोड़ेगी। र० प्रि० १४-३८-४।

छातिनि—सं० स्त्री० बहु०। वक्षस्थल। क० प्रि० १५-२७-४। वि० गी० १६-७-१।

छाती—सं० स्त्री० एक०। वक्षस्थल। र० प्रि० ५-१०-२। क० प्रि० ६-२२-३। ६-६७-३। रा० १८-४१-१। ३९-२३-२। वी० ६-२५। ८-२०।

छाप—सं० पुं० एक०। चिह्न। वी० ४-३६-२।

छाया—सं० स्त्री० एक०। प्रकाश के अवरोध से उत्पन्न अँधेरा, छाँव, परछाईं। क० प्रि० १३-१०-२। १५-१७-२। छं० २-१२।

छाया जाया—सं० स्त्री० एक०। छायामय पत्नी। रा० १२-२०-४।

छायो—क्रि० पुं० एक०। छा गया। र० प्रि० ३-४८-६। ५-१-६। ५-३०-३। रा० १७-८-२। १८-१४-१ (जोर पकड़ लिये)।

छार—सं० पुं० एक०। ठग। र० प्रि० ३-९-१। २—वनस्पतियों को जलाकर उनका निकाला हुआ नमक या क्षार। क० प्रि० ३-९-२। छारहु–र० प्रि० ४३-१९-४। ३—भस्म, खाक। रा० १९-४२-२। ३१-३९-३।

छाल शरीर—सं० पुं० एक०। अवास्तविक शरीर। रा० १२-१२-२।

छालि—क्रि० भेद कर। १३-६४-२।

छावै—क्रि० पुं० एक०। छा जाता है। रा० ८-१९-४।

छाही—(१)-सं० स्त्री० एक०। छाया। र० प्रि० ७-३३-३। क० प्रि० ११-३-४। (२) क्रि० पुं० एक०। छा गया है, छा जाता है। रा० १४-९-१।

छिति—[सं०क्षिति] सं०स्त्री० एक०। राज्य, पृथ्वी। र० प्रि० ३-१३-४। ५-३०-३। ५-३६-४। क० प्रि० ८-७-४। ८-१८-४। रा० १६-११-३। १६-३१-२। २-२०-२। २०-२१-२। २७-४-१। वी० २२-२४। ३३-४२।

छिति छीरहि—सं० पु० एक०। पृथ्वी पर स्थित पानी या दूध का तालाब। क० प्रि० ५-३९-२।

छितिधर—सं० पु० एक०। राजा। क० प्रि० १६-१६-२।

छिति मंडल—सं० पुं० एक०। पृथ्वी। क० प्रि० १३-८-२। रा० ४-१२-३। वी० ७-६४। ९-८।

छिद्—सं० पुं० एक०। मौका। रा० ७-६-२। १२-१९-१।

छिन—सं० पुं० एक० । क्षण, पल । र० प्रि० ३-२७-३ । ११-१६-२ । क० प्रि० १०-१६-२ । १२-३०-४ । छिनु–र० प्रि० ११-२६-४। (२) वि० । (विशेष्य—क्षोभ(क्षणिक । वी० १-४०-६ । (३) अ० कालवाचक । उदा० छिन छिन छीन छवि । क० प्रि० १४-२२-२ ।

छिन छवि—सं० स्त्री० एक० । बिजली । रा० ६-५६-२ ।

छिन छिन—सं० पुं० एक० । प्रत्येक पल क० प्रि० ७-३६-३ ।

छिपै—क्रि० । छिपे । र०प्रि० १३-११-४ ।

छियैं—क्रि० । छुए, पकड़े हुए (बुन्देली)। र० ६-३६-१ । ११-११-३ । (छूने पर)

छिये—क्रि० । छुए हुए । रा० ६-६१-४ । १४-५५-१ । २५-११-१ (छूकर)।

छियौ—क्रि० । छुआ । रा० ३४-२३-१ ।

छिरके—क्रि०। छिड़के । र०प्रि० १-२५-६ । रा० २६-१७-२ ।

छिरक्यों—क्रि० । छिड़का । र०प्रि० ६-५५-३ ।

छींट—१-सं० स्त्री० एक० । कण, बूँद । रा० ६-६-१ । २-स्त्री० एक० । हल्की वर्षा । क० प्रि० १५-३६-१ ।

छीजई—क्रि० पुं० एक० । क्षीण हो जाता है, कम हो जाता है । रा० १४-३-२ ।

छीजै—क्रि० । क्षीण हो जाना । र० प्रि० ८-४९-१ ।

छीतर मित्र—सं० पुं० एक । वीरसिंह के यहाँ का एक ब्राह्मण कवि । वी० ३३-१३ ।

छीन—वि०(विशेष्य—कटि प्रदेश) । दुबला, क्षीण । क० प्रि० ७-३६-३ । र० ३१-३३-१ । वी० ६-१५-२ ।

छीनि—क्रि० । छीनकर । राम० ६-३२-१ । २०-२०-२ ।

छीर—सं० पुं० एक० । क्षीर, दूध । र० प्रि० १-२५-३ । क० प्रि० ६-३८-३ १२।११।३ । रा० ३०-३०-१ ३४-२३-१ । छं० १-६२-५ ।

छीर निधि—सं० पुं०एक० । क्षीर-सागर । क० प्रि० ८-२६-२ । १४-५०-२ । छीर समुद्र–र० प्रि० ५-३६-४ । छीर सागर–रा० ६-६१-४ । छीर सिन्धु–रा० ११-१८-१ ।

छीतर—सं० पुं० एक० । छिछला गड्ढा, उथला जलाशय । क०प्रि० १४-२३-४ ।

छीवें—क्रि० । छूते । रा० २०-३६-१ ।

छीवे—क्रि०। छुये । रा० १४-१५-२ । छुवे–र० प्रि० १-२७-२ ।

छुई—क्रि०। छुआ है । रा० ५-२२-१ । २४-६-१ । ३०-१४-२ ।

छुए—क्रि० । छूकर । रा० ३०-३६-४ ।

छुटावे—क्रि० । छुटाये । र०प्रि० १०-६-१ ।

छुटी—क्रि० । छूट पडी । रा० १९-३०-१ ।

छुड़ाइये—क्रि० । छुड़ाइये । र० प्रि ३-३०-२ ।

छुड़ाई—क्रि० । छुड़ाना । र० प्रि० ३-२५-२ । रा० ७-२३-४ ।

छुड़ावही—क्रि० । छुड़ाते हैं । र० प्रि० १०-२८-१ ।

छुड़ावहु—क्रि०। छुड़ाओ । रा० १२-२१-२ ।

छुद्—वि० (विशेष्य—मन)। क्षुद्र, नीच। वी० १६-३३-२।

छुद्बुद्धि—वि० (विशेष्य—लंकानाथ)। हीन बुद्धि वाला, अधम, नीच। रा० १२-१९-१।

छुयौ—क्रि०। छुआ। रा० ४-२४-२। १३-४०-२।

छुरी—सं० स्त्री० एक०। चाकू। र० प्रि० ९-८-२। छुरीन-स्त्री० बहु०। वि०गी० २१-४६-१।

छुवत—क्रि०। छूते ही। र०प्रि० ८-२१-३।

छुवावति—क्रि० छुलाती। र० प्रि० ५-१०-३।

छुवै—क्रि० छुये। रा० ५-४१-२। ३४-२५-२।

छूटत—क्रि०। छूटने लगे। र० प्रि० १-२४-४। ३६-४-३। ७-८-१। रा० ११-४१-१। १७-४०-२। २४-४०-२।

छूटि—क्रि० छूटना। र० प्रि० ३-२१-२। ३-४०-२। ५-३१-४। क० प्रि० ३-११-१।

छूटि गई—सं० क्रि०। छूट गई। र० प्रि० ३-२१-२।

छूटिबे—क्रि०। छूट जाना। र० प्रि० ६-५२-२।

छूटी—क्रि०। छूट जाता है। रा० ११-१२-२ १२-३८-४ (छूट गया)। १९-३०-२। छोरत-रा० १७-१३-१।

छूटे—क्रि०। छूट जायेगा। रा०२४-१४-२।

छूटे क्रि०। छूट गये। रा० ९-६-१।

छूटे—क्रि०। छूटता है। र०प्रि० ७-२०-५। २४-१४-२। रा० ४-१७-३। १३-११-४। वि० गी० १६-१०९-१।

छूटो—क्रि०। छूट गया। रा० १२-३१-२। छूट्यो—र० प्रि० ४-१८-७। ५-२१४। रा० १३ ३८-२। १८-२५-२।

छ्वावौ—क्रि०। छुलाओ। र० प्रि० ५-१०-४।

छ्वै—क्रि०। छुए। र० प्रि० ३-२७-३। ३-२०-४। ८-२८-१। रा० ३-३४-३। २५-२०-२। वी० ४-२-२।

छ्वै निकसे—सं० क्रि०। छूते हुए निकल-गए। र० प्रि० ३-७०-४।

छेड़ी—सं० स्त्री० एक०। संकरी गली। र० प्रि० १४-३२-४।

छेत्रपाल—सं० पु०एक०। क्षेत्रपाल(राजा)। वी० १३-१।

छेद—सं० पु० बहु०। छिद्र, छेदन। क० प्रि० १५-२७-४।

छेदि—क्रि० छेदकर। रा० १९-४५-६।

छेदियो—क्रि०। छेद किया, भेदा। रा० १८-३३-१।

छेम कर—सं० पु०एक०। क्षेम करने वाला। ज० १।

छेमनि—सं० स्त्री० बहु०। कुशलाकांक्षिणी गुरु स्त्रियाँ। क० प्रि० १०-२०-४।

छोटी—वि०। (विशेष्य—दिन)। कम समय के। क० प्रि० १३-११-२। वी० १३-७-३। १७-५३-१।

छोटे—वि० (विशेष्य—कान)। कम आकार के। वी० १७-५०-१। १७-५२-१।

छोटे छोटे—वि०। (विशेष्य—कर)। अत्यत छोटे। र० प्रि० ५-१०-२।

छोडत—क्रि०। छोड़ता। रा० ७-३९-१। २०-१९-२। ३२-४१-२।

छोडन—क्रि० । छोडने को । र० प्रि० ४-१७-३ ।

छोडन कहत—सं० क्रि० । छोडने को कहता । र० प्रि० ४-१७-३ ।

छोडि—क्रि० । छोड़कर । रा० २-२६-४ । १४-३-१ । (छोडा)। १५-२०-२ । १८-१५-२ । (छोड़िके) रा० २३-३३-४ ।

छोडे—क्रि० । छोड़ेंगे । र० प्रि० ७-३८-१ । रा० १६-३४-२ । १६-२७-१ ।

छोभ – १–सं० पु० एक० । व्याकुलता, हलचल । क० प्रि० ५-२४-१ । ८-१५-१ ८-१६-१ । २–पुं० एक० । रोष । र० प्रि० ६-१-२ ।

छोभही —क्रि० । डरते हैं । रा० १७-३१-१ छोभे–रा० १-४१-१ (ईर्ष्या करते हैं) १७-३८-१ । छोभत रा० ७-३४-२ । (डरते हैं)

छोरनि—सं० पु० बहु० । नोक, कोना । क० प्रि० ६-१०-२ ।

छोलियत—क्रि० । तराश दिए जायँ । र० प्रि० ६-८-४ ।

●

ज

जंग—सं० पु० एक० । लड़ाई । वी० ३-११ । ३-१७ । ३-१८ ।

जंगम—[गम (जाना) + यङ् द्वित्वादि + अच] सं० पु० बहु० । चल वस्तुएँ । रा० ३३-४-१ । छं० २-२१ । ज० २८ (घुमक्कड़) । वि० गी० २१-३७-३ ।

जंगल [√गल् (भक्षण) + यङ् + अच] सं० पु० एक० । वन । वी० ८-३० ।

जंघ—सं० पु० एक० । जघा । रा० १८-२१-२ । ३१-३३-३ । जघा । वी० २२-८२ ।

जंजार—[जग + जाल] सं० पु० एक० । जंजाल । वी० ५-८ । वि० गी० । १५-३१-२ ।

जंजीर—स० स्त्री० बहु० । तोडे । पग-भूषण–विशेष । क० प्रि० ११-२५-२ । ज० ४२ । जंजीरनि–बहु० शृंखलाएँ । वि० गी० १६-६८-२ ।

जंत—सं० पुं० बहु० । जंतु, पशु, जीव । क० प्रि० ८-३३-१ । जंतु । र० प्रि० १०-६-१ । क० प्रि० ७-१८-१ । वी० १-२७ । २५-१६ । वि० गी० ४-६-३ । ३-३३-४ । ४-२५-३ ।

जंत्र—१–सं० पुं० एक० । तावीज (कागज या भोजपत्र आदि पर अंकित मंत्र या चक्र जिसे सोने-चाँदी आदि के संपुट मे बन्दकर गले बाँह, कमर आदि मे पहना करते है) । क० प्रि० ६-२७-३ । जंत्रक–क० प्रि० ६-१६-३ । जंतु ।

क० प्रि० ५-६०-२ । २—पुं० एक० यंत्र—रा० ३१-१२-१ । वी० १-४६ । वि० गी० १६-२१-४ । ३—पुं० एक० । जंत्र-मंत्र । रा० २४-६-४ । ४—पुं० बहु० । तावीज । र० प्रि० ५-१२-२ । जंत्रन-वि० गी० ७-१६-४ । (अनेक यंत्र) ।

जंबुमाली—सं० पुं० एक० । रावण के प्रहस्त नामक मंत्री का पुत्र । रा० १३-६३-२ ।

जंबूकाश्रम—सं० पु० एक० । आश्रम-विशेष । वि० गी० ६-६-२ ।

जंबूद्वीप—सं० पु० एक० । जंबूद्वीप । (पुराणानुसार धरती के सात महाद्वीपो या प्रधान विभागो मे से एक जिसके नौ खण्डो मे से एक भारत वर्ष भी है।) क० प्रि० ४-२०-४ । वी० ५-२५ । २४-६। २४-१५ । वि०गी० ४-२६-१ । ६-४३-१ । १६-२७-१ । १६-३३-१ । जम्बूद्वीप-रा० ३२-२५-२ (भारत) ।

जंबू द्वीप-दीप—वि०। (विशेष्य—इंद्रजीत) जबूद्वीप (पृथ्वी के सात द्वीपो मे से एक) का दीपक । क० प्रि० ४-२०-४ ।

जंभात—क्रि० । जँभाना, जमुहाई लेना । र० प्रि० ५-११-६ । जंभाति-जँभाती । जम्हाई लेना । र० प्रि० ५-६-३ ।

ज—सं० पु० एक० । जगण । पिंगल के आठ गणो मे से एक जिसमे आदि अन्त वर्ण लघु और मध्य वर्ण गुरु होता है । क० प्रि० ३-२४-२ । २—पुं० एक० । 'ज' अक्षर, देवनागरी वर्ण माला के चवर्ग का तीसरा अक्षर, उच्चारण-स्थान तालु, अल्पप्राण । क० प्रि० १६-३-२ ।

जई—सं० स्त्री० एक० । कुम्हड़े की बतिया । र० प्रि० १०-५-३ ।

जऊ—अ० । यद्यपि । २४-२२-२ ।

जए—क्रि० । जीत लिए । रा० १५-३०-२।

जक—[झक] १—सं० स्त्री० एक० । हठ । र० प्रि० ३-२५ । २—स्त्री० एक० । धुन । र० प्रि० ८-३८-३ । १२-१०-३ । १२-२६-३ । १६-७-२ ।

जक्ष—१—सं० पुं० एक० । यक्ष । रा० ११-३३-१ । १३-७०-२ । वी० १-३१। १४-१६ । २—पु० बहु० । र० १-१८-३ ।

जक्षक देम—सं० पुं० एक० । कपूर, अगर और कस्तूरी कंकोल के संयोग से बना हुआ अंगराग । रा० १६-३-२ । २६-२३-६ ।

जक्षकुमार—सं० पु० एक० । यक्षकुमार । वि० गी० । १३-४२-१ ।

जक्षपुरी—सं० स्त्री० एक० । अलकापुरी । रा० ५-२-१ ।

जक्षभीर—सं० स्त्री० एक० । यक्षो की भीड़ । रा० १६-२-१ ।

जक्षराज—सं० पुं० एक० । कुबेर । रा० १२-१७-१ ।

जक्ष सुतानि—सं० स्त्री० बहु० । यक्ष कन्याएँ । वि० गी० । १३-४२-१ ।

जक्षिणी—सं० स्त्री० एक० । यक्षिणी । रा० १३-५०-२ । २६-१३-२ ।

जक्षिनी रमन—सं० पुं० एक० । यक्षिणी स्त्रियो के रमने का स्थान । क० प्रि० १३-२६-१ ।

जगत विदित—वि० (विशेष्य—माया) । संसार भर मे आच्छादित । छं० २-१-२ ।

जगती को इंद्र—वि० । (विशेष्य—जहांगीर) । संसार का इन्द्र स्वरूप । वी० ९-२४-१ ।

जगती प्रतिपालक—वि० । (विशेष्य—मुक्तिवाल) । जगत का पालन करनेवाले (विष्णु के पुत्र होने के नाते) । रा० ३६-२८-१ ।

जग दंडनि—सं० पुं० एक० । संसार को दंड देने की नीतियो को । वि० गी० १६-४६-१ ।

जग दीन स्वभाव—वि० । (विशेष्य—गोकुल, ब्रह्मन् नारि, नपुसक) । अत्यन्त दीन स्वभाव वाले । रा० ७-४१-२ ।

जगदीस—(१)१-सं० पुं० एक० । जगत्पति विष्णु । क० प्रि० ६-६२-२ । १०-३१-४ । वा० १-५८ । १३-६ । वि० गी० ३-२५-४ । ४-१२-२ । ४-१५-२ । ४-३४-२ । २-पुं० एक० । राजा । र० १-३५-६ । (२) वि० (विशेष्य—रामदेव) समस्त जगत् के ईश । क० प्रि० १५-१२-२ ।

जगदीश जोति—सं० स्त्री० एक० । विष्णु की प्रभा । क० प्रि० १०-३१-४ ।

जगद्रूप-सं० पुं० एक० । परब्रह्म । वि० गी० ११-२५-१ ।

जगद्रूप चिदपावसी—वि० । (विशेष्य—श्री त्रिन्दु माधो) । जगद्रूप परब्रह्म मे वास करने वाले । वि० गी० ११-२५-१ ।

जगदेव—(१) सं० पुं० एक० । ईश्वर । वी० २-१८ । वि० गी० १५-३९-२ । (२) वि० (विशेष्य—महादेव) । जग का देव । वि० गी० १५-३९-२ ।

जगद्देव—सं० पुं० एक० । केशवदास के आश्रयदाता, इंद्रजीत के बड़े भाई । क० प्रि० ६-६४-१ ।

जगन—स० पुं० एक० । दे० "ज" । क० प्रि० ३-२४-२ । ३-१८-२ । ३-२०-१ । ३-२३-१ । छं० १-१०-१ । १-११-१२ ।

जगनहि—सं० पुं० एक० । दे० "ज" । छं० १-४८-१ । १-५८-१ ।

जगन्मातु—(१) सं० स्त्री० एक० । जगन्माता पार्वती । वि० गी० ११-५०-२ । (२) वि० (विशेष्य—गगे) । जगत माता । वि० गी० १२-५०-२ ।

जगनायक नायक—वि० (विशेष्य—गनेश) । त्रिदेवो के स्वामी (पुराणो के अनुसार गणेश के गजानन होने पर यह आशका थी कि शायद कोई हाथी का मुँह देख उनकी पूजा न करें, सकल देवताओ ने मिलकर विधान किया कि गजानन की पूजा न करने से ब्रह्मादि देवताओ की पूजा भी बिगड जायेगी । इसी से गणेश सब देवो के भी देव माने गये । वे समस्त गणो के ईश होने के नाते ही गणेश कहे जाते हैं । र० प्रि० १-१-३ ।

जग परिपूरन—वि० (विशेष्य—मन) । संसार भर मे व्याप्त । वि० गी० २१-२९-२ ।

जगवंद—वि० (विशेष्य—मुख) । जगत भर से वंदनीय । र० प्रि० १-१-२ । ७-३१-२ । क० प्रि० २-८-२ । रा० ९-४२-२ । छं० १-११-३ ।

जगवंद जू—वि० (विशेष्य—रघुनंदन जू)। संसार भर से वंदित। रा० १-१३-१। छं० १-१०-१।

जगवंदनु—वि० (विशेष्य—नंदनंदनु) जग। से वंदनीय। क० प्रि० १५-१२७-४।

जगवंदह—वि० (विशेष्य—हरिचंद्रह)। जगत् विख्यात। रा० २-२१-२।

जगबंदिनी—वि० (विशेष्य—रेणुका)। जगत् से पूजनीय। रा० ७-२६-४।

जगबंधन—सं०पुं० बहु०। संसार के लोगों के बंधन या दुःख। क०प्रि० ७-१७-४।

जग भूषन को भूषन-निधान—वि० (विशेष्य—मुद्रिका)। रामचंद्र के भूषणों की मंजूषा। रा० १३-८२-१।

जगमग—१—सं० पुं० एक०। संसार का कायदा। क० प्रि० ६-६१-१। २—पुं० एक०। जगमगाहट, चमक-दमक। क० प्रि० ७-२४-३। ३—पुं० एक०। जगत का मार्ग। रा० २०-४२-२।

जगमग दरसाई—वि०। (विशेष्य—भरद्वाज)। जग को मार्ग दिखानेवाला। रा० २०-४२-२।

जगमगो—क्रि०। चमके। र० प्रि० १२-१०-२। रा० ११-२०-१।

जगमाता—सं० स्त्री० एक०। लक्ष्मी देवी। क० प्रि० ६-६२-२।

जगमारग दरसावनी—वि० (विशेष्य—सुरज किरन, मुद्रिका)। सांसारिक कार्यों का मार्ग दिखाने वाली। रा० १३-४५-२।

जगमोहन—सं० पुं० एक०। संसार को मोहित करने वाला कृष्ण, ईश्वर। वि० गी० ३-१६-२।

जगरानी—वि० (विशेष्य—वाणी)। जगत की श्रेष्ठ देवी। क० प्रि० ६-६६-१।

जगलोचन—(१) १—सं० पुं० एक०। सूर्य। २—सं० पुं० बहु०। जगत् के लोगों के नेत्र। क० प्रि० ७-१३-३। ३—पुं० एक०। ईश्वर। वि० गी० १-४-३। १०-१७-४।

जगलोचन ललित—वि० (विशेष्य—जमुना, वेतवै)। क० प्रि० ७-१३-३। श्लेष से—(१) जमुना के पक्ष में—सूर्य की लड़की—मार्कण्डेय पुराण में लिखा गया है कि यमुना सूर्य की कन्या है और यम की भगिनी है। यमुना की उत्पत्ति के संबंध में वहाँ इस तरह उल्लेख है—

ततः सा चपलं दृष्टिं देवी चक्रे भयाकुला जगत्री।
विलोलित दृशं दृष्ट्वा पुनराह च तां रविः॥
यस्मा द्विलोलित दृष्टिमेचि दृष्टे तयाधुना।
तस्माद्विलोला तनया नदी स्व प्रसविष्यसि।
ततस्तस्यान्तु संजज्ञे भर्त्तृशापेन तेन वै।
यमश्च यमुनाचैव प्रख्याता सुमहानदी॥
—मार्कण्डेय पुराण, ७७-५-७।

संज्ञा विश्वकर्मा की कन्या थी। विश्वकर्मा ने सूर्य के साथ इसका विवाह कर दिया। संज्ञा भगवान् सूर्य का असहनीय तेज सहन नहीं कर सकती थी। वह सूर्य-दृष्टि पड़ते ही अपनी दोनों आँखें मूँद लेती थी। एक दिन सूर्य ने गुस्से में आकर उसे शाप दिया—अरी! तुम

मुझे देखते ही आँखें संयमन अर्थात् मूँद लेती हो, इससे तुम प्रजा के संयमन यम को प्रसव करेगी। इस पर संज्ञा भय-विह्वल होकर चपल दृष्टि से देखने लगीं। सूर्य ने उसकी लोल दृष्टि देखकर फिर कहा—मुझे देखते ही तुम्हारी दृष्टि चपल हो गयी। इसलिए तुम चंचल-स्वभावा नदी को तनया रूप मे प्रसव करोगी। तदनंतर इस शाप से संज्ञा के गर्भ मे यम और अति चंचल यमुना ने जन्म ग्रहण किया। (२) बेतवै के पक्ष मे—जग के लोचनो से ललित।

जगश्री—वि० (विशेष्य—जगदीस)। जग की शोभा। वि० गी० १६-२। १-४।

जगसुखदाई—वि०(विशेष्य—मुनि)। संसार को सुख देनेवाले। रा० ३-७-१।

जग्यन—सं० पु० बहु०। यज्ञो को। वी० ३१-१८।

जगाई—क्रि०। जगाया। र० प्रि० ५-३१-६। ६-४३-१।

जगाएँ—क्रि०। जगाये। र०प्रि० ४-१४-५।

जगावत—क्रि०। जगाते। रा० १८-२-२।

जगावन—क्रि०। जगाने के लिए। रा० १३-२७-२।

जगाओ—क्रि०। जगाओ। रा० १८-१-२।

जगी—क्रि०। जागी। रा० ६-६-४। ८-११-३।

जगे—क्रि०। जगमगाए, जागृत हुए। रा० १४-२-६।

जगै—क्रि०। जगती हैं। र० प्रि० १-३-२। रा० ५-२२-४। २०-१६-१। १४-१३-३।

जज्ञ—सं० पुं० एक०। यज्ञ, हवन। क० प्रि० १३-११-१। १४-२५-२। रा० २-१५-२। २-२४-१। ३-११-१। छं० १-६१-३। वि० गी० ३-३-४। ३-७-२। ५-२२-१। ६-३८-२। जज्ञन—बहु०। वि० गी० १७-२२-१।

जज्ञ क्रिया सिद्धि—स० स्त्री० एक०। यज्ञ क्रिया की सफलता। वि० गी० १७-१६-२।

जज्ञ कुण्ड—सं० पु० एक०। हवन करने का कुण्ड, अनल कुण्ड। क० प्रि० ७-१-१।

जज्ञकूल—सं० पुं० एक०। यज्ञ स्थल का निकट स्थान। रा० ३-५-१।

जज्ञस्थली—स० स्त्री० एक०। यज्ञशाला। रा० ३६-१६-१। यज्ञस्थल–रा० २-२६-४। ११-१-१।

जज्ञदेव—सं० पु० एक०। विष्णु। क० प्रि० १६-१३-१।

जज्ञ पुरुष—(१) सं० पु० एक०। विष्णु। रा० १२-४५-१। ७ १७-३। (२) वि०(विशेष्य –राम)। नारायण रूप। रा० १३-४५-१।

जज्ञ बराह—सं० पु० एक०। वराह, भगवान विष्णु का एक अवतार। रा० ६-३२-२। १६-२०-२।

जज्ञ विधान—स० पु० एक०। यज्ञ का प्रबन्ध। रा० ३५-४-२।

जजाति—स० पु० एक०। ययाति (चद्रवंश का प्रसिद्ध राजा)। वी० २-१८-२।

जटा—[√जट् (परस्पर संलग्न होना) +अच्] (१) सं० स्त्री० एक०। सिर

पर के बालो का समूह। रा० १०-१३-१। २१-३७-१। २५-२५-२। वी० १७-५०। १८-७७। वि० गी० ५-१६-१। पु० बहु०। जटान। क० प्रि० ६-२५-१। १४-३३-२। जटागन--रा० २१-१२-२। (२) वि० (विशेष्य—सिर) जटा से युक्त। रा० १३-२-२।

जटाजूट--सं० पुं० एक०। जूड़े के रूप मे बँधी हुई जटा, शिव जटा। क० प्रि० ७-७-४।

जटायु—सं० पुं० एक०। रामायण मे वर्णित एक गीध जिसने सीता को ले जाते हुए रावण से सीता को छुड़ाने के लिए युद्ध किया था। रा० १२-२८-१। १२-३१-१।

जटित—(१) वि० (विशेष्य--मनिजाल) जडाऊ। वी० २७-३-१। (२) क्रि० पु० एक०। जुडा हुआ। रा० २६-२२-६।

जटित जरामणि--वि० (विशेष्य--जीन)। ज़री से जटित। वी० २२-२३-१।

जटित मनि—वि० (विशेष--ताटंक)। मणि जटित। रा० ३१-१४-२।

जटि अग्नि ज्वाला—वि० (विशेष्य – जटा)। अग्नि ज्वालाओ से युक्त। रा० १४-६-१।

जठर--[√जन् (उत्पन्न होना) + अर, ठ आदेश] सं० पु० एक०। पेट। वी० १७-५२-१।

जड—[√जल् (जमना) + अच, ड आदेश] (१) स० पु० एक०। चेतना हीन पदार्थ। क० प्रि० १५-६४-२। रा० १४-२७-१। छं० २-३१-२। वि० गी० ८-३७-१। ६-४७-४। १७-२१-३। (२) १–वि० (विशेष्य--मेघ ओघनि)। अचेतन, निर्जीव। क० प्रि० १२-६-१। १५-६४-२। रा० ६-१६-२। २४-२२-२। ३७-१-२०। वी० ७-४६-१। ज० १६-६-२। वि० गी० ६-४७-४। १७-२१-३। २—वि० (विशेष्य--भूषित)। जो किसी को बात न सुनता हो। रा० १८-१०-४।

जड़ता--सं० स्त्री० एक०। एक संचारी भाव--यह उस स्तब्धता या चेष्टा-हीनता का द्योतक है जो प्रिय व्यक्ति से वियोग होने से या घबराहट आदि की स्थिति मे नायक या नायिका का परिलक्षित भाव है। र० प्रि० ६-१३-२। ८-६-२। ८-४८-२।

जडो--वि० (विशेष्य--पति)। जो किसी बात को नहो सुनता है। वि० गी० १६-१६-१।

जतन--सं० पु० बहु०। यत्न। र० प्रि० ११-६-२। क० प्रि० ५-२६-२। १६-२३-१। रा० २५-४-१। र० १-२४-४। वि० गी० २०-३२-२। जत्न–वी० १-५०-१।

जति--सं० स्त्री० एक०। यति (गीत या छंद मे विश्राम का स्थान)। क० प्रि० १६-२-१। जतिभंग–काव्यगत दोष-विशेष, छंद मे यति निश्चित स्थान पर न होना। क० प्रि० ३-१४-१।

जती--स० पु० एक०। मुनीश्वर। रा० १६-२७-२। वि० गा० ५-१६-१।

पु० बहु० । जतीन–क० प्रि० १६-५७-२ ।

जदपि—क्रि० वि० । संकेतवाचक समुच्चय-बोधक—'यद्यपि' । उदा० । 'मोल लिए अति जदपि अमोल' । (वी० १७-४१-१) । रा० १-१६-२ । १-२७-१ । वी० १७-१४-१ । २३-२२-१ । २६-१९-१ ।

जदुकुल—सं० पु० एक० । राजा यदु का वंश । क० प्रि० २-४-१ ।

जदुकुल कलस—वि० (विशेष्य—त्रिभुवन-पाल) । यादवकुल का कलश । क० प्रि० २-४-१ ।

जदुवंश—सं० पुं० एक० । दे० जदुकुल । वि० गी० २-२३-२ । ६-४०-३ ।

जदुवीर—सं० पु० एक० । यादवों में श्रेष्ठ, श्री कृष्ण । क० प्रि० १६-१३-३ ।

जद्यपि—क्रि० वि० । यद्यपि (संकेतवाचक समुच्चयबोधक) । उदा० "वै आसा दस जद्यपि सहसकार" (ज० १४५-४) र० प्रि० ४-८-१ । ६-३७-३ । रा० १-११-२ । १२-१५-१ । वी० १६-३१-२ । २०-१०-२ । ३१-८०-१ । ज० १४५-४ । १८-३ । वि० गी० २-९-१ । ९-२१-१ ।

जन—[√जन् (उत्पन्न होना) + अच] १-सं० पु० बहु० । मनुष्य । क० प्रि० ६-२०-२ । ६-३०-२ । ७-२४-२ । ८-२४-२ । १०-१८-१ । रा० २-२-२ । ४-२९-२ । ६-२१-१ । वि० गी० ६-२९-१ । २-पु० एक० । व्यक्ति । र० प्रि० ४-१३-१ । ४-१७-२ । क० प्रि० १६-५७-१ । रा० ५-२१-१ । वि० गी० ४-३३-२ । ३-पुं० एक० । दास, सेवक । क० प्रि० ७-४४-१ ।

जनक—१-सं० पु० एक० । पिता । क० प्रि० १५-३४-१ । वि०गी० १-२३-४ । २-पु० एक० । राजा जनक । रा० ४-३१-२ । ५-१७-४ । ६-२६-१ । ७-:" १ । ९-२३-१ । वी० २७-२७ । ३३-३० । वि० गी० १-२३-४ ।

जनक तनया—सं० स्त्री० एक० । राजा जनक की पुत्री और भगवान श्री रामचन्द्र की महिषी सीता । रा० ९-२२-१ ।

जननि—१-सं० स्त्री० एक० । माता । क० प्रि० १५-४२-१ । १६-५८-५ । रा० ९-२३-१ । १३-७३-१ । १३-७५-१ । जननी–र० प्रि० ८-६-१ । ८-१९-१ । क० प्रि० १५-३४-१ । १५-४७-२ । रा० ७-३५-४ । २०-२२-२ । २२-१३-१ । वी० ७-१ । वि० गी० १९-४-८२ । २-पु० बहु० । लोग, मनुष्य-समूह । र० प्रि० १४-४०-१ । ३-स्त्री० बहु० । जननीगन । वि० गी० १७-१२-३ ।

जनपद—सं० पु० एक० । राज्य-विशेष का ग्राम, भाग । वि० २-२५ । ४-३ । ५-७२ । १०-१५ । ज० १३५ ।

जनप्रिय—वि० (विशेष्य—सेनापति) । जनता को प्रिय लगनेवाला । क० प्रि० ८-१३-२ ।

जनम—सं० पु० एक० । जन्म । र० प्रि० ९-७-३ । क० प्रि० ५-२६-२ । १०-३१-५ । ११-६-२ । ११-५०-२ । रा०

२३-२। १०-६-२। ११-१५-१। १२-९-१। १४-७-१। १४-३०-४। १५-३-२। १५-२३-१। १६-२८-२। १७-१२-१। १७-२४-२। १८-१८-२। २०-९-१। २२-१५-२। २२-६९-१। २२-८७-२। २३-१६-२। २५-७-१। २६-२०-१। २९-७-१। २९-३२-१। ३०-१४-२। ३१-६८-१। ३२-२९-२। ३३-१९-१। जहाँ० ५-३। ४०-२। ६६-१। ११९-२। १९१-१। वि० गी० १-१५-१। ३-२८-२। ४-३२ १। ८-११-२। ९-१३-३। ९-४१-२। ११-१४-२। १३-३४-२। १४-३-१। १५-२७-१। १६-२३-२। १६-६४-२। १७-६४-२। १८-२५। १९-१-१। १९-१७-१। २१-५१-१ २१-५३-२।

अति अक्षर—विशेपण। विशेष्य—चिदानद। अविनाशी। वि० गी० १८-२५-३।

अति अजेय—विशेपण। विशेष्य—लवनासुर। जिसे जीतना कठिन है। रा० ३३-१०-४।

अति अदृष्ट—विशेपण। विशेष्य—गति। जो दिखाई न पडे। क० प्रि० १५-८३-२।

अति अधम—विशेपण। विशेष्य—जीव। अत्यत निम्न कोटि का। वि० गी० १५-२६-१।

अति अनंत—विशेपण। विशेष्य—जीवन। जिसका कोई अत न हो। रा० २५-२२-२। वी० च० १५-३-२।

अति अनुरक्त—विशेपण विशेष्य—पद्मिनी। अत्यत अनुराग से भरा हुआ। वी० च० १५-११-१।

अति अमल—विशेपण। विशेष्य—रवि। वहुत ही निर्मल। रा० ७-५१-३। क० प्रि० ११-७९-४। १४-२३-४। १४-२७-२। १४-४३-२। १५-५१-४। छ० मा० २-३४-५।

अति अमित—विशेपण। विशेष्य—भार। सीमारहित। जहाँ० ४०-२। ११९-२।

अति अवदात—विशेपण। विशेष्य—सिख। अत्यंत पवित्र वी० च० २-१३-२।

अति असार—विशेपण। विशेष्य—भुज। अत्यत बलहीन। रा० ४-११-१।

अति आरत दाई—विशेपण। विशेष्य—पेट। अत्यत दुखदायी। वि० गी० ३-२८-२।

अति इष्ट—विशेपण। विशेष्य—हरि-माया। अत्यत प्रिय लगनेवाली। वि० गी० १३-३४-२। १९-१७-१।

अति उच्च—विशेपण। विशेष्य—अगा-रनि। वडे ऊँचे। रा० १-४५-१।

अति उज्जल—विशेपण। विशेष्य—दृष्टि। अत्यत प्रकाशमान, दिव्य। रा० २३-१८-२।

अति उत्तम—विशेपण। विशेष्य—नर-पति। ऊँचे स्तर का, श्रेष्ठ। वी० च० ३२-३-२। क० प्रि० ४-३-१। १४-७-१। वि० गी० १५-२७-१।

अति उदार—विशेपण। विशेष्य—विदुर। अत्यत उदार। वी० च० २-३-१। र० प्रि० १४-२४-२।

२१-३४-१ । र० १-२८-१ । १-३२-१। छं० १-६३-६ । २-१६-२ । वि० गी० १४-२६-१ । जन्म । क० प्रि० १३-४२-१ । रा० ११-१-२ । २०-३३-४ । २४-१०-३ । छं० १-५६-६ । वि० गी० १०-६-४ । १३-८४-१ । १५-४-१ । १५-२४-२ ।

जनमजात—वि० । (विशेष्य—जोर जुर) आजीवन रहने वाले । रा० ६-२६-३ ।

जनमेजय—सं० पुं० एक० । पांडव-वंशज परीक्षित महाराज का पुत्र । वी० १४-२६ ।

जनाई—क्रि० उत्पन्न किया, जन्म दिया । र० प्रि० ६-४३-२ ।

जनानंद—सं० पु० एक० । केशवदास के वंशज । क० प्रि० २-८-२ ।

जनावति - क्रि० स्त्री० एक० । पैदा करती । र० प्रि० १६-५-२ ।

जनावही—क्रि० पु० बहु० । कहते हैं । र० प्रि० ८-४०-२ ।

जनावहु—क्रि० । दिखाओ, जताओ । र० प्रि० ७-३७-३ ।

जनावै—क्रि० । पैदा करें । र० प्रि० ८-१६-३ ।

जनी—सं० स्त्री० एक० । दासी । र० प्रि० ५-२४-१ । ५-२६-४ । ७-२७-१ ।

जनु—क्रि० वि० । मानो (रीतिवाचक) । उदा० "जनु सोय देन चली" । वि० गी० ११-४-४ । र० प्रि० २-१५-२ । ३-५८-४ । क० प्रि० ५-१३-४ । ७-३३-२ । रा० १-४१-२ । १-४५-१ से ४ । वी० ११-२१-१ । ११-२२-१ । २२-११-१ । वि० गी० ११-४-४ । ११-५-२ । १६-६७-१ ।

जनेऊ—सं० पु० एक० । यज्ञोपवीत, यज्ञ द्वारा संस्कार किया हुआ उपवीत, यज्ञ-सूत्र । क० प्रि० ५-११-२ । रा० २८-६-१ ।

जप—[√जप् (जपना) + अप्] सं० पुं० एक० । किसी मंत्र, ईश्वर के नाम आदि को धीमी गति से बार बार दुहराना । र० प्रि० १-४-२ । रा० ११-२-१ । १२-४४-२ । २४-१६-२ । २६-८-१ । वी० १-४६ । १-५२ । वि० गी० ३-३-३ । ३१-६३-१ ।

जप-जाप—दे० "जप" । छं० १-३६-३ ।

जपत—क्रि० । जपते । र० प्रि० ११-१८-८ । रा० १३-८८-४ ।

जप सिद्धि—सं० स्त्री० एक० । जप से प्राप्त अलौकिक सिद्धि । रा० ३३-५३-१ ।

जपा—सं० स्त्री० एक० । गुडहर, अड़हुल । क० प्रि० ५-३१-१ ।

जपी—सं० पु० एक० । जप मे लीन रहने वाले । रा० २१-४६-१ । जपीनि–पु० बहु । वि० गी० ६-२६-१ ।

जपु—दे० जप । क० प्रि० १५-७३-२ ।

जब—क्रि० वि० (सं० यावत्) । जिस समय (काल वाचक) । उदा० "जब बैहर की कर बीजन लीनौ ।" र०प्रि० ३-६०-२ । ५-५-१ । ६-२८-३ । क० प्रि० ६-६८-४ । ८-३५-४ । रा० १-१८-१ । २-१५-१ । ४-१२-२ । वि० गी० १-३१-२ । ६-४२-१ ।

जबै—क्रि० वि०। (हिं० जब)। जब ही जभी। उदा० "राज जबै भरि मौन अनावत" (क० प्रि० १६-८६-२)। र० प्रि० १४-१७-३। क० प्रि० १६-८६। रा० १-४१-२। २-१६-१। ५-४२-१। वी० २-२१-२। ३-३१-२। वि० गी० २-२१-१।

जम—१-सं० पु० एक०। मृत्यु के देवता यमराज। क० प्रि० ७-७-३। ८-१८-३। ११-५२-२। रा० ४-२०-१। १५-३६-२। वी० ५-८०। १२ ३०। जमराज—रा० २७-२६-४। २-पु० बहु०। मृत्यु-देवता जिनकी संख्या चौदह मानी गई। क० प्रि० ११-५६-१।

जमक—१-सं० पु० एक०। यमकालंकार। एक शब्दालंकार जिसमे एक ही शब्द-खण्ड अगर सार्थक हो तो भिन्न अर्थो मे एक ही पद मे अनेक बार प्रयुक्त होता है। क० प्रि० ९-७-१। १५-११९-२। १५-१३१-१। २-पु०एक०। अक्षर-मैत्री। र० प्रि० १५-६-२। ३-पु० बहु०। जमकनि—क० प्रि० १५-११०-१। १५-११०-२।

जमदग्नि—सं० पु० एक०। जमदग्नि महामुनि (परशुराम के पिता)। रा० ६-३५-१। वि०गी० १६-५५-१।

जमनिका—सं० स्त्री० एक०। पर्दा। रा० १२-६२-४।

जमलोक—सं० पुं० एक०। नरक। क० प्रि० ८-१९-१। रा० १६-३४-२। १९-४१-१।

जमाति—सं० स्त्री० एक०। समूह। सेना। क० प्रि० ७-७-३।

जमलखान—सं० पु० एक०। एक पठान योद्धा। वी० ६-४५।

जमुना—सं० स्त्री० एक०। हिमालय से प्रवाहित एक पवित्र नदी। (दे० जग-लोचन ललित)। र० प्रि० ५-३७-१। क० प्रि० ५-२२-१। ५-२७-२। ५-३७-२। ७-१३-३। रा० ६-५७-२। १०-३१-३। ११-८-२। वी० ५-२४। १५-२९। १५-३०।

जमुना तटवासी— वि०। (विशेष्य—द्विज) यमुना नदी के किनारे रहने वाला। रा० ३४-३५-१।

जमुनाधार—सं० स्त्री० एक०। यमुना नदी का प्रवाह। क० प्रि० १५-७७-२।

जयंत—सं० पु० एक०। इन्द्र का पुत्र। वी० १७-१९।

जय—१-सं० स्त्री० एक०। जीत। र० प्रि० १-८-१। क० प्रि० ६-२९-१। ११-३८-३। रा० ८-१०-१। २१-२२-४। २०-१-१। वि० गी० १-१८-१। २-स्त्री० एक०। मलाई। र० प्रि० १-१-३।

जयकंकन—सं० पुं० बहु०। विजय-रूपी कगन। क० प्रि० १५-१६-१। १५-१७-३।

जयदुन्दुभि—सं० स्त्री० एक०। विजय के बाजे। रा० २८-१४-२।

जयदेव—सं० पुं० एक०। केशवदास के वंशज 'प्रसन्नराघव' नाटक के कर्ता। क० प्रि० २-६-१।

जयत्र—सं० स्त्री० एक० । जीत की सनद । रा० २७-१६-२ ।

जयत्री—सं० स्त्री० एक० । विजय की अधिष्ठात्री देवी । क०प्रि० १५-१२६-१ ।

जयनशील—वि० । (विशेष्य—नयन विचित्र) जो हमेशा जीतती हो ।

जयनसील पति—वि० । (विशेष्य—नयन विचित्रा) । पति को जीतने वाली । क० प्रि० १-५० २ ।

जयमंभु—वि० । (विशेष्य—इन्द्रजीत) विजय को पानेवाले । क०प्रि० ४-२०-३ ।

जयरस—सं० पु० एक० । विजयोल्लास । रा० ३६-१५-४ । वि० गी० १८-३४-३ ।

जर—सं०पु० एक० । वृद्धावस्था । क० प्रि० ५-१३-४ । ५-१५-४ । जरा—क० प्रि० ५-५-१ । ५-१३-४ । ५-१४-३ । ५-१५-१ । ५-१५-४ । ६-१७-३ । रा० २०-४३-२ । २४-११-३ । २४-१३-३ । वी० ३३-५५ । (२) वि० । (विशेष्य—अम्बर) । जड़ाऊ । क०प्रि० १-५० २ ।

जरई—क्रि० पु० एक० । जलता है । रा० ७-३६-३ । जरत—क० प्रि० २-२२-२ । रा० १३-६३-२ । जरतु—र० प्रि० ४-१०-८ । जरै—र० प्रि० ७-१५-३ । ८-३२-२ । रा० १२-५०-२ । १४-७-२ ।

जरति—क्रि० स्त्री० एक० । जलती है । र० प्रि० ११-१६-६ ।

जराह जरी—वि० (विशेष्य—लंका) । नग जटित (सोने और रत्नो से बनी) । रा० १६-१२-४ ।

जराय जटित—वि० (विशेष्य—पलिका) । रत्नजटित । रा० २६-२२-३ ।

जराय जरी—वि० (विशेष्य—सारि) । जरी से जटित । रा० ८-१२-३ । शि० १०-२ ।

जराय जरे—वि० (विशेष्य—पलिका) । जड़ाऊ । रा० ६-४५-१ ।

जरायनि जरी—वि० (विशेष्य—कुपी) । जरी से जटित ।

जरायनि जरे—वि० (विशेष्य—कंचन कलस) । जरी से युक्त । वी० २३-४-१ ।

जरि—क्रि० । जलकर । र० प्रि० ५-२-२ । ८-३७-३ । रा० १६-४१-२ । २४-१३-१ ।

जरित जराऊ—वि० (विशेष्य—टीका) । जरी से जटित । वी० १७-२५-१ ।

जरी—(१) स० स्त्री० एक० । चाँदी का तार जिस पर सोने का पानी चढ़ाया गया है । क० प्रि० १५-८६-१ । (२) क्रि० स्त्री० एक० । जल गयी, दग्ध हो गई । र प्रि० १-२०-३ (जटित) । रा० १६-१२-४ । १६-१४-४ ।

जरे—वि० (विशेष्य—पट्ट) । जरी से जटित । वी० १७-२५-१ ।

जरैं—क्रि० पु० बहु० । जलते है । रा० ३०-३६-१ । ३२-८-२ ।

जरै लिये—वि० (विशेष्य—चंद्र) । सर्प युक्त, विषैला । रा० १२-५०-२ । विष्णु के परामर्श से देवताओ ने असुरो के साथ मिलकर समुद्रमंथन किया, उसी से चन्द्र की उत्पत्ति हुई । ये एक देवता गिने जाते हैं । अमृत पान के समय देवताओ की पक्ति मे बैठकर किसी असुर ने अमृत पी लिया था ।

चन्द्र ने विष्णु से वह बात कह दी। उसी पर असुर राहु (साँप) के रूप मे चन्द्र को ग्रास किया करता है। महाभारत १।१९। साँप से ग्रसित होने के कारण चन्द्र विषैला माना गया हैं।

जरौ—क्रि०। जलो। रा० ३७-२१-२।

जर्यौ—क्रि०। जड़ दिया है, कैद कर दिया हैं। र०प्रि० ७-२०-४। (जलाना) रा० १४-१२-४। ३१-९-१।

जर्यौ जराय— वि० (विशेष्य—सीसफूल)। जराई जटित। वी० २२-२५-२।

जल—[√जल् (जीवन देना) + अच] (१) १-सं० पुं० एक०। पानी। र० प्रि० ३-५-२। ३-९-१। ३-१२-१। क० प्रि० ३-२२-२। ५-९-२। ५-३५-१। रा० ५-२२-४। ६-५७-२। ९-१८-२। छं० २-२३-६। २०१-१८-४। वी० १-५२। ५-२७। वि० गी० १-२७-२। ६-४९-२। ८-६-१। जलु—क प्रि० १५-७४-१। रा० २-१०-४। १२-६२-१। जलै—वि० गी० १३-३९-२। २-पुं० बहु०। जलाशय। क० प्रि० १०-३०-४। ३-पुं० एक०। वर्षा, वारिश। र० प्रि० ५-२०-२। क० प्रि० १२-६-१। ४-पुं० एक०। लेप। र० प्रि० ६-३२-१।

जल केलि—सं०स्त्री० एक०। जलक्रीडा। नदी, तालाब आदि मे स्त्रियो का परस्पर या नायक-नायिका का एक दूसरे पर पानी के छींटे फेंकना। क० प्रि० ८-२-१। ८-३६-२। ८-३७-४। रा० ३२-३७-२। छं० १-७०-४। जलक्रीड़ा—वी० १५-२२-२।

जल को पगार—वि० (विशेष्य—गजराज)। जो गहरे पानी को भी अनायास ही पार कर सकते हैं। क० प्रि० ८-२८-१।

जल गुच्छ—सं० पु० बहु०। मोतियो के गुच्छे। रा० ६-६-२।

जलचर—सं० पुं० एक०। जलजंतु, जल मे रहनेवाला प्राणी। र० प्रि० ६-१६-३। क० प्रि० ७-१२-१। ७-१६-१। ८-३६-२। रा० १-३३-१।

जलज [जल् √जन् (उत्पत्ति) + ड] (१) १-सं० पुं० एक०। कमल। क० प्रि० ६-५९-१। ७-१८-१। रा० ३२-३७-४। छं० २-२८-३। वी० १-१। ४२-२१। २१-२९। वि० गी० १०-२१-२। २-पु० एक०। मोती—क० प्रि० ७-१८-१। वि० गी० ७-९-१। ३-पु० बहु०। कमल—क० प्रि० ८-३७-४। १२-३०-४। १५-९-२। जलजानि—क०प्रि० १०-३०-४। (२) वि० (विशेष्य—कमल)। जल में उत्पन्न होनेवाला। क० प्रि० १५-६-२।

जलजनि मंडित—वि० (विशेष्य—जल)। कमलो से युक्त। र० प्रि० १०-३०-४।

जलज नैनि—वि०(विशेष्य—वाम-सीता)। कमल या मछली जैसे नयनोवाली। रा० ९-२३-२।

जलज साला—स० पु० एक०। जलाशय। वी० २१-१३-२। जलासय—रा० ३८-३२-२। जलाशय—वी० २५-५। २५-१०।

जलज-सोभ—सं० पुं० एक०। लाल कमल की चमक। क० प्रि० १५-७६-२।

जल जल—सं० पुं० एक० । प्रत्येक जलाशय । क० प्रि० १४-२७-२ ।

जलजहार—सं० पुं० एक० । १—मोतियो की माला—शारदा के पक्ष मे । २—कमलो का समूह—शरद ऋतु के पक्ष मे । क० प्रि० ७-३४-२ ।

जलजात—(१) १—सं०पुं०एक० । कमल । क० प्रि० ६-४२-२ । रा० ३२-३३-१ । वी० २७-७६ । २५-१६ । ३२-३० । २-पु० एक० । जल समूह । रा० ६-५६-३ । १४-४२-३ । (२) वि० (विशेष्य—कमल) । जल मे उत्पन्न होनेवाला । क० प्रि० १५-१२६-१ ।

जलजाल—सं० पुं० एक० । समुद्र । रा० २१-४५-२ ।

जलजावलि—सं० स्त्री० एक० । १-मोती की माला । २—कमल समूह । वि० गी० १०-१०-३ ।

जलद—[जल √दा (देना) + क] (१) सं० पुं० एक० । बादल । र० प्रि० ५-२६-४ । क० प्रि० १२-३०-४ । रा० ३१-२३-२ । वी० ५-३७ । २२-३१ । वि० गी० १-२७-२ । (२) वि० (विशेष्य—लोचन) । अश्रुपूर्ण । क०प्रि० १२-३०-४ ।

जलद समाज—सं० पुं० एक० । बादलो का समूह । रा० २७-५-२ ।

जलदेव—सं० पुं० एक० । वरुण के वंश मे उत्पन्न देव । रा० २६-१६-२ ।

जलदेवता—सं० स्त्री० बहु० । जल देवियाँ, वरुण देव के वश की कुमारियाँ । क० प्रि० ८-३७-३ । रा० ३२-३७-३ । जलदेवी—रा० १२-४६-३ ।

जलधारि—सं० स्त्री० एक० । पानी की धारा । र० प्रि० ७-३२-१ । जलधार—रा० १३-१६-२ । ३२-१४-१ । वी० ६-२४ । वि० गी० १०-८-२ ।

जलधि—[जल √धा + कि] सं० पुं० एक० । समुद्र । क० प्रि० ७-२५-२ । १५-७३-२ । रा० ३०-२१-७ । वी० २२-७१ । जलनिधि—रा० २१-४४-२ ।

जलनिधान—वि० (विशेष्य—वितान) । चमकीले । रा० २६-२२-३ ।

जलपासु—सं० पु० एक० । वरुण देव का फाँस । रा० ४-१-२ ।

जलबुंद—सं० स्त्री०बहु० । पानी की बूँदें । रा० २५-२५-२ । जलबिन्दु—बहु० । क०प्रि० १४-३३-२ । जलबूँद—एक० । वि० गी० १०-६-२ ।

जलभरी—वि० (विशेष्य—आलबाल अवली) । जल से भरी हुई । वी० २३-५-२ ।

जलयत्र—सं० पु० एक० । फव्वारा । वी० २३-१८ ।

जलरुह—सं० पुं० बहु० । पानी मे होनेवाली वस्तुएँ, कमल, सिवार, मोती आदि । क० प्रि० ६-३७-२ ।

जलरूपी जगदीस—सं० पु० एक० । जल रूपी ईश्वर । वि० गी० ४-१५-१ ।

जलालदी—सं० पु० एक० । जलालुद्दीन अकबर शाह । क० प्रि० १-२८-२ । जलालदान—अकबर का पूर्वनाम । वी० १-२ । ५-६ । ७-२० । ज० ३३-३७ । ७३-१६७ ।

जलालसाह—सं० पु० एक० । दे० जलाल-दीन । वी० ३-१३ । ७-१२ ।

जलेस—वि० (विशेष्य—गंगाजल) । श्रेष्ठ जल । वी० ६-२३-३ ।

जवा—सं० स्त्री० एक० । एक पौधा जो वर्षा मे सूख जाता है । ज० ३२ ।

जवासे—सं० पु० एक० । एक कँटीला वृक्ष जो बरसात मे पत्रहीन हो जाता है और शरद ऋतु में फिर पनपता है । र० प्रि० ११-१८-३ । क० प्रि० ४-२२-१ । रा० १३-८८-३ (जवासो) । वि० गी० १०-६-३ । (जवासौ) ।

जस—१-सं० स्त्री० एक० । कीर्ति । र० प्रि० ८-४-२ । क० प्रि० १-३-३ । ५-१५-१ । ६-३०-४ । रा० ३-७-२ । ४-६-४ । छं० १-३८-६ । २-२४-३ । र० १-१७-५ । १-२५-३ । वी० १-४३ । १-५६ । ज० ७-३६ । ५६-१०६ । वि० गी० १-१५-१ । १-२५-१ । ३-१३-२ । जसु—र० प्रि० १-७-२ । छं० १-७२-६ । २-पुं० एक० । कान्ति, चमक । क० प्रि० १४-२७-३ । १५-७६-१ ।

जसकंद—वि० (विशेष्य—चंद) । यशस्वी । वी० २२-३७-४ ।

जसगाथ—सं०पु० एक० । यशोगाथा । रा० २७-२५-१ ।

जस छंदन—वि० (विशेष्य—रतनसेन) । यशस्वी, यशवंत । र० ५४-६ ।

जस धाम घर—वि० (विशेष्य - नगर) । पृथ्वी भर मे समृद्ध सुयश का घर । रा० १-२३-१ ।

जस लायक—वि० (विशेष्य—वृषवाहन) । यशस्वी । छं० २-२८-६ ।

जसवंत—वि० (विशेष्य—हनुमंत । जिसकी प्रशंसा होती हो । रा० १४-३२-४ । वी० २५-१८-१ ।

जस सागर—वि० (विशेष्य—रघुनाथ जू) । बडे यशस्वी । रा० १४-४०-२ ।

जससील युक्त—वि० (विशेष्य -मंत्री) । यश शील से युक्त (यशस्वी) तथा शीलवान । क० प्रि० ८-१७-२ ।

जसी—वि० (विशेष्य – वीरसिंह) । यशवंत । क० प्रि० ८-१३-२ ।

जसोदा—सं० स्त्री० एक० । यशोदा (नंद की पत्नी तथा कृष्ण की माता । क० प्रि० ५-२४-२ ।

जहँ—क्रि० वि० (हिं० जहाँ) । जिस स्थान पर, जहाँ, स्थान–वाचक । उदा० 'जहँ गुनगन मनि' । र० प्रि० । ८-२०-१ । १-३-१ । १५-१-८ । क० प्रि० ३-३६-१ । ३-५४-२ । रा० १-४-२ । १-२८-१ । १-४१-३ । वी० १-१४-१ । २-३०-२ । ६-१२-१ । वि० गी० १-८-१ । १-२७-६ । १-२९-१ । जहाँ–र० प्रि० १-४८-१ । ३-२०-२ ।

जहँगीरपुर—सं० पु०एक० । राजा जहँगीर का नगर । वि० गी० १-३-२ ।

जह्नु—स० पुं० एक० । एक राजर्षि जिन्होने भगीरथ के गंगा लाते समय पी ली और उनकी विनती पर फिर कान के मार्ग से निकाल दी थी । वि० गी० १६-५४-४ । जन्हु–रा० २०-४५-२ ।

जह्नु नंदनी—सं० स्त्री० एक० । गगा । वि० गी० ९-१०-१ ।

जहाँगीर—सं० पुं० एक०। अकबर का पुत्र (१६०५–१६२७)। केशवदास कृत 'जहाँगीर जस चंद्रिका' का नायक। वी० ६-१२। ६-२४। ६-३६। ज० १। २। ४। ३१। ३२। ३४।

जहाँगीर पुत्र—सं० पुं० एक०। ओरछा। वी० १-३। १४-३१।

जहाज—सं० पुं० एक०। जलयान। रा० १५-३५-२। २४-२१-१। २४-२२-१। वी० ३२-३०।

जहान—सं० पुं० एक०। दुनिया। र० प्रि० १-५-२। क० प्रि० १-१६-२। ११-४० ३। वी० ६-२३। ७-६। ६-१४। ज० ३१। ३६। ५६। ६१।

जही—क्रि० वि०। जहाँ या जिस स्थान पर ही (स्थान वाचक)। उदा० 'द्विज दोष जही सु समूल नसै जू' (रा० ५-४२-३)। र०प्रि० ११-१२-३। ११-१०-१। रा० ५-३-१। ५-४७-१। वि० गी० ६-६५-२।

जाइँ—क्रि०। जाये। रा० १६-३५-४।

जाइ—क्रि० पुं० एक०। जाता है, जाकर। र० प्रि० २-४६-४। ३-६४-२। ५-१०-८। ५-१२-४। क० प्रि० ३-१२-४। ३-२७-१। ४-१०-७। ५-१६-२। रा० २-१६-१। ५-२४-२। ६-१६-३। ११-६-१। १३-४६-२।

जाइँ करौ स० क्रि०। जाकर करो। रा० ३-३४३-२।

जाइ कहे—स० क्रि०। जाकर कहे। र०प्रि० ८-१४-१।

जाइकै—स० क्रि०। जाकर। रा० ३६-३४-४।

जाइगी—क्रि० स्त्री० एक०। जायगी। रा० २७-२६-३।

जाइ मिलौ—सं० क्रि०। जाकर मिलो। र० प्रि० ५-१२-४।

जाइ है—क्रि०। जायेंगे। रा० २६-१०-२।

जाई—(१) सं० स्त्री० एक०। कन्या। र० प्रि० ३-३८-१। ३-५२-४। १४-३१-४। (२) क्रि०। जन्म दिया। र० प्रि० ४-६-४। १२-२८-३। १२-२८-४। २–क्रि०। जा सकता है, गया, जाकर। रा० ५-१-१। ६-१८-२। ७-६-३। ६-८-२। १०-६-१। १२-१-१। १३-११-२। १५-३६-२। १७-१२-२। २४-६-१। २६-६-२। ३२-३३-२।

जाऊँ—क्रि०। जाऊँगी। र० प्रि० ३-४-५। ५-१५-४। ८-१४-१। ८-४६-४। रा० ४-४-१। ६-२४ १। १६-६८-२। (जाऊँगा)।

जाए—क्रि०। जन्म दिये। रा० १२-५४-२। ३८-५-१।

जाकी—(१) स० एक०। सम्बन्ध वाचक सर्वनाम, जिसकी। उदा० जाकी जाति (क० प्रि० ६-१२-३)। र०प्रि० ३-५३-२। १२-२०-२। क० प्रि० ८-१४-४। ८-४४-३। १४-२७-३। वी० १४-६-१। २६-३१-२। वि० गी० २-१४-१। (२) क्रि०। जायी, जाकर। रा० १३ ६१ ३।

जाके—(१) स० एक०। संबंध वाचक सर्वनाम, संबंधकारक। जिसके (हिं० जो के)। उदा० गोला जाके। रा० २६-

८-२। र० प्रि० ७-७-१। क० प्रि० ४-२१-२। ७-२८-४। रा० ३-२०-१। ४-१०-१। वी० २-६-१। १०-५-२। वि० गी० १-६-२। ६-२८-२। (२) क्रि०। जाकर। र० प्रि० ५-१०-४। रा० १०-७-२ (हुए)।

जाको—सं० सम्बन्धवाचक एक०। संबंध-कारक। जिसे, जिसको। उदा० 'जाको प्रीतम् दे अवधि गयो कौन हूँ काज।' र० प्रि० ७-१६-१। १२-५-३। क० प्रि० ३-४३-१। ११-४३-४। रा० १-१४-२-। १-२१-१। वी० २८-१५-२। ३२-४५-१। वि० गी० ६-३०-१। १३-१६-२।

जाग—सं० पुं० एक०। याग, यज्ञ। रा० ६-१३-१ ११-२-२। ज० १६७। वि० गी० ८-५-२। ६-११-२।

जागत—क्रि० पु० बहु०। जागते। रा० रा०प्रि० ६-४३-२। रा० २५-११-२। ३०-२३-१।

जागति—क्रि० स्त्री० एक०। जगमगाती। र० प्रि० ११-१५-२। रा० १-२१-१।

जागिबे—क्रि०। जागने। र०प्रि० ५-३२-१।

जागी—क्रि०। जागा। र०प्रि० ३-७१-३। १३-१०-२। रा० ३६-११-१ (जगा हो)

जागृत—(१) सं० पुं० एक०। वह अवस्था जिसमे जीव शब्द स्पर्श आदि विषयो का ग्रहण करे। वि० गी० २०-५१-१। (२) क्रि० स्त्री० एक०। जागृत हुई। र० प्रि० ७-१८-३।

जागें—क्रि०। जागने पर। र० प्रि० १२-७-१।

जागे—क्रि०। जागा है, जागने पर। र० प्रि० १३-१८-३। रा० १६-६-१। १६-११-२।

जागै— क्रि०। जागा। क० प्रि० ५-२६-५। रा० ३४-४५-२। जाग्यो–रा० १६-५३-२। ३०-१७-१।

जाग्रत स्वप्न—सं० पुं० एक०। जगाने का स्वप्न। वि० गी० १७-५०-२।

जांघ- स० स्त्री० एक०। पांव का कमर और घुटने के बीच का भाग, ऊरु। र० प्रि० ६-१७-३।

जाचक—[याचक] (१) सं० पु० एक०। भिखारी, माँगने वाला। क० प्रि० १५-१४-२। रा० ६-६३-३। २३-३३-१। ३०-२२-१। वी० १-४३। २१-३२। २१-३५। २२-१३। वि० गी० १२-१०-२। पुं० बहु०। जाचक जन। रा० ३०-२६-२। (२) वि० (विशेष्य—श्री बिस्नु)। याचना करने वाला। वि० गी० १८-१४-२। (बलिदमन करने के हेतु विष्णु ने वामनावतार लिया था और बलि से तीन पद-चरणो की भूमि याचना के रूप मे माँगी थी। इसलिए यहाँ विष्णु जाचक कहे गये है। वामनावतार विष्णु का पंचम अवतार माना जाता है।

जाचक के अरि—वि० (विशेष्य—चपक)। मकरंद के याचक भौरो का शत्रु (प्रसिद्ध बात है कि भौरे चंपे पर नही बैठते)। रा० १२-४२-१।

जाचक चातक मेहु—वि० (विशेष्य—जहाँगीर)। याचक रूपी चातक को मेघ

के समान जीवन प्रदान करने वाला। ज० ११७-२।

जाच्य—वि० (विशेष्य—श्री विष्णु)। याचना करने वालों को देने वाला। ज० १८-१४२।

जाट—सं० पु० एक०। पश्चिमी उत्तर प्रदेश, पंजाब, राजपुताने मे रहने वाली एक हिन्दू जाति। वी० ३-६। ३-१८। ६-३६।

जाडो—सं० पु० एक०। सर्दी। क० प्रि० १२-६-१।

जात—[√जन् (उत्पत्ति) + क्त] (१) १–सं० पु० एक०। पुत्र। (गणेश या कार्तिकेय)—शिव के पक्ष मे। २–सूर्यपुत्र कर्ण—राजा अमरसिंह के पक्ष मे। ३–पुं० बहु०। पुत्र (सनकादिक)—ब्रह्मा के पक्ष मे। ४–पु० बहु०। समूह—रघुनाथ के पक्ष मे। ५–स्त्री० एक०। (जा + त)। "ज" (सूर्य का पुत्री यमुना)—श्री कृष्ण के पक्ष मे। क० प्रि० ११-३३-१। ६–पु० एक०। गात, शरीर। क० प्रि० १४-२१-३। (२) क्रि०। जाते है, जाता हूँ, चला। र० प्रि ३-४-१। ३-२६-६। ३-३६-३। ३-४०-५। क० प्रि० १-१-१। १-१६ २। ४-६-२। ४-१०-४। ६-१२-८। रा० १-२७-१। ४-१२-१। ४-३०-२। ६-७-१। जातु—र० प्रि० ३-१०-१। ७-१४-६।

जातक काम—वि० (विशेष्य—हरि)। इच्छाओ को देनेवाला, इच्छाओ की पूर्ति करने वाला। क० प्रि० ११-४४-२।

जातना—सं० स्त्री० एक०। पीडा। रा० १३-८६-२। १४-२-२।

जातवेद—सं० पु० एक०। अग्नि। क० प्रि० ६-४२-२। रा० ६-५६-३।

जातरूप—सं० पु० एक०। धतूरा, सोना। क० प्रि० ६-४२-२। १५-२५-४। (धतूरा)। रा० ६-५६-४। (सोना)। जातरूप (हु)। क० प्रि० १५-७६-४।

जात ही—क्रि०। जाते ही। रा० १८-२६-४।

जात हूँ—क्रि०। जाते हैं। रा० ३३-५०-१।

जाति—(१) १–सं० स्त्री० एक०। वंश, गोत्र, कुल। र० प्रि० ४-१४-३। ५-२१-१। ६-६-१। ७-४२-२। क० प्रि० ६-८-२। ११-१६-१। ११-८०-१। १३-३४-१। रा० ६-२६-३। १६-५-२। १६-६-३। छं० १-४६-५। १-७१-५। ६-४३-१। ६-४७-३। वि० गी० १३-४४-२। २–स्त्री० एक०। चमेली। र० प्रि० १०-२२-१। ३–स्त्री० एक०। यह ताल ज्ञान का एक ढंग है। यह पाँच की है (चतुरश्र, तिश्र, मिश्र, खंड, संकीर्ण)। रा० ३-३-२। ४–पुं० एक०। जायफल का पेड। रा० १२-४१-३। (२) क्रि०। जाता है। र० प्रि० ४-१४-५। ५-२१-१। ६-४६-२। रा० २८-११-२। ३२-३४-१।

जाति ले—सं० क्रि०। ले जाती है, ले गई। र० प्रि० ५-२१-१।

जातो—क्रि०। जाते। रा० २८-१०-४।

जादव—सं० पुं० एक० । यादव (एक जाति का नाम)। वी० ४-५३ । ५-६ । ५-१२ ।

जान—(१) १–सं० पु० एक० । यान, पालकी, रथ। क० प्रि० ७-३-१ । १३-५-३ । २–स्त्री० एक०। जीव, प्राण । क० प्रि० ६-३१-४ । ६-३२-१ । १०-८-३ । ३–स्त्री० बहु० । प्राण। क०प्रि० १४-२२-३ । ४–स्त्री० एक०। समझ, जानकारी । र० प्रि० १२-१७-२ । (२) कि० । जानो । र० प्रि० ७-३५-१ । ७-३६-२ । १५-६-१ । रा० ५-३५-२ । २२-१५-२ (जानता हूँ) । २४-१३-३ । (मानता हूँ)। २५-३१-१ ।

जानई—क्रि० । जानते । क० प्रि० २-१७-२ ।

जानकि के जिय के सुखदायक—वि० (विशेष्य—रघुनायक) । सीता के हृदय का सुख पहुँचाने वाले। रा० ३२-१-२ ।

जानकिनाथहि—स० पु० एक० । श्री-रामचन्द्र के। छ० १-६१-२ (जानकी पति)। छ० १ ६१-३ ।

जानकी—सं० स्त्री० एक० । राजा जनक की पुत्री-सीता । क० प्रि ६-३१-४ । १३-३-४ । १३-१६-४ । रा० ६-६१-२ । १२-१६-२ । जानकि-रा० ५-१७-४ । ६ ५४-२ । ३२-१-८ । ३६-६-१ ।

जानत—क्रि० । जानता । र०प्रि० १-५-२ । ३-३६-२ । ५-२३-४ । क० प्रि० १-१६-२ । रा० ३-३५-२ । ४-१८-१ । ४-२३-४ ।

जानत हो—सं० क्रि० । जानते हो । र० प्रि० ७-२१-४ ।

जानति—क्रि० । जानती । र० प्रि० ३-७-२ ३-३६-२ । ७-३२-५ । ८-२८-४ । रा० १०-६-२ । ३३-५४-४ ।

जानति है—सं० क्रि० । जानती है । रा० १४-२६-२ ।

जान दियो—सं० क्रि० । जान दिया । रा० १८-१६-२ ।

जानहिं—क्रि० । जानते हैं । रा० २५-८-१ । जानिय–रा० १५-२०-२ ।

जानहि—क्रि० । जानो, समझो । रा० ३-३५-१ । ३३-५५-१ ।

जानहु—क्रि० वि० । रीतिवाचक, अव्यय (हिं० रूप जानना) जानो, मानो । उदा० मानहु मरना क्षेप । क० प्रि० १०-१५-२ ।

जानि—क्रि० । जानकर । र० प्रि० २-११-१ । २-१३-३ । ३-३२-१ । क० प्रि० ३-१८-१ । ३-४२-१ । ५ ११-३ । रा० १-३-३ । १२-१६-२ (समझकर) । १३-३६-२ (जानबूझकर) ।

जानि कै छाँडो—स० क्रि० । जानकर छोड दूं । रा० ३७-१४-१ ।

जानि जहु—क्रि० । जानिए । क० प्रि० ५८-१-२ । जानिजै–क० प्रि० ३-२०-१ । रा० १६-५-४ । जानियहु–र० प्रि० ३-६०-२ । जानौ–रा० १७-३३-२ । १७-३८-२ ।

जानि जाहु—सं० क्रि० । जान जाओ, जान लो । र० प्रि० । २-१३-३ ।

अति उद्दिममति—विशेषण। विशेष्य—लोभ। जिसकी मति अत्यत उद्यमी हो। वी० च० १-१७-४।

अति उद्दोत—विशेषण। विशेष्य—जल। अत्यत पवित्र। वी० च० ५-२८-१।

अति ऊँची—विशेषण। विशेष्य—पताका। अत्यत ऊँची। क० प्रि० ७-५-२।

अति कटुक—विशेषण। विशेष्य—प्रताप। अत्यत कटु। वी० च० २६-३१-२।

अति कठिन—विशेषण। विशेष्य—राज के कर्म। अत्यत कठिन। रा० ३४-३३-२।

अतिकाय—सं० पुं० एक०। रावण का सेनापति। रा० १५-६-१। १७-३२-२।

अति कायर—विशेषण। विशेष्य—वालक। अत्यत डरपोक। रा० ३७-४१-१।

अतिकारी—विशेषण (स्त्री०)। विशेष्य—चतुरी। अत्यत श्यामल या काली। रा० २६-३२-१।

अति कृपाल—विशेषण। विशेष्य—साहि। अत्यत कृपालु। वी० च० ७-१२-१।

अतिकृस्न—विशेषण। विशेष्य—घन। अत्यत काले। क० प्रि० १४-४८-१।

अति कोंवरे—विशेषण। विशेष्य—प्राय। अत्यत कोमल। रा० ३१-३५-१।

अति कोमल—विशेषण। विशेष्य—वालकता। अत्यत कोमल। रा० २-१७-१। क० प्रि० ६-१४-१। १५-६-१।

अतिक्षिप्र—विशेषण। विशेष्य—तव बंधु। बड़े ही क्षुद्र। रा० ८-२७-१।

अति गंभीर—विशेषण। विशेष्य—आनन। आकर्षक। जहाँ० ६६-१। ७४-१।

अति गूढ़—विशेषण। विशेष्य—मत्र। जो समझाने मे मुश्किल लगे। वि० गी० २-१६-१।

अति गौर—विशेषण। विशेष्य—रूप रग। अत्यत गौर वर्ण के। वि० गी० १६-४८-१।

अति घनी—विशेषण। विशेष्य—ब्रह्मलोक। वी० च० ३२-२६-२।

अति चंचल—विशेषण। विशेष्य—चलदलै। अत्यत चलायमान या डोलने वाला। रा० १-४६-१। २३-१७-१। २२-८-१। ३१-३६-२। क० प्रि० १५-६६-२। वी० च० १८-६-१। २२-४७-२। २८-८७-२।

अति चाहु—विशेषण। विशेष्य—सोधो। अत्यत सुदर। र० प्रि० १३-१४-२। क० प्रि० १५-६६-२। वि० गी० ४-३२-१।

अतिचित्त चोर—विशेषण। विशेष्य—भूमकनि। अत्यत चित्ताकर्षक। वी० च० २०-६-२।

अति छोटे—विशेषण। विशेष्य—कान। अत्यत छोटे आकार के। वी० च० १७-५०-१।

अति जोतिवंत—विशेषण। विशेष्य—तन की जोति। ज्योति से युक्त, प्रकाशमान। क० प्रि० १५-६४-२।

अति झूठो—विशेषण। विशेष्य—देही। मिथ्या। वि० गी० ५-२-६।

जानि परी—सं० क्रि० । जान पड़ा । रा० १६-१२-३ ।

जानबि—क्रि० । जानना । र० प्रि० ४-१४-८ ।

जानियें—क्रि० । जान लीजिये, समझ लीजिए । र० प्रि० ३-१५-२ । ३-४१-२ । क० प्रि० १-३६-२ । ३५-५-२ । रा० २-१८-६ । २१-६-४ ।

जानिये—क्रि० । जानो । रा० ३-२७-१ । ३-३१-१ । जानियो–र० प्रि० १४-४-२ । जानु–क० प्रि० ३-५९-२ । ४-१८-१ । रा० १२-२५-१ । १८-११-१ रा० १७-२०-२ ।

जानियो—क्रि० । जान लिया, जान पड़ता है । रा० १-४-४ । १२-१५-२ । १४-४२-२ ।

जानिपनो—सं० पुं० एक० । चतुराई । र० प्रि० ७-३७-३ ।

जानि है—सं० क्रि० । जान पड़ता है । रा० ३३-५५-४ ।

जानि हौं—क्रि० । जानूँगा । र० प्रि० ४-१४-६ ।

जानी—क्रि० । जान ली । र० प्रि० ३-७१-४ । १४-२०-४ । क० प्रि० ५-२६-२ । ६-७-१ ।

जानु—(१) १–सं पुं० एक० । घुटना । क० प्रि० १२-९-१ । रा० १८-२१-२ । २–पुं० एक० (१–जाँघ, २–ज्ञान) क० प्रि० १६-४-६ (२) क्रि० । जानो, समझो । क० प्रि० ३-५९-२ । ४-१८-१ । रा० १२-२५-१ । १८-११-१ ।

जानै—क्रि० । जाने, जानती है । र० प्रि० १२-६-७ ।

जाने—क्रि० । जान लिया । र० प्रि० २-१३-४ । क० प्रि० ५-१७-२ । १०-९-१ । जानें–र० प्रि० १-२१-२ । ८-५१४ ।

जानो—(१) क्रि० वि० । रीतिवाचक, अव्यय (हिन्दी जानना) मानो, जैसे । उदा० 'जानो यहो विभावना ।' क०प्रि० ९-१३-२ । (२) क्रि० । जानकर, समझकर । रा० ५-२९-१ । ७-२४-२ ।

जान्यो—क्रि० । जानकर । र० प्रि० ७-२८-१ । रा० २-२३-१ । ३-११-१ । १२-६४-१ (जाना)

जाप—सं० पुं० एक० । जप । छं० १-३९-३ । वि० गी० ८-३४-१ । ९-११-४ ।

जाबालि—[जबाला + इञ्] सं० पु० एक०। उपस्मृतिकार मुनि एक ऋषि, दशरथ के एक पुरोहित जिन्होंने राम को वन से लौट जाने के लिए समझाया था । रा० ६-८-३ । ६-१८-१ । वि० गी० १६-५६-४ ।

जाम—[सं० जम्बू] सं० पु० एक० । याम, समय । वी० २७-११-२ । जाहि, वि० गी० १६-३७-१ ।

जामदग्नि—सं० पु० एक० । परशुराम । रा० ७-४०-१ । १८-१५-१ ।

जामवंत—सं० पु० एक०। जाववंत (सुग्रीव का मंत्री जिससे लका-विजय मे रामचंद्र को बहुत सहायता मिली ।) क० प्रि० ७-७-३ । ८-३१-२ । १३-११-३ । रा० १५-२२-२ । १८-३२-२ । १९-४३-२ । १९-४६-१ । २०-५२-२ । २१-३२-१ । र० १-२७-३ । वि० गी० ९-३८-५ ।

जामातु—[जाया√या (मान करना) + तृच्] सं० पुं० एक० । दामाद । रा० ६-२७-२ ।

जामिक—सं० पुं० एक० । पहरेदार, यामिक । क० प्रि० १५-१४-२ ।

जामिनि—[यामिनि] सं०स्त्री० एक० । रात, निशि । र० प्रि० ६-१६-२ । क० प्रि० १६-४८-४ । वि० गी० १०-८-२ । १६-३५-१ । १६-४०-१ (जामिनी) । र० प्रि० ११-१०-३ । वी० २७-३-२ । वि० गी० १०-८-२ । १६-३५-१ । १६-४०-१ ।

जामू—सं० पुं० एक० । जामुन, जंबू, एक खटमिट्ठा फल । क० प्रि० ५-२२-१ ।

जाया—सं० स्त्री०एक० । पत्नी । क० प्रि० १५-८-५ ।

जाये—क्रि० । जनाये । रा० ३६-२३-१ ।

जायौ—क्रि० । जनाया । रा० ७-२६-३ ।

जार्‌यौ—क्रि० । जला डाला । रा० ६-३५-३ ।

जारज—[जार√जन् + ड] वि० (विशेष्य—हनुमंत) । किसी स्त्री की सन्तान जो उप-पति से उत्पन्न हुई हो । रा० २८-१५-३ ।

(धर्मशास्त्र मे जारज के दो भेद बताये गये हैं—कुंड और गोलक । कुंड सन्तान उसे कहते हैं जो स्त्री के विवाहित पति के जीवन काल मे उसके उप-पति से उत्पन्न हो और जो विवाहित पति के मर जाने पर उत्पन्न हो उसे गोलक कहते हैं । हनुमान इस दृष्टि से कुंड जारज हैं ।

हनुमान की उत्पत्ति की कहानी इस प्रकार है—अप्सराओं में परम रूपवती पुंजिकस्थला नामक लोक-विख्यात एक अप्सरा थी । वह कपि-श्रेष्ठ केसरी की भार्या होकर अंजना नाम से विख्यात हुई इस अप्सरा ने ऋषि के शाप से कामरूपिणी वानरी होकर पृथ्वी पर जन्म ग्रहण किया था । पर्वतश्रेष्ठ सुमेरु पर्वत पर केसरी राज्य शासन करते थे । अंजना उनकी एक महिषी थी । दोनो एक दिन मनुष्य का वेश धारण कर पर्वत शिखर पर क्रीडा कर रहे थे । अंजना का मनोहर रूप देखकर पवन काममोहित हुए और उसे आलिंगन किया । साधु-चरित्रा अंजना ने आश्चर्य चकित होकर कहा—'कौन दुरात्मा मेरा पातिव्रत धर्म नष्ट करने को तैय्यार हुआ है ।" अंजना की यह बात सुनकर पवन ने कहा—सुश्रोणी ! मैंने तुम्हारा पाति-व्रत नष्ट नही किया । आलिंगन द्वारा मन ही मन मैंने जो तुम्हारे साथ गमन किया है । उससे तुम्हे बुद्धिशाली और अति वीर्यवान पुत्र होगा । वह पुत्र सभी विषयो मे मेरे जैसा होगा ।" इस प्रकार केसरी की स्त्री अंजना के गर्भ से पवन पूत हनुमान उत्पन्न हुए । इसलिए वे जारज कहे जाते हैं ।

—रामायण)

जारत—क्रि० । जलता । र० प्रि० १४-२२-५ ।

जारति—क्रि० । जला डाला । र० प्रि० १६-१२-६ ।

जारनि—सं० पु० एक०। जाल। वि० गी० १६-४०-२। जारु। रा० १२-६२-१।

जारहिं—क्रि०। जला दें। रा० १६-३२-३।

जारि—क्रि०। जलाकर। क० प्रि० ३-९-२। रा० १६-४-४।

जारिवे—क्रि०। जलाने को। रा० २८-१३-२।

जारिवे क नाते—सं० पु० वहु०। जलाने के कारण। वि० गी० १-२०-२।

जारियत—क्रि०। जलाते है। रा० २८-१३-२।

जारियत है—स० क्रि०। जलते हैं। रा० २८-१३-२।

जारियो—क्रि०। जलाया। रा० २१-४६-२।

जारी—क्रि०। जला दी, जलाकर। रा० १४-३३-२। २५-३३-२।

जालंधर—सं० पु०। जालवर राक्षस। वी० २-६-१। वि० गी० ८-१-१।

जाल—[√जल् (घात)+ण]। १—सं० पु० एक०। फंदा। क० प्रि० ६-३४-२। १०-१६-३। वि० गी० १२-२१-३। १६-६६-२। २—पु० वहु०। ठगने या फँसाने की युक्तियाँ। क० प्रि० ५-२८-१। ३—पु० एक०। समूह, झुंड। र० प्रि० ७-३३-२। रा० २०-२६-२। ४-जल, पानी (जोजन तीरथ जाल पखार)। वी० ३२-२४।

जालिका—सं० स्त्री० एक०। चेहरे पर डालने की जाली—स्त्रियो का मुखावरण। क० प्रि० १५-८६-१।

जावक—(यावक)। सं०पु०एक०। अलता, महावर। र० प्रि० ३-४३-१। ६-३१-३। क० प्रि० ४-१७-१। ११-२५-१। रा० २५-२५-४। जावकु—क० प्रि० १५-७-२।

जावक जुत—वि० (विशेष्य—पाद)। महावर से युक्त। क० प्रि० १५-६-२। रा० ३१-३५-१।

जाहिं—क्रि०। जाते है। र० प्रि० ६-४६-२। ८-८-२। रा० २२-१७-२।

जाहि—क्रि०। जाओ, जाकर, जाते हैं। र० प्रि० ४-१३-३। रा० ४-६-४। ८-४-२। जाहु—र० प्रि० २ १३-३। ५-०३-६ रा० ५-६-२।

जाही—क्रि० वि० रीतिवाचक। जिसका। उदा० 'किलकि-किलकि जाही नही को वरतु हैं।' क० प्रि० ११-३८-२। १४-४३-३।

जाहुँ—क्रि० जाऊँ। रा० ३६-६-२।

जिठाइ—सं० स्त्री० एक०। जेठापन। र० प्रि० १४-३९-२। क० प्रि० ६-४१-२।

जिन—सं० संवंधवाचक, वहुवचन, कर्ताकारक। जिन्होने, जिसने (हिं० 'जिसका' का वहु०) उदा० जिन् जीत्यो। (क०प्रि० १-३६-२)। र०प्रि० १-२४-२, ३। २-९-३। ५-२-४। क० प्रि० २-१७-१। ९-३०-२। ११-१-२। रा० १-४-४। २-१८-१। २-२५-२। छं० १-३२-४। वी० २-५७-२। २-३८-२। वि०गी० १-९-२। १३-१८-१। जिनि—र० प्रि० ११-११-२। १३-१८-४।

जिन्हे—सं० संवधवाचक। जिनको। उदा० जिन्हे डौरे। वी० २६-२०-३।

जिन्हे—स० संबंधवाचक, कर्म और सम्प्रदान ('जिसका' का बहुवचन)। जिनके उदा० 'जिन्हे नकिके'। र० प्रि० २-१७-४। २-३८-२। ६-५-१। क०प्रि० ६-७२-२। १२-५-३। नी० ५-६-१।

जिमि—क्रि० वि० रीतिवाचक। (हि० जिस इमि)। जैसे, ज्यों। उदा० 'प्रभु जिमि शासन करनि'। क० प्रि० ८-७-१।

जिय—(१) सं० पु० एक०। हृदय। र० प्रि० २-१०-३। ६-२८-३। ६-३७-३। क० प्रि० ३-२२-२। ३-४६-२। ७-३४-३। वी० २६-७। ३०-१४। छं० १-७७-१। वि० गी० ६-२२-१। ७-१०-२। ८-२७-२। (२ पु०एक०। जीवन। र० प्रि० ८-५२-५। (३) पु० बहु०। प्राण। र० प्रि० १०-८-३। ११-८-४।

जिय की जीवन मूरि—वि० (विशेष्य—रघुनाथ)। जीवन के आधार भूत कारण। रा० २२-२०-१।

जियाइ—क्रि०। जिलाया। रा० २१-४७-४।

जियाइयो—क्रि०। जिलाया। रा० २१-५२-१।

जियावत—क्रि०। जीना पड़े। रा० ६-१७-२।

जियावहि—क्रि०। जी उठेंगे। रा० १७-४७-२।

जिये—(१) सं० पु० एक०। मन। क० प्रि० १६-३२-२। (२) क्रि०। जीते थे।

जियें—क्रि०। जीऊँगी। रा० ६-१०-१।

जियें—क्रि०। जियें। जा सकेगा। र०प्रि० ८-२७-३। ८-२६-४। ११-८-८।

जियो—क्रि०। जीना। रा० ७-२१-३।

जियौ—क्रि०। जीना है। रा० १६-७-२।

जियो—क्रि०। जिये। रा० ११-१०-१।

जियोई—क्रि०। जीता है, जा रहा है। र० प्रि० ११-८-४।

जिल—सं० पु० एक०। मन। रा० ४-८-१। ५-११-२। ५-१७-१। ५-२८-२। ६-२१-६। २२-२-२।

जिहाज—सं० पु० एक०। जहाज, बड़ी नाव। र० प्रि० ११-६-२।

जिहिं—स० संबंधवाचक। जिसे। (हि० जिस) उदा० 'जिहिं धन'। वी० १-६१-१। रा० ११-३५-१। ८ ६-४। वी० ७-८-१। १२-४-२।

जी—(१) १—सं० पु० बहु०। जीव। क० प्रि० ३-४२-१। १२-२८-३। १६-७१-३। वि० गी० १६-३६-१। २-पु० एक०। मन, अंत करण। र० प्रि० ३-५६ २। ८-२२-१। ६-१४-२। क० प्रि० १४-६-१। १६-२३-२। रा० १-४७-४। ६-३१-२। ६-७-२। छं० १-५८-४। वी० १-५७। ज० १६८। वि० गी० २०-३६-४। (२) क्रि०। जीना। रा० ३५-२५-२। ३६-१०-२।

जीउ—सं० पु० बहु०। प्राणी, जीव। क० प्रि० ५-१३-४। ५-१५-४।

जीजे—क्रि०। जीओ, जीते हैं। र० प्रि० १-२३-४। रा० ७-२२-४।

जीतहौं—क्रि०। जीतें। रा० ६-१६-३। १६-११-१। ३६-३०-१।

जीतहुगे—क्रि०। जीतोगे। रा० १५-६-२।

जीति—(१) सं०स्त्री०एक०। जीत, विजय। र० प्रि० ८-१७-३। (२) क्रि०। जीत कर। रा० १-१४-३। ७-२६-२। ७-३८-१। ३५-१०-८।

जीति जीति—स० क्रि०। जीत जीत कर। रा० १-४०-१।

जीतिय—क्रि०। जीतते जा सके। रा० ७-२५-२।

जीतियत—क्रि०। जीतते हैं। रा० २८-२३-४। जीतै—रा० ७-२५-१।

जीतिये—क्रि०। जीतता है। रा० ७-२५-१।

जीतियो—क्रि०। जीता। रा० ३५-२६-२।

जीती—क्रि०। जीत लिया। कि० प्रि० २-११-१। जीत्यो-१४-२३-६। १४-२५-८। क० प्रि० १-३१-२। रा० ४-८-१। १५-५-३।

जीते—क्रि०। जीत लिया है। क० प्रि० २-१३-२। रा० ६-२४-१। १८-३६-२।

जीत्यो अनंग—वि० (विशेष्य—प्रोहित)। जितेंद्रिय, जिसने काम को जीत लिया हो। क० प्रि० ८-११-२।

जीत्यो जगत—वि० (विशेष्य—प्रोहित)। जगत के बंधनों से मुक्त। क० प्रि० ७-११-२।

जीन—सं० पुं० एक०। जबान, जिह्वा। र० प्रि० ६-१३-३। १२-१५-४। १३-१०-६। क० प्रि० ६-१८-२। ६-१६-४। रा० १३-५४-१। वी० १४-१३। १७-४७। ३३-३६। वि० गी० २०-६३-२।

जीमूत—[√जि (जीतना)+क्त, मूट्, दीर्घ] सं० पुं० एक०। बादल। रा० १७-३१-१। वी० १३-१८। ज० ४२।

जीय—१-सं० पुं० बहु०। प्राण। र० प्रि० ११-८-४। २-पु० एक०। मन। रा० १२-३७-२। ३४-४५-२। ३-पुं० एक०। हृदय। ज० ३३।

जीरन—१-वि०(विशेष्य—जोरजुर)। अत्यन्त कठिन, जीर्ण। रा० ६-२६-३। २-वि० (विशेष्य—दुकूल)। पुराना, फटा हुआ। रा० ६-५-१। ३-(विशेष्य—जटायु)। बूढ़ा। रा० १३-३६-१।

जीली—वि० (विशेष्य—बानी)। बारीक। क० प्रि० ४-४४-१।

जीव—[√जीव+घञ्] १-पुं० एक०। प्राणवायु। क० प्रि० ६-१७-२। १३-४२-१। २-पुं०एक०। शक्ति, ताक़त। क० प्रि० ६-१७-३। ३-पुं० एक०। मन। रा० १-४३-४। जी-रा० १८-६-२। ४-पुं०एक०। आत्मा। छं० १-१८-४।२-१८-४। वि०गी० १-३३-२। ५-पुं० एक०। बृहस्पति। रा० १८-६-२। ६-पुं० बहु०। जीव, प्राणी। र० प्रि० १४-४०-१। क० प्रि० ७-६-१। ७-२०-१। ८-२६-१। रा० १-३१-२। ७-२-३। १०-३१-१। वी० १-३०। २-६। वि० गी० ५-१६-१। ११-१६-२ (जीव)। २०-३५-१। २०-६४-१ (प्राणी)। ७-पुं०बहु०। लोग। वि० गी० ६-५-४। ६-४६-१। ८-

पुं०बहु० । प्राण । र० प्रि० १-२३-४ । २-१०-३ । वि० गी० १५-१-१ ।

जीव उधारण—सं० पुं० एक० । आत्मोद्धार । रा० २५-६-१ । जीव उधारण—रा० २४-२८-१ ।

जीव जोति—१—स०स्त्री०एक० । आत्मा । रा० ३०-१६-८ । २—स्त्री० एक० । जीव की जोति । रा० १२-२०-४ । ३—स्त्री० एक० । आत्म प्रकाश । वि० गी० १०-२०-४ ।

जीवत—क्रि० । जीते जी । रा० १७-५५-२ । ३८-१०-२ ।

जीवति—(१) स० स्त्री०एक० । जीविका । रा० ३४-३८-३ । (२) क्रि० । जीता रहे । रा० ३४-३८-२ ।

जीवन—१—सं० पुं० एक० । जिन्दगी । र० प्रि० ४-१४-३ । ७-५-१ । क०प्रि० ६-७१-३ । ७-३०-३ । रा० २५-२२-१ । वी० १-६० । १-६१ । ४-१३ । ५-२१ । वि० गी० १-३३-२ । १-३४-२ । ८-८-४ । २—पु० एक० । जल, प्राण । वि० गी० १०-११-१ ।

जीवन मुक्त—वि०(विशेष्य—विश्वंभरापर) । जीवन को मुक्ति प्रदान करने वाला । वि० गी० ३-१४-४ । २—वि०(विशेष्य—शरीर) । सासारिक जीवन से मुक्त । वि० गी० ५-२३-२ ।

जीवन वृत्ति—स० स्त्री० एक० । जीविका । क० प्रि० ११-६४-१ ।

जीव प्रभा—सं०स्त्री०एक० । आत्मा । रा० ३७-१०-१ ।

जीवहि—(१) १—सं० पुं० एक० । जीवात्मा । वि० गी० ६-४८-४ । (२) क्रि० । जीवित रहो । रा० १५-२६-२ ।

जीविका—१—सं० स्त्री० एक० । जीवन-वृत्ति, रोजी । क० प्रि० १५-४२-२ । रा० ३५-१०-६ । छंद० २-४१-४ । २—स्त्री० बहु० । जीवनोपाधियाँ । क० प्रि० ८-२४-३ ।

जीवै—(१) सं०पु० बहु० । जीव । छं० २-१-२ । (२) क्रि० । जीयेगा । रा० १३-६२-२ ।

जीवैगो - क्रि० । जीता रहेगा । रा० १६-३५-१ ।

जु—स० निकटवर्ती । जो । उदा० 'जु बूझिये ।" र० प्रि० ६-११-४ । रा० ४-१६-२ । ७-६-१ । १५-१७-२ । १६-५-२ ।

जुआ—सं० पु० एक० । खेल विशेष । रा० २६-१०-१ । ३६-३०-१ ।

जुक्त—१—सं० पु० एक० । अर्थान्तरन्यास अलंकार का एक भेद । इसमे जिस बात को सिद्ध करना अपेक्षित हो उसको सिद्ध करने के लिए चमत्कारपूर्वक उसका कारण वाक्य के अर्थ मे अथवा पद के अर्थ मे कहा जाता है । अब के कवि इसे "काव्यलिंग" कहते हैं । र० प्रि० ११-६७-१ । ११-६८-२ । २—पु० एक० । एक अलंकार जहाँ अपना मर्म छिपाने के लिए किसी क्रिया या उपाय द्वारा दूसरे को धोखा दिया जाय । क० प्रि० १२-३१-२ । ३—पु० एक० । योग्य मनुष्य । रा० २५-१८-१ ।

जुक्त-अजुक्त—सं०पु०एक०। दे० "जुक्त"। क० प्रि०। ११-६७-२।

जुक्ताजुक्त—(१) सं० पु० एक०। दे० 'जुक्त-अजुक्त'। क० प्रि० ११-७५-२। (२) वि० (विशेष्य—विचार)। युक्ति-पूर्वक। वि० गी० १७-३२-२।

जुक्ति—(युक्ति)। १—सं० स्त्री० एक०। योजना, उपाय। क० प्रि० ६-७-२। ११-६८-२। वी० १-५४। २-१६। ५-६५। वि० गी० १-११-१। १३-२५-२। जुगति—क० प्रि० १५-३६-३। वहु० जुगतिन—क० प्रि० १५-३६-१। २—स्त्री० एक०। व्यतिरेक अलंकार का एक भेद। क० प्रि० ११-७८-२।

जुग—(युग्म, युग)। (१) स०पु० वहु०। चार युग—सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि। क० प्रि० ६-५४-४। ११-१०-२। १५-७३-१। छं० १-७२-६। १-७२-६। वि० गी० १६-३७-१। (२) वि० (विशेष्य—वन्धु)। दोनो। रा० २१-३०-२।

जुग रूप—(१) सं० पु० एक०। युग रूप। वि० गी० १६-३६-२। (२) वि० (विशेष्य—विप्र)। युग का प्रतिनिधि। वि० गी० १६-३६-२।

जुगुप्सा—[√गुप् + सन् द्वित्वादि + अ - टाप]। स०स्त्री० एक०। घृणा। वि० गी० १६-३१-२।

जुझाई -क्रि०। जुझाकर। रा० १२-३-३।

जुझायो—क्रि०। युद्ध मे मरवा डाला। रा० १६-२०-१।

जुडंये—क्रि०। जुडाना। र० प्रि० ८-४७-१।

जुत अष्ट पाद—वि० (विशेष्य—मुद्रिका, शिव)। १—मुद्रिका के पक्ष मे—स्वर्णमय। २—शिव के पक्ष मे—सिंह सहित। रा० १३-८०-२।

जुत जावक—वि० (विशेष्य—कपोल)। महावर से युक्त। क० प्रि० ११-२५-१। र० प्रि० ६-३१-३।

जुत पावक ज्वाल कराल—वि० (विशेष्य—कृत्या)। कठिन अग्नि ज्वालो से युक्त।

जुत भूषन - वि० (विशेष्य—मिथिलेस सुता)। आभूषणो से युक्त। रा० ३५-४-१।

जुद्ध -(१) सं०पु० एक०। संग्राम, लडाई, रण। क० प्रि० १-१६-२। ३-२७-१। ८-१६-१। रा० २६-१-४। ७-२८-२। ६-२४-४। वी० १२-६। १२-२८। १२-३२। ज० १-३०-३। वि० गी० १-३६-१। ६-६-१। १२-१-१। जुज्झ—र० १-१८-३। १-१६-६। १-३४-१। जूझ—क० प्रि० ११-७७-४। र० १-२०-३। जुद्द—रा० २८-१५-१। (२ वहु०—जुद्धनि—क०प्रि० १२-१०-२।

जुद्ध अभीत - वि० (विशेष्य—ईश्वरत राउत)। युद्ध मे निर्भीक रहनेवाला। वी० १२-७-१।

जुद्ध जमदूत—वि० (विशेष्य —देवगढ गूजर को पूत)। युद्ध मे यमदूत के समान निपुण। वी० १२-६-१।

जुद्ध विधाना—वि० विशेष्य—दान) युद्ध का विधान करनेवाला। वी० १२-२-१।

जुद्ध भूमि--सं० स्त्री० एक०। रण क्षेत्र। रा० १८-३६-२।

जुद्ध रंता—वि० (विशेष्य—हाथी रथो)। युद्धानुरागी। रा० ३४-११-१।

जुधिष्ठिर--सं० पु० एक०। युधिष्ठिर (धर्मराज)। वो० १३-१५। वि०गी० ६-३३-१।

जुद्धतम—स० पु० एक। युद्ध रूपी अंध-कार। रा० १-३६-२।

जुन्हाई--सं० स्त्री० एक०। चाँदनी, चांद्रका। र० प्रि० ८-३२-२। क०प्रि० ३-३६-१। ४-१०-४। रा० १३-२५-२। जौन्ह–र० प्रि० ६-१६-२। ७-२३-२। क०प्रि० ४-५-२। ५-५-१। जौन्हाई–रा० ३-१५-२। जोन्हि–क० प्रि० ११-७६-२।

जुबाद--सं० पु० एक०। विलाव के अंड-कोश से निकली हुई कस्तूरी। र० प्रि० ४-५-३। जुवादि—क० प्रि० ६-१७-३।

जुबान--सं० स्त्री० एक०। वचन। रा० ६-५०-२। ३६-३०-१।

जुर—सं० पु०एक०। ज्वार, ताप, बुखार। र० प्रि० ५-१५-१। ७-२३-२। क० प्रि० ६-४०-३। ११-७३-२। रा० ६-३६-३। वि० गी० १-२-२। जुरु–क० प्रि० १५-२३-४।

जुरजोवन—सं० पु० एक०। दुर्योधन (धृतराष्ट्र का ज्येष्ठ पुत्र जिसके कारण कौरवों और पाडवों के बीच इतिहास-प्रसिद्ध महाभारत युद्ध हुआ था।) क० प्रि० ८-१६-१।

जुरबाहैं—सं० पु० बहु०। (दो बाँहे) र० १-४४-२।

जुररा—सं० पु० एक०। नखाज। क० प्रि० ८-३२-१।

जुरन—क्रि०। जुरने, करने। रा० १०-२४-२।

जुरा—सं० स्त्री० एक०। मृत्यु। वि०गी० १४-३५-३। १६-१२-३।

जुरे—क्रि०। आरम्भ होते ही। रा० ३७-१६-२।

जुरे—क्रि०। भिड़े। क० प्रि० १-१६-२। रा० ३८-८-२।

जुरै—क्रि०। सामने आवे, युद्ध करें। रा० १६-२५-२।

जुरौ – क्रि०। भिडो। रा० ३५-१७-१।

जुर्‍यो—क्रि०। भिड गया। रा० १८-३४-४। १६-२४-२।

जुलकरन—सं० पु० एक०। जुल कर नैन, एक उपाधि। ज० ३८-२-१।

जुवति—(युवति)। सं० स्त्री० एक०। जवान स्त्री। क० प्रि० ८-८-२। १६-४४-१। वी० १३-६। २२-४१। २३-६। वि० गी० १७-७-२। जुवती–र० प्रि० ५-३१-३। २—स्त्री० बहु० जुवतिन। क० प्रि० १५-१२-१। जुव-तीन–र० प्रि० ८-६-३।

जुवनि—सं० पु० बहु०। जवान मनुष्य। क० प्रि० १०-३५-३।

जुवराऊ—सं० पुं० एक०। युवराज। वी० ४-२६। ४-४५। ४-५३। जुवराज–रा० १३-५-१। वि० गी० १-१०-२।

जुवा—सं० पु० एक० । बाजी लगाकर खेला जाने वाला खेल (ताश)। र० प्रि० १३-१०-४। क० प्रि० १०-३१-२। वी० १८-२४।

जुही—[यूथी]। सं० पु० एक०। पुष्प विशेष। रा० ३२-२४-२।

जूझत हौ—क्रि०। जूझते हो। रा० १६-१४-१।

जूझर राय—स० पु० एक०। वीरसिंह देव का पुत्र। वी० २-४८। ३३-१३।

जूझहिंगे—क्रि०। जूझ जायेंगे, मरेंगे। रा० २०-१०-१।

जूझहि—क्रि०। जूझने मे। रा० २८-१५-१।

जूझि—क्रि०। जूझकर। रा० २०-२६-१। ३५-३०-१।

जूझ्यो—क्रि०। जूझा। रा० १७-१८-१। १६-५-१।

जूट—[√जूट् (मिलना)+अच्]। सं० पुं० एक०। जूडा, जटा। क० प्रि० ९-२५-१।

जूथ—(यूथ) १—सं० पुं० एक। सेना। रा० १७-५६-२। २—पुं० बहु० जूथन। क० प्रि० ६-७६-२।

जूथनाथ—सं० पुं० एक०। सेनापति। रा० २३-२-१। जूथपति—रा० ३६-१४-२।

जून—बि० (विशेष्य—विपट)। वृद्ध। क० प्रि० ७-३८-२।

जे—स० संबंधवाचक (जु का बहुवचन)। उदा० जीव जे। रा० १२-१८-२।

जेठ—(१) सं० पुं० एक०। पति के बडे भाई। क० प्रि० १६-४८-२। रा० ९-१५-। (२) पुं० एक०। ज्येष्ठ। वी० २-४०। ५-३६।

जेठ मास—स० पु० एक०। वैशाख और आषाढ़ के बीच पडनेवाला चान्द्रमास। क० प्रि० १०-२६-६।

जेठे—सं० पु० बहु०। गुरुजन। क० प्रि० १०-२६-६।

जेवरी—स० स्त्री० एक०। रस्सी। क० प्रि० १३-१०-१।

जेहरी—सं० स्त्री० एक०। पाजेब। आभूषण विशेप। क० प्रि० १५-१७-४। १५-८६-१। जेहरि—क० प्रि० १५-१६-१।

जेहि—सं० सबधवाचक, सबधकारक। जिसका, जिसकी, जिसको। उदा० "जेहि-मान्यो"। रा० ४-१५-१। क० प्रि० ११-५६-४। रा० ३-१६-१। ४-६-१। ११-३५-१। १२-६४-२। १५-४-१। १५-५-३। १५-७-४। १७-८-१। ३३-२७-२। ३५-२७-१।

जै दुन्धुभि—सं० पुं० बहु०। विजय को सूचित करने वाले नगाड़े। रा० ३५-३१-१।

जैबौ—क्रि०। जाना। र० प्रि० ५-१६-७। ६-२२-४।

जैयहु—क्रि०। जाकर। रा० १५-३६-२।

जैये—क्रि०। जाना है। र० प्रि० ५-१०-१। ५-१८-४। रा० १३-२८-१। १४-३४-२।

जैयौ—क्रि०। जाओ। रा० ३३-२४-२।

जैसी--क्रि० वि० रीतिवाचक। जितना, जिस परिमाण या मात्रा मे। उदा० 'निग्रह सधि कही विधि जैसी'। र०प्रि० ४-१७-४। क० प्रि० ८-२१-२।

जैसे--(१) अ० रीतिवाचक। जैसे। उदा० 'जैसे गाये गीत मे।' र०प्रि० ३-१३-४। क० प्रि० ६-६१-१। रा० ५- १-१। २-२२-१। छं० २-३८-३। वी० १-२१-१। १-५७-१। (२) क्रि०। जाना। र० प्रि० ८-४७-२।

जैहैं--क्रि०। पायेंगे। क०प्रि० ३-३८-२। रा० २३-८-२।

जैहै--क्रि०। जाओ, जायेंगे, जाना पड़ेगा। र० प्रि० ८-५०-४। रा० १६-२६-४। २४-१३-४।

जैहौ--क्रि०। जाओगे। रा० १३-४४-१। ३६-३-१। जै हौ। र०प्रि० ५-२८-७।

जोधन--स० पु० बहु०। योद्धागण। वि० गी० १-२३-२।

जो--स० सवंधवाचक, कर्ताकारक। जो। उदा०'जो सागर सात न्हात'। रा० १६-६-२। र० प्रि० २-८-३। ३-१०-३। क० प्रि० १५-१३०-२। रा० ७-४०-३। ३४-५५-१। वी० २-१४-२। १३-१६-६।

जोइ--क्रि०। देखकर। रा० १०-३०-२।

जोई--सं० संवंधवाचक (हिं० जो)। जो, जो लोग। उदा० "जोई सवल"। रा० ४-१०-१।

जोए--क्रि०। देखा। रा० ३८-१७-२।

जोग--(योग) १-सं०पु०एक०। योग, चित्त-वृत्ति का निरोध मोक्ष का उपाय। र० प्रि० ७-३२-४। ८-५१-४। क० प्रि० ६-२७-३। ११-१६-१। रा० ६-१४-४। वी० १-५। २२-११। वि० गी० ३-३-४। ३-७-३। ५-२३। २-पु० एक०। सयोग शृंगार। र० प्रि० १-२८-१। ३-पु० एक०। शिक्षा। रा० २०-३६-२।

जोग अंग--सं० पु० एक०। योग के आठ भेद (यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा, समाधि)। क० प्रि० ११-१६-१।

जोग जती--सं० पु० एक०। योगी। रा० ४-२६-४।

जोग जागानि युक्त--वि० (विशेष्य--संत) योग आदि मे लीन। वि० गी० ११-१२-३।

जोग-भूमिका--सं० स्त्री० एक०। योग की अवस्था। वि० गी० २०-४०-१।

जोग माया--वि० (विशेष्य--सीता)। योग की माया। रा० २०-१३-२।

जोग विचार स० पु० एक०। मोक्ष के उपाय का चिंतन। रा० २५-३८-१।

जोगिन--स० पु एक०। योगी, अलौकिक शक्ति सम्पन्न पुरुष, आत्मज्ञानी। क० प्रि० ६-२६-४। जोगीजन--रा० ३३-३१-२।

जोगिनि--१-सं०स्त्री० बहु०। राग, पिशाचिनी। क० प्रि० ८-३०-१। २-स्त्री० एक०। योगिनी। रा० २०-८-१। वि० गी० ६-८-१। जोगिनी--वी० ८-४७। वि० गी० ६-८-१।

अति टेढ़े—विशेषण। विशेष्य—कन्हाई। अत्यंत टेढे स्वभाव के। र० प्रि० २-५-४।

अति तनु—विशेषण। विशेष्य—धनुरेखा। अत्यत बारीक, पतली। रा० १३-५२-१।

अति तपमय—विशेषण। विशेष्य—वनवारी। ताप से युक्त। रा० १-३४-२।

अति तरल—विशेषण। विशेष्य—तुरंग। अत्यंत चचल, या तेज चलनेवाला। वी० च० १२-६-१।

अतितरुन—विशेषण। विशेष्य—द्विज। अत्यंत पुष्ट। रा० ३१-१५-२।

अतिताती—विशेषण। विशेष्य—छाती। अत्यत तप्त। वी० च० ८-६०-३।

अति तापित—विशेषण। विशेष्य—मार्ग की रज। ताप से पूर्ण, गरम। रा० ६-३८-१।

अति तिछ्छ—विशेषण। विशेष्य—गति। अत्यंत तीक्ष्ण; तेज। वी० च० १-२५-६।

अतिथि—सं० पु० एक०। मेहमान (जिसके आगमन की तिथि निश्चित नही होती)। वी० च० २८-२३। ३०४। ३१-५३। वि० गी० १३-५१-१।

अतिथिनि—सं० पु० वहु०। अतिथियो को। वि० गी० ३-२२-२।

अति दहेली—विशेषण। विशेष्य—देह। अत्यत ठिठरी हुई। र० प्रि० १६-५-१।

अति दीठि—विशेषण। विशेष्य—पच कल्यान। वहुत ही सुदर। वी० च० १७-३५-२।

अति दीन—विशेषण। (१) विशेष्य—दसकठ। अतितुच्छ। रा० ७-७-१। (२) विशेष्य—दशा। अत्यत करुणा-जनक। रा० १५-३४-१।

अति दीरघ—विशेषण। विशेष्य—कंचन कोट। अत्यत बडा। रा० २२-६-१। वी० च० ५-२४-१। १७-२४-२।

अति दुर्वल—विशेषण। विशेष्य—गज-वाजी। वल रहित। वी० च० ३१-६६-२।

अति दुष्कर—विशेषण। विशेष्य—सरासन। अत्यत दुष्कर, भयकर। रा० ५-३४-१।

अति दृढ—विशेषण। विशेष्य—नृप। जिसका मन दृढ एवं स्थिर हो। र० वा० २१-१।

अति दुति हीन—विशेषण। विशेष्य—दत। अत्यत शोभाहीन। वी० च० २२-४६-२।

अति धर्म प्रवीने—विशेषण। विशेष्य—भारत। धर्म मे प्रवीण; धर्मानुसार आचरण करनेवाला। वि० गी० ६-४०-१।

अति नई—विशेषण। विशेष्य—प्रीति। अत्यत नई। वी० च० ७-५-१।

अति नव—विशेषण। विशेष्य—दुति। अत्यंत नई। क० प्रि० १६-७५-२।

अति निपट कुटिल गति—विशेषण। विशेष्य—आप (सरयुसरित)। अत्यत टेढी चालवाली। रा० १-२६-१।

अति निपुन—[स० निपुण] विशेषण। विशेष्य—विचित्रनयना। अत्यत

जोगी—(१) सं० पु० एक० । सिद्ध पुरुष । क० प्रि० ३-२६-२ । ११-१८-४ । रा० ६-१८-१ । १३-८८-४ । (२) वि० (विशेष्य—भरतार) । योग मे लीन । रा० ६-१६-४ ।

जोजन—सं० पु० एक० । योजन । वि० गी० ४-१५-४ । ४-२१-१ । जोजनै—वि० गी० ४-६-१ । ४-८-१ ।

जोति—(द्युति) (१) १–सं० स्त्री० एक० । प्रकाश, लौ, रोशनी । र० प्रि० ८-३२-२ । १२-१३-१ । क० प्रि० ४-१०-२ । ५-२६-३ । २-श्लेष मे–प्रकाश, दीपक के पक्ष मे । ज्ञान-देह के पक्ष मे । क० प्रि० १३-२८-१ । ३-स्त्री० एक० । ज्योति । रा० ५-२२-४ । ६-१८-४ । र० १-३६-२ । वि० गी० १-१-१ । १-४-३ । १०-७-२ । १०-१७-१ । (२) वि० (विशेष्य—सीस फूलनि) । कांतिपूर्वक । क० प्रि० १४-१३-१ ।

जोति जराय जर्‌यो—वि० (विशेष्य—सुवितान) । जड़ाव की चमक से चमचमाता हुआ । रा० ३०-१९-२ ।

जोति प्रकासी—वि० (विशेष्य—श्री विंदुमाधो) । ज्योतिर्मय । वि० गी० ११-२५-१ ।

जोतिवंत—वि० (विशेष्य–जोवन) । जोति से युक्त, कातिमान । रा० २९-२१-३ । ३०-१९-१ ।

जोतिप—सं० पु० एक० । ज्योतिप शास्त्र । वी० २७-६ । ३०-१५ ।

जोतिषी—सं० पु० एक० । जोतिप-शास्त्रज्ञ। वी० ३०-२ । ३१-३० ।

जोति समाज—सं० पु० एक० । कांति पुंज । रा० ३१-३०-२ ।

जोधनि—सं० पु० बहु० । योद्धाओ के । वि० गी० ६-२६-२ । ९-५२-१ ।

जोधा—(योद्धा) १–सं० पु० एक० । युद्ध करनेवाला । र० प्रि० १०-२१-४ । क० प्रि० ३-४२-१ । वी० १२-३० । १२-३२ । वि०गी० ९-५१-२ । ९-५२-१ । २–पु० बहु० योद्धाओ के । वि० गी० ६-५४-१ ।

जोन्ह की जामिनि—सं० स्त्री० एक० । चांदनी रात । र० प्रि० ६-१९-२ । जोन्ह की जामिनी । र०प्रि० ११-१०-२ ।

जोन्हा—(ज्योत्स्ना) सं०पु० एक० । चन्द्र । वी० ८-६० । ३१-९५ ।

जोनि—सं० स्त्री० एक० । योनि । रा० ३४-२३-२ । ज० २६ ।

जोबन—सं० पु०एक० । यौवन । रा० २३-१७-२ । छं० १-३९-५ । वी० १७-२१ । २२-७७ । वि० गी० ७-१९-४ । १४-१०-१ । जोवन–रा० ११-३६-२ । २९-२१-१ । वि० गी० १४-२१-१ ।

जोर—(१) सं० पु० एक० । बल, वेग । क० प्रि० ८-१८-३ । १२-१९-१ । रा० ४-८-१ । १७-५-२ । छं० १-५९-१ । (२) वि० (विशेष्य—जुर) जोरदार । रा० ६-२६-३ ।

जोरि—क्रि० । जोड़कर । ३१-८-२ । जोरै–रा० ४-२०-१ । जोडा–र० प्रि० ७-२४-८ । ८-७-१ । क०प्रि० ३-१२-१ । रा० १३-७३-१ ।

जोरै—क्रि० । जोडता है । रा० १५-४-१ ।

जोवत—क्रि० । देखते ही । रा० ३०-३६-१ ।

जोवन—(१) सं० पुं० एक० । जवानी । र० प्रि० ३-२०-२ । ३-२१-४ । क० प्रि० ६-२६-१ । ६-१४-४ । (२) वि० (विशेष्य—कलम) युवा, जवान । क० प्रि० ३-२२-१ ।

जोहर—सं० स्त्री० एक० । सती हो जाना । वी० १०-१५ ।

जोवहीं—क्रि० । तलाश करें । रा० ६-१८-४ ।

जोवे—क्रि० । ताकते है, देखते हैं । रा० १-१-४ । १६-२२-१ ।

जोहे—क्रि० । देखती है । र० प्रि० ७-१२-१ ।

जौ जौ—ज० (सं० यदि) । व्यधिकरण समुच्चय बोधक जो, यदि । उदा०—"जौ ताहि पहिचनिबी" । र० प्रि० ४-१४-३ । ५-६-२ । क० प्रि० ३-२६-१ । २-२८-३ । रा० ७-२६-१ । ७-३५-४ । छं० १-२२-४ । १-७५-४ । वि० गी० १-५-५ । १-११-५ ।

जौवन जोरै—सं० पु० एक० । यौवन के बल, जवानी की उमंग । रा० २-५-२ ।

जौवन मित्त—सं० पु० एक० । यौवन रूपी मित्र । रा० ३१-२६-२ ।

जौवन श्री—सं० स्त्री० एक० । यौवन की शोभा । रा० ३१-३७-२ ।

जौलो-तौलों—अ० कालवाचक । जिस समय से, उस समय तक । उदा० "जौ तौलो या संसार मे तौलो यह संसार" (ज० १८०-२) । र० प्रि० ३-६६-१ । ४-१२-१ । क० प्रि० ६-३३-४ । ११-५२-१ । ज० १८०-२ ।

ज्ञान—[√ज्ञा + ल्युट - अन] (१) सं० पु० एक० । अच्छी जानकारी । क० प्रि० १-३-३ । ३-११-२ । ६-६१-४ । रा० ३२-३-२ । वि० गी० १-७-२ । १६-६२-४ । ज्ञाननि—बहु० । वि० गी० १५-२४-२ । (२) पु० एक० । चेतना । र० प्रि० ११-५-३ । १६-७-१ ।

ज्ञान-गिरि—सं० पु० एक० । ज्ञान रूपी पहाड । क० प्रि० ६-३१-४ ।

ज्ञान गीता—सं० स्त्री० एक० । विज्ञान गीता (केशवदास की रचना) । वि० गी० १-६-२ । १-१०-२ । ज्ञानगीति—वि० गी० १-६-४ ।

ज्ञानदा—वि० (विशेष्य—मातु) । ज्ञान देनेवाली । वि० गी० १७-१२-२ ।

ज्ञान वृद्ध—वि० (विशेष्य—मुनि) । बड़े ज्ञानी । रा० ३०-१६-२ ।

ज्ञान समुद्र की मुनिजन लही—सं० पु० बहु० । ज्ञान के जिस अपार समुद्र की थाह मुनियो को भी न मिल सकी । वि० गी० १-१४-१ ।

ज्ञानी—वि० (विशेष्य—रतनसेन) । ज्ञानवान— र० ६-३-२ ।

ज्ञासि— स० स्त्री० एक० । एकादशी । वि० गी० ८-२६-३ । ८-३०-१ । ज्ञासिन—बहु० । वि० गी० ८-२६-४ ।

ज्याइवे—क्रि० । जिलाइए, जिलाने के लिए । रा० १७-५२-२ ।

ज्याय जियो—क्रि० । जिलाने पर जीते हो । रा० १८-१६-३ ।

ज्यो—अ० व्यधिकरण, समुच्चयबोधक । जिस प्रकार । जिस तरह से, जिस रूप रूप मे, जिस ढग से । उदा० "दान-वारि ज्यो निदान देखिजै" (रा० ५-३१-१) । र० प्रि० १-६-७ । १-१३-१ । क०प्रि० ३-११-४ । ३-३६-२ । रा० १-१-१ । २-८-२ । ५ ३१-१ । छं० १-४६-३ । वि० गी० १-३७-६ । २-४५-२ ।

ज्यौ—अ० व्यधिकरण, समुच्चयबोधक । यदि, जो । उदा० 'आपुही ते अपगा ज्यौ अनुनिधि प्रीत मे ।' र०प्रि० ५-२०-४ । १-६-२ । वि० गी० १-४-२ । १-८-१ ।

ज्यौनारि—सं० स्त्री० बहु० । सब प्रकार के भोजन । रा० ३०-३१-१ ।

ज्वान—स० पु० बहु० । जवान लोग । रा० ७-३७-४ । वी० २६-२-१ । वि० गी० १३-७६-२ ।

ज्वाब—सं० पु० एक० । जवाब, उत्तर । र० १-५-३ ।

ज्वाल—[√ज्वल् + ण] १-सं० पु० बहु० । आग की लपटें । क० प्रि० ५-३३-२ । ६-४०-२ । २-स्त्री० एक० । ज्वाला । रा० १०-२३-१ । ३०-३५-२ । वी० १६-६ । १६-८ । वि० गी० १०-६-१ ।

ज्वाला घूमावली—स० स्त्री० एक० । आग की लपट एवं धुंआ सहित । रा० १४-६-२ ।

ज्वाल माल—स० स्त्री० बहु० । आग की लपटें । रा० १४-५-१ । ५-१२-२ । ज्वालामाला-रा० १४-१०-१ । ज्वाला-मालानि-रा० १४-८-२ ।

ज्वालामुखी—सं० पु० एक० । पर्वत विशेष । रा० १७-५३-२ । वी० ५-२७ । वि० गी० २०-१६-३ ।

ज्वालु—स० पु० एक० । अग्नि-शिखा । क० प्रि० ६-१२-३ ।

●

झ

झंकार—सं० स्त्री० एक० । झनझनाहट, झनकार, झाँझ । क० प्रि० १०-२६-३ ।

झंझामारुत—सं० पुं० एक० । अखण्ड वर्षा के साथ बहनेवाली बहुत तेज हवा । रा० २३-१७-१ ।

झँझावत—सं० पुं० एक० । तूफान । ज० १०६ ।

झँवाइ—क्रि० । रगड़कर । र० प्रि० १३-१३-१ ।

झकझोर—स० पुं० एक० । झोका । रा० १४-५-२ ।

झकझोरत—क्रि०। झकझोर कर। र० प्रि० १३-१२-४।

झखी—क्रि० स्त्री० एक०। व्याकुल हुई। र० प्रि० ६-५२-२।

झटा—क्रि० स्त्री० एक०। झपटकर चलने लगी। १४-२८-४।

झरत—क्रि० पुं० एक०। झरता है। र० प्रि० ३-४-१। झरे–र० प्रि० ३१-१७-१।

झरोखा—स० स्त्री०एक०। छोटी खिडकी। क० प्रि० १०-१६-३। वी० २१-२८। झरोखनि—र० प्रि० ६-२३-१।

झलक—स० स्त्री० एक०। चमक। र० प्रि० ११-५-३। क० प्रि० ६-१२-२। ६-३२-२। १५-२८-३। १५-६५-३।

झलकत—क्रि० पुं० एक०। झलकता है। र० प्रि० १४-७-३।

झलकति—क्रि० स्त्री० एक०। झलकती। र० प्रि० १५-५-२।

झलकी—क्रि० स्त्री० एक०। झलकती है। र०प्रि०। ६-३२-२। रा० १०-१८-६।

झवाई—क्रि०। झांवे से रगडवा कर। र० प्रि० ७-५-३।

झलरी—सं० पुं० एक०। लटकने वाला हाशिया। वी० ३३-२-१। ३३-३-१।

झहराई—क्रि०। हिलाकर। रा० ५-१३-२।

झाईं—१-स० स्त्री० एक०। छाया, परछाईं। र० प्रि० १४-७-२। क० प्रि० १५-४६-१। २–पुं० एक०। शरीर की कांति, आत्मा। रा० २०-३१-४।

झांकि—क्रि०। झांककर। र० प्रि० ६-२३-१। १३-७-१।

झाँकी—क्रि स्त्री० एक०। झांककर देखी। र० प्रि० ६-५०-३।

झाँझ—सं० स्त्री० बहु०। बाजे, वाद्य-विशेष। क० प्रि० ६-७६-२।

झाँई—स० पु० एक०। झाँई, चक्कर। र० प्रि० ६-५०-३।

झाट्टि—सं० स्त्री० एक०। विजय घण्टा। रा० ८-७-१।

झारि—(१) स० स्त्री० एक०। एक प्रकार की खट्टी पेय वस्तु। रा० ३०-३०-२। (२ क्रि० पुं० एक०। हटा दिया, गिराकर। र० प्रि० १-२५-३। १३-१२-३। रा० ५-४३-१। १६-८-२।

झालर—[सं० झल्लरी] स० स्त्री० एक०। लटकनेवाला हाशिया। रा० २७ ४२-१। वी० २०-२६।

झिल्ला—स० पु० एक०। झींगुर। क० प्रि० ६-६४-१। झगुर–र० प्रि० १४-३२-१। क० प्रि० ६-४३-१।

झिलागन झंकार—सं० स्त्री० एक०। झींगुरो का झनझनाहट। क० प्रि० १३-२६-३।

झिलीगन—सं० पु० एक०। झींगुरो का समूह। र० प्रि० ७-३२-२। क० प्रि० १०-२६-३।

झीन—[क्षीण] वि० (विशेष्य—झाईं) बारीक। रा० २०-१०-३।

झुण्ड—सं० पु० एक०। समूह। छं० १-७८-३।

झुकत है—स० क्रि० पुं० बहु०। रिस करते हैं। रा० १८-१३-२।

झुकि—क्रि० । खीजकर, क्रुद्ध होकर । र० प्रि० १३-१-२ । रा० ५-१३-२ ।

झुकी—क्रि० स्त्री० एक० । क्रुद्ध हुई, रोषयुक्त हुई । र० प्रि० ६-४१-३ ।

झकौ—क्रि० पु० वहु० । झुकते । र० प्रि० ६-४१-३ ।

झुठाई—सं० स्त्री० एक० । झूठापन, असत्यता । क० प्रि० ६-३४-४ । १५-२२-४ ।

झुलमुली—सं० स्त्री० एक० । झुमका (कान मे पहनने का एक आभूषण)। र० प्रि० १५-५-१ । रा० ३१-१५-१ ।

झुलावत—क्रि० । झुलाना । र० प्रि० १०-२-४ (झूलना) ।

झूठ—(अयुक्त) (१) स० पु० एक० । असत्य, झूठ की वात । र० प्रि० ३-४८-४ । क० प्रि० ६-३१-१ । रा० १७-४५-२ । २४-२२-३ । ३७-२७-१ । छं० १-६६-६ । र० १-१०-५ । वी० १-५ । १-३५ । वि० गी० १-६-४ । २-२१-२ । ३-२६-२ । ६-३०-२ । ७-६-१ । ८-२६-२ । (२ वि० (विशेष्य—भूपति) । झूठ बोलने वाला । रा० १८-१०-३ ।

झूठ ही—सं० पु० एक० । असत्य ही । छं० १-३३-४ । १-६६-५ ।

झूठी—सं० स्त्री० वहु० । झूठी वातें । र० प्रि० ३-६२-३ ।

झूठे—(१) सं० पु० एक० । असत्य । छं० १-१६-३ । वि० गी० १-१६-३ । (२) वि० (विशेष्य—संसार) मिथ्या । क० प्रि० ६-५५-२ ।

झूठो—(१) सं० पु० एक० । असत्य । १३-६-१ । १३-६६-२ । १३-८४-२ । १४-७-४ । १७-६२-२ । २१-४३-१ । (२) वि० (विशेष्य—लोभ) मिथ्या, झूठ । क० प्रि० ६-५७-४ । वी० १-३४-२ । वि० गी० ५-२-६ । ६-४६-४ ।

झूमका—स० पु० वहु० । झुले रे । रा० २७-४२-१ ।

झूमि—क्रि० । झूमकर । रा० १३-७२-१ ।

झूल—स० पु० एक० । झूला, झूलने का साधन । र० प्रि० १-२०-४ ।

झूलही—क्रि० स्त्री० एक० । झूलती है । रा० २६-४३-२ ।

झूले—क्रि० पु० वहु० । झलते हैं । र० प्रि० ६-४१-२ । झूलै—र० प्रि० २-२३-१ ।

झूल्यौ—क्रि० पु० एक० । झूलता है । र० प्रि० ८ २८-४ ।

झेले—क्रि० पु० एक० । हटा दिया । रा० ३८-११-२ ।

ट

टंकारी— सं० स्त्री० एक०। टंकार, धनुष की चढी हुई डोरी को खीचकर छोडने से उत्पन्न ध्वनि। रा० ५-४३-१।

टकटोरि—क्रि०। टटोलकर। क० प्रि० ३-१२-१।

टकी—सं० स्त्री० एक०। टकटकी, निर्निमेष दृष्टि। र० प्रि० ८-१४-३।

टरि है—क्रि० पुं० एक०। टरेगा। रा० ११-१-१।

टरै—क्रि०। टालना। रा० ३८-१६-२। टरै–१६-५०-६।

टरेहु क्रि०। काटे जाने पर भी। रा० ३८-१६-३।

टरेगो—क्रि० पुं० एक०। हटेगा, हट सकता है। र० प्रि० ६-२०-१।

टरौं—क्रि० पुं० एक०। हटूंगा। रा० ४-२६-१।

टारौ—क्रि०। टलो, विचिलित हो। र० प्रि० १३-१६-२।

टर्‌यो—क्रि० पु० एक०। टल गया, बीत गया। र० प्रि० ७-२०-२।

टहल—सं० स्त्री० एक०। सेवा। वि० गी० ७-१०-३।

टारत—क्रि० पु० बहु०। टारते। रा० ३६-१५-१।

टारन—क्रि०। टारने के लिए। रा० १०-२-१।

टारहु—क्रि०। टालना।

टारि—क्रि०। हटा दें। र०प्रि० १-१५-१।

टारे—क्रि० पुं० एक०। टालता है। रा० १६-५०-१। ३८-१६-१।

टारो—क्रि० पुं० एक०। टालूंगा, टालता है। रा० १२-५८-१। १६-५१-५। २२-२-२।

टीका—[स० टीक = चलना] (१) सं० स्त्री० एक०। तिलक। वी० १४-१। १४-४६। टीको—र० प्रि० १३-१४-१४। क० प्रि० १२-२८-४। रा० २०-३०-२। (२) एक गहना। र० प्रि० १५-५-४। (ललाट पर का एक गहना)।

टूक—सं० पुं बहु०। टुकडे, खंड। र० प्रि० ११-११-४।

टूटत— क्रि० पुं० एक०। टूटता। रा० १४-३८-२। टूटे—रा० ७-२०-१। ७-२०-६।

टूटि— क्रि०। टूटी। र० प्रि० १६-७-७।

टूटे—(१) बि० (विशेष्य—ठाट)। टूटा हुआ। र० प्रि० १४-३२-१। (२) क्रि०। टूटा। र० प्रि० १४-३२-१।

टूटेगी—क्रि० स्त्री० एक०। टूटेगी। र० प्रि० ५-१४-१।

टूट्यो—क्रि० पुं० एक०। टूट गया। र० प्रि० ५-२१-३। रा० ७-४५-४।

टेक—१-सं० पुं० एक० । दुराग्रह । वी० ३-२३ । 'छांडो राजा ऊपरी टेक' । २-पुं० एक० । संकल्प । वी० ३-६५ । 'अरु लटि ते की कीनी टेक' ।

टेढे—वि० (विशेष्य—कन्हाई) । जो कुटिल स्वभाव का हो । र० प्रि० २-५-४ ।

टेढो—वि० (विशेष्य—भाव) । कुटिल । क० प्रि० १२-३-१ ।

टेर—सं० स्त्री० एक० । हाँक, ललकार । 'कुप की टेर सुनी जही फूलि फिरे सत्रुघ्न ।' रा० ३५-१ । २-पुकार । रा० ३५-२५-४ ।

टोडरमल—सं० पु० एक० । अकबर के दरबार का अर्थ-सचिव । वी० १-६४ । ६-२३ ।

टोपा—सं० स्त्री० एक० । बड़ी टोपी । वी० ८-२५ ।

टोल—१-सं० पुं० एक० । राग-विशेष । क० प्रि० ३-१३-४ । २-स्त्री० एक० । समूह, झुण्ड । रा० ३०-१९-१ ।

टोहिये—क्रि० । खूब जाँच लेना चाहिए । रा० १८-१०-२ । २२-३७-३ ।

टोहिये—क्रि० । तलाश कीजिए । क० प्रि० १५-२९-६ । रा० २५-२५-१ ।

टोहे—क्रि० पु० बहु० । तलाश करते हैं । रा० ६-४५-३ ।

टोहे—क्रि० पुं० बहु० । ढूँढते हैं । क०प्रि० ३-८-३ ।

टौहों—क्रि० । तलाश करूँ । रा० २५-१३-१ ।

ठ

ठकुराइत—सं० स्त्री० एक० । आतंक, अधिकार । रा० ११-३५-१ ।

ठकुराई—सं० स्त्री० एक० । स्वाधीन प्रदेश राज्य । रा० ५-२३-२ । छं० १-४५-४ । वि० गी० १०-५-४ ।

ठकुरानी—सं० स्त्री० एक० । ठाकुर या सरदार की पत्नी । क० प्रि० १५-४९-२ ।

ठग—[स्थग] (१) १-सं० पुं० एक० । धोखा देकर लूटनेवाला, धूर्त, धोखेबाज आदमी । क० प्रि० ६-५७-१ । रा० ९-३४-४ । वी० १-१९ । ३१-३२ । ३१-४७ । २-पु० एक० । दु:ख । वि० गी० ९-२७-४ । १४-७-१ । (२) वि० (विशेष्य—लोग) धोखेबाज । वि० गी० ९-२७-४ ।

ठगी—क्रि० स्त्री० एक० । ठग ली । र० प्रि० ८-४६-४ ।

ठगे—(१) सं० पुं० एक० । धोखेबाज । र० प्रि० ११-१२-३ । ठगु—छं० १-१८-३ । (२) क्रि० । ठगा-सा हो गया । र० प्रि० ५-११-२ ।

ठगौरी—सं० स्त्री० एक० । ठग की पत्नी । रा० ९-३४-४ ।

ठये—क्रि० पुं० बहु० । ठाने, किये । रा० ८-१-१ ।

ठयो—क्रि० पु० एक० । तैयार किया । रा० ११-८-२ ।

ठाउँ—सं० पु० एक० । स्थान, जगह । क० प्रि० ६-५६-१ । ठाऊँ–१३-६८-१ । १७-२६-१ । ठाम–र० १-४९-१ ।

ठाए—क्रि० । हैं । र० प्रि० २-१५-३ । ७-१७-४ ।

ठाए हो—सं० क्रि० पुं० एक० । हो गए हो ।

ठाकुर—[ठक्कुर] १–सं० पुं० एक० । स्वामी, नायक । रा० २६-१०-२ । वि० गी० ९-५३-४ । २–पु० एक० । क्षत्रियो की एक उपाधि । वी० ३-६५ । ८-१३ ।

ठाटे—क्रि० पु० एक० । किया था । रा० ७-६-१ ।

ठाठ—[स्थातृ] सं० पुं० एक० । छाजन का ढाँचा । र० प्रि० १४-३२-१ ।

ठाढ़ि—क्रि० स्त्री० एक० । खडी । र० प्रि० ८-२४-४ ।

ठाढी—(१) वि० (विशेष्य—कुँवरि) बनी ठनी । क० प्रि० ४-१०-४ । (२) क्रि० स्त्री० एक० । खड़ी । प्रि० ४-१०-८ ।

ठाढे—क्रि० पु० बहु० । खड़े हैं । र० प्रि० ५-१०-८ । ५-३६-१ । १४-१४-७ । रा० ३०-२१-६ । ३५-३१-२ ।

ठाढो—क्रि० । खडा करो । र० प्रि० १३-६-४ ।

ठान—सं० पुं० बहु० । निश्चय । र० प्रि० १३-६-४ । ८-१-१ । १-१९-१ ।

ठानी—क्रि० स्त्री० एक० । ठान ली । र० प्रि० ५-३-२ ।

ठाये—क्रि० । स्थित हो, बनाये हो । रा० २०-१७-१ ।

ठेगा—सं० स्त्री० एक० । रोकने की लकडी । ज० ११९ । "ठेगा कर कोपीन कटि" ।'

ठेलि—कि० । ठेल दी । रा० १९-१०-? ।

ठौर—१-सं० पु० एक० । स्थान । र० प्रि० ५-३९-१ । ७-१७-३ । ८-१-१ । १२-१८-१ । १४-३७-१ । क० प्रि० ३-३३-१ । ६-५७-१ । ९-११-१ । १३-२१-१ । वि० गी० ६-७४-३ । ८-५-३ । १०-१५-४ । १०-१६-३ । १३-६१-१ । १३-६६-१ । १४-७-१ । २–पु० एक० । मौका, सुअवसर । रा० १३-६५-२ । "ठौर पाकर पौन पुत्र डारि मुद्रिका दई । ३–पु० एक० । आश्रय । रा० २७-२२-४ । ४–पु० एक० । निवास स्थान । रा० ११-९-१ ।

ठौर-ठौर—सं० पु० एक० । स्थान-स्थान । क० प्रि० ८-२४-२ ।

ठौरनि—सं० पु० बहु० । अवसर । र० प्रि० ५-२५-१ ।

ड

डंक—[दंश] । सं० पु० एक० । नोक । क० प्रि० । ११-७-१ ।

डक—सं० पुं० बहु० । बाजा-विशेष (चमड़ा मढ़ा हुआ एक बाजा जो लकड़ी से बजाया जाता है) । क० प्रि० ६-६७-२ ।

डग—सं० पुं० एक० । कदम । र० प्रि० ७-२७-२ । क० प्रि० ६-६७-२ । १५-७--१ ।

डगै—क्रि० स्त्री० एक० । हिलती है । रा० ५-२२-१ । २४-११-१ ।

डढोई—क्रि० पु० एक० । मुग्ध हो रहा है । रा० २४-१२-२ ।

डमरू— सं० पु० एक० । चमडे से मढा जाने वाला एक छोटा बाजा, जो बीच मे पतला होता है और हिलाने पर उसमे लगी घुंडिया से बजता है । र० प्रि० १४-४०-३ । वि० गी० १४-६-३ ।

डर—[डर] (१) सं०पुं०एक० । भय, भीति, त्रास, खौफ । र० प्रि० २-७-१ । ५-३४-३ । ८-५-४ । १२-८-१ । क० प्रि० ६-५७-२ । ६-७६-२ । रा० १६-४३-२ । २७-५-२ । ३४-१४-२ । ३७-१७-२ । बहु० डरनि—र० प्रि० १२-१४-४ । (२) क्रि० डरे । र० प्रि० २-७-१ ।

डरत—क्रि० पु० एक० । डरता है । क्रि० प्रि० ४-२२-४ । रा० १-३-३ । २७-२२-३ ।

डरति—क्रि० स्त्री० एक० । डरती । र० प्रि० । ११-१६-४ । रा० २६-१३-२ । डराती । रा० ३३-५०-२ ।

डरपाइ—क्रि० । भयभीत करके, डराके । र० प्रि० ३-३०-२ । ८-७-२ ।

डरपै—क्रि० पु० एक० । डर जाता है । र० प्रि० ३-३०-२ । १४-७-२ । रा० ५-४०-१ ।

डराति हौं—सं० क्रि० स्त्री० एक० । डरती हूँ । रा० ३३-५०-२ ।

डरान—क्रि० पु० बहु० । डरते । र० प्रि० २-१३-६ ।

डरु—(१) स० पुं० एक० । भय । र० प्रि० ११-८-२ । (२) क्रि० । डरता, डरो । र० प्रि० २-११-२ ।

डरै—क्रि० पुं० बहु० । डरते हैं । रा० २४-१८-३ ।

डरै क्रि० । डरें । र० प्रि० २-१७-३ । रा० १६-२७-१ । ३३-२६-१ ।

डरौं—क्रि० । पु० एक० । डरता हूँ । रा० १६-३३-४ ।

डर्यौ—क्रि० पुं० एक० । डरता है । रा० १८-५-३ । १६-४२-२ ।

डसै—क्रि० पु० एक० । काटता है । रा० २४-१६-२ ।

डाटे—क्रि० । देखकर । रा० ७-६-२ ।

डाँड—स० पु० एक० । दण्ड । क० प्रि० ११-७३-४ ।

डाढति—क्रि० स्त्री० एक० । जलती । र० प्रि० ८-११-४ ।

डाढ हुए—क्रि० पुं० एक० । जलोगे । र० प्रि० ८-१३-४ ।

डाढ़ी—क्रि० स्त्री० एक । जली हुई । र० प्रि० ८-४२-३ ।

डाढ़े—क्रि० पुं० एक० । जलता है । रा० १४-८-१ ।

डाढो—क्रि० । जले, आग लगें । र० प्रि० १३-६-१ ।

डाढ़्यो—क्रि० पुं० एक० । जला हुआ । र० प्रि० १-२५-७ ।

डारत—क्रि० पु० वहु० । डालते । र० प्रि० ५ ११-३ । रा० ७-३८-२ । १५-२८-१ ।

डारि—(१) सं० स्त्री० एक० । डाली, पेड की छोटी शाखा । क० प्रि० १५-७०-१ । (२) क्रि० । डालकर । र०प्रि० १-२५-३ । ३-२९-४ । रा० ७-२-२ । ७-९-२ । १३-६५-३ । १७-४०-२ । १८-२६-२ । २१-४६-१ । ३४-१४-२ ।

डारिये—क्रि० । डालिये । रा० १४-२-१ । डारियै । रा० २७-७-३ ।

डारी—क्रि० स्त्री० एक० । डाल दी गयी, डाल दी । क० प्रि० ६-१०-४ ।

डारे—क्रि० । डालकर । रा० २४-८-१ । ३८-६-२ ।

डारैं—क्रि० पु० एक० । डालता है । रा० ७-४२-२ ।

डारौं—क्रि० पु० एक० । डालूंगा । र० प्रि० ३-४-४ । रा० १०-२-५ । १०-२५-१ ।

डारयो—क्रि० पु० एक० । डाला । र० प्रि० १४-२३-५ ।

डासन—[दर्भ+आसन] १–सं० पु० एक० । बिछौना । र० प्रि० ८-२९-१ । क० प्रि० १३-५-३ । छं० १-६५-३ । वि० गी० ९-५७-२ । २–पु० वहु० । मच्छर । र० प्रि० ८-२९-२ ।

डिड—सं० पु० एक० । डिंडिम, नगाडा । वी० २०-३४ ।

डीठि—सं० स्त्री० एक० । नजर, दृष्टि । र० प्रि० १-१३-१ । ४-१३ ३ । ६-२९-४ । ७-४९-१ । ८-४१-३ । ९-८-२ । १२-३-३ । १३-२५-४ । क० प्रि० ६-२१-२ । १३-४०-४ । १५-१७-१ । रा० २४-११-१ । २७-१६-२ । डीठ-वि० गी० १४-३-३ । १४-२५-१ ।

डील—सं० पुं० एक० । शरीर । र० १-४४-२ ।

डेढ़ सहस—वि० (विशेष्य—असवार) । डेढ़ हजार । र० ५३-३ ।

डेराइ—क्रि० स्त्री० एक० । डरती है । रा० १८-१९-२ । २७-१३-३ ।

डेरान—सं० पुं० एक० । डेरा, टिकाव । रा० २२-२ -१ । डेरा–र० १-४४-२ । वी० ३-२३-१ । ३-३४-२ ।

डोंगुर—स० पुं० एक० । पर्वत । र० १-४४-२ ।

डोंडी—सं० स्त्री० एक० । डुग्गी । वि० गी० १०-२-१ ।

डोरि—सं० स्त्री० एक० । रस्सी । क० प्रि० १६-७०-१ ।

प्रवीण, बुद्धिमती। क० प्रि० १-४३-२।

अति निष्ठुर—विशेषण। विशेष्य—प्रीति। हृदयहीन। रा० २३-२४-१। वी० च० २६-२६-१।

अति नीक—विशेषण। विशेष्य—लीक। अत्यंत पतली। वी० च० २४-१६-२।

अति नीके—विशेषण। विशेष्य—गजमातिन। अत्यंत सुंदर। क० प्रि० १५-२८-१।

अति परदारप्रिय—विशेषण। विशेष्य—वीरसिंह। परस्त्रियों से प्रेम करनेवाला। क० प्रि० ९-२०-२, वी० च० ३३-४४-१।

अति परम—विशेषण। विशेष्य—प्रमान। सच्चा। वी० च० ३०-१८-१।

अति पोच—विशेषण। विशेष्य—सोच। अत्यंत तुच्छ। रा० १२-१६-१।

अति पावन—विशेषण। विशेष्य—भागीरथी। अत्यंत पवित्र। रा० ६-२६-३। २१-१८-१। वी० च० १८-६-२।

अति पीवर—विशेषण। विशेष्य—साज। अत्यंत बड़ी। वी० च० ५-३४-१।

अति पैनी—विशेषण। विशेष्य—उपमा। अत्यंत तीखी; उपयुक्त। र० प्रि० ४-६-३।

अति पैने—विशेषण। विशेष्य—कटाछ। अत्यंत तीक्ष्ण। र० प्रि० १२-२१-२। क० प्रि० १५-२९-१।

अति प्रफुल्लित—विशेषण। विशेष्य—वन। फूलों से लदा हुआ। रा० ३-१-६।

अति प्रवीन—विशेषण। विशेष्य—राम प्रवीन। संसार भर में सुविख्यात। क० प्रि० ३-२१-२।

अति बड़ो—विशेषण। विशेष्य—तिय-मुख-चंद्र। अधिक बड़ा। र० प्रि० ३१-२१-२। वी० च० २२-६८-१।

अति बल—विशेषण। विशेष्य—नारी। प्रबला। रा० ३-१०-२।

अति वृद्ध—विशेषण। विशेष्य—गीध। अत्यंत बूढ़े। रा० १२-२३-१।

अति भगत—विशेषण। विशेष्य—सुमित्रानंद। (राम का) परम भक्त। रा० १२-७५-१।

अति भली—विशेषण। विशेष्य—माँग। अत्यंत अच्छी। रा० ३१-८-१। वी० च० २२-५४-२।

अति भीत—विशेषण। विशेष्य—सब सूर। भय से अत्यंत पीड़ित। रा० ३९-८-१।

अति भीम—विशेषण। विशेष्य—लक्ष्मन को दल। अत्यन्त भयंकर। रा० ३६-१०-१।

अति भ्रमकारी—विशेषण। विशेष्य—धारा संपात। अत्यधिक भ्रम पैदा करनेवाली। वी० च० ६-२४-४।

अति मंजुल—विशेषण। विशेष्य—वंजुल। अत्यंत सुंदर। रा० ३२-१२-२।

अति मति—सं० स्त्री० एक०। बहुत अधिक घमंड। छं० मा० १-५१-४।

अति मत्त—विशेषण। विशेष्य—मधुरी। मस्ती से पूर्ण। रा० ११-१७-२।

डोरी—सं० स्त्री० एक० । क० प्रि० १५-७५-३ । रा० ३१-१६-२ ।

डोरे-डोरे फिरत—क्रि० पुं० बहु० । हाथ पकड़े लिए फिरते हैं । रा० २०-४०-४ ।

डोलत—क्रि० पुं० बहु० । डोलते हैं, डोलने पर । र० प्रि० २-१७-१ । ७-६ ६ । ७-६-१ । ८-२८-३ । ८-३४-२ । १०-२४-१ । क० प्रि० ५-३३-४ । रा० २७-१६-३ ।

डोलति—क्रि० स्त्री० एक० । डोलती । र० प्रि० २-१७-२ । ८-११-४ ।

डोलिये—क्रि० । डोलो । र० प्रि० १३-१८-४ । रा० ४-६-२ ।

डोलौं—क्रि० । हिलना डुलना । र० प्रि० ४-१८-७ । रा० १-३३-१ ।

डोलौ—क्रि० । फिरना । र०प्रि० २-१३-१।

डौंडी—सं० स्त्री० एक० । डुग्गी । र० प्रि० १०-२४-१ ।

ढ

ढंग—[तग] सं० पुं० एक० । रीति, शैली, प्रकार, तरीका । र० प्रि० ३-३६-१ । ८-२६-४ ।

ढके—क्रि० । ढक दिया हो । रा० १४-७-१ ।

ढही—क्रि० । गिरना । रा० १५-११-२ ।

ढहे—क्रि० पुं० एक० । गिरा दिया । रा० ७-४८-३ ।

ढाढ़ी—सं० पु० एक० । घूम-घूम जन्मोत्सव के गीत गाने वाली एक नीच जाति । क० प्रि० ११-५७-२ ।

ढारि—क्रि० । उडेलना । र० प्रि० १-२५-४ । ७ २४-३ । क० प्रि० ३-३८-४ ।

ढिठाई—सं० स्त्री० एक० । धृष्ठता । र० प्रि० ६-५७-२ । १४-३६-३ । क० प्रि० ६-४६-३ । १५-२२-१ । रा० ६-२१-२ । ढिठई-वि० गी० १६-११६-२ ।

ढिल्ली—सं० पु० एक० । दिल्ली । ज० १५२ ।

ढीक—सं० पुं० एक० । धृष्ठ नायक । र० प्रि० ८-३७-२ ।

ढीठ—(१) सं० पु० एक० । धृष्ठ । र० प्रि० ८-३७-२ । (२) वि० (विशेष्य—मुनिबाल) । धैर्यवान । रा० ३६-२७-१ । वी० ३-२२-१ ।

ढीठहि—सं० पुं० बहु० । आँखें । र० प्रि० ८-३७-२ ।

ढीठी—सं० स्त्री० एक० । धृष्ठता । र० प्रि० ५-१४-३ ।

ढीला—सं० स्त्री० एक० । ढिलाई । रा० २६-३-१ ।

ढूंकिके – क्रि० । छिपकर । रा० ६-३६-२ ।

ढोटहि – सं० पु० एक० । पुत्र को । र० प्रि० १२-७-२ ।

ढोटा सं० पु० एक० । पुत्र । र० प्रि० १२-६-४ ।

ढोल—[ढक्का] सं० पु० एक० । हाथ से बजाने का एक बाजा जिसके दोनो ओर चमड़ा मढ़ा होता है । वि० गी० १२-२-३ ।

ढोलक—सं० पु० एक० । एक चर्म वाद्य । वी० ६-१४ ।

त

तंत्र—१–सं० पु० एक० । तंत्र शास्त्र । रा० २-२८-१ । २–पु० एक० । सिद्धान्त । वि० गी० ७-२-२ । ६-४३-२ । ३–पु० एक० । शक्ति साधना का धार्मिक उपाय । वी० १-४६ । १५-१६ । ४–पु० बहु० । राजतंत्र के ग्रन्थ । रा० १७-२४-२ । तंत्रनि । सिद्धान्तों को वि० गी० ६-२६-२ ।

तंत्री—१–सं० पु० एक० । १–सिद्धान्त-विज्ञ बृहस्पति—देव सभा के पक्ष मे । २–स्त्री०बहु० । वीणा मे लगे हुए तार–प्रवीण राय के पक्ष मे । क० प्रि० १-४५-१ । २–स्त्री० एक० । तार युक्त बाजे—जैसे, सितार, वीणा आदि । क० प्रि० ६-४५-२ । ३–पु०बहु० । परिवार के लोग । वि० गी० ५-५४-१ ।

तंत्रवीर—स० स्त्री० एक० । वीणा । वी० २०-१४ ।

त—सं० पु० एक० । तगण, तीन वर्णो का मात्रिक गण (दो दीर्घ (गुरु) और एक लघु) । क० प्रि० ३-१८-२ । ३-२०-२ । तगण ३-२४-२ । छं० १-१२-६ । १-१८-१ ।

तऊ—(१) सं० अन्य पुरुष एक० । उदा० 'तऊ पठये' (रा० ८-१८-४) । वी० १-८-१ । १६-१६-४ । (२) तब भी । २४-२२-२ ।

तक—सं० पु० एक० । तर्क, चुटीली बात, चातुर्य पूर्ण शक्ति । रा० ३०-२८-२ । बहु० । तर्क । क० प्रि० १५-३६-३ । वी० २६-४३-१ । तर्क–(छ प्रकार के तर्क, वेदान्त, साख्य, पातंजलि, न्याय, मीमासा, वैशेषिक । क० प्रि० ११-१५-१ ।

तखत—सं० पु० एक० । सिंहासन । ज० ६१ । वी० ६-१३ ।

तखखत—सं० स्त्री० एक० । ताकत । रा० १-१६-२ ।

तक्ष—सं० पु० एक० । भरत का पुत्र । रा० ३६-२२-१ ।

तक्षक—सं० पु० एक० । आठ नागो मे से एक जिसने परीक्षित को काटा था । क० प्रि० ५-२८-२ । वी० १४-२६ । १४-३० ।

तक्षकाभोग—सं० पु० एक० । तक्षक + अभोग । तक्षक नाग का फन । रा० २०-८-२ ।

तक्षन—वि० (विशेष्य—बान) तीक्ष्ण । रा० १८-३४-३ ।

तची—क्रि० स्त्री० एक० । तप्त हुई, पकी है । र० प्रि० ७-१८-४ । तची–र० प्रि० २-१२-४ ।

तजत—क्रि० पु० एक० । छोड़ा । र० प्रि० १२-२६-२ । रा० ३१-१३-२ ।

तजन—सं० पु० एक० । त्याग । वि० गी० ८-४६-१ ।

तजहि—क्रि० । छोड़ना । रा० ६-१७-१ ।

तजहु—क्रि० पु० एक० । छोड़ा । क० प्रि० ३-१४-२ ।

तजि—क्रि० । छोड़कर, छोड़ दिया । र० प्रि० १-२४-२ । ५-१९-२ । क० प्रि० १-२४-२ । २-१२-२ । रा० ६-५०-३ । ७-३६-३ ।

तजी—क्रि० पु० एक० । छोड़ दिया । रा० २-२१-१ । ६-३४-४ । तज्यो–र० प्रि० ८-४६-१ । रा २-२१-१ । ९-२०-१ । ३२-२५-१ ।

तजे—क्रि० । छोड़ने पर, त्यागने पर । र० प्रि० ६-५३-१ ।

तजे- क्रि० पु० एक० । छोड़ दिया, छोड़कर । रा० १२-४१-२ । १९-४३-२ ।

तजै—क्रि० । छोड़े । र० प्रि० ७-३६-२ । रा० २-३२-१ । ९-१६-१ ।

तजौ—क्रि० पु० एक० । छोडूँगा । रा० ३६-२१ २ ।

तजो—क्रि० । छोड़ो । क० प्रि० ३-१६-२ । रा० ४-८-१ । १७-४७-१ ।

तज्जि—क्रि० । तजकर । रा० १५-४५-१ ।

तट—स० पु० एक० । किनारा । र० प्रि० ५-३६-१ । क० प्रि० ७-१२-१ । रा० ११-१२-१ । ३३-२३-२ । वि० गी० १३-३६-२ । १४-३५-२ । १६-३६-१ ।

तड़प—क्रि० । तड़पना । र० प्रि० १५-७-३ । (कड़कना)

तड़ाग—१–सं० पु० एक । तालाव । क० प्रि० ३-५४-२ । रा० ५-१५-१ । ९-३६-१ । ९-४४-१ । १२-५०-४ । ३९-१८-२ । छं० १-६१-५ । १-६४-३ । वी० १३-१२ । १५-२१ । वि० गी० १३-४१-३ । २–बहु० तड़ागनि । क० प्रि० ७-१७-३ । वि० गी० १३-३८-१ ।

तडित –स० स्त्री०एक० । बिजली, विद्युत । र० प्रि० ६-६-४ । क०प्रि० ७-३२-१ । रा०१३-१९-१ । ३३-५२-१ । तडिता–र० प्रि० १५-७-३ । रा० १०-१७-२ । वि० गी० १०-७-१ ।

तड़िता जुत—वि० (विशेष्य--वारिद) बिजली समेत । रा० १०-१७।१ ।

तडिता दुति भीनी—वि०(विशेष्य–तरवार) विजली की चमक मे भीगे हुए नोकदार। वि० गी० १०-७-१ ।

तदपि—क्रि० वि० । संकेतवाचक, समुच्चयबोधक । तथापि, तो भो । उदा० "तदपि न गयो औह छै परै" । र० प्रि० १२-९-२ । रा० १-१७-२ । १-३४-१ । ९-११-२ । ६-४८-२ । ११-१५-२ । १३-७५-२ । १३-१८-२ । २३-१८-१ । २३-३०-१ । २७-२१-४ । वी० २९-३२-१ । वि० गी० १-३१-६ । ९-३१-२ । र० ७-२ ।

तन—(१) १–सं० पु० एक० । शरीर, देह । र० प्रि० १-९-१ । २-१२-४ । २-१३-३ । ३-६-१ । ३-१२-२ । ३-३७-२ । ४-८-२ । ५-२७-२ । ५-३२-१ । ६-३०-२ । ६-३७-४ । ६-४६-१ । ८-४-३ । ८-१६-१ । ८-१८-१ । ८-२१-२ । ८-२८-२ । ८-३५-१ । ८-४६-२ । ८-४७-१ । ८-४९-१ । ११-३३-३ । ११-५-३ । ११-१०-२ ।

११-१३-२ । १२-५-१ । १४-८-२ । १४-२८-२ । १४-३०-२ । क० प्रि० २-२०-१ । ३-४८-१ । ३-५२-२ । ८-४-३ । ९-२६-१ । १०-२८-२ । ११-३५-३ । १२-२३-१ । १३-६-५ । १४-३१-२ । १४-४७-२ । रा० १-३४-४ । १-६४-१ । २-१४-१ । २-२०-१ । २-२४-३ । ४-२९-२ । ५-६-१ । ७-२२-१ । ८-१-२ । ९-१३-२ । १०-३७-२ । ११-३२-३ । १२-५४-१ । १३-६५-२ । १४-२७-२ । १८-८-२ । १९-२-२ । २०-३-१ । २१-२२-२ । २७-१६-१ । २९-१३-१ । ३०-९-३ । ३१-८-२ । ३२-१७-१ । ३६-२-१ । वि० गी० ३-१९-३ । ५-१-७ । २—पु०बहु० । गात, शरीर । र० प्रि० ५-३६-३ । १६-४-२ । क० प्रि० १५-८८-४ । तननि—क० प्रि० १३-१०-२ । (२) वि० (विशेष्य—पूरा-पूरी) । अति कमजोर । रा० २९-१३-१ ।

तन त्रान—सं० पु० एक० । शरीर की रक्षा करनेवाला कवच । क० प्रि० १-५२-२ । १५-१३-४ । रा० ७-७-४ । ७-४१-१ । वी० ५-४५ । ७-४४ । ज० ४ ।

तनमन धीर—वि० (विशेष्य—चंद्रसेन) । तन-मन से धीरजवाला ज० ७४-२ ।

तन मन सूरे—वि० (विशेष्य—राम-लक्ष्मण) । तन मन से सूर वीर । रा० १२-४२-१ ।

तन मान सा—सं० स्त्री० एक० । ज्ञान की भूमिका । वि० गी० १७-५६-२ । १७-६०-२ ।

तन मन-सा मस्तक—वि० (विशेष्य—रूप) तन मन मे स्थायी रूप से रहने-वाला । वि० गी० १७-६०-२ ।

तनजा - सं० स्त्री० एक० । कन्या । रा० ९-९-१ । २१-४१-२ । तनुजा—रा० ५-२१-४ । बहु० । तनूजा—क० प्रि० १५-७१-३ ।

तनय—सं० पु० एक० । बेटा या पुत्र । वि० गी० १३-२-१ ।

तन सुख - सं० पु० एक० । एक प्रकार का रेशमी कपड़ा । रा० २९-२२-७ ।

तनी—सं० स्त्री० एक० । अँगरखे आदि मे पल्ला बाँधने के लिए लगा हुआ बंद, कंचुकी की तनी । क० प्रि० ३-१२-१ ।

तनु—(१) सं० पु० एक । शरीर । र० प्रि० ३-२-२ । ४-१७-२ । क० प्रि० ११-७९-२ । १५-८२-२ । छं० १-७३-५ । वि०गी० १३-१८-१ । (२) पुं०एक० । चर्म । रा० ३०-१३-२ । (३) वि० (विशेष्य—धनुरेखा) । बारीक, पतली । र० प्रि० ३-२-२ । रा० २०-४७-२ । छं० १-५०-३ । (२) वि० (विशेष्य—कोस रसकन) । छोटे । क० प्रि० १-२६-२ ।

तनु-तनु—(१) सं० पुं० एक० । प्रत्येक शरीर । क० प्रि० १-५२-१ । (२) वि० (विशेष्य—पद्मिनी) । दुबले-पतले शरीरवाली । र० प्रि० ३-२-२ । २—वि० (विशेष्य—कोस रसकन) । छोटे-छोटे । क० प्रि० १३-२६-२ ।

तनुता—सं० स्त्री० एक० । शरीर का रंग । र० प्रि० ८-२४-३ ।

तनरुह—सं० पुं० बहु० । तन के बाल, रोम । क० प्रि० ५-१३-१ । २—पुं० एक० । पुत्र । क० प्रि० ७-१७-२ ।

तनै—क्रि० पुं० बहु० । तने हैं । रा० २६-४२-२ ।

तन्यौ—क्रि० पुं० एक० । तना है । रा० ३०-१२-१ ।

तप—सं० पु० एक० । तपस्या (किसी अभीष्ट सिद्धि के लिए उठाया जानेवाला कष्ट) । र०प्रि० १-४-२ । ८-५२-४ । क० प्रि० ६-३६-१ । ११-६०-४ । रा० ११-२-१ । १३-६०-१ । वी० १-४६ । १-५२ । २—पुं० बहु० । तरुवरनि । क० प्रि० १५-१०-१ ।

तरवार—सं० स्त्री० एक० । तलवारें । र० १-१६-२ । वी० ४-५० । ४-४८ । ज० ७५ । १५४ । वि गी० १०-७-१ ।

तरसै—क्रि० पु० एक० । काटता है, तरसना । रा० २४-१६-२ ।

तराइन—[तारावली] सं० स्त्री० बहु० । तरैयाँ, सखियाँ । क० प्रि० १५-६२-१ ।

तारि—क्रि० । पार करके । रा० १०-१३-२ । १५-३४-२ । २४-२१-४ । ३७-६-२ ।

तारि हौं—क्रि० स्त्री० एक० । पार चला जाऊँगा । रा० ७-८-१ ।

तरी—[तरि + ङीप्] (१) सं० स्त्री० एक० । छतिया । रा० २१-३५-२ । (२) क्रि० स्त्री० एक० । पार की गई । रा० १६-१२-१ ।

तरीनि—सं० स्त्री० एक० । पहाड की तरहटी । रा० १६-१२-१ ।

तरु—[तृ + उन्] १—सं० पु० एक० । वृक्ष, पेड । र० प्रि० ५-२०-४ । १३-१७-१ । क० प्रि० ६-६१-१ । ६-६१-४ । ७-१७-२ । १०-२६-४ । १५-६०-३ । १६-२३-१ । रा० १-३१-१ । २-२६-१ । छं० १-५८-५ । २-३-१ । वी० ५-२० । ८-४५ । ज० १७ । ५७ । १५८ । वि० गी० १३-१५-१ । २—पु० बहु० । सात प्रसिद्ध वृक्ष (मंदार, पारिजात, संतान, कल्प, हरिचंदन, अक्षयवट और कैलाशवट) । क० प्रि० ११-१७-२ । ३—पु० बहु० । पेड । क० प्रि० १२-११-२ । १३-३-४ ।

तरु-अमरि—सं० पु० एक० । गूलर का वृक्ष । रा० २६-२०-१ ।

तरुकलप—सं० पुं० एक० । कल्प वृक्ष । रा० २६-२१-१ ।

तरुखंड—१—स० पुं० बहु० । सातो ताल वृक्ष जिन्हे राम ने सुग्रीव के कहने से वेध किया था । क० प्रि० ११-५५-४ । रा० १६-५१-४ । २—वृक्ष का भाग । पु० एक० । वि० गी० १६-६२-१ ।

तरु खंड मंडित—वि० (विशेष्य—भूतल सुदेस) वृक्ष समूह से सुशोभित । रा० ११-१४-३ ।

तरु चन्दन—सं० पुं०एक० । चन्दन वृक्ष । रा० १७-१२-१ । ३२-१७-१ ।

तरुन—(१) १—सं० पुं० बहु० । वृक्ष । क० प्रि० १०-२८-२ । २—पु० एक० ।

युवा पुरुष । क० प्रि० १५-६३-२ । ३–पु० एक० । यौवन, युवावस्था । र० प्रि० ६-२७-२ । (२) वि०(विशेष्य-द्विज) । युवा । र० प्रि० २-१-१ । १४-१८-२ । रा० ३१-१५-२ । वी० १२-१७-२ ।

तरुनाई—सं० स्त्री० एक० । युवावस्था । र० प्रि० ११-६-१ ।

तरुनि—१-सं० स्त्री० बहु० । अष्ट नायिका – स्वाधीन-पतिका, उत्कंठिता, वासक सज्जा, कलहांतरिता, खंडिता, प्रोषित पतिका, विप्रलम्भा तथा अभिसारिका । क० प्रि० ११-१९-२ । २–स्त्री० बहु० । युवतियाँ । क० प्रि० १५-२०-४ । तरुनीन क० प्रि० ६-३१-३ । तरुनीन हूँ । र० प्रि० ४-७-२ । ३–स्त्री० एक० । युवती । र० प्रि० १४-१२-१ । क० प्रि० १५-४५-४ । वि० गी० ६-७०-२ । ४–स्त्री० एक० । पत्नी । रा० ३ -३८-२ । ३५-३-१ ।

तरुनि तर- वि० (विशेष्य—लतिका) । पूर्ण युवती । क० प्रि० १०-२४-१ ।

तरुनैन—सं० पुं० बहु० । युवा पुरुष । र० प्रि० ४-७ २ ।

तरुपंच—सं० पु० बहु० । स्वर्ग के पांच वृक्ष—मदार, पारिजात, सन्तान, कल्प-वृक्ष, हरिचंदन । क० प्रि ११-१८-१ ।

तरु पुण्य—सं० पु० एक० । पुण्य रूपी पेड़ । क० प्रि० १३-३-४ ।

तरु मूल —सं० पु० एक० । पेड़ का जड़ । रा० ३५-३१-१ ।

तरे तेरे—क्रि० पु० एक० । तेर कर आए, पार किया । रा० १६-३१-३ ।

तर्यो—क्रि० पुं० एक० । पार किया । रा० १४-१-३ । १६-१२-१ ।

त्रसे—क्रि० पु० बहु० । भयभीत हो गये । रा० ५-६-२ । २८-९-२ । २९-३४-२ । त्रसै-रा० ३६-२४-४ ।

तल—सं० पु० एक० । तलवा (निचला भाग) । रा० ६-५७-१ । १०-३२-३ । छं० १-३८-५ । वि० गी० १६-९२-२ ।

तलप—सं० पुं० एक० । शय्या, सेज । र० प्रि० १४-३२-२ ।

तव सं० (तुम्हारे) मध्यम पुरुष, सर्व-नाम मूलक, सबंधवाची विशेषण । छं० १-३५-३ । वि० गी० ३-३-३ । ६-५९-१ । ८-३४-१ । ९-११-४ । १३-२९-१ । १३-५५-२ । १३-८०-१ । १५-३७-२ । १५-५७-१ । १६-४३-२ । १९-२१-४ । २१-६३-१ ।

तपत—क्रि० । जलना । र० प्रि० ८-४४-३ । ११-१८-६ । रा० १३-८८-३ ।

तपती—सं० स्त्री० एक० । नदी विशेष । वि० गी० --१९-२ ।

तप तेज—सं० पु० एक० । तपस्या का प्रभाव या शक्ति । क० प्रि० ६-१९-२ ।

तपन—सं पु० एक० । सूर्य । क० प्रि० ६-४०-४ । ७-३५-१ । तपनहि—क० प्रि० ६-६७-१ । तपिन–क० प्रि० १५-७३-२ ।

तपन ताप—सं०पुं०एक० । सूर्य की गरमी । क० प्रि० ६-४०-४ । रा० ९-२६-४ । १२-९२-२ ।

तप पंथ—सं० पु० एक० । तपस्या रूपी मार्ग । रा० २५-२६-१ ।

तप फल—सं० पु० एक० । तपश्चर्या से प्राप्त बल । रा० १-२४-४ । १७-८-२ । तपोबल—क० प्रि० ६-७१-२ । वि० गी० ६-५६-३ ।

तप बल पूरे—वि० (विशेष्य—मुनि) । तपोबल से पूर्ण । रा० ३३-१०-१ ।

तप विशिष्ट—सं० पु० एक० । शाप । रा० ७-४१-१ ।

तप मय वि० (विशेष्य—बनवारी । श्लेष से .—(१) ताप पूर्ण-पुष्पवाटिका के पक्ष मे । (२) तपबल युक्त-वनवासिनी कन्या के पक्ष मे । रा० १-३४-२ ।

तप वृद्ध—(१) सं० पु० बहु० । ऐसे तपस्वी जिन्होंने अपना सारा जीवन तपस्या करने मे बिताया । क० प्रि० ६-६६-२ । (२) वि० (विशेष्य—मुनि) । तपबल से युक्त । क० प्रि० ६-६६-२ । वी० ३२-४१-१ ।

तप-समाज—सं० पु० एक० । जप तप इत्यादि पुण्यकार्य । रा० १२-४४-२ ।

तपसा—सं० स्त्री० एक० । तपस्या । (दे० 'तप') रा० ३३-२४-१ । ३३-५६-२ । वि० गी० ६-४-६ । ६-५३-२ । तपस्या रा० २४-१०-३ । तपसिनि—वि० गी० ५-२२-१ ।

तपसिन्धु—सं० पु० एक० । तपस्या रूपी सागर । रा० २०-४७-४ ।

तपसी—सं० पु० एक० । तपस्या करने वाला । वि० गी० ९-२३-१ ।

तपसीलाति दंड धारिनी - वि०(विशेष्य—पताका) साधुओ के धारण करने का ऊंचा दंड । वी० १६-३-२ ।

तपस्याधिकारी—(१) सं० पु० एक० । तपस्या का अधिकारी । वि० गी० ११-२ -१ । (२) वि० (विशेष्य—श्री बिन्दु-माधौ) । तप का अधिकारी । वि० गी० ११-२९-१ ।

तपसी —तपस्या करनेवाला । वी० ३१-२१ । तपी-क० प्रि० १६-५७- । रा० २१-४६-१ । वि० गी० ११-२९-१ ।

तपि—क्रि० पु० एक० । तपता है, तपकर । रा० १३-९२-२ ।

तपी—वि० (विशेष्य–विप्रन) । तपस्या करने वाला । रा० १६-३०-१ ।

तपीन—सं० पु० बहु० । तपस्वियो का । वि० गी० ६-२६-१ ।

तपु—सं पु० एक० । अग्नि । क० प्रि० १५-७३-२ ।

तपै—क्रि० पु० एक० । तपता है । रा० १३-९०-२ ।

तपोजल—सं० पु० एक० । तपस्या का जल वि० गी० १६-५१-१ ।

तपोबल—सं० पु० एक० । तपस्या करने का स्थान । रा० २१-५२-२ ।

तपोधन—(१) सं० पु० एक० । तपस्या का धन या फल । वि० गी० १६-५१-१ । (२) वि० (विशेष्य—वनवारी) श्लेष से —१-जाड़ा, गर्मी आदि ऋतुओ को सहनेवाली–पुष्पवाटिका के पक्ष मे । २ तपस्विनी - वनवासिनी कन्या के पक्ष मे । रा० १-३४-१ ।

तपोधनु—सं० पु० एक० । तपस्या का धन या फल । छं० २-४१-३ ।

तपोवन—सं० पुं० एक०। तप करने का वन। रा० २-३०-२। ६-३४-२।

तपोव्रत—सं० पुं० एक०। तपस्या संबंधी व्रत।

तपोमय—वि० (विशेष्य—राम को राज)। तपबल से युक्त। रा० ३४-३-१।

तप्त—(१) सं० पुं० बहु०। गरम चीजें। क० प्रि० ६-२-१। २-सं० पुं० एक०। तप्त वर्णन-वर्ण्यालंकार का एक भेद जिसमे गरम चीजो का वर्णन होता है। २-वि० (विशेष्य—थल)। गर्म। र० प्रि० ३-६-१। क० प्रि० ६-२-१। रा० ३२-१३-२। वी० २३-१८-१।

तप्यो—क्रि० पु० एक०। तपा। र० प्रि० २-१२-४।

तर्पि—क्रि०। तर्पण करके। रा० २-१२-४।

तब—क्रि० वि०। तब-कालवाचक उदा० 'तब केशव बुद्धि विसेसो।' र० प्रि० ३-३१-२। क० प्रि० २-२-१। २-६-१। रा० १-६-२। २-७-१ छं० १-५-६। १-८-६। १-६-५। १-१६-४।

तबै—क्रि० वि० कालवाचक। उदा० 'समुझे न तबै समझे।' र० प्रि० ७-३६-१। क०प्रि० १६-८६-२। रा० १-५४-३। ४-२-१। वि० गी० ११-१३-१।

तबोलिनि—सं० स्त्री० एक०। पान वेचने वाली स्त्री, तमोलिन। र० प्रि० १३-२०-२।

तम—१-सं० पु० एक०। अन्धकार। र० प्रि० ५-३०-३। १४-३२-३। क०प्रि० ४-५-२। ४-७-१। ५-२१-२। ७-२३-२। ७-२५-१। १५-२१-२। १५-५७-१। १५-७०-१। १५-७१-४। १५-७६-१। रा० ५-२२-२। र० १-१०-२। वि० गी० १३-३३-१। पुं० एक०। तमु—क० प्रि० १५-५८-३। १५-७४-१। २-पुं० एक०। राहु। क० प्रि० ६-७५-१। ३-पुं० एक। १-अन्धकार-दीपक के पक्ष मे। २-अज्ञान-देह के पक्ष मे। क० प्रि० १३-२८-२। ४-पुं० एक०। अन्धकार, तमोगुण। र० प्रि० ४-६-१। वी० ६-१५। १२-११। ज० १८-२। स्त्री०। तमो। क० प्रि० १५-३६-२ (अन्धकार)। १६-७३-३। (अन्धकार)। वि० गी० २१-४७-१। (अन्धकार)।

तमई—सं० स्त्री० एक०। रात। रा० ३२-४१-१।

तम गुन हरा प्रमान—वि० (विशेष्य—सूरज किरन-मुद्रिका)। श्लेष से—१) सूरज किरण के अक्ष मे—निश्चयपूर्वक अन्धकार हरनेवालो। (१) मुद्रिका के पक्ष मे—निश्चयपूर्वक दुःख हरनेवालो। रा० १३-८४ १।

तम छवि—सं० स्त्री० एक०। अन्धकार। रा० १३-११-२। तमश्री-रा० १६-२६-१।

तमतेज—सं० पु० एक०। घन अन्धकार। रा० ५-२२-१।

तमदुख हरा—वि० (विशेष्य—मुद्रिका)। तमरूपी दुःख का हरण करनेवालो। रा० १३-७६-१।

तमबल—सं० पु० एक०। अन्धकार का विस्तार। क० प्रि० १५-७६-१।

तमराज—सं० पु० एक०। अन्धकाररूपी राजा। र० प्रि० १०-२१-४।

तमसा—[तमस्+अच] सं० स्त्री० एक०। तमसा नाम की नदी। वि० गी० ६-१५-२।

तम सृष्टि—सं० स्त्री० एक०। अन्धकार की सृष्टि। रा० १३-३१-१।

तमाल—[तम+कालन्] सं० पु० एक०। पहाड़ों पर और यमुना नदी के किनारे रहनेवाला एक सदाबहार वृक्ष, वरुण वृक्ष। र० प्रि० ८-३३-२। क० प्रि० ३-३३-२। रा० ३-१-१। ६-३९-४। छं० १-६४-२। वी० २७-१४। ज० ९५। १३६। तमालहि—र० प्रि० ८-३४-१। २—पु० एक०। साम्प्रदायिक तिलक। वि० गी० ८-१३-१।

तमासा—[अरबी तमाशः] सं० पु० एक० विनोद। वि० ८-५३। ८-१५।

तमीश—सं० पु० एक०। चन्द्रमा। वि० गी० ११-४७-२।

तमोगुन—१—सं० पु० एक०। पाप, अंधकार। क० प्रि० ७-२४-२। २—पु० एक०। १-अंधकार—चन्द्रमा के पक्ष में। २-अज्ञान—नारद के पक्ष में। क० प्रि० ७-२६-१। ३—पु० एक०। प्रकृति के तीन गुणों में से एक जो अज्ञान, आलस्य, क्रोध, भ्रम आदि का कारण है। क० प्रि० ९-२६-१। रा० २०-१८-२। ३०-४६-१।

तमोर—सं० पु० एक०। ताम्बूल। र० प्रि० ६-२२-२। क० प्रि० १५-४५-४। ११-७१-२।

तरंग—[तृ+अंगच] १—सं० स्त्री० एक०। पानी की लहर। क० प्रि० १-४४-१। १-५१-२। वी० १५-२४। १५-३१। २—स्त्री० बहु०। लहरें। र० प्रि० ११-६-३। क० प्रि० ७-१३-४। ७-१८-१। ७-२१-४। १४-५०-३। १५-१२-२। १५-५२४। रा० १-२७-१। ३-२७-१। वि० गी० १-४-४१। १२-२०-३।

तरंग जुत—वि० (विशेष्य—समीर)। लहरों से युक्त अर्थात् शीतल। क० प्रि० ७-२८-१।

तरंगत—क्रि० स्त्री० एक०। लहराती। र० प्रि० ११-६-३।

तरंगिनि—१—सं० स्त्री० एक०। नदी। र० प्रि० ११-६-१। क० प्रि० ८-४३-३। तरंगिनि—क० प्रि० ७-१३-१। रा० ६-४४-१। वि० गी० ४-२२-३। ४-२५-२। २—स्त्री० बहु०। लहरें। छं० १-६४-३। वि० गी० १-४-१। १-१७-२। तरंगें—वि० गी० ११-४७-२।

तरंगिनि पूर—सं० पु० एक०। नदी का प्रवाह। र० प्रि० ११-६-१।

तरक कुल—सं० पु० एक०। चुटीली बातों का समूह। क० प्रि० १५-३९-३।

तरकति—क्रि० स्त्री० एक०। सोच विचार करती है। र० प्रि० ८-४२-३।

तरकस—सं० स्त्री० एक०। तूणीर (वह जिसमें वाण रखे जाते हैं)। वी० ५-६५-२। तरकसी—छं० २-४५-४।

तरकि—क्रि०। सोच विचार करके। र० प्रि० ८-४०-१।

तरके—क्रि० स्त्री० एक०। चकपकाती है, सोच-विचार करती है। र० प्रि० ८-४१-१।

तरनि [तरणि] १-स० पु० एक०। सूर्य। र० प्रि० १४-१४-४। क० प्रि० १५-८-२। वि० गी० २१-४७-२। तरिनि—रा० ३०-२०-१। २-पु० बहु०। किरणें। क० प्रि० १५-७१-३। ३-स्त्री० एक०। युवती, नारी। क० प्रि० १५-६३-२।

तरनि तनूजा—सं० स्त्री० एक०। यमुना नदी। क० प्रि० १५-७१-३।

तरनि-तनूजा तीर—स० पु० एक०। सूर्य की पुत्री यमुना नदी का किनारा। र० प्रि० १४-१४-४।

तरपन—स० पु० एक०। तर्पण (जलदान की धार्मिक क्रिया)। वी० ५-३१-२।

तरफति—क्रि० स्त्री० एक०। तड़पती।

तरल—वि० (विशेष्य—तुरंग)। चचल। र० प्रि० ८-१७-२। क० प्रि० ३-५३-२। ६-२५-१। र० १६-२। ४०-४। वी० १२-६-१। ज० १८७-३।

तरल तडित जुत—वि० (विशेष्य—घन)। चंचल बिजली से युक्त। वी० १२-११-१।

तरलित—१-वि० (विशेष्य तुगताल के पत्र)। चचल। वी० १२-२६-२। २-वि० (विशेष्य—मलय समीर) मंद मंद। वी० २२-१८-१।

तरवर—सं० पु० ए०। उत्तम वृक्ष। र० प्रि० १४-१४-४। क० प्रि० ३-५३-२। तरिवर—रा० १४-३८-२। तरुवर—क० प्रि० ७-१४-२। रा० ११-१७-१। रा० ७-२७-१। उदा० 'जब बधु।'

तत्व—स० पु० एक०। यथार्थता। वि० गी० ५-७-२। २१-५६-१।

तसलाम—स० पु० एक०। अभिवादन। वा० ६-२६। ७-११।

तहँ—क्रि० वि०। जिस स्थान पर, जहाँ। (हि० जहाँ)। स्थानवाचक। उदा० 'तहँ ताहि दै बरु'। (रा० ५-७-१)। र० प्रि० १-६-१। १-७-१। ६-२१-१। ६-२६-२। ६-४२-१। ६-५८-२। ६-३-१। ६-६-२। ६-६-२। ६-१२-२। ६-१५-१। २१-२७-१। २२-२-१। २२-२३-२। २३ १३-१। २४-१-२। २६-४२-१। क० प्रि० १०-७-२। १४-१३-१। १४-१५-१। १४-१७-१। १४ २५-२। १४-३६-२। रा० १-२४-६। १-२५-१। १-२८-१। १-४१-३। २-६-२। ६ ८ ५। ८-१-१। ६-२०-१। ११-१५-४। १२-४२-२। १२-४८-२। १४-१८-१। १५-२८-१। १७-१४-१। २२-२१-४। २६-१८-१। ३२-३०-। ३६-१५-२। वी० ११-२-२। १२-३१-१। १३-७-१। १५-३३-१। १६-८-२। २०-२८-२। २१-१६-१। २६-१-१। २६-३८-२। वि० गी० १-४-५। १-८-३। १-१६-६। १-४४-५। १-४५-२। ४-२-२। ४-३-२। ४-१६-२। ५-३-२। ६-१०-३। १२-२-४। १३-२०-२। १४-२३-१। १५-३६-३। १७-३-२।

तहाँ—अ० उस स्थान पर, वहाँ स्थानवाचक। उदा० 'तहाँ लाग मेरे रहे वेषधारी'

अति मदमत्त—विशेषण । विशेष्य—भौर। मद से अत्यत मस्त । वी० च० १२-१०-२ ।

अति मृतक—विशेषण । विशेष्य—लक । अत्यत मरी हुई । रा० १४-३३-२ ।

अति राती—विशेषण । विशेष्य—तरनि । अत्यंत लाल । वी० च० १४-२६ २ । १४-३०-४ ।

अति रूटी—विशेषण । विशेष्य–रनथली । अत्यत रूखी । वी० च० ८-४३-१ ।

अति रूप निवान—विशेषण । विशेष्य—नृप । सुदर रूपवाला । रा० २९-१-१ ।

अति रोगी—विशेषण । विशेष्य–भरतार । रोग से पीडित । रा० ९-१६-३ ।

अति रोषमयी—विशेषण । विशेष्य—हग दीठि। क्रोधयुक्त । रा० ५-२६-३ ।

अति लज्जाजुत—विशेषण । विशेष्य—कुल वधू । लज्जा से युक्त । क० प्रि० । ४-१२-१ ।

अति लामौ—विशेषण । विशेष्य—नगर । अत्यधिक लवा । वी० च० १७-१-१ ।

अति लाल—विशेषण । विशेष्य—चदन । अत्यत लाल । रा० २९-३९-१ ।

अति लोल—विशेषण । विशेष्य—मधुप । अत्यत चचल । वी० च० २२-२९-१ । २५-२-१ ।

अति विकट—विशेषण । विशेष्य—सेना । अत्यत भयकर । र० बा० ३-२ ।

अति सज्जल—विशेषण । विशेष्य—बादल । जल से युक्त । वी० च० ११-२-१ ।

अति सज्वर—विशेषण । विशेष्य—देह । ज्वर से अत्यंत तप्त । क० प्रि० । ३-४४-१ ।

अतिसय—स० पु० एक० । जहाँ उपमानो को सहज साधारण वस्तु ठहराकर निरादृत करते हुए उपमेय की अति उत्कृष्टता का वर्णन हो, वहाँ अतिशयोपमा अलंकार होता है । क० प्रि० १४-३-१ ।

अति सरस—विशेषण । विशेष्य—रस । अत्यत मधुर । क० प्रि० १६-७५-१ । र० बा० ६-१ ।

अति सलज्ज—विशेषण । विशेष्य—स्वकीया को विभिचार । र० प्रि० ७-२६-१ ।

अति साँचो—विशेषण । विशेष्य—राजा । सत्य का पालन करनेवाला । वी० च० ३१-४०-२ ।

अति साचे—विशेषण (पु० बहु०) । विशेष्य—सीता पति । सत्य स्वरूप । छ० मा० १-२०-२ ।

अति साधु—विशेषण । (१) विशेष्य—ध्वज । बहुत सीधी । रा० १-३८-१ । २७-१५-२ । क० प्रि० । ३-४२-३ । (२) विशेष्य—विदेहजा । उत्तम चरित्रवाली । वि० गी० ४-३९-३ ।

अति सीत—विशेषण । विशेष्य—कर । शीतलता पहुचानेवाले । क० प्रि० १४-३९-४ ।

अति सीतल—विशेषण । विशेष्य—सीवहि । ठढा । क० प्रि० १४-४१-१ । रा० ९-३७-१ । ३२-२२-१ । वी० च० १५-८-२ । २१-१०-२ ।

(वि० गी० ५-१६-१)। र० प्रि० ४३-४-२ । ५-३१-२ । ६-४५-२ । क० प्रि० ६-६८-४ । ८-४१-२ । ११-६६-१ । ११-७०-१ । १२-३०-१ । १३-३१-२ । रा० ३-४-२ । ६-६-४ । १०-१०-१ । ११-३-२ । १२-३८-१ । १३-३६-२ । १५-२५-२ । १६-५-१ । १७-३०-२ । १८-४-२ । २०-३६-२ । २८-८-१ । २६-२७-२ । ३२-३-१ । वी० ११-२६-२ । वि० गी० ३-२५-४ । ४-१८-२ । ५ ३१-२ । ६-३१-१ । ६-३१-१ । १०-१७-२ । ११-१२-२ । १२-४-२ ।

ताँबो—सं० पुं० एक० । लाल रंग की एक प्रसिद्ध धातु । क० प्रि० ५-२८-२ ।

ता—स० । नित्य संबंधी एकवचन । रा० ५-३२-२ । ७-६-४ । ८-१७-१ । १२-५६-१ । १७-१०-१ । २६-५-१ ।

ताए—क्रि० पुं० बहु० । तपाए । रा० १३-१५-२ ।

ताकहं—क्रि० पुं० बहु० । ताकते हैं, देखते हैं । रा० २५-१७-२ । ताकहुँ—रा० ६-३६-३ । २५-१३-२ ।

ताकि—क्रि० । ताककर, देखकर (गौर से) । रा० १२-१६-१ ।

ताके—स० । 'उसके' नित्य संबंधी, एकवचन, संबंधकारक । उदा० 'ताके कूल' । र० प्रि० ५-१२-२ । ६-१५-३ । क० प्रि० १-६१-१ । रा० ६-३२-४ । १०-७-२ । वी० ४-४३-१ । १०-७-१ । वि० गी० १-६-२ । ३-२४-२ ।

ताको—स० उसे, उसको नित्य संबंधी, एक वचन । उदा० 'ताको जगत्' (वि० गी० १३-३३-२) । र० प्रि० ६-३०-४ । ७-७ २ । ७-११-२ । १०-१४-२ । १६-२५-१ । १७-४५-१२ । ३४-३४-१ । क० प्रि० ३-४७-२ । १२-२३-१ । रा० २७-१७-१ । १७-३८-२ । वी० २-४४-१ । -२६-२ । १२-३-१ । वि० गी० १-१-६ । २-२३-१ । ३-१३-१ । ५-१६-२ । ६-५२-२१ । ८-२८-२ । ६-५४-२ । १७-४२-२ ।

ताकौं—वी० १०-६-१ । उदा० 'ताकौं विरतु' ।

ताटंक—[ताड+अंक] सं०पु० बहु० । कान के आभूषण । क० प्रि० १५-६३-१ । रा० ३१-१४-२ । ३२-५-२ । वी० २२-१३ । २२-६२ ।

ताड़का संहारे—वि० (विशेष्य—राम) ताडका नामक राक्षसी का संहार करने वाले । रा० ७-१०-१ । (सुकेतु की कन्या, राक्षसी ताडका का संहार करने के कारण राम 'ताडका संहारी' कहलाये । यह कथा रामायण मे इस प्रकार है—सुकेतु नामक किसी पराक्रमशाली यक्ष ने संतान के लिए ब्रह्मा के उद्देश्य से कठोर तपस्या की । ब्रह्मा ने उसकी तपस्या से संतुष्ट होकर उसे एक वर दिया जिससे ताड़का नाम की कन्या उत्पन्न हुई । ब्रह्मा के वर से ताडका को हजार हाथियों का बल था । वह सुंद को ब्याही थी । जब अगस्त्य ऋषि ने किसी बात पर क्रुद्ध होकर सुंद को मार डाला, तब यह

अपने पुत्र मारीच को लेकर अगस्त्य ऋषि को खाने दौडी। ऋषि के शाप से माता और पुत्र दोनो राक्षस हो गये। इसने अगस्त्य ऋषि का तपोवन नाश किया। ब्राह्मण को कष्ट पहुँचाने लगी। कोई भी यज्ञ न कर सका। तदुपरान्त विश्वामित्र ने इनका दमन करने के लिए दशरथ की शरण ली थी। उन्हे सब वृत्तान्त कहकर राम को एव लक्ष्मण को अपने साथ तपोवन ले गये। रास्ते मे ही विश्वामित्र के आदेश से राम ने इसे मार गिराया।—रामायण १-२५-२६ सं०।)

तात—(१) १—सं० पुं० एक०। पिता। गुरु। र० प्रि० ३-४८-१। ६-४४-२। क० प्रि० ४-४-१। ६-५६-२। रा० ५-४२-२। ६-३२-१। छं० १-१२-१। ४-२-१। वि० गी० २-५-२। ६-७४-२। तातु-वी० १-२९-१। २—स्त्री० बहु०। सात शरीरस्थ पदार्थ (रस, रक्त, मास, मेद, अस्थि, मज्जा, वीर्य)। क० प्रि० ११-१८-२। ३—पु० एक०। पुत्र, बेटा, क० प्रि ११-५७-४। (२) वि० (विशेष्य लक्ष्मण)। प्यारे। रा० १३-८६-१।

तातनि—स० पु० बहु०। सहोदर, भाई। क० प्रि० १६-५६-३।

ताती—वि० (विशेष्य—धरती)। तप्त। वी० ८-६०-३।

ताते—अ०। इसलिए। व्याख्यावाचक। उदा० 'ताते कह्यो'। (क० प्रि० ४-८-४)। र० प्रि० १-१४-१।

ताते—(१) सं० पुं० बहु०। उष्णोपचार। र० प्रि० १२-२५-३। (२) १—वि० (विशेष्य—तुरंग)। तेज चलनेवाले। वी० १२-९-१। २—वि० (विशेष्य—गात)। गर्म-क० प्रि० ८-३८-२। वी० १७-४१-२।

तातौ—सं० स्त्री० एक०। उष्णता। क० प्रि० ८-४२-२।

तान तरंग—स० स्त्री० एक०। केशवदास के आश्रयदाता इन्द्रजीत सिंह के अन्तः-पुर की वेश्या। क० प्रि० १-४४-१। १-५१-१।

तानि—क्रि०। तानकर। र० प्रि० १४-२५-६। रा० ३-१०-१। ३-३१-२। ताने-र० प्रि० ५-१७-३।

तानें—सं० स्त्री० बहु०। संगीत मे स्वरो का विस्तार। र० प्रि० ५-२९-२।

ताप—१— सं० पु० एक०। तापत्रय। (दे० ताम-४)। रा० २६-५-१। वि० गी० १३-१७-४। २—पुं० एक०। दुख। रा० १९-३-१। ३—पु० एक०। गर्मी। रा० ३०-४६-१। वि० गी० ११-३५-१। ४—पु० एक०। अग्नि। वि० गी० १४-२२-१। (२) वि० (विशेष्य-गेहु)। तप्त, जलता हुआ। क० प्रि० १२-२३-१।

ताप तरंगिनि—स० स्त्री० एक०। आग की नदी। क० प्रि० ८-४३-३।

तापाधिकारी—वि० (विशेष्य—ताप)। संतप्त। रा० २८-७-२।

तामसी—वि० (विशेष्य—दान)। तामस गुण पूर्ण दिया गया। रा० १२-२-१

ताम्रोर—सं० पु० एक०। तांबूल, पान। क० प्रि० ७-३५-१। १०-३३-३।

तार-[तृ + णिच् + अच्]। १-सं० पु० एक०। मंजीरा। क० प्रि० ११-५७-२। २-पु० एक०। सूत्र। र० प्रि० ५-१४-४। ३-स्त्री० एक०। तंत्री। वी० २०-३६। २१-३३।

तारक—(१) १-स० पु० एक०। राम का षडक्षर मंत्र 'ओं रामाय नमः'। क० प्रि० ११-६२-२। २-पु० एक०। छं० विशेष—वर्णिक छंदो मे समवृत्त का एक भेद। चार सगण और गुरु के योग से यह वृत्त बनता है। (छं० १, पृ० सं० ४४८-४४।) (२) वी० (विशेष्य—जगदीस) जीवो का उद्धार करनेवाला। वि० गी० २-२५-३।

तारक छंद—सं० पु० एक०। छंद विशेष (दे० तारक)। छं० १-४५-१।

ताम—१-सं० पु० एक०। उष्णता, गर्मी। र० प्रि० ५-२२-२। क० प्रि० ६-४०-४। २-पु० एक०। ज्वर। र० प्रि० ८-४-३। क० प्रि० ७-३५-१। ४-पु० एक०। गर्मी-चन्द्रमा के पक्ष मे। पुं० बहु०। त्रिताप—आधिभौतिक, आधिदैविक तथा आध्यात्मिक दुःख—नारद के पक्ष मे। क०प्रि० ७-२३-१।

तामरस—सं० पुं० एक०। छंद विशेष, वर्णिक छंदो मे समवृत्त का एक भेद। यह वृत्त नगण, दो जगण और यगण के योग से बनता है। छं० १-४४-३५।

ताम्रकोड—सं० पुं० एक०। तांबे का परकोटा। रा० १५-४३-१।

तामस—वि० (विशेष्य—दान) तामस गुण युक्त। रा० २१-५-१।

तारक-तारक—सं० पु० एक०। तारकासुर को मारने वाले विष्णु। क० प्रि० ७-२४-४। (गरुड पुराण मे लिखा गया है कि तारकासुर द्वादश मन्वन्तर के इन्द्र का शत्रु था जिसे नारायण ने नपुंसक रूप धारण करके मार डाला था)।

तारकनंद—सं० पु० एक०। तारकासुर का पुत्र। रा० ७-२६-२। ७-३१-२।

तारका—[तारक + टाप्] १-सं० स्त्री० एक०। राक्षसी-विशेष जिसे राम ने मारा था (दे० ताड़का संहारे)। क० प्रि० ७-२४-४। २-स्त्री० एक०। वृहस्पति का पत्नी जिसे चन्द्रमा ने भी कुछ दिनो तक रख लिया था। क० प्रि० ११-६२-२। ३-स्त्री० बहु०। तरैयाँ। क० प्रि० १५-२६-२।

तारकूट—सं०पुं० एक०। १-चाँदी-सफेद रंग का द्योतक। २-पीतल—पीत रग का द्योतक। क० प्रि० ५-४४-२।

तारको को तारक—वि० (विशेष्य—प्रभातकर, श्रीराम)। श्लेष से.—१-प्रभातकर के पक्ष मे—जो तरैयो का विनाशकार है। २-श्रीराम के पक्ष मे—जो ताडका को तारने वाले हैं। (विस्तार के लिए देखे 'ताडका संहारी')। क० प्रि० ७-२४-४।

तारतलान—सं० पु० एक०। वानरवीर। रा० १३-१२-१। १६-४६-३।

तारनि—सं० पुं० बहु०। आंख की पुतलियाँ। र० प्रि० ५-२७-१।

तारा—[तारा + टाप्] १—सं० स्त्री० एक० । बालि की पत्नी जिसने पति की मृत्यु के बाद सुग्रीव से विवाह किया। क० प्रि० ३-५६-२ । रा० १३-५-२ । १३-२६-१ । वी० २२-२३ । २-स्त्री० बहु० । तरैयाँ । क० प्रि० ७-२३-२ । ३—स्त्री० एक० । बृहस्पति की पत्नी । क० प्रि० १५-६२-१ । ४—पु० एक० । नक्षत्र । वी० ६-६३ । १०-१० ।

तारानाथ—सं० पु० एक० । नक्षत्रो के पति चद्रमा । क० प्रि० १५-७१-२ । तारापति—क० प्रि० ७-२४-४ । वी० ११-२३ ।

तारापति तेजहर—वि० (विशेष्य—प्रभातकर, श्रीराम) । श्लेष से—१—प्रभातकर—जो ताराओ के पति चंद्रमा के तेज को हरता है । २—श्रीराम—जो तारा-पति बालि का तेज हरनेवाला है, जिन्होने वालि का वध किया । क० प्रि० ७-२४-४ ।

तारियै—क्रि० । उद्धार कीजिए । रा० ३०-४६-१ ।

तारी—सं० स्त्री० बहु० । तालियाँ । र० प्रि० १४-१४-४ । रा० २२-१८-२ ।

तारे—१—सं० पुं० बहु० । आँख की पुतलियाँ । क० प्रि० ६-३१-३ । २—पुं० बहु० । नक्षत्र । रा० ३०-१८-६ ।

तारो—क्रि० । उद्धार करो । रा० ३-८-६ ।

ताल—१—सं० पुं० एक० । ताड का पेड । र० प्रि० ८-३३-३ । क० प्रि० ३-१३-२ । रा० ३-१-१ । १२-६५-१ । वी० १२-२६-१ । २०-३२-२ । तालक-छं० २-३१-२ । तालीस—रा० ३-१-१ । २—पु० एक० । सरोवर । क० प्रि० ७-१-१ । ७-१६-२ । वी० २२-२-५ । वि० गी० १-१७-२ । ३—पु० बहु० । सात सरोवर, मेरु पर के चार ताल, मानसर, विंध्यासर, पंपासर । क० प्रि० ११-१७-२ । ४—पुं० एक० । मंजीरा । क० प्रि० १०-३४-४ । ५—पुं० एक० । संगीत मे नियमित मात्राओ पर ताली बजाना । र० प्रि० ५-२६-२ । ६—पुं० एक० । लंबा-चौड़ा प्राकृतिक गड्ढा जिसमे बरसाती पानी जमा रहता है । र० प्रि० ८-३३-३ । ७—पुं० बहु० । तालन । क० प्रि० ११-७३-२ (ताड़ के पेड) ।

तालनि—सं० पुं० एक० । ताल, पानी का गड्ढा । र० प्रि० ८-३३-३ । तालहिं—र० प्रि० ८-३४-२ ।

तालमाली—सं० स्त्री० एक० । ताल वृक्षो का समूह । रा० १८-२२-२ ।

तालरमा—सं० स्त्री० एक० । श्रीताल, हिंताल । क० प्रि० १५-६६-३ ।

तालु—सं० पु० एक० । ऊपर के दातो और कौवे के बीच का गड्ढा । वी० १७-५६-२ । १७-६०-१ ।

तासु—स० 'उसका' नित्य संबंधी सर्वनाम, एक० करण कारक । (हिं० ता + सु (प्रत्यय) 'उदा०' तासु छवि मद । रा० ६-३५-१ । ३-३१-४ । १०-३६-२ । २७-२२-४ ।

तासो—(१) सं० उससे, उसे, नित्य संबंधी एकवचन, अपादान कारक। उदा० 'तासो कहै।' र० प्रि० ६-३३-२। ८-३५-२। ८-४८-२। १०-६-२। १४-३-२। क० प्रि० २-१८-१। ६-३०-२। १०-१-२। १०-७-२। १०-११-२। रा० १५-५-३। १६-१६-२। वी० २-४१-२। २-२६-२। (२) अ० व्याख्यावाचक। उदा० तासो कहत। (क० प्रि० ६-११-२)। क० प्रि० १-४६-२। १३ ७-२। १३-६-२। १३-२४-१। १३-३८-१। १४-१-२। १४-२३-२। १४-३०-२। १४-३४-२। १४-३८-४। १४-४६-२। १४-४६-१। छं० १-१६-२।

ताहि—स० 'उसे, उसको', नित्य संबंधी एकवचन, कर्म और सम्प्रदान। उदा० ताहि बखानि (र० प्रि० २-११-२)। र० प्रि० १-६-१। २-२३-१। ३-१५-२। ६-५२-४। ७-३७-२। १०-४-२। १२-२०-१। रा० ३-१२-२। ५-३६-४। ६-३६-३। १६-३३-३। १७-२-४। वी० १०-१२-१। १५-३१-१।

ताही —सं०। उसी, उस ही नित्य संबंधी ? एक वचन, कर्म और सम्प्रदान। उदा० ताही ठगावै। र० प्रि० १-१७-२। क० प्रि० ६-५७-१। रा० २६-८-२।

ताहू—सं० उसे भी, उसमे भी। नित्य संबंधी, एक वचन। उदा० 'ताहू रोष।' र० प्रि० १०-४-२। रा० ३४-३-२।

तिक्ष—वि० (विशेष्य—कुठार) तीक्ष्ण। क० प्रि० ६-३१-३। रा० ७-१५-३। १३-६२-१।

तीन—वि० (विशेष्य—सर)। तीन। संख्या विशेष ३। र० प्रि० ३-१४-१।

तीन से साठ—वि० (विशेष्य—तिय)। तीन सौ साठ। र० प्रि० ७-३५-२।

तीनहुँ—वि० (विशेष्य—लोकन)। तीनो। रा० १६-५४-३।

तीनि—वि० (विशेष्य—विधि)। तीन। र० प्रि० ३-१६-३। क०प्रि० ४-१-२। रा० २१-२-१। वी० १४-३२-४। वि० गी० १५-६०-१।

तीर—[√तीर् + अच]। १—सं० पुं० एक०। नदी का किनारा। र० प्रि० १-३१-१४। १४-१४-४। रा० १-२५-१। ६-४४-१। छं० १-६४-३। वी० १५-३०। वि० गी० १-३-१। १-४-१। २—पु० बहु०। बाण। क०प्रि० ६-६-४। वी० १-३। १-१०।

तीरथ—[√तृ (पार करना) + थक्]। १—सं० पुं० एक०। वह पुण्य स्थान जहाँ विशेष धर्म के अनुयायी पूजा-स्नान आदि के लिए जाते हैं। क० प्रि० २-७-२। ११-७३-३। रा० २६-८-१। ३६-३३-२। वी० १-४६। ३२-४१। ज० १५। वि० गी० १-२६-१। २—पु० एक०। जल। क० प्रि० ५-४५-२। ३—पु० बहु०। काशी, प्रयाग आदि तीर्थ जो सात है। क० प्रि० ७-३-३।

तीरथ-जाल—सं० पु० बहु० । विभिन्न तीर्थ स्थान । रा० २६-१२-१ । तीरथ नीरनि । वि० गी० २०-७-१ ।

तीरथ न्हान—सं० पु० एक० । तीर्थ स्नान । रा० ३९-३८-३ ।

तीरथवासी—सं० पुं० बहु० । तीर्थों मे वास करनेवाले । वि० गी० ५-३-१ । ७-८-१ ।

तीव्र—वि० (विशेष्य—तरंगे) । वेग से उठती हुई । वि० गी० ११-४२-२ ।

तीव्रतापी—वि० (विशेष्य—श्रीविन्दु माधौ) व्रत का अधिकारी । वि० गी० ११-२९-१ ।

तीय व्रत मोचन—वि० (विशेष्य—विलोचन) । स्त्रियो के व्रत (पातिव्रत्य) को विचलित करनेवाला ।

तीस—वि० (विशेष्य—अंगुल) । संख्या विशेष ३० । क० प्रि० ७-७-१ । वी० १७-५४-१ ।

तुंग—वि० (विशेष्य—तरंग) । ऊँची उठी हुई । र० प्रि० ११-६-३ । रा० ११-२३-१ । वी० १५-२४-२ ।

तुंग तुरंगा—वि० (विशेष्य—गगा) । ऊँची लहरो वाली ।

तुंगनि—वि० (विशेष्य—तरंगित) । ऊँची उठनेवाली । वी० ३२-३०-१ ।

तुंगारन्य—सं० पु० एक० । ओडछा के के समीप, बेतवा के किनारे का एक तीर्थ । र० प्रि० १-३-१ । क० प्रि० ७-७-१ । वी० १५-३० । (तुङ्गारण्य) । वि० गी० १-३-१ ।

तुंगे—वि० (विशेष्य—तरंगे) । ऊँची उठने वाली । वि० गी० ११-४७-२ ।

तुंड—√[तुड् (तोटना) + अच] सं० पु० एक० । चोच । रा० ३०-३५-३ । पुं० बहु० तुंडनि । क० प्रि० ५-३३-३ ।

तुंवर—१–सं० पु० एक० । तुंवर नामक गंधर्व—सगीत विशारद नारद के अनुज एक गधर्व । (जब श्रीकृष्ण ने गोवर्धन धारण किया तो उनका गुण-गान करते रहे । कुबेर के शाप के कारण ये विरोध नामक राक्षस हुए । तुंबूरा वाद्य इन्ही के नाम पर प्रचलित है । —हिन्दी साहित्य कोष, भाग २ ।) २—तूंबा—प्रवीणराय की वीणा के पक्ष मे । क० प्रि० १-४५-१ ।

तुगलक—सं० पुं० एक० । तुगलक वंश का प्रवर्तक बादशाह मुहम्मद बिन तुगलक । ज० ३८ ।

तुच्छ—वि० (विशेष्य—बुद्धि) । हीन कोटि की । क० प्रि० ३-२८-१ । रा० २९-१३-१ । वि० गी० १२-२५-२ ।

तुमुल—(१) सं० पुं० एक० । सेना का कोलाहल वि० गी० १२-१७-१ । (२) वि० (विशेष्य–शब्द) । भयानक । वि० गी० १२-१७-१ ।

तुरंग—१–सं० पु० एक० । क० प्रि० ६-२५-१ (घोडा) । रा० ९-२६-१ । (मन) १६-१६-२ । वी० ३-३३ । ९-१८ । वि० गी० ९-३८-२ । तुरग–वी० १९-७ (घोडा) । तुरी-र० प्रि० १२-१८-१ । २–पु० बहु० । घोडे । क० प्रि० १५-५५-१ । तुरगन–रा० ३५-१२-२ ।

तुरंगम छंद—सं० पुं० एक० । वर्णिक छंदो मे समवृत्त का एक भेद। यह वृत्त दो नगण और दो गुरुओ से बनता है। छं० १-२०-१ ।

तुपक—सं० पु० एक० । तोप । यह अंग्रेजो द्वारा भारत मे लाया गया था । अकबर के समय मे ही अंग्रेजो के भारत मे पदार्पण करने के साथ उनके शस्त्र भारत मे आये । वी० ६-४३ । ८-२८।

तुम—स० मध्यम पुरुष बहु० (सं० त्वम्, हिं० तुम), 'तू' शब्द का बहु० रूप इसका प्रयोग शिष्टता की दृष्टि मे एक वचन मे भी होता है। उदा० 'तुम सब सिर'। र० प्रि० १-२६-१ । २-१३-४ । ३-२१-२ । ३-३६-२ । ३-४६-४ । ५-१७-१ । ५-२१-४ । ६-४६-४ । ७-१७-१ । ८-४१-४ । ६-:-३ । ६-७-३ । ६-१४-४ । ९-१६-१ । १०-४-३ । ११-६-३ । १२-११-२ । १२-१४- । १२-१६-१ । १२-२६-१ । १४-५-२ । १४-३८-३ । क० प्रि० ३-३०-१ । ३-४२-३ । ६-८-४ । ६-५१-४ । १०-१२-३ । १०-१०-४ । ११-४३-४ । १२-२३-२ । १६-२०-१। १६-८२-४ । रा० २-१६-१ । ४-१३-१ । ५-६-२ । ६-१६-२ । ७-२६-२ । ६-११-१ । र० १-६-१ । १-३२-१ । १-३४-१ । ज० १६०-३ । १६५-२ ।

तुमरो—स० मध्यम पुरुष, संबंध कारक बहुवचन । तुम्हारा । उदा० 'तुमरो करि है' । र० १-३४-३ ।

तुमारे—स० मध्यम पुरुष । सर्वनाम मूलक सम्बन्धवाची विशेषण, सम्बन्ध कारक बहु० । उदा० "तुमारे साथ" । र० १-५०-२ ।

तुम्हारे—स० मध्यम पुरुष सर्वनाम मूलक सम्बन्धी विशेषण, पुं० बहु० । तुम्हारो का विकृत रूप । सम्बन्धकारक । उदा० 'तुम्हारे चित्त' । रा० ६-८-१ । १७-२०-१ । २५-४१-२ । ३३-२२-२ । ३३-४२-१ । वी० २६-१०-२ । ३२-२५-१ । ३२-२७-२ । ३३-४१-१ । ज० १८७-१ । १४६-१ ।

तुम्हें—स० संयोगात्मक वैकल्पिक मध्यम पुरुष सर्वनाम, कर्म और सम्प्रदान, बहु०। र० प्रि० ५-१४-४ । ५-२१-४ । ८-१७-४ । ८-५०-४ । १०-५-३ । ११-१०-३ । १२-२६-३ । १४-६-४ । क० प्रि० १०-८-४ । १०-१४-१ । १०-२२-२ । ११-५४-४ । १२-३३-३ । १३-१०-४ । रा० ४-२२-१ । ५-५-२ । ६-१०-१ । १०-६-१ । १२-३६-१ । १३-४-१ । १६-६-२ । १६-१२-३ । १६-१८-२ । २०-१५-२ । २५-८-२ । ३६-१७-२ । ३८-४-१ । वि० गी० ११-१५-१ । १२-७-१ ।

तुरक—सं० पुं०एक० । तुर्क (मुसलमान) । र० १-१६-३ । वी० २-१ । २-३४ । ६-१४ । तुर्क—वि० गी० ३-१२-१ ।

तुरसी-पति—सं० पुं० एक । विष्णु । क० प्रि० १५-१३०-४ ।

तिक्षता—सं० स्त्री० एक० । तीक्ष्णता । रा० ५-१२-२ ।

तिछ—वि० (विशेष्य—कटाक्ष)। तीक्ष्ण। रा० ५ ५२-३। छं० २-४५-५।

तिछ्छ—वि० (विशेष्य—गति)। तीक्ष्ण। वी० १-२८-६।

तिथि—सं० स्त्री० एक०। वह काल-विशेष जिसमे चन्द्रमा एक कला बढाता या घटाता है। र० प्रि० १-१२-२। १५-७-२। रा० १४-३५-१। २८-१२-२। वी० १-५२। ४-६। वि० गी० ८-२६-३।

तिन—(१) १—सं० पुं० एक०। तिनका, तृण। क० प्रि० १०-३५-४। २—पुं० एक०। शरीर। र० प्रि०। ८-४२-३। (२) स० तिस शब्द का बहुवचन, नित्य सम्बन्धी बहुवचन, कर्ताकारक। उदा० "तिन चढि"। र० प्रि० १-१०-१। १-१४-४। रा० ३२-४५-१। वी० २-३-६। ज० १२८-१। वि० गी० ६-४-४।

तिनकी—स० उनकी। "तिसकी" शब्द का बहुवचन। नित्य सम्बन्धी, बहुवचन, सम्बन्ध कारक। (हिं० उन) उदा० "तिनकी तब" र० प्रि० १-१६-१। क० प्रि० ८-२४-२। १०-२७-२। रा० ६-२१-२। १३-४३-१। ३१-१-१। ३१-१७-२। वी० २-२४-१। ५-२३-१। १०-४३-१। १५-२-१। २२-६-२। २४-२८-२। ३२-२६-१। ३३-३-१। वि० गी० ६-४७-१। १३-१८-१। १४-५८-१। २०-४३-१।

तिनके—स० नित्य सम्बन्धी बहुवचन, सम्बन्धकारक। 'तिसके' शब्द का बहुवचन। उदा० 'तिनके सकल' र० प्रि० १-१६-१। ३-३६-३। क० प्रि० १-६-६। १-२४-२। १२-३६-१। २-१०-२। २-१६-२। ३-२१-२। रा० ६-४-२। ७-३५-२। वी० २-२४-१। ज० १५-४-१। वि० गी० ६-४७-१। ६-८३-३।

तिनको—स० नित्य सम्बन्धी बहुवचन। "उनको" उदा० 'तिनको चरित'। र० प्रि० २-१०-४। ६-५६-२। ११-१६-२। रा० ५-२५-१। ६-५५-१। ८-३२-१। वी० २-५-२। २-२४-१। ३-४८-२। वि० गी० ६-५७-४। ६-७४-३। १३-११३-२। २०-३४-१।

तिनते—स० उनसे। सम्बन्धवाचक, बहु०, करण और अपादान कारक। उदा० 'तिनते लघु' (वी० २-४२-१)। क० प्रि० ८-२३-३। रा० १५-७-२। वी० २-५०-१। २५-१६-१। २५-१६-१। २५-२४-१। तिनसो—र० प्रि० २-१७-४। क० प्रि० ११-५८-२। वी० २-३८-२।

तिनहि—स० नित्य सम्बन्धी बहु०। 'तिसही' शब्द का बहु० रूप। उदा० 'तिनहिं मिल्यो'। र० प्रि० १-१६-१। ११-११-४। क० प्रि० २-४-२। ११-५०-२। रा० ८-१४-२। १४-१६-२। वि० गी० २१-२५-२।

तिहि—सं० नित्य संबंधी एक०। कर्म और संप्रदानकारक (हिं० वे ही, उसी)। उसे, उसको। उदा० 'तिहि कुद्ध केशवदास'। र० प्रि० २-६-२। ३-३५-१। ३-७६-२। क० प्रि० २-२७-२। रा० १-

५२-१ । ३१-८-१ । वी० ११-५२-१ । १२-१२-१ ।

तिन्हे—स० नित्य संबंधी बहु० । कर्म और सम्प्रदान (हि० उन्हे, उनको) । उदा० 'तिन्हे सिंघासन' । र० प्रि० १२-११-३ । १४-३४-४ । क० प्रि० २-३-२ । ७-२०-२ । १०-८-४ । रा० २-७-१ । १०-४०-१ । वि० गी० १३-५२-२ । १४-५४-२ । १६-६६-१ । १६-३६-२ । २१-३६-४ । वी० ७-५२-२ । ८-४-१ । ८-४५-२ ।

तिमिंगल—[तिमि √गृ + क] सं० पुं० बहु० । समुद्री जन्तु जो तिमि को निगल सकते है (मगर मच्छ) । र० प्रि० ११-६-३ । रा० १४-४२-१ । वि० गी० ३-३०-१ ।

तिमिर—[तिम् + किरच्] सं० पुं० एक० । अन्धकार । र० प्रि० ७-३१-४ ।

तिमिर-वियोग—सं० पुं०एक० । अन्धकार रूपी विरह । र० प्रि० ७-३१-४ ।

तिय—[स्त्री] १—स० स्त्री० एक० । स्त्री, नारी । र०प्रि० १-२२-२ । ७-४३-३ । क० प्रि० ८-७-४ । ११-४-१ । रा० ५-३-२ । ५-४-२ । वी० १-२२ । ७-४६ । वि० गी० ७-१०-४ । १४-१७-४ । २—स्त्री० बहु० । स्त्रियाँ । र० प्रि० ६-३८-४ । ७-३५-२ । क० प्रि० १४-२७-३ । ३—पु० एक० । पानी । रा० ५-१-२ । ७-१०-३ ।

तिय आनन—सं० पुं० एक० । स्त्री का चेहरा । र० प्रि० १-२२-२ ।

तिय देवता—सं० पुं० एक० । स्त्री है जिसके लिए देवता वह पति । र० प्रि० ७-६-२ ।

तिय न विचारी—वि० (विशेष्य—राम) । परस्त्री के बारे मे जो सोचता तक नही । रा० ७-१०-१ ।

तिय-व्रत—सं० पुं० एक० । स्त्रियो का पतिव्रत । र० प्रि० ६-३८-४ ।

तिय-गति—सं० स्त्री० एक० । कुल-स्त्री की चाल । क० प्रि० ६-३५-२ ।

तिल—[सं० तिल् + क] (१) १—स० पु० एक० । दाना-विशेष जिसको पेरकर तेल निकाला जाता है । क० प्रि० ३-१०-१ । ५-२२-१ । रा० ३८-११-१ । छं० २-७-१ । २—पुं० एक० । तिल के आकार का काला दाग जो शरीर पर होता है । र० प्रि० ४-१४-२ । क० प्रि० १५-३६-४ । (२) वि० (विशेष्य—तनिक मात्र भी) । र० प्रि० १२-२६-१ ।

तिलक—[तिल + कन्] १—सं० पु० एक० । बिन्दी, टीका । र० प्रि० ६-३७-१ । १४-१३-१ । क० प्रि० ५-१०-३ । ६-२३-३ । रा० ३१-११-१ । ३२-३५-२ । वी० ११-१७ । १६-३३ । ज० ७४ । वि० गी० १०-२१-३ । १६-३१-२ । २—पु० एक० । टीका—शारदा के पक्ष मे । एक वृक्ष-विशेष जिसके फूल गुच्छेदार होते हैं । यह वृक्ष वर्षा मे दो बार फूलता है, बसन्त और शरद मे—शरद ऋतु के पक्ष मे । क० प्रि० ७-३४-३ । पु० एक० । श्रेष्ठ । वी० १-२५ । ७-४० । ज० ८५-६२ ।

•तिलक-चिलक—सं० स्त्री० एक०। बिन्दी की झलक। र० प्रि० ६-३७-१।

तिलकावली—सं० पु० एक०। श्लेष से—१–तिलक–स्त्री के पक्ष मे। २–तिलक नामक पेड–वन के पक्ष मे। रा० ११-२१-२।

तिलचावरी—(१) सं० पु० बहु०। सफेद तथा काले रंग, सितासित। क० प्रि० ११-७१-२। (२) वि० (विशेष्य—दृग)। सफेद और काले, सितासित। क० प्रि० ११-७१-२।

तिल-प्रसून—सं० पु० बहु०। तिल के फूल क० प्रि० १५-५०-२।

तिलोत्तमा—सं० स्त्री० एक०। एक अप्सरा जिसे पाने के लिये सुन्द और उपसुन्द आपस मे लड़ मरे थे। क० प्रि० १५-३६-४। तिलोत्तमा—र० प्रि० ४-१४-२। वी० १८-१५।

तिलोदक—स० पु० एक०। तिलाजलि। रा० २६-३४-४।

तिहारी—सं० मध्यम पुरुष संबंधवाची, स्त्रीलिंग बहु० (हिं० तुम्हारी)। उदा० 'तिहारी मान'। र० प्रि० १०-१३-४। रा० १६-२१-२।

तिहारे—स० मध्यम पुरुष। सम्बन्धवाची, पुं० बहु० (हिं० तुम्हारे)। उदा० "विरह तिहारे"। र० प्रि० ११-१७-४। क० प्रि० १०-१६-३। रा० ७-४१-४। वी० ९-३४-४। वि० गी० १-३०-१।

तिहुँ—वि० (विशेष्य—देवता)। तीनो ३। संख्यावाचक। रा० २०-३२-२। ३३-५५-४। वी० १४-३२-४। वि० गी० ६-७४-२।

तिहुँ लोक को अति हृष्ट—वि० (विशेष्य–देस)। तीनो लोको को अत्यधिक प्रसन्न किया, जिसमे निवास करने को तीनो लोको के जीव चाहते हो। वि० गी० १९-१७-१।

तिहूँ—वि० (विशेष्य—पुर)। तीनों। वि० गी० १-२-१। १२-३०-१।

ती—सं० स्त्री० एक०। नारी, स्त्री। क० प्रि० ११-७७-३।

तीक्षन—(१) १-सं० पुं० एक०। तीक्ष्ण वर्णन, वर्ण्यालंकार का एक भेद। क० प्रि० ६-१-२। (२) वि० (विशेष्य—केतकी)। काँटेदार, तीक्ष्ण प्रकृति के। क० प्रि० ६-१-२। रा० १२-४१-२। छं० १-४०-४।

तीतर—[तित्तिरि] सं० पु० एक०। एक प्रसिद्ध पक्षी जिसे लोग लड़ाने के लिए पालते हैं। क० प्रि० ८-३४-१।

तीतुरी—सं० स्त्री० बहु०। सुन्दर पंखोवाले पतिगे। क० प्रि० १५-६५-१। १५-६६-२।

तुर्यावस्था—[तुर्य + टाप + अवस्था] स० स्त्री० एक०। ज्ञान की भूमिका, वेदान्त के अनुसार एक अवस्था जिसमे आत्मा ब्रह्म मे लीन हो जाती है। वि० गी० १७-६४-१। तुर्य—वि० गी० १७-५७-२।

तुलसी—[तुला√सो + क] । १—सं० स्त्री० एक०। पूर्व जन्म मे राधा की एक सखी। र० प्रि० ७-१२-३। (कृष्ण के साथ विहार करते देख

अति सुकुमारन—विशेपण। विशेष्य—राजकुमारन। अत्यन्त कोमल। क० प्रि० ११-६०-३।

अति सुखदाइ—विशेपण। विशेष्य—मुमुक्यान। सुख पहुँचानेवाला। र० प्रि० १४-५-१।

अति सुखदानि—विशेपण। विशेष्य—पुर। अत्यत सुख पहुँचानेवाला। क० प्रि० १४-१६-२।

अति सुचि—विशेपण। विशेष्य—वसन। अत्यत सफेद। क० प्रि० ३-१३-२।

अति सुद्ध—विशेपण। विशेष्य—जीवन मुक्त। अत्यन्त शुद्ध। रा० २५-१६-१। २५ ३४-४। ३३-३२-१। ३३-३४-१। वि० गी० १६-१२७-१। १८-२४-१।

अति सुभ—विशेपण। विशेष्य—वीथी। अत्यत सुदर। रा० ८-६-१।

अति सूक्षम—विशेपण। विशेष्य—कटि। अत्यत वारीक; पतली। क० प्रि० १५-६६-२। र० प्रि० १५-२१-१।

अति सूधी—विशेपण। विशेष्य—रेख। अत्यत सीधी। क० प्रि० १५-३८-३।

अति सूर—विशेपण। विशेष्य—रघुनाथ जू। वहुत वड़ा शूरवीर। रा० ५-७-१। वि० गी० १२-२०-१।

अति सूरो—विशेपण। विशेष्य—अर्जुन। शूरवीर। वी० च० २-२-१।

अति सेत—विशेपण। विशेष्य—हीरन की अवली। अति सफेद। क० प्रि० १६-३-३। रा० ६-५७-३। वी० च० १७-१२-१।

अति सेवक—विशेपण। विशेष्य—सुमित्रानद। (राम की) बडी सावधानी से सेवा करनेवाला। रा० १३-७५-१।

अति सोभनु—विशेपण। विशेष्य—वितान। अत्यत सुंदर। रा० ३०-१२-२।

अति सो भावंत—विशेपण। विशेष्य—परमहस। अत्यत शोभायमान। वी० च० २५-१८-१।

अति स्यामल—विशेपण। विशेष्य—वपु। अत्यंत श्यामल रंग का। रा० ५-२-७।

अतिहास—सं० पु० एक०। हास का एक भेद। जहाँ नि शक हँसने से मुख की नैसर्गिक सुगध निकलने लगे और अस्फुट शब्द भी हो, वहाँ अतिहास होता है। र० प्रि० १४-२-१। १४-१२-२।

अति ही—विशेपण। विशेष्य—विषादी। अत्यत ही। रा० १७-१८-२।

अति ही अनूप—विशेपण। विशेष्य—रूप। बहुत ही अनुपम। शिख० २-१।

अतिहीन—विशेपण। विशेष्य—दान। अत्यत हीन कोटि का। रा० २१-७-२।

अतीतहि—क्रियापद। छोडे। रा० ६-१६-४।

अतुराई—[स० आतुर] सं० स्त्री० एक०। आतुरता, तत्परता। र० प्रि० ७-२६-१।

अतुल—विशेपण। विशेष्य—पराक्रम। अतुल्य, वेजोड। र० वा० ४३-५।

राधा ने अपनी सखी को शाप दिया, जिससे वह धर्मध्वज राजा की पुत्री हुई। कृष्ण-संभोग की लालसा से उसने घोर तप किया। ब्रह्मा के आदेशानुसार उसने शंखचूड राक्षस से विवाह किया। शंखचूड को वरदान था कि जब तक उसकी स्त्री का सतीत्व भंग न होगा तब तक उसकी मृत्यु न होगी। जब देवता लोग शंखचूड से बहुत पीडित हो गए तो विष्णु ने शंखचूड का रूप धारण कर तुलसी का सतीत्व नष्ट किया। शंखचूड की मृत्यु हुई। परन्तु तुलसी ने कुपित होकर विष्णु को पत्थर हो जाने का शाप दिया। तभी से विष्णु शालिग्राम बने और उनके वरदान से तुलसी तुलसी पौधा बनी जो सदा शालिग्राम की पिंडी के समीप रहकर पत्ते उनके वक्षस्थल पर गिराती है। तुलसी का नाम उसके अतुलनीय सौन्दर्य के कारण पड़ा था। —हिन्दी साहित्य कोश, भाग २।)

(२) हिन्दुओं का पवित्र पौधा। रा० ३३-३९-१। वी० ५-३५-१।

तुलसीदास—सं० पुं० एक०। वीरसिंह देव का पोता। वी० २-५०। ६-३४।

तुलसीवन—सं० पुं० एक०। वृन्दावन। तुलसी का पौधा लगाने का चबूतरा। र० प्रि० ७-१२-३। क० प्रि० १३-१८-१।

तुला—सं० स्त्री० एक०। तराजू। वी० १-१४।

तुव—स० मध्यम पुरुष, कर्ताकारक, बहु०। उदा० तुव तोरहि। क० प्रि० ११-५९-४। रा० १५-७-४।

तुषार—[√तुष् + आरन्] सं० पुं० एक०। हिम, बरफ। क० प्रि० ७-३६-४। वी० ८-५४। ८-६०। २—पुं० एक०। तुषार देश का घोड़ा। वी० १०-३२। तुषारु-क० प्रि० ५-१०-२।

तुहि—स० तुझको, मध्यम पुरुष, कर्ताकारक। उदा० तुहि रटै। र० प्रि० ८-४६-३। तुही—र० प्रि० १२-३-४।

तू—स० मध्यम पुरुष एक० कर्ताकारक। 'तू'। उदा० 'सखि तू कहै'। र० प्रि० २-९-४। ६-४०-४। ९-१७-१। १०-१६-४। ११-८-४। १३-७-३। क० प्रि० ११-२८-४। ११-७१-४। १२-७-३। १२-४०-३। १४-३९-१। १४-३९-४। १५-९७-१। १५-१२५-१। रा० १-१६-१। ४-२१-३। १२-१०-१। १३-६१-१। ३४-१४-१। ३६-२०-१। वी० ५-६३-१। वि० गी० ५-२४-२। ८-३२-२। १२-१३-१।

तूठिवै—क्रि०। रीझना। र० प्रि० ४-१०-१।

तून—सं० पु० एक०। तूणीर। रा० १९-३७-३। तूनीर-क० प्रि० १५-५०-२।

तूर—सं० पुं० एक०। तुरही, सिंह। क० प्रि० ११-५७-२। रा० १३-१२-१।

तूरियो—क्रि० पुं० एक०। उलट दिया। रा० १९-२५-२।

तूल—[तूल् + क] सं० पुं० एक। रुई। क० प्रि० ७-३५-१। १०-३३-३।

रा० १४-४-१ । १६-१२-४ । छं० १-५४-५ । वि० गी० ८-१३-१ । तूली-र० प्रि० ११-२०-१ ।

तृन—[√तृह् (हिंसा करना) क्न] १-सं० पु० एक० । तिनका, घास । क० प्रि० ५-३६-१ । वि० गी० २०-१६-१ । तिनु-र० प्रि० १०-१५-३ । क० प्रि० १५-३६-२ । तिनुक-र० प्रि० ५-११-२ । २-पु० बहु० । त्रिन-र० प्रि० १४-३२-२ ।

तृनचय—सं० पु० बहु० । तिनको का समूह । वि० गी० २०-१६-१ ।

तृषा—[√तृष् (लालच करना)+क्विप] सं० स्त्री० एक० । तृष्णा, प्यास । रा० ३२ २०-१ । वि० गी० ३-३०-१ । तृस-रा० ११-३०-१ ।

तृष्णा—सं० स्त्री० एक० । तृष्णा । रा० २४-१९-२ । वी० १८-१२-१ । वि० गी० ७-१८-४। १६-१०४-१। तृषिका-वि० गी० ५-१०-१ । तृस्न-वि० गी० १४-१७-२ । तृस्ना-रा० ८-३१-२ । त्रिस्ना-क० प्रि० ६-३९-२ ।

तें—(१) स० मध्यम पुरुष एक० । कर्ता-कारक, 'तो' का मूल रूप । उदा० 'हित मे' । क० प्रि० १२-२७-१ । रा० ७-२३-१ । ९-३८-३ । (२) प० से, द्वारा (सं० तस्, हिं० तें) । उदा० 'निज तरुणी उपदेश तें' । र०प्रि० १-२५-३ । २-८-१ । ३-७-३ । ४-१३-४ । ५-९-२ । ६-१५-२ । ७-५-१ । ८-५-२ । ९-२०-१ । १०-६-१ । ११-७-१ । १२-२५-२ । १३-२-३ । १४-५-१ । क० प्रि० १-१-१ । २-७-१ । ३-२९-१ । ४-१३-१ । ५-१९-१ । ६-१६-१ । ७-१२-१ । ९-१८-१ । ९-२५-३ । ११-४५-१ । १२-५-१ । १४-१४-१ । १५-१३-१ । रा० १-२४-४ । २-१६-३ । ५-४-२ । ९-३३-१ । ८-२०-२ । ७-२५-२ । १२-३४-१ । १३-५३-१ । २०-३०-४ । ३८-१०-१ । २१-१२-२ । २७-२२-३ । ३८-१०-१ । ३९-११-१ । ३९-१३-२ । छं० १-१७-१ । १-४७-३ । १-५४-४ । १-७७-२ । २-७-२ । २-१६-२ । र० १-१२-१ । १-१२-२ । १-२९-५ । शि० १-४-१ । १-१८-२ । १-२३-१ । वी० १-८-१ । २-६-१ । २-११-६ । ५-१३-१ । ७-२५-२ । ८-२९-२ । १०-१-१ । १०-४८-२ । १०-४७-२ । १२-३९-२ । २३-६-१ । २८-१०-१ । ३१-३२-१ । ३२-३८-१ । ३३-३४-४ । ३३-५१-१ । वि० गी० १-१६-४ । १-२३-१ से ४ । १-२७-२२ । ३-६-१ । ४-३०-२ । ५-१-१ । ६-४०-१ । ७-१९-३ । ८-१०-४ । ९-४-४ । १०-८-२ । ११-३६-१ से ४। १२-२०-२ । १३-३४-२ । १३-५८-१ । १४-१०-१ । १४-२२-३ । १४-२२-४ । १५-१२-१ । १५-१७-१ । १६-१९-१ । १७-२८-१ । १८-१-१ । १७-६८-१ । १९-२०-१ । २०-२६-१ । २०-३८-२ । २०-५२-१ । २१-१२-४ । २१-३५-२ । २१-३८-२ । २१-५८-२ ।

तेंदु—सं० पु० एक० । एक पेड जिसका हीर आबनूस के नाम से विकता है । र० प्रि० १३-१७-१ ।

ते—स० वे, उनको, उन्हे, नित्य संबंधी बहु० (सं० ते) उदा० ते को हैं (उन्हें) । क० प्रि० ४-३-४ । ते मिलत आनि (वे) क० प्रि० १०-१२-२ । र० प्रि० ५-१८-१(उन्हे) । ६-५-१। ६-५-२ (उन्हे) । ६-८-२ (उनको) । ६-३८-३ (उन्हें) । रा० ४-६-३ (उन्हे) । ७-३०-२ । ६-३६-२ (वे) । १२-४८-२ (वे) । १८-२८-२ (उन्हे)। २५-३८-२ (वे) ।

तेई—स० नित्य संबंधी बहु० । उदा० 'तेई प्रनु' । (क० प्रि० ११-५०-३) । क० प्रि० १४-३४-१ । रा० ६-५०-२ । (वे ही)

तेऊ—स० नित्य संबंधी बहु० । वे भी, वे लोग भी । उदा० 'तेऊ हरें' । रा० ६-४४-४ ।

तेग—सं० स्त्री० एक० । बड़ी तलवार । वी० ५-६६ । ५-८६ । वि० गी० १-१७-४ ।

तेज—(१) १–सं० पु० एक० । प्रकाश । र० प्रि० । ३-४८-२ । क० प्रि० ६-६८-३ । वि० गी० ३-११-३ । २–पु० एक० । तीखापन, तीक्ष्णता । क०-प्रि० ८-१५-१ । वि०गी० १०-१६-३ । ३–पु० एक० । अग्नि । र० प्रि० ३-४८-२ । ४–पु० एक० । पराक्रम । रा० १३-३८-२ । २६-२२-२ । ५–पुं० एक० । दिव्यज्योति । वि० गी० १५-११-१ । (२) वि० (विशेष्य–तम) घना । क० प्रि० । ८-२५-१ । रा० ५-२२-२ ।

तेज को निधान—१–वि० (विशेष्य–हनुमंत) । तेजी से चलनेवाले (पवनपूत होने के नाते हनुमान की गति तीव्र होती है) । रा० १३-३८-२ । २–वि० (विशेष्य–मान) अत्यन्त तेजस्वी । रा० ३१-१०-१ । वी० २२-५६-२ ।

तेजपूरे—वि० (विशेष्य–वाजि) तेजी से चलनेवाली । रा० २८-२-२ ।

तेज-मूरत—सं० पु० एक० । प्रकाशमय आकृति । र० १-३६-४ ।

तेजवंत—वि० (विशेष्य–दोऊ) । (सूर्य और चन्द्रमा) । तेजवान । क० प्रि० । ११-४२-१ ।

तेरह—वि० (विशेष्य–मंडल) संख्या विशेष—१३ । रा० ३६-३५-१ ।

तेरी—स०मध्यम पुरुष, संबधवाची विशेषण । स्त्री० एक० । तेरो का विकृत रूप । उदा० तेरी तरवारि । (वी० २८-१५-४) । र० प्रि० ५-१०-१ । ६-४०-३ । १४-३१-४ । १४-३५-३ । क० प्रि० ६-१६-३ । १२ २१-२ । १५-४१-४ । १५-६०-४ । रा० ४-१६-४ । १४-१४ । १५-३७-२ । ३०-२२-२ । वी० २८-१५-४ ।

तेल—सं० पु० एक० । बीजो, वनस्पतियो आदि से निकलने या विशेष उपाय द्वारा निकाला जानेवाला स्निग्ध पदार्थ । क० प्रि० ७-३५-१ । रा० ६-१८-३ । वि० गी० १३-७०-१ ।

तेलनि तूलनि जरी—वि० (विशेष्य-पूँछि) तेल और रूई से जटित । रा० १६-२२-४ । (जब हनुमान राम के दूत बनकर अशोकवन मे सीता के पास गये, तब पकड़े गये और उन्हे जला डालने के

लिए उनकी पूंछ को रूई से लपेटकर तेल डालकर आग लगाई गई जिसके फलस्वरूप हनुमान ने सारी लंका जला डाली)।

तेलमय—वि० (विशेष्य—दीप)। तेल से युक्त। ज० १८-५-२।

तें—स० मध्यम पुरुष, एक० कर्ताकारक। तू, वे। उदा० तें पीर। र० प्रि० १-१५-४। ३-४७-४। ५-६-४। ५-१०-३। ६-१२-१। ६-१२-२। ७-३१-१। ८-३७-१। १०-१५-१। १४-६-१। १४-११-४। क० प्रि० १२-४-४। रा० ३४-३१-१। ३४-४६-१। ३५-१८-१। र० १-३१-१। ज० १६-६-२। वि० गी० १-३१-१। १६-१२०-१।

तैलिंग—सं० पु० एक०। त्रिलिंग देश (आन्ध्र देश)। ज० १०१।

तैसिये—क्रि० वि० रीतिवाचक। उदा० चितैबे की तैसिये है। र० प्रि० १४-१३-१। १४-१३-२।

तैसी—क्रि० वि० रीतिवाचक। उदा० जैसी सुनी तैसी दिखावै। र० प्रि० ४-१७-४। २३-३९-२। वि० ४-१०-१। ३-२३-२।

तैसौ—क्रि० वि० रीतिवाचक। उदा० अघात न तैसौ। र० प्रि० ६-५४-३। क० प्रि० ११-५४-३। ११-६८-१। ११-७०-१। ११-१७-४।

तोंवर तमाम को तिलकु—वि०(विशेष्य—श्याम सिन्धु)। समस्त तोंवरो का तिलक। ज० ९३-१।

तोंवरपति—१—सं० पु० एक०। तोंवर वंश का राजा। क० प्रि० २-१२-२। वि० गी० १-१७-१। २—एक शस्त्र। वी० ६-३६। ८-१८।

तौ—सं० मध्यम पुरुष एक०। (सं० तव, हि० तू)। तेरा, तुम्हारा। उदा० 'मय मो कहन आई। तो सौ अलि अकुलाई॥' र० प्रि० ८-४८-३। क०प्रि० १४-३९-१। रा० १६-१५-३। वि० गी० ६-४४-१।

तोटक छंद—सं० पु० एक०। वर्णिक छंदो मे समवृत्त का एक भेद। चार सगणो से यह वृत्त बनता है। छं० १-३२-२।

तोतरी—वि० (विशेष्य-बालक बातें) तुतली-तुतली। क० प्रि० ६-४-७।

तोमर छंद—सं० पु० एक०। तोमर छंद के प्रत्येक चरण मे १२ मात्राएँ होती हैं। चरण के अन्त मे क्रमशः गुरु और लघु वर्ण होते हैं। छं० १-२२-२। १-४४८-२१।

तोय—सं० पु० एक०। पानी। क० प्रि० ६-६८-३। १५-५२-४। रा० २०-३६-१। वी० ५-२९-१।

तोरै—क्रि० पु० एक०। तोड डालता है। रा० १४-२१-२।

तोरति—क्रि० स्त्री० एक०। तोडती। र० प्रि० ८-४२-३।

तोरन—[√तुर् + ल्युट]। सं०पु० एक०। पुर के बाहर का सजीला द्वार। क० प्रि० ११-५७-२।

तोरि—क्रि० । तोड़कर । र०प्रि० ५-११-३ । ५-२४-३ । क० प्रि० ३-१२-१ । रा० १-१-१ । ४-८-१ । ७-१६-१ । १३-६६-१ । १५-६-४ । २१-४६-१ । २८-१३-१ ।

तोरिबे—क्रि० तोड़ने को । क० प्रि० ४-२०-१ । ४-२२-५ । रा० २८-१३-१ ।

तोरिये—क्रि० तोड़िये । रा० ३६-२६-३ ।

तोरियो—क्रि० पु० एक० । तोड दिया । रा० ४-४४-२ ।

तोरिहि—क्रि० पुं० एक० । तोड देगा । रा० १५-७-४ ।

तोरे—क्रि० पु० बहु० । तोड़ देते हैं । रा० १-१-४ । १५-४-१ ।

तोर्यो—क्रि० पु० एक० । तोड़ लिया । रा० ५-४४-२ ।

तोल - सं० पुं० एक० । तोलवान् । कोई कायस्थ तोलवाले बाँटे अपने पास रखता है । क० प्रि० १२-१६-१ ।

तोलन—क्रि० । तौलना । र० प्रि० १२-११-१ ।

तोष—[तुष् + घञ्] सं० पुं० एक० । किसी वस्तु की प्राप्ति से जी भरना, तृप्ति । वि० गी० ११-३७-२ । तृप्ति–वि० गी० १६-६-४ । स्त्री० एक० । तोषता । रा० ३१-३६-२ ।

तोहि—स० मध्यम पुरुष एक० । (हिं० तू या ते) तुझे । उदा० 'तोहि अन्तर' (वी० १-३७-६) । र० प्रि० ४-१६-४ । ४-१७-१ । ५-३५-४ । क० प्रि० ६-१६-३ । ८-८०-३ । रा० ४-२२-१ । ६-३८-२ । १४-३४-२ । छं० १-४७-४ । १-७०-६ । वी० १-१६-२ । १-३४-६ । १-३७-६ । वि० गी० २-६-२ ।

तोही—स० मध्यम पुरुष एक० । (हिं० तै) तुझको । उदा० (तोहि मूरति) र० प्रि० ६-६-३ ।

तो—अ० निमित्तवाचक । उदा० 'आग को तो दाह्यो अंग' । र० प्रि० १-२५-४ । २-६-४ । ३-७-४ । क० प्रि० ३-२८-३ से ४ । रा० ४-२७-२ । २७-११-४ । ७-२१-४ । वि० गी० १-१-४ । १०-२-१ । १३-७०-२ । १४-६-२ । १४-३६-१ । १६-७२-१ । १७-२२-२ । १८-३७-२ । २१-५१-१ ।

त्यागी—वि० (विशेष्य—नायक) । त्यागने मे सक्षम । र० प्रि० २-१-१ ।

त्यों—क्रि० वि० रीतिवाचक । उस प्रकार, उस तरह, उसी समय । उदा० 'त्यों हँसी' । क० प्रि० १०-८-२ । रा० १-१-१ । ५-३२-१ । ज० २५-६ । त्यो—र० प्रि० ७-१०-२ ।

त्वचा—सं० स्त्री० एक० । चर्म । रा० १४-५७-३ । तुचा–वी० २-१८-२ । वि० गी० १६-४५-२ ।

त्रयीवेद—सं० पुं० बहु० । तीन वेद—ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद । वि० गी० ११-२८-१ ।

त्रान—सं० पुं० एक० । रक्षा, बचाव । क० प्रि० ८-४७-३ । १५-१२-२ । रा० ३१-३५-२ ।

त्रास—(१) सं० पुं० एक० । भय, डर, खौफ । र० प्रि० ३-१४-१ । ३-३५-

२। क० प्रि० ३-२७-१। ५-२७-४। रा० ६-२६-१। १६-१६-२। वि० गी० २१-७१-१। (२) वि० (विशेष्य—जन)। भयभीत। क० प्रि० ७-५-४।

त्रि—वि० (विशेष्य—लोक)। तीन—३। र० प्रि० ३-३८-३।

त्रिकाल—सं० पुं० बहु०। तीनो काल—भूत, वर्तमान, भविष्य। रा० २०-३२-४। छं० १-६८-६। वि० गी० ११-२८-१।

त्रिकालनाथ—(१) सं० पुं० एक०। तीनो कालो का स्वामी। वि० गी० ११-३६-३। (२) वि० (विशेष्य—विस्वनाथ)। तीनो कालो मे रक्षा करने वाला। वि० गी० ११-३६-३।

त्रिकूट—सं० पु० एक०। वे तीन शिखर जिन पर लकापुरी बसी थी। रा० १५-३१-१। १३-८-२।

त्रिकोटि—सं० पुं० एक०। तंत्र के अनुसार भैरव राग। वि० गी० ८-४०-१।

त्रिकोन—(१) सं० पुं० एक। त्रिकोण-वर्णन। वर्ण्यालंकार का एक भेद, जिसमे तीन कोणो से युक्त चीजो का वर्णन होता है। क० प्रि० ६-१-१। (२) वि० (विशेष्य—महि) जिसके तीन छोर हो। क० प्रि० ६-११-२। ६-१२-१ (विशेष्य—धरनि)।

त्रिगुन—स० पु० बहु०। तीन गुण—सत्, रज, तम। क० प्रि० ११-२२-२।

त्रिगुन कलित बहु बलित ललित गुन—वि० (विशेष्य—इन्द्रजीत जू)। सत, रज, तम से उत्पन्न अनेक सुन्दर गुणो से युक्त। क० प्रि० ११-२२-२।

त्रिगुरु—सं० पुं० बहु०। तीन गुरु—छन्द शास्त्र मे दो मात्राओ वाला। क० प्रि० ३-१९-१।

त्रिदिवा—सं० स्त्री० एक०। नदी विशेष। वि० गी० ६-१८-२।

त्रिदेव—सं० पु० बहु०। ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर। वि० गी० ११-२८-१।

त्रिदेव त्रिकाल त्रयीवेदकर्ता—वि० (विशेष्य—श्रीबिंदु माधो)। त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु, महेश), त्रिकाल (भूत, वर्तमान, भविष्य) एवं तीनो वेदो (ऋग् यजु, साम) को रचना करने वाला। वि० गी० ११-२८-१।

त्रिदोष—सं० पु० बहु०। तीन दोष (वात, पित्त, कफ)। रा० १२-२-२।

त्रिधाम—स० पु० बहु०। तीन लोक—स्वर्ग, मर्त्य, पाताल। र० प्रि० १४-३८-२।

त्रिपुर—सं० पु० बहु०। तारकासुर के तीन पुत्रो—तारकाक्ष, कमलाक्ष, विद्युन्माली क लिए मय दानव द्वारा निर्मित सोने, चांदी और लोहे के तीन नगर जो बाद मे सामूहिक रूप स त्रिपुर कहलाए। इन राक्षसो से पीड़ित देवो की प्रार्थना पर शिव ने एक ही बाण से त्रिपुर का नाश कर दिया। तभी से शिव का नाम 'त्रिपुरारि' हुआ। क० प्रि० ११-९-१।

त्रिपुर हर—सं० पुं० एक०। दे० 'त्रिपुर'। क० प्रि १०-३-१।

त्रिवली—सं० स्त्री० बहु०। नाभि के नीचे की रेखाएँ। वी० २२-५०-१।

त्रिभुवन—सं० पु० एक० । दे० 'त्रिधाम' क० प्रि० १५-५२-४ । रा० ६-२३-२ । ३२-३४-४ । छं० १-२७-३ । र० १-२१-२ ।

त्रिभुवन की सिरताज—वि० (विशेष्य—कन्यका) त्रिभुवन शिरोमणि । रा० ६-२३-२ ।

त्रिभुवन पति—सं० पु० एक० । इन्द्रजीत । र० १-२३-३ ।

त्रिभुवन मान्यो—वि० (विशेष्य—जगगुरु) । त्रिभुवन पूज्य । रा० ७-४६-१ ।

त्रिभुवनराज—स० पु० एक० । इन्द्र । र० १-२१-२ । (२) वि० (विशेष्य—राम) तान लोको का राजा । र० २१-२-२ ।

त्रिभुवनशासन—वि० (विशेष्य—श्री रघुनायक) तीनो लोको के शासक । रा० ३३-३-१ ।

त्रिय—१-सं० स्त्री० बहु० । स्त्रियाँ । क० प्रि० ६-४१-२ । त्रियन–वि० गी० ७-८-१ । त्रियनि–क० प्रि० ४-२१-२ । २–सं० स्त्री० एक० । क० प्रि० ७-३६-४ । वि० गी० ६-३८-१ । त्रिया–वि० गी० १३-४५-२ ।

त्रियगन—सं० पु० बहु० । स्त्रियो के समूह वि० गी० ८-४३-१ ।

त्रियनिसों—सं० स्त्री० बहु० । स्त्रियो से । वि० गी० २-१६-२ ।

त्रिया—सं० स्त्री० एक० । स्त्री । वि०गी० १३-४५-२ ।

त्रिरेस—सं० पु० एक० । शंख । क० प्रि० १५-३२-३ ।

त्रिलघु—सं० पु० बहु० । तीन लघु । छन्द शास्त्र मे एक मात्रावाला वर्ण लघु कहा जाता है । क० प्रि० ३-१६-१ ।

त्रिलोक—सं० पु० बहु० । (दे० 'त्रिधाम) । र० प्रि० ३-३८-३ । ३-५८-३ । छं० १-६८-३ । वि० गी० २-१२-२ । ६-४६-२ ।

त्रिलोक देव—वि० (विशेष्य—रामदेव) । तीनो लोको का रक्षक । वि० गी ३०-१८-१ ।

त्रिलोकनाथ—(१) सं० पु० बहु० । तीनो लोको के स्वामी विष्णु । क० प्रि० ११-३३-४ । वी० ३२-२४-२ । वि० गी० ११-३८-३ । (२) वि० (विशेष्य–विश्वनाथ) । तीनो लोको का रक्षक । वि० गी० ११-३८-३ ।

त्रिलोक-निकाई—सं० स्त्री० एक० । तीनो लोको की सुन्दरता । र०प्रि० ३-३८-३।

त्रिलोचन—स० पु० एक० । तीन हैं आँखें जिसकी वह—शिव । क० प्रि० ३-६-३ । ६-१२-१ ।

त्रिविक्रम—सं० पु० एक० । विष्णु का एक अवतार जिसने साढ़े तीन डग मे त्रिलोक तथा बलि का शरीर नाप लिया था । र० प्रि० १४-१०-२ । रा० २०-३२-४ । वी० २७-२७ । त्रिविक्रम–वि० गी० १-२३-१ ।

त्रिविध गर्भ—सं० स्त्री० बहु० । हवा के चलने के तीन ढंग, शीतल, मद तथा सुगंध । क० प्रि० १२-१७-२ ।

त्रिवेनी—सं० स्त्री० एक० । प्रयाग मे गंगा यमुना और सरस्वती के मिलने का

स्थान। र० प्रि० ४-६-४। क० प्रि० ११-६-१। त्रिबेनी—रा० २०-२३-१। छं० १-६६-६। वी० २४-२०। २६-४८।

त्रिशंक—सं० पु० एक०। त्रिशकु, एक प्रसिद्ध राजा जिसने सशरीर स्वर्ग जाने के लिए विश्वामित्र से सहायता ली थी। वह देवताओ द्वारा दुत्कारे जाने पर स्वर्ग और मर्त्य के बीच मे ही लटका रहा। वी० २-६। ११-६।

त्रिसरा—सं० पु० एक०। एक राक्षस जिसे राम ने दण्डकारण्य मे मारा था। क० प्रि० ११-५५-४। रा० १२-२-२। १२-६-१।

त्रिसरा-खर-दूषन दूषन—वि० (विशेष्य—रघुनन्दन)। त्रिशिरा, खर और दुषण का वध करनेवाला। रा० १४-१-२। (त्रिशिरा रावण का पुत्र था। खर विश्रवा एवं राका का पुत्र तथा रावण का भ्राता रहा। रावण के ही एक और भाई का नाम था दूषण। ये सब रावण की भगिनी सूर्पणखा के साथ वन में रहते थे। लक्ष्मण के हाथो जब सूर्पनखा के नाक कान कटे, वे राम से लड़े और उन्हीं के बाणो से निहत हुए।—रामायण (अरण्यकाण्ड)।

त्रिसूल—सं० पु० एक०। तीन भालो का एक प्रसिद्ध शस्त्र। रा० ३५-१८-१। वी० १०-३०-२।

त्रिसोता कृती—वि० (विशेष्य—श्रीबिन्दुमाधव)। तीनो वेदो का रचयिता। वि० गी० ११-२८-१।

त्रेता—सं० पु० एक०। चार युगो मे से दूसरा जिसमे राम अवतार हुआ था। क० प्रि० ६-२४-३।

त्रै—वि० (विशेष्य—लोक) तीन—३। रा० २६-५-१ वी० १-४०-४।

त्रैताप बलू—सं० पुं० बहु०। दैहिक, दैविक और भौतिक इत्यादि तीन प्रकार के दुःखो का बला। रा० ७-१७-२।

त्रैलोक्य—स० पुं० बहु०। तीन लोको मे। वि० गी० २१-३-१।

थ

थकत—[स्था + कृ प्रा० थक्कन] क्रि० पुं० एक०। थकता है। र०प्रि० ५-२०-१।

थके—क्रि० पु० बहु०। थक गए। र० प्रि० २८-२०-२। थक्यो—रा० ३-३२-२।

थकै—क्रि० पु० एक०। थक जाता है। रा० २४-११-२।

थल—१—सं० पुं० एक०। जगह, स्थल, जल-रहित भूमि। र० प्रि० ५-३७-३। क० प्रि० ५-३५-१। रा० ३-१२-१। र० २-१४-१। वी० १-५२। ८-५२। २—पुं० एक०। पृथ्वी। र० प्रि० ३-४८-२। रा० ५-२२-४। ३—पु० बहु०

थलनि— स्थलों मे। वि० गी० ८-४८-१।

थलज—(१) सं० पु० एक०। तमाल पौधा। क० प्रि० ६-५६-१। (२) पुं० बहु०। गुलाव फूल। क० प्रि० १५-६-२।

थली—(१) सं० स्त्री० एक०। जल के नीचे का तल, वह भूखंड जो अपने प्रकृत रूप मे हो। क० प्रि० ५-३३-१। (२) स्त्री० एक०। वाटिका। र० प्रि० (३) पु० एक०। प्रदेश। रा० २१-३२-२। छं० १-६४-४।

थाई—[स्थायी] सं० पुं० एक०। स्थायी भाव; भाव का एक प्रकार जो मन मे बना रहता है और परिपाक होने पर रसावस्था मे परिणत होता है। र० प्रि० ६-३-२। ६-६-२।

थाप—[स्थापन] सं०स्त्री० एक०। सम्मान, आदर। वि० गी० १३-६६-१।

थापिके—क्रि०। मानकर। रा० २१-३-२।

थापी—क्रि० स्त्री० एक०। चलायी है। रा० ११-२४-१।

थार—सं० पु० एक०। थाल। रा० २६-१५-१।

थावर—(१) सं० पु० एक०। स्थावर (जो स्थिर रहता है)। ज० २८। (२) वि० (विशेष्य—शरीर)। स्थावर। रा० २६-१७-२।

थाह—सं० स्त्री० एक०। नदी आदि मे वह स्थान जहाँ विना डूबे पाँव टिक जाय। वि० गी० १-४१-१।

थिर—(१) सं० पु० बहु०। गतिहीन प्राणी। क० प्रि० ६-६६-२। (२) वि० (विशेष्य—जन्तु)। स्थिर। क० प्रि० ६-१२-४। वी० २६-१६-२। १६-१०-२।

थिर चर जीवनि को सर्मदा—वि० (विशेष्य—नर्मदा)। चर-अचर सबके जीवन को सुख पहुँचाने वाली। वि० १-७-१।

थूल—वि० (विशेष्य—अंगुरी, चरन, मुख)। मोटी। र० प्रि० १-११-१।

थोरै—वि० (विशेष्य—मुख)। छोटे। रा० ३५-१७-१।

थोरी—वि० (विशेष्य—बात)। कम महत्व-पूर्ण, थोड़ी। क० प्रि० १५-४१-४।

थोरे—वि० (विशेष्य—कपोल) छोटे आकार के। वी० ३२-५३-२।

द

दंड—१–सं० पु० एक०। सजा। र० प्रि० ३-६४-३। १०-२-२। क० प्रि० ८-४-१। वी० ३०-६-२। ३०-१०-१। २–सं० पु० एक०। कमल-नाल। क० प्रि० १२-३२-४। ३–पुं० एक०। समय का विभाग। रा० १४-३-१। १७-

४१-२। ३४-१४-२। ३४-१५-२। ३४-२४-१। ४-पुं० एक०। डंडा, संन्यासियो के धारण करने का बाँस। वी० १६-३३। वि० गी० ८-२५-१। ६-२६-१। ६-३०-२। ११-३६-१। १६-४६-२। १६-६४-२। १६-६६-१। १७-२७-३। ५-पुं० बहु०। क० प्रि० १५-३५-३।

दंडक—१-सं० पु० एक०। घडी। रा० ४-६-३। ११-१६-१। २-पु० एक०। छंद का नाम। इसके प्रत्येक चरण मे ३२ से अधिक मात्राएँ होती है। छं० १-७८-२।

दंडकारण्य—सं० पुं० एक०। एक वन। रा० १४-५७-२। दंडकारन्य—वि० गी० १७-३८-२।

दंड दान लीन—वि० (विशेष्य—परम पुरुष)। दुष्टो को दड देने एवं सत्पुरुषो को दान देने मे निपुण। वि० गी० १७-२७-३।

दंड धरन—सं० पु० एक०। डडा धारण करने वाला। वि० गी० १५-१३-२।

दंडधारिणी—सं० स्त्री० एक०। दंड को धारण करने वाली। वी० १६-३-२।

दंड धारिनी—वि० (विशेष्य—ध्वज)। दण्ड धारण करने वाली। दण्ड धारण करना तपस्वी लोगो का चिह्न है। इस प्रसंग मे पताकाओ के बाँस दड माने गये हैं। रा० १-३८-२।

दंडधारी—सं० पुं० एक०। दंड धारण करने वाला। यमराज। रा० ३४-२६-२। (पद्मपुराण मे यम का रूप दंडधारी के वेष मे निरूपित है।) (२) वि० विशेष्य—द्विजगन)। दण्ड धारण करने वाला। रा० २८-११-१।

दंडनीति—सजा देने की विद्या। वी० २७-१८।

दंडमान – १-वि० (विशेष्य—वर्ग)। दंडनीय, दंड देने योग्य। रा० ३-३-३। २-वि० (विशेष्य—हैहयाधिराज) दंड देनेवाला। रा० ७-१६-१।

दंडवत किये—क्रि०। प्रणाम किए। रा० २०-५२-१।

दंडित—वि०(विशेष्य—पति)। अनुशासित, नियंत्रण मे होने वाली। रा० १-४३-१।

दंडधारी—वि० (विशेष्य—दंडधारी)। दंड से युक्त संन्यासी। रा० १३-५८-२।

दंत—सं० पुं० बहु०। दाँत। प्राणी के जबडो मे स्थित वे छोटे-छोटे पंक्तिबद्ध अस्थिखंड जिनसे काटने चबाने का कार्य होता है। र० प्रि० ६-५२-३। क० प्रि० ६-६-१। ६-१६-२। १५-८४-२। रा० ६-५१-१। दंतन-क० प्रि० १४-६-२। दंतनि-र० प्रि० ८-२२-२। वि० गी० १०-८-३। पुं० एक०-दाँत। रा० ६-५१-१। र० १-७-६। वि० गी० १०-१८-२।

दंत धावन—सं पुं० एक०। दाँत सफा करने की क्रिया। वी० २२-६। २२-७।

दंतावली—सं० स्त्री० एक०। दाँतो की पंक्ति। रा० १३-२४-१।

दंति—सं० पुं० एक०। हाथी। रा० १६-३६-२। दंती-रा० ६-१४-२। ज०

अश्रुवलित—विशेपण । विशेष्य—सीता, नयन । आनदाश्रु से युक्त । रा० ६-४५-१ ।

अथाइन—[स० अस्थान] स० स्त्री० बहु० । बैठकें; गाँववालो के एकत्र होने के स्थान, गोष्ठियाँ । र० प्रि० ७-३३-१ ।

अदंड—विशेपण । विशेष्य—भुवदेव । जो दड के योग्य न हो । रा० ३४-१३-१ ।

अदल—स० स्त्री० एक० । पार्वती ने गिरिराज के यहाँ जन्म लेकर शिव को प्राप्त करने के लिये तपस्या करते समय सूखे पत्तो तक को खाना छोड दिया था । इसी से पुराविद पडितगण उन्हे "अपर्णा" या "अदल" कहते हे ।

हरिवश मे लिखा है कि मैना पितृगण की मानसकन्या है । हिमालय के साथ उसका विवाह हुआ था । उपरातर उनकी अपर्णा, पर्णा, एक-पाटल नामक तीन कन्याएँ हुईं । उन तीनो बहनो ने कठिन तपस्या आरभ कर दी । एकपर्णा पेड का केवल एक पत्ता खाती थी । सबसे छोटी बहन एकपाटल प्रतिदिन एक पाटला फल खाकर रहती थी । इसी से लोग उसे एकपाटला कहने लगे । किंतु सबसे बडी "अपर्णा" एक पत्ता भी न खाती थी । इसलिये उसका नाम अपर्णा या अदल हुआ । पीछे महादेव से अपर्णा का विवाह हुआ । (हिंदी विश्वकोप, स० श्री नगेंद्रनाथ वसु) । क० प्रि० ७।२८-३ ।

अदिति—(१) स० स्त्री० एक० । ऋग्वेद की मातृदेवी जिसकी स्तुति मे बीसो मत्र कहे गए है । वह मित्रावरुण, रुद्रो, आदित्यो, इंद्र आदि की माता है । इंद्र और आदित्यो को शक्ति अदिति से ही प्राप्त होती है । उसके मातृत्व की ओर सकेत अथर्ववेद (७, ६, २) और वाजसनेयि सहिता (२१, ५) मे भी हुआ है । इस प्रकार उसका स्वाभाविक स्वत्व शिशुओ पर है और ऋग्वेदिक ऋषि अपने देवताओ सहित बार बार उसकी शरण जाता है एव कठिनाइयो मे उससे सहायता की अपेक्षा करता है । (ऋ० १० । १०० । १९४ । १५) (हिंदी विश्वकोश, नागरीप्रचारिणी सभा) । क० प्रि० ११-५६-५ । (२) स० स्त्री० एक० । दक्ष की पुत्री जो कश्यप से व्याही थी और देवताओ की माता थी । रा० १-४७-३ । १७-४६-५ ।

अदिष्ट—स० पु० एक० । भाग्य, कर्म-जन्य सस्कार; पूर्वजन्म मे सचित पुण्य पाप जो इस जन्म के सुख दु ख के कारण माने जाते है । क० प्रि० ६-५३-२ । ६-५४-४ । ६-५५-२ । ७-५-४ । ६-५५-२ । वी० च० । १-२६ ।

अदीठ—विशेपण । विशेष्य—मन । अदृष्ट; जो दिखाई न पड़े । र० प्रि० १५-३५-३ ।

अदीयमान—विशेपण । विशेष्य—दुख । न देने योग्य । रा० ३-३-२ ।

अदूषित—विशेपण । विशेष्य—देवी; प्रवीन राय की वानी । (१) देवी के

५०-६५। वि० गी० १३-४१-१।
दंतिराज—रा० ६-६३-१।

दंपति—सं० पुं० बहु०। पति-पत्नी, स्त्री-पुरुष। र० प्रि० ६-६-१। ६-८-२। १०-१०-२। १४-१५-१। क० प्रि० १०-३१-२। १६-४६-३। दंपतिहि—र० प्रि० ८-३-१। दंपती—र० प्रि० १६-४-१।

दंभ—१—सं० पु० एक०। कपट। वि० गी० १-६-१। २—पु० एक०। नाम विशेष। वि० गी० ६-७५-१।

दंसत—क्रि०। काटते हुए। रा० २७-१८-२।

दइ—क्रि० स्त्री० एक०। दी। रा० २१-३६-२।

दई—(१) सं०पुं०एक०। देव। विधाता। र० प्रि० ६-४०-४। १२-२८-२। १३-१२-३। क० प्रि० १-३३-२। ६-२५-४। २—पुं० एक०। दैवयोग—प्रारब्ध, भाग्य। क० प्रि० ३-११-३। (२) क्रि० पुं० एक०। दिया। र० प्रि० २-१४-१। ३-१३-१। ६-३५-२। ६-३५-३। ६-३६-२। ६-४०-४। ६-४४-२। ११-१४-२। १३-१२-२। ११-१७-२। क० प्रि० १-१८-२। १-६१-१। ३-११-३। ४ १८-२। ५-१६-२। रा० ६-३३-४। ६-३४-१। ६-३४-३। ६-३५-३। ११-२८-१। ११-३४-१। १२-३६-२। १२-४६-३। १३-३७-२। १३-६४-१। १३-६५-३। १३-७७-२। १३-८७-३। १३-६४-१। १३-६५-३। १३-७७-२। १३-८७-२। १३-६५-२। १४-११-१। १४-२३-१। १५-२१-२। १७-४०-२। १६-२१-१। १६-२५-१। १६-४१-१। २६-३७-१। २३-२५-१। २६-३१-४। २७-२६-४। ३०-४१-१। ३१-२१-२। ३४-१८-२। ३६-१६-२। ३६-२४-१। ३६-२७-१। ३६-२८ २।

दई बनाई—सं० क्रि० पुं० एक०। बना दिया। रा० १३-३७-२।

दए—क्रि० पुं० बहु०। दिए। र० प्रि० ५-३३-१। ६-५५-३। क० प्रि० १-५५-१। २-२-२। २-३-२। २-८-२। २-११-२। २-२०-२। रा० ६-११-१। ६-५१-४। ११-६-२। ३३-२-२। ३५-१४-३। ३८-५-३।

दक्षि—सं० पुं० एक०। दक्षिण नायक, सब स्त्रियों पर समान भाव रखने वाला नायक। क० प्रि० १३-२६-१।

दक्षिन—(१) सं० स्त्री० एक०। दक्षिण—वी० १-७। ३-३६। वि० गी० ३-१४-४। (२) वि० (विशेष्य—दान)। दक्षिण कोटि का। रा० २१-११-१। केशवदास ने दक्षिण दान के बारे मे कहा है—'धर्म निहित ते दक्षिण जानो। रा० २१-११-१।

दक्षिण पवन—सं० पुं० एक०। दक्षिण या मलयगिरि की ओर से आनेवाली हवा। क० प्रि० १३-२६-१।

दखि हौं—क्रि० स्त्री० एक०। देखूंगी। रा० १३-६२-१।

दगाबाज—सं० पुं० एक०। धोखेबाज। वी० ३१-६१।

दचक—सं० पुं० बहु० । धक्के । रा० १४-३८-३ ।

दचकत—क्रि० स्त्री० एक० । हिल जाती है । रा० १४-३८-३ ।

दछ—सं० पुं० एक० । दक्षिण नायक । र० प्रि० २-२-२ ।

दच्छिन—१–सं० पुं० एक० । उत्तर के सामने की दिशा । क० प्रि० १-३६-२ । २–पुं० एक० । दक्षिण नायक । र० प्रि० २-७-२ । ६-४१-१ ।

दच्छिन लच्छन—सं० पु० बहु० । दक्षिण नायक के गुण । र० प्रि० २-७-२ ।

दती—क्रि० स्त्री० एक० । हटी हुई । र० प्रि० १२-११-३ ।

दधि—सं० पुं० एक० । दही । र० प्रि० । ३-१५-१ । ४-७-४ । १४-३४-१ । १६-६-१ । क० प्रि० ३-३८-१ । ५-७-२ ।

दधि-दूध-चोर—वि० (विशेष्य–श्रीकृष्ण) । दही और दूध की चोरी करनेवाला । र० प्रि० १४-३६-१ ।

दधिमुख—सं० पु० एक० । सुग्रीव का पुत्र । रा० १४-१६-२ ।

दधिसागर—सं० पुं० एक० । पुराणानुसार दही का समुद्र । वि० गी० ४-१४-४ ।

दधीचि—सं०पु०एक० । एक प्रसिद्ध ऋषि । क० प्रि० ६-६३-२ । वी० २-१८ । ज० ११८ । (वृत्रासुर से त्रस्त इन्द्र को भगवान ने बताया कि दधीचि की हड्डियो से बना अस्त्र ही वृत्रासुर के सिर को काट सकेगा । अतः देवताओ ने दधीचि के पास जाकर यह अभिलाषा प्रकट की । दधीचि ने लोक सेवार्थ अपना शरीर त्याग दिया । तब विश्व-कर्मा ने उनकी हड्डियो से वज्र का निर्माण किया जिसके प्रयोग से इन्द्र द्वारा वृत्रासुर का वध हुआ । तब से दधीचि त्याग के प्रतीक बन गए है । त्याग के प्रतीक के रूप मे इनके नाम का प्रयोग मानस से लेकर आज तक किया गया है । —हिन्दी साहित्य कोश, भाग २ ।)

दनुज—[दनु√जन् + ड] सं०पुं० बहु० । दनु के पुत्र—दानव । र० प्रि० १४-४०-१ । वि० गी० २-६-१ । दनुजन–क० प्रि० ४-१५-१ ।

दमकति—क्रि० स्त्री० एक० । चमकती । र० प्रि० १४-१३-३ । रा० ३१-७-२ ।

दमके—क्रि० पुं० एक० । चमका । र० प्रि० १४-७-१ ।

दमयंती—सं० स्त्री० एक० । दमयंती । क० प्रि० ६-४१-२, २ । ८-३७-१ । रा० ६-५६-१ । वी० १-३८-२ । २६-११-१ । (विदर्भ राज भीम की कन्या जो हंस द्वारा गुण-श्रवण करके नैषधराज नल पर अनुरक्त हो गई थी । उसने स्वयंवर मे देवताओ तथा अन्य राजाओ को छोड़कर नल को ही जयमाला पह-नायी । फलतः कुपित होकर कलि ने उन्हे कष्ट दिए । नल हतराज्य होकर दमयती के साथ वन-वन भटकने लगे । एक बार निद्रितावस्था मे दमयंती की आधी साड़ी फाड कर नल ने स्वयं पहन ली और उसे छोडकर चले गये । दम-

यंती अनेक कष्ट सहती हुई सुबाहु नगर पहुँची, जहाँ राज-गृह मे सैरंध्री का कार्य करने लगी। वहाँ से उनके पिता के व्यक्ति ढूँढ कर उसे ले गए। वहाँ जाकर उसने स्वयंवर का मिथ्या समाचार भेज कर नल को बडे सुन्दर उपाय से बुलवाया और उन्हे पहचान लिया।)

दमामे—[फा० दमामः] सं० पुं० बहु०। डंके, नगाड़े। र० प्रि० १०-२१-२। दमामें-क० प्रि० ६-७६-४।

दमिये—क्रि०। दबाइए, दूर कीजिए। रा० २४-१६-१।

दमैती—सं० स्त्री० एक०। दे० 'दमयंती'। र० प्रि० १४-५-३। क० प्रि० ११-६३-२।

दया—सं० स्त्री० एक०। रहम, करुणा, कृपा। र० प्रि० १-५-१। क० प्रि० १-१७-२। ६-३०-२। ११-२४-१। ११-३-२। ११-३-३। ११-७७-४। रा० ७-३७-४। वि० गी० १३-३२-१।

दयादान को कल्पतरु—वि० (विशेष्य—प्रताप रुद्र)। कल्पवृक्ष के समान दया एवं दान करने वाला। क० प्रि० १-१७-२।

दयाल—(१) सं० पुं० एक०। नरम दिल-वाला। र० प्रि० ११-३-२। (२) वि० (विशेष्य—देवपुत्र)। दया रखने-वाला, कृपालु। र० ८-६-२। ज० १६८-३।

दयालु मन—सं० पुं० एक०। दयायुक्त व्यक्ति का हृदय। क० प्रि० ६-१८-१।

दयासिन्धु—वि० (विशेष्य–साहि सलेम)। दया का सागर। अत्यन्त कृपालु। वी० ६-६-३।

दयौ—क्रि०। दिया तो, दिया। र० प्रि० १-२६-२। रा० १-१७-२। ६-३-२। १६-८-३। १६-६-१। ३४-१६-२। ३६-४-?।

दर—सं० पुं०एक०। छोटा द्वार, खिड़की। क० प्रि० १०-१६-१।

दरबार--सं० पुं० एक०। वह स्थान जहाँ बादशाह या सरदार की कचहरी लगती हो, राजसभा। क० प्रि० २-१६-२। ६-७६-४। १३-३७-२। १३-३७-३। रा० ८-४-१। वी० ३-५२। ज० ४१-८८। वि० गी० ६-५१-१।

दरवाजा—सं० पुं० एक०। किवाड़। वी० १६-६-१।

दरस—१-सं० पुं० एक०। रूप सौन्दर्य। र० प्रि० ४-१-१। २–पुं० बहु०। दर्शन। रा० २०-३४-४। वि० गी० १३-८१-१।

दरसन—१–सं० पुं० एक०। तत्वज्ञान करानेवाला शास्त्र। क०-प्रि० १-३-२। २–पुं० एक०। साक्षात्कार। र० प्रि० ४-१-२। १-३४-१। ६-७२-३। १५-३०-१। रा० १-३-२। छं० २-३८-४। वि० गी० १३-१-२। दर्सन-र० प्रि० ३-७४-२। वि० गी० १६-२३-२। ३ पुं० बहु०। दर्शन के षट्शास्त्र जिनमे छ आस्तिक, सांख्य, योग, वैशेषिक, न्याय, मीमांसा और वेदान्त तथा छ. नास्तिक चार्वाक, जैन, माध्य-

मिक, योगाचार, सौप्रान्तिक और वैवाहिक-प्रधान माने जाते हैं। क० प्रि० ६-७८। वी० २६-३६।

दरसन-रस—सं० पु० एक०। साक्षात्कार से होनेवाला आनन्द। र० प्रि० ६-३०-२। रा० २१-११-२। दर्सन-रस—र० प्रि० ३-७४ २।

दरसाइ—क्रि० पु० बहु०। दर्शन कराए। र० प्रि० १०-१७ १। रा० २०-२८-१।

दरसाए—क्रि०। दरसाने पर भी। रा० १४-२६-१।

दरसावै—क्रि० पु० बहु०। दरसाएँगे। रा० १३-६४-२।

दरसी—क्रि० पु०एक०। दर्शन किया, देखा। रा० ५-३-२।

दरसे—क्रि० पु० एक०। रा० ७-१५-२। १४-२६-२। (देखो) ३२-१३-१।

दरसै—क्रि० पु० बहु०। दिखाई पड़ते हैं। र० प्रि० ४-१-१। रा० ८-२-१। १२-४८-२।

दरसै—क्रि० पु० बहु०। दिखाई पड़ते है, दर्शन करें। र० प्रि० ४-४-४। रा० १३-२६-१। १५-३४-१। २०-३२-२। २०-४७-४।

दरार—सं० स्त्री० एक०। रेखा की तरह का लंबा छिद्र जो सूखी धरती, दीवार या लकडी आदि मे फटने के कारण पड जाता है। र० प्रि० १-१४-४। क० प्रि० १२-११ ४।

दरिद्र—[√दरिद्रा + अच्] १—सं० पुं० एक०। दारिद्र्य। रा० २८-७-२। ज० १३-५७। २ पु० एक०। योद्धा का नाम। वि० गी० ६-३६-१।

दरिद्री—वि० (विशेष्य—दरिद्र) जिसे रहने के लिए भी स्थान नही मिलता। रा० २८ ७-२।

दरियाखान—सं० पुं० एक०। एक पठान का नाम। वी० ६-६१। १४-४४।

दरी—[दरि + ङीप्] सं० स्त्री० एक०। गुफा। क० प्रि० ७-८-१। रा० १०-१४-३। बहु०—दरीन, गुफाएँ। र० प्रि० ११-१८-१। क० प्रि० ७-६-४। ७-३०-२। ८-३४-३। १४-३५-२। १५-१०६-२।

दर्पन—[√दृप् + णिच् + ल्यु] सं० पुं० एक०। आइना, शीशा। र० प्रि० १-२२-२। ४-४-३। रा० ८-११-१। वी० २५-१३३। वि० गी० १४-३८-१।

दर्पंरूरे—वि० (विशेष्य—दंति)। मदमत्त। रा० २८-२-२।

दल—[√दल् (भेद करना) + अच्] १—सं० पुं० एक०। सेना। क० प्रि० ५-२६-३। रा० ३-२७-२। छं० २-१५-२। २—पु० बहु०। पत्ते। र० प्रि० ६-६-२। ६-३२-३। ७-११-१। क० प्रि० ६-२७-४। १२-६-१। १२-३२-४। १३-५-१। १५-२१-१। १५-२३-४। १५-३८-१। १५-६५-१। दलन—क० प्रि० ७-३०-१। १५-८-१। ३—पुं० एक०। समूह, झुण्ड। र० प्रि० ५-३७-२। क० प्रि० ६-७५-४। रा० २१-५२-२। वी० ३-१७। वि० गी० १-२७-२। दलु—रा० ६-१३-१। ४—पु० बहु०। कलियो के ऊपर की पंखु-

डियाँ। र० प्रि० १०-८-१। क० प्रि० ७-३२-२। पु० एक०। पंखुडी। वी० ८-५७-२। ५-पु० एक०। पत्ता। वि० गी० १९-७-३। स्त्री० बहु०-सेनाएँ। र० १-६-१।

दलति—क्रि०। पीस डालना। रा० १४-३७-३।

दलपति—सं० पु० एक०। सेनापति। क० प्रि० ८-१-१। वि० गी० ६-३२-१।

दलिए—क्रि०। दमन कीजिए। रा० ९-१३-१।

दलो—क्रि० पुं० एक०। दला, नष्ट कर दिया। रा० २१-४१-१। १२-२३-१।

दल्यो—क्रि०। पु० एक०। दलित किया। रा० १२-२३-१। २०-२१-२।

दवारि—सं० स्त्री० एक०। दावानल। (वन की आग जो बाँस आदि के रगड खाने से स्वत. लग जाती है)। र० प्रि० १३-२०-१।

दशमुख—१-स० पु० बहु०। दसो दिशाएँ (दशमुख—ब्रह्मा, विष्णु, शिव) रा० १-१-४। दसमुख-क० प्रि० ६-६६-४। २-पु० बहु०—दस मुखोवाला रावण। रा० १३-६१-१। १५-१६-१। १९-२२-२।

दशरथ—स० पुं० एक०। राजा दशरथ। रा० १-२२-१। १-२९-२। १४-६-१। २-६-२। ५-३०-१। ५-३२-१। ६-२-१। ६-१५-१। ६-६५-३।

दशरथनंद—वि० (विशेष्य—रघुनाथ) राजा दशरथ का पुत्र। रा० १३-७३-२।

दशा—सं० स्त्री० एक०। हालत। रा० १३-९-३। १५-२४-१। ३१-१९-१। ३३-२९-२।

दस—वि० (विशेष—बाहु) संख्या विशेष, १०। र० प्रि० ८-८-२।

दस-अवतार—सं० पु० बहु०। विष्णु के दस अवतार (मत्स्य, कच्छप, वराह, नरसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध और कलि, क० प्रि० ११-२१-१।

दसकंध—स० पु० एक०। रावण। रा० १५-१४-२। १८-२४-४। वि० गी० ८-८-१। दसकधर-वी० १३-१५-१।

दसग्रीव—स० पुं० एक०। रावण (दस-ग्रीवो से युक्त)। रा० १६-५६-१। १७-३८-१। १८-२५-२। १८-२८-२। ३४-५०-१। वि० गी० ११-२७-१।

दस चारि—वि० (विशेष्य—विद्या)। चौदह (१०+४) क० प्रि० ८-२०-१।

दसन—१-सं० पुं० एक०। दाँत। क० प्रि० ५-१०-१। ११-५-२। २-पुं० बहु०। रदन, दाँत। र० प्रि० ३-३४-२। ५-२७-१। ६-३७-२। १३-५-१। १४-३-१। १४-७-१। १४-१३-२। क० प्रि० १५-३७-२। १५-५१-३। वी० ८-१७-२।

दसन के वास—स० पुं० एक०। दाँतो के आवरण-होठ। र० प्रि० १४-३-१।

दसन-दुति—स० स्त्री० एक०। दाँतो की दीप्ति। र० प्रि० १४-१३-२।

दसन-वसन—सं० पुं० बहु०। दाँतो के वस्त्र-ओष्ठ। र० प्रि० ५-२७-१

दसमुख-मुख—सं० पुं० एक०। १-रावण का मुख-रावण के पक्ष मे। २-सूर्य का

मुख-सूर्योदय के पक्ष मे। क० प्रि० ७-२४-१।

दसग्रीव हंता—(१) सं० पुं० एक०। रावण के मारनेवाले राम। वि० गी० ११-२७-१। (२) वि० (विशेष्य—राम) दस मस्तक वाले रावण का वध करनेवाले। रा० ३४-५०-१। वि० गी० ११-२७-१।

दसरथ—सं० पुं० एक०। अयोध्या के एक प्राचीन सूर्यवंशी सम्राट जो राम के पिता थे। क० प्रि० ५-१०-४। ५-११-४। ५-१२-४। ८-१०-४। छं० १-२३-३। वी० १८-२६-२। वि० गी० १-२३-३। दसर—रा० १-२६-२।

दसरथ के मित्र—वि० (विशेष्य—वशिष्ठ) राजा दशरथ का मित्र। वी० १८-२६-१।

दससत—वि० (विशेष्य—लिपिकार)। एक हजार। वी० २७-५-१।

दस सहस्र दस सै—वि०(विशेष्य— वरष)। दस सौ हजार। २८-२०-१।

दस सीस—(१) सं० पुं० बहु०। क० प्रि० ६-३-२। (२) वि०(विशेष्य—राकस)। दस सिरवाला रावण। रा० ४-३-१।

दस सृग जुग—वि०(विशेष्य—कलिंदगिरि) दस शिखरो सहित। रा० १५-४०-२।

दस हजार—वि० (विशेष्य—वरषैं)। संख्या विशेष—१०,००० । वि० गी० १६-२५-१।

दसहुं—वि० (विशेष्य-दिस)। दसो, १०। क० प्रि० ६-१२-२।

दसा—(१) सं० स्त्री० बहु०। वियोग की दस दशाएँ—अभिलाषा, चिन्ता, स्मरण, गुण-कथन, उद्वेग, प्रलाप, उन्माद, व्याधि, जड़ता, मूर्छा। र० प्रि० ८-८-२। क० प्रि० ११-२१-२। (२) स्त्री० एक०। अवस्था, युवापन—देह के पक्ष मे। चिराग की बत्ती—दीपक के पक्ष मे। क० प्रि० १३-२८१। ३—स्त्री० एक०। अवस्था, स्थिति। र० प्रि० ६-४३-३। ८-३०-२। ८-३३-४। १०-१७-१। ११-३-२। क० प्रि० १६-४६-४।

दसो—वि० (विशेष्य—दिसा) दस—१०। वी० ३-१३-२।

दसंत—क्रि० पु० एक०। दिखाते हैं। रा० २७-१८-३।

दहही—क्रि० पु० एक०। देता है। रा० ६-२५-२।

दहिए—क्रि० स्त्री० एक०। जलती हो, दुःख पाती हो। र० प्रि० ६-३४-१।

दहीं—क्रि० स्त्री० एक०। र० प्रि० १३-२०-२। रा० १६-४-३। ३३-२६-२।

दहे—क्रि० पु० बहु०। दहने लगे। र० प्रि० ८-२३-१। रा० ७-४८-३।

दहेली—वि०(विशेष्य—देह)। ठिठुरी हुई। र० प्रि० १६-५-१।

दहै—क्रि० पुं० एक०। जलाता है। क० प्रि० ३-२५-२। रा० १२-४२-२। १६-७-१।

दहैगो—क्रि० पु० एक०। दहाएगा, जलाएगा। र० प्रि० ६-३४-१।

दाई—सं० स्त्री० एक०। परिचारिका। र० प्रि० ५-१५-१।

दाउ—१–सं० स्त्री० एक० । दावानल, दावाग्नि । क० प्रि० ३-४२-२ । १२-६-२ । २–पुं० एक० । दाँव, जुएँ । आदि के खेल मे जितानेवाली चाल । क० प्रि० १२-३०-२ ।

दाख—१-सं० स्त्री० एक० । अंगूर । र० प्रि० ३-१०-४ । १४-३०-१ । वी० २३-३०-२ । स्त्री० बहु०—दाखें । र० प्रि० १४-२९-१ । पुं० बहु० दाखन । क० प्रि० ६-४९-१ । २–पुं० एक० । खदा–वस्त्र विशेष । क०प्रि० ६-४९-१ ।

दाडिम—[दाल + इमप्-ल-ड] १–सं० पुं० एक० । अनार । र० प्रि० ८-२३-२ । क० प्रि० ५-३१-१ । १४-६-२ । १४-१७-२ । रा० ३२-१२-१ । वी० २२-४९ । २२-६३ । दाडिमी–वि० गी० १६-६-१ । २–पुं० बहु० । अनार के दाने । र० प्रि० ८-२२-२ । १४-२२-२ । क० प्रि० १५-३७-२ ।

दाता—सं० पुं० एक० । दान करनेवाला । वी० १-३५ । १-५१ ।

दातौनी—सं० स्त्री० एक० । नीम आदि की गीली टहनी का वह टुकड़ा जो दाँत साफ करने मे काम आता है । वी० २२-४ ।

दादुर—[दर्दुर] सं० पुं० एक० । मेढक । क० प्रि० ७-३१-१ । रा० ६-६६-३ ।

दान [√दा + ल्युट] १–सं० पुं० एक० । धर्म की दृष्टि से या दयावश किसी को कोई वस्तु देने की क्रिया–र० प्रि० । १ ५-१ । ५-३३-१ । ८-५२ ४ । १५-३-३ । १६-१-७ । १६-९-१ । क० प्रि० १ १५-१ । १-१७-२ । ३-३८-४३ १ । ६-३७-३ । ७-३-१ । ७-१२-२ । ८-४-१ । १०-३१-५ । ११-३-३ । ११-३-४ । ११-४-३ । ११-४०-४ । ११-७७-२ । १५-११६-१ । रा० ८-१५-२ । ९-१४-१ । २१-३-४ । २१-४-२ । २१-६-२ । २१-१०-१ । २१-११-१ । २१-११-२ । २१-१२-२ । २४-१५-१ । २५-१८-१ । २९-११-२ । ३०-२२-७ । ३०-२६-३ । ३५-२-१ । ३५-७-१ । ३५-३५-४ । ३९-१८-१ । छं० १-२१-४ । १-५७-५ । १-६१-३ । र० १-२४-५ । वि० गी० १-१६-२ । १-२४-१ । १-२९-१ । ३-७-३ । ६-२४-१ । ८-३८-२ । ९-११-१ । ९-२४-१ । ९-२५-१ । १२-२२-३ । १३-५५-२ । १६-४३-२ । १६-८९-१ । २१-५५-१ । पुं० बहु० वि० गी० १५-२४-१ । २–पुं० एक० । १–दातृत्व–दान के पक्ष मे । २–मद, मस्ती–कृपाण के पक्ष मे । क० प्रि० ११-४०-४ । ३–पुं० बहु० छेदन । र० प्रि० ४-४१-१ । ४–पु० एक० । कुछ देकर दूसरे को वश मे करने की रीति, मान-मोचन की एक पद्धति । र० प्रि० १०-२-१ । १०-६-२ । ५–पु० एक० । किसी के द्वारा मुफ्त मे दी गई वस्तु । र० प्रि० १०-७-१ ।

दान गति—स० पु० बहु० । दानशीलता । क० प्रि० ६-६७-३ ।

दाननि—सं० पुं० बहु० । दाता । क० प्रि० ८-१०-१ । पु० बहु० दानिन । दानियो मे । वि० गी० १-२३-१ ।

दाननि के शील—वि० (विशेष्य—कुमार

दसरथ राइ के) अत्यन्त दानी । क० प्रि० ८-१०-१ ।

दानव—[दनु + अण्] सं० पु० बहु० । राक्षस कश्यप के पुत्र जो दनु के गर्भ से उत्पन्न हुए थे । वि० गी० १६-३-१ । १६-५८-२ ।

दानमानकारी—वि० (विशेष्य—करि) दान देकर सम्मान करनेवाला । रा० ३०-१६-१ ।

दान मीन मानस—वि० (विशेष्य—जहाँगीर) । दान रूपी मीन को मानस के जैसे जीवन (जल) देने वाला । ज० ११७-२ ।

दान-रतन—सं० पु० बहु० । श्रेष्ठ दाता । क० प्रि० १५-११६-१ ।

दानव—सं० पु० बहु० । दैत्य असुर । क० प्रि० ६-७१-२ ।

दानवारि- (१) सं० पु० एक० । विष्णु । क० प्रि० ८-१०-१ । (२) वि० (विशेष्य—कुमार) दानशील । रा० ५-३१-१ ।

दानवारि सुखद—वि० (विशेष्य—राज ब्रजराम, परशुराम, अमरसिंह) क० प्रि० ११-३२-१ । श्लेष से:—१–राम के पक्ष मे–जो इन्द्र को सुख देनेवाले हैं। (दुर्वासा के शाप से जब इन्द्र श्रीविहीन हुए तब विष्णु के आदेश से उनके कूर्मावतार–रूप लेने से तथा वासुकि की सहायता से समुद्रमंथन हुआ जिसके फलस्वरूप इन्द्र को श्री, सम्पत्ति, अमृत आदि प्राप्त हुए) । २–ब्रजराम के पक्ष मे–जो कृष्ण की सहायता करनेवाले हैं। ३–परशुराम के पक्ष मे–दान संकल्प का बल जिसे सुखद है। परशुराम का संकल्प था समस्त भू-मंडल को क्षत्रिय-विहीन करना । इस कार्य मे वे खुशी मानते थे । ४–अमरसिंह के पक्ष मे–जो देवताओ को यज्ञादि करके सुख देते थे ।

दानविधान—सं० पु० एक० । दान करने की पद्धिति । क० प्रि० ८-३०-२ । रा० १-२४-२ ।

दानविधान निवास—वि० (विशेष्य—कृपान) । अभयदान देने की क्षमता जिसमे हो । वी० १०-४-२ ।

दानवी—सं० स्त्री० एक० । असुर स्त्री । र० प्रि० ३-५२-३ ।

दानवीर—वि०(विशेष्य—गोपाल) । अत्यन्त दानी । ज० ८५-३-२ ।

दान समुद्र—वि० (विशेष्य—वीरसिंह) । अत्यन्त दानी । वी० ३२-२६-१ ।

दान सहित—वि० (विशेष्य—गजनी के साह) । गजमद से युक्त । क० प्रि० १५-११६-२ ।

दान सिन्धु—वि० (विशेष्य—देवसिंघ) । अत्यन्त दानशील । ज० ७१-१ ।

दानसील—सं० पु० एक० । जिसका स्वभाव दान देने का हो । दाता । क० प्रि० ६-२०-१ ।

दानहि धरे—वि० (विशेष्य—लोम) । दान को धारण किये हुए । चूंकि लोम हाथी का उपमान है, दान का अर्थ हुआ रा, इसलिए राम का धारण किये हुए—ऐसा अर्थ भी लगा सकते हैं । रा० ८-१५-२ ।

दानि—(१) १—सं० पुं० एक० । दान करनेवाला पुरुष, दाना । क० प्रि० १-३६-१ । ६-६२-२ । ११-३१-१ । वी०

१४-१३-१ । दानी—र० १-१५-१ । २—पुं० एक० । दानि-वर्णन —वर्ण्यालंकार का एक भेद जिसमे दाताओ का वर्णन होता है। क० प्रि० ६-३-१ । (२) वि० (विशेष्य—वीरसिंघ)। दान देनेवाला । वी० २७-२५-१ ।

दानिनि के दानि—वि० (विशेष्य—रुद्र, समुद्र अमरसिंह) । क० प्रि० ११-३१-१ । श्लेष से :—१—रुद्र के पक्ष मे—बड़े-बडे दानियो के दानी । देवताओ को भी दान देने वाला । २—समुद्र के पक्ष मे कल्पवृक्ष, कामधेनु, लक्ष्मी आदि दानियो को भी देनेवाले (समुद्र-मथन के समय निकले थे)। ३—अमरसिंह के पक्ष में—दानियो के दानी (जिसको दान देता है, वह इतना धनवान होता है कि दूसरो को भी दान दे सकता है ।)

दानिनि के शील—वि० (विशेष्य—कुमार)। दानियो जैसे स्वभाववाले । रा० ५-३१-१ ।

दाम—[√दा+मनिन्] १—सं०पु० एक०। मूल्य, कीमत । क० प्रि० १२-१३-१ । २—पुं० एक० । रस्सी । रा० ३६-१६-२ ।

दामिनि—सं० स्त्री० एक० । बिजली । र० प्रि० १४-३८-३ । क० प्रि० ३-८-४ । ५-१६-२ । ६-२६-२ । १२-१७-१ । १३-२-४ । रा० ६-३७-२ । २६-२१-२ । वि०गी० १०-१-२ । दामिनी—र० प्रि० ४-११-३ । ६-८-४ । ७-२८-२ । १०-२७-१ । १२-१४-१ । १३-१२-१ । क० प्रि० १३-२६-२ । १५-४०-१ । १५-४१-३ । १५-६१-१ । १५-६२-२ । वी० ८-३६ । वि० गी० १६-६-१ दामिनीयै—र० प्रि० ३-५२-२ ।

दामोदर—[दामन्+उदर] सं०पु० एक० । एक राजपूत जो वीरसिंह के हाथो हार गया था । वी० ४-५५ ।

दायक सुकीर्ति—वि० (विशेष्य—गणेश) अच्छी कीर्ति देनेवाले । र० प्रि० १-१-३ ।

दायजो—सं० पुं० एक० । दहेज । रा० ६-६३-८ । ६-६४-४ ।

दारा—[√द+णिच्+अच्] सं० स्त्री० एक० । पत्नी । वी० ३२-३८ । ज० १५५, १५६ । १६० ।

दारिद—[दरिद्र+ष्यञ्] सं० पु० एक० । धनहीनता, गरीबी । क० प्रि० ६-३३-२ । ६-३४-४ । ६-७-४ । ११-३०-४ । १२-११-४ । दारिद्र—ज० ७१ । ८३ । वि० गी० १-१३-२ ।

दारिद-देह—सं० स्त्री० एक० । गरीबी की छाती । क० प्रि० १२-११-४ ।

दारिये—क्रि० । पीस डालिए, नाश कीजिए। रा०२७-७-१ ।

दारुन—वि० (विशेष्य—ताडका) । भयंकर । रा० ३-१०-२ । वी० ३३-४६-१ । वि० गी० २-१९-२ ।

दार्‌यो—सं० पु० बहु० । दाडिम या अनार के दाने । र० प्रि० १३-५-१ । क०प्रि० ६-१९-२ । ६-४९-१ ।

दार्‌यो फल—सं० पुं० एक० । अनार । रा० २७-८-४ ।

दाव—[√दु+ण] १—सं० पु० एक० । दावानल, दावाग्नि (वन मे लगनेवाली अग्नि)। क० प्रि० ६-४८-२ । दव—क० प्रि० ७-६-२ । दावा—रा० ६-२६-२ । दावानल—र० प्रि० १-२-४ । २—पु० एक० । काम करने का उपयुक्त अवसर। रा० १७-१६-२ ।

दाव ज्वाला—सं० स्त्री० एक० । दावानल की ज्वाला । रा० १४-६-२ ।

दास- [√दंश्+ट, आत्व] १—सं० पु० एक० । सेवक, भृत्य, नौकर । र० प्रि० ५-१६-१ । ६-३७-३ । १४-२२-४ । क० प्रि० २-१७-१ । ८-१०-२ । १५-२२-२ । १६-५२-२ । रा० १-१-३ । ६-६४-३ । ५-३१-२ । ११-३८-१ । १२-२७-२ । १३-५६-२ । १५-२५-१ । १९-७-२ । २१-२६-१ । २५-३१-२ । २७-२२-२ । २६-२४-२५ । छं० १-१६-४ । १-५६-५ । र० १-२८-१ । १-३४-२ । वी० १-२१ । २२-५१ । वि० गी० १-२६-१ । ८-१७-२ । १७-४-३ । १७-४६-२ । १८-१६-१ । २—पु० बहु० । दास-गण—छन्द शास्त्र मे भगण और यगण दास-गण माने जाते हैं। क० प्रि० ३-२५-१ । ३-२७-१ ।

दास एक द्विज जाति को—वि०(विशेष्य—वीरसिंह) । ब्राह्मणो का ही दास । वि० गी० १-३६-२ ।

दास दुज गाइ के—वि० (विशेष्य—कुमार दसरथ राइ के) । ब्राह्मण और गाय के सेवक । क० प्रि० ८-१०-२ ।

दास मनोवच कायक—वि० (विशेष्य—केसव) । मन वचन कर्म से (श्रीराम का) दास । रा० २४-२८-२ ।

दासि—सं० स्त्री० एक० । सेवा-टहल करने वाली स्त्री (परिचारिका)। क०प्रि० ११-५६-५ । रा० ६-६४-२ । ७-६-३ । ११-३८-२ । दासी—क० प्रि० ८-७-३ । ११-७७-२ । रा० ६-२३-१ । १६-२२-१ । १६-२३-१ । १३-२७-१ । वी० ७-४६ । ८-२० । ६-५ । वि० गी० ७-१०-३ । १०-१८-४ । स्त्री० बहु० । दासिनि । र० प्रि० १३-२०-१ ।

दाह—[√दह्+घञ्] सं० पु० एक० । जलन । र० प्रि० १३-१२-३ । छं० २-३७-६ । दहन—रा० ६-२६-२ ।

दाहत हीं—क्रि०। दाहते ही । दाहने से ही । र० प्रि० ६-१६-३ ।

दाहु—(१) सं० पु० एक० । दाह, वेदना । रा० ३६-१६-२ । (२) क्रि० । जला दे । रा० ६-८-१ ।

दाहे—क्रि० पु० बहु० । जलाते हैं । रा० रा० २०-४१-२ ।

दिक्पाल—[दिक्√पाल् (पालना) + √णिच् + अण्] सं० पु० बहु० । दिशाओ का पालन करनेवाले—आठ दिक्पाल (इन्द्र, अग्नि, यम, नैर्ऋत, वरुण, वायु, कुबेर, ईशान) । वी० ९-३४ । १२-१५ । १६-१७ । ज० ३२ ।

दिखरावत—क्रि० पु० एक० । दिखाता है। र० प्रि० ८-१२-१ । रा० २६-२६-१ ।

दिखसाध—सं० पु० एक० । देखने की उत्कंठा । र० प्रि० ८-३४-४ ।

दिखाइ—क्रि० पु० एक० । दिखाया । र०

पक्ष मे—दोप रहित। (२) प्रवीन राय के पक्ष मे—व्याकरणानुसार दोपहीन। क० प्रि० ११-८२-२।

अदृष्ट—(१) स० पु० एक०। भाग्य, प्रारब्ध। क० प्रि० ११-५६-१। १२-२९-१। रा० ९-४५-२। १२-२०-४। वि० गी० ८-३२-२। २५-२२-३। २६-६-३। (२) विशेपरण। विशेष्य—वस्तु। जो दिखाई न पडती हो। क० प्रि० १५-८३-२। १५-८४। वि० गी० ८-३२-२। १५-११-३। १८-२५-३।

अदेव—(१) स० पु० वहु०। निशाचर, राक्षस। क० प्रि० ३-९-४। ६-७४-३। ७-१९-२। १५-२७-४। रा० ४-१५-३। ६-२०-१। ६-५३-१। ७-४१-३। ७-५४-२। १४-२४-४। १९-१६ २। ३०-१-४। ३७-२३-१। ३९-२०-१। वी० च० १-३१। १-३८। २-१५। ५-२३। छ० मा० २-६०-३। वि० गी० ६-५३-२। २६-५४-३। २६-५९-२। (२) स० पु० एक०। नर जाति, मनुष्य जाति। र० प्रि० ७-५-२।

अदेव देव—(१) सं० पु० एक०। जिसका कोई स्वामी न हो। वि० गी० १८-१३-२। (२) विशेपरण। विशेष्य—श्रीविस्तु। अदेवो के भी ईश्वर। वि० गी० १८-१३-१।

अदेव देव जेय—विशेपरण। विशेष्य—हैहयाधिराज। असुरो और देवताओ को जीतनेवाले।

अदेवद्वेपी—विशेपरण। विशेष्य—देव। निशाचरों के शत्रु रा० १६-३०-१।

अदेवनि—सं० पुं० वहु०। दैत्य, असुर। क० प्रि० ७-२१-२। वि० गी० २२-२७-२।

अदेवी—सं० स्त्री० एक०। राक्षसी। रा० १३-६०-१।

अदोष—विशेपरण। विशेष्य—कैकेयी। दोपरहित, निर्दोप। रा० १०-४२-२।

अदोपनाथ—विशेपरण। विशेष्य—विश्वनाथ। कुकर्म करनेवालो के भी ईश्वर वि० गी० ११-४२-३।

अद्भुत—(१) स० पु० एक०। अद्भुत रस। कसी असाधारण वस्तु को देखकर हमारे हृदय मे विशेप प्रकार का कौतूहल होता है। हम निर्माता के विपय मे सोचते सोचते मुग्ध हो जाते है। यही "आश्चर्य' का भाव किसी वर्णन मे होने से उसमे "अद्भुत" रस का सचार होता है। र० प्रि० १-२-५। १-१५-२। १४-३४-४। १५-४-१। १५-८-१। १६-१३-२। (२) स० पु० एक०। अद्भुतोपमा अलकार। उपमा अलकार का एक भेद। उपमानो मे ऐसे गुणो की कल्पना करना जिनसे युक्त होने पर उससे उपमेय की तुलना की जाय। क० प्रि० १४-२-१। (३) सं० पु० एक०। अद्भुतरूपकालकार—रूपकालकार का एक भेद—जिस उपमेय का जो उपमान परपरा से चला आता है, उसी से उसका रूपक वाँधना और उसमे कुछ अद्भुत कल्पना ही अद्भुतरूपक अलकार है। क० प्रि० १३-१४-२। (४) विशेपरण। विशेष्य—रूप।

प्रि० १३-७-१ । १३-१२-१ । रा० २१-३६-१ ।

दिखाई—क्रि० । दिखाया । दिखायी पड़ी । र० प्रि० ५-२६-५ । ७-२८-४ । १०-२१-४ । १४-३८-४ । रा० ६-१८-४ । १६-२१-२ ।

दिखाऊँ—क्रि० स्त्री० एक० । दिखाऊगी । र० प्रि० ८-४४-५ । दिखाऊँगी । र० प्रि० १२-६-२ ।

दिखायो—क्रि० पु० एक० । दिखाया, दिखलाया । र० प्रि० ३-२३-४ । रा० १७-११-२ ।

दिखाव—क्रि० । दिखाओ । र० प्रि० ८-४-१ । दिखावहु—रा० २०-१-२ ।

दिखावन—क्रि० । दिखाना । र०प्रि० १२-६-१ ।

दिखावै—क्रि० । दिखाए । र० प्रि० ३-३५-२ । ४-१७-८ । ५-७-२ ।

दिखैयै—क्रि० । दिखलाने । र०प्रि० ८-३४-३ ।

दिगन्त—[दिक् + अन्त] सं० पु० एक० । दिशा का छोर । र० ३-२०-१ । पु० बहु० दिगन्तनि । वि० गी० १६-७-१ ।

दिगम्बर—[दिक् + अम्बर] । (१)१—सं० पु० एक० । जैन सम्प्रदाय । वि० गी० १२-७-३ । २- पु०एक० । नंगा व्यक्ति । क०प्रि० १४-२१-२ । (२, वि० (विशेष्य–बनवारी) श्लेष से —१—खुली हुई । पुष्पवाटिका के पक्ष मे । २—नगी वनवासिनी कन्या के पक्ष मे । रा० १-३४-२ ।

दिगम्बरा—(१) सं० पु० एक० । दिशा-रूपी स्त्री । वी० १३-२१ । (२) वि० (विशेष्य—अम्बर) । शून्य । वी० १५-२७-१ ।

दिगपाल—[दिक् - पाल] सं० पु० बहु० । दे० 'दिकपाल' । क० प्रि० ११-१६-१ । रा० १-२३-२ । पु० बहु० दिगपालन । क० प्रि० ६-३२-४ ।

दिगपाल गयंद—सं० पुं० बहु० । वे हाथी जो पृथ्वी को सँभालने के लिए दिशाओ मे स्थित माने जाते हैं । (दे० दिग्गज) रा० ६-३-१ । दिगपाल गयंदन । रा० ४-३-१ ।

दिग्गज—[दिक् + गज] सं० पु० बहु० । अष्ट दिग्गज–ऐरावत, पुडरीक, वामन, कुमुद, अंजन, पुष्पदंत, सार्वभौम, सुप्रतीक । क० प्रि० ११-१६-२ । रा० १-२९-१ ।

दिग्दन्ति—सं० पु० बहु० । दे० 'दिग्गज' रा० ३४-४६-२ ।

दिग्देव—सं० पुं० बहु० । देवपाल (दे० दिकपाल) । रा० ७-४८-२ ।

दिग्भामिनी—सं० स्त्री० एक० । दिशा रूपी सुन्दरी । रा० ५-१०-६ ।

दिढबल—वि० (विशेष्य—गोविन्द) । अति बली । क० प्रि० १६-१६-१ ।

दिति—[√दो + क्तिच] सं० स्त्री० एक० । दैत्यो की माता जो दक्ष प्रजापति की कन्या और कश्यप की पत्नी थी । क० प्रि० ११-५६-५ । वी० १८-२१ । वि० गी० १८-४०-१ ।

दिति-कुल-कमल-हिमेस—(१) सं० पुं० एक० । दैत्य विरोधी रामचन्द्र । (२) वि० (विशेष्य–श्रीविष्णु) । राक्षस कुल

के हिमेश, जिस प्रकार कमल को हिम हानि पहुँचाता है उसी प्रकार राक्षस कुल रूपी कमल को आघात पहुंचानेवाले हैं। वि० गी० १८-१५-१।

दितिसुत—सं० पु० बहु०। दिति के पुत्र—असुर, दैत्य। क० प्रि० १५-२०-२। पु० बहु०। दितिसुतनि। क० प्रि० ४-१५-१।

दितिसुत सुखनि—असुरो का भोग विलास। क० प्रि० १५-२०-२।

दिन—[√दो + इनच्] १—सं० पु० एक०। वह समय जिसका आरम्भ सूर्योदय से और अन्त सूर्यास्त से होता है। र० प्रि० ३-१६-२। ८-५-२। ८-६-३। ८-७-३। ८-११-२। ८-१३-२। १०-६-२। १०-१६-४। ११-३-१। ११-६-३। १४-३१-३। १४-३६-४। क० प्रि० १-३६-६। १-५१-२। २-१८-२। ३-२५-२। ३-४०-२। ६-४०-३। ६-४२-१। ६-४६-१। ६-१८-३। ६-२०-१। १०-१०-४। १०-१२-१। ११-५०-२। १३-१६-३। १५-११२-२। १६- ७-१। रा० ५-३२-२। ६-२-२। ६-३२-४। ८-२०-२। १३-२२-१। १४-१८-१। ३८-१०-१। वी० १-३। १-२५। १-३१। १-५४। १-५५। १-६१। २-३। २-२६। २-३२। ५-१३। ५-२०। ४-५५। ६-४६। ६-२१। १०-२०। १६-१४। १८-६। वि० गी० १-१६-२। ६-२४-२। ६-६३-१। १४-२-४। २-पु० एक०। प्रत्येक दिन। हर रोज। र० प्रि० ३-१६-४। क० प्रि० ६-६-४-२। छं० १-६६-७। ३—पु० बहु०। रोज। र० प्रि० ४-६-४। ४—पु० एक०। मौका, समय। र० प्रि० १३-४-२।

दिनकर—१-सं० पु० एक०। केशवदास के वंशज। क०प्रि० १-६-२। २-पु०एक०। सूर्य। रा० ८-१३-१। वी० ११-२६।

दिनकृत—१-सं०पु० बहु०। हर एक दिन के काम—सूकर के पक्ष मे। २-पु०एक०। सूर्य—ग्रीष्म के पक्ष मे। क० प्रि० ७-३०-२।

दिन दुष्ट निकंदन—वि० (विशेष्य-श्री रघुनन्दन)। नित्य प्रति दुष्टो का दमन करने वाला। रा० ३०-२४-१।

दिनमनि—सं० पु० एक०। सूर्य। र० प्रि० १०-२१ २।

दिनमान—सं० पु० एक०। सूर्योदय से सूर्यास्त तक का मान। क० प्रि० ६-१८-३। रा० ३-८-२। छं० १-५५-४।

दिनेस—सं० पु० एक०। सूर्य। ज० १। वि० गी० ४-२५-३। दिनेस जू (आदरार्थक)। क० प्रि० ६-५-३।

दिनेस जू के मित्र अति—वि० (विशेष्य—कमल)। सूर्य का बड़ा मित्र (सूर्य को देखकर खिल उठनेवाला)। क० प्रि० ६-५-३।

दिपति—दीप्ति—सं० स्त्री० एक०। क्रांति, प्रकाश। र० प्रि० १०-२७-२।

दिपै—क्रि० स्त्री० एक०। दीप्त होती है। रा० २२-८-३।

दिय—क्रि० पु० एक०। दिया, दिया गया। रा० ४-१४-१। ६-६६-१। ३०-३४-२।

दिया—सं० स्त्री० एक० । दीपक । रा० १४-२४-१ ।

दिये—क्रि० पु० एक० । दे दूँगा, दिया । र० प्रि० २-१५-२ । रा० २-२०-२ । १०-१३-२ । ३५-२७-२ ।

दियो—क्रि० । दिया, दीजिए, दो । र०प्रि० ५-३०-४ । ६-५६-३ । ६-५६-४ । ८-३६-३ । १३-६-२ । १४-११-४ । रा० ५-६-२ । ६-६३-४ । ७-६-३ । ६-४-१ । १०-३४-१ । १५-२७-२ । १६-१३-१ । १७-४२-२ । १६-११-२ । २०-३०-२ । २१-३१-१ । २३-१५-१ । २७-१७-४ । ३०-३६-२ । ३३-६-१ । ३४-३१-२ । ३५-२-१ । ३८-१५-२ ।

दियो भगाइ—सं० क्रि० पु० एक० । भगा दिया । रा० १७-४२-१ ।

दिली—सं० स्त्री० एक० । यमुना के किनारे बसी हुई उत्तर भारत की प्रसिद्ध नगरी जो आजकल भारत की राजधानी है । क० प्रि० १२-६८-२ । दिल्ली वी० ४-७ । ज० १०० । वि०गी० २-२४-१ ।

दिल्ली के मित्त—वि० (विशेष्य-रामहि) । दिल्ली के बादशाह का मित्र । वी० ४-१२-२ ।

दिव देविन—सं० स्त्री० बहु० । स्वर्ग लोक मे रहने वाले देवताओ की पत्नियाँ । छं० १-७३-६ ।

दिव रमनी—सं० एक० । अप्सरा । क० प्रि० १५-१०८-२ ।

दिवस—सं० पु० एक० । दे० दिन । रा० २६-१५-२ । वी० १६-२१ । वि० गी० १३-४४-१ ।

दिवान—१–सं० पु० एक० । स्वर्ग । क० प्रि० ७-१५-४ । २–पु० एक० । राज-सभा, दरबार । क० प्रि० ११-८०-२ ।

दिवाय—क्रि० दिलाकर । र० प्रि० ४-१५-१ ।

दिवारी—सं० स्त्री० एक० । दीवाली । रा० २८-१०-१ । २६-१६-१ ।

दिवावै—क्रि० । स्त्री०एक० । दिलवाती है । र० प्रि० ७-५-३ ।

दिवि—१–सं० पु० एक० । आकाश, नभ । क० प्रि० ५-३३-२ । रा० १-३६-४ । ५-१२-३ । १६-१२-१ । २१-५५-१ । २२-३-१ । २२-७-२ । ३०-३५-२ । ३२-२४-१ । ३३-५३-१ । २–पु० एक० । स्वर्ग लोक । वी० २२-३७ । वि० गी० १६-२१-३ । १८-३०-२ । २०-६३-१ ।

दिव्य—वि० (विशेष्य—अभिलाषा) । उत्तम, श्रेष्ठ । र० प्रि० ३-४-४ ।

दिव्य जल भरे—वि० (विशेष्य—कलस) । दिव्य जल से भरे हुए । वी० ३३-४-१ ।

दिव्य दृष्टि—सं० स्त्री० एक० । आंतरिक दृष्टि । वि० गी० ८-१५-१ ।

दिसा—१–सं० स्त्री० एक० । क्षिति मंडल के चार—पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर—भागों मे से एक । र० प्रि० ३-१०-२ । क० प्रि० १-२२-२ । १२-१६-२ । वि० गी० ६-६-२ । दिसि—क० प्रि० ३-५०-२ । ५-३३-४ । ६-२७-४ । १२-१७-१ । छं० २-२-१ ।

२-२-१ । २-३७-४ । वी० १-७ । १-१० । २-३८ । ३-१३ । ५-८५ । ६-४३ । ७-१५ । ८-५३ । १०-२० । ११-२ । १२-१४ । १५-७ । १६-१२ । १७-५ । २१-१० । २४-१७ । ३१-२२ । ३२-२२ । वि० गी० ३-२६-२ । ६-५७-४ । १०-१५-२ । १०-२१-२ । २-स्त्री० बहु० । चारो दिशाएँ । क० प्रि० १-२२-२ । वि० गी० ६-६-२ । र० प्रि० ३-७३-३ । क० प्रि० १-१५-१ । ३-स्त्री० बहु० । पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण तथा विदिशाओ और कोणो तथा ऊर्ध्व, अधर का मिलाकर इनको सख्या दस है । क० प्रि० ११-२१-२ । दिसि-क० प्रि० १-३३-१ । १२-२-४ ।

दिसि-दिसि—सं० स्त्री० एक० । प्रत्येक दिशा । क० प्रि० ६-७-४ । ७-२८-३ । ७-३४-२ । ८-५-४ ।

दी—क्रि० पु० एक० । दिया । रा० ३६-३१-१ ।

दीख—क्रि० । देखकर । रा० १४-१६-२ ।

दीजई—क्रि० । दीजिए । रा० १४-३-१ । २३-१०-४ । ३६-२६-२ ।

दीजत—क्रि० पु० । दिया जाता है, देते हैं । रा० ७-२०-१ । २१-५-१ । २१-८-१ । २६-११-१ । ३३-२३-१ । ३५-७-१ ।

दीजिहि—क्रि० । दिया जाय । र०प्रि० १०-१०-४ । रा० २१-३-४ ।

दीजे—क्रि० । दीजिए, देते हैं, दें । र०प्रि० २-७-१ । ८-५२-४ । १०-४-१ । १३-६-४ । १५-१०-२ । क० प्रि० ३-४२-२ । रा० २-१५-२ । ८-१६-४ । ६-१४-१ । १६-८-१ । २१-१-१ । ३१-१०-३ । ३३-१८-१ । ३४-१२-२ ।

दीठि—[दृष्टि] (१) सं० स्त्री० एक० । नजर, दृष्टि । र० प्रि० १-२४-१ । ७-४१-२ । ८-५-१ । १६-३-४ । क० प्रि० ११-४८-२ । दीठ । र० १-४०-१ । (२) वि० (विशेष्य—पंचकल्यान) । सुन्दर । वी० १७-३५-२ । (३) क्रि० वि० । देख लेना । र० प्रि० ६-७-३ ।

दीन—[√दी + क्त नत्व] (१) १-सं० पु० एक० । दुर्दशाग्रस्त । छं० १-५६-६ । वि० गी० १-१८-१ । २-पु०बहु० । दुखीजन—दान के पक्ष मे । कायर जन-कृपाण के पक्ष मे । क० प्रि० ११-४०-३ । (२) वि० (विशेष्य—रावन) हीन । रा० ४-१४-२ । (३) क्रि० पु० एक० । दिया । रा० ७-१७-२ ।

दीन अति—वि० (विशेष्य—पतिनी पति बिनु) । अत्यन्त दीन, करुणा का पात्र । रा० १३-१०-१ ।

दीन के नाथ—वि० (विशेष्य—देव) । दीनो की रक्षा करनेवाले । रा० ३१-२७-१ ।

दीन दयाल—(१) सं० पु० एक० । भगवान (दीनजन पर दया करनेवाले) । वि० गी० १३-३२-४ । (२) वि० (विशेष्य—प्रभु) । दीनो पर दया करने वाला । वि० गी० १३-३२-३ ।

दीनन के दानि—वि० (विशेष्य—वीरसिंह) दीनो को (अनाथो को) दान देनेवाला । वी० ६-२३-१ ।

दीनन को देवता—वि० (विशेष्य—जहाँगीर) । दीनो की रक्षा करनेवाला । ज० १६८-३ ।

दीन बन्धु—वि० (विशेष्य—साहि सलेम) दीनो का बन्धु, दीनो की सहायता करने वाला। वी० ६-६ ३।

दीन वत्सल—वि० (विशेष्य—भगवत)। दीनो पर कृपा रखने वाले। वि० गी० १६-६३-१।

दीनी—क्रि० पु० एक०। दिया। र० प्रि० ५-२६-५। ६-१५-। १४-११-४। क० प्रि० २-१४-१।

दीने—क्रि० पु० बहु०। दिये। र० प्रि० ३-२७-४। रा० ५-१८-२। ५-४२-२। ७-५१-२।

दीनों—क्रि०। पुं० एक०। दिया। र०प्रि० ८-३१-२।

दीनो—क्रि०। पुं० एक०। दिया। र०प्रि० ६-२५-१। ३-६०-१। ७-८-३। ६-१३-१। १४-६-४। १६-६-१। क० प्रि० १-४०-१। ३-३८-१। रा० १०-४४-२। ३४-३२-२। ३८-३६-४।

दीन्हि—क्रि०। पुं० एक०। दिया है। रा० ४-१२-४।

दीन्ही—क्रि० पुं० एक०। र० प्रि० १-८-१। रा० ७-५२-१। १२-३५-२। १३-१७-२। १६-२१-५। २६-३२-२। ३१-१-१।

दीन्हे—क्रि० पुं० एक०। दिया है। रा० १३-३६-२। २६-३६-२। २६-२०-८। ३२-२८-२। ३३-५७-२। ३३ ५७-३। दीन्हे—रा० १-२६-२।

दीन्हो—क्रि० पुं० एक०। दिया। रा० ११-१०-२। दीन्हो—रा० १-१७-१।

दीप—१ सं० पुं० एक०। दिया, चिराग। र० प्रि० ३-२३-२। क० प्रि० ४-१६-२। रा० २०-२६-२। २–पुं० बहु०। र० प्रि० १३-१०-४। क० प्रि० १५-६५-२। ३–पुं० एक०। द्वीप। रा० २-१०-२। वी० २८-२०। ज० २१।

दीपक—१–सं० पुं० एक०। दीप। र० प्रि० ४-६-१। क० प्रि० ५-१६-२। वी० २२-६६। वि० गी० १४-४५-२। २–पुं० एक०। अर्थालंकार का एक भेद जहाँ वर्ण्य, अवर्ण्य या उपमेय और उपमान का एक ही धर्म कहा जाय, अथवा जहाँ क्रियापदो की आवृत्ति हो, या जहाँ एक ही कर्ता के साथ बहुत से क्रियापदो की आवृत्ति हो। क० प्रि० ९ ६-२।

दीपक बन्धु—सं० पुं० एक०। दीपक का प्रेमी पतंग। क० प्रि० १३ २३-२।

दीप कुल दीप के—वि० (विशेष्य—जहाँगीर)। कुल का दीपक। ज० १०-६-४।

दीपति—(१) सं० स्त्री० एक०। प्रभा, द्युति, चमक। र० प्रि० ३-१६-४। क० प्रि० १-३४-२। रा० २-१०-३। (२) क्रि० स्त्री० एक०। दीप्तिमान होती है। रा० २-१०-२।

दीप-दीप—सं० पुं० बहु०। समस्त द्वीप। क० प्रि० ८-१०-२।

दीप दीपहुँ के अवनीपति के अवनीप—वि०। विशेष्य—कुमार दशरथ राइ के)। समस्त द्वीपो के राजाओ के राजा। क० प्रि० ८-१०-२।

दीप प्रकासी—वि० (विशेष्य—अविनासी)। सदैव ही प्रकाशित रहनेवाला। वि०गी० १५-५४-१।

दीपमाला—सं० स्त्री० एक० । दीपावली र० प्रि० ५-१८-३ । दीपमालिका—क० प्रि० १५-८६-४ ।

दीपवृक्ष—सं० पु० एक० । वृक्ष के आकार की बड़ी-बड़ी दीवटें जिन पर सैकड़ो हजारो दीपक रख सकते हैं । (ऐसा एक दीपवृक्ष अब भी काशी मे पंचगंगा घाट पर विन्दुमाधव के मंदिर के पास बना है । लखनऊ मे इमामबाड़े मे हजार बत्तीवाले झाड अब भी मौजूद हैं) । रा० २७-२१-३ ।

दीपसिखा—सं० स्त्री० एक० । दीपक की लौ । क० प्रि० १५-९१-२ ।

दीपियतु—सं० पु० बहु० । प्रकाशित हो जाते हैं । रा० २-१०-२ ।

दीबे—क्रि० । दे । र० प्रि० १४-२९-३ । रा० ३३-९-१ ।

दीरघ—(१) सं० पु० एक० । गुरु मात्रा । क० प्रि० ३-३२-१ । दीर्घ । छ० १-५-१ । (२) वि० (विशेष्य—मातृ-कैकेयी) । जमीन पर लंबायमान पड़ी हुई शोक से भू-पतिता । रा० १०-३-१ । २–वि० (विशेष्य—विलोचनि) बड़े, विशाल । र० प्रि० ११-१८-१ । ३–वि० (विशेष्य—दु.ख)। दीर्घ, असह्य रा० ७-८-३ ।

दीवान—सं० पु० एक० । प्रधान मंत्री । क० प्रि० १६-६४-५ । वी० २३-३२ ।

दीसत—क्रि० पु० एक० । दिखाई पड़ता है । रा० २९-१८-१ । ३०-२०-३ । ३१-१०-२ ।

दीसी—क्रि० । स्त्री० एक० । दिखाई पड़ती है । रा० १३-१८-१ । दीसति–रा० १-१४-२ ।

दीसे—क्रि० पु० बहु० । दिखाई पड़ते हैं । रा० ८-६-२ ।

दीह—वि० (विशेष्य—दुःख) । बहुत बड़े । र० प्रि० ५-१८-४ ।

दीह कलुष कृपानी—वि० (विशेष्य—बानी, गंगा को पानी) क० प्रि० १४-१९-३ । श्लेष से :—१–बानी के पक्ष मे–(राम भजनामय होने से) कलुष नाशिनी । २–गंगा को पानी के पक्ष मे बड़े-बड़े पापो को तलवार के समान काटने वाली पाप-विनाशक ।

दीहतर—वि० (विशेष्य—दायिता) । अत्यन्त बड़े । वी० ६-५१-१ ।

दीह दानव दल दूषन—वि० (विशेष्य—लछिमन अरु शत्रुघ्न) । दानवो के बड़े-बड़े दलो के विनाशक या संहारक । रा० १-२२-४ ।

दीह दीह—वि० (विशेष्य—दिग्गज) । बड़े-बड़े । रा० १-२९-१ ।

दीह दुष्ट छल खंडन कारी—वि० (विशेष्य–रूप तलवारी) । बडे-बडे दुष्टो के छलो का खंडन करनवाली । रा० ३१-५-२ ।

दुःख—[√दु.ख + अच्] १-सं०पु० एक० । कष्ट, क्लेश, तकलीफ । र० प्रि० ८-२६-१ । क० प्रि० ५-२४-१ । ६-८-१ । ६-४०-१ । रा० १-१-१ । ३-३-२ । ६-२१-२ । ७-८-३ । ९-७-२ । ११-१८-१ । १३-५६-१ । १३-९-२ । १५-२५-१ । १९-१४-१ । दुख–र० प्रि० ४-

१७-४। ५-१५-२। ७-१५-३। ८-३२। ६-१३-१। १०-४-१। ११-४२-१। १२-१०-४। १३-२-१। १४-२२-२। १६-८-२। क०प्रि० ६-३६-२। ७-३६-१। ८-४१-२। १०-८१। ११-६४-२। १२-१३-२। १५-४३-१। वि० गी० १-२-२। ५-२-२। ६-२८-१। दुःख—क० प्रि० १-५७-२। छं० १-८-२। वी० १-३७। वि० गी० १-१६-२ २ पुं० बहु० दुखनि—र० प्रि० ३-६४-२। ११-११-३। १३-२०-१। क० प्रि० १५-१२७-१। १६-२०-३।

दुःखदात—वि० (विशेष्य—परपरा)। दु.ख देने वाली। वि० गी० ८-२-१।

दु.खनासन वि० (विशेष्य—श्री रघुनाथ) दु ख के विनाशक रा० ३३-१-२।

दु संधान—सं० पु० एक०। केशव के अनुसार एक रस। र० प्रि० १६-१-१।

दुःसह—वि० (विशेष्य—दु.ख)। असहनीय। वि० गी० ५-२-२।

दुन्दुभि—[दुदु √भा + कि]। १—सं० स्त्री० एक०। नगाड़ा, डंका। क० प्रि० ६-४५-२। ८-२२-१। ११-५७-१। वि० गी० ४-३-२। ११-२-२। ११-५४-२। १२-२-३। १२-२२-१। २—पु० बहु०। नगाड़े। रा० १६-३६-२। २१-२७-१। ३४-४३-२। ३५-७-२। १६-३६-२। ३६-१८-४। दुदुभी—ज० ३२। वीं० ३-३३।

दुकूल—[√दु + ऊलच्, कुक]सं०पु० एक०। दुपट्टा। क० प्रि० ५-३७-१। रा० ६-५-१। ज० १५८।

दुखत—वि० (विशेष्य—सुरपुर)। दु ख का अंत करने वाला। वी० १६-१६-१।

दुखकदन—वि०(विशेष्य—सीता को वदन)। दु ख को जला देने वाला। क० प्रि० १४-४३-३।

दु:खकर—(१)सं०पु०एक०। कष्टप्रद। केशव के अनुसार यमकालकार का एक भेद। क० प्रि० १५-११६-१। १५-११६-२। १५-११-१। (२) वि० (विशेष्य—जमक)। कठिन। क०प्रि० १-११६-१।

दुख खंडनि—वि० (विशेष्य—सरिता)। दु खों का काटने वाल। रा० ३२-२७-१।

दुखदंदनु—वि० (विशेष्य—नंदनंदनु)। दु ख दूर करने वाले। क० प्रि० १-२२७-१।

दुखद—(१) सं० पु० एक०। दुःखद वर्णन। वर्ण्यालंकार का एक भेद जिसमे दुःख पहुँचाने वाली चीजों का वर्णन होता है। क०प्रि० ६-२-१। (२) वि० (विशेष्य—वस्तु)। दु ख पहुँचानेवाली। क० प्रि० ६-२-१।

दुखदाई—वि० (विशेष्य—वर्षाॠतु)। दु.ख पहुँचानेवाली। रा० १३-११-१।

दुखदानि—वि०(विशेष्य—गाव, पराजय आदि)। दु ख पहुँचानेवाली। क० प्रि० ६-३३-२।

दुखदानिये—वि० (विशेष्य—सोव)। दु खदायी। रा० १२-१६-२।

दुखदाय—वि० (विशेष्य—जग)। कष्ट प्रदायक। वि० गी० ४-२१-२।

दुखदायक—(१) सं० स्त्री० बहु० । दु:ख पहुँचानेवाली वस्तुएँ। र० प्रि० ८-३०-१ । (२) वि० (विशेष्य—अग्नि) । दु ख पहुँचाने वाली । रा० २८-१५-२ ।

दुख दायक—वि० (विशेष्य—वेनुबान)। हरिणाक्ष हिरण्यकश्यप। दु ख देनेवाला । वी० २-६-१ ।

दुखदावन—वि० (विशेष्य—रावन) । अत्यन्त दु ख से जलनेवाला । रा० १९-४४-२ ।

दुख दाहि—वि० (विशेष्य—तिनके)। दु ख पहुँचानेवाला । वी० १०-४३-१ ।

दुख मोचन—वि० (विशेष्य—देव) । दु ख दूर करनेवाले । वी० १३-९-२ ।

दुखवे—क्रि० । दुखाएँ, दु ख दे। र० प्रि० २-१७-४ ।

दुख हनै—वि० (विशेष्य—परशुराम) । दु खो को दूर करनेवाले । क० प्रि० ६-६३-१ ।

दुखारे—वि० (विशेष्य—जीव)। दु खी। रा० २५-८-१ ।

दुखित—(१) सं०पु०बहु० । दुःखित लोग । वि० गी० १६-२९-१ । (२) वि० (विशेष्य—मंत्री, मित्र, जन) । दु ख से पीडित । वी० १३-४७-२ ।

दुखी— वि० (विशेष्य—दुखै) । दु ख से युक्त (क्योकि रामराज्य मे रहने के लिए उसे कोई स्थान नही)। रा० २८-७-२ ।

दुखकर्ता निर्कंद है—वि० (विशेष्य—महादेव) । दु ख देनेवालो के विनाशक । छ० २-३-१ ।

दुखददानी—वि० (विशेष्य—राकसी) दु खदायिनि, दु ख देनेवाली । रा० १२-५३-२ ।

दुख्खहर्नै वि० (विशेष्य— कपिनायक) दु.ख हरनेवाला । रा० २१-३७-२ ।

दुगाई—सं. स्त्री० एक० । ओसकण । रा० २९-४०-२ ।

दुचिताई—सं० स्त्री० एक० । सन्देह । रा० ५-१-१ । १२-६६-२ । वि० गी० ५-१३-१ ।

दुज—[द्विज] (१) १-स० पुं० एक० । ब्राह्मण । क० प्रि० ८-५-४ । पु० बहु० —दुजन । १-ब्राह्मण-गगा के पक्ष मे । २-रदन-वाणी के पक्ष मे । क० प्रि० १४-१९-२ । दुजनि-पुं० बहु० । क० प्रि० ५-११-२ । २-पुं० बहु० दाँत । क० प्रि० १५-४७-४ । (२) वि० (विशेष्य—द्रोणाचार्य, ब्राह्मण) । क० प्रि० १२-१८-१ ।

दुजराज—सं० पुं० एक० । चन्द्रमा । क० प्रि० १५-१२-१ ।

दुजराजी—सं० स्त्री० एक० । दाँतो की पंक्ति । क० प्रि० १३-३९-३ ।

दुति—[द्युति] स० स्त्री० एक० । काति, प्रभा । र० प्रि० १-२२-२ । ३-१८-२ । ४-३-१ । ५-२८-१ । ६-२६-२ । ८-११-२ । १२-१०-४ । १४-७-१ । १४ २४-१ । क० प्रि० ५-११-१ । ६-९-३ । ८ ४५-२ । ११-४६-१ । १४-६-२ । १५-२१-१ । १६-७५-२ । रा० १-२५-२ । ६-५७-१ । ८-१२-२ । ९-१२-२ । १३-१४-१ । २०-१९-१ ।

२०-२६-१। ३१-१०-२ । वि० गी० १०-८-३ । द्युति–रा० १२-४६-१ ।

दुति अवतरु—सं० पु० एक० । काति का रूप । क० प्रि० १५-८७-२ ।

दुति-चंद्रकला—सं० स्त्री० एक० । चन्द्र-वाला का प्रकाश । र० प्रि० ६-२६-२ ।

दुति धाम—सं० पु० एक० । काति का निलय । वि० गी० १६-५-२ ।

दुति सनी—वि० (विशेष्य—भृकुटी) । शोभा युक्त । वी० ११-१६-२ ।

दुति हीन—वि० (विशेष्य—दंत) । कांति हीन । वी० २२-४६-२ ।

दुनिया—सं० स्त्री० एक० । संसार । र० १-५१-२ । दुनी—क०प्रि० १४-४-४ । १६-४८-१ ।

दुपटी—सं० स्त्री० एक० । चद्दर । रा० ११-१८-१ ।

दुपद—१–सं० पु० एक० । एक पदवी । 'चौपद दुपद कहूँ लौटि चलौ' । वी० ४-१५ । २–सं० पु० बहु० । दो पैर । क० प्रि० ८-२६-१ ।

दुपद सुता—सं० स्त्री० एक० । द्रौपदी (महाराजा द्रुपद की पुत्री जो यज्ञ-कुण्ड से उत्पन्न हुई थी और पांडव पत्नी थी ।) वी० ११-१३ । द्रौपदी–क० प्रि० ३२-२८-२ ।

दुरंत—१–वि० (विशेष्य—कर्म) । बुरा । रा० ३६-१-२ । २–वि० (विशेष्य—नदी) । जिसका वार पार नहीं सूझता । रा० ३७-५-१ ।

दुरंगध मयी—वि० (विशेष्य—देह) दुर्गन्ध से युक्त । र० प्रि० ३-१३-१ ।

दुरजोधन—सं० पु० एक० । दुर्योधन (धृतराष्ट्र का ज्येष्ठ पुत्र) । क० प्रि० २१-१५-४ । वि० गी० ८-८-२ । दुर्जोधन—वी० २-६ ।

दुरति—क्रि० स्त्री० एक० । छिपती । र० प्रि० ७-२६-२ ।

दुरद—१–सं० पु० एक० । दो दाँतोवाला हाथी । क० प्रि० ७-३०-२ । २–पु० एक० । द्विरद हाथी । वि० गी० ६-३३-२ ।

दुरबुद्धि—सं० स्त्री० एक० । दुष्ट बुद्धि ।

दुराइ—क्रि० । छिपकर । र० प्रि० ८-३८-१ । १०-१०-६ । १४-१०-३ ।

दुराई—क्रि० स्त्री० एक० । छिपाई । र० प्रि० ३-२३-४ । ६-४६-३ ।

दुराऊँ—क्रि० । छिपाऊँ । र० प्रि० १२-१०-२ ।

दुरायो—क्रि० सिकुडकर, छिपाकर । रा० १३-५६-२ ।

दुरावे—क्रि० स्त्री० एक० । छिपाती है । र० प्रि० ६-४०-२ । दुरावति—र० प्रि० ८-११-२ ।

दुरासा—सं० स्त्री० एक० । अनुचित आशा । रा० २४-११-४ । वि० गी० ५-१०-१ ।

दुरि—क्रि० । छिपकर । र० प्रि० ४-५-४ । ५-२६-५ । ५-.७-४ । १०-२५-२ । १०-२५-२ । १४-१८-६ । क० प्रि० ६-१७-४ ।

दुरि देखै सं० क्रि० पु० एक० । छिपकर देखा । र० प्रि० १४-१४-६ ।

दुरी—क्रि० स्त्री० एक० । छिपी । र० प्रि० ७-११-३ ।

दुरे—क्रि० । छिपकर । र० ४-६-३ ।

दुरै— क्रि० पु० एक० । छिपा । र० प्रि० १२-१०-१ ।

दुरयो—क्रि० । छिपकर । र० प्रि० ४-४-४ । रा० १६-५-४ ।

दुर्ग—[दुर्√गम्+ड] १-स० पु० एक० । गढ, किला । क० प्रि० ११-४-५ । ११-४-६ । १२-३२-४ । वी० ११-४२ । ज० १९२ । २-पुं० बहु० । किले । रा० १-४८-३ । दुर्गन—क० प्रि० ११-४३-२ ।

दुर्गति—[दुर्√गम्+क्तिन्] १-सं० स्त्री० एक० । टेढापन । क० प्रि० ८-५-३ । २-स्त्री० एक० । दुर्दशा, टेढ़ाई । क० प्रि० ११-४३-३ । रा० १-४८-३ ।

दुर्ग हीन—वि० (विशेष्य—भूप) । दुर्ग रहित । वी० ३१-६९-१ ।

दुर्गा—स० स्त्री० एक० । शक्ति (पार्वती) । रा० १९-२२-२ । वी० १८-११ ।

दुर्गादास—स० पु० एक० । वीरसिंह का एक दरबारी । वी० १०-४ ।

दुर्गाभान—स० पु० एक० । एक योद्धा का नाम । ज० ७५ ।

दुर्गाराव—स० पु० एक० । एक योद्धा जिसने वीरसिंह की सहायता की थी । वी० ३-३९ ।

दुर्जन—[दुर्+जन] स० पु० बहु० । दुष्ट लोग । क० प्रि० ६-२१-२ । वि० गी० १८-१०-२ । दुज्जन—क० प्रि० ४-२२-२ ।

दुर्जन डीठि—स० स्त्री० एक० । खलों की नजर । क० प्रि० ६-२१-२ ।

दुर्जन दल—स० पु० बहु० । दुर्जनों की सेना । र० १-१७-४ ।

दुर्जन दल दायक—वि० (विशेष्य—श्री रघुनाथ) दुर्जनों का नाश करनेवाला । रा० ३३-१-१ ।

दुर्जन दीन दूषन—वि० (विशेष्य—वीरसिंह) प्रतिदिन दुर्जनों का नाश करनेवाला । वी० १-३-४ ।

दुर्बल—वि० (विशेष्य—गजबाजी) । बलहीन । वी० ३१-६९-२ ।

दुर्बासा—स० पु० एक० । महर्षि विशेष । रा० २३-४-२ । वि० गी० १६-५६-२ ।

दुर्भगौ—वि० (विशेष्य—पति) । दुर्भाग्यवान । वि० गी० १६-१६-१ ।

दुर्वचन—१—स० पु० बहु० । बुरी बातें, मन को कष्ट पहुँचाने वाली बातें । क० प्रि० ६-१५-१ । २-पु० एक० । कटु वचन । गाली । क० प्रि० ६-३९-१ ।

दुलहन—सं० स्त्री० एक० । वधू । वी० ८-१३ । दुलही—क० प्रि० ९-१०-४ ।

दुलारी [दुर्लली] —१-सं० स्त्री० एक० । लाडली बेटी, प्यारी पुत्री । र० प्रि० १४-१६-२ । २-स्त्री० एक० । लड़कियों की माला । रा० ६ ५९-१ ।

दुवै—वि० (विशेष्य—भुजदंड) । दोनों । रा० ३२-४८-३ ।

दुश्यारी—स० स्त्री० एक० । चतुराई । । र० प्रि० १४-१४-३ ।

दुसह—वि० (विशेष्य—दुख) । असहनीय । रा० ९-२५-२ ।

आश्चर्यचकित करनेवाला। क० प्रि० ६-७३-३। ७-२०-४। ९-२०-४। १३-१४-२। १६-७-१। रा० १-४९-२। १-३५-४। १-२४-६। १-४९-२। ५-२२-४। १२-६६-१। १४-३९-४। २०-३३-३। २०-४६-१। २२-१७-२। २३-९-२। २५-१५-१। २५-३३-१। २७-२-३। २९-४०-२। ३२-११-१। वी० च० १-१७-३। ९-२२-२। १५-३-२। १६-३-२। १८-८-२। १८-२८-१। २०-१०-२। २४-१४-२। २७-११-१। जहाँ० ४०-३। ८०-१। ११४-६। १२६-२। १५१-२। वि० गी० १-१-१। २-१०-४। ६-५७-३। ८-३९-२। ८-४०-१। १३-३३-१। १३-५६-२। १५-११-२। १५-१२-२। १५-५०-१। १६-१०६-१। १७-१८-२। १७-२१-१। १८-२५-२। १९-६३-१। २०-४८-३। २०-४९-२।

अध—(१) सं० पु० एक०। पाताल लोक या नरक। वि० गी० १४-२६-१। १४-२७-४। १८-३१-२। २०-४६-१। (२) विशेषण। विशेष्य—कोसक। आधे। र० प्रि० ११-१२-४।

अधम—[सं० अव् (रक्षा आदि) + अस्, ध आदेश]। सं० पुं० एक०। (अ) कविकोटि का तीसरा भेद—परनिंदात्मक कविता करनेवाला कवि। क० प्रि० ४-२-१। ४-२-२। (२) सं०स्त्री०एक०। (आ) अधमा नायिका—नायिका का एक भेद जो बार बार रूठती है और इस कारण कार्यहानि होती है। क० प्रि० ७-३५-१। (३) विशेषण। विशेष्य—दान। निम्न कोटि का। क० प्रि० ४-२-१। ४-२-२। रा० च० २१-२-२। वी० च० १७-४६-१। १७-५४-२। २७-१०-४। २८-२६-१। २८-२६-३। ३२-२-१। वि० गी० १५-२०-२। १५-२६-१। १५-२७-१।

अधर—(१) सं० पुं० बहु०। ओष्ठ; होठ। र० प्रि० ३-११-१। १०-११०-२। १३-५-१। क० प्रि० ५-२९-१। ७-३८-३। ९-१२-१। ११-७१-२। १२-९-२। १५-९-२। १५-३७-१। १५-३८-१। वी० च० २२-६३। (२) स० पु० एक०। नीचे का होठ। र० प्रि० १६-३-१। क० प्रि० १६-५-१। वि० गी० ८-४६-२।

अधरपान—सं० पु० एक०। चुंबन। र० प्रि० ३-४१-२।

अधरात—स० स्त्री० एक०। आधी रात की वेला। र० प्रि० १३-१२-१। १४-३२-३। क० प्रि० ३३-२५-२। वि० गी० १०-२-१। २६-६०-२।

अधरातक—स० स्त्री० एक०। आधी-रात। र० प्रि० १२-२२-२।

अधरामृत—स० पु० एक०। अधररस के रूप में रहनेवाला अमृत; अधर-रस। क० प्रि० ३-८-३। वि० गी० ७-७-३।

अधरासव—स० पुं० एक०। अधरों का आसव—शराब। र० प्रि० ६-१९-३।

अधर्मति—स० पु० बहु०। धर्मविरुद्ध कार्यों को। वि० गी० २१-४२-२।

अधर्म संहारक—विशेषण। विशेष्य—

दुष्ट--[√दुष् + क्त]। (१) स० पु० बहु०। खल लोग। रा० ३४-२७-१,-३४-३१-२। वी० ६-६-२। (२) वि० (विशेष्य--रावन)। शठ, दुराचारी। रा० १२-२२-१।

दुष्टता—सं० स्त्री० एक०। दुश्चिन्ता। रा० ११-४०-२।

दुष्ट निकंदन—वि० (विशेष्य--रघुनंदन)। दुष्ट दलन, दुष्टो का नाश करनेवाला।

दुष्ट प्रनसी--वि० (विशेष्य—श्री बिंदुमाधो)। दुष्टो का नाश करनेवाला। वि० गी० ११-२६-१।

दुसासन—स० पु० एक०। दुर्योधन का छोटा भाई जिसने भरी सभा मे द्रौपदी का केशाकर्षण किया था। क० प्रि० १२-१५-२। दुस्सासन-क० प्रि० ११-६१-२।

दुसीलो—वि० (विशेष्य—पति)। बुरे आचरणवाला। वि० गी० १६-१६-१।

दुस्संधान—स० पु० एक०। केशव के अनुसार एक रस। क०प्रि० ३-५६-१।

दुराई—स० स्त्री० एक०। शपथ, कसम। र० प्रि० १०-२४-१। क० प्रि० १५-४६-१।

दुहिता—स० स्त्री० एक०। कन्या। रा० ६-१-२। वि० गी० १३-५-२।

दुहूँ--वि० (विशेष्य—परी) दोनो। र० प्रि० ८-१७-३।

दुहूँ दीन के नाथ—वि० (विशेष्य—अकबर)। दोनो के नाथ।

दुहूँ दीन प्रभु--वि० (विशेष्य--साहि)। दोनो के रक्षक। वी० ७-१२-१।

दूदत—क्रि० पुं० बहु०। निन्दा करते हैं। र० प्रि० १४-३६-२। रा० ३३-३७-१।

दूजो—क्रि० पुं० बहु०। देख पड़ते हैं। रा० २-७-२।

दूत--[√दु + क्त] १-सं० पुं० एक०। वार्ताहर, एक जगह से दूसरी जगह चिट्ठी पत्री सन्देश आदि पहुँचाने के लिए नियुक्त व्यक्ति। र० प्रि० २-८-२। क० प्रि० ८-१-१। २-पुं० बहु० वार्ताहर। र प्रि० ११-३-२। क० प्रि० ५-१४-३। रा० १४-१-१। १५-३६-१। ३६-२२-१। २६-२४-५। ३६-२५-२। वी० ४-४५। वि० गी०

दूत—क० प्रि० ८-१६-४।

दूत कथा—स० स्त्री० एक०। वार्ताहर द्वारा कही गयी गाथा। र० प्रि० १४-५-२। क० प्रि० ११-६३-२।

दूतिका—स० स्त्री० एक०। वह स्त्री जो प्रेमी और प्रेमिका को मिलाती या एक के सन्देश को दूसरे को पहुँचाती है। र० प्रि० ३-५३-२। क० प्रि० १५-८३-२। २—स्त्री० बहु०। दूतिकाति। र० प्रि० ७-२२-१।

दूती विधि—स० स्त्री० एक०। दूत कहने की रीति। रा० १६-१६-१।

दूध--[दुग्ध] सं० पु० एक०। गाय, भैंस आदि के स्तन से निकलने वाला सफेद रंग का प्रसिद्ध तरल पदार्थ जिस पर उनके बच्चे अधिक दिनो तक जीवित रहते है। रा० प्रि० २-१५-१। १२-२०-४। १४-३६-१। क० प्रि० ६-

४८-१ । ११-६६-४ । १६-१५-१ । रा० ३४-२४-१ ।

दूनौ—वि० (विशेष्य—दु:ख) । अत्यधिक । र० प्रि० ७-२४-४ ।

दूव—स० स्त्री० एक० । एक प्रसिद्ध घास, दूर्वा । क० प्रि० ५-३६-१ ।

दूरि कै—स० क्रि० । दूर करके । रा० १३-५२-१ ।

दूलह—सं पुं० एक० । दूल्हा, वर । रा० ६-३-२ । छं० २-४४-३ । दूल्हा-वी० ८-२१ । ज० १२२ । (२) वि० (विशेष्य—राम जू) । वर । रा० ६-१०-१ ।

दूलह राम—सं० पु० एक० । राजा विशेष (वीरसिंह देव के दरबारी) । र० प्रि० १-८-१ । क० प्रि० १-२७-१ । वी० ३-२४ । ज० ७३ ।

दूल्ही—स० स्त्री० एक० । वधू । ज० १६३ ।

दूषण—स० पुं० एक० । रावण का भाई । रा० १८-१-१ । १२-२-१ । १८-२२-२ । १६-५१-४ ।

दूषण दूषण—वि० (विशेष्य—विभीषण) बुरी बातो का खंडन करनेवाला । क० प्रि० ८-१८-४ ।

दूषन—[√दूष् + णिच् + ल्युट्] १—सं० पुं० एक० । दोष, अपराध । र० प्रि० ४-१८-३ । क० प्रि० ३-५-२ । ८-४७-४ । १३-३५-२ । १४-४३-१ । २—पुं० एक० । रावण का भाई—रामचन्द्र के पक्ष मे । पुं० एक० । महापाप—परशुराम के पक्ष मे । क० प्रि० १२-३२-२ । ३—पुं० एक० । उपमालंकार का एक भेद—जहाँ उपमानो के दोष बतलाकर उपमेय की प्रशंसा की जाय, वहाँ दूषनोपमा है । क० प्रि० १४-२-२ । ४—पुं० एक० । रावण का भाई । क० प्रि० १५-१३०-१ ।

दूषन कलि को—वि० (विशेष्य—वीरसिंह) । कलियुग के पापो का सहारक ।

दूषन सहित—वि० (विशेष्य—कवित्त) । दोषो से युक्त । क० प्रि० ३-५-२ ।

दूषें—क्रि० । दूषण करें । रा० १३-५६-१ ।

दृग—[√दृ + क्क्] १—स० पुं० बहु० । नेत्र, आँखें । र० प्रि० १-२२-२ । २-७०-४ । ३-७१-४ । ६-४४-३ । ७-१५-१ । ८-१८-२ । ११-३-२ । १२-२८-३ । १२-१७-३ । क० प्रि० ५-१४-२ । ६-१०-३ । ६-२६-२ । ११-८-१ । १४-१०-३ । १५-१३-२ । १५-८८-२ । रा० ५-२६-३ । ५-२७-१ । ११-४०-१ १४-१-४ । १५-६-४ । २२-११-३ । छं० २-३८-५ । वी० १-३१ । वि० गी० १-२७-३ ।

दृगनि—पुं० बहु० । क० प्रि० १५-८४-१ । २—पुं० एक० । दृष्टि, नजर । क० प्रि० ११-७४-१ । दृग—वी० १-३१ ।

दृगंचल—सं० पुं० बहु० । पलकें । र०प्रि० ६-३२-४ । रा० ६-४४-३ । छं० १-६४-६ ।

दृग-आँसुनि—सं० पु० बहु० । नेत्र-जल (आँसू) । र० प्रि० ६-४-३ ।

दृग दीनी—क्रि० पुं० एक० । देखा । र० प्रि० । ७-१५-१ ।

दृग-दूत—सं० पुं० बहु० । नेत्र रूपी वार्ताहर । र० प्रि० ११-३-२ ।

दृढ—[दृह् क्त]-वि० (विशेष्य—गुन) । मजबूत । रा० २३-२६-१ ।

दृढ़ रुचि—सं० स्त्री० एक० । अभिलाषा । वि० गी० ४-२१-१ ।

द्रुम—सं० पु० एक० । पेड़ । वी० २३-६ ।

दृष्ट—सं० पु० एक० । जो दिखायी पड़े । वि० गी० १६-१२०-२ ।

दृष्टि—१-सं० स्त्री० एक० । आँख, नजर । क० प्रि० ११-८-१ । रा० ३-२-२ । १३-५७-१ । १३-३६-३ । वी० २६-२० । वि० गी० १-२४-२ । २—स्त्री० बहु० । नेत्र । र० प्रि० ३-५-१ । ३—स्त्री० एक० । अभिलाषा । वि०गी० ४-१६-१ ।

दे—क्रि० । दो, देकर । रा० ४-६-१ । १०-४४-१ ।

देइ—क्रि० । देकर, देते । र० प्रि० ३-३३-१ । ३-३५-२ । रा० ६-६-१ । ६-१२-२ । १३-६१-१ । २१-६-१ । २१-७-१ । २५-३४-२ । ३६-३३-२ ।

देउँ—क्रि० पु० एक० । दूँगा । रा० १०-२५-४ । १७-४६-३ ।

देखत—क्रि० । देखकर, देखते, देखते हुए । र० प्रि० १-२२-२ । १-२४-१ । ३-३८-२ । ५-११-२ । ५-२६-१ । ५-३५-४ । ५-३५-५ । ७-२४-१ । ८-१७-७ । ६-६-१ १४-६-४ । १४-३६-२ । १६-७-४ । क० प्रि० १-४१-२ । ६-७-६ । रा० १-३६-२ । १-५१-२ । ५-२-१ । ६-२५-२ । ६-५५-१ । ८-८-४ । ६-४५ ३२-१ । ११-५-३ । १२-३२-१ । १६-३६-१ । २६-१६-१ । ३२-१०-२ । ३४-३७-२ । ३८-६-२ ।

देखत ही—क्रि० । देखते ही । र० प्रि० ६-५३-१ । ८-३-१ । १२-७-३ । क० प्रि० ३-८-६ । ५-२६-१ । रा० ११-३२-३ । १७-४८-१ । १६-१५-१ । २४-२५-१ । देखत हूँ—रा० २५-११-१ ।

देखति—क्रि० स्त्री० एक० । देखती । र० प्रि० १-२३-३ । ४-४-३ ।

देखन—क्रि० । देखने । र० प्रि० ५-३०-१ । ६-२३-१ । ८-१२-३ । रा० ६-१८-१ । २६-६-१ । २६-३४-१ ।

देखहि—क्रि० पु० बहु० । देख सकेंगे । रा० १०-२२-१ ।

देखहीं—क्रि० पु० बहु० । देखते हैं । रा० २१-२६-२ ।

देखहु—क्रि० पुं० एक० । देखो । ३-३६-४ । ३-६२-१ । ७-३०-२ । १३-१७-३ । रा० १०-१६-१ । २०-२०-१ ।

देखि—क्रि० । देखकर । र० प्रि० १-२७-३ । ३-३८-२ । ४-५-१ । ५-३४-५ । ६-२६-३ । ७-८-६ । ८-१२-२ । ६-४-३ । ६-१६-२ । १०-८-५ । ११-४-५ । १३-४-४ । १३-७-१ । १४-६-४ । १६-५-३ । क० प्रि० १-४६-२ । ३-२२-१ । ४-२२-४ । ५-१२-६ । ६-७-२ । ६-१७-४ । रा० १२-४०-१ । १३-६-२ । १४-१३-२ । १५-७-२ । १६-१६-२ । १७-६-१ । १८-१५-१ । १६-२६-

२। २०-४७-३। २१-३०-३। २२-१७-२। २३-२६-२। २४-२६-१। २६-२३-१। २७-८-४। २६-१६-२। ३०-५-२। ३२-५-१। ३३-१३-१। ३६-२३-२। ३६-१७-१। देखिकै—रा० १३-५२-१।

देखिजे—क्रि०। देखिए। रा० ५-१२-१। ५-३१-२।

देखि देखि—सं० क्रि०। देख देखकर। र० प्रि० ७-२४-१।

देखिबे—क्रि०। देखने मे। र० प्रि० ५-१४-१। ८-१२-४। ८-३६-५। १५-३-५। रा० २२-२१-७। ३६-२५-४।

देखिबो—क्रि०। देखने। र० प्रि० १५-६-८।

देखिए—क्रि० पु० एक०। दिखाई पडता है, दीख पडता है। र० प्रि० १६-१५-१। रा० १-२८-२। ५-२-२। ३२-४३-३। देखियत—क० प्रि० २-८-५। रा० ६-४८-१। २७-३-६। २६-१७-१।

देखिये—क्रि० पुं० एक०। देखो। देख रहे हो। रा० ७-१६-२। १४-४२-४। १७-३१-२। २०-२८-१। २०-२५-२। २०-३८-१।

देखिये—क्रि०। दीख पडती है। देखिये। र० प्रि० ४-२-१। ८-१२-२। ६-११-२। क०प्रि० ३-५-२। रा० १-४३-१। ५-१५-१। ७-६-१। २३-११-२। २५-३६-१। २८-१०-१। २६-४३-१। ३३-४८-२।

देख लगाई टकी—सं० क्रि०। स्त्री०एक०। टकटकी बाँधकर घूर रही है। र० प्रि० ८-१४-३।

देखिहों—क्रि० स्त्री० एक०। देखती हूँ। र० प्रि० ८-१२-२३।

देखी—क्रि०। देखकर। देखते ही। देखने-से। र० प्रि० ३-३४-७। ७-२८-३। रा० १-३०-१। २-४-१। ५-५-२। ६-३-१। ८-१४-२। ६-३६-२। १३-६१-१। १४-२४-१। २०-३४-१। २२-५-१। ३२-३२-१।

देखु—क्रि०। देखो। क० प्रि० ५-३६-१।

देखें—क्रि०। देखें, देखकर। र० प्रि० ४-३-२। ५-१४-२। ७-२३-२। ८-१३-२। १४-३८-४।

देखै—क्रि० पु० एक०। देख लिया, देखा। र० प्रि० ३-३८-२। ६-१३-४। १४-१४-६। रा० १-१५-१। ५-६-१। १०-५-२। १२-५१-१। १३-१६०-१। १५-१०-१। २७-१६-२। २६-३४-१। ३४-५७-२।

देखैं—क्रि० पुं० बहु०। देखते हैं। र०प्रि० १४-३८-१। रा० २२-१७-२।

देखै—क्रि० पु० बहु०। देखा करते है। र० प्रि० ६-६-१। ६-१५-१। १४-३६-२। रा० १-१५-१। १३-५७-२। (देखा है) १३ ५७-२।

देखो—क्रि० पु० एक०। देखूंगा, देखता। र० प्रि० ४-५-४। ४-५-४। १५-६-४। क० प्रि० ६-१७-४। रा० ४,२०-२। (तोडूंगा)। १५-३७-२। ३४-३-१।

देखो आनि—सं० क्रि०। आकर देखो। र० प्रि० ३-२६-६।

देख्यो—क्रि० पु० एक०। देखा। र० प्रि० ३-४७-४। ७-२८-३। ८-३४-४। ६-१४-२। १४-३८-३। रा० २-३०-२। ३-३३-२। १३-७-१। १३-२८-३। १७-१२-१। १६-१-१। ३३-४७-२। ३६-६-४। ३८-१-२। देख्यो–र० प्रि० २-१४-२। रा ५-३४-१।

देत—(१) सं० पु० एक०। देना (क्रियार्थक संज्ञा)। र० १-२४-६। (२) क्रि० पु० बहु०। देते हैं, देते हो, देकर। र० प्रि० ५-११-७। ६-११-२। १०-१२-४। १३-२-२। १४-७-८। १६-३६-८। रा० १-३-२। ६-२५-३। ६-४६-१। १२-५०-४। २१-४-२। २७-१६-२। ३०-२८-२। ३३-३३-२। ३६ ३८-२।

देति—क्रि० स्त्री० एक०। देता है। र० प्रि० ५-११-५। ५-२६-४। रा० १-२६-१। १-२६-२। १३-८३-२। देती–रा० २६-१३-३।

देत हुति—सं० क्रि०। स्त्री० एक०। देती थी। र० प्रि० १२-१०-७।

देतो—क्रि०। देता तो। र० प्रि० ७-३६-४।

देन – क्रि०। देने के लिए, देने, करने। रा० ५-११-१। ६-६-३। १३-७४-१। १७-४६-१। ३०-२१-४।

दैये—क्रि० पु० एक०। दिया। रा० ६-२७-४। देय–र० प्रि० ५-३-३।

देव—[√दिव्+अच्] १-सं० पु० एक०। मंदिर, देवालय। क० प्रि० १-३४-१। २-पु० एक०। सुर, देवता। क० प्रि० १-४५-१। ११-२४-१। १६-४६-४। वी० १-८। १-३१। ज० १७-८६। छं० १-२-१। ३–पुं० बहु०। स्वर्ग के निवासी। र० प्रि० ७-५-२। क० प्रि० ३-२-४। ६-७४ ३। ७-२१-२। १०-२१-३। १५-४-२। १६-७५-२। रा० ३-३-१। ५-२३-१। ७-१७-१। ६-११-२। १२-१०-२। १५ ४३-२। १६-१०-३। १६-१६-२। २०-१३-१। २५-२७-१। २६-१७-२। ३४-५-१। ३८-३१-२। वि० गी० १-७१-१। १-१६-१। देवन–क० प्रि० ६ ७१-२। छं० १ ६८-४। ४—पु० बहु०—ईश्वर। वि० गी० १५-१६-१। १५-४ -३। १५ ४६-१। १५-५३-१।

देव-अदेव कुमारि—सं० स्त्री० बहु०। स्वर्ग तथा भू-लोक की कन्याएँ। र० प्रि० ७-५-२।

देवकन्या—सं० स्त्री० एक०। देव स्त्री। रा० १६-२८-२।

देवकाम—सं० पु० बहु०। देवताओं की तुष्टि के लिए किये जानेवाले हवन पूजनादि कृत्य। क० प्रि० १६-५५-४। देवकाजु-रा० ११-३-२।

देवकी— सं० स्त्री० एक०। वसुदेव की पत्नी एवं कृष्ण की माता। वि० गी० ६-२१-१।

देवगढ़—सं० पुं० एक०। एक प्रसिद्ध गढ। वी० १२-६-२।

देवगति—(१) सं० स्त्री० एक०। ऐसी सद्गति जिसे प्राप्त कर मृत व्यक्ति देव रूप हो जाता है। क० प्रि० १६-

१३-१ । (२) वि० (विशेष्य—रामचंद्र)। देव स्वभाव वाले । रा० २७-४-४ ।

देव चरित्र—सं० पुं० एक० । अमरों का चाल चलन । क० प्रि० १०-३१-३ ।

देवज—(१) सं० पुं० एक० । साम का एक भेद । वि० गी० १६-१०८-२ । (२) पुं० एक० । देवपुत्र । वि० गी० १६-११७-१ ।

देवतनूज—सं० पुं० एक० । देवता का पुत्र । वि० गी० १६-११०-१ ।

देवतरंगिनि—सं० स्त्री० एक० । गंगा । रा० २२-३-२ ।

देवता—१-सं० स्त्री० एक० । देव-प्रतिमा, पूजनीय स्त्री । र० प्रि० ३-३४-४ । ३-५२-१ । ५-२७-४ । ११-१६-१ । क० प्रि० ३-२१-१ । ३-२२-१ । वी० २६-८ । २-स्त्री० बहु० । सुर नारियाँ । र० प्रि० ६-४२-४ । ९-२८-२ । क० प्रि० १४-३५-२ । १५-३ ३ । र० ६-५९-७ । ३-पु० बहु० । स्वर्ग मे वास करनेवाले दिव्य शक्ति संपन्न अमर प्राणी । र० प्रि० १५-३-३ । क० प्रि० ६-६९-२ । ७-५-३ । ७-९-४ । १३-३३-१ । वि० गी० १९-२८-१ ।

देवतिय—सं० स्त्री० बहु० । देव नारियाँ । क० प्रि० ७-१८-२ ।

देवत्रिय—सं०स्त्री० बहु० । तीन देवियाँ—लक्ष्मी,सरस्वती और पार्वती । वी० २६-४८ ।

देव देव—(१) सं० पु० एक० । देवताओ के स्वामी (विष्णु) । क० प्रि० १६-२३-२ । रा० २-६-२ । वि० गी० ३-१७-१ । (२) वि० (विशेष्य— रामचन्द्र) । देवताओ के भी स्वामी । रा० २४-३०-२ ।

देव देवेस—(१) सं० पु० एक० । देवताओ के अधिपति इन्द्र । वि०गी० १५-३८-१ ।

देव द्वेषी—वि० (विशेष्य- दस ग्रीव) । देवताओ का शत्रु । रा० १३-५६-१ ।

देव दोष— सं० पुं० बहु० । देवताओं के अपराध । वि० गी० ४-४-४ ।

देव धुनी सं० स्त्री० एक० । गंगा नदी । क० प्रि० १६-४८-३ ।

देवन के रखवारे— वि० (विशेष्य—प्रभु) । देवो के रखवाले । वि० गी० १८-९-१ ।

देव नदी कन—सं० पु० बहु० । गंगा जल के कण । रा० ६-५७-४ । १५-३२-२ । १९-५४-२ । ३०-४३-२ । ३०-४ २ । ३३-२२-२ ।

देवनरिंद—वि० (विशेष्य—वीरसिंघ) । मनुष्यो मे इन्द्र स्वरूप, रक्षा करनेवाला। वी० ९-२४-१ ।

देव नायक—(१) सं० पु० एक० । देवताओ के नायक । वि० गी० १८-१५-१ । (२) वि० (विशेष्य—श्री विस्नु) । देवो के नायक । वि० गी० १८-१५-२ ।

देवपुर—सं० पु० एक० । अमरावती । वी० १-४० ।

देवपूजा—सं० स्त्री० एक० । भगवान की पूजा । वि० गी० १५-३५-१ । १५-३८-२ ।

देवबादी—वि० (विशेष्य—भूपति) । दैव या किस्मत के भरोसे पर रहनेवाला । रा० १८-१०-४ ।

देवविदूषन मारनहारे—वि० (विशेष्य—प्रभु)। देवो के विरोधियो को मारने वाले। रा० १८-६-१।

देवभाषा—सं० स्त्री० एक०। देवताओ की भाषा (संस्कृत भाषा)। वि० गी० १-७-१।

देवमनि—सं० पुं० एक०। देवमणि (कौस्तुभ मणि)। वि०गी० २०-३२-१।

देव मौर—वि० (विशेष्य—राम अरु लक्ष्मण)। देव शिरोमणि। रा० १२-४३-१।

देवर—[दिव् + अर] सं० पुं० एक०। पति का छोटा भाई। क० प्रि० १६-४३-२। रा० ६-१५-७। १०-२६-२। १२-१५-१। १८-१६-१। ३६-१-१।

देवराइ –सं० पुं०एक०। देवेन्द्र। र० प्रि० १४-२०-२। देवराजा—रा० ६-३५-३।

देवरानी—सं० स्त्री० एक०। इन्द्राणी (शची देवी)। रा० ६-३५-३।

देवराय—सं० पुं० एक०। वीरसिंह देव का दरबारी। वी० ६-४३।

देवऋषि—सं० पु० एक०। देवर्षि नारद। वी० ३२-२।

देवलोक—१-सं० पुं० एक०। स्वर्ग। क० प्रि० १४-१५-३। र० प्रि० १२-४-३। रा० २-४-२। १६-६-३। २७-२६-१। २६-१७-२। वी० १६-२३। वि० गी० १८-८-३। २—पुं०-एक०। वैकुण्ठ। रा० १-१६-२।

देवशत्रु—सं० पुं० एक०। देवताओ के शत्रु (राक्षस)। वि० गी० ४-२५-४।

देवसभा—सं० स्त्री० एक०। इन्द्र सभा। क० प्रि० ८-४५-१। रा० ३-१५-४। २७-१४-२। वि० गी० ३-२२-२।

देव सहायक—(१) सं० पु० एक०। देवताओ के सहायक (वामन)। वि० गी० १५-३८-१। (२) वि (विशेष्य—राजा दशरथ, देवताओ के सहायक, अर्थात् देवताओ पर कष्ट पडने पर सहायतार्थ जानेवाले (देवासुर संग्राम मे भी दशरथ ने देवो की सहायता की थी)। रा० १-१६-२।

देवचर्या—सं० पुं० एक०। देवताओ का अर्चन। रा० २०-३६-२।

देवादिभर्ता—(१) सं० पुं० एक०। देवताओ का भरण-पोषण करनेवाला-ईश्वर। वि०गी० १५-३८-१। वि० (विशेष्य—महादेव)। देवो का पालन-पोषण करनेवाला। १५-३८-१।

देवाधिकारी—सं० पु० एक०। इन्द्र। रा० १७-५१-१।

देवानन्द—सं०पुं०एक०। केशव के वंशज। क० प्रि० २-५-२।

देवानि—स० स्त्री० एक०। देवताओ की सभा। रा० ३-१५-४।

देवालय—सं० पुं० एक०। मंदिर। वी० ३२-२।

देवा-लेवा—सं० पुं० एक०। लेन-देन। वी० ३१-६।

देवि—१-स०स्त्री०एक०। देवी, स्वामिनी। रा० ६-६-२। ११-३-२। १३-५७-१। १६ २२-२। छं० १-७१-४। वि० गी० १६-१२-०३। देवि—र० प्रि० ८-५२-

४। क० प्रि० ८-७-३ । १५-४६-२ । १५-४७-२ । वी० १५-११ । वि० गी० १४-१२-१ । २–स्त्री०एक० । सुरस्त्री । र० प्रि० ३-५२-३ । क० प्रि० ११-८२-४ । रा० २०-४-१ । ३–स्त्री० बहु० । देव-लोक की स्त्रियाँ । वि० गी० १६-१२४-२ । देवी–क० प्रि० १५-४-१ ।

देवेस—सं० पुं० एक० । इन्द्र । रा० ११-२३-२ । ज० १-२२ ।

देस—(१) सं० पुं० एक० । मुल्क, देश । र० प्रि० १-६-२ । क० प्रि० १-१६-२ । १-३१-१ । ३-२५-३ । ५-१५-२ । ७-१-१ । ८-१६-२ । १०-१६-६ । रा० १०-४५-१ । २३-२-२ । २६-२४-६ । ३०-१८-७ । ३४-३६-१ । ३६-२४-१ । वी० १-३४ । ज० ३३ । पु० बहु० । देसनि, देशो से । क० प्रि० ७-३४ । (२) पु० एक० । क्षेत्र । रा० ६-३३-४ । २४-४४-१ । ३६-२१-१ । ३६-२७-१ ।

देसकाल—सं० पुं० एक० । देश-परिस्थितियाँ । रा० २७-२७-१ ।

देसग्राम पुरीन को पति—वि० (विशेष्य–सुनरेस) देशग्राम पुरियो का राजा । वि० गी० २१-५-१ ।

देश परदेश छेमकर—वि० (विशेष्य–दिनेस, गनेस)। सब जगहो को क्षेमदायक । ज० १-१ ।

देश विरोध—सं० पुं० एक० । केशव के अनुसार एक काव्य दोष । क० प्रि० ३-१६-१ ।

देह—[√दिह + घञ्] (१) १–सं० पुं० एक० । दीपक । क० प्रि० १-३४-२ । २–स्त्री० एक० । शरीर, बदन । र० प्रि० ३-१३-१ । क० प्रि० १-२६-२ । रा० ६-६१-२ । ८-१२-२ । १०-२६-१ । १२-१२-२ । १५-१४-१ । १६-४-३ । १८-१६-३ । २२-८-२ । २३-९-३ । २७-१८-३ । २९-२४-४ । २६-२४-४ । ३३-२६-२ । ३४-१०-१ । वी० २-१८ । देही–रा० ११-७-३ । ३–स्त्री० बहु० । शरीर । र० प्रि० १५-९-४ । क० प्रि० १४-१७-१ । देहनि-वि० गी० १२-१६ ३ । (४) क्रि० पुं० बहु० । दे रहे है । रा० २-१६-२ ।

देहतियाग—सं० पुं० एक० । मृत्यु । रा० २४-२७-२ ।

देह दसा—सं० स्त्री० एक० । देह की स्वाभाविक शक्ति । र० प्रि० ११-३-२ । रा० २४-११-४ । (देह की स्वाभाविक अवस्था) ।

देह-दुति—सं० स्त्री० एक० । अंग दीप्ति, सौन्दर्य । र० प्रि० ८-२०-१। रा० १२-५-७ ।

देह धार्यो—क्रि० पु० एक० । देह धारण किया, अवतार लिया । रा० १८-१६-३ ।

देह धर्म धारी—(१) स० पु० एक० । धर्मवश देह धारण किया हुआ प्राणी । क० प्रि० ८-१०-४ । (२) वि० (विशेष्य—कुमार) । धर्म रूपी देह धारण करनेवाला (धर्म-वान) । रा० ५-३१-४ ।

देहनिकेत—स० पु० एक० । हृदय । वि० गी० १४-१४-२ ।

देहि—क्रि० । दें, देती है । रा० २६-३२-१ । १६ ३२-२ । २२-१६-३ । ३४-१४-१ । ३७-१२-१ ।

देहिं—क्रि० पु० एक० । दूँगा । रा० १६-२१-४ । ३३ ६-२ ।

देहि—(१) स० पु० एक० । शरीर । छं० १-१५-३ । (२) क्रि० । देता है, दें, दो । र० प्रि० ५-३५-१ । रा० १-३-४ । २-३-४ । ६-३०-१ । १०-१०-२ । १३-६५-२ । १६-२६-४ । २१-४-१ । २३-४०-१ ।

देहिगो—क्रि० पु० एक० । देगा । रा० ४-१६-२ ।

देहुँ—क्रि० पुं० एक० । दूँगा । र० प्रि० ३-२३-५ । रा० १६-३२-४ ।

देहु —(१). स० स्त्री० एक० । बदन । र० प्रि० १-१०-२ । क० प्रि० १५-७३-१ । रा० १८-११-२ । छं० १-२२-४ । वि० गी० १५-४-१ । देहै—वि० गी० ५-२-१ । (२) क्रि० । दीजिए । र० प्रि० ८-३२-४ । क० प्रि० ३-४२-४ । रा० ५-२६ २ ।

दै—क्रि० । देकर, दो, दिया । र० प्रि० १-१०-२ । २-६-१ । ३-४६-२ । ४-७-४ । ५-१२-१ । ६-५२-१ । ७-१६-१ । ८-१६-२ । १०-६-१ । १४-११.८ । १६-६-१ । क० प्रि० ३-१२-४ । ५-२५-२ । रा० १-१८-१ । २-२८-१ । ४ ७-१ । ५-३७-२ । ६-६-२ । १२-१८-२ । १३-६५-१ । १७-२१-२ । १६-१७-४ । २०-१-१ । २१-१४-२ । २२-१८-२ । २३-४-२ । २७-१६-४ । २६-१७-२ । ३०-२७-४ । ३३-४-१ । ३४-३१-२ । ३५-२-२ । ३६-११-१ । ३६-३७-१ ।

दैके —क्रि० । देकर । रा० १६-८-२ ।

दैत्य-जाया—स० स्त्री० बहु० । राक्षसियाँ । रा० १४-११-२ ।

दैन—स० पु० एक० । देने की क्रिया (क्रियार्थक सज्ञा) । र० १-३२-२ । वि० गी० ६-७४-४ ।

दैनहार—स०पु० एक० । देने योग्य (क्रियार्थक सज्ञा) । र० १-३२-५ ।

दैन्य—सं० पुं० एक० । एक संचारी भाव—दुःख, दरिद्रता, दुर्गति, अपमान, आदि से उत्पन्न ओजस्विता का अभाव या अपकर्ष दैन्य कहा जाता है । इसमे मलिता, उदासी आदि होती है । र० प्रि० ६-१२-१ ।

दैयत—सं० पुं० एक० । दैत्य । वि० गी० १६-४-१ । पु० बहु०-दैयतनि । क०प्रि० ६-६८-१ ।

दैव —सं० पुं० एक० । नियति । रा० १६-२०-२ ।

दैवजोग—सं० पुं० एक० । दैवी घटना या भगवान की कृपा । क० प्रि० १३-१-१ ।

दैहै—क्रि० पुं० एक० । देगा । क० प्रि० ३-३८-४ । रा० १२-३७-२ ।

दैहौं—क्रि० पुं० एक० । दूँगा । र० प्रि० ८-१२-३ । रा० १६-३०-२ ।

दैहौ—क्रि० पु० बहु० । दोगे । र० प्रि० ४-१६-६ । रा० ३३-४५-२ ।

दौह—(१) वि० (विशेष्य—जो जाने) । दो, २ । वि० गी० ४-२५-१ । (२) क्रि० पु० एक० । दिया । रा० २७-११-२ ।

दौइक—वि० (विशेष्य—दिन) दो एक, कुछ । वी० ७-५२-१ ।

दोई—वि० (विशेष्य—जन) दो, २ । वी० ३-१-२ ।

दोऊ—वि० (विशेष्य—सोदर) । दोनों । र० प्रि० १-१८-२ ।

दोना—स० पु० एक० । पत्तो का बना हुआ कटरी की शक्ल का पात्र । कमल दलन के दोना चारु' । वी० २२-५ ।

दोलतिखां—स० पु० एक० । पठान योद्धा जो रामशाह से लड़ने के लिए आया हुआ था और जहाँगीर का दरबारी था । वी० ३-४३ ।

दोला—सं० स्त्री० एक० । झूला । क० प्रि० १-४८-१ ।

दोष—१—स० पु० एक० । बुरा कृत्य, अपराध । र० प्रि० २-१४-१ । ७-३८-१ । क० प्रि० ११-६४-१ । १२ ८-१ । रा० २५-१९-२ । ३४-३४-१ । छ० २-१०-१ । वि० १-२८ । वी० गी० २-२५-२ । २—पु० बहु० । दुष्टगण । क० प्र० १४-३६-१ । ३-पु० बहु० । रस को अपकृष्ट बनाने वाली त्रुटियाँ । क० प्रि० १६-३-१ । दोषनि-त्रुटियो को । वि० गी० ६-३९-१ । पु०एक० । अवगुण । क० प्रि० ३४-१ । ३-२२-१ । वि० गी० ३-५१-१ । ६-६९-२ । ५-पु० बहु० । मानव के दस दोष—चोर, जुवारा, अज्ञानी, कायर, मूर्ख, कुरूप, अन्ध, पगु, बधिर, क्लीब । क० प्रि० ११-२१-२ । ६-पु० बहु० । त्रिदोष—वात, पित्त और कफ । रा० २०-३२-२ ।

दोषन के अवनीप—वि० (विशेष्य—महा मोह) । दोषो के राजा, दोष युक्त । वि० गी० ४-५-१ ।

दोषमह—वि० (विशेष्य—दवारि) । दुर्गुण वा पापमय । रा० २४-२५-१ ।

दोहद—[दोह √दा + क] स० स्त्री० एक० । गर्भवती । रा० ३३-२४-१ ।

दोहा—[दोधक या द्विपदा] । सं० पु० एक० । एक छन्द जिसके प्रथम और तृतीय चरणो मे १३-१३ तथा द्वितीय और चतुर्थ चरणो मे ११-११ मात्राएँ होती हैं । छ० २-२१-१ ।

दोहाई—स० स्त्री० एक० । सौगन्ध । क० प्रि० ६-५७-४ ।

दोहानी—स० स्त्री० एक० । दूध दुहने का पात्र । रा० ३०-२७-३ ।

दौरी –क्रि० । दौड़कर । र० प्रि० ३-७०-४ । ४-१३-१ । ५-२६-५ । ७-१७-५ । १४-३५-४ । १५-३-५ । रा० १०-१४-३ । १७-४-२ । १९-२६-१ । २१-३०-२ । २१-३०- । २२-१८-१ । ३२-४२-२ । ३६-२-२ ।

दौरि दौरि—दौड दौड कर । र० प्रि० १४-३५-४ ।

राम। अधर्म का नाश करनेवाला। रा० १०-४१-१। छ० मा० १-३०-४।

अथर्वन—स० पु० एक०। अथर्व वेद, चार वेदो मे अतिम वेद। वी० च० २८-६।

अधिक अनंत—विशेषण। विशेष्य—रुद्र, समुद्र, अमरसिंह, श्लेष से। (१) रुद्र के पक्ष मे—जिसका अत न हो। (२) समुद्र के पक्ष मे—अनंत शेषनाग जिसमे रहता हो। (३) अमरसिंह के पक्ष मे—जो अनित्य है। क० प्रि० ११-३१-२।

अधिक असाधु—विशेषण। विशेष्य—इद्र। अत्यत व्यभिचारी। क० प्रि० ८-८-२।

अधिकाई—(१) स० स्त्री० एक०। विशेषता, अधिकता; महत्व। र० प्रि० १०-१०-४। क० प्रि० ११-४४-१। (२) स० स्त्री० एक०। विचित्र बात। र० प्रि० १२-६-३।

अधिकार भाजन—सं० पु० एक०। अधिकार का पात्र। वि० गी० १७-२५-१।

अधिकारिनि—सं० पु० बहु०। अधिकारियो का। वि० गी० २०-२६-१।

अधिराज—स० पु० एक०। सम्राट् या राजा। वि० गी० ११-४-२। १६-६२-२।

अधिरातक—अधिरात+क=अधिरातक। स० स्त्री० एक०। आधी रात। र० प्रि० ६-४४-४। १०-७-२।

अधिष्ठित कीन्हीं—क्रियापद। स्थापित की। रा० १५-३४-१।

अधीर—(१) सं० स्त्री० एक०। मध्या अधीरा नायिका—जिसकी बातें कठोर होती है। र० प्रि० ३-४५-१। ३-४६-१। ३-४६-२। (२) विशेषण। विशेष्य—संखनी। उत्सुक रहनेवाली। र० प्रि० ३-८-२।

अधीरज—स० पु० एक०। अधैर्याक्षेप अलकार। प्रेमभंग के वचन सुनकर जहाँ सात्विक भाव पैदा हो, उसे "अधैर्याक्षेप" अलकार कहते है। क० प्रि० १०-६-१। १०-९-२।

अधीरा—सं० स्त्री० एक०। प्रौढा नायिका का एक भेद। प्रौढा अधीरा नायिका—वह नायिका जो अपने नायक मे पर-स्त्री-सयोग के चिह्न देखकर अधीर या प्रकुपित हो उठे। र० प्रि० ३-६३-२।

अधोगति—स० स्त्री० एक०। (१) नरक मे जाना। (२) नीचे की ओर जाना। रा० १-४८-१। २८-११-२३।

अनंग—[स० न+अंग]—स० पु० एक०। कामदेव। मदन के अगहीन होने के कारण पुराणो मे इस प्रकार बताए गए है—कभी तारकासुर के अत्याचारो से देवगण भयभीत हो उठे। उन्होने सोचा कि शिव का पुत्र ही उक्त असुर का नाश कर सकता है। किंतु उस समय शिव दक्षयज्ञ मे सती को खोकर हिमालय पर कठोर तपस्या करने लग गए थे। इसलिये इद्र ने मदन को बुलाकर महादेव की योगनिष्ठा तोडने को भेज दिया। मदन ने हिमालय पर पहुँचकर देखा कि महादेव देवदारु

दौरी दौरी—सं० स्त्री० एक० । दौड़ धूप । रा० ८-१२-१ ।

दौरे—क्रि० पु० बहु० । दौड़े । रा० २-८-१ ।

द्यौस—१-सं० पु० एक० । सौगन्ध । र० प्रि० ७-२०-२ । क० प्रि० ७-३५-२ । २-पुं० बहु० । दिन । क० प्रि० ८-४१-३ । रा० ३-११-२ । ३-पु० एक० । दिन । वि० गी० ११-३५-१ ।

द्रयो—क्रि० पुं० एक० । द्रवीभूत हो गया, पिघल गया । रा० ३४-२३-२ ।

द्रव्य—१-सं० पु० एक० । वस्तु, चीज । क० प्रि० १३-२१-१ । २-पुं० एक० । धन । वी० ३१-१५ । वि० गी० ८-२७-१ । बहु द्रव्यनि—धन दौलत । वि० गी० १९-४८-१ ।

द्रव्यनि अनुरक्त - वि० (विशेष्य—द्विज) । द्रव्यों से प्रेम रखने वाला । वि० गी० १९-४८-१ ।

द्रव रूप—सं० पुं० एक० । पानी का रूप । वि० गी० ६-४६-२ ।

द्रिगंत—सं० पु० बहु० । आँखों के कोने ।

द्रिग देवता—सं०स्त्री०बहु० । सुर कन्याएँ । क० प्रि० ८-३७-३ ।

द्रोन—[द्रोण] सं० पुं० एक० । द्रोणाचार्य । (भरद्वाज ऋषि के पुत्र, महाभारत के प्रसिद्ध वीर, कौरव-पांडवों के गुरु । द्रोणाचार्य के जन्म के संबंध मे प्रसिद्ध है कि एक बार घृताची अप्सरा को विवस्त्र स्नान करते देख भरद्वाज का वीर्य स्खलित हो गया, जिसे उन्होंने द्रोण नामक यज्ञ पात्र मे रख दिया । कालांतर मे उसी से एक बालक उत्पन्न हुआ, जिसका नाम द्रोण रखा गया ।) क० प्रि० ८-१९-२ । वि० गी० ९-३५-२ ।

द्रोनाचल—सं० पुं० एक० । पर्वत विशेष । वी० १६-४ ।

द्रोह—[√द्रुह + घञ्] सं० पुं० एक० । दूसरों का अनिष्ट चाहना । छं० १-३६-३ ।

द्वंद्वज हीन—वि० (विशेष्य—नृप) । द्वन्द्वों से परे । वि० गी० १६-९७-१ ।

द्वयं—वि० (विशेष्य—नृप सोदर) दो । क० प्रि० २-१६-२ ।

द्वापर—[द्वि-पर] सं० पुं० एक० । तीसरा युग जो त्रेता के बाद आता है । क० प्रि० ५-१७ २ । वी० २८-३२ ।

द्वार—[√दृ + णिच् + अच्] सं० पु० एक० । मार्ग, दरवाजा । र० प्रि० ७-१०-२ । रा० १६-२३-२ । वि० गी० १४-३४-२ । पुं० बहु० । द्वारनि । क० प्रि० ४-२२-३ ।

द्वारपाल—सं० पु० एक० । चौकीदार । वी० १-४० । २७-४ ।

द्वारिका—सं० स्त्री० एक० । श्रीकृष्ण की राजधानी द्वारका । वी० १६-२ ।

द्वारिकानाथ—सं० पुं० एक० । द्वारिका के स्वामी श्रीकृष्ण । क०प्रि० ३-४०-२ ।

द्वि—वि० (विशेष्य—पद) । दो । रा० २७-२-२ ।

द्विकर –१-सं० पु० बहु० । दोनों हाथ । क० प्रि० ११-२२-१ । २-पु० एक० । हाथी । ज० ३३ ।

द्विगन-विचार—सं० पु० एक० । पिंगल-

शास्त्र का एक नियम । क० प्रि० ३-२९-३ ।

द्विज—[द्वि√जिन् + ड] (१) १—सं० पुं० एक० । चन्द्रमा । क० प्रि० १५-७३-३ । २—पु० एक० । ब्राह्मण । छं० १-३८-४ । वि० गी० १-२६-२ । ३—पु० बहु० । ब्राह्मण या गीध आदि पक्षी—समर के पक्ष मे । दाँत-सुरति के पक्ष मे । क० प्रि० ८-४७-२ । २—वि० (विशेष्य—द्रोणाचार्य) । ब्राह्मण । क० प्रि० ८-१६-२ ।

द्विज इंसु—सं० पुं० एक० । चन्द्रमा । क० प्रि० १५-७३-३ ।

द्विज-चरणोदक-बुन्द—सं० पुं० एक० । ब्राह्मण के चरणो पर प्रक्षालित जलबुंद । र० १-१४-३ ।

द्विजता—सं० स्त्री० एक० । ब्राह्मणत्व । रा० १८-१६-४ ।

द्विज दुखदानि—वि० (विशेष्य ताडका) । ब्राह्मणो को दुख पहुँचानेवाली । रा० ३-१०-१ ।

द्विज-द्रोही—वि० (विशेष्य—भूपति) । ब्राह्मण-द्वेषी । रा० १८-१०-१ ।

द्विज धाम—सं० पु० एक० । ब्राह्मण का घर । रा० २१-६-१ ।

द्विजपद—सं० पुं० बहु० । १—भृगु के चरण-नरसिंह के पक्ष मे । २—ब्राह्मण के चरण-अमरसिंह के पक्ष मे । क० प्रि० ११-३०-३ ।

द्विजपद उरधारी—वि० (विशेष्य—नृसिंह) क० प्रि० ११-३०-२ । श्लेष से—१—नरसिंह के पक्ष मे । जो भृगु, चरण चिह्न को वक्ष पर धारण करते हैं । २—अमरसिंह के पक्ष मे जो ब्राह्मणो के चरणो को हृदय मे रखते हैं ।

द्विज भक्ति—सं० स्त्री० एक० । ब्राह्मण की उपासना । वि० गी० : १६-२४-२ ।

द्विजराज—(१) १—सं० पुं० एक० । हंस-ब्रह्मा के पक्ष मे । भृगुनी कृष्ण के पक्ष मे । द्वितीया का चन्द्रमा-शिव के पक्ष मे । ब्राह्मण—राजा अमरसिंह के पक्ष मे । रामचन्द्र-रघुनाथ के पक्ष मे । क० प्रि० ११-३३-३ । २—पुं० एक० । ब्राह्मण-दान के पक्ष मे । क्षत्रिय राजा-तलवार के पक्ष मे । क० प्रि० ११-४०-१ । ३—पुं० एक० । चन्द्रमा ब्रह्मा । क० प्रि० ११-४२-४ । ४—पु० बहु० । पक्षी-कल्पवृक्ष के पक्ष मे । ब्राह्मण—इन्द्रजीत तथा इन्द्र के पक्ष मे । क० प्रि० ११-७६-२ । (२) वि० (विशेष्य—चन्द्रमा) । जिसका जन्म दो बार होता है । रा० ६-४०-२ । (पुराणो मे लिखा है कि चन्द्रमा का जन्म दो बार हुआ था । एक बार ये अग्नि के पुत्र हुए थे और दूसरी बार समुद्र-मंथन करते समय समुद्र से निकले) ।

द्विजराज मित्र दोषी वि० (विशेष्य—जलद-समाज) । चन्द्रमा एवं सूर्य से द्वेष रखने वाला । बादल सूर्य और चद्र को आच्छादित करते हैं । रा० २७-५-२ ।

द्विजराजि—सं० स्त्री० एक० । दंत पंक्ति ।

द्विजाति—सं० पु० एक० । ब्राह्मण । रा० ३४-२८-१ । (याज्ञवल्क्य ने लिखा कि पहले माता-पिता से पीछे मौज बन्धन से

ब्राह्मण का जन्म दो बार होता है। पु० बहु० द्विजातीन, द्विजातीनि)। रा० ३६-३४-२। वि० गी० १२-२२-३।

द्विरद—सं० पु० एक०। हाथी। र० प्रि० ३-१२-१।

द्विरद मद—सं० पुं० एक०। हाथी के कनपटी से झरनेवाला पानी। र० प्रि० ३-१२-१।

द्वि एवरूा—सं० पु० एक०। दुविधा की प्रवृत्ति। रा० २८-१६-२।

द्वीप—१–सं० पु० एक०। वह स्थल जिसके चारों ओर पानी हो। वि०गी० ४-१-२। २–पु० बहु०। सात द्वीप—जंबु, प्लक्ष, शालमलि, कुश, क्रौंच, शाक, पुष्कर। क० प्रि० ११-१७-१।

द्वेष—[√द्विष् + घञ्] सं० पु० एक०। राग का विरोधी भाव, चित्त का वह भाव जो आदिम वस्तु या व्यक्ति का नाश करने की प्रेरणा देता है। रा० २५-३५-१।

द्वै—वि० (विशेष्य—लोचन)। दो। रा० २७-८-२।

द्वैक—वि० (विशेष्य—दिन)। दो एक, कुछ। र० प्रि० १२-२२-३।

द्वै कोस की—वि० (विशेष्य—बाहु)। दो कोस की लम्बाई की। रा० १२-३६-१।

द्वैज—सं० स्त्री० एक०। द्वितीया, दूज। र० प्रि० ३-७३-४।

ध

धकपक—सं० पुं० एक०। भय। क० प्रि० ८-३५-३।

धनंजय झार—सं० पु० एक०। अग्नि का झार। रा० ६-१७-१।

धन—[√धन्+अच्]—१–सं० पुं० एक०। संपत्ति। र० प्रि० १-४-२। ४-१७-२। १०-१३-२। ११-८०-१। १६-८३-३। क० प्रि० ८-१२-४। रा० २-१४-१। छं० १-३३-३। र० १-१२-६। १-१५-६। वी० १-२३-१। ६-२६-१। वि० गी० ८-४५-१। २–पुं० एक०। इन्द्र धनुष। र० प्रि० ६-६-४। ३–पुं० एक०। धनुष। रा० ४-१८-२।

धन जोग—सं० पुं० एक०। धन-प्राप्ति का संयोग। क० प्रि० ६-२६-१।

धनदपुरी—सं० स्त्री० एक०। कुबेर की नगरी। रा० १३-४५-१।

धननास—सं० पुं० एक०। धन का बरबाद होना। क० प्रि० ३-२७-४।

धनपति—सं० पु० एक०। कुबेर। वी० ६-२२। १८-१५। धनपाल-रा० ६०-१२-१। धनेज वि० गी० १-३०-१।

धन रक्षक—सं० पुं० एक०। धन की रक्षा करनेवाला। वी० २२-१२।

धन्वंतरी—सं० पुं० एक०। धन्वतरि। विक्रमादित्य की सभा के नवरत्नो मे से एक। अपनी वैद्य-कला के लिए धन्वतरि प्रसिद्ध था। वी० १४-१२।

धनवान—वि० (विशेष्य— सुनरेस, धनी। वि० गी० २१-५-३।

धनसाला—सं० पुं० एक०। खजाना। रा० २६-३६-१। वी २१-१५।

धनिक—सं० पुं० एक०। धनी। वि० गी० १६-८०-२।

धनी—(१) सं० स्त्री० एक०। स्त्री। रा० ३२-१५-४। (२ वि० (विशेषण—नायक) धन सम्पत्ति युक्त।

धनु—[√धन् + उ] १-सं० पुं० एक०। धनुष। र० प्रि० ६-२६-१। क० प्रि० ६-८-२। ११-३५-३। १२-१८-२। १२-१६-२। १३-३-२। रा० ३४-४८-२। छं० १-७५-४। र० १-२७-२। वि० गी० ११-३-२। २-पुं० एक०। धनुष-रामचन्द्र, परशुराम तथा अमरसिंह के पक्ष मे। गोधन-अमरसिंह के पक्ष मे। क० प्रि० १२-३२-१। ३-पुं० बहु०-धनुष। र० प्रि० १४-१५-३। वी० १६-११।

धनुक—सं० पुं० एक०। धनुष। वी० १-१७-१।

धनुक धुरंधर—वि० (विशेष्य —लोभ)। धनुर्विद्या मे निपुण। वी० १-७१-१।

धनुभंग—सं० पुं० एक०। धनुष का टूटना। रा० ५-४३-४।

धनुरेखा—सं० स्त्री० एक०। धनुष से खिची हुई लकीर। क० प्रि० ११-५८-२। रा० १३-६१-१। १५-६-२। १६-१२-१। छं० १-५०००। धनुष रेखा—क० प्रि० १५-५६-१।

धनुष—१-सं० पुं० एक०। तीर चलाने का एक प्रसिद्ध साधन- सूकर के पक्ष मे। मरुस्थल ग्रीष्म के पक्ष मे। क० प्रि० ७-३०-४। ६-२०-३ ६-३१-१। १६-१७-२। रा० ४-५-१। २-पुं० एक०। सरासन। क० प्रि० ८-१२-३। ३-पुं० एक०। धनुष। छं० २-४४-४। वी० १६-१२।

धनुहियां—सं० स्त्री० बहु०। छोटे धनुष जिसमे बच्चे खेलते हैं। क० प्रि० ६-६-४।

धन्य—वि० (विशेष्य लाभ)। भाग्यवान। वी० १-१७-१।

धर—[धृ + अच्] १-सं० पुं० एक०। शरीर। क० प्रि० १२-:-२। २-पुं० एक०। पृथ्वी। रा० ७-४२-३। १०-१६-१। १६-४०-१। ३२-१४-१।

धर कच्छप सं० पुं० एक०। कूर्मराज (विष्णु का एक अवतार)। रा० २०-२०-१।

धरत—क्रि० पुं० एक०। धरते हो। रा० ७-४६-२। ३२-१०-१। ३२-११-२।

धरतु—क्रि०। धरना। र० प्रि० ४-१०-६।

धरनि—१-सं० स्त्री० एक०। पृथ्वी। क० प्रि० १०-१६-२। रा० १०-३५-१। वी० १-१७-२। धरनी-क० प्रि० १-

८-१। धरन–र० १-४६-५। धरनी–क०प्रि० १-८-१। ६-७२-१। ६-७१-१। ७-२०-१। ८-२३ ३। १५-१२१-१। धरा–क० प्रि० १५-७८ ४। रा० १८-१८-३। ४१-४५-२।

धरनिधर—१–सं० पु० एक०। शेषनाग। रा० १०-१५-२। २६-११-२। २–पु० एक०। धरणी—पहाड़। वी० १-१७-१।

धरनी के हंस—सं० पु० एक०। राजा। क० प्रि० १५-१२१-१।

धरनी तल में धन्य—वि० (विशेष्य—ओड़छो)। समस्त पृथ्वी में श्रेष्ठ। र० प्रि० १-३-२।

धरनी तल में धर्म निकेत—वि० (विशेष्य—राज)। समस्त पृथ्वी मे धर्म का निवास स्थान। धर्म के अनुसार चलनेवाला। वी० १४-५१-२।

धरनीधर—वि० (विशेष्य—लोभ)। समस्त पृथ्वी को धारण करनेवाला। वी० १-१७-१।

धरणीश—सं० पु० एक०। राजा। वी० १-६१-२।

धरम—[धृ+मन्]—१–सं० पु० एक०। आक्षेप अलंकार का एक भेद–किसी की धर्म निर्वाह क्रिया ही दूसरे कार्य का बाधक हो जाय, यही धर्माक्षेप है। क० प्रि० १०-६-२। रा० १-२५-३। वी० गी० ८-२६-१। २–पु० एक०। एक प्रकार का अदृष्ट जिसमे स्वर्ग की प्राप्ति होती है। क० प्रि० १६-८-३।

धरमज्ञ—१–सं० पु० एक०। धर्मज्ञ, धर्म को जाननेवाला। वी० ३-१-१। २–वि०(विशेष्य—विदुर) धर्म का पालन करनेवाला। वी० २-३-१।

धराधर—१–सं० पु० एक०। पृथ्वी को धारण करनेवाला शेषनाग। क० प्रि० १०-२६-२। २–पुं० एक०। पर्वत। वी० २४-५-२। वि० गी० २१-५-३।

धरा धार धारी निराधार धारी—वि० (विशेष्य—श्री विन्दुमाधो) सम्पूर्ण भूमण्डल को बिना किसी आधार के ही धारण किए हुए। वि० गी० ११-२४-१।

धरा पुत्र—सं० पुं० एक०। मंगल ग्रह। रा० २०-८-२।

धरा लोक पाताल स्वर्ग प्रकाश—वि० (विशेष्य—गंगे)। पृथ्वी, पाताल तथा स्वर्ग लोक को प्रकाशित करनेवाली। वि० गी० ११-५०-१।

धरि—क्रि०। धारण किए हुए, धारण करके, पकड़ कर। र० प्रि० १-२४-३। रा० ४-२४-३। १०-३३-१। ११-६-२। १२-५२-२। १३-१७-२। १७-४२-२। १६-८-३। २१-३०-३।

धरियतु—क्रि० पुं० बहु०। धारण करते। र० प्रि० १४-१६-२।

धरिये—क्रि०। धारण कीजिए। रा० १२-३६-२। धारिये–रा० २५-३०-१।

धरिहै—क्रि० पुं० बहु०। धरेंगे। रा० १४ १७-१।

धरी—क्रि०। धारण किए हो, धारण करके। र० प्रि० ३-६०-३ (स्त्री)। १३-१५-

८। क० प्रि० ३-६-४ । ३-४६-२ । रा० ८-१२-४ । १२-६१-२ । १३-३-१ । १४-२२-२ । २१-५८-२ । २६-३८-२ । ३२-८-२ ।

धरे—क्रि०। पुं० बहु०। धारण करते है। रा०७-३५-२ । ६-१६-१ । ११-१४-३ ।

धरै—क्रि०। धारण किये । रा० प्रि० ६-४७-२ । रा० ६-६१-२ । १३-२-१ ।

धरेई—क्रि० । धरे ही । र० प्रि० ४-१५-३ ।

धरो—क्रि०। पुं०बहु०। धारण करते हो। रा० २०-१६-२ । २०-२०-१ ।

धरौं—क्रि०। धारण करूँगा । रा० १६-३०-२ । १६-६-१ ।

धरौ—क्रि०। धारण करते। र० प्रि० ३-२१-३ । रा० ६-१-१ । ८-१२-२ । १२-४०-२ । १६-३-२ । १६-४-१ । ३३-४३-२ । ३६-२१-१ ।

धरोगे—क्रि० पु० बहु०। धारण करोगे। रा० २०-२२-२ ।

धर्यौ—क्रि०। पु० एक०। धारण किया। र० प्रि० ६-४३-२। रखा । क० प्रि० ५-१६-१ । रा० ११-३-१ । ३०-३८-२ । ३०-४३-१ । ३१-१७-२ ।

धर्म—१–स० पु० एक०। न्याय। क० प्रि० १-८-१ । २–पु० एक०। मत। क० प्रि० १-३२-१ । ५-३२-१ । ८-१२-४ । १०-१६-१ । ११-२-३ । ११-३-३ । ३–पु० एक०। धर्म कारणो का वर्णन । क० प्रि० ६-२३-१ । ४—पुं० एक०। उपमा अलकार का एक भेद। जहाँ किसी वस्तु, रूप, रस, गंध, गुण, द्रव्यादि का केवल एक अंग जाना जाता है, वहाँ धर्मोपमा है। क० प्रि० १४-३-१ । ५—पुं० एक०। वस्तु। क० प्रि० १४-३२-१ । ६—पुं० एक०। वह कर्म जिसे वर्ण, आश्रम, जाति आदि क दृष्टि से करना आवश्यक हो। इसके पाँच भेद हैं—वर्ण धर्म, आश्रय धर्म, वर्णाश्रम-धर्म, गौण धर्म तथा नैमित्तिक धर्म। र० प्रि० १-४-२। रा० ६-२४-२ । ७—पु० एक०। कर्म, कार्य। र० प्रि० १-६-१ । ८—पु० बहु। आचरण । र० प्रि० ११-३०-१ । रा० ६-१६-२ । छ० १-३०-४ । वि० गी० १-३१-१ । ६—पु० एक०। तरीका, ढंग। रा० २०-३७-२ । १०—धर्मराज। रा० २०-१२-१ । ११—पुं० एक। कर्तव्य। र० १-१२-४ । वी० १-६-१ ।

धर्म कथा—स० स्त्री० एक०। धार्मिक बातो की चर्चा। रा० २५-३६-२ । वी० २७-१७-१ । वि० गी० ६-३६-२ ।

धर्म कर्म—स० पुं० एक०। धर्म क्रिया। रा० ३५-३-१ ।

धर्म के ई—वि० (विशेष्य—विवेक)। धर्म-पर निष्ठा रखनेवाला। (विवेक युक्त व्यक्ति धर्मानुसार आचरण करता है।) वि० गी० ११-६-२ ।

धर्मचारी—वि० (विशेष्य—राम)। धर्म की रक्षा करनेवाला, धर्मानुसार आचरण करनेवाला। रा० १०-४१-१ ।

धर्म जुक्त—वि० (विशेष्य—सीय) । धर्मानुसार आचरण करनेवाली । रा० २०-२५-१ ।

धर्म तरुवर—सं० पुं० एक० । धर्म का वृक्ष । र० १-१४-४ ।

धर्म धारण—वि० (विशेष्य—श्री विस्नु) । धर्म का उद्धार करनेवाला । वि० गी० १८-१४-१ ।

धर्म धीरता—स० स्त्री० एक० । धर्मपालन की दृढ़ता । रा० २३-२२-१ ।

धर्मपुरी—सं० पुं० एक० । हस्तिनापुरी । वी० १२-३५-१ । धर्मराजपुरी । वी० २७-५-१ ।

धर्म प्रवर—वि० (विशेष्य—क्षत्रियवर) धर्म मे प्रबल । रा० १-४३-२ ।

धर्म प्रवीने—वि० (विशेष्य—मरुत) धर्म मे प्रवीण । वि० गी० ६-४०-१ ।

धर्ममय राजनीतिमय—वि० (विशेष्य—वीर चरित्र) । धर्मयुक्त राजनीति का व्यवहार करनेवाला । वी० १-६-१ ।

धर्मराज—१-सं० पुं० एक० । यमराज, न्यायाधीश । २—स० पु० एक० । पाडु राजा का पुत्र । वी० १२-१७-१ । वि० गी० १५-१३-२ ।

धर्म विधान पूरौ—वि० (विशेष्य—राजा) पूर्णतया धार्मिक । रा० ३४-२७-२ ।

धर्मशास्त्र—स० पु० एक० । वह आप्त ग्रथ जिसमे मनुष्यो के कर्तव्याकर्तव्य, धर्म-विधान आदि की व्यवस्था चर्चित हो । वि० गी० १७-६७-४ । धर्मशास्त्र-वि० गी० १२-२५-३ ।

धर्म संजुत—वि० (विशेष्य—माता-पिता) । धर्म के अनुसार चलनेवाले । वी० ३२ १६-२ ।

धर्म सविवेक—वि० (विशेष्य—अतिथ्य) धर्म तथा विवेक से किया गया । वी० ३२-१६-१ ।

धर्म सनेहु—सं० पुं० एक० । दे० 'धरम क० प्रि० १०-१६-२ ।

धर्मसाला—सं० स्त्री० एक० । कचहरी । रा० ३४-१-१ ।

धर्माधिकारी—सं० पुं० एक० । दान कार्यों को करनेवाला । रा० ३६-३४-१ । वि० गो० ५-८-२ ।

धर्मी प्रबोधी—वि० (विशेष्य—लोम वेष-धारी) । धर्म को क्षति पहुँचानेवाले । वि० गी० ५-१६-२ ।

धर्मोपमा—सं० स्त्री० एक० । दे० 'धर्म' । क० प्रि० १४-३२-२ ।

धव—[√धु (कंपन)+अच्] सं० पु० एक० । पति । क० प्रि० १४-११-१ ।

धवल—[√धाव (गति, शुद्धि) + कल] सं० पुं० एक० । बैल । क० प्रि० ४-२०-१ ।

धाइ—(१) सं० स्त्री० एक० । दूध पिलाने-वाली स्त्री । र० प्रि० ५-२८-३ । १०-१२-१ । १०-१७-३ । १२-१-१ । १२-६-२ । १३-२०-१ । क० प्रि० ३-१२-४ । (२) क्रि० । दौड़कर । र० प्रि० ५-३१-२ । ६-५२-२ । ८-४४-२ । रा० २७-१३-४ ।

धाइयो—क्रि० पु० बहु० । दौड़े । रा० १६-२४-२ । २१-१५-३ ।

धाई—(१) सं० स्त्री० एक० । धाय । र० प्रि० ५-१५-१ । (२) क्रि० । दौड़कर, दौड़ो । र० प्रि० ६-३१-४ । रा० ५-३१-१ । १०-१८-१ । १२-२२-१ । १४-१६-२ । २२-१७-१ ।

धाउ—सं० पु० एक० । नृत्य विशेष । अन्तरिक्ष मे उछलकर युद्ध सा करना और समय पर पुनः निश्चित स्थान पर आ गिरना (केशव-कौमुदी, उत्तरार्द्ध) । रा० ३०-४-२ ।

धाए—क्रि० । दौड़े । क० प्रि० ३-३४-३ । रा० १३-१५-२ । २२-११-१ । ३३-४६-१ । ३४-२-२ । ३४-१०-१ । ३५-१२-१ ।

धात कौ—क्रि० । मनाने के लिए । रा० १७-७-२ ।

धातजू—सं० पुं० बहु० । (आदरार्थक) ब्रह्मा जी । क० प्रि० ८-३५-३ ।

धात्री—सं० स्त्री० एक० । धाय । छं० २-१२-१ ।

धातु—[√धा + तुन्] १—सं० स्त्री० एक० । अभ्रक । क० प्रि० ५-३८-२ । २—स्त्री० एक० । सोना, चाँदी आदि अपारदर्शक पदार्थ । क० प्रि० ६-२०-२ ।

धातु कर्मनि—सं० पु० एक० । धातु बनाने की क्रिया । वि० गी० ८-२७-१ ।

धान—[धान्य] सं० पु० एक० । एक खाद्यान्न जिसका चावल प्रधान खाद्यो मे गिना जाता है । वी० १-६२-१ ।

धाप—सं० पु० एक० । दौड़ का मैदान ।

धाम—[धा + मनिन्] १-सं० पुं० एक० । घर । र० प्रि० १-८-२ । ४-१८-४ । ७-७-१ । क० प्रि० ८-१२-४ । १५-६२-३ । १६-७८-२ । १६-८३-३ । रा० ७-१६-४ । छं० १-३३-३ । र० १-२-२ । वी० ५-३-१ । वि० गी० ८-६-१ । २-पु० बहु० । घर, मकान । क० प्रि० १५-१ । १२-१ । धामनि-घरो । ३-पु० एक० । शरीर । वि० गी० २-३-१ ।

धाम धरम—वि० (विशेष्य—राम करम धर्म के स्थान । रा० १३-३३-४ ।

धाम धाम—सं० पु० एक० । प्रत्येक घर, घर-घर । रा० २१-४५-३ ।

धाये—क्रि० । दौड़कर आए । रा० १०-१६-१ ।

धायो—क्रि० । दौड़े । रा० १५-१३-१ । १७-११-२ । १७-३६-१ । १८-२४-१ ।

धार—१-सं० स्त्री० एक० । प्रवाह । र० प्रि० ७-३२-२ । क० प्रि० ५-३७-२ । रा० ६-३६-२ । धारा-क० प्रि० १५-७८-४ । २-स्त्री० बहु० । तलवार के किनारे । क० प्रि० ११-६-१ । धारा-क० प्रि० १६-७३-२ ।

धाराधर—सं० पुं० एक० । पानी को धारण करनेवाला बादल । क० प्रि० ६-२२-३ ।

धारि—क्रि० पु० एक० । धारण किया, लगाया । रा० २१-५७-१ ।

धारिये—क्रि० । रखिए । रा० ३३-५५-३ ।

धारियै—क्रि० । धारण कीजिए । रा० ३०-४६-३ ।

धारियो—क्रि० । धारण किया । रा० ११-२-१ ।

धारो—क्रि० । धारण कर । रा० ६-४-२ । १०-१३-१ । ३३-२७-१ ।

धारैं—क्रि० पु० बहु० । धारण करते हैं । रा० २०-३७-२ । धारै—रा० ३६-३-२ ।

धारौ—क्रि० । धारण करो । रा० १३-१७-४ ।

धालि—क्रि० । तोड़कर । रा० ५-४३-२ ।

धावत—क्रि० पु० बहु० । दौड़ते हैं । रा० २४-२४-२ ।

धावहीं—क्रि० पुं० बहु० । दौड़ते हैं । रा० १३-३३-१ ।

धावै—क्रि० । दौड़ता । र० प्रि० ३-१०-२ । ४-१७-६ । ६-२३-१ । रा० ३८-२३-२ ।

धावौ—क्रि० । धाओ, दौड़ो । रा० ३७-८-१ ।

धिक—सं० पु० एक० । धिक्कार । रा० १५-१३-१ ।

धिरातु—क्रि० । धरा जाना । र० प्रि० १-२५-६ ।

धिरातु है—सं० क्रि० पु० एक० । (धैर्य) धरा जा सकता है । र०प्रि० १-२५-६ ।

धिरानो—क्रि० । धीमी पड़ी । र० प्रि० ५-३३-१ ।

धी—सं० स्त्री० एक० । बुद्धि, समझ । रा० २३-८-१ । वी० १६-२८-२ । वि० गी० १६-१५-१ ।

धीर—[धी√रा (देना) । क) (१) १—सं० पु० एक० । धैर्य । र० प्रि० ३-२१-३ । क० प्रि० १६-७१-३ । रा० १७-३२-१ । वि० गी० ४-३६-२ । २ पुं० एक० । वीर । रा० १५-०-१ । वि० गी० ६-३६-३ । (२) १—वि० (विशेष्य—कवि) धीरज वाले, श्रेष्ठ । र० प्रि० ४-१-२ । रा० १५-१०-१ । वी० २-३२-१ । वि० गी० ४-३६-२ । २—वि० (विशेष्य—धैर्यवान) । क०प्रि० १-७-१ । १-२६-२ । १-३६-२ ।

धीरज—१—स० पु० एक० । धैर्याक्षेप अलंकार-विशेष । क०प्रि० १०-११-२ । २—धैर्य । रा० १२-८-१ । ज० २४ । वि० गी० २-१०-२ । ३—पु० एक० । नाम-विशेष । वि० गी० ११ १७-२ ।

धीरज को सागर—वि० (विशेष्य—इन्द्रजीत) । अत्यन्त धीरजवान । क० प्रि० ४-२०-१ ।

धीरजताई—सं० स्त्री० एक० । धैर्य । क० प्रि० १३-४१-१ ।

धीरज निधान—वि० (विशेष्य—कृपान) । धैर्य का भंडार । क० प्रि० ११-४०-२ ।

धीरज निधानु—वि०(विशेष्य—जहाँगीर)। अत्यन्त धैर्यवान । ज० १२६-१-२ ।

धीरज मोचन—वि० (विशेष्य—लोचन) । दूसरों का धैर्य छुड़ा देनेवाले, आकर्षक । र० प्रि० ३-११-१ ।

धीरजवंत—वि० (विशेष्य—वीरसिंह) धैर्यशाली । वी० २७-२४-२ ।

धीरजहि—सं० पु० एक० । दे० 'धीरज' क० प्रि० १०-६-१ ।

धीरजु—सं० पु० एक० । चित्त की दृढ़ता । र० प्रि० १-२४-३ ।

धीरता—सं० स्त्री० एक० । धैर्य । र० प्रि० ५-३-४ । क० प्रि० ८-४-१ । वि०गी० ६-१३-३ ।

धीरधर—सं० पु० एक० । बीरबल का पुत्र ज० ८७-२-१ ।

धीर धरन—वि० (विशेष्य—हनुमंत) । धैर्यवान । रा० १३-३३-३ ।

धीर धरन—वि० (विशेष्य—जहाँगीर) । धीरजवाला, धैर्यवान । ज० ११८-२-१ ।

धीर धारिनी—वि०(विशेष्य—ज्ञान) । धैर्य धारण करनेवाला । वि० गी० ६-१२-१ ।

धीरा—१-सं० स्त्री० एक० । नायिका विशेष । व्यंग द्वारा कोप प्रकट करनेवाली स्त्री । क० प्रि० १५-३२-२ । २-सं० स्त्री० एक० । मध्या नायिका का एक भेद (दे० धीराधीरा) । र० प्रि० ३-४५-१ ।

धीराधीरा—१-सं० स्त्री० एक० । मध्या नायिका का एक भेद । रुदन और मुख की मुद्रा द्वारा कोप प्रकट करने वाली नायिका । क० प्रि० ३-४५-२ । २-स्त्री० एक० । प्रौढा नायिका का एक भेद । नायक मे पर-स्त्री-गमन के चिह्न देखकर कुछ प्रकट और कुछ अप्रकट रूप से क्रोध प्रदर्शित करनेवाली नायिका । र० प्रि० ३-६५ २ ।

धीरु—(१) सं० पु० एक० । धैर्यशाली । वी० १-१७-१ । (२) वि० (विशेष्य—लोम) । धैर्ययुक्त । वी० १-१७-१ ।

धुज—सं० पुं० एक० । पताका, झंडा । क० प्रि० ४-२१-१ । रा० ६-५३-२ । वी० १२-२७-१ । वि० गी० १२-१६-३ । धुजा-र० प्रि० १५-५-१ । क० प्रि० ७-४-१ । रा० ३७-१-३ । वी० २२-१८-१ । वि० गी० १२ १६-३ ।

धुन—सं० पु० बहु० । अनाज, लकड़ी आदि मे लगनेवाले छोटे कीडे । र० प्रि० १४-३२-१ ।

धुनि—सं० स्त्री० एक० । शब्द, आवाज । र० प्रि० ६-२५-२ । क० प्रि० ६-१६-१ । रा० १०-१८-१ । छं० २-३४-३ ।

धुनियत—क्रि० । धुनता । र० प्रि० ५-१८-४ ।

धुनै—क्रि० स्त्री० एक० । धुनने लगी, पीटने लगी । रा० १२-१८-१ ।

धुन्यौ—क्रि० पुं० एक० । धुनने लगा, पीटने लगा । रा० ४-१७-१ ।

धुरंधर—सं० पु० एक० । निपुण । वी० ११७-२ ।

धुवाये—क्रि० । धुलवाये । रा० २१-५६-१।

धूत पापा—सं० स्त्री० एक० । काशीखंडोक्त एक नदी । वि० गी० ६-२०-१ ।

धूम—[√धु (कथन) + मक्] । १-सं० पु० एक० । धुआँ । र० प्रि० १४-३२-१ । क० प्रि० ५-३४-२ । ५-३५-२ । ७-१०-१ । रा० १-४८-२ । वी० ११-६ १ । वि० गी० १०-६-१ । २-पुं० एक० । धूम्र वर्ण । क० प्रि० १५-२१-२ ।

धूम केतु—स० पु० एक० । असि (पुच्छलतारा) । रा० १२-२०-१ । वी० ५-२८-१ ।

वन मे व्याघ्रचर्म विछाकर तपस्या कर रहे है और पार्वती उनकी सेवा कर रही है। मदन ने उनपर फूल का बाण छोडा तो उस पुष्पवाण के आघात से शिव ने क्रोध से तीसरी आँख खोल दी। उससे मदन भस्म हो गए। उसी से मदन के नाम "अनग", "अतनु", "अदेह" आदि पड गए है। (हिंदी विश्वकोश, सं० श्री नगेद्रनाथ वसु)। र० प्रि० ३-३-२। क० प्रि० ८-११-२। ११-२६-३। १५-२५-३। १५-७१-१। रा० ७-५०-१। ११-३३-३। ३०-३२-२। ३०-३८-२। वी० च० २२-३३। २६-१७। वि० गी० १६-४८-१। (२) विशेषण। विशेष्य—जनक। विदेह (उपनिषद, पुराण आदि के पढने से मालूम होता है कि जनक ससार मे रहते हुए भी योगी हुए थे। सांसारिक मासल शरीर के होते हुए भी वे अपने सुकर्मो द्वारा राजर्षि कहे गए, इसलिये उनका नाम अनंग, विदेह पडा। शुकदेव आदि ऋषियो ने उनसे उपदेश लिया था)। रा० ४-३१-२।

अनंगजु—सं० पु० एक०। कामदेव (देखो अनंग)। क० प्रि० १५-४३-१।

अनंगतरु—सं० पुं० एक०। कामरूपी वृक्ष। क० प्रि० १५-६०-३।

अनंग भुव—(१) सं० पु० एक०। कामक्रीड़ा की भूमि। र० प्रि० ३-५-२। (२) विशेषण। विशेष्य—पद्मिनी। कामक्रीडा की भूमि। र० प्रि० ३-३-२।

अनंगशेखर—सं० पुं० एक०। दंडक छंद का एक भेद जिसमे ३२ वर्ण होते है और लघु गुरु का कोई क्रम नही होता। छं० मा० १-१८-२। १-४४-८।

अनंगा—विशेषण। विशेष्य—अनगारि। शरीरहीन। वि० गी० ११-२६-१।

अनंगारि—सं० पु० एक०। शिव। छं० मा० १-१-१। वि० गी० ११-२६-१। १२-४५-२।

अनंगे—विशेषण। विशेष्य—गगे। देह या रूपहीन। वि० गी० ११-४८-२।

अनंत—(१) सं० पु० एक०। शेषनाग। क० प्रि० ११-३७-२। (२) सं० पुं० एक०। विष्णु। र० प्रि० १४-४०-२। रा० २०-४१-२। वि० गी० २३-३०-२। (३) विशेषण। (अ) विशेष्य—जोगिन। जिसका अत न हो रा० ६-१८-३। (आ) परब्रह्म के विशेषण के रूप मे, "नास्ति अतो गुणानां यस्य"। र० प्रि० १-१-५। ६-३७-४। ८-१७-२। १४-४०-२। क० प्रि० १-५५-१। ६-६-२। ७-२०-३। ८-३३-२। १०-३४-५। ११-३१-२। १३-११-३। १८-८७-२। रा० ७-४६-१। ६-६-२। १२-३-१। १३-३२-२। १४-२३-२। १४-४१-३। २०-३३-२। २०-५५-२। २१-१३-१। २१-४३-१। २४-२-२। २५-२२-१। २७-१०-१। २६-३४-३। ३७-१-२। ३७-४-२। वी० च० १-१७-३। ६-२३-२। १२-२४-२। १४-४-१। १५-

धूम धूरि सने—वि० (विशेषण—धुआँ और धूल से युक्त)। र० प्रि० १४-३२-१।

धूमिली—सं० स्त्री० एक०। धूमरी गाया। क० प्रि० ५-३४-२।

धूम्रजोनि—सं० पुं० एक०। बादल। रा० १२-२०-१।

धूम्राक्ष—स० पु० एक०। एक दस्यु जो रावण की सेना में था। रा० १७-१७-१।

धूरजटी—सं० पुं० एक०। महादेव। रा० ११-१८-४।

धूरि—१—सं० स्त्री० एक०। धूल, रज। र० प्रि० १४-३२-१। क० प्रि० ५-३४-२। रा० ५-१२-३। वी० १६-११। वि० गी० १२-२-४। धूर—रा० १०-२४-१। २—स्त्री० एक०। कपूर की रज। र० प्रि० ६-४६-४। क० प्रि० ९-१०-३। ११-४८-४। १४-८-२।

धूति—स० स्त्री०एक०। एक सचारी भाव। तत्व ज्ञान, इष्ट प्राप्ति आदि के कारण इच्छाओ का पूर्ण हो जाना या लोभ, भय आदि से उत्पन्न होनेवाले उपद्रवो से न डिगना 'धृति' कहलाता है। र० प्रि० ६-१२-२।

धृष्ट—सं० पु० एक०। नायक विशेष। अपराध करके नि शक बना रहनेवाला नायक। र० प्रि० २-२-२।

धृष्टि—स० स्त्री० एक०। नजर। रा० ३४-३६-४।

धेनु—[√धे+नु]—सं० स्त्री० एक०। गाय। रा० २८-२-१।

धोए—क्रि० पु० बहु०। धो दिए। रा० १०-३१-१।

धोखें—सं० पुं० एक०। विश्वासघात, दगा। र० प्रि० ३-३६-४।

धोवत—क्रि० पु० एक०। धोता है। क० प्रि० ५-२६-४। रा० १९-४०-२। २३-१८-१।

धोवती—सं० पु० एक०। वस्त्र। वी० ५-२६-१।

धोव—क्रि० स्त्री० एक०। धोया करती है। रा० १६-२२-१।

धौम्य—स० पु० एक०। एक ऋषि जो पाडवो के पुरोहित थे। वी० १८-२८-१।

धौरपुर—स० पु० एक०। एक प्रसिद्ध गढ का नाम। वी० ४-५-२।

धौरहर—[धवलगृह]—स० पुं० एक०। अट्टालिका। वि० गी० २१-९-२।

ध्यान—[√ध्यै+ल्युट्]—सं० पुं० एक०। चित्त की स्थिरता चिन्तन, सोच-विचार। र० प्रि० ४-९-१। ६-२३-२। ८-५०-२। १६-७-१। क० प्रि० ३-६-३। छ० १-७४-४। र० १-२६-४। वि० गी० ११-१०-४। ध्यानु—रा० २५-३०-१।

ध्यान विधान स० पु० बहु०। ध्यान करने की पद्धतियाँ। र०प्रि० ८-५०-२।

ध्रुव—[√ध्रु+क]—स० पु० एक०।

राजा उत्तानपाद का पुत्र । वी० १३-१३ । ज० १८ ।

ध्वज—[√ध्वज् (गति) + अच्]—सं० स्त्री० एक० । पताका । रा० १-३७ १ । ध्वजा—वी० १२-२८-१ ।

ध्वज-अग्र—सं० पुं० एक० । पताका का अग्रभाग । रा० २९-३८-२ ।

ध्वनि—[√ध्वन् + इ]—सं० स्त्री० एक० । आवाज, शब्द । र० प्रि० १४-८-१ । रा० १-३०-१ ।

न

नंद—[√नन्द् अच्] । १—सं० पुं० एक० । गोकुल के प्रमुख ग्वाल जिनके यहाँ कृष्ण का पालन हुआ था । र० प्रि० ६-२८-२ । ६-५०-१ । १४-१९-४ । १४-२६-८ । क० प्रि० १३-२-२ । १५-६८-२ । १६-१८-१ । नंदजू (आदरार्थक) । र० प्रि० ५-३२-२ । २-पुं० एक० । पुत्र । रा० ६-१८-४ । र० १ २९-६ । वी० ५-३ । नंदन—वी० १३-८ । १३-११ । ३-पु० एक० । छंद विशेष । छं० २-६२-२ ।

नंदकुमार-सं० पु० एक० । नंद का पुत्र (श्रीकृष्ण) । र० प्रि० ३-५४-३ । ६-३५-४ । ७-६४ । ९-४-१ । ११-८-१ । क० प्रि० १६-२३-१ । ज० १८ । वि० गी० ८-४२-१ । नंद के कुमार र० प्रि० ६-२८-२ । १८- ६-२ । क० प्रि० १३ २ २ ।

नंद जू के ढोटा- वि० (विशेष्य- कान्ह) । नंद जी के लाड़ले । र० प्रि० १३-६-४ ।

नंद नंद प्यारी—सं० स्त्री० एक० । श्रीकृष्ण की प्रेयसी राधिका । क० प्रि० १५-७३-४ ।

नंद नंदन—सं० पु० एक० । दे० 'नंद कुमार' । क० प्रि० १३-२६ ४ । १५-५४-४ । नंदनंदनु-क० प्रि० १५-१२-७-२ ।

नंदन—[नन्द् + णिच् + ल्यु] । १-सं० पु० एक० । नंदन वन—इन्द्र के उपवन का नाम जो स्वर्ग में स्थित, माना जाता है । जब मनुष्यों का भोग-काल पूरा हो जाता है, तब वे उसी वन में सुख-पूर्वक विहार करने के लिए भेज दिए जाते हैं । वि० गी० ४-३०-२ । २-पु० एक० । पुत्र । वी० १३-८ । ज० ८३ ।

नंदन वाटिका—सं० पु० एक० । नंदन वन (दे० 'नंदन' ; वी० ११-३ । ज० ८० ।

नंदनु—सं० पु० एक० । पुत्र, बेटा । क० प्रि० १५-६८-२ ।

नंदलाल—सं० पुं० एक० । दे० 'नंद-नंद' । र० प्रि० ४-७-४ । क० प्रि० ६-४६-४ । ११-८३-४ । नंदलालन–र० प्रि० ८-४७-३ । नंदलालहि क० प्रि० १५-१२५-२ । नंदलालु–क० प्रि० १५-५८-३ ।

नंदा—सं० स्त्री० एक० । नदी-विशेष । वि० गी० ४-२४-१ ।

नंदिग्राम—सं० पुं० एक० । वह गाँव जहाँ भरत ने राम के वन से लौटने तक निवास किया था । रा० २१-५१-२ ।

नंदिनी—सं० स्त्री० एक० । बेटी । वि० गी० ८-५-२ ।

नंदिनी—[नन्द् + णिनि]—सं० स्त्री० एक० । दुर्गा । वि० गी० १०-१६-४ ।

नंदी—सं० पुं० एक० । शिव का वाहन । वी० १७-६ ।

नंदीपुर—सं० पुं० एक० । दे० नंदीग्राम । रा० १८-४४-२ ।

न—अ० निषेधवाचक । १—इसका अर्थ 'नहीं' के समान है, पर यह प्रश्न के उत्तर में नहीं आता, बीच में निश्चय के लिए आता है । उदा० 'संकुचित न सकति' । क० प्रि० ६-१४-४ । २—इससे प्रश्न और आग्रह भी सूचित होता है । उदा० 'मोहि न रोकै' । क० प्रि० १-१६-२ । विशेष—नहीं, अभाव, विधि, अनुज्ञा, हेतुहेतुमद्भाव । कुछ विशेष स्थलों पर भी नहीं के स्थान पर 'न' आता है । उदा० विप्र न जोगी (निषेध) । र० प्रि० १-१३-१ । २-४-१ । ३-१०-२ । ४-१०-१ । ५-१८-४ । ५-२०-१ । ६-३२-३ । ७-१-२ । ७-७-१ । ७-२०-३ । १२-७-३ । १२-१६-१ । १३-५-४ । १४-४-१ । १४-३८-२,३ । १४-३६-१ । क० प्रि० ३-६-१ । ४-६-१ । ५-२६-४ । ६-५-४ । ६-७-१ । ६-२७-२ । ६-४२-१ (निषेध) ७-२१-३ । ७-३६-२ । ८-८-१ से ४ । ८-१२-१ । (न) ८-६०-२ । (न) ८-१०-१ । १०-४-१ । १०-२४-१ । ११-३-१ से ४ । ११-४४ । ११-३०-२ । १२-६-२ । १२-१७-१ । १२-२३-१ से ४ । १३-१२-१ । १४-४७-१ । १५-१२२-२ । १६-३-२ । रा० १-२-२ । २-१६-३ । २-२५-१ । ३-१४-३,४ । ५-८-१ । ६-१८-१ । ७-१६-२ । ८-५-३ । ८-३६-१ । ६-८-१ । ६-४२-४ । १०-१६-३ । १०-२६-२ । ११-४-१ । ११-१५-३ । १२-५-४ । १३-१६-२ । १६-१६-१ । १७-५० २ । १८-२२-१ । १६-२-१ । २०-१६-१, २ । २१-४४-१ । २२-१६-८ । २३-२२-२ । २४-८-२ । २४-२१-८ । २५-६-१ । २६-३-१ । ३१-४०-२ । ३२-२५-२ । ३४-३-२ । छ० १-२-१ । १-१०-३ । १-१३-२ । र० १-८-३ । १-१०-४ । १०-११-१ । ज० १५-१ से ४ । २०-८ । ३८-२ । वि० गी० १-१-५ । १-२-३ । १-१४-२ ।

नई—वि० (विशेष्य—रीति) । नवीन । रा० १६-२६-३ ।

नई-नई—वि० (विशेष्य—रुचि) । नित्य बदलती हुई । र० प्रि० १२-५-१ ।

नईनि—वि० (विशेष्य—नारि) । नई । क० प्रि० ११-७४-४ ।

नए—(१) १—वि० (विशेष्य—सूर)। नव उत्साह से भरे, नवयुवक। रा० १३-३१-१ । २—वि० (विशेष्य—अपराध)। ताजे और अनोखे। र० प्रि० ३-४४-१ । (२) क्रि० पु० बहु०। नवाए, नमस्कार किये। रा० ३-३३-१ ।

नएई—वि० (विशेष्य—भोग)। नए नए। वि० गी० १६-२४-१ ।

नकमोती—स० पु० एक०। नाक मे पहनने का मोती। र० प्रि० १४-१३-३ । १५-५-३ । क० प्रि० १५-५३-२ । १५-५४-४ । १५-८६-३ । रा० ३१-१८-२ वी० २२-६६ ।

नकीब—स० पु० एक०। वह व्यक्ति जो राजाओ की सवारी के आगे आगे उनके वंश का यश गाता चलता है—भाट। र० प्रि० १५-५-३ ।

नक्र—[न√क्रम (गति) + ड]। स० पु० एक०। मगर। वी० ३२-५४।

नख—[√नह् (बधन) + ख, ह लोप]—१-स० पु० एक०। नाखून। क० प्रि० ४-३३-३ । रा० २५-१५-३ । ३४-२२-१ । २-पुं० बहु०। नाखून। र० प्रि० ३-३१-१ । ३-४१-१ । ४ १४-१ । क० प्रि० ५-३०-१ । ५-३२-२ । ६-९-१ । ६-१५-१ । ११-२५-१ । १५-३-१ । १५-२९-१ । वी० ८-१८ । १६-२१ । ज० १ ७८ ।

नखक्षत—स० पु० बहु०। नाखून के गड़ने से पड़नेवाले चिह्न। क० प्रि० १३-४१-४ । नखछत—र० प्रि० ६-५२-३ ।

नख-चंद—स० पु० बहु०। नखक्षत तथा द्वितीया का चन्द्रमा। र० प्रि० ३-४४-१ ।

नखजाल—सं० पुं० बहु०। नखघात, नखक्षत। र० प्रि० १४-२५-२ । नखदान—र० प्रि० ३-८-२ ।

नखत—सं० पुं० एक०। नक्षत्र। रा० ६-६-२ । २९-१७-१ । वी० ४-६ । ४-१० ।

नख तेस—सं० पुं० एक०। नखतेश, चन्द्रमा। ज० १ ।

नख पद पानी—स० स्त्री० एक०। नखो तथा पैरो की उच्चता। र० प्रि० ४-१४-१ ।

नख रद दान—सं० पुं० बहु०। नखक्षत तथा रदक्षत। र० प्रि० ३-४१-१ ।

नखरुचि—सं० स्त्री० एक०। नाखूनो की चमक। क० प्रि० १५-२६-१ ।

नखरेख—सं० स्त्री० बहु०। नाखूनो से खीची गयी लकीरें। र० प्रि० ३-३१-१ ।

नखशिख—सं० पुं० बहु०। पैर से सिर तक। वी० २०-२९ ।

नखावली—सं० स्त्री० बहु०। नखो की पत्तियाँ। रा० ३१-३४-१ ।

नखी—क्रि० पु० बहु०। लाँघ गए। र० प्रि० ६-५२-३ ।

नग—[न√गम् + ड] सं० पुं० एक०। पर्वत या पहाड़। छं० २-७-५ । र० १-१८-३ ।

नगन—सं०पुं०एक०। छंदशास्त्र मे एक गण जिसमे तीन वर्ण लघु होते हैं। उदा०

'सरन'। क० प्रि० ३-१८-१। ३-१६-१। ३-२२-१। ३-२४-१। छं० १-८-२। १-१०-२। १-२०-१। १-२४-१। १-२५-१। १-२७-१। १-३७-१। १-३६-१। १-४४-१। १-४७-१। १-५२-२। १-७२-१। २-३३-३। नगनी-छं० १-७२-१।

नग-मग—सं० पुं० एक०। गजमुक्ता। रा० ३८-१६-४।

नगर—(१) सं० पुं० एक०। शहर। र० प्रि० १-३-२। क० प्रि० १-१८-१। ७-१-१। ७-२-२। ७-४-२। ७-५-४। वी० २-३२। ६-२०। ७-६१। ८-५५। ६-२१। १२-२६। १३-२१। १४-५४। १४-५५। १४-६३। १६-५। १६-१७। १६-३५। १७-४। १७-७। १७-१८। १७-२१। १८-१३। १६-२१। २१-३५। २२-२८। १६-२६। २६-३७। ३३-४३। वि० गी० १-१५-१। १६-३०-१। (२) वि०(विशेष्य—नायक)। नागरिक, चतुर—क० प्रि० ११-२३-३।

नगरि—सं० पुं० एक०। छोटा नगर। वी० १-२६। १६-१। १६-२। १८-१। १८-२०। १६-२२। २२-५६। ३२-५६। ३३-४७।

नगरी—स० स्त्री० एक०। दे० 'नगर'। वि० गी० २-२५-१। पु० बहु०—नगरीन। क० प्रि० ११-४३-३।

नग्न—[√नज् (लजाना) क्त] (१) १-सं० पुं० एक०। काव्यगत दोष-विशेष। अलंकार-रहित छन्द रचना 'नग्न' नामक दोष कहलाती है। क० प्रि० ३-६-१। ३-७-१। २-पुं० एक०। दिगम्बर जैन। वि० गी० ८-१०-२। (२) १-वि० (विशेष्य—हाथ)। आवरण हीन, जहाँ कुछ न हो। वि० गी० ८-१०-२। २-वि० (विशेष्य—कवित्त)। नग्न दोष (अलंकार हीन होना)। क० प्रि० ३-६-१।

नगार—सं० पुं० एक०। नगाड़ा। वी० ५-८३। ५-६८ ५-१०५। २१-३१। २१-३५। पुं० बहु०। नगारा। रा० ३०-२३-२।

नगी कन्या—सं० स्त्री० एक०। नाग-कन्यका, पर्वत प्रदेश की कन्याएँ (काश्मीर या तिब्बत देश की)। रा० १३-५०-२। नगी—३-४-२। ४-११-२। रा० २६-२४-१। नगी-कुमारि—र० प्रि० ३-४-२। ४-११-२। रा० २६-२४-१।

नचत—क्रि० पुं० बहु०। नाचते। रा० ३०-२२-१।

नचत-रचत—क्रि० पुं० बहु०। नाच रचते, नाचते। रा० ३०-२२-१।

नचति—क्रि० स्त्री० एक०। नाचती है। रा० ३-१६-१।

नचायौ—क्रि० पु० एक०। नचाया। रा० ३७-१७-२।

नचावत—क्रि० पु० बहु०। र० प्रि० ५-१२-१। ६-२६-२। १४-६-२। रा० ३१-२०-२।

नचावति—क्रि० स्त्री० एक०। नचाती। र० प्रि० ६-३७-३।

नचावै—क्रि० स्त्री० एक० । नचाती है, नचा रही है । रा० १३-५०-२ ।

नची—क्रि० स्त्री० एक० । र० प्रि० २-१२-२ (भौंह के अर्थ मे चढाई) । ३-२१-१ ।

नचे—क्रि० पु० बहु० । नाचते हैं । रा० २६-७-१ ।

नचै—क्रि० स्त्री० एक० । नाचती है । ६-१३-१ । ८-१६-२ । १०-२३-२ । २३-६०-२ ।

नचै—क्रि० स्त्री० एक० । नाचती है । रा० १३-५१-१ । १४-६-२ ।

नजराइ—क्रि० स्त्री० एक० । दिखाई पड़ता है । रा० १३-१६-१ ।

नट—[√नट् (नृत्य) + अच्] सं० पु० एक० । गाकर तरह तरह की कसरतें, खेल तमाशे दिखाकर जीवन-यापन करने वाला व्यक्ति । रा० ३८-१३-१ ।

नटराज—१-सं० पुं० एक० । कुशल नट । २-३-२ । २-पु० एक० । शिव । वी० २७-७ । ज० ४७ ।

नटी—सं० स्त्री० एक० । नाट्य करने-वाली स्त्री, नट जाति की स्त्री, अभिनेत्री । र० प्रि० १२-१-१ ।

नत—[नम् + क्त] । (१) सं० पु० बहु० । नम्र राजा । क० प्रि० ८-२४-३ । (२) वि० (विशेष्य—भूप) । दीन-हीन । रा० २५-१०-३ ।

नतनारु—सं० पु० एक० । मटकी का मुँह बाँधने का कपड़ा । र० प्रि० १४-१७-२ ।

नर्तक—सं० पु० एक० । नचानेवाला । वी० २७-७ ।

नर्तत—सं० पु० एक० । नाचते हैं । रा० २-३-२ ।

नद—[√नद् + अच्] । सं० पुं० एक० । बड़ी नदी, जैसे सोन, ब्रह्मपुत्र, सिन्धु समुद्र । क० प्रि० ६-६०-२ । १५-१०७-१ ।

नदिका—सं० स्त्री० एक० । छोटी नदी । वी० २४-७ । 'ताते प्रगटि नदिका तीनि ।'

नदी—[नद् + ङीप्] । १—सं० स्त्री० एक० । जल की वह बड़ी प्राकृतिक धारा जो किसी पहाड़, झील आदि से निकलकर विशिष्ट मार्ग से बहती हुई दूसरी नदी, झील या समुद्र मे मिली हो । र० प्रि० १-३-१ । क० प्रि० ७-२-२ । ७-१२-२ । ११-६-१ । रा० ३२-२६-१ । ३७-५-१ । वी० १-३ । २४-१४ । ज० १५७ । वि० गी० १-३-१ । ४-८-२ । ४-२४-२ । ६-४६-१ । ८-४७-२ । २-स्त्री० बहु० । नदियाँ । वि० गी० ६-२३-२ । नदीन—वि० गी० ६-५७-१ । १४-८-१ ।

नदी-कूल—सं० पु० बहु० । नदी के किनारे । क० प्रि० ११-६-१ ।

ननसार—सं० स्त्री० एक० । ननिहाल । रा० ६-१-२ ।

नवीन—वि० (विशेष्य—उत्तर) । बिल-कुल नया । वि० गी० १७-१७-२ ।

नवीने—वि० (विशेष्य—अंग) । यौवन से पूर्ण । क० प्रि० १४-३१-१ । १५-२६-२ ।

नभ—[√नह्‌ (बंधन)+असुन्‌,भ आदेश] सं० पु० एक० । आकाश । रा० १३-३८-१ । ३-४४-१ । ३८-१३ १ । वी० २२-३३ । ज० ४४ । वि० गी० १०-६-१ ।

नभ सिन्धु—सं० स्त्री० एक० । आकाश रूपी गंगा । रा० ३०-४४-१ ।

नमोनारायणाय—सं० पु० एक० । मन्त्र-विशेष । वि० गी० १८-५-१ ।

नर्मदा—सं० स्त्री० एक० । मध्य प्रदेश की एक नदी जो अमर कटक से निकलती है । वी० १-७ ।

नय—[√नी+अच्‌] । सं० पु० एक० । न्याय । क० प्रि० १६-५६-१ ।

नयन—[नी+ल्युट] सं० पु० एक० । नेत्र, आँखें । र० प्रि० ०-१६-१ । १२-४-१ । १८-१-१ । १४-३-१ । क० प्रि० १-५०-१ । ११-६६-४ । ११-२८-४ । १५-३२-४ । १५-३४-३ । १५-३८-४ । १५-५८-४ । १५-६२-३४ । १५-६४-४ । १५-८४-१ । पु० एक०—नेत्र । वि० गी० १-१८-२ ।

नयन कटाक्ष-बान—सं० पु० बहु० । निगाह रूपी सर । क० प्रि० १५-६४-४ ।

नयन कटाक्ष-सर—सं० पु० बहु० । निगाह रूपी वाण । क० प्रि० १५-६२-४ ।

नयन चकोर—वि० (विशेष्य—सीता) । चकोर जैसे अनुराग युक्त नेत्रवाली । रा० ६-४३-१ ।

नयन-सचित्र—सं० पु० बहु० । आँखों के मित्र । क० प्रि० १५-६२-४ ।

नयनविचित्रा—सं० स्त्री० एक० । इन्द्रजीतसिंह के अन्तःपुर की वेश्या-विशेष । क० प्रि० १-४९-१ । १-५० १ ।

नयौ—वि० (विशेष्य—न्याउ) । नया । र० प्रि० ५-१५-३ । वी० ३२-४७ १ ।

नर—[√नृ (नय)+अच्‌] । १—सं० पु० एक० । आदमी, मानव । र० प्रि० १०-२८-१ । क० प्रि० ४ ३-२ । ८-३१-१ । १०-२५-४ । १०-३१-४ । १४-४७-१ । १६-८६-१ । २—पु० बहु० । मानव । र० प्रि० ५-३१ २ । क० प्रि० । ६-७०-२ । ७-५-३ । ७-८-२ । १०-३०-२ । ११-१६-२ । ११-२५-३ । ११-२६-२ । १३-६-३ । १५-३३-३ । रा० १-३४-३ । ४-२-१ । ५-२-१ । ६-२४-१ । ६-४५-१ । ६-४८-२ । ९-३२-१ । १०-१४-२ । १२-२६-२ । १३-४२-२ । १३-७७-१ । १५-१३-२ । १६-१३-४ । १६-३१-४ । २४-६-२ । २४-९-३ । २४-२२-१ । २७-१०-२ । २८-१७-२ । ३३-५-७ । ३९-९-१ । छं० १-२५-४ । १-३८-३ । १-५७-६ । २-१-१ र० १-१८-३ । वि० गी० १-७-२ । १-२९-६ । १-३४-१ । ५-४-२ । ७-१३-३ । ८-३५-३ । ८-३६-१ । ८-३७-१ । ९-९-१ । ९-२९-२ । १०-१९-२ । १३-७८-३ । १६-१२९-१ । २१-४६-१ । पु० बहु० । नरनि । क० प्रि० ४-१३-१ । ३—पुं० एक० । अर्जुन या ईश्वर या विष्णु । क० प्रि० ५-२४-१ । ४—पु० बहु० । मनुष्य—शारदा के पक्ष में । राजा लोग—शरद ऋतु के पक्ष में ।

क० प्रि० ७-३४-२। ५—पु० एक०। मानव जाति। र० प्रि० ६-३८-३। ६—पुं० एक०। राम। रा० १६-१३-४। ७—पुं० एक०। पुरुष। रा० १-४४-३। ८—पुं० एक०। जीव। वी० १-१०। १-१९। १-४६। २-३५। ३-९। ३-३४। ३-४३। ४-१८। ४-१९। ४-२६। ४-४३। ४-४६। ५-२६। ५-७२। ५-७३। ६-११। ८-९। ८-२८। ८-३४। ९-३०। १०-३। १०-२०। १० ३। १-११-३४। १३-१५। १३-१५। १४-६३। १५-३३। १७-४४। १८-६। १९-१६। २०-२। २२-४। २६-२२। २७-१३। २८-९। ३१-१९। ३२-५। ३३-११। ३३-२९।

नरक—[√नृ (क्लेश देना) + अच्] १—सं० पु० एक०। धर्मशास्त्र के अनुसार वह स्थान जहाँ पापियो की आत्माओ को अपने कुकृत्यो का फल भोगने के लिए जाना पड़ता है। क० प्रि० ५-२२-२। ६-३४-४। रा० २३-१३-२। २३-४०-२। २८-२०-२। ३४-२५-१। वी० १-५८। २-८। २-१९। ७-१५। २९-४२। ३०-१८। ३०-१९। ३१-२१। ज० २२-२४। वि० गी० ८-३०-१। १६-१२२-१। १७-४०-२। २१-२३-२। २—पुं० एक०। कालिका का एक पौत्र। क० प्रि० ११-१५-२। ३—पु० एक०। नरक का दण्ड। रा० १३-३६-४। ४—पुं० बहु०। नरकन। रा० १-२५-५। १-२५-६। वि० गी० १५-३४-१। नरकनि—वि० गी० १९-४१-२। ५—पुं० एक०। नरकासुर। रा० १३-३६-४।

नरकासुर—सं० पुं० एक०। पृथ्वी के गर्भ से उत्पन्न एक असुर जिसका वध कृष्ण ने किया था। रा० ९ १५-१।

नर केहरि—सं० पुं० एक०। नरसिंह। वी० ८-२३।

नरदेव— १) १—सं० पुं० बहु०। मानव तथा देवता—रामचन्द्र के पक्ष मे। दुष्ट राजा—बलराम के पक्ष मे। क्षत्रिय—परशुराम के पक्ष मे। ब्राह्मण—अमरसिंह के पक्ष मे। क० प्रि० ११-३२-२। २-पुं० एक। राजा। क० प्रि० १६-७४-१। रा० १९-५४-२। २४-८-३। २६-२६-२। २६-२८-२। २६-३४-१। ३०-१-४। ३२-४७-१। ३४-१-१। ३४-८-१। ३४-४१-१। ३५-७-२। छं० १-६०-३। वी० १-३१। ९-१६। १०-५५। ११-४८। ११-६४। १५-२१। ज० ४०। ५३। ७०। ८७। १६७। १९१। वि० गी० १०-१५-१। १०-२०-३। १०-२१-१। १६-४७-१। १९-६०-१। १९-९८-२। ३—पुं० एक०। हृदय। वि० गी० १४-४३-२। (२) वि० (विशेष्य—रामचन्द्र)। मनुष्यो के राजा। रा० २७-४-४। वी० १५-२१-१।

नरदेव कुमार—सं० पु० एक०। राजा का पुत्र। छं० १-७५-३।

नरदेव क्षयकर—वि० (विशेष्य—करम)। ब्राह्मणो को हानि पहुँचाने वाले। क० प्रि० ११-३२-२।

नरदेव क्षयकर करम हरन–वि० (विशेष्य–राम, बलराम, परशुराम, अमरसिंह)। व० प्रि० ११-३२-२। श्लेष से:—(१) राम के पक्ष मे—जो नर और देवताओ का क्षय करने वाले रावण के कर्मो को हरने वाले हैं। (२) बलराम के पक्ष मे जो—दुष्ट राजाओ का वध करने वाले एवं कुकर्मों का हरण करके मोक्ष देने वाले हैं। (३) परशुराम के पक्ष मे—जो राजाओ के क्षयकारी एव कर्म के विनाशक हैं। (४) अमरसिंह के पक्ष मे—जो ब्राह्मणो को हानि पहुँचाने वाले कर्म नही होने देते।

नरदेव देव प्रसंस—वि० (विशेष्य—राज)। देवो द्वारा प्रशंसित। वि० गी० १६-६०-१।

नरदेवनि कौ देव—वि० (विशेष्य—वीरसिंह)। राजाओ के भी राजा। वी० १४-६४-४।

नरदेव मनि—वि० (विशेष्य-रामदेव)। राजाओ के भूषण, सर्वश्रेष्ठ राजा। क० प्रि० १५-१२१-२।

नरदेवी—सं० स्त्री० एक०। रानी। वि० गी० १६-४७-१।

नरदेह—सं० पुं० एक०। मनुष्य शरीर। वि० गी० ८-३५-३।

नरनाथ—(१) सं० पु० एक०। राजा। वि० गी० ६-४८-२। ११-२-१। १६-२-१। १६-२५-२। १६-८३-२। (२) वी० (विशेष्य—अकबर)। मनुष्यो का राजा। वी० ३-४०-१। २०-२-२। २६-२०-४। २७-१३-२। ३३-२६-१।

नरनायक—सं० पुं० एक०। मानवो के स्वामी–राजा। रा० ५-३८-१।

नरपति—सं० पु० एक०। राजा। क० प्रि० १५-११८-१। वी० २१-१६। ३१-१२। ३१-६०। ३२-३।

नरपति—वी० ३-७। २६-४६। २७-१४। ३२-२४। ३२-३६। ३२-३८। ३२-४६। ३२-५०। ३३-३४। ३३-५०।

नरपाल—सं० पु० एक०। ज० १६-६२।

नर-भाषा—सं० स्त्री० एक०। मनुष्यो की भाषा, यहाँ हिन्दी। छं० २-३-२। २-४-२। वि० गी० १-७-२।

नर भेष—सं० पु० एक०। नर भेष, मनुष्य रूप। रा० २०-५२-१। ३०-१६-१।

नरम—वि० (विशेष्य—दिन)। सुखद, आनन्ददायक। क० प्रि० १०-३२-५।

नर-मुंडनि—सं० पुं० बहु०। मनुष्यो के मुण्डो को। वि० गी० ८-२०-१।

नर-लोकनि—सं० पु० बहु०। नरलोको को। क० प्रि० ६-३४-४।

नरश्रोन—सं० पु० एक०। आदमी का रक्त। वि० गी० ८-२०-२।

नरसिंघ—वि० (विशेष्य—वीरसिंघ)। मृगराज सिंह के समान, मनुष्यो पर अधिकार रखनेवाला। वी० ३३-३२४।

नरसिंह १–सं० पु० एक०। विष्णु का चोथा अवतार—इस अवतार मे विष्णु

के शरीर का आधा भाग सिंह जैसा और आधा मनुष्य जैसा था। क० प्रि० ११-३०-४। रा० २०-२११। २—पु० एक०। राजा होरिलराव का भाई। वी० १-२। २-३८।

नरहरि—सं० पु० एक०। विष्णु भगवान। वि० गी० १८-३-१।

नरहरिदास वीरसिंह देव का पुत्र। वी० २-४९। १०-२८। ३२-१८।

नराच—(नाराच)। १—स पु० एक०। बाण। रा० १६-२१-१। २—पु० एक०। छंद विशेष। छं० १-५४-२।

नरिंद्र—सं० पु० एक०। नरेन्द्र, राजा। क० प्रि० ७-५-३। नरेन्द्र—र० १-३९-६।

नरी—सं० स्त्री० एक। नर-पत्नी। र० प्रि० ३-४-२। ४-११-२। क० प्रि० १-४७-१।

नरेश—१—सं० पु० एक०। राजा। रा० ५-२३-१। २३-२२-२। २९-२४-६। नरेस—क० प्रि० १-२४-२। १-३०-१। १-३१-२। २-४-१। ११-२३-१। १४-७९-२। छं० १-१६-२। र० १-८-२। वी० ३-२५। ४-३५। ५-३। ५-८१। ८-२०। १०-३१। ११-३०। १२-१८। १४-२२। १९-९। २३-४। २६-३६। २९-१। २९-२९। ३१-१८। ३१-६४। ३२-३३। ३३-२८। ज० ३४। १७३। वि० गी० १-२०-४। १-३०-१। १५-३-१। १५-४१-२। २—पु० बहु०। नरेसन—अनेक राजा। छं० १-७१-२। नरेसनि—राजाओं को। वि० गी० ६-३१-१।

नर्क—१ सं० पु० एक०। दे०—'नरक'। वि० गी० २०-३६-१। २-पु० बहु०। (नर्कान)। वि० गी० २०-३६-१।

नर्क सम्पर्क—स० पु० एक०। नरकवास। दे० 'नरक'। रा० ३४-३४-१।

नर्मदा—सं० स्त्री० एक०। दक्षिणापथ की एक नदी। क० प्रि० ३-५३-१। रा० ३४-५६-१। वि० गी० ६-२२-१।

नल—(१ स० पु० एक०। राजा नल—निषध देश के एक प्राचीन और प्रसिद्ध चन्द्रवंशी राजा जिनका विवाह विदर्भ नरेश भीम की कन्या से हुआ था। क० ६-४१-१। ६-६२-१। रा० २३-१५-१। २३-१५-२। वी० १-३५। १-३८। ज० ११-८। वि०गी० ८-३८-५। (२) पु० एक०। राम की सेना का एक भट जिसने नील के सहयोग से समुद्र पर पत्थर का पुल बाँधा था। क० प्रि० ८-१८-। १३-११-३। रा० १३-३१-३। १९-४६-१।

नलकूबर—सं० पु० एक०। कुबेर का पुत्र क० प्रि० ६-४१-१।

नलराज—सं० पु० एक। दे० 'नल'। र० प्रि० १४-५-३। क० प्रि० ११-६३-२।

नलिन—[√नल् + इनच्]। (१) सं० स्त्री० एक०। नीली कुमुदिनी, कमल। क०प्रि० ५-३६-१। (२) पु० एक०। वी० २४-११। (३) पु० बहु०। नीले कुमुद। र० प्रि० ८-२१-३। क० प्रि० १५-३६-४।

नलिनी—स्त्री०एक०। कुमुदिनी। र०प्रि० ३-१०-२। क० प्रि० १५-१२६-१।

३-२। १६-२५-१। १७-३६-२। २२-४९-१। २५-१६-२। २६-५-२। २८-३३-२। ३२-२५-१। जहाँ० ५-१। २४-२। ५८-२। १२४-१। १४९-१। वि० गी० १-२-२। ४-४-२। ९-३८-३। ११-१०-३। १२-१९-२। १३-३०-२। १४-५-५। १५-११-१। १६-९३-१। १८-४-२। १८-२०-२। १९-१४-२। २०-४७-१। २०-६२-१।

अनंत अति—विशेषण। विशेष्य—दान। जिसकी सीमा न हो। जिसका अंत न हो। वी० च० ९-२३-१।

अनंत ही—विशेषण। विशेष्य—बाग। बहुत बड़ा। रा० ३२-२-२।

अनंता—स० स्त्री० एक०। पार्वती। वि० गी० ११-५२-१।

अनंताभिधेय अनंताधिवासी—विशेषण। विशेष्य—श्री विंदुमाधौ। अनगिनत नामोंवाला तथा सर्वव्यापी। वि० गी० ११-२६-१।

अनंत—(१) सं० पु० एक०। श्रीकृष्ण—श्यामवर्णवाची। बलभद्र—श्वेतवर्णवाची। क० प्रि० ५-४०-१। (२) सं० पु० एक०। शेषनाग। क० प्रि० ७-१८-२।

अनगन—विशेषण। विशेष्य—गज। [illegible]। वी० च० १९-२-२।

अन[illegible]—विशेषण। विशेष्य—वात। [illegible]। वी० च० १०-[illegible]-२।

अन[illegible]—विशेषण। विशेष्य—चित्त। [illegible]। वी० च० १०-[illegible]-१।

अन[illegible]—विशेषण। विशेष्य—[illegible]

जल थल बसन उसन भो भीतल। जो न रुचे। क० प्रि० १०-३३-१।

अनर्घ—[सं० न+अर्घं]—विशेषण। विशेष्य—अर्थ। बहुमूल्य। रा० २३-६-२।

अनर्थ—सं० पु० एक०। अनिष्ट; मूल्यवान् होना। वि० गी० ३-२७-१। १६-१५-२। २०-४६-२।

अनल—(१) सं० पु० एक०। आग; अग्नि। र० प्रि० ३-४८-२। क० प्रि० ६-४०-२, ६-६७-२। ८-३१-२। ११-५६-५। १४-४१-२। १६-८-२। १६-१९-१। रा० १७-४९-५। वी० च० १२-२५। २८-२७। २४-१३। वि० गी० १५-४०-२। (२) विशेषण। विशेष्य—ज्वाल। प्रज्वलित। वी० च० २८-१५-१।

अनल-बन—सं० पु० एक०। दावाग्नि; वन की आग जो बाँस आदि की रगड़ से स्वत लग जाती है। क० प्रि० १६-८-२।

अनलवंत—विशेषण। विशेष्य—अचल। भिलावा वृक्षों से युक्त। क० प्रि० ७-७-४।

अनवालस—विशेषण। विशेष्य—सेनापति। जिसमें आलस्य न हो। क० प्रि० ८-१३-२।

अनाथ—सं० पुं० एक०। (१) बिना माँ बाप का बच्चा; आश्रयहीन व्यक्ति। क० प्रि० ६-५०-२। रा० १६-२७-१। २४-१३-२। छं० मा० १-३२-३। वि० गी० ६-४०-४। १६-२६-१। (२)

वि० गी० १६-३६-१ । स्त्री० बहु० । र० प्रि० १०-२२-१ । नलिनीन–बहु० । वि० गी० १३-४२-३ ।

नलिन वनमाल—सं० पुं० एक० । कुमुदिनियों की माला । क० प्रि० १६-३७-१ ।

नव —१–वि० (विशेष्य—नीरज) । नवीन, नए । रा० १२-८८-२ । क० प्रि० १-४८-२ । ३-५५-१ । ५-३५-२ । १०-३०-३ । १०-३३-३ । ११-२-३ । १६-७५-२ । रा० २३-२०-२ । ३०-२४-२ । ३२-१७-१ । ३५-६-३ । वी० ८-१४-२ । २-(विशेष्य—रंग) । नौ । (रा० ३१-२६-२) । र० प्रि० १-२-६ । १४-४१-६ । ५१-१०-१ । क० प्रि० १-४७-२ । ११-५३-२ । १३-३३-१ । वी० ६-१-१ । १-६-१ । १-२४-१ । ८-२५-२ । १६-६-२ । १७-२-१ । २२-७४-२ । २२-८०-२ । ज० १२७-१ ।

नव कन्यानि—सं० स्त्री० बहु० । पाँच कुमारियाँ-अहिल्या, तारा, मदोदरी, कुन्ती और द्रौपदी । र० प्रि० ६-३८-२ ।

नवखंड—सं० पु० बहु० । इला, रमणक, हिरण्य, कंस, हरि, वृष, किंपुरुष, केतु-माल और भारत । रा० ५-४३-१ । वी० ३३-३२ । ज० ३४ ।

नव जोवन भरी—वि० (विशेष्य—सुन्दरी) । नवयौवना । वी० २६-४-१ ।

नव जोवन भूपिता—सं० स्त्री० एक० । मुग्धा नायिका का एक भेद–जिस नायिका को अपने यौवन का आगमन ज्ञात न हो । र० प्रि० ३-२०-१ ।

नव दुर्गा—सं० स्त्री० बहु० । दुर्गा के नौ विग्रह—शैल पुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्र-घटा, कूष्माड, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी, सिद्धिदात्री । क० प्रि० १०-३०-२ ।

नव दुलहिनि—वि० (विशेष्य—पद्मिनी) नव विवाहिता । वी० ८-१४-२ ।

नवद्वार—सं० पु० बहु० । शरीर के नौ छिद्र जो प्राण के निकलने के नौ मार्ग हैं—दो नेत्र, नाक के दो छिद्र, मुख, दो कान और दो गुप्तेन्द्रियाँ । वि० गी० ८-११-१ ।

नवधाई—सं० स्त्री० बहु० । नौ प्रकार से की जाने वाली भक्ति –श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद-सेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य, आत्म-निवेदन । क० प्रि० ११-२३-४ ।

नवधा-भक्ति—सं० स्त्री० बहु० । दे० 'नवधाई' । क० प्रि० ११-२०-१ ।

नवधा भगति—सं० स्त्री० बहु० । दे० 'नवधाई' । क० प्रि० १-४७-३ ।

नवनारी—सं० स्त्री० एक० । नवयुवती, वह स्त्री जिनकी चढती जवानी है । रा० ८-१६-२ । ३०-२४-२ ।

नवनिधि—सं० स्त्री० बहु० । कुवेर की नवनिधियाँ–पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील, खर्व । वी० १-२४ । १२-१८ । २७-१६ । ज० ११३ ।

नव यौवना—(१) सं० स्त्री० एक०। दे० 'नव जौबन भूषिता'। र० प्रि० ३-१७-१। (२) वि० (विशेष्य—कुवाम)। नवयौवन से भरी हुई। रा० ६-३१-१।

नवरंगराग—सं० स्त्री० एक०। इन्द्रजीत सिंह के अन्तःपुर की वेश्या। क० प्रि० १-४३ १।

नव रस—सं० पुं० बहु०। साहित्य में प्रसिद्ध नौ प्रकार के रस—शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, भयानक, वीर, बीभत्स, अद्भुत और शान्त। र० प्रि० १४-४१-१। १५-१०-१। क० प्रि० १-४७-२। ११-५३-२। वी० १-६। ज० ८८।

नव रसमय—वि० (विशेष्य—वीर चरित्र) नवो रसो से युक्त—केशव ने नवरस यों गिनाये हैं—

प्रथम शृंगार, सुहास्यरस, करुना, रुद्र, सबीर।
भय, बीभत्स बखानिये, अद्भुत जात सुधीर॥

र० प्रि० १-१५-१। ज० ८८-१।

नवरस मिश्रित—वि० (विशेष्य—नवधा भक्ति)। नौ प्रकार के रसो से युक्त। वि० गी० १९-५८-१।

नवल—वि० (विशेष्य—अनंगा)। यौवन से पूर्ण। र० प्रि० ३-१७-१। क० प्रि० १५-१७-१। वी० १-१०४-२।

नवल अनंगा—सं० स्त्री० एक०। मुग्धा नायिका—लज्जा और भय के मारे नायक के पास जाने में सकुचानेवाली। र० प्रि० ३-१७-१।

नवल रूप—वि० (विशेष्य—सुन्दरी)। नये रूपवाली, यौवना। वी० २३-४-१।

नवल वधू—सं० स्त्री० एक०। मुग्धा नायिका का एक भेद। र० प्रि० ३-१७-१। नव वधु—र० प्रि० ३-१८-१।

नवहु—वि० (विशेष्य—रस)। नौ। ९। र० प्रि० १-१६-१।

नवाइ—क्रि०। नवाकर, झुकाकर। र० प्रि० ९-४-३।

नवाई—क्रि०। नवाकर, नवाये। र० प्रि० ३-५८-३। रा० ३५-१०-५।

नवाए—क्रि०। नवाये। ३३-१९-१।

नवाब—सं० पु० एक०। सूबे के शासन के लिए नियुक्त राज कर्मचारी। वी० ३-५२। ३-५५। ३-५६। ३-५८। ३-६१। ३-६२। ५-५७। ५-८४। १४-३९। १४-४०। ज० ७-६९।

नवायौ—क्रि०। नवाये। रा० ३-३४-३।

नवावो—क्रि०। नवाओ, झुकाओ। र० प्रि० १२-१६-१।

नवीन—वि० (विशेष्य—पताका)। नये नये क० प्रि० ११-४१-३। १५-६५-२। रा० ३१-१५-१। वी० ५-२२-१। २२-१५-१। वि० गी० १४-३८-२।

नवीनो—वि० (विशेष्य—गति)। नवीन। रा० १०-१२-२।

नवीने—वि० (विशेष्य—भूमि) नवीन। र० प्रि० ९-१३-३। १४-६-१। रा० १०-२०-२। २०-३-१। वी० २६-४९-१। वि० गी० १४-३७-१।

क्रिया की विशेषता भी बतलाता है। उदाहरण। जाए नहीं करतूति कही—ज० १६३-१। र० प्रि० १-२७-१। ३-१०-१। ३-२६-१। ३-२८-१। ३-३२-२। ३-३६-३। ५-११-१। ५-२३-३। ५ ३५-२। ६-४४-२। ७-१६-१। ७-३८-१। ८-१२-२। ८-३१-१। ८-१३-२। ८-१३-३। ६-२०-२। १३-२०-२। १४-३८-१। क० प्रि० ११-६६-३। १२-७-१ से ६। १२-१८-३। १४-५-१। १४-६-१। १५-१०८-१। १५-१२७-२। १६-२६-२। १६-४६-२। रा० ५-२२-३। ७-२१-४। ७-३५-३। १०-१-१। १२-१०-२। १२-२७-१। १२-५०-२। १३-१६-२। १३-३३-२। १४-२५-१। १४-२६-१। २। १४ २७-२। १६-२८-२। २३-३४-२। २७-८-१। ३२-३८-२। ३३-५१-२। ३४-४१-१। ३५-२५-३। वी० १-४१-६। ८-५३-२। ११-४१-१। ११-४२-१। २। ११-५६-१। २६ २२-२। वि० गी० ३-२३-२। १३-१८-२। १३-७४-१। १४-२७-१। १५-३४-१। १६-७२-१। १६-७२-२। १६-११०-१। १७-३५-२। १८-२०-१। १६-४८-१। २१-३७-१। ३।

नही—क्रि० स्त्री० एक०। जुड़ी हुई। र० प्रि० १३-२०-२।

नहुष—सं० पु० एक०। एक ऋषि जिसने इन्द्र का पद पाया था। वी० १८-२३।

न्हवाई—क्रि०। नहलाकर, स्नान करके र० प्रि० १३-३-१।

नाँउ—सं० पुं० एक०। गोत्र-स्खलन। र० प्रि० ५-१६-२। ८-४४-४। ६-३-१। र० प्रि० ५-१६-२। ८-४४-४। ६-३-१। नाउ—र० प्रि० ८-१४-२। क० प्रि० ५-१६-१।

नाँगी—वि० (विशेष्य—तरवारी)। नंगी वी० १४-१६-१।

नाँघहु—क्रि०। लाँघने। रा० ३७-५-२।

नाँघि—क्रि०। लाँघकर। रा० ११-४६-४। ३७-५-१।

नाँहु—[नाथ] सं० पु० एक०। पति। र० प्रि० ४-१६-४।

नाइ—क्रि०। नवाकर। क० प्रि० १-४७-१। रा० ४-१८-२।

नाइका—सं० स्त्री० बहु०। स्त्रियाँ। र० प्रि० ७-३-२। बहु०—नायिकानि। क० प्रि० १५-५४-४।

नाइन—सं० स्त्री० एक०। नाई की स्त्री। नाई जाति की स्त्री। र० प्रि० १२-१-१। नाइनि—र० प्रि० १३-२०-२।

नाइये—क्रि०। नवाओ। र० प्रि० १०-८-८।

नाइहै—क्रि० स्त्री० एक०। डालेगी। रा० ३-३१-४।

नाईं—सं० स्त्री० एक०। सखी। र० प्रि० १३-१३-४।

नाउँ—१—सं० पु० एक०। गोत्र-स्खलन, नाम। र० प्रि० ५-१६-२, ८-४४-४। ६-३-१। वि० गी० १४-१५-२। नाउ—र० प्रि० ८-१४-२। क० प्रि० ५-१६-१। रा० १३-६७-१। २—स्त्री० एक०। नाव। वि० गी० ८-६-२।

नाए—क्रि० पुं० बहु० । नवाए । रा० १०-१७-२ । ३०-१-४ ।

नाक—[नासिका] सं० स्त्री० एक० । वह दो छेदोवाला प्रसिद्ध अवयव जिससे साँस लेते और बाहर छोड़ते हैं । र० प्रि० १-२३-४ । १५-५-३ । क० प्रि० ११-२८-२ । २७-१३-२ । रा० ११-३२-१ । १५-१४-४ । वी० १७-६५ ।

नाको—क्रि० स्त्री० एक० । नाँघो । रा० १३-६२-१ ।

नाखि—क्रि० । लाँघकर । रा० १५-६-२ ।

नाखिहैं—क्रि० पुं० एक० । लाँघेगा । रा० १२-१८-२ ।

नाखो—क्रि० । लाँघो । रा० ३७-५-१ ।

नाग—[नग + अण्] । १—सं० पुं० एक० । साँप । क० प्रि० ३-२२-१ । ३-२५-४ । ३-२६-२ । २–पु० बहु० । दिग्गज । क० प्रि० ६-३२-४ । ३–पुं० एक० । पान की लता । र० प्रि० ३-१०-४ । ४—स्त्री० बहु० । साँपिनियाँ । र० प्रि० ६-३८-२ । ५–पु० एक । हाथी । रा० १४-६-२ ।

नागधर—सं० पुं० एक० । १—शिव-ब्रह्म । वैवर्त पुराण के अनुसार एक दिन गरुड़ से भय खाकर कुछ सर्पों ने महादेव की शरण ली तो उन्होंने उन्हे अभयदान देकर अपने संग में आश्रय दिया । नाग को धरने के कारण शिव नागधर नाम से प्रसिद्ध हुए । रामचन्द्र तथा परशुराम के पक्ष मे । २–सर्प का शरीर--बलराम के पक्ष मे । ३–पुं० बहु० । हाथियों को पकड़नेवाले—अमरसिंह के पक्ष मे । क० प्रि० ११-३२-३ । वि० गी० १५-४०-४ ।

नागधर-प्रिय—वि० (विशेष्य—राम, ब्रज-राम, परशुराम, अमरसिंह) । क० प्रि० ११-३२-३ । श्लेष से– १–राम के पक्ष मे– (दे० 'नागधर') । शिव को जो अपना प्रिय मानते हैं । २–ब्रज-राम के पक्ष मे-- जिनको नाग का शरीर प्रिय है । ३–परशुराम के पक्ष में– । जो नागधर या शिव के प्रिय शिष्य हैं । ४–अमरसिंह के पक्ष में—जो हाथी पकड़नेवाले वीर भीलो को प्रिय मानते थे ।

नाग-नगरी—सं० स्त्री० एक० । हथिनी, करिणी । क० प्रि० ६-४४-४ ।

नागपुर—सं० पुं० एक० । नागो का निवास-स्थान; नागलोक । र० १-१८-५ । नागलोक—वी० ३२-३४ ।

नागबेली—सं० स्त्री० एक० । नागलता, पान की लता । वी० २३-३० ।

नाग-भाषनि—सं० स्त्री० बहु० । नागों को भाषाएँ । वि० गी० १-७-१ ।

नागमुख—सं० पु० एक० । गणेश । वि० गी० १५-४०-४ ।

नागर—[नगर + अण्] । (१) सं० पु० एक० । नागरिक, सभ्य पुरुष । र० प्रि० ३-६४-४ । क० प्रि० ७-२१-४ । रा० १-५०-१ । छं० १-३७-३ । वी० १४-६३ । १५ २२ । १६-१ । १६-५ । १७-३१ । १७-३२ । १८-१३ । २२-२८ । ज० ४० । २–वि० (विशेष्य—

सेतु)। सुन्दर, श्रेष्ठ। रा० १५-३३-१।

नागर-नगरी—स० स्त्री० बहु०। नायक और नायिका। र० प्रि० ३-४४-४।

नागराज—स० पु० एक०। १—हाथी-श्यामवर्ण का बोधक। २—शेषनाग-श्वेतवर्ण का बोधक। क० प्रि० ५-३६-१।

नागरि—सं० स्त्री० एक०। शहर की औरत, चतुर स्त्री। क० प्रि० १-५१-१।

नागरी—[नागर+ङीप्]। (१) १-सं० स्त्री० एक०। नायिका। र० प्रि० ३-४४-४। (२) वि० (विशेष्य—तान तरग)। चतुर। क० प्रि० १-५१-१।

नागरीन—सं० पु० बहु०। नगर, शहर। क० प्रि० ८-५-२।

नागलता—स० स्त्री० एक०। पान की वेली। नाग रूपी लता। रा० ३२-१७-२। वी० २३-३१।

नागलता दल—सं० पुं० बहु०। नागलता के पत्र। वि० गी० ७-७-३।

नाग स्वरूपिणी छंद—सं० पु० एक०। छंद-विशेष। छं० १-१७-२। १-४४८-२०।

नाच—[नृत्य]। १—स० पुं० एक०। खेल, क्रीडा। र० प्रि० ५-१२-१। २—खेल-क्रीडाएँ। क० प्रि० १६-४७-३। ३—पुं० एक०। नृत्य, ताल और लय पर आश्रित अंग-विक्षेप। रा०-२६-७-१। ३७-१४-२।

नाचत—क्रि० पुं० एक०। नाचता है। र० प्रि० ३-५६-१। ५-१८-१। ८-४३-२। रा० ३-१-५।

नाचत फिरत—सं० क्रि० पुं० बहु०। नाचते फिरते। र० प्रि० ५-१८-१।

नाचति—क्रि० स्त्री० एक०। नाचती है। र० प्रि० ५-३२-५। क० प्रि० १-५६-१। रा० ३-१६-२। ११-१८-४।

नाचिबो—क्रि०। नाचना। र० प्रि० ३-७-२।

नाचे—क्रि० स्त्री० एक०। नाचती। र० प्रि० ३०-६-१।

नाजिम खाँ—सं० पुं० एक०। एक पठान योद्धा। वी० ६-१६।

नाटक—सं० पु० एक०। दृश्य काव्य। वी० २३-२१। वि० गी० १३-४१-४।

नाटिका—सं० पु० एक०। उपरूपक का एक भेद जिसमे कल्पित कथा और चार अक होते हैं। वी० २३-२१। वि० गी० १३-४१-४।

नाटिका—सं० स्त्री० बहु०। नौ नाडियाँ-इडा, पिंगला, सुषुम्ना, गधारी, पूषा, गदजिह्वा, शनि, शखिनी। क० प्रि० ११-२०-२।

नाता गोता—स० पु० एक०। सबध। 'नाता गोता कुछ नही गनै'।- वी० ३१-५१।

नाती—[नप्तृ] सं० पु० एक०। पौत्र, लडकी का लड़का। रा० १-२-४।

नातो—सं० पु० एक०। रिश्ता, सम्बन्ध-र० प्रि० ५-२१-३। रा० ६-३६-३।

नाथ—[√नाथ (ऐश्वर्य) + अच्] १—सं० पुं० एक०। पति। र० प्रि० १-२६-२। ३-२३-१। ३-४८-४। क० प्रि० ११-३५-४। ११-७२-२। १५-११८-२। १६-२०-२। १६-३३-१। वी० १२-१-८। २२-७५। वि० गी० २-८-२। ४-४-३। ७-८- । ११-३७-३। २—स्वामी। रा० ६-३६ ३। ६-२८-२। १४-३०-२। २३-१०-२। ३५-३-४। वी० १-२१। ५-१०। ६-३५। १०-३२। ३१-६०। ३२-१४। ३२-२४। पुं० बहु०-स्वामियों के। वि० गी० १८-१३-१। ३—पुं० एक०। श्रेष्ठ व्यक्ति। वी० ४-४३। ४-५६। ५-७२। ६-१०। ८-६। ८-१८। ८-३४। ६-२०। १०-३। १०-२०। १०-३१। १०-४६। ११-४५। १७-२०। २०-२। २२-४। २२-२८। २२-६८। २६-२०। २७-१३। २८-६। ३१ ८०। ३२-५। ३३-२६।

नाथ नाथ—(१) सं० पुं०एक०। शिवजी। क० प्रि० ११-३३-४। (२) वि० (विशेष्य—श्री विष्णु)। नाथों के भी नाथ, रक्षक के भी रक्षक। वि० गी०। १८-१३-१।

नंदड्य—सं० पु० एक०। नाम-विशेष। वि० गी०। १५-१८-२।

नाद—[√नद् + घञ्] सं० पु० एक०। ध्वनि, शब्द। क० प्रि० ८-२४-१। रा० ३०-३-१। ३५-१०-१। वी० २०-३२। ३२-५३। वि० गी०। १४-६-३। पुं० बहु०। नादन (शब्दों)। र० प्रि० १६-१०८-२।

नान्ही—वि० (विशेष्य—शिक्षा)। छोटी। रा० १७-२५-२।

नान्ही-नान्ही—वि० (विशेष्य—भृकुटी)। छोटी-छोटी। क० प्रि० ६-६-२।

नापराध—सं० पु० एक०। (न + अपराध) अपराध। र० प्रि० १०-१८-३।

नाभि—सं० स्त्री० एक०। ढोढ़ी। क० प्रि० १५-२३-१।

नाभि-कूल—सं० पु० एक०। ढोढ़ी का किनारा। क० प्रि० १६-६-१।

नाभिगुप्त—सं० पु० एक०। प्रियव्रत राजा के पुत्र जिनके नाम पर कुश द्वीप के बीच एक वर्ष हुआ। वि० गी० ४-१६-२।

नाभि-सरोज—सं० पुं० एक०। नाभि से उत्पन्न कमल। रा० २१-१७-१।

नाम—[√म्ना (अभ्यास) + मनिन]। १—सं० पु० एक०। वह सबूत जिससे किसी व्यक्ति, वस्तु अथवा समूह का बोध हो। र० प्रि० ३-१७-१। ४-१८-४। ५-१६-३। ७ २-१। ८ २५-२। ६-५-२। ११-१६-४। ११-१८-४। क० प्रि० १-६-१। १-५०-१। २-३-१। ६-७२-४। ७-७-१। ११-२६-२। ११-५६-२। १२-२६-२। १३-१-२। १३-३५-२। १३-३६-१। १५-११८-१। १६-५२-१। १६-८६-२। रा० १-३-४। १-३-६। १-६-२। १-२३-१। ३-१७-२। ५-२४-२। ७-१८-४। ७-४५-३। १३-२३-४।

१३-५६-२। १८-८७-१। १-८८-४। १४-३२-१। १६-४-२। १६-५-२। १७-१३-१। २०-१७-२। २०-४२-२। २१-१७-२। २५-४-२। २८-१-२। २-६-१। २६-८-२। २७-१६-१। २७-२०-१। २८-१३-४। ३०-२०-८। ३१-२-२। ३३-३८-२। ३०-३७-२। ३५-१८-२। ३८-१-२। ३८-५-४। ३६-२५-१। छ० १५-२। २-२०-२। २-३०-२। र० १-२-१। वी० १३-१०। १७-६३। १८-२७। १८-३०। २२-१। २२-४०। ३२-५५। ३३-२८। वि० गी० १-२७-१। २-१२-३। ४-२६-२। ४-३१-१। ४-३२-१। ४-३४-१। ६-२३-२। ६-३८-१। ६-५८-१। ८-६-२। ६-४३-२। ११-११-२। ११-२३-२। ११-२८-२। १३-२६-२। १५-१८-२। १६-५-१। १६-५६-२। १६-६२-२। १७-४७-२। १६-१६-१। १६-१७-३। १६-६३-१। २०-५७-१। २०-५६-२। २०-६०-१। २०-६०-२। २२-६२-१। २१-६२-१। २१-६३-२।

नामहि—नामको। र० प्रि० १५-३-४। नामु—क० प्रि० १५-१२७-२। नामै—वि० गी० ११-५१-१। २—पु० बहु०। संज्ञा, शब्द। र० प्रि० ६-१०-२। नामनि—वि० गी० ८-५७-३। (नामो सं०) । ३—पुं० एक०। प्रसिद्धि, कीर्ति। वी० १५-२। ३१-६। वि० गी० ५-१६-२। १८-२५-२।

नामी—वि० (विशेष्य—जामातु)। जगत्-प्रसिद्ध। रा० ६-२७-२।

नायक—[√नी + ण्वुल्—अक्]। सं० पुं० एक०। शृंगार का आलम्बन, रूप यौवन आदि से सम्पन्न पुरुष। र० प्रि० १-१-३। १-१६-२। १-२८-२। २-२-१। २-१८-१। ३-१४-१। ३-७४-१। ७-४२-१। १२-२-२। क० प्रि० ३-२८-४। ११-२३-३। १३-२०-२। छ० २-४८-४।

नायक नायिका—सं० स्त्री० बहु०। पति-पत्नी। र० प्रि० ७-४२-१। १२-२-२।

नायक मती—सं० पु० एक०। नायकों का अधिपति। वि० गी० १-२२-१।

नायक-लच्छन—सं० पु० बहु०। नायक के गुण। र० प्रि० १-२८-२।

नायकु—सं० पु० एक०। नाचनेवाला उस्ताद। र० प्रि० १४-६-२।

नायिका—१—सं० स्त्री० एक०। यौवन तथा रूप-गुण-सम्पन्न स्त्री। र० प्रि० ३-१४-१, ३-७४-१, ७-४ -२, १२-२-२। क० प्रि० ११-२७-४। नायका—र० प्रि० २-१८-२। क० प्रि० ११-२३-३। २—स्त्री० बहु०। नायक की स्त्री। र० प्रि० ५-४०-१। ७-११-१।

नायो—क्रि० पु० एक०। नवाया। रा० ३४-६-१।

न्याउ—सं० पु० एक०। न्याय। ज० १७१।

न्यामति खान—सं० पु० एक०। एक पठान का नाम। वी० २-३६।

न्हान—सं० पु० एक०। स्नान। वी० ३२-४१।

नार—[नर + अण्]। सं० स्त्री० बहु०। नारियाँ। क० प्रि० १६-८१-२।

नारद—[नार (आत्मज्ञान) √दा (देना) + क]। सं० पु० एक०। एक प्रसिद्ध देवर्षि जो ब्रह्मा के मानसपुत्र माने जाते हैं—पुराणों का कथन है कि ये वीणा बजाते हुए एक लोक से दूसरे लोक मे घूमा करते हैं। ये बडे कलहप्रेमी भी हैं और इसलिए झगड़ा लगानेवाले को लोग 'नारद' कहा करते हैं। इनका नाम 'कलह-प्रिय' भी है—हिन्दी बृहद् कोश। क० प्रि० ५-१-२। ५-१२-२। ५-३७-४। ७-२६-४। रा० १५-२८-१। १६-२-२। २८-१५-१। ३०-४६-४। र० १-२६-१। वी० ५-३८। ११-२०। १६-२४। २८-८। ३२-३४। वि० गी० ४-४०-२। १८-३४-४।

नाराच—सं० पु० एक०। बाण। रा० ५-४२-३। ३५-१५-२।

नारायणदास—सं० पु० एक०। वीरसिंह का दरबारी। वी० ३३-२४।

नारायण—[नार-अयन]। सं० पु० एक०। विष्णु। क० प्रि० ५-१२-१। रा० ३-८-४। ३-८-५। ७-४७-२। ७-४८-१। २१-१६-२। २५-७-१। छ० १-३८-३। वी० ८-१५। २२-१। ३२-४३। (नारायण)। वि० गी० ४-४०-२। १७-१८-१। १८-३५-१। १८-३७-१।

नारायन छन्द—सं० पु० एक०। छंद-विशेष। छं० १-६-२। १-४४८-२।

नारायन जोति—सं० स्त्री० एक०। नारायणी अंश। रा० ७-४२-५।

नारि—सं० स्त्री० एक०। औरत। र० प्रि० २-३-१। ३-५८-३। ७-३२-४। ७-३४-१। ७-४४-१। ६-३-१। १०-८-१। ६-६-१। ११-१३-१। १२-१-१। क० प्रि० ८-१६-३। १६-४७-४। १६-४६-१। रा० १-४४-३। १-४६-१। २-२१-१। ३-५-४। ३-६-१। ४-२-१। ५-५-१। ६-२६-४। ७-‍-४। ७-४१-२। ७-४४-१। ७-२४-३। ६-२६-१। ११-१०-१। १३-३६-१। १८-१८-२। २२-१०-१। २३-३०-१। ३६-३१-२। ३६-३८-४। छ० १-३३-३। वी० १-३१। ५-२६। ६-१२। १३-१५। १५-३३। १७-१०। १८-२३। १६-१४। २१-११। २१-३५। २२-११। २६-२३। २८-३२। ३३-४३। वि० गी० ६-४३-१। ७-१३-२। ८-३६-१। ४-३७-१। ८-४०-३। ६-३३-२। १०-१६-२। १३-७६-३। ६-३३-२। १०-१६-२। १५-११-४। १६-४५-१। १६-८०-१।

नारी—र० प्रि० २-३-१। क० प्रि० ८-८-४। ६-३‍-१। १०-३३-३। रा० ३-६-२। ३-१०-२। ८-१७-१। १३-५-२। २२-११-३। ३८-६-२। छ० १-१-१। २-३८-५। वि० गी० ५-‍-१। ५-४२-१। ८-३५-३। २-स्त्री० बहु०। स्त्रियाँ। क० प्रि० ६-५३-१। ७-५-३। ११-२६-२। छ० १-५७-६। नारिन-स्त्रियों को। क० प्रि० ६-४८-३। नारिनि र० प्रि० ५-३१-१। क० प्रि० ४-१३-१। ३ स्त्री० एक०। खानि, समूह। रा० १-४५-१। ४-पु० एक०।

धनुष को बाँधनेवाला सूत्र। वी० ५-९१।

नारिका—सं० स्त्री० एक०। स्त्री। क० प्रि० ६-४६-३। बहु० — स्त्रियाँ। र० प्रि० ३-४-२।

नारिकेल—सं० पुं० एक०। नारियल। वी० ५-३०। २३-३०। नारिकेर-रा० ३-१-२। २८-१२-४। नालिकेल—वी० २३-१६।

नारिदा—सं० पुं० एक०। पनारा। क० प्रि० १०-१६-३।

नारि-नर—सं० पुं० बहु०। स्त्री और पुरुष। क० प्रि० ७-५-३।

नारि वेष—सं० पु० एक०। स्त्री का वेश। रा० १८-१५-१।

नारी संजुत—वि० (विशेष्य—द्विज)। सस्त्रीक-रा० २१-३-१।

नाल—[√नल् (बंधन)+ण]। सं० स्त्री० एक०। कमल की डंडी। र० प्रि० ८-२१-३। रा० ४-२३-२। वि० गी० २०-४८-१।

नाल नलिन—सं० पुं० बहु०। कमल की डंडियाँ। र० प्रि० ८-२१-३।

नाव—सं० पुं० एक०। नाव। वी० १-६४। पु० बहु०। नावन—नावों में। वि० गी० १४-८-१।

नास—१-सं० पुं० एक०। बरबादी। छन्द मे दो शत्रु गणो के मेल से होने वाला फल। २—क० प्रि० ३-२८-४। पु० एक०। नाश। रा० १२-६-१। १२-६३-२। १७-४१-२। २५-१५-२। वि० गी० २-२३-१। ९-१९-२। १२-२४-२। १३-१८-२। १३-८२-१। १६-१२-१। १७-२२-१। १७-३४-२।

नासत—क्रि० पुं० एक०। नष्ट हो जाता है। रा० ३०-२०-६।

नासति—क्रि० स्त्री० एक०। नष्ट हो जाती है। रा० २४-१७-४।

नासा—सं० स्त्री० एक०। नाक, नासिका। र० प्रि० २-१३-१। रा० ६-५०-१। १८-२५-२। छ० २-३४-३। वी० २२-३२। २२-५८। नासिका-र० प्रि० ३-३४-२। क० प्रि० १५-५०-२। १५-५२-४। रा० ३१-१३-१। वी० ८-१६। ११-१७।

नासियौ—क्रि० स्त्री० एक०। नष्ट हो गई। रा० ३०-१६-२।

नासे—क्रि०। नष्ट होना। रा० १४-२८-१। (कम होना)।

नासै—क्रि० पु० एक०। नष्ट हो जायेगा। १३-६१-२। २१-२०-२।

नाह—[नाथ] १-सं० पु० एक०। प्रेमी, पति। र० प्रि० ७-२३-३। ९-१९-४। १२-१३-२। १३-२-१। १३-२-२। १३-२-३। १३-२-४। १३-२०-२। क० प्रि० ११-१६-३। ८-४०-४। १२-७-४। १३-१०-१। १४-१०-२। १६-४९-१। २—पु० एक०। नाम। छं० २-३७-११। ३—पु० बहु०—स्वामी। क० प्रि० १४-२८-२। र० १-१०-५।

नाह नैननि—सं० पु० बहु०। प्रियतम के नेत्र। क० प्रि० १५-४५-४।

विशेषण। विशेष्य—मुनिवाल। जिसकी रक्षा करने के लिये कोई न हो। रा० ३६-२५-३। वि० गी० ६-४०-४।

अनाथ अति—विशेषण। विशेष्य—कृष्ण। जो अनाथ है; जिनका कोई नाथ नही है। क० प्रि० १२-२५-३।

अनाथ नाथ—(१) सं० पु० एक०। ईश्वर। वि० गी० ११-४१-३। १८-१३-१। (२) विशेषण। विशेष्य—साहि सलेम। अनाथो का नाथ; अनाथाश्रयी। वी० च० ६-६-३। वि० गी० १८-१३-१।

अनाथानुसारी—विशेषण। विशेष्य—राम। अनाथो का आश्रयी। रा० १३-५८-२।

अनाथिनी—स० पु० बहु०। अनाथो को। वि० गी० ६-२४-२।

अनाथिनी को प्रतिबंध—विशेषण। विशेष्य—चद्रमा। विरहिणियो को दुःख देनेवाला। क० प्रि० ११-६६-३।

अनाथै—विशेषण। विशेष्य—राम। जिसको कोई नाथ न हो, जो सर्वश्रेष्ठ हो। रा० १३-५८-२।

अनादि—विशेषण। (१) विशेष्य—जानि। जिसका आदि न हो। रा० ६-१८-३। (२) ईश्वर के विशेषण के रूप मे। क० प्रि० ७-२०-३। वी० च० १-१७-३। रा० २०-३३-२। २३-१०-३। २७-१-१। वि० गी० १-१-१। १५-४५-१।

अनाद्यंत—विशेषण। विशेष्य—श्रीविंदुमाधौ। जिसका आदि अंत न हो। वि० गी० ११-२७-१।

अनाधन—सं० पु० बहु०। वेमहारे मनुष्य। क० प्रि० ११-६१-४।

अनिमा—[स० अणिमा] स० स्त्री० एक०। योग की आठ सिद्धियो मे पहली, जिससे योगी अणुरूप ग्रहण करके अदृश्य हो सकते है। क० प्रि० ६-७२-४। रा० १-३-४।

अनिल—स० पु० एक०। हवा, वायु। क० प्रि० ५-३६-१। १०-२६-२। ११-५६-५। १६-६१-१। रा० १७-४६-५। वी० च० २०-१२। वि० गी० १५-४०।

अनुकूल—(१) स० पु० एक०। अनुकूल नायक, विवाहिता पत्नी मे अनुरक्त रहनेवाला नायक। र० प्रि० २-२-२। २-३-२। क० प्रि० ८-८-४। (२) विशेषण। विशेष्य—वचन। उचित। रा० ३३-२०-१। वी० च० ८-६-१। १५-३३-२। २३-७-१। २५-५-१।

अनुकूला—स० स्त्री० एक०। एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे भगण तगण नगण और दो गुरु होते। छ० मा० १-२७-१। १—पृ० स० ४४८-२६।

अनुगनना—सं० स्त्री० एक०। अर्थालकार का एक भेद जिसमे किसी वस्तु मे पहले से विद्यमान गुण का अन्य वस्तु की सगति या संसर्ग से बढ जाना दिखलाया जाय। क० प्रि० ११-१-२।

नाहर—[नरहरि]। सं० पु० एक०। सिंह। केहरी। र० प्रि० ७-२३-३। क० प्रि० ११-७६-३। १३-१०-१।

नाहिन—अ० निषेधवाचक (हिं० नही)। नहीं। उदा० 'भून मे डोलत वोलत नाहिन बाग गए।' र०प्रि० ८-३४-२। १०-२४-३। क० प्रि० ६-११-३। १४-३५-१। १५-१२-२। रा० ४-२१-३। १०-८-१। वी० १०-५३-१। ३१-६२-१। वि० गी० ६-४६-१। १४-१२ २। १६-५८-२। १६-६२-४। १६-७३-१। १६-१४-२।

नाहिने—अ० निषेधवाचक। (हिं० नही) नही है, नही। उदा० 'नाहिन सीतल।' क० प्रि० ८-४४-२। ६-३२-२। १०-१२-२। १६-३५-१। रा० २१-६-२।

नाही—अ० निषेधवाचक। १—अस्वीकृति सूचक अव्यय। २—उपस्थित न होना। ३—नही है। उदा० 'नाही प्राननाथ साथ, प्रेम जु सहाई है।' र० प्रि० ७-२७-४। ७-३२-४। -४२-४। ६-१०-३। १०-५-२। १०- ६-१। १०-२०-४। १३-?-१। १३-२-२। १३-६-१। १४-३६ १। १४-४०-२। क० प्रि० ६-३२-२। १०-१०-३। ११-३-१। ११-७४-६। ११-८२-४। ११ ८३-४। रा० ११-५-४। १४-३२-३। वी० १०-५३-१। ३२-४३-१। वि० गी० ६-४४-१। ७-१०-३। ६-४६ १। १४-१२-१। १६-१२६-२। १८-२५-१। १८-३६-२।

निंदा [√निंद + अ]। सं० स्त्री० एक०। किसी का दोषवर्णन। अपवाद। र० प्रि० ५-३-१। ६-६-२। ६-१३-१। १४-३०-१। क० प्रि० ६-५-१। १२-२२-१। १२-२?-२। वी० २७-१०। वि० गी० १४-४०-१। ५-१०-२। (निन्दा)।

निंदा-स्तुतिवंत—सं० स्त्री० एक०। व्याजस्तुति—अलंकार-विशेष। निन्दा के व्याज से की गई प्रशंसा। क० प्रि० ६-५-१।

निहकाम—[निष्काम]। वि० (विशेष्य—दान)। इच्छा के बिना किया गया, जिसके पीछे कोई इच्छा नही। वि० गी० १-१४-१।

निकुंज—सं० पु० एक०। सघन वृक्ष अथवा लताओं से आवृत स्थान (लतामंडप)। रा० ३०-३१-१।

निकुंभ—सं० पु० एक०। कुंभकर्ण का पुत्र। रा० १५-६-१।

निकुंभिला—सं० स्त्री० एक०। लंका के पश्चिमी द्वार के पास स्थित एक गुफा जहाँ रावण की यज्ञस्थली थी। रा० १८-२८-१। १८-३०-२। १८-३२-४।

निकटी—क्रि०। निकट आते हो। रा० ११-१८ ३।

निकदै—सं० पु० एक०। नाश। छं० २-२-१।

निकर—[नि√कृ (व्याप्ति) + अच्]। सं० पु० एक०। झुंड। क० प्रि० ८-३४-३।

निकरति क्रि० स्त्री० एक०। निकलती। र० प्रि० १२-१५-८।

निकरी—क्रि० स्त्री० एक० । निकल गई । रा० १२-६६-२ ।

निकरै—क्रि० पु० बहु० । निकलै । रा० २९-१-१ ।

निकलंक—वि० (विशेष्य—ज्योति प्रकाश) । कलंक या दोष रहित । वि० गी० १७-३७-१ ।

निकलंक—१-सं० पु० एक० । कसौटी । वि० गी० १४-६-२ । २-क्रि० स्त्री० एक० । निकली । र० प्रि० ८-४४-८ । रा० ३०-२-२ ।

निकसी—क्रि० स्त्री० एक० । निकली । र० प्रि० १४-१७-३ । रा० ३१-८-२ ३२-३९-१ । निकसि र० प्रि० ८-४४-८ । रा० ३०-२-२ ।

निकसे—क्रि० पु० बहु० । निकले । र० प्रि० ५-३६-४ । ९-५-४ । रा० २५-२४-१ । ३२-३८-२ । ३४-४८-२ ।

निकसैं—क्रि० । निकलें । र० प्रि० ४-१५-४ ।

निकसै—क्रि० पु० एक० । निकलता है । र० प्रि० ३-२०-२ । ३-७०-४ । रा० २५-१०-२ ।

निकसो—क्रि० पु० एक० । निकल आया, निकला । रा० १७-८-१ ।

निकस्यो—क्रि० पु० एक० । निकला । रा० ३०-१२-२ ।

निकाई—१-सं० स्त्री० एक० । शोभा । र० प्रि० ३-३८-३ । ६-३१-३ । क० प्रि० १४-२९-४ । २-पु० एक० । समूह । वि० गी० १०-१२ ४ ।

निकाम—वि० (विशेष—हाथी, साथी आदि) । बेकाम, असत्य । क० प्रि० ६-५६-३ ।

निकारि—क्रि० पु० एक० । निकाल दिया । रा० १२-५६-२ । १७-२५-२ । २३-१५-२ । २३-१६-२ ।

निकारियै—क्रि० । निकाल दीजिए । रा० २७-७-२ ।

निकारिहौं—क्रि० पु० बहु० । निकालेंगे । रा० ३३-३२-३ ।

निकेत— [नि √कित् (बसना) + घञ्] १-सं० पु० एक० । स्थान । क० प्रि० ८-२६-३ । ६-२६ १ । २ पुं० एक० । घर । क० प्रि० १६-६-१ । रा० ९-२२-१ । १३-५ २ । २०-५३ २ । २३-७४-१ । वि० गी० १२-४-, । १३-४४-२ । ३-पुं० एक० । हृदय रूपी घर । वि० गी० १८-३४-२ ।

निखंज—सं० पुं० एक० । निषंग, तूणीर । ज० १८७ ।

निगंध—वि० (विशेष्य—हार) । निर्गन्ध, सुगध से रहित । र० प्रि० ९-८-४ ।

निगति सदा गति—वि० (विशेष्य—गोदावरी) । जिनकी गति नही है, उन्हे (पापियो को) सुगति प्रदान करने वाली । रा० ११-२५-२ ।

निगम—[नि √गम् + ल्युट्] १-स० पु० एक० । भूतकाल का ज्ञान । क० प्रि० २-पु० एक० । वेद । क० प्रि० १० १८-४ । रा० २७-२४-३ । ३०-९-३ । वि० गी० १-१-५ । ३-पुं० बहु० । पथ । क० प्रि० ६ ७०-३ ।

निगम निदानु- वि० (विशेष्य—भानु)। वेदों का नियमन करनेवाला। क० प्रि० ६-७०-३।

निग्रह— १ सं० पु० एक०। दमन, दण्ड देना। रा० ३-४-२। ७-३२-१। ३४-१८-२। छ० १ ५५-४। वी० ३०-६-२। (२, क्रि०। दबाना। रा० ३-४-२।

निग्रहौ— क्रि०। दमन करो। रा० २९-३३-१।

निघटी—क्रि० स्त्री० एक०। निश्चय घट गई। रा० ११-१८-२।

निचय—[नि√चि (चयन)+अच्] सं० पुं० एक०। समूह। क० प्रि० १५-१५-३।

निचोल—[नि√चुल्+घञ्] सं० पु० एक०। वह कपड़ा जिससे कोई वस्तु ढकी जाय, स्त्रियों की ओढनी। र० प्रि० ८-२४-३। क० प्रि० ८-३२-२। १६-६४-२। रा० ८-१२-१। २४-६-१।

निज दल के सिंगार—वि० (विशेष्य—गजराज)। निज दल का आभूषण। क० प्रि० ८-२८-१।

निज धाम वि० (विशेष्य—महादेव)। स्वयं मुक्तिदाता। रा० २६-६-१।

निजेच्छा भूतल देहधारी—वि०(विशेष्य—राम)। अपनी इच्छा से पृथ्वी मे नर शरीर धारण करनेवाला। रा० १०-४१-१। छं० १-३०-४।

निठुर—वि० (विशेष्य—निसि) निष्ठुर, दया न करनेवाला। (विरहिणियो के लिए)। र० प्रि० १३-११-३।

निडोल—वि०(विशेष्य—साहिबी)। अडिग। वी० ५-१०२-१।

नितंब—[नि √तम्ब्+अच्] सं० पु० बहु०। चूतड, कमर के नीचे और जांघो के ऊपर का गुलगुला भाग। र०प्रि० ३-२१-१। क० प्रि० १५-२०-४। वी० २२-८१-२। नितबनि-क० प्रि० १५-१८-२।

नित आनंदकारी—वि० (विशेष्य—वीर)। सदा आनन्द देनेवाला। क० प्रि० ३-२५-१।

नित्य— सं० पु० एक०। प्रतिदिन (किए जानेवाले अनिवार्य कर्म)। वि० गी० १-१-३। १-२-४। ४-३१-२। ४-३९-१। ४-३९-४। ४-४२-१। ६-२६-१। ६-३१-१। ६-५७-३। ८-२९-२। ८-३१-३। ८-४३-१। ८-४४-२। ९-२२-१।

नित्य अमेय— वि० (विशेष्य—श्री रघुवीर)। सदा सीमारहित रहनेवाला। वि० गी० ३-३९-१।

नित्य दीनदयाल—वि० (विशेष्य—प्रभु)। दीनो पर सदा दया करने वाला। वि० गी० १३-३८-३।

नित्य नवीन—वि० (विशेष्य-परमानन्द)। हमेशा एक सा रहने वाला। वि० गी० १९-६८-२।

नित्य निरीह—वि० (विशेष्य—जीति)। हमेशा ही विरक्ति मे रहने वाला। वि० गी० १-१-३।

नित्य विहारी—वि० (विशेष्य—मत्र)। नित्य विहार करने वाला। वि० गी० ८-४४-२।

नित्य संकल्प विलापहारी—वि० (विशेष्य—द्विजाती)। संकल्प किये हुए दान द्रव्य को लेने वाली। रा० ३४-३१-१।

नित्य सत्य—वि० (विशेष्य—श्री विस्नु)। परमार्थ सत्य स्वरूप (बौद्ध दार्शनिकों के अनुसार सत्य दो प्रकार का होता है—संचित-सत्य जो बहुमत से माना जाता है और परमार्थ-सत्य जो स्वत. सत्य हो अर्थात् ईश्वर)। वि० गी० १८-१७-१।

नित्य ही नवीन—वि० (विशेष्य—देव)। हमेशा ही नवीन या युवा रहने वाला। वि० गी० १५-४५-२।

निथंबराजिका—सं०स्त्री०एक०। स्थंमों की पंक्ति। रा० ६-३८-१।

निदर्सना—[नि √दृश् + णिच् + ल्यु अन-टाप] सं० स्त्री० एक०। अर्थालंकार का एक भेद जिसमे दो पदार्थों की भिन्नता होते हुए भी उपमा द्वारा उनके संबन्ध की कल्पना की जाती है। क० प्रि० ९-२-२। ११-४९-२।

निदान—[नि √दा + ल्युट्]सं० पुं०एक०। आदिकारण। र० प्रि० ८-४७-३। क० प्रि० ११-३१-३। बहु०-निदाननि। र० प्रि० ५-३३-१।

निदानै—क्रि०। निदानकर, दोजकर, खोजकर, सोचकर। र० प्रि० ११-३-३।

निद्रा—[√निद + रक्, न लोप] सं० स्त्री० एक०। नींद। र० प्रि० ३-२-२। क० प्रि० ८-३९-१। रा० १८-३१-१।

निद्धि—[नि √धा + कि] सं० स्त्री० एक०। खजाना। छ० १-१-४।

निधान—[नि √धा + ल्युट्] सं० पुं०एक०। खजाना, घर, आगार। र० प्रि० २-१३-३। क० प्रि० ८-४-२। ११-३१-२। १२-१९-१। १६-४८-१। रा० १३-३८-२। वि० गी० १-३५-१। १-३५-२।

निधानी—सं० स्त्री० एक०। खजाना। र० प्रि० १६-११-२। क० प्रि० १४-१९-३। १५-४७-४।

निधानु—सं० पुं० एक०। कारण। क० प्रि० ६-७०-३। पुं० बहु०। भण्डार। क० प्रि० १६-६५-२।

निधि—१-सं० स्त्री० बहु०। नौ निधियाँ-पद्म, शंख, महापद्म, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील और स्वर्ण। र० प्रि० १-१-६। क० प्रि० ११-२०-१। रा० १४-२४-२। १८-३०-२। २-स्त्री० एक०। किसी वस्तु का आगार, खजाना। र० प्रि० १४-३३-२। क० प्रि० १५-७१-४। वी० २२-२-१। वि० गी० १-३५-१। १-३५-२।

निधिपति—सं० पु० एक०। कुबेर 'व० २२-२।

निनारे—वि० (विशेष्य—बान)। अनोखे, न्यारे। रा० २४-८-३।

निन्यारे—वि० (विशेष्य—पाठ)। विचित्र। र० प्रि० ६-५३-४।

निपट—१-वि०(विशेष्य—निसि) । भयंकर । र० प्रि० ७-२८-४ । २-(विशेष्य—पतिव्रत धरनी) । अत्यन्त । रा० ११-२५-१ । ३०-२७-१ । वी० १-६-१ । १-२२-४ । ५-६४-१ । ६-१५-२ । वि० गी० १-१-३ । १५-४८-२ । १७-२०-१ । १८-२७-१ ।

निपट कटु—वि० (विशेष्य—लोम) । अत्यन्त कठोर । वी० १-२२-४ ।

निपट कपट हर—वि० (विशेष्य—राधा तेरो नाम मंत्र, उचार मंत्र) । कपट को हरनेवाला । र० प्रि० ४-१८-१ ।

निपट कुटिल गति—वि० (विशेष्य—सूरज, सरित) । टेढी चालवाली । रा० १-२६-१ ।

निपट नवीन—वि० (विशेष्य—गौसत) । अत्यन्त नवीन । रा० ३०-२७-१ ।

निपट निर्बान—वि० (विशेष्य—ज्योति) । अत्यन्त शान्त । वि० गी० १-१-३ ।

निपट पतिव्रत धरनी—वि० (विशेष्य—गोदावरी) । अत्यन्त पतिव्रता । अपने पति समुद्र की सेवा मे सदैव उसकी ओर बहती रहती है । रा० ११-२५-१ ।

निपट मृतक—वि० (विशेष्य—रावन) । विशुद्ध रूप से मरा हुआ प्राणी । रा० १३-६३-२ ।

निपटहिं—वि० (विशेष्य—बालक) । निपट । वी० १०-५६-२ ।

निपटहि बालक—वि० (विशेष्य—भारत साहि) । अत्यन्त बालक । वी० १०-५६-२ ।

निपुन—वि० (विशेष्य—विचित्र नयना) । प्रवीण, कुशल । क० प्रि० १-४३-२ ।

निबहै—क्रि० । निर्वाह हो सके । र० प्रि० २-४-२ ।

निबहेगो—क्रि० पुं० एक० । निभेगा । र० प्रि० १२-३-४ ।

निबहोगी—क्रि० पुं० एक० । निर्वाह होगा । र० प्रि० ६-३४-२ ।

निबास—सं० पु० एक० । निवास, रहने का स्थान । छं० १-५८-६ । वि० गी० १-५-१ ।

निबाहत—क्रि० पुं० बहु० । निर्वाह करते हैं । रा० २७-१२-२ ।

निबाहि—क्रि० । निवाहना, निवाहो । रा० १३-२-४ । १४-३५-२ ।

निबृत्ति—सं० स्त्री० एक० । निवृत्ति, नाम-विशेष । वि० गी० २-१२-३ । २-१४-३ । ६-१६-३ । १३-१७-३ । १४-१४-१ । १४-१५-२ । २०-३५-१ । २०-३५-४ । २०-३६-४ ।

निबेरहु—क्रि० । निपटा दो । र० प्रि० ५-१५-३ ।

निमि—१-सं० पु० एक० । नीम । क० प्रि० १६-७१-२ । २-पु० एक० । राजा जो मिथिला के विदेह वंश के प्रवर्तक थे । रा० ५-२२-४ ।

निमित्त—सं० पु० बहु० । कारण । क० प्रि० ६-२३-१ । रा० २६-३१-१ । छं० १-५०-२ ।

निमिवंश—सं० पु० एक० । इक्ष्वाकु कुल के राजा निमि का वंश । रा० ६-२६-४ ।

निम्नगा—सं० स्त्री० एक । नदी । रा० २८-२-१ ।

निम्नि—स० पु० एक० । नाम । विशेष । वि० गी० १६-५३-३ ।

नियम—१-स० पु० एक० । सिद्धान्त, रीति । र० प्रि० ६-११-२ । क० प्रि० ४-४-२ । ६-२-१ । वि० गी० १-१-६ । ८-२६-११-४ । १४-१४-१ । बहु०—नियमो का । वि० गी० २१-१३-२ । २—पुं० एक० । श्लेष अलंकार का एक भेद । जहाँ किसी वस्तु का एक स्थान से निषेध करके उसका दूसरे स्थान मे स्थापन हो अर्वाचीन आचार्य इसे परिसंख्या कहते हैं । क० प्रि० ११-३६-१ । ३-पु० एक० । उपमा अलकार का एक भेद जहाँ किसी उपमेय के अन्य उपमान का निरादर करके किसी एक ही उपमान के तुल्य ठहरावें जिस पर कहनेवाले का मन-वचन से विशेष प्रेम हो । इस प्रकार के प्रकाशन से वह उपमा एक-प्रकार से नियमित हो जाती है, अत. उसे नियमोपमा कहते हैं । क० प्रि० १४-२ २ ।

नियमोपमा—स० स्त्री० एक० । दे० 'नियम' –३ । क० प्रि० १४-२२-२ ।

नियराइये—क्रि० । निकट आ जाना, समीप आ जाना । र० प्रि० १३-५-६ ।

निरंजन—(निर् + अजन) । (१) सं० पु० एक० । निरुपाधि ब्रह्म । ज० २००-३ । (२) वि० (विशेष्य—ज्योति) । माया से परे, मायातीत । रा० २५-१४-२ । वि० गी० १-१-३ । ५-६-१ । १५-५४-१ । १७-१९-१ । १८-२२-२ ।

निरक्षक—स० पुं० एक० । १-सुख –रुद्र तथा अमरसिंह के पक्ष मे । २—जल—समुद्र के पक्ष मे । क० प्रि० ११-३१-२ ।

निरक्षक निधान—वि० (विशेष्य—रुद्र, समुद्र, अमरसिंह) । क० प्रि० ११-३१-२ । श्लेष से— १-रुद्र के पक्ष मे जो अरक्षित जीवो के लिए सुख के भण्डार हैं । २-समुद्र के पक्ष मे—जो अरक्षित जल का भण्डार है । ३-अमरसिंह के पक्ष मे — जो अरक्षित जनो के लिए सुख के भण्डार हैं ।

निरखत—क्रि० पु० एक० । देख रहा है । रा० ३-१८-१ ।

निरखि—क्रि० । देखकर । रा० १-४४-३ । ६-४८-२ । १३-७८-२ । १५-६१-३ । ३०-१-४ । ३१-२३-१ ।

निरखि-निरखि— सं० क्रि० । देख देखकर । रा० ३०-१-१४ ।

निरखै—क्रि० पु० बहु० । देखे । रा० ६-३६-४ ।

निरघोष- सं० पुं० एक० । घोर ध्वनि । र० प्रि० ७-३२-२ ।

निरदोषी—वि० (विशेष्य-रघुनन्दन) । दोष रहित । रा० ७-४५-१ ।

निरवद्य- वि० (विशेष्य-वासर कर्म) । अनिंद्य, प्रशंसनीय । रा० २३-८-२ ।

निरवान—सं० पु० एक० । बिजली की कड़क । रा० १३-१६-१ ।

निरवार सं० पु० एक० । निश्चय करने या ठहराने की क्रिया, निर्धारण । क० प्रि० १४-५-१ ।

निराधार--सं० पु० एक० । आकाश । वि० गी० ११-२४-१ ।

निर्वान पथ—सं० पुं० एक० । निर्वाण मार्ग, मुक्ति मार्ग । रा० ११-८-२ ।

निरीह—[निर्–ईहा] । वि० (विशेष्य – जोति) । इच्छा रहित । रा० २५-१४-२ । वि० गी० १-१-३ । १५-४६-२ । १७-१८-४ । १७-१९-१ । १७-३७-१ । १८-२२-२ । २१-१६-१ ।

निरूप—वि०(विशेष्य--मदन) । अदेह, अनंग, (विस्तार के लिए दे० 'अनंग') । रा० ६-५६-५ ।

निरूपन—सं० पु० एक० । उपमा निरूपण- किसी विषय को इस रूप मे रखना कि वह साफ-साफ स्पष्ट हो जाय । रा० ६-५९-५ ।

निरूपम--सं० स्त्री बहु० । ऐसी वस्तुएँ जिनकी उपमा न हो । क० प्रि० ६-४२-३ ।

निरैं—सं० पु एक० । नरक मे । वि० गी० ८-४७ १ । ९-५३-४ ।

निरे पगु धारी—वि० (विशेष्य -एक सखी इहि लोक) । नरक मे जानेवाली । रा० ६-२५-१ ।

निरे पद--सं० पु० एक० । नरक लोक । र० प्रि० ३-१३-४ ।

निरे मग--सं० पु० एक० । नरक पथ । रा० ३३-५-२ ।

निर्गुण--[निर् + गुण] । वि० (विशेष्य—राम) । बिना रूप रङ्ग का । रा० २०-१५-२ । ज० २००-३ । वि० गी० १-१-३, १७-१८-२ । १७-३७-१ । २१-३२-२ ।

निर्गुनताई—(१) सं० पु एक० । गुणातीत होने का भाव । रा० १७-४३-१ । २) वि० (विशेष्य—रघुराई) । रूप गुण से परे । रा० १७-४३-१ ।

निर्घोषनि—[निर्√घुष् (शब्द) + घञ्] । सं० पु० बहु० । शब्द, निनाद । क० प्रि० १०-२९-१ ।

निर्जन—[निर्–जन] । वि० (विशेष्य–कानन) । जन रहित । रा० ३३-४७-२ ।

निर्जल—[निर्–जल] । वि० (विशेष्य–कानन) । जल रहित । रा० ३३-४७-२ ।

निर्झर—सं० पु० एक० । झरना । क० प्रि० ५-७-१ ।

निर्झर पातु—सं० पुं० एक० । झरना । क० प्रि० ७-८-२ ।

निर्दय—वि० (विशेष्य—मित्र) । दयाहीन । रा० २८-१७-२ ।

निर्दय मित्र वि० (विशेष्य–सर, खग) । दयाहीन दोस्त । रा० २८-१७-२ ।

निर्नय—सं० पु० एक० । निर्नयोपमा—अर्थालंकार का एक भेद जिसमे उपमेय तथा उपमान के गुणो तथा दोषो का विवेचन किया जाय । क० प्रि० १४-३-२ ।

निर्नय उपमा—सं० स्त्री० एक० । निर्नयोपमा । (विस्तार के लिए दे० निर्नय) । क० प्रि० १४-२६-२ ।

निर्वीन—वि० (विशेष्य—जोति)। गात। वि० गी० १-१-३।

निर्विकार—वि० (विशेष्य—देव)। विकारो से रहित। वि० गी० १५-४६-२। १७-१८-४। २१-४०-१।

निर्विकारे—वि० विशेष्य—गंगे)। विकारो से रहित। वि० गी० ११-४८-१।

निर्मल—वि० (विशेष्य—नीर)। स्वच्छ, पवित्र। वि० गी० ६-५७-१।

निर्मले—वि० (विशेष्य-गंगे)। पावन, पवित्र। वि० गी ११-४८-१।

निर्लज्ज-वि० (विशेष्य—गनिका)। लज्जा हीन। र० प्रि० ४-१२-१।

निर्लेप—वि० (विशेष्य—जोति)। निर्लिप्त, आसक्ति रहित। वि०गी० १७-१८-२।

निर्वेद—सं० पु० एक०। एक संचारी भाव। इष्ट वस्तु का वियोग होने या अन्य किसी कारण उपलब्ध विपत्ति तथा ईर्ष्या आदि कारणो से किसी व्यक्ति या वस्तु से उपेक्षा या उदासीनता को 'निर्वेद' कहते हैं। र० प्रि० ६-१२-१।

निलज—वि०(विशेष्य—लोग)। लज्जा हीन, बेशरम। (रा० २८-१०-१)। र० प्रि० ३-८-२। बी० १-३४-२।

निलय—सं० पु० एक०। निवास स्थल, घर। क० प्रि० १५-१५ १।

निवाज—सं० पुं०एक०। दया करनेवाला। ज० ६-८२।

निवारत—क्रि०। निवारण करते हुए। रा० १७-२५-८।

निवारि—क्रि०। रोक दे। र० प्रि० १-२५-१।

निवारिये—क्रि०। निकालिए। रा० ३०-६-३।

निवास—[नि√वस् + घञ्] १—सं० पु० एक०। रहने की जगह, गृह। र० प्रि० १-१-६। ३-२६-४। ३-४७-१। ८-१८-१। १२-५-२। क० प्रि० १-३-३। १-८-२। ६-५-२। ६-४०-१। ६-२२-१। १५-१०-३। १५-३३-४। १६-४८-१। रा० ३१-१६-२। वि० गी० १६-४५-३। २ पु० एक०। आश्रम। क० प्रि० ७-११-४। ३—पु० बहु०। क० प्रि० १२-४-१। ४-पु० बहु०। स्थान। र० प्रि० ५-३५-२।

निवास-निधि—वि० (विशेष्य—गनेस)। नवो निधियो के निवास स्थान। र०प्रि० १-१-६।

निवेदन—[नि√विद् + णिच + ल्युट्]। स० पु० एक०। किसी विषय को किसी से विनयपूर्वक कहना। रा० ३५-६-४। वि० गी० १२-२५-४।

निशा—[नि √शो (क्षीण करना) + क] स० स्त्री० एक०। रात्रि। रा० १-४१-४।

निशि-पालिका—सं० स्त्री० एक०। वर्णिक छन्दो मे समवृत्त का एक भेद। भगण, जगण, सगण, नगण, नगण, रगण, के योग से यह वृत्त बनता है। छं० १-४४८-५।

निश्चल—(१) सं० स्त्री० बहु०। निश्चल वस्तुएँ। क० प्रि० ६-१-२। (२) १-वि० (विशेष्य—चित्त)। अटल, अचचल, दृढ़। वि० गी० २०-५३-१।

२-(विशेष्य—वेश)। अटल, स्थिर। वि० गी० १५-५४-२। ६०-१०७-२।

निश्चलै—वि० (विशेष—गंगे)। स्थिर रूप से बहती रहनेवाली। वि० गी० ११-१८-१।

निश्चिता—वि० (विशेष्य—परमेश्वरी)। चिन्ता हीन। वि० गी० १८-३६-२।

निषंग—[नि √सञ्ज (लगाव) + घञ्] सं० पुं० एक०। तूणीर, तरकश। रा० ७-२३-२।

निषेधावती—सं० स्त्री० एक०। मार्कण्डेय पुराण के अनुसार एक नदी का नाम जो विंध्य-पर्वत से निकलती है। वि० गी० ६-१६-२।

निषेधन—सं० पु० बहु०। रुकावटें। वि० गी० १६-१२६-२।

निष्कंटक—वि० (विशेष्य—सुरकटक)। बिना बाधा के। रा० १६-५१-३।

निष्ठुर—वि० (विशेष्य—प्रीति)। हृदयहीन, कठोर। रा० २३-४-१। वी० २६-२६-१। वि० गी० १७ ७-१।

निष्फल—वि० (विशेष्य दृष्टि)। बेकार, व्यर्थ। वी० ११-१४-२। वि० गी० १४-१३-२। १६-४३-२।

निसंक—(१) सं०पु०एक०। निःशंक नृत्य। दोनो पैरों को जोड़कर दूर-दूर तक उछलते कूदते और घूमते हुए ठीक ताल पर नियत स्थान पर आकर सम देना। (केशव कौमुदी, उत्तरार्द्ध)। रा० ३०-५-१। (२) वि० (विशेष्य—रावन)। निर्भय, शंका रहित। रा० १६-२४-२।

निसंक अंक—वि० (विशेष्य—लंकानाथ) अत्यन्त निर्भय। रा० १६-२४-२।

निसंकता—सं० स्त्री० एक०। निडरपन। क० प्रि० १५-३२-२।

निसंकु—वि० (विशेष्य—साधु)। निःशंक, शंकाहीन। वी० १-३५-२।

निसर्ग—सं० पुं० एक०। प्रकृति। वि० गी० १६-५४-१।

निसा—सं० स्त्री० एक०। रात। र० प्रि० १०-२४-२। १३-१०-३। क० प्रि० ५-२३-१। ८-३८-१। ८-४३-१। वि० गी० १६-११-२। २०-१६-२।

निसाचर—सं० पु० एक०। राक्षस। वी० १४-२१।

निसाचर-पद्धति—सं० स्त्री० एक०। रात्रिचरों की रीति।

निसाचरी—सं० स्त्री० एक०। राक्षसी। र० प्रि० १४-३१-४। बहु० निसाचरीनि। क० प्रि० ११-६६-१।

निसान—सं० पु० एक०। लक्ष्य। वि० गी०। १०-७-४। १०-१६-२।

निसान-बाजे—सं० पु० बहु०। विजय सूचक बाजे। रा० २६-११-१।

निसि—सं० पुं० एक०। रात। र० प्रि० १-२४-१। ५-२४-१। ६ ४३-४। ७-२३-३। ७-२८-४। ८-११-३। ६-१६-१। ११-१३-४। ११-८-३। १३-११-३। क० प्रि० १०-३४-४। ११-७६-३। १३-१६-३। ५५-७६-२। १५-७८-१। १५-६२-१। रा० १४-२८-१। १४-२८-२। २६-१६-२। ३०-१६-२। ३०-२०-३। वी० ८-६।

११-१६ । १८-१६ । १७-३१ । ३२-३५ । वि० गी० ३-३-१ । ६-५३-१ । ६-५७-३ । १०-१८-४ । १५-१४-१ । १६-३७-१ । १६-११-२ । २१-५२-१ ।

निसिचर—१-सं०पुं०एक० । चोर—निन्दा के पक्ष मे । चन्द्रमा—स्तुति के पक्ष मे । क० प्रि० १२-२५-२ । २-पुं० बहु० । रात मे घूमनेवाले प्राणी । र० प्रि० ७-३२-१ । ३-पुं० एक० । चन्द्रमा । र० प्रि० ११-१६-३ । ४-पुं० एक० । चोर । रा० ६-२५-२ । ५-पुं० एक० । राक्षस । रा० १३-६१-२ । छ० १-५१-५ । ६-पुं० बहु० । राक्षसो का । वि० गी० २०-१४-२ ।

निसिचर चय—सं० पुं० एक० । चोरो का समूह । रा० ३०-२०-५ ।

निसिचर मुख—सं० पुं० एक० । चन्द्रमा का मुख । र० प्रि० ११-१६-३ ।

निसिचारी—(१) सं०पुं० एक० । राक्षस । रा० ३८-१७-१ । वि० गी० १०-१४-३ । पुं० बहु० । निसिचारिन । वि० गी० १०-६-३ । (२) वि० (विशेष्य—वानर रिक्ष) । रात के प्राणी । रा० ३८-१७-१ ।

निसिनाथ—सं० पु० एक० । चन्द्रमा । क० प्रि० १५-७८-१ । रा० २४-२४-२ । ३०-४०-१ ।

निसिवासर—सं० पुं० बहु० । रात और दिन । वि० गी० ५-२०-३ ।

निस्चंक—सं० पुं० एक० । निश्चल वर्णन । वर्ण्यालंकार का एक भेद । जिसमे स्थिर वस्तुओ का वर्णन होता है । क० प्रि० ६-१-२ । ६-२३-२ ।

निस्चल चित्त सं० पुं० एक० । निश्चल अन्त:करण । (ज्ञान की सातवी भूमिका) । वि० गी० २०-५३-१ ।

निस्रोणि—सं० पुं० एक० । एक अश्व की जाति का नाम । वी० १७-६२-२ ।

निहकाम - सं० पुं० एक० । निष्काम । उदा०—हरि दीजै निहिकाम । वी० २८-३० ।

निहारत- क्रि० पु० बहु० । देखते हैं । रा० २७-१६-१ ।

निहारति—क्रि० स्त्री० एक० । देखती है । र० प्रि० ६-१६-३ ।

निहारन—क्रि० । देखने । र० प्रि० १०-१६-३ ।

निहारही—क्रि० पु० बहु० । देखते थे । रा० २१-४३-४ ।

निहारि—क्रि० । देखकर (पूर्वकालिक कृदन्त) । र० प्रि० ३-४-३ । ४-११-४ । ६-४६-४ । १३-१०-३ । क० प्रि० ३-१६-१ । ६-११-१ । रा० १३-८१-१ । १६-८-३ । २७-१०-४ । ३३-१३-२ ।

निहारिबे—क्रि० । देखने । र० प्रि० ६-३८-१ ।

निहारिबो—र० प्रि० । ३-४३-४ । क० प्रि० ४-१७-४ ।

निहारिए—क्रि० । देखिए । रा० ६-५६-२ । १२-४-१ ।

निहारिये—क्रि० । देखिये, देखकर । र०प्रि० ५-२१-३ । रा० ३०-४६-४ ।

अनुतम—सं० पुं० एक०। कविकोटि का दूसरा भेद। अनुतम कवि वह है जो सदैव स्वार्थसाधन मे लगा रहता है, अर्थात्, प्रशंसायुक्त मानवचरित्र कहता है और उनसे धन प्राप्त कर भोग करता है। क० प्रि० ४-३-२।

अनुभाव—सं० पुं० बहु०। आलंबन के प्रति किसी भाव के उत्पन्न होने पर आश्रय के शरीर मे कुछ विशेष चेष्टाएँ दिखलाई पडने लगती है। उसके मुख से वचन भी कुछ निकलने लगते है, जिनसे हृदयगत भाव व्यक्त होते हे। इन्ही को "अनुभाव" कहते है। अनुभाव=भाव के अनु (पीछे) जो हो, अर्थात् जिन बाह्य लक्षणो से भाव के होने का ज्ञान हो। 'अनुपश्चाद्-भाव उत्पत्तियेषाम् अनुभावमन्ति इति वा व्युत्पत्ते।' (रस गंगाधर)। र० प्रि० ६-२-१। ६-८-२।

अनुमती—सं० स्त्री० एक०। नदी-विशेष। वि० गी० ४-२४-२।

अनुमोद—सं० पुं० एक०। समर्थन। वि० गी० १७-१५-१। १७-२६-२।

अनुरत कर्मनि—विशेषण। विशेष्य—भक्त। कर्मों के प्रेमी। वि० गी० ११-१२-१।

अनुराग—(१) सं० पुं० एक०। प्रेम या प्यार। र० प्रि० १४-२३-२। ८-२-२। ८-३-२। क० प्रि० ६-४६-२। ७-१४-२। १५-४९-३। १५-६०-२। रा० १-३०-१। ५-९-१। ६-५४-२। ६-५५-२। ८-११-४। १४-२३-२। २४-१७-२। छ० मा० १-६५-३। २-३४-२। वि० गी० ६-११-२। २६-४५-१। १९-६१-१। १६-६८-१। १९-७८-१। १७-३-१। (२) नाम रंग। छ० मा० १५-७३-१।

अनुराग रँगी—विशेषण। विशेष्य—रागिनी। प्रेम से रंगी हुई। रा० ८-११-४।

अनुरूप—सं० पुं० एक०। प्रतिमा। रा० ६-५१-६३।

अनुसरं—क्रियापद। अनुगमन करें।

अनुसार—सं० पुं० एक०। अनुकरण। क० प्रि० १४-१-१।

अनूप—(१) सं० पुं० एक०। वह स्थान जहाँ जल प्रचुर हो। वि० गी० १२-१६-४। (२) विशेषण। विशेष्य—रूप। अनुपम, बेजोड, अतुल्य। र० प्रि० ५-२६-३। ११-११-२। क० प्रि० ६-२-२। ६-२६-२। १५-५९-१। रा० २३-६-२। २६-२०-१। ३१-२०-१। ३७-१-४। छ० मा० १-७०-३। न० शि० २-१। १४-१। र० बा० ३३-५। वी० च० ७-१७-१। १७-४४-२। १७-३१-१। २१-२७-१। २२-४७-२। २२-४८-२। २६-११-२। २६-१२-१। २६-४०-१। वि० गी० १२-१६-४। २१-१५-२।

अनूढ—[सं० अनु√वह् (ढोना)+क्त] सं० स्त्री० एक०। परकीया का एक भेद—अनूढा परकीया नायिका। अविवाहित अवस्था मे किसी पुरुष से प्रेम करनेवाली स्त्री। र० प्रि० ३-६८-१। ३-६९-१। ३-७२-१। ५-२२-१।

निहारियो—क्रि० पु० एक० । देखा । रा० २-२६-४ ।

निहारी—क्रि० पु० एक० । देखा । रा० १-५५-३ । १-५६-२ । १३-४७-२ । १६ ३७-२ ।

निहारे—क्रि० पु० एक० । देखा । र० प्रि० ६-३८-१ । ६-५३-२ । रा० ३२-२-२ ।

निहारे हैं सं० क्रि० पुं० बहु० । देखते हैं । र० प्रि० ६-३८-२ ।

निहारै क्रि० स्त्री० एक० । देखती हैं । रा० २२-१६-३ ।

निहारौ—क्रि० । देखो । रा० १८-२२-२ । ३६-११-२ ।

निहारयो—क्रि० पु० बहु० । देखते हैं । रा० ४-१५-३ । निहा यो–रा० ६-१६-५ ।

निहोरत—क्रि० पु० बहु० । प्रार्थना करते है । लाल सा करते हैं । र० प्रि० ६-३८-१ ।

निहोरति—क्रि० स्त्री० एक० । मानती । र० प्रि० ६-१६-७ ।

निहोरि—क्रि० । मानकर । र० प्रि० ६-१६-४ ।

निहोरे—क्रि० । मानने पर । र० प्रि० ६-१६-७ । ६-१६-८ ।

नींद – स० स्त्री० एक० । निद्रा । र० प्रि० ५-२८-२ । ८-११-३ । ११-५-४ । १३-१०-२ । क० प्रि० ६-४०-१ । ८-४३-२ । रा० २-२६-४ । १४-२८-२ । १८-३७-१ । १६-२७-१ । २४-४-२ । वी० २६-२३ । नींदहु–र० प्रि० ५ ३-१ ।

नींद विवाद—सं० पु० एक० । नींद का विवाद, नींद की कथा अर्थात् निद्रा । र० प्रि० ६-१३-१ ।

नीक—वि० (विशेष्य—लोक) पतली । क० प्रि० १६-६७-१ । वी० २४ १६ २ ।

नीकी—१-वि० (विशेष्य—रंगी की जोति) । सुन्दर । रा० २६-४५-४ । २-(विशेष्य—गारि) । स्नेह से भरी । क० प्रि० ११-७३-४ ।

नीके—वि० (विशेष्य—लक्ष्मण) । अच्छे, श्रेष्ठ । रा० १८-१-१ । २०-३८-२ । वी० ५-७२-२ ।

नीको – वि० (विशेष्य—नकी) । अच्छे । र० प्रि० १५-५-३ ।

नीच—वि० (विशेष्य—मारीच) । अधम । रा० १२-१४-२ । वी० १-५८-३ ।

नीठि—स० स्त्री० एक० । अरुचि । र० प्रि० १६-७-३ ।

नीति—सं० स्त्री० एक० । लोक-व्यवहार के लिए नियत किया गया आचार । वि० गी० १२-२५-३ ।

नीप—[√नी + प]—सं० पुं० एक० । कदम्ब वृक्ष । क० प्रि० १५ ११३-२ ।

नीम—[निम्ब]—सं० पुं० एक० । एक प्रसिद्ध पेड जिसके सब अंग कडवे होते हैं । वी० ५-४८-१ ।

नीर—[√नी + रक्]—स० पुं० एक० । जल, पानी । र० प्रि० ६-५२-३ । क० प्रि० ३-२५-१ । ५-४२-२ । ६-३८-३ । ११-४६-३ । रा० १-२५-१ । ८-२४-४ । १०-३२-१ । १४-४२-४ । २४-२४-४ । ३२-३६-१ । छ० १-६१-४ ।

वी० ६-११ । २२-३४ । २५-१५ । ज० ५ । वि० गी० ५-२३-१ । ८-२७-३ । ६-५७-१ ।

नीर को दानि—सं० पुं० एक० । पानी का दान करनेवाला बादल । क० प्रि० ५-४२-२ ।

नीरज—१-सं० पुं० एक० । जल से उत्पन्न होनेवाला (कमल) । र० प्रि० ६-५६-३ । क० प्रि० ३-५५-१ । ११-४६-३ । १५-१०२-१ । रा० १२-४८-२ । ३६-१८-१ । २-पु० एक० । मोती रा० ३६-१८-१ । ३-पुं० एक० । कुमुद । रा० १३-२५-१ ।

नीरद—१-सं० पुं० एक० । दाँत—सफेद रंग का द्योतक । मेघ—काले रंग का द्योतक । क० प्रि० ५-४२-१ । २-पुं० बहु० । बादल । क० प्रि० १५-६६-१ । वी० ७-४०-१ ।

नीरधि—सं० पुं० एक० । समुद्र । वि० गी० २-२६-३ ।

नीरनि—स० पु० बहु० । आँसू । वि० गी० ८-४-५ ।

नीरनिधि—सं० पुं० एक० । समुद्र । क० प्रि० १३-११-३ । वि० गी० ६-३८-६ ।

नीरस—(१) १-सं० पु० एक० । काव्यगत दोष । क० प्रि० ३-५६-१ । केशव के अनुसार एक काव्य रस-विशेष्य । र० प्रि० १६-१-१ । २ पु० बहु० । नीरस पदार्थ । क० प्रि० २५-३७-१ । (२) वि० (विशेष्य—अन्त) । रस हीन । वि० गी० १६-२३-२ ।

नीरस रस—सं० पु० एक० । केशव के अनुसार काव्य रस-विशेष । र० प्रि० १६ ४-२ ।

नीरहिं—सं० पु० एक० । जल को । र० प्रि० १०-१६-१ ।

नीर हीन—वि० (विशेष्य—तडाग)। विना जल के, सूखे हुए । रा० ६-३६-१ ।

नीरोग—वि० (विशेष्य—वपु) । रोगहीन । क० प्रि० ६-२८-१ ।

नील—(१) १-सं० पु० एक० । राम की सेना का एक वानर जिसने नल के साथ समुद्र मे पुल बाँधा था । क० प्रि० ८-१८-२ । १३-११-३ । रा० १३-३१-४ । १५-११-१ । १५-२२-२ । १६-१५-१ । १७-२-१ । १७-२२-२ । १८-२४-१ । १८-३२-३ । १६-४७-१ । २१-३३-१ । २७-२७-१ । वि० गी० ६-३८-५ । २-पुं० एक० । नील वर्ण । क० प्रि० ८-३२-२ । (२) वि० (विशेष्य—निचोलन) । नीले रग का । र० प्रि० ७-११-२ । ८-२४-३ । ८-३८-१ । १२-२३-१ । १४-३०-१ । क० प्रि० ५-३६-२ । ७-३४-४ । ८-३२-२ । रा० ८-१२-१ । १४-६-२ । १५-३६-१ । १५-८३-४ । २४-६-१ । २६-४०-१ । २६-४२-२ । वी० ५-३५-२ । १५-१३-२ । १५-१५-२ । १७-१४-२ । १७-१७-१ । १७-२०-२ । १८-३-१ । २१-२७-२ । २१-२८-२ । २३-११-१ ।

नीलकंठ—१-सं०पुं०एक० । ईश्वर, मोर । ईश्वर—समुद्र मंथन के समय जब अन्त में विष निकलने लगा, तब उसके प्रभाव से बचने के लिए देवताओ ने शिव की शरण ली । शिव ही उस विष के प्रभाव को सह सकते थे । वे उसी समय नीलवर्ण हलाहल पान करने लगे । उस समय नीले रंग के विष के कारण महादेव का रजत-शुभ्र कंठ नीला पड़ने लगा । उसी घटना से उनका नाम नीलकंठ हो गया । क० प्रि० ५-२०-२ । रा० १३-१६-४ । वी० ११-१२ । वि० गी० १०-१२-७ । २-पुं०-एक० । ईश्वर—देवलोक के पक्ष मे । मोर—बाग के पक्ष मे । वी० ५-७२ । १५-७ । २३-२७ । (मोर) । वि० गी० १०-१२-७ । (ईश्वर) नीलकंठजू (आदरार्थक) ईश्वर । क० प्रि० ७-१२-४ ।

नीलगिरि—सं० पुं० एक० । दक्षिण का एक पर्वत । वी० १७-२०-१ ।

नीलमणि—स० पुं० एक० । नीलम (मणि-विशेष) । वी० ५-३५ । नील मनि—क० प्रि० ११-२५-२ ।

नीलवर्न—सं० पुं० एक० । नील रंग । क० प्रि० ५-३६-२ ।

नीलवास—सं० पुं० एक० । नीले रंग का वस्त्र । क० प्रि० १५-८६-५ ।

नीले—(१) स० पुं० एक० । नील रग । क० प्रि० ५-४-१ । (२) वि० (विशेष्य—विंदु) । नीले रंग के । वि० २१-२ । वी० १७-७५-१ ।

नीवी—[नि√व्ये (आच्छादन करना) + इञ्, य लोप] । स० स्त्री० एक० । धोती की वह गांठ जिसे स्त्रियाँ नाभि के नीचे या बगल मे ईजारबन्द से या यों ही बाँधती हैं ।

नूतन—[नव+तनप्–न् आदेश] । वि० (विशेष्य—नेह) । नवीन । क० प्रि० १०-५-२ । वी० १६-२१-१ ।

नूने—स० पुं० एक० । नमक । क० प्रि० १६-४२-२ ।

नूपुर—[नू√पुर (आगे करना) + क] सं० पुं० बहु० । पैर के गहने (घुंघुरू) । र० प्रि० ५-२६-२ । ६-२५-२ । ६-३१-२ । क० प्रि० ६-३६-२ । १५-१४-१ । १५-१५-४ । रा० ११-२६-२ । १२-२५-१ । १२-६०-२ । वी० ५-४२ । १६-३० । २१-३० । २१-८५ । वि० गी० १४-२७-२ ।

नृकपाल—सं० पुं० एक० । खोपड़ी । वि० गी० ८-२०-१ ।

नृत्यति—क्रि० पु० बहु० । नाचते हैं । रा० ३०-३-१ ।

नृत्य—[√नृत् + क्यप्] । स० पु० एक० । ताल, लय, और रस के अनुसार किया जानेवाला नाच । र० प्रि० ३-५-१ । ६-६-६ । रा० १६-३-२ । २६-१६-२ । २६-२८-१ । वी० १७-८ । २०-३२ । २२-२३ । २६-३४ । वि० गी० ५-११-२ । १३-४१-४ ।

नृत्यकारी—(१) सं० स्त्री० एक० । नर्तकी (नाचनेवाली) । ज० ४६ । (२) वि० (विशेष्य—मयूरे) नाचनेवाले । रा० २०-३६-१ ।

नृत्य भेद—स० पु० बहु० । नाट्य के दोनो भेद—तांडव और लास्य। र० प्रि० ६-६-६ ।

नृत्यसाला—सं० पु० एक० । वह स्थान जहाँ नृत्य होता है। वी० २९-३४ ।

नृदेव—१-सं० पु० एक० । राजा । वि० गी० ४-२५-८ । २—पु० बहु० । राजा लोग । रा० ३९ १५-१ । ३६-२०-१ ।

नृदेवता—सं० पु० बहु० । राजा लोग । रा० २३-१०-४ ।

नृदेह—स० स्त्री० एक० । राजा का शरीर । वि० गी० ८-२०-१ ।

नृप—[नृ√पा (रक्षा करना) +क] । १—सं० पु० एक० । राजा । क० प्रि० १-७-२ । १-१७-२ । १-३८-१ । १-४०-१ । १-१६-१ । ६-१२-२ । ६-६४-१ । ७-३३-२ । १२-२८-१ । रा० २-२४-६ । २-६-१ । २-७-१ । ३-१९-२ । ३-२०-२ । ३-२३-१ । ३-२६-२ । ६-४-१ । ९-३-२ । ९-४-१ । १०-४-१ । ११-१९-२ । ११-३४-२ । ११-५५-१ । १३-२८-१ । २०-३०-२ । १३-४०-२ । ३२-१७-२ । ३४-८-२ । ३५-२३-४ । ३९-२७-२ । छं० १-४४-३ । १-७८-४ । २-८२-१ । वी० १-३ । २-९ । २-२७ । २-२८ । ३-३० । ३-४२ । ४-३८ । ७-२७ । ८-१० । ८-१८ । ८-२७ । ९-३ । ९-४२ । ९-६० । ९-६२ । १०-१७ । १०-३० । १०-३४ । १०-३६ । १०-३८ । १०-३९ । १०-३४ । ११-४५ । १३-८ । १३-११ । १३-१२ । १४-३८ । १७-२१ । १७-३३ । १८-२२ । १८-१३ । १९-२० । १९-१७ । २०-२८ । २१-११ । २१-१७ । २२-१३ । २२ ३९ । २६-१० । २६-११ । २६-३५ । २७-८ । २८-१ । २९-८ । २९-१३ । २९-४२ । ३०-६ । ३०-८ । ३०-२० । ३१-३ । ३१-७ । ३१-१५ । ३१-२९ । ३१-४८ । ३१-५३ । ३१-५५ । ३१-७२ । ३१-८४ । ३१-९१ । ३२-१० । ३२-१३ । ३२-४५ । ३३-५ । ज० ६४-६७ । ७४-७६ । ८८-१७३ । १९४ । वि० गी० १-२१-१ । १-२८-१ । ६-४२-१ । ९-२६-२ । १२-२५-३ । १३-४६-२ । १३-५३-४ । १३-७४-२ । १३-८४-१ । १४-२४-२ । १४-३५-२ । १४-६४-१ । १६ २७-२ । १६-३९-१ । १६-७६-१ । १६-८७-१ । १६-९५-२ । १६-९७-१ । १९-२०-२ । १९-४२-१ । २—पु० बहु० । राजा लोग । र० प्रि० १-६-१ ।

नृपकन्या स० स्त्री० एक० । राजकुमारी (सीता) । रा० ३-३१-४ ।

नृपकुल—स० पु० एक० । राजवंश । क० प्रि० १-५-१ । ८-१२-२ ।

नृपकुल सिरताज— वि०(विशेष्य—पृथ्वीराज) । राजाओ मे शिरोमणि । वी० २-२७-२ ।

नृप के धाम—वि० (विशेष्य—दशरथ) । राजाओ मे सर्वश्रेष्ठ । रा० ६-११-२ ।

नृपगण—स० पु० बहु० । राजा लोग । क० प्रि० ३-१३-४ ।

नृपचंद—स० पु० एक० । राजा (चंद्र रूपी राजा) वि० गी० १८-४१-२ ।

नृप चरित्र—सं० पुं० एक०। राज्य प्रबन्ध। ३०-२६-१।

नृप तनया—सं० स्त्री० एक०। राजकुमारी (सीता)। रा० ११-८-१।

नृपता—सं० स्त्री० एक०। राज्याधिकार। रा० ६-४-२।

नृपता भरी—वि० (विशेष्य रोदसी)। राजाओ के समूह से भरी हुई। रा० ३६-१४-३।

नृपति—(१) सं० पुं० एक०। राजा। र० प्रि० ८२१-१। रा० १-२२-१। ६-२३-२। ७-२३-४। ६-२३-२। १३-६-१। ३२-२८-१। ३४-२६-२। ३४-३३-२। छं० १-७२-६। र० १-४-३। १-४३-२। वी० २-२४। २-३६। ३-३६। ६-२३। १०-४०। १०-४३। १२-३१। १४-१०। १५-६४। १६-६। २१-४। २२-३५। २३-१। २५-२०। २६-५। २६-८। २६-३०। २६-३३। २६-३६। २६-३७। २७-३१। २८-११। २८-१४। ३०-६। ३१-६४। ३२-१। ३२-५। ३२-२३। ३२-२५। ३३-६। ३३-५०। वि० गी० १३-४३-१। १६-११-१। १६-४-२। १६-६-१। (२) वि० (विशेष्य—सुग्रीव)। राजा। रा० १३-६-१। १४-२६-४। वी० २-३६-१।

नृपतिन सिर मौर—वि० (विशेष्य—वीर सिंह)। राजाओ मे शिरामणि। वी० २-६-१।

नृपति मनि—सं० पुं० एक०। श्रेष्ठ राजा। वि० गी० १६-२६-२।

नृपति मुकुट मनि—वि० (विशेष्य - वीर-सिंह देव,। राजाओं के मुकुट मणि, श्रेष्ठ राजा। वी० ३२-२३ १।

नृप दोष—सं० पुं० एक०। राजा का दोष वि० गी० १३-२-२।

नृप द्वार—सं० पुं० एक०। राजप्रासाद का द्वार। वि० गी० १४-३४-१।

नृप धर्म—वि० (विशेष्य—मह राज)। धर्म स्वरूप। वी० ३०-६-१।

नृप नंद—वि० (विशेष्य—वीरसिंह)। श्रेष्ठ राजा। वी० १७-२१-१।

नृपनाथ—(१) सं० पुं० एक०। राजाओ का अधिपति। छं० १-४६-४। वि० गी० १-२८-१। २-७-२। ३-४-२। ६ १६-१। १६-१७ १। १६-७५-१। १६-६६-१। (२) वि० (विशेष्य—दसरथ)। राजाओ के राजा। वि० गी० १०-१०-३।

नृपनाथ गेह—सं० पु० एक०। राजा का गृह (राजमहल)। रा० २२ १२-२।

नृपनाथ नाथ—वि० (विशेष्य—दसरथ)। राजराजेश्वर। रा० २-१८ ५।

नृपनायक—(१) सं० पु० एक०। राजाओ के नेता। वि० गी० ११-१३-२। १६-२७-२। १६-११४-१। (२) वि० (विशेष्य—राजा दसरथ)। राजाओ का नायक। रा० २-१६-२।

नृपवर—सं० पु० एक०। श्रेष्ठ राजा। वि० गी० १६-१०२-२।

नृप मंडल—सं० पुं० एक०। राजाओ का वर्ग। क० प्रि० ८-४५-१। रा० ६-२६-१।

नृप मंडल मंडित वि० (विशेष्य—मंडली मचन की)। राजाओ से युक्त। क० प्रि० ८-४५-१।

नृपमनि—(१) सं० पु० एक०। श्रेष्ठ राजा। र० प्रि० २-७-१। (२) वि० (विशेष्य—दसरथ)। राजाओं मे सर्वश्रेष्ठ। रा० ५-३०-१।

नृपमानिक्य सुदेस—वि० (विशेष्य—काश्मीर तिलक)। राजाओ मे माणिक्यवत्। रा० ३-२३-१।

नृप रूप—सं० पु० एक०। सौन्दर्य रूपी राजा। रा० ३१-१४-१।

नृपवाहन—सं० पु० एक०। अश्व की जाति का नाम। वी० १७-६३।

नृप शासन—सं० पु० एक०। राजा की आज्ञा। रा० ४-२१-४।

नृप साई— सं० पु० एक०। राजा। वि० गी० १९- १८-१।

नृपसिंह—वि० (विशेष्य—वीरसिंह)। राजाओ मे सिंह के समान श्रेष्ठ। वी० १-३-१।

नृपसिंह मनि वि० (विशेष्य—वीरसिंह)। सर्वश्रेष्ठ राजाओ के भी शिरोमणि। वि० गी० २१-६६-१।

नृप सिरमौर—वि० (विशेष्य—वीरसिंह)। राजाओ मे शिरोमणि। वी० ११-३८-१।

नृप सुत—सं० पु० एक०। राजकुमार। रा० ७-५-१।

नृप हंस—सं० पु० एक०। राजहंस। रा० ११-२६-२।

नृपहित—वि० (विशेष्य—प्रोहित)। राजाओ का हित चाहनेवाला। क० प्रि० ८-११-१।

नृपाल— सं० पु० एक०। राजा। रा० ६-३१-१। १७-२० २। वि० गी० १२-२१-४। १३-७२-१।

नृमना—सं० स्त्री० एक०। नदी विशेष। प्लक्ष द्वीप की एक महानदी। वि० गी० ४-२७-१।

नृसिंह—सं० पु० एक०। भगवान विष्णु के अवतारो मे से एक—नृसिंहावतार। वी० १४-५७। वि० गी० ४-३५-१।

नृसिंह जू सं० पु० एक०। आदरार्थक (इन्द्रजीतसिंहजी)। र० प्रि० १-६-१।

नृसिंहपुरी—सं० स्त्री० एक०। स्वर्ग लोक, वैकुण्ठ। वि० गी० ६-७-२।

ने—प०। कर्ताकारक। उदा० 'पुत्र ने विप्रलाप गटी रटी'। (रा० १०-१०-४)। र० प्रि० ४-१५-२। (नैननि)। क० प्रि० ७-५-३। ८-८-२। (नी)। रा० ७-३६-१। वी० २८-१५-२। ३२-५२४।

नेगी—१—सं० पु० एक। संपत्ति आदि का प्रबन्धक। क० प्रि० ३-५-१। २—पु० एक०। नेग पानेवाला। क० प्रि० ६-३१-२।

नेजा—[फा० नैज.]। सं० पु० एक०। भाला। रा० १६-४६-३।

नेत्र— [नी+ष्ट्रन्]। सं० पु० एक०। आंख। रा० २०-५ १।

नेपाल—सं० पु० एक०। नेपाल देश। ज० १०२।

नेम—[नी+मन]। १—सं० पुं० एक०। नाम। क० प्रि० ११-२८-४। २—पुं० एक०। आचार का नियम। क० प्रि० १५-१११-२। वि० गी० २-१०-२। ६-११-४। ३—पुं० एक०। प्रतिज्ञा। क० प्रि० १६-३६-२। रा० ४-२६-२। १६-२०-२। ४—पुं० एक०। काल। क० प्रि० १६-५६ २।

नेह—[स्नेह]। १—सं० पुं० एक०। स्नेह, प्रेम। र० प्रि० ४-८-१। ७-२३-३। ८-३६-३। ६-१६-४। १२-१८-४। १२-२८-१। १३-२४। १३-२०-२। १४-६-२। क० प्रि० १-२६-१। ८-२६-३। ८-२६-३। ३-८-४०। १०-५-२। १०-१०-१। ११-७६-३। १२-७-४। १३-२०-२। १५ ७८-१। १६-२३-१। १६-४६-१। १६-५५-३। रा० ३१-२०-२। छं० १-२६-३। ज० ४४। वि० गी० १६-८१-२। १७-६७-४। २१-४८-१।

नेहु—र०प्रि० ७-८-३। १२-२६-४। क०प्रि० १२-२३-४। रा० २-१३-२। ६-२१-१। १२-५-२। १८-११-२। ३८-२६-३। छं० १-१२-४। नेहू—वि० गी० ११-१६-१। बहु नेहनि। क० प्रि० १५-७१-४। २—पुं० एक० स्नेह अर्थात् मक्खन आदि। र० प्रि० २-१५-१। ३—पुं० एक०। तेल, प्रेम। र० प्रि० ४-६-१।

नेह-तरु—सं० पु० एक०। प्रेम रूपी वृक्ष। क० प्रि० १६-२३-१।

नेह दसा-दीपक—सं० पु० एक०। १—प्रेम की अवस्था का विराग। २—तेल और बत्ती का चिराग—र० प्रि० ४-६-१।

नेह नही—वि० (विशेष्य—मन की बात)। स्नेह या प्रेम युक्त। र० प्रि० ४-८-१।

नेह नहै—वि० (विशेष्य—प्रिया)। प्रेम-पूर्ण। क० प्रि० १०-१०-१।

नै—सं० स्त्री० एक०। प्रेम करने की रीति। क० प्रि० १६-४२-१। १६-२१-२।

नैन—[नयन]। सं० पु० बहु०। आँखें। र०प्रि० १-२४-२। ३-४७-३। ४-१०-३। ६-३१-३। ६-४१-१। ७-१२-२। ८-१०-१। ८-२२-१। ८-३६-४। ८-३६-३। ८-४५-२। ६-४-३। ६-८-२। ६-६-१। ११-४-३। ११-५-२। १२-२३-४। १३-५-१। क० प्रि० ५-३०-१। ६-११-१। ८-३१-४। ६-६ २। ६-२३-३। ६-२७-१। ६-३१-४। ११-२५-२। ११-४-३। १३-३१-२। १४-६-१। १५-३१-१। १५-५६-४। १६-३३-१। १६-३६-१। १६-३७-२। रा० २-२६-२। ८-११-३। १३-२४-२। २६-२०-८। ३३-१६-१। ३३-५-१। २। वी० ५-५-५३। ७-११। ६-२४। ७ ३८। ७-३६। ७-४०। ८-५७। १०-५३। १५-१३। १६-१। १७-३२। १७-४६। १७-४३। १६-२४। २१-३। २१-१४। २१-२४। २१-३५। २२-१। २२-४। २२-७। २२-६८। २२-८३। २२-१६। २३-१७। २५-४। २५-२२। ३२-४१। ज० १४-८०। वि० गी० ८-४-१। ८-२७-३। १६-१०७-१। २-पुं० बहु०। आँखें। कालिका—

के पक्ष में। नै + न : नदियाँ—वर्षा के पक्ष में। क० प्रि० ७-३२-२। रा० १३-१९-२। ३—पुं० एक०। हृदय र० प्रि० १२-२३-४।

नैन कोर—सं० पुं० एक०। कटाक्ष। रा० ३१-३९-४।

नैनन—सं० पु० बहु०। आँखें। र० प्रि० २-१७-२। क० प्रि० ८-२६-२।

नैननि—र० प्रि०। २-१३-१। ३-१९-३। ३-२९-२। ३-२५-४। ३-३४-१। ३-३६-१। ३-४४-३। ३-४९-३। ३-७०-१। ४-१५-३। ५-२७-१। ६-४६-२। ७-२९-१। ७-२९-३। ८-५-४। १०-२२-१। ११-१५-४। १२-५-४। १२-१६-२। १२-१६-४। १२-१९-४। १३-६-२। १४-१०-१। १५-९-४। क० प्रि० ६-२२-३। १०-१४-२। ११-२८-३। वि० गी० १०-८-२।

नैन-निकाई—सं० पुं० एक०। नेत्रों का श्रृंगार। र० प्रि० ६-३१-३।

नैन-नीर—सं० पु० बहु०। आँसू। र० प्रि० ८-४५-२। रा० ३३-५२-२।

नैन विहीन—वि० (विशेष्य—राजा)। नेत्र विहीन (अन्धा)। वी० १०-५३-१।

नैन सरोजनि—सं० पु० बहु०। नेत्ररूपी कमल। र० प्रि० ३-४७-३।

नैमित्तिक—वि० (विशेष्य—दान)। नियमपूर्वक दिया गया। रा० २१-८-२।

नैमिष—सं० पु० एक०। नैमिष अरण्य। वि० गी० ६-१०-२।

नैरित्य—सं० पु० एक०। निशाचर। रा० १७-३१-२।

नैरित्यन—सं० पु० एक०। राक्षस। रा० १९-४२-२।

नैषध नृप—सं० पु० एक०। राजा नल। वी० ८-१६।

नोई—सं० स्त्री० एक०। वह रस्सी जो दूध दुहते समय गाय की पिछली टाँगो में बाँधी जाती है। रा० ३०-२७-३।

नोखी—वि० (विशेष्य—बिलोचन हारी)। अनोखी, विचित्र। र० प्रि० ४-७-४।

नोदन—[√नुद् (प्रेरणा) + णिच् + ल्युट्] सं० पु० बहु०। बैलों को हाँकने के पैने। क० प्रि० १५-२९-२।

नोनी—[लवणी]। वि० (विशेष्य—नैन) सुन्दर। क० प्रि० १६-४२-१।

नोने नोने—वि० (विशेष्य—नैन)। अत्यंत सुन्दर। क० प्रि० १६-४२-१।

नौ—वि० (विशेष्य—रस) संख्या-विशेषण, ९। रा० ३०-६-२। वी० १२-१८-२।

नौका—सं० पु० एक०। नाव। छं० २-२-२।

नौन—सं० पु० एक०। नमक, लवण। र० प्रि० १-४७-२।

नौनगर्वा—सं० पु० एक०। सहजेन्द्र के पुत्र राजा-विशेष। क० प्रि० १-११-१। १-११-२।

नौनि—१—सं० पु० बहु०। नेत्र। क० प्रि० ८-२६-३। २—स्त्री० एक०। नवनि, नम्रता। क० प्रि० १६-४२-१।

नौनी—(१) सं० स्त्री० एक०। रस्सी जिससे दुहते समय गाय के पैर बाँध

दिये जाते हैं और गाय अचल हो जाती है। क० प्रि० ८-२६-३। (२) वि० (विशेष्य—कश) । सुन्दर। क० प्रि० ११-८३-१। ज० ४४-३।

न्याउ—सं० पुं० एक०। न्याय (उचित रीति)। र० प्रि० ५-१५-३। १०-२५-३। क० प्रि० १६-५९-४। वि० गी० १३-६८-२।

न्याय—१-सं० पुं० एक०। केशव के अनुसार एक काव्यगत दोष-विशेष, न्याय विरोध। क० प्रि० ३-१६-२। २-पु० एक०। उचित रीति (न्याय)। क० प्रि० ११-६६-४। बहु०—न्यायनि। र० प्रि० ७-१५-४।

न्यारी—वि० (विशेष्य—कटि)। अनोखी, सुन्दर। र० प्रि० १३-१४-११।

न्यारे—वि० (विशेष्य—देश) अनोखे। रा० २६-२१-२।

न्यारो—वि० विशेष्य—देवन)। अनोखे। वि० गी० १५-५०-२। २०-४७-२।

न्यौति—सं० पुं० एक०। निमत्रण। र० प्रि० ५-३४-१।

न्यौते—स० पु० एक०। निमंत्रण। र० प्रि० ५-२४-२।

न्यौरा—सं० पु० एक०। गिलहरी को शकल का लगभग एक हाथ का भूरे रंग का एक जन्तु जो सांप को मारने के लिए बहुत प्रसिद्ध है। नेवला। क० प्रि० ६-४४-३।

न्यौरा-नारिन—सं० स्त्री० बहु०। नेवलो की स्त्रियाँ। क० प्रि० ६-४४-३।

न्हाइ—क्रि०। नहायें। रा० ९-१८-४।

न्हात—(१) सं० पु० एक०। स्नान। रा० ३०-२६-३। (२) क्रि०। नहाकर। रा० १६-६-२।

न्हान—स० पु० एक०। स्नान। रा० ९-१४-१।

अनृत—[सं० न+ऋत] सं० पु० एक०। असत्य। वि० गी० ३-११-१।

अनृत जुत—विशेषण। विशेष्य—पुत्र। असत्य से युक्त। वि० गी० ३-२१-१।

अनृप—सं० पुं० एक०। क्रोध, रोष। र० प्रि० १३-२८-१।

अनेक—विशेषण। विशेष्य—वानर। कई। र० प्रि० ३-५६-१। ६ ३-१। ६-२२-१। ७-३७-२। ११-१३-१। क० प्रि० ३-११-२। ३-२५-४। ५-२३-२। ६-३-२। ८-८-२। ८-३१-३। १२-१-२। १२-१६-१। १३-७-१। १३-१०-४। १३-१४-१। १३-१६-२। १४-४-१। १४-२५-१। १५-७५-४। १६-५०-१। १८-३३-३। रा० १२-७-२। १७-३०-२। २०-२३-२। २१-१४-१। २१-४०-१। २२-२१-७। २५-१-१। २६-१८-२। २६-३४-३। २७-१-२। २७-१४-२। २६-२२-२। ३१-३६-२। ३४-२३-२। ३४-२७-१। ३४-५५-२। ३५-२-१। ३६-६-३। ३६-३८-३। छ० मा० १-७८-६। र० बा० १४-२। १८-४। वी० च० १-४६-६। ६-३-१। १६-२-२। २०-२३-२। २३-१-१। २६-१६-२। ३१-४७-३। ३२-२-२। ३२-६-१। जहाँ० २३-६। ८३-१। ११४-३। १४५-४। १७२-४। वि० गी० १-१६-२। २-७-१। ३-१४-३। ४-४-४। ५-२०-४। ६-५४-२। ६-३०-२। ११-२२-२। १२-७-२। १३-७६-२। १४-३७-२। १४-४५-१। १५-२६-१। २०-१२-२। २१-१५-१।

अनेक इंद्र भोगवती—विशेषण। विशेष्य—इद्राणी। अनेक इद्रो से भोग करनेवाली (पुराणो के अनुसार इद्र बदलते रहते है, इद्राणी बदलती नही)। क० प्रि० ८-८-२।

अनेकनि—विशेषण। विशेष्य—जन्म। अनेको। र० प्रि० ३-६१-२। रा० २४-१०-३। वी० च० ५-३२-१।

अनैसी—विशेषण। विशेष्य—बात। अनिष्ट; बहुत बुरी। र० प्रि० ८-६-३। रा० १०-७-१।

अनोखी—[सं० अन्+ईक्ष्+डीप] विशेषण। विशेष्य—पतिव्रत। अनोखा; विचित्र प्रकार का। र० प्रि० ११-६-१। १३-१८-१।

अनोदक—सं० पु० बहु०। अन्न और उदक। वि० गी० ५-२०-२।

अन्न—(१) सं० पुं० बहु०। सात प्रकार के अन्न—अरहर, गेहूँ, धान, जौ, चना, मूँग, मोथ। क० प्रि० ११-१७-२। (२) सं० पु० एक०। भोजन, आहार। र० प्रि० ४-६-२। रा० ६-२६-३। वी० च० १-१२। २-१२। ३३-११। छ० मा० २-५६-३। वि० गी० १६-७-३।

अन्य उक्ति—(अन्योक्ति)। सं० स्त्री० एक०। ऐसी उक्ति जो साधर्म्य के कारण कथित वस्तु के अतिरिक्त औरो पर भी घटित हो सके। क० प्रि० १२-५-२।

अन्यारे—विशेषण। विशेष्य—सत वचन। नोकदार। क० प्रि० ६-१६-१।

अन्हवाइ—क्रियापद। नहलाई, अभिषिक्त किया हुआ। रा० ६-३५-४। १३-७७-२।

अन्हात—क्रियापद। स्नान करते हैं। र० प्रि० ८-३६-४।

अपकीरति—स० स्त्री० एक०। अपयश। रा० १३-२६-१।

अपघन—स० पु० एक०। शरीर। रा० ३०-६-१।

अपजसजुत—विशेषरण। विशेष्य—सुत। अपयश से युक्त। क० प्रि० ६-३४-३।

अपजसी—विशेषरण। विशेष्य—भूपति। जिसका अपयश ही होता हो। रा० १८-१०-४।

अपठ्यमान—विशेषरण। विशेष्य—पापग्रथ। न पढने योग्य। रा० ३-३-४।

अपनाइति—सं० स्त्री०। अपनापन, आत्मीयता; प्रीति। रा० २३-२७-१।

अपनी—सर्व० स्त्री० एक०। मध्यम पुरुष (सस्कृत—आत्मन, प्राकृत—अत्तणो, अप्पणो, हिंदी—अपना)। निजी, निज की। उदाहरण —'प्रथम मिल भल मे कहै, अपनी मति अनुसार'। र० प्रि० ५-४१-१। रा० ७-३५-४। ८-१६-१। १३-९३-१। २०-२३-२। ऊ० मा० २-४६-४। वी० च० १-५४-२। ७-३०-२। वि० गी० १४-३१-२। १७-४१-१।

अपने—सर्व० पु० बहु० मध्यम पुरुष। निजी, निजके। र० प्रि० १-६-१। १-११-२। ५-२८-२। क०प्रि० १६-६-२। १२-३८-४। १६-६-२। रा० ४-१२-२। ८-२१-३। १०-२२-१। ११-५-४। १३-५-२। १६-१६-१। २१-४-१। २६-३०-१। २७-१७-२। ३७-२७-१। ३८-७-१। ३६-२२-१। वी० च० १-३३-४। १-४०-१। २-८२-२। ३-५७-१। ४-३३-२। ४-५८-१। ४-४६-२। ५-१४-१। ७-२-२। ६-५२-१। १०-४-१। ११-४३-१।

अपवाद के भाजन—विशेपरण। विशेष्य—भरत। निदापात्र। रा० ३३-३४-२।

अपमान—स० पु० एक०। मानभंग; तिरस्कार; अनादर। र० प्रि० ३-६२-४। ७-१३-१। ७-३६-१। ६-१०-२। क० प्रि० ६-३२-१। रा० २४-२१ ३। वि० गी० ३-२६-२। ६-३२-२।

अपमारग—स० पुं० एक०। कुमार्ग। जलमार्ग। वि० गी० १०-५-१। १०-६-२। १०-१४-२। १२-२८-२।

अपर—विशेपरण। विशेष्य—सुभ। अत्यधिक। वि० गी० १६-५२-१।

अपर पुरुष संचार—स० पु० एक०। पर-पुरुष-गमन। रा० २३-२५-२।

अपर सुभ—विशेषरण। विशेष्य—परसुराम। अत्यधिक शुभ। वि० गी० १६-५२-१।

अपराध—[स० अप + √राध् + घञ्] स० पु० एक०। दोष; गलती, दडयोग्य कर्म। र० प्रि० २-११-२। ३-६०-४। ३-६३-१। १०-६-३। क० प्रि० १०-१८-३।

अपराजिता—स० स्त्री० एक०। नदी-विशेष। वि० गी० ४-११-१।

अपनी—सं० स्त्री० एक०। (१) पार्वती देवी। स्वर्ग के पक्ष मे देखिए "अदल"। (२) करील पुष्प—नाग के पक्ष मे। क० प्रि० ७-१५-२।

अपलोक—सं० पुं० एक०। अपकीर्ति। कुयश। रा० ७-३३-३। १७-२७-२। २७-२२-३। वि० गी० ३२-७-२।

अपवर्ग—सं० पुं० एक०। मोक्ष या ऊँची गति। क० प्रि० ६-६५-२। १०-३०-२। रा० ५-४३-४। वि० गी० २०-३५ २। १०-३५-३।

अपवाद—सं० पुं० एक०। निंदा; बदनामी। रा० ३३-३३-१। ३३-३३-३। ३३-३५-२।

अपवित्र—विशेपण। विशेष्य—नरछाँह। कलक सहित। रा० २८-१७-२। वि० गी० १६-४२-१।

अपस्मार—स० पुं० एक०। एक व्यभिचारी भाव। मानसिक सताप की अधिकता के कारण चित्त मे विक्षेप हो जाने से उत्पन्न 'व्याधि' को अपस्मार कहते हैं। मिरगी। र० प्रि० ६-१४-१।

अपह्नुति—सं० स्त्री० एक०। अर्थालंकार का एक भेद जिसमें उपमेय का निषेध कर उपमान की स्थापना की जाती है। क० प्रि० ६-३-२। ११-८१-२।

अपाप—सं० पुं० एक०। पुण्य। वि० गी० १६-१२-२। १६-२१-२।

अपार—विशेपरा। विशेष्य—जुद्ध। बहुत बड़ा। र० प्रि० ३-४०-१। ८-४२-३। १४-१६-१। क० प्रि० १-३०-२। २-७-५१। २-१०-१। ४-८-१। ४-१६-१। ६-१०-२। ८-२६-२। १२-१-१। १६-२-१। रा० १२-३-१। ३-१६-१। ८-१७-२। ६-१६-२। ६-१६-३। १२-३-१। १४-४-१। १६-३६-२। २०-५२-२। २०-५३-३। २२-१५-१। २६-१५-३। २६-१८-१। २६-६-२। ३०-२४-४। ३१-३६-४। ३१-४७-१। छ० मा० २-१६-३। २-२६-४। वी० च० ६-३७-१। २६-४८-२। २७-४-१। २७-५-१। २७-११-२। २८-१-१। ३१-१-१। ३१-१५-१। ३१-४५-१। ३१-६२-१। ३२-१५-२। ३२-२७-१। ३२-२८-१। ३२-३७-१। ३२-४४-१। जहाँ० ४१-२। १५०-१। १७६-१। १८२-१। १६७-२।

अपारथ—(अपार्थ) सं० पुं० एक०। काव्यदोप जहाँ असगत बात कही जाती है या जहाँ अपार्थदोप होता है। क० प्रि० ३ १४-२। ३-४३-१।

अपारमुखी—विशेपरा। विशेष्य—गिरा। असख्य धाराओ से समुद्र मे मिलती हुई। रा० १४-११-५।

अपूरब—विशेपण। विशेष्य—पूरब। अपूर्व, अद्वितीय। र० प्रि० ११-६-१। वी० च० २३-२०-४।

अप्रमान—स० पु० एक०। विना प्रमाण तथा असभव कथन। वि० गी० १६-५४-१।

अफल—विशेपरा। विशेष्य—अकास। निष्फल। क० प्रि० ३-२५-३। ३-२८-३।

अब—कालवाचक क्रियाविशेषण। इस अवसर पर; इस वक्त। उदा० "अब नायक लच्छन कहौ," (र० प्रि०। १-२८-२।) र० प्रि० १-१८-२। ३-२१-३। ३-५६-४। ३-६२-४। ३-६६-२। ४-१६-३। ४-१९-२। ६-१०-२। ७-३६-१। ८-१३-१। १०-१२-२। १२-७-१। १२-२१-१। १२-२२-३। १२-३०-२। १३-२-२। १३-७-२। क० प्रि० ६-६८-४। ८-४०-३। ८-४३-३। १०-८-४। १०-१८-२। १०-२८-४। ११-५६-३। १२-३-२। १३-११-५६। १४-११-१। १५-१०७-२। १५-१३१-२। १६-२३-१। १६-२९-२। १६-८३-२। रा० १-३५-४। २-१२-४। २-२०-४। ३-७-३। ३-८-६। ३-३३-१। ४-१-२। ४-९-४। ४-१६-२। ४-१७-१। ४-२९-१। ५-१५-१। ५-१७-२। ५-३५-१। ६-१-२। ६-१७-३। ६-३०-१। ६-३६-४। ७-५-३। ७-१६-३ ७-२०-२। ७-२७-२। ७-३०-२। ७-३३-१। ७-३५-३। ७-३७-४। ७-४२-१। ७-४७-१। ७-४८-२। ७-५१-२। १०-७-२। १०-३३-१। १०-३४-१। ११-३५-२। ११-३६-१। १२-८-१। १२-१०-१। १२-१२-१। १२-१७-१४। १२-५८-४। १२-६९-१। १३-२२-४। १३-६८-२। १३-८५-२। १४-२५-२। १५-५-१। १५-५-४। १५-१८-२। १९-४-२। १९-२१-४। १९-२२-१। १९-५४-४। १९-५५-१। २०-४७-४। २०-५५-४। २१-२४-४। २३-१३-२। २४-२७-२। २५-१३-१। २५-२३-१। २५-२८-२। २५-४१-२। २७-१-१। ३३-५-१। ३३-९-२। ३८-४-२। ३७-५-१। ३७-५-२। ३७-१३-२। ३७-१८-२। ३७-२१-२। ३८-५-३। ३८-१८-२। ३९-१-३। ३९-११-१। छ० मा० १-४९। ४-४०-३। वी० च० १३-२०-४। जहाँ० १-३। १५-६। २१-६। १२८-६। वि० गी० १-८-५। ६-४२-२। ८-६-१। ८-१७-१। ८-४९-२। १२-८-१। १२-२२-१।

अबदुल्लह—स० पु० एक०। मधुकरशाह से पराजित पठान योद्धा। वी० च० २-३७। ८-३। ९-६०। ११-५२। १२-१। १२-३०। १२-३८। १३-२। १४-१९। १४-२२। १४-३८। १४-४२। १४-४५।

अबर्न—विशेषण। विशेष्य—देह। अवर्ण। वि० गी० ५-५-१। १८-२५-२।

अबल—विशेषण। विशेष्य—वनस्थित राम। सहाय वा सेना रहित। रा० १०-१६-१। विशेष्य—अबला। बल-हीन। क० प्रि० ६-५०-२। ७-२९-२।

अबला—सं० स्त्री० एक०। नारी, स्त्री। क० प्रि० ६-५०-२। १५-१०७-२।

अबार—स० पु० एक०। देर। रा० १५-२५-३।

अबास—सं० पु०। आवास; मकान; वासस्थान। रा० १-३७-१।

अबिकारी—विशेषण। विशेष्य—रघुनदन। मायाकृत विचार से रहित। रा० ७-४५-२। वि० गी० ४-४-१। १७-३६-१।

अविताली—सं० स्त्री० एक० । अफतारी । वह अफसर जो बडे राजा की यात्रा मे पहले से आगे के मुकामो मे जाकर उस राजा के ठहरने और आराम का प्रबध करता हे । क० प्रि० ५-१५-३ ।

अविद्या—सं० स्त्री० एक० । ज्ञान का अभाव । वि० गी० १६-१०६-१ । १९-५७-१ ।

अबिनास—विशेषण । विशेष्य—फल । जिसका नाश कभी न होता हो । अक्षय । वि० गी० २०-४६-२ ।

अबिनासी—विशेषण । विशेष्य—देही । जिसका विनाश नही होता । वि० गी० ५-५-२ । १४-५-१ ।

अविनीत—विशेषण । विशेष्य—इद्रि । हठी, जिद्दी, जिसे नियत्रण मे रखना कठिन हो । रा० २०-४७-२ ।

अविनाद—विशेषण । विशेष्य—अविका । दु खरहित, प्रसन्न । वि० गी० १२-५-४ । १८-२-२ ।

अबिवेक—स० पुं० एक० । अविवेक, भला बुरा समझने की शक्ति का अभाव । वि० गी० १०-५-४ । १२-२३-१ ।

अबिपाद—स० पु० एक० । खुशी । वि० गी० १२-५-४ ।

अबेर—स० पु० एक० । वरुण । क० प्रि० ११-५६-३ ।

अबै—स्थानवाचक क्रियाविशेषण । इसी समय, अभी अभी । उदा० "भरही चलिहै रिवि सग अबै" (रा० २-१७-३) र० प्रि० ९-१०-२ । क० प्रि० १६-८६-४ । रा० ६-१-२ । ७-१९-१ । १०-४-१ । १६-५-४ । १६-९-२ । २२-२२-२ ।

अबोली—स०स्त्री० एक० । चुप्पी, मौन । र० प्रि० १३-७-२ ।

अब्ज—स० पु० एक० । (१) शख—सफेद रंग का बोधक । (२)कमल—लाल रंग का बोधक । क० प्रि० ५-४६-२ ।

अब्दुल फजल—सं० पु० एक० । अकबर के दरबार का प्रमुख कवि अबुल फजल जिसकी हत्या वीरसिहदेव के द्वारा हुई थी । वी० च० ५-५७ । ५-७४ । ५-९६ । ५-९८ । ६-९ । ६-१५ ।

अभक्त—विशेषण । विशेष्य—चारो विप्र । जो ईश्वर से भक्ति न रखता हो । वि० गी० १९-३८-२ । १९-४८-२ ।

अभच्छ—विशेषण । विशेष्य—भक्ष । अनजाना । रा० ३९-३०-१ ।

अभय—(१) स० पु० एक० । समुद्र-विशेप । वि० गी० ४-२६-२ । (२) विशेषण । विशेष्य—भुज । अभयदान देनेवाला । क० प्रि० ४-२२-२ ।

अभयदान—स० पु० एक० । दया का दान । वि० गी० १-२४२-२ । १६-२६-२ ।

अभया—स० स्त्री० एक० । नदीविशेप । वि० गी० ४-१७-१ । ६-१६-१ ।

अभाग—स० पुं० एक० । अभाग्य । वि० गी० १६-२४-१ ।

अभाव—स० पु० एक० । लोभ या कमी । वि० गी० २०-३-२ ।

अभिन्न क्रिय—स० स्त्री० एक०। केशव के मतानुसार श्लेपालंकार का एक भेद। श्लेप मे जहाँ विविध पक्षो के लिये क्रिया एक ही हो, पर उसका फल विरुद्ध हो, वह अभिन्न क्रिया श्लेप कहलाएगी। क० प्रि० ११-३९-१।

अभिन्नपद—स० पु० एक०। श्लेपालकार का एक भेद। भिन्न पदो के हेतु श्लिष्ट शब्दो के अर्थो मे भिन्नता न आए, अर्थात् जो अर्थ एक पक्ष मे लिया गया है, वही अर्थ अन्य मे भी लग सके, उसे अभिन्नश्लेष कहते हैं। क० प्रि० ११-३४-१।

अभिमानी—विशेपण। विशेष्य—नायक। अभिमान से युक्त। र० प्रि० २-१-१।

अभिराम—विशेषण। विशेष्य—केस। सु दर। क० प्रि० ५-१४-१।

अभिवंदन—स० पु० एक०। प्रणाम करना। छ० मा० १-४८-५।

अभिलाप—(१) सं० पु० एक०। चाह, इच्छा। र० प्रि० ६-३९-१। ८-९-१। ८-१०-२। क० प्रि० ६-२८-२। रा० ११-११-१। १-४८-४। २८-१२-१। (२) स० पु० वहु०। इच्छाएँ, कामनाएँ। र० प्रि० ५-१०-२। ५-२६-३। १४-६-४। २५-९-१। क० प्रि० १५-९३-४। (३) स० पु० वहु०। [अ] इच्छाएँ। [आ] रग। क० प्रि० १५-८५-४।

अभिलाप चित्र—स० पु० एक। इच्छाओ की तस्वीरे। क० प्रि० १५-९५-४।

अभिलापनी—स० पु० वहु०। उत्कंठाएँ। र० प्रि० ७ १२-१।

अभिलाषी—विशेपण। विशेष्य—मुनिजन। अभिलपित, अपने पसंद के चुने हुए। रा० १०-२७-१।

अभिलापौ—क्रियापद। अभिलापा करो; प्रयत्न करो। रा० ३७-५-२।

अभिवंदन—सं० पु० एक०। नमस्कार, प्रणाम। रा० ११-१०-२।

अभिपेक—सं० पु०। (१) राजा का सिंहासनारोहण के समय मंत्रपूत जल से किया जानेवाला स्नान। रा० ८-१६-३। १९-३-३। २७-२९-१। (२) जल जल छिडकने की क्रिया। वी० च० १०-३। २२-७७। ३२-३। ३२-४। ३२-५। ३२-६। ३२-७। ३२-१३। ३३-१२। ३३-१३।

अभिसंधिता—स० स्त्री० एक०। कलहांतरिता नायिका। पति या नायक का अपमान कर पीछे पछतानेवाली नायिका। र० प्रि० ७-२-२। ७-१३-२।

अभिसारिका—(१) स० स्त्री० एक०। स्वकीया अभिसारिका। वह नायिका जो अत्यत लज्जित होकर बंधु स्त्रियो के साथ प्रिय से मिलने के लिये निर्दिष्ट स्थान पर जाती है। र० प्रि० ७-२६-२। ७-३-२। ७-२५-२। (२) सं० स्त्री० एक०। परकीया अभिसारिका। वह नायिका जो सखी, दासी, घर की स्त्रियाँ साथ आने पर नायक से

मिलने के लिये निर्दिष्ट स्थान पर जाती है। र० प्रि० ७-२७-२।

अभिसारिणी—सं० स्त्री० एक०। अभिसारिका नायिका। अष्ट नायिकाओ मे एक। रा० १३-२०-१। वी० च० ११-१३-१। २७-१४। वि० गी० २०-२०-४।

अभिसारु—स० पु० एक०। अभिसरण; प्रिय से मिलने के लिये जाना। र० प्रि० ७-३२-४।

अभीत—विशेषण। (१) विशेष्य—कुमार। जो भयभीत न हो, जो डरता न हो। क० प्रि० ८-१३-१। वी० च० १३-११-३। २३-१-२। वि० गी० १६-५६-१। (२) विशेष्य—भुव पति। अद्भुत। क० प्रि० ५-१४-३। ८-१-२। ८-१२-१। ११-१२-४। रा० २७-२-३। छं० मा० १-५४-४।

अभीता—विशेषण। विशेष्य—अनुरक्त। निश्चल; अचंचल। रा० २०-११-१।

अभीर—[सं० अभि √ईर (प्रेरणा)+ अच्]—स० पु० बहु०। अहीर। छ० मा० २-४४-२।

अभेद—(१) स० पुं० एक०। एकरूपता। क० प्रि० १४-४६-१। वि० गी० ११-३६-२। (२) विशेपण। विशेष्य—तनत्राण। जो किसी से भेदा न जा सके। रा० १९-३७-३।

अभोज—अभोज्य पदार्थ। रा० २५-३७-१

अभ्रक—स० पुं० एक०। (१) खनिज—श्वेत-वर्ण-वाची। (२) आकाश—श्याम-वर्ण-वाची। क० प्रि० ५-३८-२।

अमंद—विशेपण। विशेष्य—गजराज। सुदर। क० प्रि० ८-२८-३।

अमद चरित्र—विशेषण। विशेष्य—चदसेन। निर्मल चरित्रवाला। जहाँ० ७५-१।

अमर—(१) स० पु० बहु०। देवगण। र० प्रि० ८-५४-२। क० प्रि० १६-८-३। वी० च० १-१७। १-६२। वि० गी० २४-३-३। २४-२६-२। (२) विशेपण। विशेष्य—देव। चिरजीवी; मृत्यु से परे। र० प्रि० ८-५४-२। क० प्रि० १६-८-२। रा० १३-६५-३। २१-३०-२। २७-१०-१। ७-४६-१। शिख० १५-१। रतन० २०-४। वी० च० १-१७-३। १-६२-१। जहाँ० १८-१। वि० गी० १४-११-२। १८-२५-२।

अमरलता—स० स्त्री० एक०। अमर-वेल। वि० गी० १४-१२-२।

अमरलोक—सं० पु० एक। स्वर्ग। रा० १-१३-२।

अमरवती—सं० स्त्री० एक०। देवताओ की पुरी, इद्रपुरी। वि० गी० ६-९-१।

अमरसिंह—स पु० एक०। चित्तौडपति महाराणा प्रतापसिंह के पुत्र। क० प्रि० ११-३०-४। ११-३१-४। ११-३२-४। वी० च० १-२।

अमरावति—स० स्त्री० एक०। इद्रपुरी। रा० २२-५-१।

अमरेस—सं० पुं० एक०। इंद्र। वी० च० २६-२६।

अमरों—सं० पु० बहु०। देवगण। र० प्रि० १४-४०-२। वि० गी० १४-९-२।

अमल—सं० पु० एक०। (१) स्वच्छता। क० प्रि० १५-१०-३। (२) व्यवहार; आचरण। क० प्रि० १५-७६-४।

अमल कमल कुल कलित—विशेषण। विशेष्य—देस। निर्मल कमलसमूहो से सुशोभित। क० प्रि० ३-५४-१।

अमल कमल छंद—सं० पुं० एक०। छंदविशेष। छं० मा० १-६६-२। २-४८-६८।

अमल कमल मुख—विशेषण। विशेष्य—सीता जू। निर्मल कमल जैसे मुखवाली। रा० ६-४२-१।

अमलता—सं० स्त्री० एक०। काम; व्यवहार। क० प्रि० १५-८-१।

अमल सकल श्रुति बरनमय—विशेषण। विशेष्य—गिरा का हार। वेद के समस्त निर्मल अक्षरो का बना हुआ। रा० २०-४८-२।

अमलु—विशेषण। विशेष्य—सूरज। निर्मल। रा० २-१०-३। जहाँ० ११०-३।

अमान—विशेषण। विशेष्य—स्वर। बेहद; बहुत अधिक। रा० ३०-६-४।

अमित—विशेषण। (१) विशेष्य—चरित्र। अपार। रा० २-२५-२। २२-२४-२। (२) विशेष्य—स्वर। किसी को न माननेवाला, जो किसी को अप्रभावित न छोडे।

अमित्र—सं० पु० एक०। शत्रु; दुश्मन। क० प्रि० ११-५०-४। रा० २७-१५-२। ३६-२६-६। छं० मा० १-१७-३। वि० गी० १४-२२-४। १८-१-२।

अमित्रभूमि—सं० स्त्री० एक०। शत्रु का राज्य। रा० ३६-३०-१।

अमिलोटा—सं० पुं० एक०। एक गाँव का नाम। वी० च० ७-८।

अमीलनि—सं० पु० बहु०। शत्रु। क० प्रि० १६-६२-२।

अमूढ़—विशेषण। विशेष्य—सतन। पंडित। र० प्रि० ३-६८-२।

अमृत—सं० पु० एक०। सुधा। वह वस्तु जिसके पीने से मुर्दा जी उठे और जीवित प्राणी अमर हो जाय। कहते हैं, पृथुराज के भय से पृथ्वी ने गो रूप धारण किया था। उस समय देवताओ ने इंद्र को दोग्धा बनाकर सुवर्ण पात्रो मे उसी गो रूपी पृथ्वी को दुहा। उसमे पृथ्वी से अमृत निकला था। पीछे दुर्वासा के शाप से वही अमृत समुद्र मे जा गिरा। देवासुरो के क्षीरसागर के मथने पर अमृत पुनः उद्‌भूत हुआ था। लोगो मे ऐसा प्रवाद चल पडा है कि अमृत पीने से जरा, मृत्यु, आदि कुछ भी नही होती। (२) अमर। क० प्रि० ७-२६-२। रा० ३०-४६-२। ३६-६-३। वी० च० २०-११। २७-११। ३३-५।

अमृततोया—सं० स्त्री० एक०। नदी-विशेष। वि० गी० ४-१७-२।

अमृतमय—विशेषण। विशेष्य—ससि।

सुधा से युक्त; सुधाधर। काशीखंड के मत मे ब्रह्मा के मानसपुत्र अत्रि मुनि ने ३,००० वर्ष तपस्या की थी। उसी समय इनका रेतस् अमृत रूप मे परिणत होकर ऊर्ध्वगामी हुआ और दश दिक्-उज्वल करके नेत्र से निकलने लगा। कोई भी देवी धारण न कर सकी तो पितामह ने उन्हे रथ पर स्थापित किया। तभी से वे सुधाधर कहे जाने लगे।

विष्णुपुराण, भागवत आदि के अनुसार जब देवराज इंद्र महामुनि दुर्वासा के शाप से नष्ट हो गए तब देवताओ ने विष्णु के आदेश से समुद्र-मंथन किया। उस मंथन मे मदर पर्वत मथनदड, कूर्मराज इस मथन के अधिष्ठान और वासुकि मथनरज्जु हुए थे। समुद्रमंथन मे पहले चद्र, पीछे लक्ष्मी और तब सुरा, कौस्तुभ, पारिजात वृक्ष, सुरभि, वाद को हाथ मे अमृत लिए धन्वतरि उत्पन्न हुए। अमृत का सहोदर होने और स्वय अमृत धारण करने से चद्र सुधाधर कहलाने लगे।

अमेय—विशेषण। (१) विशेष्य—श्रीविंदुमाधौ। सीमारहित या समझ मे न आ सकनेवाला। वि० गी० ११-२७-१। (२) विशेष्य—तेज। अतुल्य। रा० ७-१६-२। (३) विशेष्य—श्रीरघुवीर। असीम। वि० गी० ४-३९-१। १५-११-१। १५-४६-१। १९-१४-२। २०-६०-१। २१-४-१।

अमेय प्रभावे—विशेषण। विशेष्य—गगे। अमित प्रभाव डालनेवाली। वि० गी० ११-४८-२।

अमोघ—विशेषण। विशेष्य—सक्ति। जो कभी निष्फल न हो। रा० १७-४०-१।

अमोल—विशेषण। विशेष्य—कमल। अमूल्य। र० प्रि० ७-३७-२। ११-११-२। १२-२१-१। क० प्रि० १५-३३-१। १५-५१-४। रा० ३०-१९-१। ३२-३३-३। वी० च० ८-१९-२। १४-२५-४। १७-४१-१। १७-५२-२। १७-६४-१। २०-१३-१। जहाँ० ४०-३।

अयननि—सं० पुं० बहु०। उत्तरायण और दक्षिणायन। उत्तरायण—छह महीने का काल जब सूर्य की गति उत्तर की ओर रहती है। दक्षिणायन—वह छह महीने का काल जब सूर्य की गति दक्षिण की ओर रहती है। क० प्रि० ११-७-१।

अयान—(१) स० पुं० एक०। अज्ञान; भोलापन। र० प्रि० ३-२१-४। ९-१०-१। क० प्रि० ८-७-४। रा० १४-३-२। २४-२१-३। ३७-९-३। वि० गी० ७-१८-३। (२) विशेषण। विशेष्य—नारिन। ज्ञान से रहित। वि० गी० ६-६८-१। ७-१०-४। ७-१८-३।

अयाने—विशेषण। विशेष्य—लोग। चतुर। वि० गी० ५-२-१।

अरत—क्रियापद। अड जाता है। क० प्रि० ४-२२-६।

अरतु—क्रियापद । अड़क जाता है । क० प्रि० ५-३१-२ ।

अरथ—सं० पुं० एक० । अर्थ; अभिप्राय । रा० ११-१७-३ । छं० मा० २-२०-३ ।

अरथ अनेकनि—विशेषण । विशेष्य—बोलनि । अनेक अर्थवाले; श्लेषपूर्ण; व्यंग्य । रा० ६-४१-१ ।

अरधंग—(अर्धांग) । सं० पु० एक० । आधी देह । क० प्रि० १५-११७-१ ।

अरब—सं० पु० एक० । अरब देश । जहाँ० ९९ ।

अरबिंद—स० पुं० एक० । कमल; सारस । र० प्रि० ३-४७-४ । ७-३१-३१ । ८-२४-४ । क० प्रि० । १२-४-४ । १५-३०-४ । १५-५४-१ ।

अरबिंदद्युति—सं० स्त्री० एक० । कमलपुष्प की आभा । र० प्रि० ७-३१-३ ।

अरबिंदर—स० पु० बहु० । कमलपुष्प; सारस । र० प्रि० ६-३५-२ । क० प्रि० ९-१३-१ ।

अरहंतन—सं० पुं० एक० । अरहतनाम । वि० गी० ८-१८-१ ।

अराजक—स० पु० एक० । विप्लव । वि० गी० १२-२९-१ ।

अरि—सं० पुं० एक० । शत्रु । क० प्रि० १-१३-२ । ४-२०-२ । ४-२२-२ । ६-३३-२ । ८-५-२ । ८-१२-१ । ८-१५-१ । ११-२-४ । ११-२-५ । ११-२५-४ । ११-४३-३ । ११-७७-४ । रा० १५-१३-१ । १७-२७-२ । २३-११-१ । र० प्रि० १-२७-४ । १-४९-५ । वी० च० १-२ । ३-२० । ५-१७ । ८-४ । ३१-३० । ३१-७३ । ३१-७६ । ३२-२७ । ३३-४८ । जहाँ० ३५; ७९; ११५; १९२ । वि० गी० १-२७-१ । २-९-२ ।

अरिउर—सं० पुं० एक० । शत्रु का हृदय । क० प्रि० ११-२५-४ ।

अरिकै—सयुक्त क्रिया । अड़कर, मानकरके । रा० १५-२९-२ ।

अरिकुल—सं० पुं० बहु० । शत्रुसमूह । क० प्रि० ७-९-१ । र० बा० १-१९-५ ।

अरिकुल बलहर—विशेषण । विशेष्य—वीरसिंह । रिपुकुल के बल को हरनेवाला; शत्रुविनाशक । वी० च० ३३-४८-१ ।

अरिगण—सं० पुं० बहु० । शत्रुओ का समूह । रा० २-११-१ । वि० गी० २१-४५-१ ।

अरिदल—सं० पुं० एक० । शत्रुओ का झुंड । क० प्रि० ८-१६-४ ।

अरिदलबल—सं० पुं० बहु० । शत्रुओ की सेना की शक्ति । र० प्रि० १-१९-२ ।

अरि-दूषण—विशेषण । विशेष्य—अगद । रिपुओ का नाश करनेवाला । र० बा० २७-४ ।

अरि नगरी—स० स्त्री० एक० । शत्रुओ की नगरी । रा० २७-३-३ ।

अरि मद—स० पुं० एक० । दुश्मनो का गर्व । क० प्रि० १-१३-२ ।

अरिमूल—सं पुं० एक० । शत्रुओ का केंद्र । र० बा० १-१७-१ ।

अरिल्ल—स० पुं०एक० । सोलह मात्राओ का एक छंद जिसके अंत मे दो लघु अथवा एक य-गरण होता है। परतु इसमे जगरण का निषेध है । छं० मा० २-३४-२ ।

अरिहौ—क्रियापद । अडोगे, वरजोरी करोगे । र० प्रि० ५-१७-१ ।

अरु—समुच्चयबोधक संयोजक। उदा० "पूरण पुराण अरु पुरुष पुराण"—(रा० १-३-१।) क० प्रि० ३-१८-१ । ३-१८-२। ३-२१-१। ३-२५-५। ३-२५-६ । ३-३१ २। ३-३८-१। ३-५९-१। ५-३९-१ । ५-४१-२ । ५-४३-१ । ५-४४-२, ६-१-१ । ६-६-२। ६-२१-२। ६-२४-४, ७-९-४। ८-१९-३। ११-१२-२। ११-१३-१। ११-१७-२। ११-५७-३। ११-७७-४। ११-७९-४। १३-८-३। १३-१३-२। १३-१४-२। १४-२२-४। १४-३६-१। १४-४७-३ १५-१२२-२। १६-२७-१। रा० १-३-१। १-२२-४। १-४२-४। ३-२८-२। ४-३०-३। ५-३३-२। ५-३७-१। ६-१६-१। ६-३६-२। ९-४१-७। १३-७५-२। १३-९६-२। १३-९५-१। १४-४२-४। १५-१८-१। १६-१३-३। १६-३२-२। १८-२-२। १८-९-१। १८-३७-२। २०-२-१। २२-१०-२। २२-१६-२। २२-१९-१, २३-२७-२। २५-१-१। २५-९-२। २५-१५-२। २५-२२-१। २५-३८-१। २६-१९-२। २९-४३-१। ३०-१-४। ३०-४-१। ३०-४-२। ३१-७-१। ३१-३२-२। ३३-३४-२। ३३-५४-२। ३४-७-१। ३४-१६-१। ३६-६-२। ३७-२१-२। ३८-५-३। ३८-१८-२। ३९-१-३। ३३-११-१। छं० मा० २-४८-४। वी० च० २-१२-५। २-४९-१। ३-१०-२। ३-६५-१। ४-२२-१। ४-३७-२। ५-३-१। २८-२५-२। ३३-९-१। २९-९-२। जहाँ० १८८-३। वि० गी० २-६-३। २३-१। ४-२३-१। ८-४७-१। ११-४५-२। १२-७-४। १२-१५-१। १२-२३-१। १२-२५-१। १३-९-१। १४-८-१। १४-४९-२। १६-३०-१। १६-७४-२। १७-२९-२। १८-७ ४। १८-१०-१। १९-१५-२। १९-२९-१। २०-५६-२।

अरुचि—विशेषण। विशेष्य—मदिरा। अरुचिकर। वि० गी० ५-१२-१।

अरुझानी—क्रियापद। उलझी हुई। र० प्रि० १६-११-५।

अरुझि—क्रियापद। उलझ गई। रा० १-३६-१।

अरुझै—क्रियापद। उलझ जाता है। रा० ६-३१-२।

अरुणोदय—स० पु०। प्रात काल। वी० च० २१-२५। २२-२१। २२-३८।

अरुण—(१) स० पु० एक०। लाल रंग। क० प्रि० ५-४-१। (२) सूर्य का सारथी। क० प्रि० ५-३२-३।

अरुन—विशेषण। विशेष्य—पद्मनी प्रान-नाथ (सूर्य)। लाल रंगवाला। र० प्रि०

१०-१-१। १२-१५-२। १४-२१-२। क० प्रि० ५-३२-२। ६-१६-२। ६-१२-१। ११-३८-१। १५-३८-१। १५-४५-१। रा० ५-१०-५। ५-१३-१। २६-२२-४। शिख० ५-२। १२-४। वी० च० ५-१०८-१। ११-२२-१। ११-२४-१। ११-२५-२। १५-६-२। १७-१३-१। २१-२६-१। २२-६०-१। २२-६३-२। २२-७२-१। २३-१०-२। २३-७-२। २६-८-१। २६-४५-२।

अरुनता—सं० स्त्री० एक०। लालिमा, अरुणाई। क० प्रि० ७-२२-१।

अरुन खरे—विशेषण। विशेष्य—सूरज। खूब लाल। रा० ५-६-१।

अरुनप्रभुजू—सं० पु० एक०। सूर्य भगवान्। र० प्रि० १०-८-१।

अरुनमुख—विशेषण। विशेष्य—बानर। लाल मुखवाला। रा० ५-१३-१। वी० च० ११-२६-१।

अरुना—सं० स्त्री० एक०। सरिता या नदीविशेष (अरुणा)। वि० गी० ४-२७-२।

अरुनाई—सं० स्त्री० एक०। लालिमा। रा० १०-१८-३।

अरुनोदय—सं० पुं० एक०। सूर्योदय। रा० १०-१८-३। १४-१२-२।

अरुनोदा—सं० स्त्री० एक०। सरिता। वि० गी० ४-३१-१।

अरूप—विशेषण। विशेष्य—जोति। रूप से रहित। वि० गी० १-१-१। ६-४६-१। १५-४६-१। १५-४६-१। १७-३२-१। १८-२४-१। २०-६०-१। २१-४-१। २१-१५-१। २१-२०-१।

अरूपी—विशेषण। विशेष्य—श्रीविन्दुमाधौ। रूपरहित। वि० गी० ११-२५-१।

अरे—[सं० √ऋ (गति)+अच्]। क्रियापद। अड गए। र० प्रि० २-१७-३।

अरैकै—संयुक्त क्रिया। अडा करके। रा० ३८-१६-२।

अरोगी—विशेषण। विशेष्य—जीव। निरोग। रा० २८-४-१।

अर्क—सं० पु० एक०। (१) स्फटिक—श्वेत रंग का बोधक। (२) सूर्य—लाल रंग का बोधक। क० प्रि० ५-४६-१।

अर्क समूह—सं० पुं० बहु०। अनेक सूर्यो का समूह। मदारवृक्षो का समूह। रा० ११-२०-१।

अर्घ—सं० पु० एक०। दूब, दूध, चावल आदि का मिला हुआ जल जो देवता या पूजनीय पुरुष के सामने रखा जाय। वि० गी० ३-१२-२। १५-५६-१। १६-४६-१।

अर्घ्य—सं० पुं० एक०। देखिए—अर्घ। रा० २-४३-२। ८३-६-१। जहाँ० १६३-३। वि० गी० १३-५१-२।

अर्घ्यमान—विशेषण। विशेष्य—देव। पूजने योग्य। रा० ३-३-१।

अर्चन—सं० पुं० एक०। अर्चना; पूजा। वि० गी० ३-१३-१।

अर्चहिकै—संयुक्त क्रिया। अर्चना करके, पूजा करके। रा०। १८-३५-४।

अर्जमा—सं० पु० एक० । अर्चमान, पितृ-गणो मे से एक जो सर्वश्रेष्ठ है । वि० गी० ४-३५-४ ।

अर्जुन—(१) सं० पु० एक० । पाडु के पाँच पुत्रो मे से मँझले जो महाभारत युद्ध मे पांडव पक्ष के नायक थे । क० प्रि० १-१४-१ । १-३६-२ । ५-२०-१ । ८-१६-३ । १२-१८-२ । १२-१६-३ । वी० च० २-२ । २-२५ । १३-१८ । (२) (अ) सहस्रार्जुन, (आ) अर्जुनपाल । क० प्रि० ७-१३-२ । रा० ६-३४-६ । ६-३५-१ । (३) (अ) सेत—सफेद रग का द्योतक । (आ) पार्चव—श्याम रग का द्योतक । क० प्रि० ५-४०-२ । (४) सहस्रार्जुन । क० प्रि० १३-८-२ । (५) तृतीय पाडव (पाडवो के पक्ष मे) । एक वृक्षविशेष (वन के पक्ष मे) । रा० ११-२१-२ ।

अर्जुनपाल—सं० पु० एक० । करणपाल के पुत्र । क० प्रि० १-३-२ । वी० च० २-२५ ।

अर्जुनबाहु—स० पु० । गहरवाड वश का प्रसिद्ध राजा । वी० च० १५-३१ ।

अर्जुन बाहु प्रबाहु प्रबोधित—विशेषण । विशेष्य—नर्मदा, नदी वेतवै । (१) श्लेष से नर्मदा के पक्ष मे जिसकी धारा को सहस्रबाहु या कार्तवीर्यार्जुन ने अपने हजारो बाहो से रोक डाला था—(कृतवीर्य का पुत्र सहस्रबाहु नर्मदा मे स्त्रियो सहित जलक्रीडा कर रहा था । उस समय इसने अपनी सहस्र भुजाओ से नदी की धारा रोक दी जिसके कारण समीप मे शिवपूजा करते हुए रावण की पूजा मे विघ्न पड़ा । उसने क्रूद्ध होकर इससे युद्ध किया पर परास्त हुआ ।) (२) वेतवा नदी के पक्ष मे—राजा वीरसिह के पूर्वज अर्जुन नामक एक राजा को प्रबोधित करनेवाली । वी० च० १५-३१-२ ।

अर्थान्तर को न्यास—स० पु० एक० । अर्थातरन्यास अलकार—एक अर्थालकार जहाँ सामान्य से विशेष का, विशेष से सामान्य का अथवा कारण से कार्य का या कार्य से कारण का समर्थन हो । क० प्रि० ११-६५-२ ६-३-१

अलंकार—सं० पु० बहु० । रचनागत विशिष्ट शब्दयोजना या अर्थचमत्कार—उपमा, रूपक, अनुप्रास आदि । वी० च० २२-७३ ।

अलंकार—(२) आभूषण । रा० १४-८-२ । छं० मा० २-३३-३ ।

अलंकारमय—विशेषण । विशेष्य—काव्य, बाहु । (१) श्लेष से—(अ) काव्य के पक्ष मे—अलकारयुक्त । (आ) बाहु के पक्ष मे—भूषणो से युक्त । रा० ३१-२५-२ । (२) विशेष्य—काव्य पद्धतिहि । अलंकारयुक्त । वी० च० २२-७३-२ ।

अलंक—स० पु० बहु० । लटे, जुल्फ । र० प्रि० १०-८-३ । ११-५-१ । क० प्रि० ६-८-१ । १५-६६-१ । १५-७१-४ । रा० ३१-१८-१ । वी० च० ६-१३ । २२-६६ । २८-३ ।

अलका—सं० स्त्री० एक० । कुवेरपुरी । क० प्रि० १५-७१-४ ।

अलक्त जुक्त—विशेषण । विशेष्य—नखावली । महावर से युक्त । रा० ३१-३४-३ ।

अलक्ष्य—स० पुं० एक० । नामविशेष । वि० गी० १६-२२-१ ।

अलच्छी—(१) स० स्त्री० एक० । अलक्ष्मी; दरिद्रता । वि० गी० ५-११-१ । (२) विशेषण । विशेष्य—गीत । लक्षणो से रहित । वि० गी० ५-११-१ ।

अलज—विशेषण । विशेष्य—लोचन । लज्जारहित । र० प्रि० ५-२६-४ ।

अलसी—[सं० न-लस् (क्रीडा)] । (१) विशेषण । विशेष्य—वृषभानुसुता । अलसाई हुई । क० प्रि० ६-१०-१ । (२) क्रियापद । अलसा गई । क० प्रि० ६-१०-१ ।

अलात—[स० √ला (आदान)+क्त] । स० पुं० एक० । (१) पटेबाजी के अभ्यास के काम मे लाई जानेवाली वह लाठी जिसके दोनो सिरो पर लट्टू लगे रहते है । क० प्रि० ६-६-२ । ६-७-१ । (२) अंगार । जहाँ० ४५ ।

अलाप—(स० आलाप) । स० पुं० बहु० । गान । र० प्रि० १०-२७-१ । क० प्रि० १३-२६-१ ।

अलाभ—स० पु० । इच्छित वस्तु की अप्राप्ति । रा० २४-२१-१ ।

अलि—सं० पु० एक० । भ्रमर । क० प्रि० १५-७७-२ । रा० १-३२-२ । ३-१-४ । ५-१५-२ । ११-२३-२ । १५-१५-२ । १८-१७-१ । २६-३५-१ । ३७-२८-१ । वी० च० २१-१३ । २३-७ । २३-६ । २५-१९ । छं० मा० २-३५-४ । वि० गी० १३-३२-१ । १३-३८-२ । १३-४२-३ ।

अलि-कुलनि—स० पुं० वहु० । भौरो के समूह । क० प्रि० १५-७-१ ।

अलिन सहित—विशेषण । विशेष्य—नलिन । भ्रमरो से घिरे हुए । शिख० ७-४ ।

अलिना—स० स्त्री० एक० । भौरी; अलिनी । रा० ३२-१०-२ ।

अलिराज—स० पु० एक० । भ्रमर । वी० च० १०-१६ ।

अलिहि—(अलि+हि)—'अलि' । सं० स्त्री० एक० । सखी । र० प्रि० ५-५-२ ।

अलीक—[स० अल् (वारण)+इकन्] । सं० स्त्री० एक० । बदनामी; अप्रतिष्ठा । र० प्रि० २-८-२ । ८-५२-३ । ६-७-३ । १२-८-२ । क० प्रि० ५-२६-३ । ६-२६-३ ।

अलीकुलीखाँ—स० पु० । एक योद्धा जो मधुकरशाह से हार गया था । वी० च० २-३६ । १४-४४ ।

अलीजन—[स० आलि+जन] । स० स्त्री० बहु० । सखियाँ । र० प्रि० १०-२७-१ । क० प्रि० १३-२६-१ ।

अलील—स० पु० एक० । एक वृत्त । क० प्रि० ३-११-३ ।

अलेख—विशेषण । विशेष्य—माया कर्म ।

जिसका लेखा नही हो सकता। वि० गी० १३-८४-२।

अलोक—स० पु० एक०। (१) कलक। रा०७-३३-३। २७-७-१। ३३ ४०-४। वि० गी० १-२०-३। (२) पातालादि -लोक। वि० गी० ११-३८-३। २१-४२-४।

अलोनो—[स० अ+लवणम्]। विशेषण। विशेष्य—रूप। सजीव लावण्य से रहित। र० प्रि० ४-१०-३।

अलोभमान—विशेषण। विशेष्य—विश्वनाथ। लोभ या इच्छा से शून्य। वि० गी० ११-४१-१।

अलोल—विशेषण। विशेष्य—गति। जो चंचल न हो। क० प्रि० १५-६०-४। १५-४६-१।

अल्पधी—विशेषण। विशेष्य-कल्पसाखी। अल्प बुद्धिवाली। रा० २०-४१-१। २८-१-२।

अल्लाउदीन—स० पु० एक०। खिल्जी वंश का प्रसिद्ध सुलतान। क० प्रि० २-७-१। जहाँ० ३७।

अवंतिका—सं० स्त्री० एक०। उज्जैन। रा० ३६-२४-२।

अवगाहन—[अव√गाह+ल्युट-अन] क्रियापद। ढूँढना। रा० १३-३१-३।

अवगाहिकै—सयुक्त क्रिया। मँझाइकै; डूबकर; मलकर (घूमकर)। रा० ३५-११-१।

अवगुन—[स० अव+गुण (आमंत्रण) +क]। स० पु० वहु०। दोष; बुराई। रा० २८-१८-२।

अवलेस—[अव√लस् (अलकृत करना) +घञ्] सं० पु० एक०। शिरोभूषण; मुकुट। क० प्रि० १-५-२। २-५-२। ५-२५-१। रा० ७-१८-२। छ० मा० १-२२-३।

अवतार—[स० अव√तृ+घञ्] स० पु० एक०। (१) ईश्वर अथवा देवता का मनुष्यादि के रूपो मे जन्म लेना या वैसी अभिव्यक्ति। क० प्रि० ७-४-१। २-१०-२। रा० २०-१६-२। १-६-२। ३३-१०-२। वी० च० २१-८६। २७-८। (२) जन्म (धारण करना)। वि० गी० ३-२४-२। ६-४६-२। १५-१७-१।

अवतारी अवतारमनि—विशेषण। विशेष्य—श्रीराम। अवतार धारण किए हुए रूपो मे सवसे श्रेष्ठ। पृथ्वी और वेद के उद्धार तथा दुष्टो के दमन के लिये विष्णु ने दस वार भूमडल मे अवतार ग्रहण किया था—(१) मत्स्यावतार (२) कूर्मावतार (३) वराहावतार (४) नृसिहावतार (५) वामनावतार (६) पशुरामावतार (७) तमावतार (८) कृष्णावतार (९) वलरामावतार (१०) कल्कि अवतार। रा० १-१७-६।

अवदात—विशेषण। विशेष्य—सुगध। शुद्ध और निर्मल। क० प्रि० १६-४५-२। १६-५५-३। रा० २०-३३-३। वी० च० २-१३-२। वि० गी० १६-३२-१।

अवध—स० पुं० एक०। अवधपुरी। कोशल देश की राजधानी अयोध्या। रा०

१-२३-१। २१-२६-२। २७-२३-४। वी० च० २-२२। जहाँ० ११।

अवनि—स० स्त्री० एक०। धरती, जमीन। क० प्रि० १-२४-१। १०-२५-१। १०-३३-२। वी० च० ५-२५। वि० गी० १०-१५-२।

अवनीप—(१) स० पु० एक०। राजा। क० प्रि० ८-१०-२। १५-११३-१। वी० च० ५-२५। (२) विशेषण। विशेष्य—रामचद्र। जग का ईश, जगदीश। क० प्रि० १५-११३-१।

अवनीपन के अवनीप—विशेषण। विशेष्य—कुमार। राजाओ के भी राजा। रा० ५-३१-२।

अवेख्यो—क्रियापद। अवलोकन किया; देखा। र० प्रि० ३-४७-१। १२-१२-२।

अवरोध—स० पु० एक०। अंत पुर। क० प्रि० २-४२-२।

'अ' वर्ण—स० पु० एक०। 'अ' स्वर। क० प्रि० १६-७-१।

अवलंबित—क्रियापद। अवलबन किए हुए। रा० २०-४६-१।

अवली—(१) स० स्त्री० एक०। पक्ति; पाँत। र० प्रि० ३-१०-३। ६-४४-३। क० प्रि० ५-३७-३। १५-७७-२। रा० ३-१५-२। ७-४०-१। ६-५७-३। (२) सं० पु० एक०। माला। रा० ७-३६-१।

अवलोकन—(१) स० पु० एक०। चितवन, देखने का ढग, दृष्टि। रा० ६-४३-२। १२-३६-१। छ० मा० १-७३-३। (२) क्रियापद। देखने के लिये। र० प्रि० ३-७-२। रा० १३-४३-२। २२-८-२।

अवलोकन छाँड़िकै गए—सयुक्त क्रिया। देखने को छोडकर गए। रा० ३२-३२-२।

अवलोकि—क्रियापद। देखकर। र० प्रि० ३-५४-३। रा० ६-४५-५। १०-२-२। १७-१४-२। २५-८-८। ३३-३१-१। ३४-४८-१।

अवलोकि भयो—संयुक्त क्रिया। देखकर हुआ। रा० ३६-७-२।

अवलोकिय—क्रियापद। देखा। रा० १०-११-४। २५-१८-१। २७-१६-२।

अवलोकि हँस्यो—सयुक्त क्रिया। देखकर हँसा। रा० ३४-४८-१।

अवलोक्यौ—क्रियापद। देखा। रा० ११-२८-१। २७-४३-२।

अवशेष—विशेषण। विशेष्य—सत्रु। बचे हुए। वि० गी० १२-२५-१।

अवसान—स० पु० एक०। अत। रा० १३-३-१। २५-१-१।

अवहित्थ—स० पु० एक०। एक व्यभिचारी भाव जिसमे लज्जा, भय आदि भावो को छिपाने का प्रयत्न होता है। र० प्रि० ६-१४-२।

अवाम—सं० पु० बहु०। मित्र। क० प्रि० १-४०-२।

अवास—स० पु० एक०। प्रासाद, महल। छ० मा० २-४३-३।

अविरुद्ध क्रिय—सं० स्त्री० एक०। अविरुद्धक्रिय श्लेप अलकार। जहाँ०

क्रियाएँ भिन्न हो, पर उनका फल एक हो और श्लेष भी हो, उसे अविरुद्ध श्लेष कहेगे। क० प्रि० ११-३९-१।

अविरोध—सं० पु० एक०। विरोध का अभाव; मेल। क० प्रि० ३-५८-२। ९-१९-१।

अविवाहिता—विशेषण। अनूढ; जिसका विवाह न हुआ हो; कुँवारी। र० प्रि० ३-६९-१।

अविवेक—सं० पुं० एक०। भला बुरा समझने की शक्ति का अभाव; नासमझी। र० प्रि० १४-१६-३।

अव्ययेत—सं० पुं० एक०। अव्ययेत यमकालंकार। जहाँ पदो मे अतर न हो वहाँ अव्ययेत यमकालकार होता है। क० प्रि० १५-६५-१। १५-६५-२।

अव्ययेत जमकनि—(अव्ययेत यमक) सं० पुं० एक०। देखिए 'अव्ययेत'। क० प्रि० १५-११०-१।

अशक्ति—सं० स्त्री० एक०। आज्ञा शक्ति, ज्ञान की भूमिका। वि० गी० १६-५७-१।

अशोकवनी—स० स्त्री० एक०। अशोक-वन; लका का एक वन जहाँ रावण ने सीता को रखा था। रा० २१-१६-८।

अशोकवृक्ष—सं० पु०। देखिए 'असोक'। वी० च० १९-२२।

अश्रु जल—सं० पु०। आँसू। रा० २७-३०-३।

अष्ट—विशेषण। विशेष्य—नायिका। आठ। र० प्रि० ६-३-२। ७-३-२। क० प्रि० ११-१९-२। ११-५६-१। छं० मा० १-१६-४। १-१८-४। १-२९-४। वी० च० १६-१२-१। १७-५९-२। वि० गी० १३-५३-४।

अष्ट दस—विशेषण। विशेष्य—सुस्मृति। अठारह। वी० च० १-५२-१।

अष्ट नायिका—स० स्त्री० बहु०। साहित्य मे प्रयुक्त आठ नायिकाएँ—(१) स्वाधीनपतिका, (२) विरहोत्कंठिता, (३) विप्रलब्धा, (४) वासकसज्जा, (५) खडिता, (६) कलहातरिता, (७) अभिसारिका, (८) प्रोषितपतिका। क० प्रि० ११-२३-३। जहाँ० ३४।

अष्ट वसु—सं० पुं० बहु०। इसके अंतर्गत आठ भेद हैं, यथा—धर, ध्रुव, सोम, विष्णु अनिल, अनल, प्रत्यूष, प्रभास। ये आठ प्रसिद्ध वसु हैं।

ऋग्वेदसहिता में वसुओ का उल्लेख पाया जाता है। पुराणादि शास्त्र ग्रथो मे उनकी सख्या आठ बताई गई है। इन देवताओ के प्रभाव तथा कार्यकारिता के संबंध मे महाभारत के भीष्मोपाख्यान मे यथेष्ट वर्णन किया गया है। किंतु वैदिक विवरण का अनुसरण करने से मालूम होता है कि ये एक एक प्रकृतितत्व के निवासभूत देवता थे। हम लोग ऋक्-संहिता के किसी किसी स्थान मे वसुओ को आप, ध्रुव, सोम, धर, अनल, अनिल, प्रभास तथा प्रत्यूष प्रभृति प्रकृतिपुंज के नियामक रूप

मे देखते है। रामायण मे इन वसुओं का वर्णन आदितिपुत्र कहकर किया गया है। श्रीमद्भागवत् मे लिखा गया है—दक्ष प्रजापति ने षष्ठ मन्वतर मे द्वितीय जन्म मे छह कन्याएँ उत्पन्न की। ये सब कन्याएँ प्रजापति को प्रदत्त हुई थी। उनमे धर्म को दस कन्याएँ दान की गई। उन दस कन्याओ के नाम है भानु, लावा, ककुत, यामि, विश्वा, साध्या, मरुत्वती, वहु, मुहुता तथा सकल्या। इनके मध्य सत्नुनामी कन्या के गर्भ से आठ पुत्र उत्पन्न हुए। ये आठो पुत्र ही अष्टवसु है। इनके नाम है—द्रोण, प्राण, ध्रुव, अर्क, धार, वास्तु तथा विभावसु। महाभारत के दानपर्व मे अष्टवसुओ के नाम इस प्रकार निर्दिष्ट किए गए है—धर, ध्रुव, सोक, सावित्र, अनिल, अनल, प्रत्युय तथा प्रभाव। अग्निपुराण मे अष्टवसुओ की नामनिरुक्ति तथा वंशविवृति इस प्रकार देखी जाती है—जाप, ध्रुव, सोम, धर, अनिल, अनल प्रत्यूष तथा प्रभास। (हिंदी विश्वकोश)।

क० प्रि० ११-५६-१।

अष्टादस—विशेषण। विशेष्य—पुराण। अठारह। वी० च० १-५२-१। २-२६-२।

अष्टावद्—सं० पु० एक०। (१) सोना, पीतवर्ण का द्योतक। (२) शरभ नामक जतु, श्वेत वर्ण का द्योतक। क० प्रि० ५-४३-२।

असंग—विशेषण। विशेष्य—चिदानंद। जिसके साथ कोई न हो। वि० गी० १८-२५-३।

असत—स० पुं० एक०। असत्य। वि० गी० ७ ४-१। ११-१८-२।

असन—(१) सं० पुं० एक०। अशन; भोजन। क० प्रि० ७-३-१। १०-३३-१। वी० च० १३-१२। (२) विशेषण। विशेष्य—वसन। लाल रग के। र० प्रि० ३-८-२।

असपखान—स० पु०। अकबर का भेजा हुआ एक योद्धा। वी० च० ७-३३।

असमर्थ—विशेषण। विशेष्य—वाल। कमजोर। रा० ३६-२५-३।

असमसर—स० पुं० एक०। कालिका पुराण मे लिखा है कि ब्रह्मा ने दक्ष प्रभृति मानसपुत्रो की सृष्टि की थी। इसी समय संध्या नामक एक रूपवती कन्या भी उत्पन्न हुई। उस मनोरम कन्या को देखकर ब्रह्मा के हृदय मे चिंता उठी—यह जगत् का कौन कार्य करेगी? इसी से परम रमणीय मूर्ति कामदेव का जन्म हुआ। ब्रह्मा ने उन्हे जगत् के नर नारी-समूह को मुग्ध करने के लिये आदेश देकर पुष्पधनुष और पुष्पहार प्रदान किया। (हिंदी विश्वकोष, स० श्री नगेंद्रनाथ वसु। क०प्रि० ५-१०-२। ७-३८-१।

असरन सरन—विशेषण। विशेष्य—रुद्र। समुद्र, अमरसिंह। श्लेष मे। (अ) रुद्र के पक्ष मे—अनाथाश्रम (आ) समुद्र के पक्ष मे—असरन नारायण को

ही ज्ञान देनेवाला (कालिका पुराण मे लिखा गया है कि प्रलयकाल द्वारा नष्ट जगत्)।

असर्म—विशेषण। विशेष्य—भोग। लज्जाहीन। वि० गी० १६-२५-१।

असलेम—सं० पुं० एक०। इतिहास-प्रसिद्ध शेरशाह सूरी जिसने हुमायूँ को हराकर राज्य से निकाल दिया था। वी० च० २-३४। जहाँ० ३८।

असवार। सं० पु० एक०। सवार। र० वा० १-३८-३।

असहनशील—विशेषण। विशेष्य—चरित्र। जो सहने योग्य न हो; बुरे आचरणयुक्त। क० प्रि० ६-३१-२।

असाधु—विशेषण। (१) विशेष्य—सुग्रीव। दोपपूर्ण चरित्रवाला। रा०२७-१५-१। वि० गी० १६-११५-२। (२) विशेष्य—भाव। बुरे, टेढे हो जाने पर भगवान् विष्णु लक्ष्मी सहित क्षीरसागर मे शेष नाग के फन के नीचे शयन करते है। (यह भगवान् की द्वितीय मूर्ति है।) (३) अमरसिंह के पक्ष मे—अनाथो का आश्रयी। क० प्रि० ११-३१-२।

असार—विशेषण। (१) विशेष्य—भुज। वलहीन। रा० ४-११-२। (२) विशेष्य—संसार। सारहीन; मिथ्या। र० वा० २०-५।

असि—(१) सं० स्त्री० एक०। तलवार। र० प्रि० १४-२५-२। क० प्रि० ५-२०-१। (२) एक नदी जो काशी के दक्षिण गंगा मे मिलती है। क० प्रि० १५-७७-२।

असिदंड विहीने—विशेषण। विशेष्य—भुजदंड। तलवार से रहित। रा० ३२-४८-३।

असु—[सं० √अस्+उ]। (१) सं० पु० वहु०। प्राण। र० प्रि० ३-२६-३। रा० ३६-११-१। वी० च० १-२७। (२) पु० एक०। हृदय; जी। र० प्रि० ५-१०-१।

असुभचलन की खंड निहारि—विशेषण। विशेष्य—नदिका। दुष्टो के अशुभ गुणो का खंडन करनेवाली। वी० च० २४-११-२।

असुमोचक—विशेषण। विशेष्य—आकाश। अवनि अतिकष्टदायक। क० प्रि० १०-३३-२।

असुवॉ—सं० पु० वहु०। आँसू। क० प्रि० १०-१०-४।

असेक—विशेषण। विशेष्य—दंपति। विशेष; अनेक। वी० च० २२-७६-२।

असेप—विशेषण। विशेष्य—आसिप। उचित; समस्त। रा० ७-४४-२। र० प्रि० ६-३८-३। क० प्रि० १-२३-२। ५-३३-२। ६-५६-१। ११-२५-३। छं० मा० १-४८-६। १-५७-५। १-६१-३। र० वा० १७-५। वि० गी० १३-६-४। १५-४७-१। १७-१३-१।

असेप जीव मंडि—विशेषण। विशेष्य—देव। समस्त जीवो का रक्षक। वि० गी० १५-४७-१।

असेप प्रहारी—विशेषण। विशेष्य—

श्रीविदुमाधौ। अशेष को मारनेवाले। वि० गी० ११-२७-१।

असेष बंसहारिनी—विशेषण। विशेष्य—राक्षसी। समस्त वंशो का नाश करनेवाली। वि० गी० १-२२-१।

असेष मति—विशेषण। विशेष्य—सेष। बुद्धिमान। र० बा० २७-५।

असेष लोकावधि भूमिचारी—विशेषण। विशेष्य—चनाद्य पूजा। चौदहो लोको मे विचरण करनेवाली। जिसके द्वारा चौदहो लोक प्राप्त हो सकते है। रा० २१-२०-२।

असेषु—विशेषण। विशेष्य—मथुरा। समस्त। वि० गी० ६-३-१।

असेसै—विशेषण। विशेष्य—पडिता। सब प्रकार की। वि० गी० १-५-२।

असेस जंतु सरन—विशेषण। विशेष्य—दैव। समस्त जीवो का आश्रयी। वि० गी० १५-४५-१।

असोक—स० पुं० एक०। (१) अशोक पुष्प या वृक्ष। एक पेड जिसकी पत्तियाँ लहरदार तथा सुदर होती है और विशेषकर वंदनवार बाँधने मे काम आती है। क० प्रि० ७-१५-२। ७-२८-३। रा० १२-४१-१। १३-६५-१। ३१-२६-२। (२) सुख; शोक का विरोधी भाव। रा० ७-३३-१। (३) विशेषण। विशेष्य—समाज। शोकरहित; सुखमग्न। रा० ३३-४२-२। वि० गी० १६-१२५-१।

अशोक लग्ना—विशेषण। विशेष्य—वनदेवता। अशोक वृक्ष पर स्थित। रा० २०-६-१।

अस्त—सं० पु० एक०। फेककर चलाया जानेवाला हथियार। वी० च० -३१-११।

अस्ताचल—स० पुं० एक०। पश्चिम का वह कल्पित पर्वत जिसके पीछे सूर्य का अस्त होना माना जाता है।

अस्ति—स० स्त्री० एक०। सत्ता। वि० गी० २०-४७-१।

अस्तुत—विशेषण। विशेष्य—चिदानंद। जिसकी स्तुति करना कठिन है; गुणातीत। वि० गी० १८-२५-३।

अस्त्रशस्त्र प्रयोगी निहंता—विशेषण। विशेष्य—जुद्धरंता। अस्त्र शस्त्र चलानेवाले तथा शत्रु के चलाए हुए को काटनेवाले अहभाव निर्मुक्त (अहं के भाव से रहित)। रा० ३४-५१-१।

अस्वमेध—स० पुं०। यज्ञविशेष। प्राचीन काल का प्रधान यज्ञविशेष। इस यज्ञ मे घोडे की बलि चढती थी। अश्वमेध के घोडे का वर्ण मेघ जैसा कृष्ण, मुख सुवर्ण तुल्य, उभय पार्श्व चंद्राकर चिह्न से अंकित, पुच्छ प्रभायुक्त, उदर कुद के समान श्वेतवर्ण, पैर हरा, वर्ण सिंदूर जैसा रक्तवर्ण, प्रज्वलित अग्नि के सदृश चक्षु, सूर्य जैसा तेजस्वी एव सर्वांग सुगधयुक्त और वेगवान् होता था। प्राचीन समय मे राजा ही अश्वमेध करते थे। पहले ९९ यज्ञ करके शेष मे अश्व छोडना पडता था। घोड़े के कपाल मे जलपात्र बाँधते

थे और उसके साथ सेना सामंत भेजते थे। कहते हैं, अश्वमेघ का घोडा अपनी इच्छा से पृथ्वी घूम आता था। किसी पराक्रमी राजा के घोडा बाँध रखने पर रक्षक उससे लडते थे। महाराज दशरथ ने अश्वमेघ किया था। उनके पुत्र राम ने भी यह यज्ञ किया था। रा० ३५-१-२। ३५-२-४।

अश्विनीकुमार—सं० पु० बहु०। सूर्य की पत्नी प्रभा के घोडी का रूप ग्रहण कर लेने पर उससे उत्पन्न दो पुत्र जो देवताओ के वैद्य माने जाते हैं। क० प्रि०। ११-६-२।

अहं—सं० पु० एक०। अहकार। रा० २१-१५-१। वि० गी० २१-६-१।

अहंकार—सं० पु० एक०। (१) नामविशेष (योद्धा का नाम)। वि० गी० ३-१-२। ३-१५-१। १४-१६-१। (२) घमड। वि० गी० १८-३८-१। २१-२-१। २१-३-१। २१-६-४।

अहंपद—सं० पु० एक०। अहकार। रा० २४-१६-१। वि० गी०। १६-१०१-२। १६-१०२-१।

अहंभाव—सं० पु०। अहंकार। रा० २५-१८-२। वि० गी० २१-४०-२।

अहारनि—सं० पु० बहु०। आहार। वि० गी०। ५-२३-१।

अहि—(१) सं० पु० एक०। साँप। क० प्रि०। ४-२१-१। ६-८-२। ७-१०-२। १४-१७-३। १५-७७-२। (२) पु० बहु०। साँपो के आठ कुल—तक्षक, महापद्म, शक, कुलिक, कंवल, अवतार, धृतराष्ट्र, बलाहक। क० प्रि० ११-१८-२। (३) सं० पु० बहु०। सर्प। र० प्रि० ८-२३-३।

अहिछत्र—सं० पु०। चवल नदी से लगा हुआ प्रदेश। वी० च० ४-१६।

अहि भाषा—सं० स्त्री० एक०। सर्पो की भाषा। छं० मा० २-४-१।

अहिमेध—सं० पु० एक०। सर्पयज्ञ। क० प्रि० १६-५६-४।

अहित लोग की अन्वेषिनी—विशेषण। विशेष्य—पुरुषोत्तम की नारी। अहितकारी लोगो को ढूँढ-ढूँढकर संग्रह करनेवाली। रा० ६-५३-२।

अहीर—सं० पु० एक०। ग्वाल, आभीर। र० प्रि० ३-३८-१। वी० च० ६-२६। ६-३६।

अहेरो—[सं० आखेटक] सं० पु० एक०। आखेट। वि० गी० १३-६०-१।

आ

आँक बाँक—सं० पु० बहु०। अंडबड, बे सिर पैर की बाते। र० प्रि० ८-४४-३।

आँख—सं० स्त्री० एक०। नेत्र। रा० २५-३६-१। २८-१५-४। वि० गी० ६-१८। ६-२५। १७-७५। २८-१५।

आँखि—सं० स्त्री० बहु०। नेत्र, लोचन। र० प्रि०। १-२३-३। ५-१५-१। ७-३९-४। ९,११-४। ९-१६-३। १२-८-२। १२-२७-३। १३-१३-१।

क० प्रि०। ३-११-२। वि० गी०। १३-७६-२।

आँखिन—सं० स्त्री० वहु०। नेत्र। र० प्रि० २-८-३। ४-६-२। ४-१७-४। ६-५-४। १२-७-४। १४-६-४। क० प्रि०। १०-८-१। ११-८०-४। १३-२०-४।

आँखिन अछत अंध—विशेषण। विशेष्य—नारिकेर। आँखो के होते हुए भी अंधा, ज्ञानचक्षु से रहित, अज्ञानी। रा०। २८-१५-४।

आँखिनि—सं० स्त्री० वहु०। लोचन। र०प्रि० ६-२२-४। ७-१७-१। ७-२१-४। ६-१३-४। ११-१४-१। १२-२७-२।

आँखे—सं० स्त्री० वहु०। नेत्र। र० प्रि० १२-१२-२। १४-२६-२। क० प्रि० ६-१२-४।

आँगन—सं० पु०एक०। चौक; घर का आँगन। र० प्रि० ६-२३-४। १२-१२-४। क० प्रि० १०-१६-२। १०-३१-३। वि० गी० १४-३६-१। रा० २६-१४-१। २६-४१-१। ३०-२४-१। २६-४३-१।

आँगननि—(१) सं० पु० वहु०। घर; मकान। क० प्रि० १३-१०-४। (२) पुं० एक०। प्रत्येक घर। क० प्रि० १४-२३-३।

आँगि—सं० स्त्री० एक०। अँगिया, चोली। रा० ६-४४-१।

आँगिहु—(आँगि+हू) 'आँगि'। सं० स्त्री० एक०। चोली। क० प्रि० १३-१०-४।

आँगु—सं० पु० एक०। शरीर, वदन। र० प्रि० १-२५-४। क० प्रि० ४-६-१।

आँगुरी—सं० स्त्री० एक०। उँगली। रा० चं० २७-१३-३। ३०-८-१।

आँचरु—सं० पु० एक०। आँचल। र० प्रि० १४-११-८।

आँचल—सं० पु० एक०। ओढनी। र० प्रि० १४-१७-४।

आँजन—सं० पु० एक०। अजन; काजल। र० प्रि० १३-१३-१। क० प्रि० ६-१७-३।

आँजि—(१) सं० स्त्री० एक०। काजल। र० प्रि० १३-३-२। (२) क्रियापद। आँजकर, लगाकर। र० प्रि० ६-५५-४। २३-३-४।

आँजि माँजि कीनि है—सयुक्त किया। अँजन लगाकर, साफ सुथरी करके; शृंगार करके। र० प्रि० १३-३-४।

आँजे—(१) सं० पु० वहु०। आँखे। क० प्रि० ६-१७-३। (२) क्रियापद। आँजकर, लगाकर। र० प्रि० ४-५-३। क० प्रि० ६-१७-३।

आँज्यो—क्रियापद। आँजा; लगाया। र० प्रि० १३-२३-१।

आँते—सं० स्त्री० वहु०। अँतडियाँ। क० प्रि० ६-२५-१।

आँधी—सं० स्त्री० एक०। धूल भरी जोर की हवा; तूफान। र० प्रि० १३-२०-२।

आँसु—सं० पुं० एक०। (१) नेत्रजल, अश्रु। रा० १३-७८-१। (२) शत्रु। रा० १०-३१-१, १३-७७-२।

आँसुनि—सं० पुं० बहु०। आँसू; नेत्र-जल। र० प्रि० ६-४४-३। क० प्रि० १६-२६-२।

आँसू—सं० पुं० बहु०। अश्रु। र० प्रि० ६-१०-२। क० प्रि० ८-४३-१। वी० च० १७-७३। २३-६।

आ—सं० पुं० एक०। ब्रह्मा। क० प्रि० १६-१०-१।

आइ—क्रियापद। आया, आ गया है। र० प्रि० ४-८-२। ५-३०-२। ६-५-२। ६-२८-२। ६-५५-२। ७-६-३। रा० १२-५५-१। १२-६०-१। १३-३१-२। १४-१५-२। १४-१६-२। १५-१६-१। १५-१७-२। १५-३१-२। १७-७-२। १८-३-२। २०-१२-२। २१-५६-२। २६-१२-२। २६-२०-२। २६-३०-३। ३३-१५-२। ३३-३५-२। ३४-४८-२। ३६-२-४। ३८-२-२।

आइकै—सयुक्त क्रिया। आकर। रा० २७-२४-२।

आइ गए—सयुक्त क्रिया। आ गए। र० प्रि० ४-८-२।

आइ गयो—सयुक्त क्रिया। आ गया। रा० ३४-४८-१।

आइगो—क्रियापद। आए। रा० ३२-४३-२।

आइ तुलने—सयुक्त क्रिया। आ पहुँचे। रा० १५-१६-१।

आइ बुझाइ लई—संयुक्त क्रिया। आकर बुझा लिया। रा० १५-३१-२।

आइयत—क्रियापद। आया जाता। र० प्रि० १२-६-६।

आइयत है—सयुक्त क्रिया। आया जाता है। र० प्रि० ११-९-६।

आइये—क्रियापद। आया है। र० प्रि० १०-८-६।

आइयो अकुलाइ—सयुक्त क्रिया। अकुलाकर आया। रा० ३५-२५-४।

आइयौ—क्रियापद। आए, आया। र० प्रि० ७-७-२। रा० ३-१२-१। १२-१३-१। १२-१६-१। १२-५५-१। १४-२८-१। १६-३७-४। १८-४-२। १८-५-२। १८-३५-२। २१-३०-१। २१-४६-४। २४-२६-२। ३३-२६-२। ३५-२५-४।

आइहै—क्रियापद। आएगे। रा० २-२४-५।

आई—क्रियापद। आई। र० प्रि० ५-३२-२। ७-२८-१। रा० ३०-२-१।

आई—क्रियापद। आए, आकर; आई। र० प्रि० ३-५२-४। ३-६१-३। ५-१०-५। ७-२९-८। ७-३०-३। ७-३१-८। ८-५-३। ८-३९-८। ८-४४-६। ९-११-४। ९-१७-१। १०-१०-१। १०-१०-४। ११-१३-४। १२-९-४। १२-१४-६। १४-१६-१। १४-३५-४। १४-३९-२। रा० ३-५-३। ६-४-१। ६-५५-२। ९-२७-३। १०-१८-४। १०-२८-१। १०-३१-२। ११-३१-२। १२-२७-३। १३-१९-४। १३-२३-१।

१३-२७-१। १३-८२-२। १५-५-४। १५-३८-१। १५-३८-२। १५-३९-४। २१-२८-२। २२-५-२। २६-१-२। २६-२९-१। २७-१३-२। ३०-१४-२। ३०-४७-१। ३२-३३-१। ३५-२७-३। ३६-२६-१। ३५-१०-८।

आई चोराचोरि चाहि—सयुक्त क्रिया। छिपकर देखकर आती है। र० प्रि० १४-३५-४।

आई जानि—सयुक्त क्रिया। आया हुआ जानकर। रा० ३०-४७-१।

आई है—सयुक्त क्रिया। आ गई है। र० प्रि० ७-२९-८।

आई हौ—सयुक्त क्रिया। आई हो। र० प्रि० ५-१०-५।

आउ—(१) स० स्त्री० एक०। आयु। क० प्रि० १५-८५-२। (२) क्रियापद। आओ। रा० २५-२६-२। ३७-१६-१।

आउस—स० पु० एक०। ताशा। रा० ८-७-२।

आउँ—क्रियापद। आऊँगा। र० प्रि० ३-२३-४। रा० ३४-४-१।

आएँ—क्रियापद। आए। र० प्रि० १०-१५-४। ११-१४-१। १३-७-२।

आएँ मनावन—सयुक्त क्रिया। मनाने आए। र० प्रि० १०-१५-४।

आए—क्रियापद। आए, आया। र० प्रि० ३-२१-४। ३-६६-४। ४-१५-४। ५-२९-८। ५-३३-४। ६-२८-४। ७-८-८। ७-९-४। ७-१०-८। ७-२१-१। ७-३७-४। ८-३-७। ९-१४-१। १९-२९-४। क० प्रि० १-२३-१। १-२३-२। ४०-२०-८। रा० २-७-२। ३-२९-४। ३-३४-४। ४-१-२। ५-३८-३। ६-१०-१। ६-११-२। ७-४३-२। १२-४४-१। १२-५२-२। १२-५४-२। १३-१५-१। १३-४४-२। १४-२१-१। १५-२-२। १६-९-१। १४-२१-१। १५-२-२। १६-९-१। १७-१४-१। १७-१६-१। १७-५४-२। १८-२३-२। १८-३५-१। १९-१-२। १९-१६-१। २१-१४-२। २१-१३-२। २१-४०-२। २२-११-१। २२-१४-२। २२-१६-२। २३-३-२। २३-४-२। २३-४०-२। २५-१२-१। २७-२४-१। २९-२१-४। ३०-२४-१। ३०-२५। ३३-१-४। ३३-१०-२। ३३-२८-२। ३४-२-२। ३४-२९-२। ३४-३८-१। ३५-१२-१। ३५-१५-१। ३७-७-१। ३८-१-१। ३९-१६-१।

आए जानि—सयुक्त क्रिया। आया हुआ जानकर। रा० ३०-१४-१।

आए हैं—संयुक्त क्रिया। आया है। र० प्रि० ३-२१-४।

आए हौ—सयुक्त क्रिया। आए हो। रा० १४-३२-४।

आक—स० पु० एक०। सूर्य; मदार। क० प्रि० ६-२७-२।

आकर—स० पु० वहु०। घर। क० प्रि० १५-६२-१।

आकर्पन—स० पु० एक०। आकर्षण, खिचाव। वि० गी० ८-२७-२।

आकार—स० पुं० एक०। मन का भाव

बतानेवाली दैहिक चेष्टा। क० प्रि० ११-४५-२।

आकाश नदी—स० स्त्री० एक०। आकाशगगा। रा० १५-१६-१। १६-४०-२।

आकाशवाणी—स० स्त्री० एक०। आकाश मे से सुनाई पडनेवाली वाणी। भाग्य और उदय के सवाद मे सलाह देनेवाली दैवी शक्ति। जहाँ० २५।

आकास—स० पुं० एक०। आकाश; नभ। क० प्रि० ५-२०-१। ६-५-२। १०-२६-२। १५-६५-२। र० वा० १-५०-१।

आकाशगंगा—सं० स्त्री० एक०। मंदाकिनी, आकाश मे उत्तर से दक्षिण तक फैला हुआ छोटे छोटे तारो का समूह। रा० ६-३९-१।

आकास नदी—स० पु० एक०। आकाशगगा। रा० १५-२९-२। १६-४०-२।

आकास विलासी—विशेषण। विशेष्य—मंडप। बहुत ऊँचा और विस्तृत (आकाश को भी छूता हो—इतना ऊँचा एवं उसमे विलास जैसे करता हो—इतना विस्तृत)। रा० ९-६-२।

आकासा—स० पुं० एक०। आकाश। रा० चं० ७-४८-४। १३-६९-१। १४-३६-१। १५-१५-१।

आकासु—स० पु० एक०। आकाश; ब्रह्म। वि० गी० २१-१०-१।

आकृति—स० स्त्री० एक०। रूप, आकार। र० प्रि० ३-५९-२।

आक्षेप—सं० पुं० एक०। (१) आक्षेपालकार। एक अलंकार जिसमे विवक्षित वस्तु की कुछ विशेषता प्रतिपादित करने के लिये निषेध सा किया जाता है। क० प्रि० ९-१-२। (२) दे० "अधीरज"। क० प्रि० १०-९-२। (३) धैर्याक्षेप अलकार। दे० "धीरज"। क० प्रि० १०-११-२। (४) सशयाक्षेप अलकार। दे० "सशय"। क० प्रि० १०-१३-२। (५) आशिषाक्षेप अलकार। दे० "आसिष"। क० प्रि० १०-१७-२। उपायाक्षेप अलकार। दे० "उपाय"। क०प्रि० १०-२१-२।

आक्षेपन—स० पु० एक०। आक्षेपालंकार। दे० "आक्षेप"। क० प्रि० ९-१-२। १०-१-२।

आखडल—सं० पु० एक०। इद्र। जहाँ० १८६।

आखत पत्रा—विशेषण। विशेष्य—चित्र। लाल बेल बूटो से सजाई हुई। रा० २०-१०-१।

आखर—स० पु० बहु। अक्षर, वर्ण। क० प्रि० १३-३५-१। १४-४१-४। १६-१४-१। १६-६९-१। रा० ६-५६-१। २३-१२-३। २४-१२-३। वी० च० ३३-४८।

आखरनि—स० पु० बहु०। वचन। र० प्रि० १४-१४-२।

आखरहि-(आखर-हि)। स० पु० बहु०। अक्षर, वर्ण। क० प्रि० १३-३६-१।

आखेटक—स० पुं० एक० । शिकार । क० प्रि० ८-२-१ ।

आग—स० स्त्री० एक० । अग्नि । र० प्रि० ८-४-३ । क० प्रि० ६-३८-४ । वी० च० १३-७ । रा० ५-१७-३ । १४-५-१ । र० बा० १-१५-२ ।

आगम—स० पु० एक० । (१) शास्त्र । (२) भविष्य का ज्ञान । क० प्रि० ८-२०-२ । (३) आना, आगमन । रा० २६-२१-२ । ३२-१६-२ । (४) क्रियापद । आवै । रा० १४-३१-१ । २६-२१-२ ।

आगमन—स० पु० एक० । आना । रा० ११-१३-१ ।

आगरा—स० पु० एक० । मुगलो की राजधानी—आगरा । वी०च० ३-३६ । ५-४ । ६-५४ । ६-२१ । जहाँ० ४० ।

आगार—सं० पु० एक० । निधि या कोश । वी० च० १८-१८ । २०-१६ । २३-२६ । २७-२२ ।

आगि—स० स्त्री० एक० । अग्नि । र० प्रि० १-२५-४ । ५-३१-१ । ६-७-२ । ११-६-४ । १२-२५-३१ । १३-१६-३ । क० प्रि० ३-२५-२ । १६-३८-४ । रा० ७-२३-१ । १३-६५-२ । १३-६६-१ । १६-१३-१ । २८-१५-२ । ३७-२१-२ । छ० मा० १-५३-४ । १-७२-५ ।

आगी—क्रियापद । आई । रा० १३-६६-१ ।

अगु दिये—संयुक्त क्रिया । आगे किए हुए; मुखिया बनकर । रा० ६-११-१ ।

आचमन—सं० पुं० एक० । आचमन (पूजन आदि के पहले शुद्धि के लिये हथेली पर लेकर पीने का जल) । वी० च० ५-३० ।

आचार—स० पु० एक० । शास्त्रोक्त व्यवहार, चालचलन । क० प्रि० ८-६-१ । रा० २३-२२-१ । वी० च० ३१-४१ । ३१-४२ । ३३-८ । वि० गी० । ६-१२-१ । १२-५-१ ।

आछी—विशेषण । (१) विशेष्य—बात । अच्छी । र० प्रि० । १४-१४-२ । १३-१४-२ । क० प्रि० ११-३-२ । १५-४७-२ । शि० न० ४-४ । (२) विशेष्य—राजनीति । तुच्छ । वि० गी० १०-१४-४ ।

आछे—विशेषण । विशेष्य—बसन । उत्तम कोटि के; सुदर । क० प्रि० । ७-३-१ । ११-८३-२ । जहाँ० १२४-३ ।

आजम खाँ—स० पु० एक० । जहाँगीर के दरबार का एक सरदार । वी० च० ६-१७ । ६-१४ । जहाँ० । ६७ ।

आठ—विशेषण । विशेष्य—झूठ । सख्याविशेष । र० प्रि० ७-१-२ । ७-३४ २ । रा० २७-७-४ । छ० मा० १-१७-३ । र० बा० ३६-४ । वी० च० २-३६-२ । १६-१८-१ । वि० गी० १३-४३-२ ।

आठ लाख—विशेषण । विशेष्य—जोजन । सख्याविशेष । ८,००,००० । वि० गी० ४-२१-१ ।

आठहु—विशेषण । (१) विशेष्य—गाँठ । आठो । र० प्रि० २-१५-४ । (२)

विशेष्य—द्वार। आठो। रा० ३०-२३-२। वी० च० १६-१८-१। २१-३४-२।

आठहू—विशेषण। विशेष्य—अंग। आठो। वी० च०। ३२-१६-२।

आठो—विशेषण। विशेष्य—नाम। आठ। र० प्रि० ६-१०-२।

आठौ—विशेषण। विशेष्य—गाँठि। आठो। र० प्रि० २-१६-२।

आठौ—विशेषण। विशेष्य—दिसि। आठो। क० प्रि० १-३३-१। ३-२१-१। ३-३१-१। रा० ८-५-१। वी० च० २-३९-२। १६-१३-१। २७-२-१। ३३-४९-२। वि० गी० ८-५०-२।

आठ्यौ—विशेषण। विशेष्य—उदाहरण। आठ। क० प्रि० ३-३१-१।

आडि—सं० स्त्री० एक०। तिलक; टीका। र० प्रि० १५-५-२।

आतंक—सं० पुं० एक०। भय। रा० १८-२८-२।

आतताई—सं० पु० बहु०। छह प्रकार के आतताई—(१) आग लगानेवाला, (२) विष देनेवाला, (३) शस्त्रप्रहारी, (४) धनहर्ता, (५) क्षेत्रहर्ता, (६) स्त्री-हर्ता। क० प्रि० ११-१६-२।

आतपत्र—सं० पु० एक०। छाता, छतरी। क० प्रि० ६-६-२।

आतम—सं० स्त्री० एक०। आत्मा। वि० गी० १८-४०-२।

आतममृत—सं० पु० एक०। कामदेव। क० प्रि० ३-९-२।

आतमा—सं० पु० एक०। (१) ब्रह्मा। क० प्रि० ११-५-१। (२) आत्मा। वि० गी० २०-५९-१।

आतमाराम—सं० पुं० एक०। आत्माराम। वि० गी० १७-६३-१।

आतिथ्य—सं० पु० एक०। अतिथि-सत्कार; आवभगत। रा० २७-९-२। वी० च० ३२-१६।

आतुरी—सं० स्त्री० एक०। आतुरता; बेचैनी। र० प्रि० ३-७१-३। रा० २३-३५-२।

आत्मा—सं० पु० एक०। आत्मा। वी० च० २-२०। ३१-७७।

आदर—सं० पुं० एक०। संमान; प्रेम। र० प्रि० ३-५९-१। ८-५६-१। १४-१६-३। वि० गी० १४-१७-१।

आदर्श—सं० पु० एक०। दर्पण। वी० च० २०-१३। "दसत जनु आदर्श अमोल"।

आदि—सं० पु० एक०। (१) संभावना, सर्वप्रधान व्यक्ति (दशरथ)। रा० २-५-२। (२) आरंभ। छं० मा० १-१३-१। १-१५-१। १-१६-४। १-१९-१। रा० २५-१-१। वि० गी० ९-३१-१। १६-२३-२। (३) मूल कारण। रा० १३-१-१। २०-१६-३।

आदित्य—(१) सं० पु० बहु०। अदिति के बारह पुत्र—धाता, मित्र, अर्यमा, रुद्र, वरुण, सूर्य, भग, विवस्वान, पूषा, सविता, त्वष्टा और विष्णु। क० प्रि० ११-५६-१। रा० २७-३९-१। १७-४९-१। (२) सं० पुं० एक०। सूर्य। रा० १९-३-१।

आदिदेव—(१) सं० पु० एक०। परमेश्वर। वि० गी० २१-५५-१। (२) विशेषण। विशेष्य—राम। आदि ईश्वर। (कूर्मपुराण, अग्निपुराण आदि के मत से नारायण ही आदि ब्रह्म है जो निर्गुण और निरंजन होते हुए भी सृष्टि, स्थिति और लय करने के लिये तीन प्रकार के रूपो मे अवस्थित होते है। कूर्मपुराण और वराहपुराण मे लिखा है कि परब्रह्म को सृष्टि के विषय मे चिंता हुई। उन्होने सोचा कि जिस प्रकार यह महासृष्टि हुई है, उसी प्रकार उसका पालन भी मुझे करना पड़ेगा; किंतु अमूर्त अवस्था मे कर्म करना असभव है, अतएव अभी मैं एक ऐसी मूर्ति की सृष्टि करूँगा जो इस महासृष्टि का पालन कर सके। चिंता करते करते सत्य ध्यान से सहसा एक मूर्ति का आविर्भाव हुआ जिसमे त्रिभुवन समाहित थे। तब उस मूर्ति को सबोधित करके परब्रह्म ने कहा—हे आदि देव, ब्रह्मा एव अन्य सभी होनेवाले देवताओ के समस्त कार्य करना तुम्हारा ही कर्तव्य होगा)। रा० २०-५४-१।

आदिब्रह्म—विशेषण। विशेष्य—श्री रघुवीर। आदि ईश्वर। (कूर्मपुराण के मत से नारायण ही आदि ईश्वर हैं जो निर्गुण, निरंजन और एकमात्र होते हुए भी सृष्टि, स्थिति और लय करने के लिये विविध रूप धारण करते हैं। उसी नारायण के अंश हैं श्री राम)। वि० गी० ४-३९-१। ६-४६-१।

आदि मध्य अवसान एक—विशेषण। विशेष्य—राम। जो स्वयं कर्ता, भर्ता, हर्ता हो। (कूर्मपुराण मे लिखा है कि विष्णु का एक रजोगुणमय रूप है। उनका नाम है भगवान् चतुर्मुख। जगत् के सृष्टिकार्य मे जब वे प्रवृत्त होते है, तब वे स्वय विश्वात्मा रूप मे सत्वगुण का आश्रय लेकर सृष्टि की रक्षा करते है। पीछे तमोगुण का आश्रय लेकर रुद्ररूप मे पुन उस सृष्टि का सहार करते है। उक्त नारायण विष्णु के अवताररूप ही राम है।) रा० १३-३-१।

आदि लघु—सं० पु० एक०। एक मात्रावाला अक्षर लघु है। जिस गण मे आदि लघु होता है वह यगण है। क० प्रि० ३-१९-२।

आध—विशेषण। विशेष्य—कोस। आधा। वी० च० ८-५-१। १२-१।

आधार—सं० पु० एक०। आलबन। क० प्रि०। १५-९३-६। छं० मा०। १-२९-४। वि० गी० २१-११।

आधाररूप—सं० पु० एक०। आलंबन का स्वरूप। क० प्रि० १५-९३-६।

आधि—[सं आ √धा + कि]। सं० स्त्री० एक०। मानसिक पीडा। र० प्रि० ६-१४-२। क० प्रि० ६-३२-१। ६-३४-४। ६-७०-१। १५-९२-३। रा० २४-११-३। २४-१२-३। वि० गी० १-९-२। ५-२३-१। २०-४०-२। १३-५१-२।

आधिन—सं० स्त्री० बहु०। मानसिक

पीड़ाएँ। वि० गी० १४-२५-३। १५-२३-२।

आधौ—विशेषण। विशेष्य—पल। आधा। क० प्रि० १४-४३-४।

आनंद—[सं० आ√नन्द (समृद्धि)+घञ्]। (१) सं० पु० एक०। मोद, उल्लास, हर्ष, खुशी। र० प्रि० १-१-२। १-२२-२। ३-४०-१। ५-३४-२। ६-२३-३। ७-३१-१। १२-१५-२। १४-३८-१। क० प्रि० ६-१६-२। ८-१०-३। १४-३७-१। १४-४५-३। १५-१०-१। १५-२५-३। १५-५४-३। १५-६८-१। १६-४६-२। छं० मा० १-३४-३। १-७५-२। वि० गी० ६-११-३। ११-६-२। १६-६३-२। १७-४-४। १७-१०-४। १६-१७-१। (२) विशेषण। विशेष्य—मन। आनंद से प्रफुल्लित। रा० ११-१३-१।

आनंदकंद—(१) सं० पु० एक०। आनंद देनेवाला (श्रीकृष्ण या भगवान्)। र० प्रि० ३-५४-१। वी० च० १-२६। १-५३। छं० मा० १-३४-२। २-६-२। (२) विशेषण। विशेष्य—रघुनाथ। आनदरूपी जल देनेवाला बादल; आनंद की वर्षा करनेवाला, आनद पहुँचानेवाला। र० प्रि० १-१-२। ३-५४-१। ४-४-४। १४-३८-१। क० प्रि० २-८-१। २५-५३-१। रा० ६-६०-४। ३०-२०-२। वी० च० १-२६-२। १-५३-२। ५-७०-२। २५-८-२।

आनंदकारी—विशेषण। विशेष्य—नीर। आनद देनेवाला। क० प्रि० ३-२५-१।

आनंद के कंद—विशेषण। विशेष्य—कुमार। आनदवारि बरसानेवाले बादल। क० प्रि० ८-१०-३। १५-२५-३। १५-५४-३। १५-६८-१। रा० ५-३१-३।

आनंद को कंद—विशेषण। विशेष्य—सीताजू। आनददायक। क० प्रि० १४-३७-१। १४-४५-३। रा० ६-४२-१।

आनंद जुव्रत—विशेषण। विशेष्य—सरीर। आनद से प्रफुल्लित। रा० २२-२-२।

आनंद दानि—विशेषण। विशेष्य—मुद्रिका। आनद (आत्मानंद) देनेवाली। रा० १३-८०-२। वी० च० ६-४५-१।

आनंद नंदिनी—विशेषण। विशेष्य—सुख वदिनि की चाँदनी। आनद पहुँचानेवाली। वी० च० २३-३१-२।

आनंद निधान—विशेषण। विशेष्य—वीरसिंह। सदा आनदित रहनेवाला। वी० च० ३२-३५-२।

आनंदपुर—सं० पुं० एक०। आनदपुर (नगरविशेष)। छं० मा० १-७०-५।

आनंदपूर—विशेषण। विशेष्य—रस। आनद से पूर्ण। छं० मा० १-८०-५।

आनंद प्रकासी—विशेषण। विशेष्य—सब पुरवासी। आनद प्रकाशित करनेवाले, अत्यंत प्रसन्न। रा० ८-१६-१।

आनंदमय—विशेषण। विशेष्य—अंग

अग। आनद से प्रफुल्लित। रा० २६-२०-२। वि० गी० १६-१७ १। वी० च० १३ ८-६। २४-४-१। ३३-३३-१।

आनंद-नक्ति—स० स्त्री० एक०। आनदमयी लीला। क० प्रि० १५-६३-५।

आ —स० स्त्री० एक०। (१) कसम, शपथ। र० प्रि०२-१३-३। ५-२१-३। क० प्रि० ९-२८-३। ११-५४-१। (२) मर्यादा; इज्जत। क० प्रि० १-३२-१। छ० मा० १-३२-४।

आनन्द बनी—स० स्त्री० एक०। आनद प्रदान करनेवाली वाटिका। रा० ३२-१६-२।

आनन—[सं० आ√अन्+ल्युट्—अन]। सं० पु० एक०। मुख; चेहरा। र० प्रि० १-२२-१। ३-७०-४। ४८-२। ४-१३-४। ६-१-१। क० प्रि० ६-४-२। ८-४५-४। ११-५४-१। १२-२७-१। रा० १३-२२-२। २४-३-१। ३८-१८-४। वी० च० १-१८। २५-३। वि० गी० ११-१०-२१। जहाँ० १४-६-५।

आननु—सं० पुं० एक०। चेहरा। र० प्रि० ७-३३-४।

आनव—क्रियापद। आना। र० प्रि० ६-२९-४।

आनही—क्रियापद। आता है। रा० १६-१६-१।

आनि—सं० स्त्री० एक०। (१) ढग; पद्धति। क० प्रि० १५-३०-१। (२) कसम। र० प्रि० १४-३५-३। (३) क्रियापद। आकर। र० प्रि० २-८-३। २-१७-३। ३-२६-१। ३-५१-२। ४-१५। ५-३१-८। ५-३४-२। ६-४-२। ६-४५-२। ६-५६-३। ८-४-७। ८-५-२। ८-३६-३। ९-७-२। १०-१०-१। ११-१५-१। १२-११-३। १६-११-५। क० प्रि० ३-१७-१। रा० ४-२४-२। ५-१-१। ७-२७-१। १०-२६-२। १५-१-४। १५-५-२। १५-६-२। १५-२८-१। १६-४५-१। १६-४५-२। २०-१४-१। २० २६-४। २१-४३-४। २४-९-१। २६ २-१। २६-३-१। ३१-२४-२। ३३-६-२। ३३-३२-४। ३३-५३-४। ३४-२३-२। ३४-३३-२। ३४-३४-२। ३५-२१-२। ३६-५-२। ३६-१८-२। ३६-१९-१। ३७-१६-२। ३८-१५-१। वी० च० २१-१७-१।

आनि अरै—सयुक्त क्रिया। आकर अड गए। र० प्रि० २-१७-३।

आनिए—क्रियापद। आएगा। र० प्रि० २-८-४। ४-१८-२।

आनिकै—सयुक्त क्रिया। आकर। रा० २१-४७-३।

आनि ग्रसै—संयुक्त क्रिया। आकर पकडता है। रा० २४-९-१

आनि दती हो—सयुक्त क्रिया। आकर डटी हुई है। र० प्रि० १२-११-३।

आनि दीनी—सयुक्त क्रिया। आकर दिया। रा० २०-१४ १।

आनि धरै—सयुक्त क्रिया। लाकर दिए, आकर रखा। रा० १२-४५-१।

आनिबी—क्रियापद। आती है। र० प्रि० ५-१४-२।

आनिबो—क्रियापद। आना। र० प्रि० ३-५६-२।

आनिबो छाड़्यो—सयुक्त क्रिया। आना छोड दिया। र० प्रि० ३-५६-२।

आनि भई—सयुक्त क्रिया। आती भई, आ गई। र० प्रि० ८-५-२।

आनि भजो—सयुक्त क्रिया। शरण मे आ जाओ। रा० ३६-१६-१।

आनियै—क्रियापद। आएँगे। क० प्रि० १-३-४। रा० ४-१४-१। २२-२१-४।

आनियौ—क्रियापद। आई। रा० १३-६८-१। ३१-१-२। ३६-१-४।

आनि ह्वै—सयुक्त क्रिया। आकर। रा० ३४-३४-२।

आनी—क्रियापद। लाया; लगै, आकर। र० प्रि० ५-२७-६। रा० ४-७-२। ५-२७-२। १०-१-१। १०-३६-२। १६-३।

आनु—(१) स० स्त्री० एक०। शर्म; लिहाज। क० प्रि० १५-३५-१। (२) क्रियापद। लाना, स्मरण करना। रा० २५-३०-१।

आने—क्रियापद। आए, आता है। र० प्रि० ८-५१-२। रा० ३८-६-२।

आनै—क्रियापद। आना। र० प्रि० ११-३-१।

आनौ—क्रियापद। लाना; स्मरण करना। रा० १३-३५-२। २५-१६-२। ३७-११-२।

आन्यो है—सयुक्त क्रिया। आया है। र० प्रि० १४-२३-८।

आन्यौ—क्रियापद। आया। र० प्रि० १४ २३-८।

आप—(१) स० पु० एक०। जल। र० प्रि० ११-४-४। क० प्रि० ८-४१-३। रा० १-३६-१। (२) स० पु० सर्व० पु० बहु० (स० आत्मन्, प्रा० अप्पण, हिं० अप्पन) (अ) अपने आप, स्वय। उदा०—"तो तब अपने आपही बुधिबल होत बसीठ"। र० प्रि० ५-१३-२। ६-१७-३। १२-२६-३। क० प्रि० ६-६१-४। ११-७७-१। (आ) 'तुम' के स्थान मे आदरार्थक प्रयोग। उदा०—"आप मनावत प्रानप्रिय, मानिनि मानि निहारु।" क० प्रि० १५-१०३-१। (३) 'तुम' या 'वह' के स्थान मे आदरार्थक। उदा०—"सूर सौ माई कहा कहिये जनि पापी लै आप बराबर कीनो"। र० प्रि० ८-३१-४। (४) ईश्वर। "सबके जिय की बात तुम सब समुझत हो आप"। वी० च० २६-७-२। (५) परस्पर। उदा०—"आप मे सदा बढावै सनमान"। र० प्रि० १०-३०-२।

आपगा—स० स्त्री० एक०। नदी। क० प्रि० ६-६१-४।

आपद्—सं० पु० एक०। दुख। रा० २४-२७-१।

आपदा—स० स्त्री० एक०। आपत्ति। वि० गी० २१-६८-१।

आपनपो—स० पु० एक०। अहकार। रा० २-२१-२।

आपनिधि—सं० पु० एक०। समुद्र।

क० प्रि० ६-७-४। ६-६१-४। जहाँ० १३-४५।

आपनी—सर्व० स्त्री० एक० म० पु० (हिं० अपना)। अपनी; निज की। उदा०—"नाह के नेह के मामिले आपनी छाँह हू की परतीति न कीजै।" क० प्रि० १२-७-४। ८-१६-३। ११-७७-१। छं० मा० १-५९-४। वि० गी० ५-६-२। १३-४७-१।

आपने—सर्व० पुं० एक० म० पु०। (हिं० अपना)। अपने; अपने ही। उदा०—"ऐसी हैहै ईस पुनि आपने कटाक्ष मृग"। र० प्रि० ५-१६-१। ७-२८-२। ८-१८-३। ९-८-१। क० प्रि० ८-८-१। ८-२४-२। १०-१८-४। १२-२९-२। १३-२०-४। १४-४७-३। १५-१२०-१। रा० ५-२४-१। ७-२९-४। ११-१-२। १६-२८-२। १७-२५-३। १७-४८-२ २१-३-२। २५-८-१। ३३-३३-४। ३९-३९-१। वी० च० १०-५९-१। २५-८-१। ३१-१६-२। ३१-३०-१। वि० गी० ९-४८-१। १०-१४-१। १३-१८-१। १३-४४-२। १६-१०८-१। १६-१२६-२। १७-२६-३। १९-२३-१।

आपनै—सर्व० पु० एक० म० पु०। (हिं० अपना)। अपने; अपने ही। उदा०—"को यह निरखत आपनै पुलकित बाहु बिसाल"। रा० ३-१८-१। वी० च० ११-४९-१।

आपनो—सर्व० पु० एक० तीनो पुरुष। (हिं० अपना)। उदा०—"आपनो हाथ विलोकि विलोकि कही तब 'केसव' बुद्धि बिसेखी।" र० प्रि० ३-३१-२। ३-४९-२। १०-१०-४। ८-१६-२। १०-१३-२। १२-२६-३। १३-२७-३। क० प्रि० ६-२७-२। १२-२३-२। रा० ७-२३-१३। २१-४८-१। वी० च० १-२६-१। ५-७१-२। ६-३३-२। १३-१२-६। वि० गी० १७-४८-१। २१-७०-२। ९-४९-३।

आपपति—सं० पु० एक०। समुद्र। क० प्रि० ६-६७-१।

आपु—(१) सं० स्त्री० एक०। नदी। र० प्रि० ५-२०-४। (२) सर्व० पुं० एक० म० पु०। (हिं० आप)। आपको; स्वय को। उदा०—"केशव-राइ की सौ है ककै कछू एकनि आपु मे होइ परी।" र० प्रि० ३-३६-२। ३-७३-१। ५-५-२। ५-२०-४। ६-२०-४। १०-११-१। ११-१-२। क० प्रि० १-२८-२। ६-२१-१। १२-३०-२। रा० १५-२३-२। १७-११-१। २७-१९-२। छं० मा० १-२९-१। वी० च० ९-५१-२। १५-२६-२। १९-१४-१। वि० गी० ३-२५-३। १८-२१-१।

आपुनिधि—सं० पु० एक०। समुद्र। र० प्रि० ५-२०-४।

आपुहि—सर्व० पु० एक० म० पु०। स्वय। उदा०—"आवत देखि लिये उठि आगे ह्वै, आपुही 'केसव' आसन दीनो।" र० प्रि० ३-६०-१। ५-१६-२। रा० १७-२१-१। वि० गी० १८-२३-१। ९-४७-१।

आवास—सं० पुं० एक०। आवास; निवासस्थान। वी० च० १५-४। १५-११। २३-३१। २५-१४।

आवै—क्रियापद। आए। रा० १२-३६-१।

आभा भरे—विशेषण। विशेष्य—नैन। शोभा या कांति से युक्त। वी० च० १७-४६-१।

आम—सं० पुं० एक०। रसाल। र० प्रि० १४-२६-४। वी० च० २६-१०।

आमखास—सं० पुं० एक०। साधारण सभा। जहाँ० ५३।

आमनदास—सं० पुं० एक०। एक योद्धा। वी० च० १०-६। १३-१८।

आमिली [आम्लिका]—सं० स्त्री० एक०। इमली। र० प्रि० १२-२६-४।

आय—(१)—सं० पुं० एक०। लाभ। वि० गी० १७-४८-१। (२) क्रियापद। आया था; आकर। रा० ४-१६-२। ६-७-२। १४-३७-३।

आयजात—संयुक्त क्रिया। आ जाता है। रा० १४-३७-४।

आयसु [सं० आदेश]— सं० स्त्री० एक०। आज्ञा; आदेश। रा० २५-८-१। २६-२-१। ३४-३८-१। छं० मा०। १-२५-४। वि० गी० १०-२-२। ११-१५-१।

आयु—सं० स्त्री० एक०। जीवनकाल; उम्र, जिंदगी। र० प्रि० ३-३१-३। क० प्रि० ५-१३-२। ६-२२-१। रा० २४-१२-२।

आयै - क्रियापद। आए। रा० १-२५-१। १०-१६-१। ११-१५-२। १२-४१-३।

आयो डर प्रानन—संयुक्त क्रिया। प्राण का डर आया; डर गए। रा० १७-४२-१।

आयो है—संयुक्त क्रिया। आया है; आ गया है। र० प्रि० ५-६-४।

आयौ—क्रियापद। आया था; आया, आकर। र० प्रि० ५-६-४। ५-३०-२। रा० ७-६-२। १२-६५-२। १२-६७-४। १३-५६-१। १३-७२-१। १६-८-१। १७-१७-१। १७-३६-१। १७-४२-१। १६-६-२। १६-२२-१। १६-५२-२। २२-६-२। २५-१३-१। २६-१६-२। ३४-३-२। ३४-२१-१। ३४-२२-२। ३४-४८-२। ३४-४६-१। ३७-१४-२। ३७-१७-१। ३७-१७-२।

आरत [सं० आ √ऋ+क्त]—विशेषण। विशेष्य—शब्द। दुःखपूर्ण; करुणाजनक। रा० ४-३०-१। वि० गी० १५-६०-१।

आततताई—विशेषण। विशेष्य—पेट। दुःखदायी। वि० गी० ३-२८-२।

आरतवंत—विशेषण। विशेष्य—विभीषण। दुःखी। रा० १५-२६-१।

आरत शब्द—सं० पुं० एक०। आर्त पुकार। रा० ४-२६-२। ४-३०-१।

आरति—सं० स्त्री० एक०। (१) दुःख, करुणा। क० प्रि० ११-५७-४। रा० १२-५८-१। (२) पूजन अभिनंदन आदि में पूजित व्यक्ति के मुख के चतुर्दिक् कपूर का दीपक घुमाना। वी० च० ५-२७। २१-१६। जहाँ०। १६३।

आरन्य—[सं० अरण्य]। सं० पुं० एक०। आरण्य तीर्थ। वि० गी० १६-२६-१।

आरभटी—सं० स्त्री० एक०। एक वृत्ति जो रौद्र, भयानक और वीर रसो के वर्णन मे प्रयुक्त होती है। र० प्रि० ७५-१-१। क० प्रि० १५-३२-१।

आरस—सं० पुं० एक०। आलस्य; काम करने की अनिच्छा; सुस्ती। र० प्रि० ३-६६-३। ४-५-१। ४-६-२। ५ ६-१। ५-९-२। ५-११-१। क० प्रि० ८-१४-१। १४-११-१।

आरसनि—("सारस")। सं० पु० बहु०। कमलपुष्प। क० प्रि० १२-३२-३।

आरसि—सं० स्त्री० एक०। मुकुर। रा० १-४५-४। ६-४३-१। वी० च० १८-१९।

आरसी—[सं० आदर्श]। (१) सं० स्त्री० एक०। आईना; आईना जडा छल्ला जिसे स्त्रियाँ दाहिने हाथ के अँगूठे मे पहनती हैं। र० प्रि० ३-६६-३। ४-५-१। ४-६-२। ५-११-१। ९-१९-१। १३-४-४। १३-१७-३। क० प्रि० ६-४-२। ६-१७-१। ८-४०-१। ११-७१-१। १३-४१-२। १४-११-२। १५ ६०-१। वि० गी० ५-१०-२। १६-१०-१। (२) विशेषण। विशेष्य—कपोल। आईने के समान कांतियुक्त। रा० ६-४३-१।

आरसीयै—(आरसी+यै) — "आरसी"। सं० स्त्री० एक०। दर्पण। र० प्रि० १२-७-४।

आरा—सं० पु० एक०। ताक। रा० २९-२२-३।

आरूढ़ जोबना—(आरूढयौवना)। सं० स्त्री० एक०। मध्यमा नायिका का एक भेद। केशव ने इसे पूर्ण युवती तथा 'कंत' के मन को भानेवाली कहा है। यह अपने तारुण्य के प्रति पूर्ण सचेष्ट होती है। र० प्रि० ३-३२-१। ३-३३-१।

आलंबन—सं० पुं० एक०। आलबन विभाव, रसोत्पत्ति का आधार। र० प्रि० ६-४-२। ६-५-१। ६-६-६। ६-९-१।

आलनाथ—सं० पुं० एक०। नाम-विशेष। वि० गी० ६-१०-१।

आलबाला—सं० पु० एक०। माला। क० प्रि० ६-५८-२। ६-५९-१। वी० च० २३-५।

आलम—सं० पुं० एक०। दुनिया। वि० गी० ५-५७। ६-१०। ७-३१। ७-५०। ७-५१। ७-६१। २०-३४। जहाँ० ९१। १३९। १९६।

आलमपति—सं० पु० एक०। राजा। वी० च० ७-२६। जहाँ० १५७। १६८।

आलस—(१) सं० पु० एक०। (अ) प्रचलित तैंतीस मे से एक सचारी। भरत के अनुसार प्रकृति, काहिली, बीमारी, तृप्ति तथा गर्भ आदि के के कारण उत्पन्न भय है, जो अकर्मण्यता, बैठे या लेटे रहने, जँभाई लेने तथा सोने आदि के अनुभावो मे व्यक्त होता है। (साहित्यदर्पण, भाग १)। र० प्रि० ६-१२-१। रा० १३-३५-२।

२१-४-२। (आ) योद्धा का नाम। वि० गी० ६-३५-१। ६-५६-१। ६-६६-१। १२-१३-१। (२) विशेषण। विशेष्य—वास। आलस्य से युक्त, आलसी। वि० गी० ६-६६-१।

आलाप—सं० पुं० एक०। (१) कथन; बातचीत। र० प्रि० ६-७-१। ८-८-१। (२) राग के स्वररूप को शब्दगत करके गाने का ढगविशेष। रा० ३०-३-२।

आलि—[सं० = आ √अल् (पर्याप्ति) + इन्] स० स्त्री० एक०। सखी। र० प्रि० ८-३२-३।

आलिकै फेरे—संयुक्त क्रिया। आडकर चलाए। र० प्रि० १२-२-१।

आलिन—सं० स्त्री० बहु०। सखियाँ। र० प्रि० ५-१५-३। ८-३७-१।

आली—(१) सं० स्त्री० एक०। सहेली। र० प्रि० ६-३७-४। १२-८-१। क० प्रि० ६-१२-४। (२) स्त्री० बहु०। सहेलियाँ। र० प्रि० १२-१०-२।

आवई—कियापद। आएँ; आता है। र० प्रि० १०-२६-२। रा० १३-९५-१। १३-७७-१।

आवझ—[स० आवाद्य]। स०पु० एक०। एक बाजा। रा० १३-११-१।

आवत—[स० आगत]। क्रियापद। आता हुआ; आते हैं। र० प्रि० १-२३-१। २-१५-२। ५-१७-२। ६-२६-२। ६-२६-४। ६-३१-४। ६-४३-१। ६-४३-४। ७-६-३। ७-३३-३। १०-१६-४। रा० ६-२५-१। ७-१३-२। ८-४-२। १५-४-२। १५-१५-२। २१-३०-१। २५-१३-२। ३०-२०-८। ३२-७-२। ३८-२-१।

आवत आइ गए—सयुक्त क्रिया। पहुँचते ही आ गए। रा० ३८-२-१।

आवत जात—संयुक्त क्रिया। आता जाता; आते जाते। रा० ३४-१३-२।

आवत जाता—सयुक्त क्रिया। आते जाते है। रा० २-१-१।

आवत जानिकै सोइ रही—सयुक्त क्रिया। आते जानकर सोती रहीं। र० प्रि० ६-४३-१।

आवत भागे—संयुक्त क्रिया। आने पर भाग गए। रा० ३२-७-२।

आवत है—सयुक्त क्रिया। आता है। र० प्रि० २-१५-२।

आवति—क्रियापद। आती है। र० प्रि० २-५-२। ४-७-३। ८-४३-३। १०-५-१। रा० १४-२८-२। ३६-१८-१।

आवति जाति—सयुक्त क्रिया। आती जा रही है। र० प्रि० ७-३३-३।

आवतै—क्रियापद। आते है। रा० ३३-५०-१।

आवन [स० आगमन]—क्रियापद। आते हुए। रा० २५-१४-१।

आवर्त—स० पुं० एक०। वर्ण्यालंकार का एक भेद। जो चीजे वृत्ताकार मार्ग पर घूमकर पुन अपने स्थान पर आ जाती हैं, वे सभी "आवर्त वर्णन" के अतर्गत आती हैं। क० प्रि० ६-१-१। ६-६-१।

आवहि—क्रियापद। आओ। रा० १७-४७-२।

आवहिंगे—क्रियापद। आएँगे। र० प्रि० ७-६-३।

आवहु—क्रियापद। आता हुआ; आओ। र० प्रि० १-२७-३। ३-६१-२।

आवास—सं पु० एक०। घर। रा० ३२-३४-१।

आवेग—सं० पु० एक०। एक संचारी भाव। हर्ष या भय के अकस्मात् प्राप्त आधिक्य को आवेग कहते हैं। र० प्रि० ६-१३-१।

आवे—क्रियापद। आए। र० प्रि० ५-१५-४। रा० ११-२७-३। २२-१८-१। २४-१८-४।

आवै—क्रियायद। आता है। र० प्रि० २-४-३। ५-१५-३। ७-५-४। ७-१६-१। ८-५-३। ८-१६-४। ११-६-३। १२-६-३। १२-१३-४। १३-६-४। रा० ५-३६-४। १४-२७-१। २१-४-२। २४-११-२। २५-१२-१। २५-२४-२। २६-३-२। २७-२०-१।

आवैगी—क्रियापद। आएगी। र० प्रि० ११-१४-१।

आवो—क्रियापद। आओ। रा० ४-५-१।

आश्रमनि—सं० पु० बहु०। वर्णाश्रम। धर्मी द्विज के जीवन के चार विभाग या अवस्थाएँ—ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ, संन्यास। र० प्रि० १३-२१-२।

आषाढ़—सं० पु० एक०। आषाढ का महीना। क० प्रि० १०-२७-६।

आस—[सं० आ√अश् (व्याप्ति)+अच्]—स० स्त्री० एक०। आशा, कामना। र० प्रि० ७-१०-२। १०-४-१। ११-५-१। १३-२०-३। रा० २४-२५-२।

आसक्ति [स० आ√सज्+क्तिन]—स० स्त्री० एक०। अभिलाषा। वि० गी० ८-५-३। १३-५०-१। १४-१२-१।

आसन—[सं०√आस्+ल्युट्–अन]—स० पु० एक०। बैठक; वह चीज जिस-पर बैठा जाय। र० प्रि० १-२२-१। २-४-३। ३-६०-१। ३-५२-१। क० प्रि० ६-१-१। ६-६-१। मु०—"आसन कीनो"। योग के अनुसार शरीर को विशेष स्थिति मे रखना। र० प्रि० १-२२-४। रा० ३-३४-२। ४-२१-२। ६-६४-१। ७-४३-२। १०-१४-३। ११-११-१। १६-२५-२। २०-४०-२। २३-६-२। २६-२०-१। २६-४४-१। ३२-४८-२। ३३-२-२। वी० च० १-१२। ६-३२। १३-१२। १७-२। ३१-७५। छं० मा० १-६५-३। वि० गी० ३-१२-२। ६-१०-४। १३-५१-२। १६-४८-४।

आसनगत—क्रियापद। आसन पर बैठना। रा० १६-१-१।

आसन-मूल—स० पु० एक०। गुरु का आसन। वि० गी० ३-१५-२।

आसन रच्यो—(आसन रचना, बैठना)। बैठा। रा० २१-५३-१।

आसनु—सं० पु० एक०। सिंहासन। क० प्रि० १५-६०-३।

आसमुद्र की—विशेषण। विशेष्य—भूमि। समुद्र से वेष्ठित। रा० २१-३७-२।

आसमुद्र पृथ्वी को राई—विशेषण। विशेष्य—कुश। समुद्र पर्यंत भूमि का राजा। वी० च० २-२२-२।

आसर—[स० आ√शृ (हिंसा)+अच्]—स० पु० एक०। राक्षस। रा० ४-३०-१।

आसरन सरन—विशेषण। विशेष्य—गणेश। असहाय को भी आश्रय देनेवाला। र० प्रि० १-१-६।

आसव [सं० आ√सु+अण्]—स० पु० एक०। मदिरा। वी० च० २७-१४।

आसा—स० स्त्री० एक०। आशा, तृष्णा। र० प्रि० १०-८-३। वि० गी० ८-४१-२।

आसिविध दोधन की दरी—विशेषण। विशेष्य—पुरुषोत्तम की नारी। दोष रूपी सर्पो के लिये गुफा। रा० २३-३२-१।

आसिप— स० पु० एक०। (१) आशिपालकार। जहाँ माता, पिता, गुरु आदि पूज्य जनो से आशीर्वाद दिया जाता है, वहाँ आशिपालकार होता हे। क० प्रि० ९-१-२। ११-२४-२। (२) आशिपाक्षेप अलकार। अपना दुख छिपाकार कार्य के लिए अपनी प्रसन्नता प्रकट करना आशिपाक्षेर है। क० प्रि० १०-६-१। १०-१७-२। (३) आशीर्वाद। क० प्रि० १०-१७-१। ११-२५-३। रा० ५-१८-२। ५-२९-२। ७-१४-२। ७-१७-२। ८-१६-३। ११-१०-२। १२-५२-२। १२-५६-२। २१-३१-१। २७-८-३। ३०-२५-२। ३७-८-२। छ० मा० १-३८-४। १-४८-६। २-४९-६। वि०गी० ३-२०-२। ७-११-२। १३-७-९। १८-२६-२। १८-३७-१। १९-२९-१।

आसिपा—सं० स्त्री० एक०। आशीष, आशीर्वाद। क० प्रि० ८-२८-२। वि० गी० ९-१४-२।

आसीविप—सं० पु० एक०। साँप। क० प्रि० ६-६८-१। ११-६१-१।

आसुरी—स० स्त्री० एक०। आसुर स्त्री, दानवी। र० प्रि० ३-४-२। ४-११-२। क० प्रि० १-४७-१। रा० १३-५०-१। १८-२३-१। २९-२४-१।

आसेर [सं० आश्रय]—स०। एक स्थान का नाम। जहाँ० ९९।

आहि [स० अहह]—स० स्त्री० एक०। दुःख, पीडा प्रकट करनेवाली ध्वनि, ठढी साँस। क० प्रि० १५-९७-१।

आहुति—[स० आ√हु+क्तिन]—स० स्त्री० एक०। अग्नि मे डाली जानेवाली हवन सामग्री। रा० ६-९-२।

इ

इंगवै—[स० इग] स० पु० वहु०। सूकर-दंत; वीर। क० प्रि० ६-१०-४।

इंगित—[सं० √इग्+क्त] स० पुं० एक०। सकेत, मन का भाव वतानेवाली अगचेष्टा। र० प्रि० ८-५५-२। क० प्रि० ८-१५-२। ११-४५-२।

इक आसन वासी—विशेपरण। विशेष्य—सन्यासी; एक-स्थान-वासी। क० प्रि० १०-२७-३।

इकवीस—विशेपण। विशेष्य—ग्राम। इक्कीस। क० प्रि० २-२०-२।

इच्छ—स० स्त्री० एक०। इच्छा; चाह; कामना। रा० २५-१४-२। ३३-७-२। ३३-३६-२। वि० गी० १७-१९-५१।

इच्छ गजी—सं० स्त्री० एक०। इच्छा-रूपी हथिनी। वि० गी० २०-६३-४।

इच्छाजुत—विशेषरण। विशेष्य—वैराग। इच्छा, अभिलाषा से युक्त। वि० गी० १७-५९-१।

इच्छुका—सं० स्त्री० एक०। (इच्छा) नदीविशेष। वि० गी० ६-१७-१।

इच्छै—स० स्त्री० एक०। (इच्छा) कामना। वि० गी० १४-५६-१।

इठाई—स० स्त्री० एक०। मित्रता। र० प्रि० १४-३९-१। क० प्रि० ६-४९-१। क० प्रि० ६-४९-१।

इतै उतै—(हिं० इत उत) स्थानवाचक क्रियाविशेपरण। इधर उधर। उदा० इतै मुसकाइ उतै। र० प्रि० १४-१०-३।

इतैकै—सयुक्त क्रिया। इधर की ओर करके, अपनी ओर करके। र० प्रि० ६-४-३।

इन्दिरा—[स√इन्द्र+किरच्-टाप्] स० स्त्री० एक०। लक्ष्मी देवी। र० प्रि० ४-६-३। क० प्रि० १५-२५-२। १५-३०-४।

इन्दीवर—[स०√इद्+इनि-डीप-वर] सं० पु० एक०। नीलकमल। क० प्रि० १५-२५-२। वी० च० २८-७।

इन्दु—सं०√उन्द (आर्द्र करना)+उ] सं० पु० एक०। चंद्रमा। क० प्रि० ८-३१-३। १४-१५-२। रा० ३९-९-३। वी० च० ५-४५।

इन्दुमती—स० स्त्री० एक०। राजा अज की पत्नी, श्रीराम जी की पत्नी। क० प्रि० ६-४२-१। रा० ६-५९-१। वी० च० ३३-११।

इन्दुवधु—स० स्त्री० एक०। चद्रमा की पत्नी। क० प्रि० १५-३०-४।

इन्द्र—[सं०√इद्र+र] (१) स० पु० एक०। देवेंद्र, देवराज। देवताओं का राजा होने के कारण इंद्र को देवराज या सुरपति भी कहते हैं। वज्र धारण करने से वज्री या वज्रायुधी भी इनका नाम है। इनकी पत्नी शची और पुत्र जयंत हैं। इनका वाहन ऐरावत है और रथ के घोडे का नाम है उच्चैःश्रवा। इन्होने वृत्रासुर को मारा था और पर्वतो के पंख काट दिए थे, इससे इनका नाम वृलहा तथा पर्वतारि भी पडा। (वृहत् हिंदी कोश)। क० प्रि० १-४१-२। ३-५०-१। ६-५४-३। ६-७३-१। ७-१५-४। ८-८-२। ११-५६-३। ११-७९-४। १४-२५-४। (२) सं० पु० वहु०। देवेंद्र। क० प्रि० ८-८-२। रा० ६-३४-३। ६-३४-४। १६-२-२। १७-४९-३। १८-१४-१। १८-२०-२। १८-२५-२। १८-३५-२।

१९-३-३ । १९-३७-१ । २०-१२-१ । छ० मा० १-३१-५ । वी० च० २५-१६ । वि० गी० ६-३७-१ । ६-५३-२ । (३) अधिपति; राजा । रा० १८-२०-१ ।

इन्द्रगोप—सं० पु० एक० । वीरवहूटी । क० प्रि० ५-२८-१ ।

इन्द्र छाप—स० पुं०एक० । सप्तवर्ण इद्र-धनुप । वी० च० २५-१६ ।

इन्द्रजीत—स० पुं० एक० । (१) राजा इद्रजीत सिंह—मधुकरशाह के पुत्र तथा केशवदास के आश्रयदाता । र० प्रि० १-८-२ । क० प्रि० २-२०-१ । ४-२०-१ । ६-६४-२ । ७-१५-४ । ११-७९-४ । १३-३३-२ । १६-७२-१ । (२) इद्र को जीतनेवाला, रावण का पुत्र मेघनाद । रा० १३-९६-६ । १५-९-२ । १७-५-१ । १८-२९-१ । १८-३४-१ । १९-७-१ । २१-३९-२ ।

इन्द्रजीत जू—स० पु० एक० । (आदरार्थक) राजा इद्रजीत सिंह । क० प्रि० ११-२३-४ । १६-५७-४ ।

इन्द्र जू—स० पुं० एक० । (आदरार्थक) । दे० "इन्द्र" । र० प्रि० १४-१९-२ । क० प्रि० ८-३५-३ ।

इन्द्रजीत सिंह—स० पु० एक० । केशव के आश्रयदाता इन्द्रजीत सिंह जो रामशाह के भाई थे । वी० च० २-४४ । ३-२० । ३-२९ । ३-६४ । ४-२ । ४-२० । ४-२२ । ४-२८ । ५-१३ । ६-३२ । ६-५५ । ६-५८ । ७-३२ । ७-३३ । ७-३५ । ७-३६ । ७-४४ । ७-५३ । ८-२ । ८-१२ । ८-३७ । ९-२० । ९-२९ । ९-३७ । ९-४८ । १०-१४ । १०-२० । १०-२८ । १०-४९ । १२-३१ । १२-३४ । १२-३७ । १२-४० । २०-५० ।

इन्द्रतरुवर—स० पु० एक० । कल्पवृक्ष । क० प्रि० ११-७९-४ ।

इन्द्रवज्रा—स० पु० एक० । इद्रवज्रा नामक छदविशेष, एक वर्णवृत्त का नाम जिसमे दो तगण, एक जगण और दो गुरु होते हैं । छ० मा० १-४४८-२८ । १-२९-२ ।

इन्द्रलोक तिय—स० स्त्री० वहु० । इद्र-लोक की स्त्रियाँ, अप्सराएँ । रा० १३-१२-२ ।

इन्द्रवधु—सं० स्त्री० एक० । शची देवी । वी० च० ११-९ ।

इन्द्रिय—स० पु० वहु० । शरीर के ज्ञान और कर्म के साधनरूप अग—(१) ज्ञानेद्रिय—आँख, कान, नाक, जीभ, त्वचा । (२) कर्मेंद्रिय—हाथ, पाँव, वाक्, गुदा, उपस्थ । र० प्रि० ८-५२-२ । क० प्रि० ११-१२-१ । वी० च० २९-२१ । वि० गी० ९-२७-१ । १६-९८-१ । १८-२२-१ । २१-२७-२ ।

इन्द्रियगन—स० पु० वहु० । इद्रियों का समूह; शरीर के ज्ञान और कर्म के साधनरूप अग; वे अवयव जिनसे वहिर्जगत् का वोध होता है और और शारीरिक क्रियाएँ नपन्न होती है । ज्ञानेद्रिय—नाक, जीभ, आँख,

कान, त्वचा। कर्मेंद्रिय—हाथ, पाँव, गुदा, वाक् और उपस्थ। रा० १-२४-३। ६-१६-३।

इन्द्रिय-हरिनि—स० स्त्री० एक०। इद्रिय-रूपी मृगी। रा० २३-१६-२।

इभ—[स० √इ (गति)+भन्]। स० पु० एक०। हाथी। र० प्रि० ३-१२-२। १५-७-२। क० प्रि० ७-६-१। ७-१०-२। ८-२७-२। १५-२४-२। वी० च० ५-३६। १२-३३। २६-१५।

इभ-कुंभ—स० पुं० एक०। हाथी के मस्तक पर का ऊँचा गोला भाग। क० प्रि० १५-२४-२।

इभ-भेख—स० पु० एक०। हाथी का वेश। र० प्रि० ३-१२-२।

इलावृत्त—स० पु० एक०। खडविशेष; जवूद्वीप के नौ खंडो मे से एक। वि० गी० ४-३०-२।

इष्ट—[सं० √इष् (चाहना)+क्त]। (१) स० पुं० बहु०। मित्र। क० प्रि० ६-४८-२। (२) प्रिय व्यक्ति। क० प्रि० १२-२६-२। (३) पति। रा० १६-३२-१। वि० गी० १६-६-४। २०-४३-१। (४) विशेषण। विशेष्य—हरिमाया। प्रिय लगनेवाले। वि० गी० ११-३४-२। १६-२७-१।

इष्टै—विशेषण। विशेष्य—बात। प्रिय लगनेवाली। क० प्रि० ११-७५-१।

ई

ईंधन—स० पु० बहु०। जलाने की लकडियां। र० प्रि० १४-२२-४।

ईछन—[सं० √ईक्ष+ण्वल-अक]। स० पुं० एक०। (ईक्षण) आँख। छ० मा० १-७०-५।

ईठ—[स० इष्ट]। (१) स० पुं० एक०। मित्र; सखा। र० प्रि० ८-५-१। १-११-१। ६-११-१। १४-३५-४। क० प्रि० ५-३२-२। ६-२८-४। १०-२२-३। रा० ३६-२६-१। वि० गी० ११-६-२। (२) सं० पु० बहु०। मित्र। र० प्रि० ५-१३-१।

ईठनि—स० पु० बहु०। (१) मित्र। र० प्रि० १६-७-४। (२) प्रयत्न। र० प्रि० ८-५-१।

ईठी—स० स्त्री० एक०। मित्रता। र० प्रि०। ५-१४-४। १६-७-४।

ईति—[स० √इ(गति)+क्तिन्]। स० स्त्री० बहु०। खेती को नुकसान पहुँचानेवाले सात उपद्रव— (१) अतिवृष्ठि, (२) अनावृष्टि, (३) चूहो का लगना—मूपक। (४) शुकादि पक्षियो से हानि—शुक, (५) टिड्डियो का निकलना—शलभ, (६) प्रजा-विद्रोह—स्वचक्र, (७) विदेशी राजा का आक्रमण—परचक्र। क० प्रि०। ८-५-१। ११-१७-२। वि० गी० ६-२७-४।

ईती—स० स्त्री० एक०। अकाल। जहाँ० ३५।

ईरषा—सं० स्त्री० एक०। ईर्ष्या। वि० गी०। ८-१५-४।

ईश्वर—स० पुं० एक०। शिव जी। रा० २१-३२-२।

ईपुधि—[स० ईपु + धी] सं० पुं० एक०। तूणीर; तर्कस। रा० ३६-१२-२।

ईस—सं० पुं० एक०। ईश्वर। शिव। र० प्रि० ८-१८-३। क० प्रि० ४-१५-२। ६-६७-४। ६-७३-२। ७-२१-१। १३-२७-१। १५-११७-१। र० बा०। १-३०-४। १-३५-५। १-३५-६। छं० मा०। १-२१-३। १-३२-४। १-६९-२। १-७१-६। २-३९-४। २-४४-४। वि० गी०। १०-१७-१। १०-२०-४। ११-६-१। ११-३२। १३-३९-२। १५-३६-२। १५-३८-२। १५-४४-१। १६-५१-३। १७-४-३। १७-१२-१। १७-२२-१। १७-२९-४। २०-२६-१। २०-३१-१। २०-३२-२। वी० च०। १-३। ४-३१। ७-१४। ९-१५। १०-४७। २०-१०। २०-७०। २२-५९। (२)। स्वामी। वी० च० ३-६७। ५-६३। ५-९८। १९-२०। जहाँ० १६९। रा० १-४६-१। २-२९-३। ५-४३-३। ६-२६-२। ७-४२-२। १०-३७-१। १४-८-१। १४-१०-२। १४-४१-१। २०-२५-२। २४-१७-१३। ९-३२-१। ३०-२०-२। (३) ब्रह्मा। रा० ३-१५-२। ६-५१-४। ३६-३। (४) प्रभु (यहाँ राम)। रा० ३४-३६-२। (५) राजा। क० प्रि० १-३३-१। १४-४-१। १५-७३-३। १५-१२१। रा० २१-३९-१। ३४-१३-२। (६) बड़े लोग। रा० १८-३०-३। २१-२४-२। २१-२९-१। २३-८-३। २४-३०-१। (७) मालिक, स्वामी। रा० १६-९-४। (८) विष्णु। रा० १०-३७-१। (९) महादेव—नरसिंह के पक्ष मे; राजा—अमरसिंह के पक्ष मे। क० प्रि०। ११-३०-१।

ईसतत्व—सं० पु० एक०। ईश्वर के गूढ तत्व या रहस्य। वि० गी० ३-७-४।

ईसवर—सं० पुं० एक०। ईश्वर। वी० च० ११-४२। १२-७। १२-१८। जहाँ० १५।

ईस-सरीर—सं० पु० एक०। शिव की मूर्ति। क० प्रि० ७-२१-१।

इसु—सं० पु० एक०। (१) पति, भर्ता। क० प्रि० १५-७३-३। (२) ईश्वर। वि० गी० १७-३१-२।

ईसुररावत—सं० पुं० एक०। ईश्वर रावत। वीरसिंह का एक दरबारी। वी० च० ३३-२३।

उ

उंदुर—[सं०√उन्द् (भीगना) + अ]। सं० पु० एक०। चूहा। रा० २४-१६-२। छ० मा० १-१८-४।

उक्ति—सं० स्त्री० एक०। (१) कवित्वमय वचन। क० प्रि० ६-४७-२। (२) वचन। क० प्रि०। ६-७२-१। ८-१६-३। (३) एक अलंकार जहाँ अपना मर्म छिपाने के लिये किसी क्रिया या उपाय द्वारा दूसरे को धोखा दिया जाय। क० प्रि०। ९-३-२। १२-१-२। १२-२-२। (४) व्यधिकरण उक्ति—और का गुण या दोप किसी और मे प्रकट करना व्यधिकरणोक्ति है। क० प्रि० १२-८-२। (५) विशेपोक्ति। पुष्ट

कारण रहते हुए भी कार्य सिद्ध न हो तो विशेपोक्ति होती है। क० प्रि० १२-१४-२।

उक्ति—स० स्त्री० एक०। कथन। वि० गी० ६-१३-३।

उखारि—[स० उत्खनन] क्रियापद। उखाडकर। रा० १६-३३-३। ३५-२७-३।

उखारि लिये—संयुक्त क्रिया। उखाड दिए। रा० ३५-२७-३।

उखारिहौं—संयुक्त क्रिया। उखाड दूँगा, उलट दूँगा। रा० १६-३३-३।

उगारनि—सं० पु० बहु०। उगली हुई वस्तुएँ। वि० गी० ८-४३-२।

उगिलै—[सं० उद्गीर्ण] क्रियापद। उगल रहे है। रा० १३-१३-२।

उग्र—विशेपण। विशेष्य—सरीर। प्रचंड; कोपयुक्त। र० प्रि० १४-२१-१।

उग्रसेन—सं० पु० एक०। इंद्रजीत सिंह का पुत्र। वी० च० २-४६। ८-१३। ८-३७। ६-४८। १०-५७। २६-११।

उघरि उघरि जात—[स० उद्घाटन] संयुक्त क्रिया। खुल खुल जाता है। र० प्रि० ५-९-६।

उघारत—क्रियापद। खोलता है; खोलने का प्रयत्न करता है। र० प्रि० ११-१६-७।

उघारिएँ—क्रियापद। खुल जाना; उघड जाना। क० प्रि० ४-६-२।

उघारिकै—संयुक्त क्रिया। उघाडकर, नगा करके। र० प्रि० ६-२७-३।

उचकि [म० उच्च+क]—क्रियापद। उचकती हुई; उचककर। रा० १४-३७-२। १४-३८-३।

उचकि चलत—संयुक्त क्रिया। उछलती हुई चलती। रा० १४-३७-१। १४-३८-३।

उचटैं—क्रियापद। उछलते हैं। रा० १४-११-२।

उचाटन—(उच्चाटन)। सं० पु० एक०। पट्कर्मांतर्गत अभिचारविशेष; एक जादू। इस कार्य की देवता दुर्गा और तिथि कृष्णाष्टमी तथा चतुर्दशी है। शनिवार को साधु के बालो मे पिरोई हुई घोडे के दाँतो की माला से जप करते है। (हिंदी विश्वकोश)। र० प्रि० ४-१८-४।

उचाट-मंत्र—सं० पुं० एक०। देखिए "उचाटन"। र० प्रि० ४-१८-४।

उचारै—क्रियापद। उच्चारण किया, कहने लगी; बोली। र० प्रि० ६-५३-१।

उच्च—विशेपण। विशेष्य—अगारनि। ऊँचे। रा० १५-२६-१। शि० २६-२। वी० च० १-१७-४। जहाँ० १८-२। वि० गी० ११-५-२।

उच्च उदित—विशेपण। विशेष्य—लोभ। ऊँची गति से जिसका उदय हो। वी० च० १-१७-४।

उचरत—क्रियापद। उच्चारण करते हैं। रा० ६-८-६।

उचरी—क्रियापद। उच्चारण किया। रा० १६-३०-२।

उचसखो ह्वै—संयुक्त क्रिया। ऊँचे होकर चलने से। रा० १४-११-१।

उचारकारि—क्रियापद। उच्चारण कार्य करती है; उच्चारण करती है। रा० १३-८१-२।

उच्छेद्—सं० पुं० एक०। उन्मूलन। वि० गी० २-१८-२।

उछलै—क्रियापद। उछलता है। रा० १५-२६-१।

उछाह्—सं० पु० एक०। उत्साह, हर्ष। र० प्रि० ६-६-१। क० प्रि० १०-५-१। रा० ६-३०-१। २६-१५-१। वि० गी० ५-२०-१।

उजवक—सं० पु० एक०। मूर्ख। "उजवक अकुलाइ उठत"। जहाँ० ५६।

उजागर—[स० उत्+जागृ] विशेषण। विशेष्य—इद्रजित। कीर्तिवान्। क० प्रि० ४-२०-१।

उजागरो—विशेषण। विशेष्य—वानी। अधिक स्पष्ट। क० प्रि० ६-४४-२।

उजियारो—सं० पुं० एक०। प्रकाश, उजियाला। र० प्रि० १४-६-३। क० प्रि० १३-२०-३।

उज्जल—[स० उद् (ऊपर)+जल] विशेषण। विशेष्य—नीर। सफेद एव चमकदार। रा० १-२५-१। २०-४७-३। ३। २३-१८-२। वी० च० ५-३८-१। ६-२८-१। ११-२-१। १४-२६-२। १६-२०-२। १७-२४-२। २२-५१-२। २२-८२-२। २३-८-२। २३-३१-२। ३३-४-१। वि० गी० ३-३-२।

उज्जैनि—स० स्त्री० एक०। मालव देश की प्राचीन राजधानी। वि० गी० ६-११-१।

उझकै—क्रियापद। झाँकते हुए। र० प्रि० ८-३६-६।

उझकै अनबोले—संयुक्त क्रिया। न बोलने पर लालायित रहते है। र० प्रि० ६-४१-३।

उझकौ—क्रियापद। लालियत होते है। र० प्रि० ६-४१-३।

उठत—[स० उत्+स्था]। क्रियापद। उठता है। रा० २६-२५-२। २६-२६-२।

उठाइ मिली—सयुक्त क्रिया। उठवा मँगाया। र० प्रि० ६-१६-२।

उठाई—क्रियापद। उठाया; उठाकर। र० प्रि० ३-२५-३। ६-२६-२। १०-१६-३। रा० ४-२३-३। ४-२७-२। १०-२६-१। १३-६५-४।

उठाउ—क्रियापद। उठाओ। रा० ७-२३-२।

उठाय—क्रियापद। उठाकर। र० प्रि० १४-३६-४।

उठायौ—क्रियापद। उठाए। रा० ३-३४-३। ५-३५-२। १६-२६-१।

उठावही—क्रियापद। उठाएगा। रा० १६-२६-१।

उठावे—क्रियापद। उठाते। रा० ३४-२०-१। र० प्रि० १३-११-७।

उठि—क्रियापद। उठकर; उठे; उठो। र० प्रि० १-२७-३। ३-६०-१। ४-

१३-१। ५-२८-४। ५-२८-६। ६-२६-३। ६-३१-४। ६-५२-१। ७-३०-३। ८-४०-१। १०-२५-५। ११-९-५। १२-७-१। १३-८-४। १३-११-७। १५-१४-१। १४-१४-१। १४-१६-३। १४-३१-६। क० प्रि० ३-३४-३। रा० २-८-१। २-२७-२। ३-३५-२। ९-५-२। ९-२१-१। १०-१५-२। १०-१६-१। १०-२८-२। १०-३३-२। १२-६-२। १२-५९-२। १३-१५-२। १३-६३-१। १४-३५-१। १५-१३-१। १५-१४-१। २१-३४-२। २८-१०-२। ३०-२७-२। ३३-२-१। ३४-२-२। ३५-३०-२। वी० च० ३-३४-२। वि० गी० ९-१५-१। ९-१५-२।

उठिकै—सयुक्त क्रिया। उठकर। रा० १०-२८-३।

उठि खाति—सयुक्त क्रिया। उठकर खाना। (यहाँ शपथ करके उसको न निभाना)। र० प्रि० १४-३१-६।

उठि गए—सयुक्त क्रिया। उठकर चले गए। रा० २-२७-२।

उठि चलि—सयुक्त क्रिया। उठकर चली गई। र० प्रि० ११-९-५।

उठि चलौ—संयुक्त क्रिया। उठकर चलो। र० प्रि० १०-२५-५।

उठि जरि—संयुक्त क्रिया। जल उठी। र० प्रि० ८-३७-३।

उठि जान—संयुक्त क्रिया। उठकर जाने। र० प्रि० १२-१७-१।

उठि देखि—संयुक्त क्रिया। उठकर देखा। र० प्रि० ६-२६-३।

उठि दौरि—संयुक्त क्रिया। उठकर दौड़ी। र० प्रि० ४-१३-१।

उठि धाए—संयुक्त क्रिया। उठ दौड़े। रा० १३-१५-२।

उठी—क्रियापद। उठी। र० प्रि० ४-१३-४। ५-२८-६। ६-४३-३। ८-३७-३। ११-१०-१। १६-७-८। क० प्रि० ५-३५-१। रा० ३३-५४-१। ३५-९-१। ३९-११-१। वि० गी० १३-४५-२।

उठे—क्रियापद। उठता है। र० प्रि० ३-७१-३। ५-२८-५। ५-३७-३। ६-२८-७। क० प्रि० ५-१३-२। रा० ५-१७-४। ७-२२-३। १२-६०-१। १९-१५-१। १९-१६-१। २४-१२-१। ३५-१४-२। ३५-२१-२। जहाँ० १३८-२। १८२-१।

उठौ—क्रियापद। उठो। रा० १०-४२-१। १७-१६-२।

उठ्यो—क्रियापद। उठकर; उठा। रा० २-९-१। २८-२४-१। १९-३३-२। ३६-१६-२।

उठ्यो रिसाइकै—सयुक्तक्रिया। क्रुद्ध हो उठे। रा० ३६-१६-२।

उडगन—स० पुं० बहु०। नक्षत्र। क० प्रि० १५-७३-३। वी० च० ७-१०४। २३-७।

उडगनु-ईसु—स० पुं० एक०। नक्षत्रों का पति—चंद्रमा। क० प्रि० १५-७३-३।

उडत—क्रियापद। उड रहे हैं, उडता था। रा० १-३१-२। ४-२३-२।

उडभार—सं० पुं० एक०। ताराओ की पक्ति। क० प्रि० ५-७-२।

उड़ाइके—सयुक्त क्रिया। उड़ाकर। रा० ७-१२-२।

उड़ाइ चली—संयुक्त क्रिया। रा० २६-३१-२।

उड़ाई—क्रियापद। उड़ाना; उडकर। र० प्रि० १३-१८-५। रा० ७-१२-२। ६-३१-४। २६-३१-२।

उड़ात—क्रियापद। उडाती है; उड़ा जा रहा है। र० प्रि० ५-६-५।

उड़ायौ—क्रियापद। उडा दिया। रा० ३६-१३-१। ३६-१४-२। ३८-१२-२।

उड़ालना—स० पुं० एक०। काति। रा० ३२-१७-१।

उड़ावत—क्रियापद। उडा रहे हैं, आकपित कर रहे हैं। रा० १-३१-२।

उड़ि—क्रियायद। उडकर। र० प्रि० ८-४७-२। ११-२०-२। क० प्रि० ४-६-२। रा० १०-१६-१। १५-४०-४। १६-२-१। ३०-२६-२। ३१-४०-१। ३२-१०-१। ३२-३६-१।

उड़ि चड़ि—सयुक्त क्रिया। उड उडकर। रा० ३१-४०-१।

उड़िकै—संयुक्त क्रिया। उडकर। रा० १०-१६-१। १५-४०-४।

उड़ि जैये—सयुक्त क्रिया। उड जाना। र० प्रि० ८-४७-२।

उड़ी—क्रियापद। उड़ गई। रा० १६-४८-४।

उडु—स० पु० एक०। नक्षत्र, तारा। क० प्रि० १५-६१-१। रा० ३०-२०-१।

उडुप—स० पुं० एक०। (उडुपानि) ऊपर को दोनो हाथ उठाकर हाथो से अनेक आकृतियाँ बनाता हुआ ताल से घूमना। इस नृत्य के १२ भेद हैं, जो हाथो के संचालनो और आकृतियो पर निर्भर हैं। (केशव कौमुदी, उत्तरार्ध)। रा० ३०-५-३।

उडुपति—स० पु० एक०। चद्र। वी० च० २३-७।

उड़े—क्रियापद। उडने लगे। रा० १८-२१-१। ३२-७-१। ३०-३४-१।

उड़ौ—क्रियापद। उडा; शीघ्रता से चला। रा० १६-३४-१।

उड्यौ—क्रियापद। उड़ गया। रा० १८-१७-२।

उड़ौनी—स० स्त्री० एक०। ओढनी। र० प्रि० ६-४६-४। क० प्रि० ६-१०-३।

उतरि—क्रियापद। उतरकर। रा० १३-७२-१।

उतरि आयो—सयुक्तक्रिया। उतरकर आया। रा० १३-७२-१।

उतरे—क्रियापद। उतर पड़े। रा० २१-५२-१।

उतसव—स० पु० एक०। उत्सव। वी० च० १८-३१।

उतार—स० पु० एक०। ढाल। रा० २६-१३-३।

उतार धरे अरिकै—सयुक्त क्रिया। हठ करके उतार दिया। र० प्रि० ६-४७-२।

उतारि—क्रियापद। उतारकर। र० प्रि० १३-४-४। १४-२७-३। रा० २१-५७-२। २६-१३-३। २६-२३-४। ३१-१७-१।

उतारिवे—कियापद। उतारने को। रा० १४-३८-१।

उतारियै—क्रियापद। उतार दो। क० प्रि० ४-६-५।

उतारै—क्रियापद। उतारते है। रा० ८-२६-२। ७-५४-३। ६-४६-२। ६-४७-२।

उताह्यौ—क्रियापद। पार कराया; उस पार तक पहुँचाया। रा० ३-१०-३।

उत्कंठा [स उद√कण्ठ (अत्यत चाह)+अ—टाप्]—स० स्त्री० एक०। एक व्यभिचारी भाव। विलब न सहनेवाली इच्छा। र० प्रि० ६-१३-१।

उत्कंठा सहित—विशेषण। विशेष्य—जडता। उत्सुकता से युक्त। र० प्रि० ६-१३-२।

उत्कहिं—(उत्क+हि)—'उत्क'। स० स्त्री० एक०। उत्कठिता नायिका। संकेत स्थल पर प्रिय के न मिलने से चिंता करनेवाली नायिका। क० प्रि० ७-२-१।

उत्का—स० स्त्री० एक०। दे० 'उत्कहिं' र० प्रि० ७-७-२।

उत्तम—(१) स० पु० एक०। कवि कोटि का पहला भेद। हरि का यशोगान करनेवाले कवि इसके अंतर्गत आते है। क० प्रि० ४-२-१। ४-३-१। (२) स० स्त्री० एक०। उत्तमा नायिका—वह नायिका जो प्रतिकूल पति के साथ भी अनुकूल आचरण करे। र० प्रि० ७-३५-१। (३) विशेषण। विशेष्य—बर्न। श्रेष्ठ। क० प्रि० २-२-२। ४-२-१। ४-३-१। ११-२६-१। ११-२७-२। १४-७-१। रा० ५-२०-२। २१-२-२। २१-६-२। ३६-१७-२। ३६-२५-४। २६-१५-२। ३६-२४-२। वी० च० १४-६१-१। १७-४६-१। १७-५४-२। २७-१०-४। २८-२६-१। २८-२६-२। ३२-२-१। ३२-३-२। ३२-६-१। १५-२०-२। १५-२१-१। १५-२७-१। १६-२६-३। २०-१-१। जहाँ० १७-३-२। १७-४-१।

उत्तम गात—विशेषण। विशेष्य—पुत्र। सर्वप्रशंसित। रा० ३६-१५-२।

उत्तम गाथ—विशेषण। विशेष्य—धनु। सर्वप्रशंसित। रा० ५-४२-१। ३६-१७ २। जहाँ० १७३-२। वि० गी० १६-२२-२। १६-५६-१।

उत्तम वेस—विशेषण। विशेष्य—देस। सुदर। रा० ३६-२४-२।

उत्तर—(१) स० पु० एक०। जवाब। क० प्रि० १६-४३-१। १६-४६-१। १६-५०-१। १६-५१-१। १६-५२-६। १६-६३-१। १६-६४-६। १६-६५-१। रा० १०-२६-१। १६-१६-२। २३-२१-१। ३३-१७-२। ३३-४५-२।

३३-५१-२। वी० च० ४-३१। ४-३२। ७-५६। १३-१। १४-३७। १६ वि० गी० ११-१७-२। १४-३५-१। १७-१७-२। १७-३०। (२) दिशा (दक्षिण के सामनेवाली दिशा)। रा० १७-२-२। १७-१३-३। वी० च० १५-२४।

उत्तर खण्ड—सं० पुं० एक०। भारतवर्ष का हिमालय के पास का उत्तरी भाग। वि० गी० ४-३७-२।

उत्तरु आवै—संयुक्त क्रिया। उसे क्या उत्तर देगी? उत्तर आएगा? र० प्रि० ७-५-४।

उत्तिम—विशेषण। विशेष्य—लोड। उत्तम, श्रेष्ठ। वी० च० १-१७-४। ११-५०-२।

उत्पत्ति—सं० स्त्री० एक०। आविर्भाव। रा० २५-१५-२।

उत्पलावती—स० स्त्री० एक०। नदी विशेष। वि० गी० ६-१७-१।

उत्प्रेक्षा—स० स्त्री० एक०। अर्थालंकार का एक भेद जिसमे प्रस्तुत वस्तु मे सादृश्य के कारण अन्य वस्तु की कल्पना की जाती है। क० प्रि० ९-१-२। ९-३०-२।

उत्प्रेक्षित—सं० स्त्री० एक०। उत्प्रेक्षितोपमा—उपमेय के जिस गुण का वर्णन करना हो, वह गुण अनेक मे पाया जाय, तो उत्प्रेक्षोत्पमा होता है। क० प्रि० १४-३-१।

उत्प्रेक्षित उपमा—(उत्प्रेक्षितोपमा) सं० स्त्री० एक०। दे० "उत्प्रेक्षित"। क० प्रि० १४-२८-२।

उत्साहमय—विशेषण। विशेष्य—वीर। उत्साह से युक्त। र० प्रि०१४-२४-१।

उदक—सं० पुं०। पानी। वी० च० १-१। २४-१५।

उदति—क्रियापद। उदित होता है। र० प्रि० १४-१-१।

उदधि—स० पु० एक०। समुद्र। रा० १३-४०-१। वी० च० २६-३७।

उदधिजात—स० पु० एक०। चद्रमा। पुराणो मे उल्लेख मिलता है कि जब देवराज इद्र महामुनि दुर्वासा के शाप से श्रीभ्रष्ट हो गए तब विष्णु के आदेश से देवताओ ने समुद्रमथन किया। तब क्रमशः चद्र, लक्ष्मी, सुरा, उच्चैश्रवा, कौस्तुभ, पारिजात वृक्ष, सुरभि गौ, हाथ मे अमृत लिए धन्वतरि, अत मे विष उत्पन्न हुए। समुद्र से निकलने के कारण चद्रमा का नाम उदधिजात पडा। (हिंदी विश्वकोश, भाग ३)। र० प्रि० ७-२४-१।

उदय—सं० पु०। कर्तृत्वजन्य अभ्युदय। क० प्रि० ५-११-३। जहाँ० ९। ११। १२। २५। ५६। १२५। १७४। १७५। १७७। १८३।

उदयाचल—स० पु० एक०। पूर्व का एक कल्पित पर्वत जिसके पीछे से सूर्य का उदय होता है। रा० ३०-३६-३। ३२-२२-१। वी० च० १७-१६। २२-३१। २४-२।

उद्याद्रि—स० पु० एक०। उदयाचल पर्वत। रा० १४-३६-२।

उदर—सं० पु० एक०। पेट। र० प्रि० ३-३४-३। रा० १३-३६-२। क० प्रि० ६-२२-४। १०-२६-४। १५-२१-१। १५-२३-३। वी० च० १-२। २१-२। २५-१६।

उदार—[स० उद+आ√रा (देना)+क] (१) स० पु० एक०। दयालु, उदार। वी० च० २-३। २१-२। २१-१६। २१-१८। (२) विशेषण। विशेष्य—मति। महान् या बडी। र० प्रि० १४-१६-१। १४-२४-२। रा० १-२-१। १-५१-१। ७-१८-१। २०-४४-१। २०-४८-१। २०-५०-१। २०-५४-२। २२-१२-१। २२-१४-१। २५-२५-१। २६-५-१। २६-२३-१। ३१-१-३। ३१-३३-३। छं० मा० १-७५-५। र० बा० ६-४। वी० च० २-३-१। ५-४३-२। ८-२३-१। ८-४४-२। ११-२०-१। १३-११-४। १७-६-२। १७-४१-२। १७-५२-२। १६-१०-१। २०-७-१। २१-२-१। २१-१६-१। २१-१८-२। २२-७६-२। २२-८३-१। २७-३१-१। २८-१-२। ३१-६४-१। जहाँ० ५-३। १२५-१। १-६-२। वि० गी० ३-१०-१। १६-४८-३। १४-३३-१। १५-७६-२। १५-८६-२।

उदारिहौ—सयुक्तक्रिया। फाड डालोगे। र० प्रि० १४-२६-१।

उदास—[स० उद√आस्+अच्] (१) स० पु० एक०। दु.ख। वि० गी० १३-२५-२। १४-७-३। १६-७६-२। (२) विशेषण। विशेष्य—कर। उदास भाव रखनेवाले। क० प्रि० १०-२०-२। १०-२६-६। रा० ३०-४६-१। वि० गी० १३-२५-१। १६-७६-२।

उदासीन—[स० उद्√आस्+शानच्] स० पु० एक०। विरागी। वि० गी० १६-१६-१। (२) विशेषण। विशेष्य—चित्त। दुःखी। वी० च० २७-३०-२।

उदासीनमय—विशेषण। विशेष्य—प्रियतमा। दुःखी। वि० गी० १६-१६-१।

उदाहरण—[स० उ+आ√हृ+ल्युट—अन] स० पु० एक०। मिसाल; दृष्टांत। क० प्रि० ३-३१-१। ४-८-१।

उदित—[स० उद √इ (गति)+क्त] (१) विशेषण। विशेष्य—गजराज। सुदर। क० प्रि० ८-२८-४। (२) क्रियापद। उठता हुआ। क० प्रि० ६-१४-२। रा० १३-४०-१। ३०-१८-५। ३०-१६-३।

उदित अति—विशेषण। विशेष्य—गजराज। अत्यत सुदर। क० प्रि० ८-२८-४।

उदित भई—सयुक्त क्रिया। उदित हुई। रा० ३०-१६-६।

उदित सोभा—विशेषण। विशेष्य—रतनसेन। शोभावान। र० बा० ६-४।

उदैगिरि—(उदयगिरि) स० पु० एक०। उडीसा प्रात के पुरी जिले का एक पर्वत। यह सामान्य वनपथ मे खड-

गिरि से स्वतंत्र है। अति पूर्व काल से (प्राय' ३०१ ई० के पहले) उदयगिरि अपनी पर्वतगुफाओ के लिये प्रसिद्ध है। रानी हंसपुरी, भजन, जया, विजया, अनत, हस्ति, पवन और व्याघ गुफा प्रधान हैं। सकल गुहाओ मे पर्वत तोड़कर गृहादि बने है, यद्यपि आजकल इनकी अवस्था नितात मद हो गई है। अनेकाश मे गृहादि विगड गए और सकल स्थानो मे व्याघ्र, भालू रहते हैं। बोध होता है, पूर्व काल मे इन सकल गुहाओ मे बौद्ध धर्मावलम्बी यति तथा संन्यासी रहा करते थे। अनेक गुहाएँ सघाराम नाम से विख्यात थी। इन्हे देखने के लिये पहले कितने ही बौद्ध यात्री यहाँ आते थे। ई० की सप्तम शताब्दी में चीनी परिव्राजक चुअन् चुयंग यहाँ पहुँचे थे। उन्होने पुष्पगिरि नामक सघाराम की बात लिखी है। अनुमान है, यह संघाराम उदयगिरि के ऊपर या पास ही रहा होगा। (हिंदी विश्वकोश, भाग ३)। क० प्रि० ८-२८-४।

उदैन मिश्र—स० पु०। उदयन मिश्र, वीरसिंह का प्रमुख दरबारी। वी० च० ६-४७।

उदोत—[सं० उद्योत] सं० पु० एक० (१) चाँदनी। क० प्रि० १४-१५-२। (२) अभ्युदय। रा० ५-२१-२।

उद्दिम—[स० उद्योग] (१) स० पु० एक०। उद्योग, मेहनत। क० प्रि० ८-४-२। जहाँ० १०। ११। १५। १६। १७। १८। १९। २०। २१। २४। १७८। १७९। (२) विशेषण। विशेष्य—मति। उद्यमी। वी० च० १-१७-४। जहाँ० ११-२। १४-५। १६-६। १९-६। २०-१। २०-२। २०-३। २०-४। २०-५। २०-६। २१-६। २४-२। २४-४। २४-६। २६-२। १७७-२। १७८-१।

उद्दीप—सं० पु० एक०। उद्दीपन विभाव—रस का पोषण और वर्धन करनेवाली वस्तु। र० प्रि० ६-४-२। ६-५-२। ६-७-२। ६-८-१।

उद्देसकुल—स० पु० एक०। कवि एवं आचार्य, केशवदास का वंश। क० प्रि० २-५-१।

उद्धरयौ—क्रियापद। उड़ा दिया। रा० १८-३४-३।

उद्धव—स० पु० एक०। कृष्ण के मातुल एक यादव। ये सत्यक के पुत्र और बृहस्पति के शिष्य थे। इनका दूसरा नाम देवश्रवा था। उद्धव अतिम दशा मे बदरिकाश्रम मे रहते थे। श्रीकृष्ण ने इन्हे ज्ञान का उपदेश दिया। (भागवत, ११वाँ स्कद) (हिंदी विश्वकोश, भाग ३)। क० प्रि० ३-२९-२।

उद्यम—सं० पु० एक०। (१) नाम-विशेष। वि० गी० ९-१-२। ९-४४-१। ९-५०-१। ११-१४-१। १२-१३-१। (२) प्रयत्न। वि० गी० ९-५०-१। जहाँ० १६१-१६६। (३) विशेषण। विशेष्य—सब लोग। जहाँ० १६२-१। १६६-१। १६७-४। वि० गी० ९-१-२।

उद्यमजुत—विशेषण। विशेष्य—विवेक। उद्यम सहित। वि० गी०। ११-१४-१।

उद्वेग—सं० पु० एक०। क्षोभ; घबराहट; चित्त की अस्थिरता। र०प्रि० ८-६-१। ८-३०-२।

उधरहु—क्रियापद। उद्धार होगा; उद्धार करेगा। रा० १२-३६-२।

उधरो—क्रियापद। उद्धार किया। रा० २०-२०-१।

उधार [उद√धृ (धारण)+घञ्]—सं० पुं० एक०। कर्ज; मँगनी। र० प्रि० १६-६-१। क० प्रि० ३-३८-१।

उधारी—क्रियापद। उद्धृत की हुई; निकाली हुई। र० प्रि० १३-४-६।

उधारेहु—क्रियापद। उद्धार करना; छुड़ाना। रा० ३६-६-२।

उधारौ—क्रियापद। उद्धार करते हो। रा० २६-४-१।

उन—दूरवर्ती सबंधवाचक सर्व०, बहु०, कर्तावाचक। उन्होंने। उदाहरण—"औधि दै आए उहाँ उनसों यह भोजन कै अवही हम ऐहै।" (र० प्रि० ७-२१-१)। र० प्रि० ५-३३-४। ७-६-४। ७-२१-१। ८-६-२। ८-१२-३। ८-१३-४। ८-४६-३। ८-४७-१। ११-१४-२। क० प्रि० १२-५-३। १४-२६-४। रा० १०-३-१। १०-६-१। १०-२७-२। १२-३४-२। १२-६१-२। १६-१२-१। १६-१५-१। ३६-२८-१। वी० च० ३-५-१। ४-३४-२। ५-३६-१। ६-३-२। ११-४४-१।

उनमत—सं० पुं० एक०। उन्मत्त; पागल वी० च० २६-३०।

उनमानि—क्रियापद। अनुमान करके। रा० २०-४७-१। ३१-१८-२।

उनसठि—विशेषण। विशेष्य—लोचन। उनसठ। क० प्रि० १३-३१-१।

उनि (के)—दूरवर्ती निश्चयवाचक सर्वनाम, बहु०, (कर्म और संप्रदान कारक)। हिंदी उन। उदाहरण—"तें सिर हाथ दियो उनके उनि गाँठि कहा हँसी आँचरु दीनी"। (र० प्रि० १४-११-४)।

उन्नत—विशेषण। विशेष्य—रूप। ऊँचे उठे हुए; ऊँचे स्तर के। रा० ३५-१०-३। वी० च० १७-५१-१। २२-५-१।

उन्नतहियौ—विशेषण। विशेष्य—सुदरी। उन्नत लक्ष्यवाली। वी० च० २२-५-१।

उन्मत्त [स० उद्+√मद्+क्त] विशेपण। (१) विशेष्य—मतवारे। मस्ती से युक्त। क० प्रि० ३-४३-२। (२) विशेष्य—पिशाची। मतवाला, मदांध। रा० २३-२८-१।

उन्माद—[स० उद√मद+घञ्] स० पुं० एक०। एक सचारी भाव। काम, शोक, भय आदि से चित्त का भ्रमित होना उन्माद कहलाता है। र० प्रि० ६-१४-२। ८-६-२। ८-४०-२।

उपंग—स० पुं० एक०। नसतरग—एक तरह का बाजा। क० प्रि० १०-३४-४।

उपकार—[उप√कृ+घञ्] सं० पुं० एक०। नामविशेष। वि० गी० ६-४४-१।

उपकारी—विशेषण। विशेष्य—प्रोहित। दूसरो की सहायता करनेवाला। क० प्रि० ८-११-२।

उपचार—[उप√चर+घञ्] सं० पुं० एक० (१) उपाय। क० प्रि० ६-३८-४। रा० ७-३४-४। (२) चिकित्सा। र० प्रि० ५-३३-१। ८-४७-१। ८-४९-१। (३) रोग शमन के उपाय; औषध। र० प्रि० ८-५१-१। १३-४-३। (४) सेवा। रा० २४-२-४। (५) पूजानुष्ठान के षोडश विधान। वि० गी० ८-५०-१। (६) विधान। वि० गी० १२-२४-२।

उपचारु—सं० पुं० एक०। रोगशांति का उपाय। र० प्रि० १-२५-४।

उपजत—क्रियापद। उत्पन्न होता है। र० प्रि० ६-११-१। ६-१५-२। ६-२१-२। ६-३६-२। ६-३९-२। ६-४२-२। ६-५१-२। ९-३-२। ९-९-२। ९-१२-२। ९-१५-२। ९-१८-२। ११-१-२। रा० ११-१०-२। १३-७१-१। १४-१५-१।

उपजत है—संयुक्तक्रिया। उत्पन्न होता है। र० प्रि० ६-२७-२।

उपजाई—क्रियापद। पैदा कर ली। रा० ५-२४-४।

उपजाउ—क्रियापद। उपजाओ, पैदा करो; उत्पन्न करो। रा० १७-८-२।

उपजावत—क्रियापद। पैदा करते हैं। रा० १-३१-१।

उपजावही—क्रियापद। पैदा करती है। रा० ३१-३९-२।

उपजाह—क्रियापद। उपजाकर। रा० ५-५३-३। ३१-४१-१।

उपजि—क्रियापद। उत्पन्न होती; पैदा होती। र० प्रि० ८-३-१। ९-१-१। ९-६-२। १०-२३-१। १४-१२-२। १४-२७-२।

उपजि परत—संयुक्तक्रिया। उत्पन्न हो जाता है। र० प्रि० १०-२३-१। १४-१२-२। १४-२७-२।

उपजि परैगी—संयुक्तक्रिया। उत्पन्न हो जायगी। र० प्रि० १२-२५-६।

उपजी—क्रियापद। उत्पन्न हुई; जन्म लिया। र० प्रि० ६-३८-६। रा० ३-८-२। २३-३-२।

उपजै—क्रियापद। पैदा हो, उत्पन्न हो। र० प्रि० ८-४९-२। ८-५५-१। ८-५७-१। ८-५७-२। १६-१३-२। क० प्रि० १-५-२। २-१-२। रा० ३५-३५-२। ३६-१८-२। २१-२८-२। २९-३९-१।

उपजिय—क्रियापद। पैदा होता है; उत्पन्न होता है। रा० १-३०-१।

उपज्यौ—क्रियापद। उत्पन्न हुआ; पैदा हुआ। र० प्रि० ७-८-४। रा० १-५-१। १७-४-१। ३६-९-४।

उपदेश—[उप√दिश्+घञ्] सं० पुं० एक०। (१) शिक्षा। क० प्रि० ५-१२-२। रा० १-१८-१। ११-६-२। २३-९-२। २३-२०-२। ३९-२८-२। छ०

मा० १-४२-४। वी० च० १८-८। १८-३१। २६-२२। २६-२३। ३०-२०। ३१-६५। वि० गी० २-२४-२। ३-७-१। ८-१६-१। ६-३४-१। १३-२०-१। १४-२६-१। १४-६४-१। १५-२-१। १५-३-२। १५-५-१। १६-१-२। १६-२-१। १६-६२-२, ३। १६-६४-१। १६-१०३-२। १६-१२७-१। १७-२-१। १७-२५-२। १८-१७-२। २१-६३-२। (२) नेक सलाह। क० प्रि० १६-५६-२।

उपदेसि हैं—संयुक्तक्रिया। उपदेश दिया। रा० २६-६-२।

उपदेसु—स० पु० एक०। उपदेश। छं० मा० १-६७-४।

उपदेसौ—स० पुं० एक०। उपदेश। वि० गी० १६-१११-१।

उपदेसति—क्रियापद। उपदेश देती है। रा० ११-५-४।

उपबंग—सं० पु० एक०। बगाल से सटा एक जनपद। छं० मा० २-५१-४।

उपवीत—[स० उप+वि√इ (गति)+क्त] सं० पु० एक०। जनेऊ; यज्ञोपवीत। क० प्रि० ३-५७-२।

उपमा—[सं० उप√मा (मापना) + अङ्+टाप्] सं० स्त्री० एक०। (१) अर्थालकार का एक भेद जिसमे दो वस्तुओ मे भेद होते हुए भी धर्मगत समता दिखाई जाती है। क० प्रि० ८-७-१। ९-७-१। १४-१-२। १४-४-२। १५-६-१। वि० गी० ८-४२-१। रा० १-३५-६। (२) अनंमावितोपमा। (देखिए 'असंमावित')। क० प्रि० १४-४०-२। (३) समता; तुलना। र० प्रि० ८-२३-४। क० प्रि० ६-५-४। ८-२३-३। १५-२-२। (४) सं० स्त्री० एक०। उपमान—वह वस्तु जिससे किसी की तुलना की जाय। र० प्रि० ४-४-३। ४-६-३। ६-३८-३। १०-८-२। क० प्रि० ३-८-३। ८-३७-२। ९-१०-३। १३-१२-१। १४-९-१। १४-११-३। १४-३३-१। १४-३६-१। १४-४२-१। १४-४४-१। १५-२-२। १५-१२-१। १५-७१-२। १५-८२-३। रा० ६-४५-३। ९-४५-२। १२-४९-३। २५-२५-१। २९-३०-२। ३१-३१-१। ३४-८-३। छं० मा० १-७०-३। वि० गी० ८-४२-२।

उपमान—[सं० उप√मा+ल्युट्—अन] सं०पुं० एक०। वह वस्तु जिसकी उपमेय से तुलना की जाय। क० प्रि० ३-८-३। १४-४५-३। १४-४६-१। रा० ३२-३७-२।

उपमाश्लेष—स० पु० एक०। एक पद को काटकर दो या तीन पद करे अथवा पदों के भिन्न भिन्न अर्थ ले, उसे भिन्नपद या उपमाश्लेष कहते हैं। क० प्रि० ११-३६-२।

उपमेय—[उप√मा+यत्] सं० पु० एक०। वह वस्तु जिसकी किसी से तुलना की जाय। क० प्रि० १४-३६-१। १४-४२-१। १४-४४-१।

उपल—[उप√ला (लेना)+क] सं० पुं० एक०। पत्थर। रा० २१-४४-२। जहाँ० १५८।

उपलन—सं० पुं० बहु०। ओले। वि० गी० २०-२१-२।

उपवन—सं० पुं० एक०। बगीचा; उद्यान। र० प्रि० ६-६-२। ११-१६-१। क० प्रि० १०-३१-१। १०-३४-१। रा० १३-६६-१। ३१-१६-२। वी० च० ११-५२। २२-२१। २२-२५। २२-३८। २२-४०। २२-६४। २२-८४। २३-२। २४-१०। २४-१३। २४-१४। २६-२०।

उपवीत—सं० पुं० एक०। जनेऊ। रा० २०-४७-३। ३६-१८-१। वी० च० २८-२।

उपवेद—सं० पुं० बहु०। वेदों से निकली लौकिक विद्याएँ—आयुर्वेद, धनुर्वेद, गंधर्ववेद तथा स्थापत्यवेद आदि। क० प्रि० ६-७०-१।

उपहार—[उप√हृ+घञ्] सं० पुं०। भेंट। वी० च० १४-५५।

उपहास—[उप √हस्+घञ्] सं० पुं० एक०। बदनामी। क० प्रि० १५-७५-३। वी० च० २-५। १०-१३। रा० ६-२७-१। ११-३८-२। १२-६-४। वि० गी० १६-७४-२। १७-३१-१। १६-६३-३।

उपहास-त्रास—सं० पुं० एक०। निंदायुक्त हँसी का भय; बदनामी का डर। क० प्रि० ६-४०-१।

उपाइ—[उप√अय् (गति)+घञ्] (१) सं० पुं० एक०। युक्ति। क० प्रि० १४-१४-१। र० प्रि० ११-१५-१। (२) सं० पुं० बहु०। युक्तियाँ। र० प्रि० ५-४-१।

उपाइयै—क्रियापद। उपाय कीजिए। वी० च० १-४६-५।

उपाई—सं० पुं० एक०। उपाय; ख्याति; प्रतिष्ठा। क० प्रि० ११-८०-३। जहाँ० ३-१४।

उपाउ—सं० पुं० एक०। उपाय; साधन। वि० गी० १२-२३-२। २१-४-३। २१-२१-२।

उपाय—सं० पुं० एक०। (१) उपायाक्षेप अलंकार। कार्यारंभ में बाधा डालने के लिये किसी ऐसे उपाय की शर्त लगाई जाय, जिसका पूरा होना असंभव हो। क० प्रि० १०-६-२। १०-२१-२। (२) युक्ति। र० प्रि० १०-३-२। १०-१३-२। क० प्रि० १०-२१-१। रा० ४-२६-३। १३-४८-१। १४-१५-२। (३) सं० पुं० बहु०। युक्तियाँ, साधन। र० प्रि० ११-१-१। (४) चार प्रकार की युक्तियाँ। (१) साम, (२) दाम, (३) भेद और (४) दंड। क० प्रि० ११-१०-२। जहाँ० १८। वि० गी० २-१८-२। १२-१६-२। ८-४-३। ६-७-१।

उपायौ—क्रियापद। उत्पन्न किया। रा० २५-६-१।

उपासत—क्रियापद। उपासना करते। रा० ३१-१६-१।

उपासी—[सं० उप√आस+णिनि] सं० स्त्री० एक०। उपासना (सेवा, स्तुति, वंदना आदि)। रा० ५-२७-२।

उपेच्छा—[उप √ईक्ष + अ + टाप्] । (उपेक्षा) स० स्त्री० एक० । तिरस्कार, लापरवाही—र० प्रि० १०-२-१ । १०-२०-२ ।

उफाल—[उत्+फेन] स० पु० एक० । बडा लबा डडा । रा० २१-४५-२ ।

उबटि—क्रियापद । उबटाकर; उबटन लगाकर । र० प्रि० १३-३-१ ।

उबटोगे—[स० उद्वर्तन] क्रियापद । उतर जाओगे । र० प्रि० ३-३६-४ ।

उबरै—क्रियापद । उबर जाय, निकल जाय । रा० २४-२२-४ ।

-बार्यौ—क्रियापद । उबारा, उद्धार किया । रा० २०-२२-१ ।

उबीठि—क्रियापद । उतर जाना । र० प्रि० १६-७-४ ।

उभय सृष्टि—स० स्त्री० एक० । उपसृष्टि । वि० गी० ४-११-१ ।

उमंगत—क्रियापद । उमडना । र० प्रि० ५-३२-६ ।

उमगै—क्रियापद । उमडने पर । र० प्रि० ७-२१-४ । १६-३-३ ।

उमड्यौ—क्रियापद । उमडा । र० प्रि० ३-४९-१ ।

उमराउ—स० पु० एक० । सरदार, सामंत, दरवारी । क० प्रि० ३-४२-१ ।

उमराव—स० पु० एक० । युवराज । वी० च० ५-९ । ५-१६ । ६-२ । ६-३ । ६-२६ । ६-४७ । ७-१३ । ८-७ । ८-६१ । ९-२ । ९-३२ । ३१-७९ । ३३-२५ । जहाँ० ६६-८२ ।

उमही—क्रियापद । उमडी । र० प्रि० ६-४४-३ ।

उमा—[स० उ+मा]—स० स्त्री०एक० । पार्वती । क० प्रि० १६-११-१ । वी० च० २३-२७ ।

उमाधव—सं० पुं० एक० । महेश । वि० गी० ११-१२-२ ।

उर [स० √ऋ (गति) असुन्]—स० पुं० एक० । (१) छाती; वक्षस्थल । मुहा०—'उर लगाना' = आलिंगन करना । 'रामचद्र बहुधा उर लगाए' । मुहा० 'उर आना'=सोचना, ध्यान करना । 'आलस छाडौ कृत उर आनौ' । (रा० १-३३-१) । र० प्रि० ३-२१-४ । ३-४७-२ । ४-७-१ । ४-१३-३ । ४-१४-१ । ४-१८-१ । ५-३-३ । ५-९-३ । ५-९-४ । ५-२२-२ । ५-३१-४ । ६-२३-३ । ६-२८-४ । ६-३१-१ । ६-३३-३ । ६-४४-४ । ७-८-२ । ७-२३-३ । ७-३२-३ । ८-१७-४ । ८-१८-३ । ८-२६-३ । ९-६-२ । ९-१६-४ । ९-१८-२ । १०-८-३ । ११-८-२ । ११-१०-१ । ११-१५-१ । १२-१४-१ । १२-१६-३ । १२-२५-३ । १२-२६-१ । १३-१४-२ । १३-१८-१ । १४-१९-१ । १४-२३-४ । १४-३४-२ । १६-७-४ । क० प्रि० १-३-२ । १-२० १ । १-६०-१ । ४-२१-२ । ४-२२-१ । ५-१२-१ । ६-१४-१ । ६-३०-२ । ६-३४-१ । ७-१५-२ । ८-१५-१ । ९-१०-१ । १०-८-२ । १०-२२-२ । ११-२५-४ । ११-३०-२ । ११-३२-४ । ११-३१ १ ।

११-७६-३ । १२-४-२ । १२-२१-४ । १३-२-४ । १३-४२-२ । १४-३१ ४ । १४-३३-१ । १५-८३-१ । १५-६४ २ । १५-६१-२ । १५-६२ ४ । १५-१०६-१ । १५-१२२-२ । १५-१२६-१ । रा० ३-२७-२ । ३-३१-४ । ६-५४-१ । ६-५४-२ । १३-१ । १३ २-२ । १४-४२-२ । २१-३०-३ । २५-२५-१ । २७-१३-४ । ३१-३६-१ । (२) समय । रा० ६-५-१ । ६-८-१ । १३-७७-२ । १४-२५-१ । १४-२६-१ । १५-१४-२ । २०-४७-३ । २०-४८-१ । (३) मन; हृदय । रा० १-३३-१ । ६-५१-१ । १२-१६-१ । १२-३८-२ । १३-३५-२ । १५-१-४ । २५-३०-१ । २७-२४-१ । वी० च० १-१ । १-२३ । १-४३ । २-१३ । ४-५ । ५-६२ । ६-१५ । ६-४४ । ७-१ । ७-४० । ८-२० । ८-२३ । ६-४ । ६-६ । ६-२६ । १०-१२ । १०-१६ । १०-३६ । १२-१७ । १५-२७ । १६-३१ । १७-५६ । १९-१४ । २१-३ । २२-२७ । २२-४२ । २२-७६ । २२-८२ । २२-८६ । २२-८७ । २२-६० । २५-७ । २६-५ । २६-१४ । २६-१५ । २६-२६ । २७-१६ । २८-२ । ३०-१ । ३२-४१ । ३२-४३ । ३२-४८ । ३३-५३ । जहाँ० ६७ । ११६ । १३३ । वि० गी० २-२-२ । ३-१०-१ । ६-१५-२ । ६-२६-२ । ६-२७-१ । ६-६७-१ । ८-२०-१ । ८ ३८-१ । ८-४१-२ । ११-१७-२ । १३-४५-२ । १४-११-२ । १५-६१-२ । १६ ४८-२ । १६-६३-२ । १६-१०५-२ । १६-१२३-१ । १७-४२-१ । १६-३-२ । १६-२६-२ । १६-५६-२ । १६-६४-२ । २०-५०-१ । २१-४२-३ ।

उर आनियें—सयुक्तक्रिया । विश्वास किया जाय । र० प्रि० २-८-४ ।

उर-ऐन—सं० पु० एक० । मन रूपी मकान । र० प्रि० ६-६-२ ।

उरग—स० पु० एक० । छाती के बल पर रेंगनेवाला; साँप । र० प्रि० ७-३२-१ । वी० च० १-५८ । १३-७ ।

उरज—स० पु० बहु० । स्तन; कुच । र० प्रि० ७-३२-३ । १०-८-३ । १४-३४-२ । वी० च० २२-४५ ।

उरज-मलय-सैल-सोल—स० पु० एक० । कुचरूपी मलयगिरि का सौंदर्य । र० प्रि० १०-८-३ ।

उरजात—स० पु० बहु० । कुच । र० प्रि० ८-३६-३ । क० प्रि० १-१०-१ । रा० ३१-२८-२ । ३२-४०-१ ।

उर्जस्वी—स० पु० एक० । एक काव्यालकार जो ऐसे स्थलो पर आता है जहाँ रसाभास या भावाभास स्थायी भाव का अग हो । क० प्रि० ६-२-२ ।

उरझत—क्रियापद । उलझ जाते है । र० प्रि० ७-३२-१ ।

उरझाही—क्रियापद । उलझा देते है । रा० १-३३-२ ।

उरझी—क्रियापद । उलझ गई । रा० ३२-४०-१ । ३५-८-२ । २४-२२-३ ।

उरझयौ—क्रियापद । उलझ गया । रा० ३५-२०-२ ।

उर धरियतु है—सयुक्तक्रिया। हृदय मे समझे जाते है। र० प्रि० १४-१९-२।

उरनि—स० पुं० वहु०। मन। क० प्रि० ७-३८-२।

उर पिंजर—स० पु० एक०। हृदयरूपी पिंजडा। वि० गी० १८-२७-१।

उरबसी [स० उरु √अश् (व्याप्त करना)+क+ङीप्] (उर्वशी) सं० स्त्री० एक०। उदाहरण—उरून् महतोमि अश्नुते व्यानोति वशी करोति उरु अशक्त स्वनाम ख्यात स्वर्गवेश्या। इसी नाम से विख्यात एक परी। नारायण का उरु भेदकर निकलने से इस अप्सरा का नाम उर्वशी पडा है। श्रीमद्भागवत मे लिखा है—नर नारायण वदरिकाश्रम मे तपोनिरत रहे। इससे इंद्र ने समझा कि उन्ही का पद लेने के लिये नर और नारायण वैसी घोरतर तपस्या मे लगे है। फिर उन्होने तपोविघ्न के लिये कामदेव और अप्सरागण को भेजा। वदरिकाश्रम मे पहुँचते ही कार्यकलाप पर दृष्टि न डाल, नर नारायण ने आदर के साथ उन्हे अतिथि रूप से ग्रहण किया। काम प्रभृति समागत देव अलौकिक गुण से मोहित हो, उनका स्तव करने लगे। नर नारायण ने तब उन रमणियो मे से एक को लेने को कहा। आदेशानुसार देवो ने उर्वशी को लिया और प्रणामपूर्वक स्वर्ग को गमन किया। पद्मपुराण मे उल्लेख है—किसी समय विष्णु ने धर्म का पुत्र बन गधमादन पर्वत पर घोर तपस्या की थी। इंद्र ने घबराकर तपस्या मे विघ्न डालने के लिये अप्सरागण के साथ काम और वसंत को भेजा। किंतु अप्सराएँ विष्णु का ध्यान तोड न सकी। तब कामदेव ने अपने उरु से उर्वशी को निकाला। उर्वशी ही केवल उनका ध्यान तोड़ सकी थी। इससे इंद्र उर्वशी पर अत्यत सतुष्ट हुए और ग्रहण करने को चाहने लगे। फिर मित्र और वरुण उर्वशी पर ललचाए। किंतु उर्वशी ने उन्हे लक्ष्य न किया। मित्र और वरुण ने इससे असतुष्ट हो उर्वशी को अभिशाप दिया था। उसी से वह मनुष्यभोग्या बन गई। हरिवंश मे लिखा है—उर्वशी ने ब्रह्मा के शाप से मनुष्य जन्म को प्राप्त किया। उसने महाराज पुरुरवा के निकट जा पत्नीत्व स्वीकार किया और कह दिया था—जितने दिन नग्न न देख पडेगे, जितने दिन दो मेष हमारी शय्या के समीप बँधेगे, उतने दिन भार्याभाव से हमारे यहाँ रहेगे; इससे अन्यथा होने पर शाप छूट जाएगा और फिर हमारा कोई पता न पाएगा। राजा इसे स्वीकार कर उर्वशी के साथ परम सुख से रहने लगे। इसी प्रकार १५ वर्ष बीते। उधर गधर्व उर्वशी के लिये चितान्वित थे। वह शाप छुडाने और उर्वशी को फिर स्वर्ग मे लाने का उपाय सोचने लगे। उर्वशी अपने दोनो मेषो को पुत्रवत् पालती थी। एक दिन विश्वावसु नामक गधर्व प्रयाग जा, रात्रिकाल मे उर्वशी के पालित दोनों

मेष ले भागे। उर्वशी ने अपने पालित दोनो मेष जाते देख राजा से कहा। उस समय राजा नग्न ही गधर्व पर झपटा। उर्वशी राजा को नग्न देखते ही अतर्हित हो गई। फिर गंधर्व मेषों को छोड चलते बने। राजा दोनो मेपो को ले घर वापस आए। किंतु उर्वशी के दर्शन न मिले। वे समझ गए कि अपने ही दोष से उर्वशी को खो वैठे हैं। पुरुरवा और उर्वशी के आयु, अमावसु, विश्वावसु, श्रुतायु, दृवायु और शतायु आदि सात पुत्र हुए। ऋग्वेद (१०/९५) मे उर्वशी और पुरुरवा का परिचय मिलता है। कालिदास ने उर्वशी और पुरुरवा के उपाख्यान पर 'विक्रमोर्वशी' नामक एक नाटक लिखा है। (हिंदी विश्वकोश, भाग ३)। र० प्रि० ४-१४-१। क० प्रि० १५-१०९-१। (१) अप्सरा—देवलोक के पक्ष मे। (२) उर—बसी= 'उर' पु० एक०। हृदय—बाग के पक्ष मे। क० प्रि० ७-१५-३। (१) अप्सरा —काम की सेना के पक्ष मे। (२) उर+बसी—'उर' पुं० एक०। हृदय —वेश्या कामसेना के पक्ष मे। क० प्रि० ११-३५-१।

उरमति—क्रियापद। लटकती है। रा० ६-३९-१।

उरमाह—क्रियापद। डाल दी; पहना ली, लटका ली। र० प्रि० ६-३१-१।

उरमे—क्रियापद। डाल दी। क० प्रि० ५-३७-१।

उररि—क्रियापद। उलझकर। र० प्रि० १२-१६-५।

उर लाइ लई अकुलाइ—संयुक्तक्रिया। आकुल होकर हृदय से लगा लिया। र० प्रि० ६-४४-४।

उर लाइ लियो—संयुक्तक्रिया। हृदय से लगा लिया। रा० १७-६-१।

उर लाए—क्रियापद। छाती से लगा। लिया। १७-११-१।

उर सीतलकारि—विशेषण। विशेष्य—मुद्रिका। हृदय को शीतल करनेवाली। रा० १३-७९-१।

उर सीत लसै—विशेषण। विशेष्य—जलजात। हृदय को ठंढक देनेवाले। रा० ३०-३६-१।

उरहार—स० पुं० एक०। वक्ष स्थल पर पहनने का एक गहना। क० प्रि० १५-९२-४।

उरहार प्रभा—सं० स्त्री० एक०। कठमाला की चमक। क० प्रि० १५-९२-४।

उरु—स० पु० बहु०। जाँघ। र० प्रि० ६-४३-२। क० प्रि० १५-१८-१।

उरै—सं० पु० एक०। हृदय मे। वि० ६-२७-२।

उरोज—[उरस्√जन्+ड] सं० पुं० बहु०। स्तन। र० प्रि० १-२४-३। ३-१९-२। १२-१६-३। वी० च० २५-२२।

उरोज-सरोज—सं० पुं० बहु०। कुचरूपी कमल। र० प्रि० १-२४-३।

उर्वसी— [उरु√अश्+क+ङीप्] सं० स्त्री० एक० । अप्सराविशेष (उर्वशी) । रा० १३-६०-२ ।

उलंघि जात—क्रियापद । उल्लंघन करता । र० प्रि० ४-१७-१ । ६-६-१ । रा० २८-११-२ ।

उलंघि जात—सयुक्त क्रिया । उल्लघन किया जाता । र० प्रि० ४-१९-१ ।

उलटावति—क्रियापद । उलटा पलटा करती । र० प्रि० २-८-७ ।

उलटावति हैं—सयुक्तक्रिया । उलटा पलटा करती है । र० प्रि० २-८-७ ।

उलटी—विशेषण । विशेष्य—विधि । विपरीत; प्रतिकूल । र० प्रि० ७-१५-४ । वी० च० २-४-१ । ६-५७-२ ।

उलटो करि आनि दियो—सयुक्त-क्रिया । आकर उलटा करके दिया । र० प्रि० ६-५६-३ ।

उलटौ—विशेषण । विशेष्य—काम । प्रति-कूल । वी० च० २६-६-१ ।

उलथा—सं० पुं० एक० । एक नृत्य, उछल उछलकर घूमना और ताल पर घुंघुरू से सम देना । रा० ३०-५-१ ।

उलहे है—सयुक्तक्रिया । उल्लसित हो रहे है । र० प्रि० ३-५४-१ ।

उलहै—क्रियापद । उल्लसित होते । र० प्रि० ३-५४-१ ।

उलुक—सं० पु० एक० । उल्का । जहाँ० ३२ ।

उलूक—[√वल्+ऊक] सं० पु० एक० । उल्लू, पक्षीविशेष (एक पक्षी जिसे दिन मे दिखाई नही देता और जिसे बहुत मनहूस माना जाता है)। र० प्रि० ११-१८-१ । क० प्रि० ६-४३-३ । रा० १३-८८ २ ।

उवतहीं-उगतही—क्रियापद । उदय होते ही । रा० १७-४६-६ ।

उष्न—विशेषण । विशेष्य—जल । गरम । रा० ६-१८-४ ।

उसारि—क्रियापद । उकसाकर; बढ़ाकर । रा० ३१-१६-१ ।

उसास—सं० स्त्री० एक० । उसासे; ऊपर को खिची हुई लवी साँस (अर्थात् दु ख-सूचक साँस) । र० प्रि० ८-४७-२ । क० प्रि० ६-२२-१ । ८-४३-१ । रा० १४-२८-१ । १६-५४-१ ।

उसासी—सं० स्त्री० एक० । दम लेने की फुरसत । रा० ४-१२-४ ।

उस्वास—(उच्छ्वास) सं० स्त्री० एक० । ऊपर खीची या छोडी जानेवाली साँस । र० प्रि० ८-४५-१ ।

उहाँ—क्रियाविशेषण (स्थानवाचक), वहाँ, उस जगह; उस स्थान पर । उदाहरण—'उहाँ सूरलोक बिहारी' । रा० ६-२५-२ ।

ऊ

ऊँच—विशेषण । विशेष्य—विचार । उच्च; श्रेष्ठ । वी० च० १७-१-१ । १७-११-२ ।

ऊँची—विशेषण । विशेष्य—पताक । उठी हुई । क० प्रि० ७-५-२ । रा० ८-२-१ । शि० २२-४ । वी० च० १६-३-१ ।

ऊँचे—विशेषण। बडे। र० प्रि० ६-२३-१। ८-४५-१। क० प्रि० ७-५-२। रा० १-३७-१। २२-७-१। २२-९-१। छं० मा० २-४३-३। वी० च० १७-५२-१। १८-२-१। १८-१८-२। २७-५-१। वि० गी० ११-५-२।

ऊँट—सं० पुं० एक०। बोझ ढोने तथा सवारी के काम आनेवाला एक जानवर जो गरम और रेगिस्तानी प्रदेशों मे अधिकतर पाया जाता है। र० प्रि० ६-४४-२। वी० च० ४-१६।

ऊँट-कटारोई—सं० स्त्री० एक०। एक प्रकार की कँटीली लता जिसे ऊँट बडे चाव से खाता है। र० प्रि० ३-१०-४।

ऊंदुर—[इंदुर] सं० पुं० एक०। चूहा। छं० मा० २-२०।

ऊख—सं० स्त्री० एक०। ईख; गन्ना। र० प्रि० ३-६५-२। १२-५-३। १४-३९-२। जहाँ० १८।

ऊजरे—विशेषण। विशेष्य—पट। उजले, कातिमान। वी० च० १७-२५-१।

ऊर्ज—सं० पु० एक०। एक अर्थालकार जिसमे सहायहीन होने पर भी अहकार न छोडने का वर्णन होता है। क० प्रि० ११-५१-२।

ऊढ़ा—स० स्त्री० एक०। वह परकीया नायिका जो विवाहित पति को छोडकर अन्य किसी से प्रेम करे। र० प्रि० ३-६८-१। ३-६९-१। ३-७२-२। ५-१९-१।

ऊतरु—स० पु० एक०। उत्तर; जवाब। र० प्रि० ७-५-४। रा० १३-४६-२।

ऊधव—(उद्धव) स० पु० एक०। देखिए 'उद्धव'। क० प्रि० ३-३४-३। छं० मा० १-६६-१०। १-६७-६।

ऊधौ—स० पु० एक०। देखिए 'उद्धव' क० प्रि० ३-३०-२।

ऊन—स० पु० एक०। दुब, भेड आदि का कोमल बाल जिसका कपडा बनता है।

ऊरध—स० पु० एक०। ऊर्ध्वलोक; अमर-लोक या स्वर्गलोक। वि० गी० १४-२६-१। १४-२७-४। १८-३१-२। २०-४६-१।

ऊसरवन—सं० पुं० एक०। एक तीर्थ-स्थान। वि० गी० १६-२६-१।

ऋ

ऋतंभरा—स० स्त्री० एक०। नदी-विशेष। वि० गी० ४-२७-१।

ऋतु—स० स्त्री० एक०। मौसम। जहाँ० १८।

ऋषि—(१) स० पु० एक०। मुनि। जहाँ० १८-१६१। वि० गी० १३-१-२। १३-७९-१। १५-४०-१। १५-४८-२। १५-६०-२। १५-२७-१। १६-५९-१। १५-१९-१। (२) विशेषण। विशेष्य—वसिष्ठ। ऋषि का लक्षण है—'ऋषित गच्छति ससार पारम्'। ज्ञान के द्वारा ससार पार करनेवाला ऋषि कहलाता है। ऋषि सात प्रकार के होते है—महर्षि, परमर्षि, देवर्षि, ब्रह्मर्षि, ऋतर्षि, काण्डर्षि। प्रत्येक मनवतर के अतर्गत सप्तर्षिगण होते

है। वशिष्ठ वैवस्वत मन्वंतर के सप्त ऋषियो मे से है। अन्यों के नाम हैं—अत्रि, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि, भरद्वाज एवं कश्यप। वि० गी० २१-५७ १।

ऋषिराज—(१) स० पुं० एक०। बड़ा तपस्वी, मंत्रद्रष्टा या वेदमंत्रो का साक्षात्कार करनेवाला व्यक्ति; श्रेष्ठ मुनि। वि० गी० १५-३७-१। १५-४०-१। १५-५८-१। १६-५६-१। (२) सं० पुं० बहु०। बडे बडे ऋषि। रा० १-२-३। (३) विशेपरण। विशेष्य—वसिष्ठ। श्रेष्ठ। वि० गी० १५-३७-१।

ऋषि वसिष्ठ—सं० पु० एक०। वसिष्ठ महर्षि। वि० गी० २१-५७-१।

ऋषी—स० पुं० एक०। (ऋषि)। मंत्र द्रष्टा; वेदमत्रो का साक्षात्कार और प्रकाशन करनेवाला व्यक्ति। क० प्रि० ५-१२-३।

ऋषीस—(१) स० पु० एक०। श्रेष्ठ मुनि। वि० गी० १५-३६-१। १५-६१-३। १६-२७-१। २०-६-२। (२) विशेपरण। विशेष्य—श्रीवसिष्ठ। श्रेष्ठ। वि० गी० १५-३६-१। १५-६१-३।

ए

एंचि—क्रियापद। खीचना। र० प्रि० ४-८-१। ६-१६-१। रा० २७-१३-३।

एँचे—क्रियापद। खीचे। रा० १८-२९-२।

एँड—स० पु० एक०। गर्व की मुद्रा। र० प्रि० ५-६-३। १२-२५-४।

एंडाई—क्रियापद। अँगडाना; देह तोडना। र० प्रि० ५-११-६।

एंडाति—क्रियापद। देह तोड़ती है। र० प्रि० ५-९-५।

एक-एक—विशेषरण। विशेष्य—वानर। हर एक। रा० १८-३३-३। १८-३४-२। २२-२४-१। २६-३४-३।

एकत्र—क्रियापद। एकत्रित होकर। रा० ६-४६-१।

एक छल छित—विशेषरण। विशेष्य—इद्रजीतजू। एक स्थल मे रहनेवाला क० प्रि० ११-२२-१।

एकदू—विशेषरण। विशेष्य—घरी। एक दो। रा० १८-२६-१।

एकपत्नीव्रत—सं० पुं० एक०। एक ही पत्नी को वरण करने का व्रत। रा० २७-१७-२।

एकपत्नीव्रती—विशेषण। विशेष्य—जीव। एक-पत्नी-व्रत का पालन करनेवाले। रा० २८-४ १।

एकरदन—(१) सं० पुं० एक०। गणेश—किसी समय गणेश को द्वारपाल बनाकर पार्वती शिव से बातचीत कर रही थी। उसी समय परशुराम ने शिव के दर्शन करने के लिये गणेश से द्वार छोडने को कहा। गणेश के अस्वीकार करने पर दोनो मे तुमुल युद्ध होने लगा। परशुराम के परशु के आघात से गणेश का विनाश तो नही हुआ, लेकिन एक दाँत टूट गया। उसी समय से उनका नाम 'एकरदन' पड गया। (ब्रह्मवैवर्त पुराण) (हिंदी

विश्वकोश) र० बा० १-१-१ । (२) विशेषण । विशेष्य—गणेश । र० प्रि० १-१-१ । र० बा० १-१ ।

एक रस—विशेषण । विशेष्य—वदन । सदा एक ही प्रकार से (प्रसन्न) रहने-वाला । क० प्रि० १४-२७-४ ।

एक रूप—विशेषण । विशेष्य—जोति । सर्वदा एक ही प्रकार की । क० प्रि० १४-२७-४ । रा० १-२१-१ । वि० गी० १४-४५-१ ।

एकादश—सं० पु० बहु० । ग्यारह । वी० च० २-४७ ।

एकादशि—सं० स्त्री० एक० । चान्द्र पक्ष की ग्यारहवी तिथि । रा० १२-२०-३ ।

एकादस—विशेषण । विशेष्य—लौ । ग्यारह । वी० च० १७-७०-१ ।

एकानेक—सं० पु० एक० । एकानेकोत्तर अलकार—एक ही उत्तर मे अनेक उत्तर निकले, उसे अनेकोत्तर अलकार कहते है । क० प्रि० १६-५०-२ ।

एकु—विशेषण । विशेष्य—अगु । एक । क० प्रि० १४-३२-१ ।

एकै—विशेषण । विशेष्य—वितान । एक । र० प्रि० १५-६-४ । क० प्रि० ११-५-२ । १४-२२-१ । १६-७-१ । १०-८-३ । रा० २८-१६-१ । वी० च० २-२०-१ । २-२०-२ । २-३८-२ । ४-३-१ । ५-४१-२ । ७-२६-२ । १०-२८-२ । १७-६८-१ । २२-४२-२ । २२-६०-१ । २८-२१-१ । ३१-२७-२ । वि० गी० २-११-२ । ३-२७-२ । ६-५२-२ । ६-५६-२ । १४-३१-१ ।

एणि—[सं० √इ (गति)+णिनि] सं० पु० । मादा एण । जहाँ० ५७ ।

एन—स० पु० । एण; काले रग के हिरण का एक भेद । रा० ६-१४-१ । जहाँ० ५० ।

एनि—विशेषण । विशेष्य—वाम (सीता) । कस्तूरी मृगी (यह मृगी बहुत सुदर होती है; कद छोटा, पर आँखे बहुत बड़ी बडी और सुदर होने से बहुत प्यारी सूरत की होती है । अत यहाँ पर अर्थ होगा सुदरी, प्यारी) । रा० ६-२३-२ ।

एनिसुख—विशेषण । विशेष्य—बैन । सुख का घर; सुखदायक । र० प्रि० १२-३०-१ ।

एरी—स० स्त्री० एक० । सखी । र० प्रि० १२-१५-३ ।

एला—स० पु० एक० । इलायची । रा० ३-१-३ । वी० च० २३-३० ।

ऐ

ऐंचि लिये—सयुक्तक्रिया । खीच लिया । र० प्रि० ४-८-१ ।

ऐंचि लेत डेराइ—सयुक्तक्रिया । डरकर खीच लेते हैं । रा० २७-१३-३ ।

ऐंचे—क्रियापद । खीचता है । रा० २०-४०-२ ।

ऐंचो—क्रियापद । खीचो । र० प्रि० ३-२३-१ ।

ऐंच्यो—क्रियापद। खींचा। रा० ५-४२-३। ७-४८-१।

ऐंठि—क्रियापद। ऐंठकर; अकडकर। र० प्रि० १०-१६-३। १३-३-४।

ऐंड—सं० पु० एक०। गर्व; घमंड। र० प्रि० १३-१८-३। क० प्रि० ६-४४-३।

ऐंडाइ—क्रियापद। देह तोडती है। र० प्रि० ५-६-१। १३-१८-५।

ऐन—(१) सं० स्त्री० एक०। आँख। क० प्रि० ५-३०-२। (२) सं० स्त्री० बहु०। नेत्र। क० प्रि० १२-१७-३। (३) सं० पु० एक०। अयन, घर। र० प्रि० ६-६-२। १२-३०-१। (४) सं० पु० एक०। हिरण। क० प्रि० ६-१२-२। वि० गी० १६-४५-४। (५) रीतिवाचक। उपयुक्त, ठीक; पूर्ण, पूरा। उदाहरण—'न बैन ऐन'। क० प्रि० ६-२७-२।

ऐन चर्म—सं० पु० एक०। मृग का चर्म या खाल। वि० गी० १६।

ऐन नाभि—सं० स्त्री० एक०। मृग की नाभि। वि० गी० ६-२०-२।

ऐबो—क्रियापद। आना। र० प्रि० ६-२२-३।

ऐरावत—सं० पु० एक०। इंद्र का हाथी। क० प्रि० ३-४४-२।

ऐल—सं० पु० एक०। खलबली, परेशानी। क० प्रि० ८-३५-१।

ऐलो—सं० पु० एक०। धूल। र० प्रि० १२-२७-२।

ऐसहि—रीतिवाचक। वैसे ही। उदाहरण—'ऐसहि कैसे मनोरथ'। रा० ४-२१-४।

ऐसी—क्रियाविशेषण, रीतिवाचक। इस प्रकार; इस ढंग की। उदाहरण—'ऐसी ह्वै है'। वि० गी० २१-५१-१। र० प्रि० ३-३४-१। ५-१७-४। ६-४०-४। ७-१४-४। ८-२६-४। ११-८-३। ११-१७-४। १२-११-२। १२-१६-४। १३-७-२। १३-१८-३। क० प्रि० ६-१६-१। ६-४६-४। ६-६६-१। ८-५-४। ८-७-४। ८-२१-३। ८-३७-१। ६-१०-३। ६-१२-३। ६-२०-३। १०-१०-२। १०-२२-२। १०-१४-५। ११-४२-१। १२-१६-३। १२-३२-४।

ऐसे—क्रियाविशेषण, रीतिवाचक। इस प्रकार से; इस तौर पर। उदाहरण—'ऐसे गजराज' (जहाँ० ४३-४)। र० प्रि० १-२५-१। ३-८-४। ३-२३-४। ५-११-२। ५-१४-३। ७-५-४। ८-३४-३। ६-५-२। १०-२२-३। ११-३-४। १२-२६-१। १४-७-४। १४-२६-४। क० प्रि० ५-२७-४। ६-१४-४। ६-३८-१। ६-४७-३। ६-५६-४। ६-७५-४। ७-३-४। ८-८-३। ८-१०-४। ८-१०-२। ८-१८-४। ८-२६-४। ६-३१-३। ११-३२-४। ११-६८-२। ११-७१-२। १२-१६-३। १४-११-२। १४-१२-४। रा० ३-२६-२। ५-३१-३। १४-३८-३। १५-२०-१। १६-२६-१। २०-४२-२। २४-८-३। ३१-३८-१। ३२-१-२।

३२-१८-२ । ३२-३७-१ । ३३-१३-१ । जहाँ० ४३-४ । ४६-२ ।

ऐसो—क्रियाविशेषण, रीतिवाचक । इस प्रकार से; इस तौर पर । उदाहरण—'ऐसो राजु है' (जहाँ० १९२-४) । र० प्रि० ३-४९-४ । १०-२५-४ । क० प्रि० ६-१९-१ । ६-६८-३ । ७-१९-२ । ११-३४-४ । १२-२३-२ । १३-१६-४ । १३-४२-४ । १४-४५-१ । १४-४८-२ । रा० ४-९-४ । ५-२-२ । ५-८-१ । ७-१४-३ । १२-६९-२ । १८-१०-४ । २४-२६-१ । ३२-२२-१ ।

ऐहे—क्रियापद । आ लेंगे । र० प्रि० ७-२१-१ ।

ऐहैं—क्रियापद । कर सकेंगे । रा० १६-२६ ३ ।

ओ

ओठ [स० ओष्ठ]—स० पु० बहु० । अधर, ओष्ठ । क० प्रि० ६-१९-२ ।

ओक [स उच्+क]—स० पु० एक० । निवास, घर । क० प्रि० ८-३५-२ । रा० ४-१४-१ । २७-२१-४ । ३०-२२-६ । ३५-३३-३ । छ० मा० १-७१-६ । वि० गी० १६-१२५-१ ।

ओघ [उच्+घञ्]—सं० पु० एक० । समूह या ढेर । वी० च० ११-८ । वि० गी० १०-१७-२ ।

ओज [स० उब्ज्+असुन्]—स० स्त्री० । तेज, प्रताप । रा० ३२-१७-२ ।

ओट [स० ओढ] सं० स्त्री० एक० । शरण; आश्रय । क० प्रि० ६-१६-२ ।

ओठ-रुचिरेख—स० स्त्री० एक० । ओठो की काति की रेखा । रा० ६-५२-३ ।

ओड़छा—सं० पु० । ओडछा नगर जो वेतवा नदी के किनारे बसा है । (ओरछा और ऐरछा नामो से भी संबोधित है) । वी० च० २-३२ । ३-६६ । ६-४२ । ६-५१ । ७-२९ । ७-४८ । ७-६६ । ८-५ । ८-६ । ८-८ । ८-४२ । ८-५५ । ९-९ । ९-२० । ९-४० । ९-४२ । ९-५० । ९-५३ । ९-६० । १०-२६ । १०-३१ । १०-३२ । १२-३० । १४-२५ । १४-४० । १४-५४ । १४-६१ । १५-३१ ।

ओड़छेद्र—स० पु० एक० । ओडछा के राजा । र० वा० १-२-१ ।

ओड़छे—स० पु० एक० । ओड़छा नगर, बुंदेलखड के ओरछा राज की प्राचीन राजधानी । यह उत्तर भारत देशा० ७८° ४२' पूर्व मे वेतवा नदी के किनारे अवस्थित है । एक पत्थर पर किला बना है, जिसमे प्राचीन राजा के रहने का भवन खडा है । जहाँगीर के निवास का एक प्रासाद भी बनाया गया था । किले से नगर तक नदी पर लकडी का पुल बंधा है । र० प्रि० १-३-२ । क० प्रि० ७-५-४ । ७-७-१ । ७-१३-१ । वि० गी० १-४-१ । र० वा० १-६-२ ।

ओड़ लई—संयुक्तकिया । रोक ली । रा० १७-४०-४ ।

ओड्यो—क्रियापद। जोड़ा। क० प्रि० २-१२-२।

ओढ़नी—स० स्त्री० एक०। स्त्रियो का ओढने का छोटा दुपट्टा। रा० १४-७-१।

ओढ़ि—क्रियापद। ओढकर। र० प्रि० ६-४६-४। क० प्रि० ४-८-७।

ओढ़ोनी—(ओढनी) स० स्त्री० एक०। स्त्रियो के ओढने का छोटा दुपट्टा। क० प्रि० ११-४८-४।

ओनो—सं० पुं० एक०। ओना; पानी निकलने का रास्ता। र० प्रि० ५-३२-३।

ओप—स० स्त्री० एक०। चमक; काति, आभा। र० प्रि० ३-२६-२। क० प्रि० ६-४२-२। ६-२६-१। रा० ६-५६-३।

ओपना—(ओपनी) स० स्त्री० एक०। माँजने की वस्तु जिससे रगडकर तलवार या कटारी मे जिला दी जाती है। क० प्रि० १४-१५-१।

ओपि—क्रियापद। प्रकाशित हो रही है। रा० १-१७-४।

ओर—(१) स० पुं० बहु०। छोर। क० प्रि० ५-५७-१। (२) सं० स्त्री० एक०। तरफ। क० प्रि० १५-६६-२।

ओरछो—सं० पु० एक०। देखिए 'ओडछे'। क० प्रि० १-१८-१।

ओरो—सं० पु० एक०। ओला। जमे हुए जलकणो या बर्फ का गोला जो जाडे की वर्षा मे कभी कभी गिरता है। क० प्रि० ६-३७-१।

ओलि—स० स्त्री० एक०। झोली—आँचल या दुपट्टे को फैलाकर उसे वस्तु रखने की झोली के रूप मे बना लेने को ओली कहते है। र० प्रि० ५-३५-१।

ओलिक—सं० पुं० एक०। आड; परदा। र० प्रि० ८-३८-१।

ओलिहै—संयुक्तक्रिया। ओलेगी। र० प्रि० ८-१८-६।

ओली—स० स्त्री० एक०। अंचल। र० प्रि० १२-२५-४। क० प्रि० १०-२६-५।

ओषधि—सं० स्त्री० एक०। वनस्पति; जडी बूटी। क० प्रि० ७-२३-२। १५-६२-३। वी० च० २२-३१। ३२-११।

ओषधि लता—सं० स्त्री० एक०। वेलि-विशेष। क० प्रि० १५-६१-२।

ओस [सं० अवश्याय]—स० स्त्री० एक०। हवा की भाप जो जलकण के रूप मे जमीन पर गिरती है। शबनम। र० प्रि० ५-१०-१। १२-२४-४। रा० २०-३५-१। जहाँ० १५।

औ

औठ—सं० पु० बहु०। होठ; अधर। क० प्रि० ९-१०-२।

औ—(संस्कृत—अपर, प्राकृत—अवर, हिंदी—और) अव्यय, समुच्चयबोधक। और। उदाहरण—'तर्क औ व्याधि'। (र० प्रि० ६-१४-१)। र० प्रि० २-१३-२। २-४-१। २-१५-३। ४-७-२। ५-२८-१। ८-४६-२। ९-८-२। ९-

१०-२। १०-१५-३। क० प्रि० ३-३८-१। ६-१६-३। ६-२५-३। ७-५-३। ७-५-४। ८-४२-३। ११-३६-१। ११-६७-१। १२-२-१। १४-४-१। रा० २-२५-१। ४-१६-१। ६-२६-१। ६-२६-१। ६-३६-४। ७-४५-३। १२ १८-१। ८-४-२। १२-२७-४। १३-३६-१। १४-३-१। १४-३२-१। १५-४-२। १६-१५-१। १६-१६-२। २२-१-१। ३३-६-१। ३४-४१-१। ३६-२५-३। ३६-३४-२।

औगुन—(अवगुण) (१) स० पु० एक०। दुर्गुण; बुरा स्वभाव। क० प्रि० १३-८-२। (२) स० पु० बहु०। बुरे गुण; दुष्ट गुण। र० प्रि० १३-११-१। रा० ७-३५-२। वि० गी० १४-३-२।

औटि—क्रियापद। पिघलकर। रा० ७-८-२।

औतरे—क्रियापद। अवतार लिए। रा० चं० १४-३८-१।

औध—सं० पु० एक०। अयोध्या। सूर्यवशी राजाओ की राजधानी। क० प्रि० ६-७३-४। रा० २१-२८-२। ३४-२३-२। ३४-२४-२।

औधपुरी—सं० स्त्री० एक०। अयोध्या नगरी। क० प्रि० १३-८-३।

औधि—(अवधि) स० स्त्री० एक०। (१) नियत काल। र० प्रि० ७-२०-२। ७-२१-१। (२) अतिम समय। क० प्रि० ५-३१-२। (३) स० स्त्री० बहु०। मानसिक व्यथाएँ। क० प्रि० ५-१५-३।

औलियौ ओडी—संयुक्तक्रिया। दुपट्टा या अचल पसारकर किसी वस्तु की भिक्षा माँगना; भीख माँगना। र० प्रि० ३-२५-१।

औषध—[स० ओष्√धा+क] सं० स्त्री० एक०। जड़ी बूटी, दवा। क० प्रि० ७-८-२। रा० १-३६-१। २७-४७-२। १७-४८-२। १७-५१-१। २०-८-१। २४-१३-१। २३-१३-१। वी० च० ६-५१। १६-४। २२-६८। ३२ ३। ३२-१२।

औषधीसु—सं० पु० एक०। चद्रमा। क० प्रि० १५-७३-३।

औसरे—स० पु० एक०। अवसर; मौका। वि० गी० १५-२७-१।

क

कंकननि—सं० पु० बहु०। ककण, कंगन। क० प्रि० ६-५६-३।

कंकन भग्न—[कम्√कण्+अच्] स० पु० एक०। चूडी का टुकडा। क० प्रि० ६-८-२।

कंगाल—[कम्√कल्+णिच+अच्] सं० पु० एक०। निर्धन। वी० च० २-३।

कंगूर—[का० कुगर] स० पु० एक०। कगूरा। रा० १७-६-१।

कंगूरनि लागि गए—सयुक्तक्रिया। कगूरो पर चढ गए। रा० १७-६-१।

कंगूरा—स० पु० एक०। गुंबद। रा० १७-७-१।

कंचन—(१) स० पु० एक०। धतूरा, सोना। र० प्रि० २-१२-१। क० प्रि०

१५-२६-२। १५-२७-२। १५-८७-१। रा० १६-११-३। २१-५३-१। ३०-१२-२। ३२-२६-२। वी० च० ६-५०। २०-७। २१-५। २२-५३। २४-१६। ३३-४। वि० गी० २९-१२-३। २१-३६-२। (२) विशेषण। विशेष्य—मणि। सोने मे जटित। क० प्रि० १५-२८-२। (३) विशेष्य—सुमन। सुनहले रंग के। वी० च० २०-७-१। ३३-४-१।

कंचन-कोट—स० पु० एक०। सोने के परकोट। रा० २२-६-१।

कंचन-भारी—स० स्त्री० एक०। सोने का बना हुआ जलपात्र। रा० ३०-२४-१।

कंचनधार—स० पु० एक०। सोने की वर्षा। वी० च० १६-४।

कंचुकनि—स० पु० बहु०। अँगरखा। वि० गी० १८-२६-१।

कंचुकि—[√कञ्च्+उकन्+इनि] स० पु० एक०। अंत पुर का रक्षक। छ० मा० १-६६-५।

कंचुकी—स० स्त्री० एक०। चोली। क० प्रि० ६-१४-३। वी० च० ५-३९। ८-१८।

कंचुकी सहित—विशेषण। विशेष्य—कुचनि। कंचुकी से युक्त। क० प्रि० ६-१४-३।

कंज—[कम्√जन्+अन्+ड] (१) सं० पु० एक०। सरोज; कमल। र० प्रि० ६-५५-२। १२-१५-४। १४-२२-१। क० प्रि० ३-८-१। ५-३१-१। ६-१९-४। रा० १३-२२-१। २०-६-१। वी० च० १५-१५। २२-३१। जहाँ० १५८। (२) स० पु० बहु०। कमल। र० प्रि० १३-५-१।

कंजज—[स० कज√जन्+ड] स० पु० एक०। ब्रह्मा। रा० ११-२४-२।

कंजनि—सं० पुं० बहु०। कमलपुष्प। र० प्रि० ८-३३-२। ११-१३-२। क० प्रि० १५-२६-१।

कंज-मुख—स० पुं० एक०। कमल के समान मुख। रा० १२-६२-४।

कंटक—[स० कट्+ण्वुल्—अक] (१) स० पु० एक०। काँटा। क० प्रि० ४-९-१। वी० च० ६-३१। २२-६९। २९-३१। (२) सं० पु० बहु०। काँटे। र० प्रि० ७-३२-३। ९-१६-२। १४-३२-२। क० प्रि० १४-४१-२। रा० २१-४०-१। ३१-४०-१। (३) विशेषण। विशेष्य—कानन। काँटो से युक्त। र० प्रि० ९-१६-२।

कंटक कलिता—विशेषण। विशेष्य—स्थान। काँटो से युक्त। र० प्रि० १४-३२-२।

कंटक-कानन—स० पु० बहु०। वन के काँटे। र० प्रि० ९-१६-२।

कंटकनि—स० पु० बहु०। काँटे। र० प्रि० ७-२८-३।

कंठ—[√कण्+ठ] (१) सं० पुं० एक०। गला। मुहावरा—'कठ लगाना'=आलिंगन करना। 'सिर मूँघि कठ लगाए आनन चूमि गोद दुऊ

धरे' (रा० च० ३८-१८-४) । र० प्रि० ५-२६-२ । १०-१६-३ । १४-१४-१ । क० प्रि० ४-१०-२ । ५-२७-३ । ५-३४-१ । १५-३७-१ । ८-३७-३ । १२-९-१ । १५-१०-१ । १५-३१-१ । १५-३२-२ । १५-१०६-२ । १६-६-१ । रा० २-६-४ । ७-५-२ । ७-८-४ । ७-३१-४ । ७-३३-१ । १०-३-२ । १०-२७-२ । ११-२९-२ । १९-५९-६ । २२-१०-९ । ३४-२२-२ । छं० मा० १-१६-२ । वि० गी० २-४-३ । ९-२-१ । ९-१५-२ । १३-५९-१ । १७-३९-२ । (२) स० पु० बहु० । गले । क० प्रि० ९-३२-४ । ११-५५-६ । (३) स० पुं० एक० । वाणी । रा० ११-२९-१ ।

कंठमाल—स० स्त्री० एक० । कठी, कठहार । र० प्रि० १४-१३-२ । क० प्रि० ३-३-२ । ४-१०-२ । १५-३३-२ । १५-८६-२ । रा० १५-४३-४ । १९-३०-१ । १९-४५-४ । २६-३२-२ । वी० च० २०-३० ।

कंठसिरी—स० स्त्री० एक० । कठश्री, गले मे पहनने का एक गहना । र० ६-४७-२ । रा० ११-२९-२ ।

कंठहि—स० पुं० एक० । स्वर । क० प्रि० १६-६७-१ ।

कंठु—स० पु० एक० । गला । क० प्रि० ५-२०-२ ।

कंत—[स० कान्त] सं० पुं० एक० । पति; भर्ता । र० प्रि० ३-३३-२ । क० प्रि० १६-४८-४ । छ० मा० १-१६-४ । १-१८-२ । वी० च० ३२-३८ । जहाँ० ५२-१५६ । वि० गी० २-१९-१ । ६-५५-१ । १६-१०-३ ।

कंतनि—स० पुं० बहु० । ईश्वर । क० प्रि० १०-२४-३ ।

कंद—[स० √कद+णिच्+अच्]—सं० पु० एक० । (१) गाँठदार या गूदेदार जड । र० प्रि० १-१-२ । ७-३१-१ । ८-३१-१ । क० प्रि० ७-३०-१ । (२) बादल । क० प्रि० ८-१०-३ । १४-३७-१ । १४-३७-३ । १५-२५-३ । १५-६८-१ । रा० ५-३१-३ । (३) मूल । र० प्रि० १-१४-३ । छ० मा० २-३१-३ ।

कंदरा—[सं० कंदर+टाप्] स० स्त्री० एक० । गुफा । वी० च० ४-१८-१७-३ । २१-२ ।

कंदुक—[कम्√दा+डु+कन्] स० पु० एक० । गेद । क० प्रि० ६-१३-२ । रा० ३८-१२-२ ।

कंदूरी—स० स्त्री० एक० । एक बेल और उसका फल । क० प्रि० ५-३०-२ ।

कंध—[स० स्कध] स० पु० एक० । बैल या भैस की गर्दन के ऊपर का भाग जिस पर जुआ रखा जाता है । क० प्रि० ४-२१-१ । १२-३३ । १४-२६ । १७-५० ।

कंधरा—स० स्त्री० एक० । गरदन । र० प्रि० ३-११-२ ।

कपजोगी—विशेषण । विशेष्य—ध्वज । कपायमान, चचल । रा० २७-५२-२ ।

कंपत है—संयुक्त क्रिया। कांपते हैं। रा० १३-८८-१।

कंपै—(१) विशेषण। विशेष्य—श्रीफल-पत्र। कपायमान; काँपनेवाले। रा० २०-३८-२। (२) क्रियापद। काँपता है। र० प्रि० ८-३६-१। रा० २-३८-२। २०-४३-१। २४-११-१।

कंप्यौ—क्रियापद। काँप उठा। रा० ७-४८-३।

कंबर—स० पु० एक०। कबल; कम्मल। क० प्रि० ५-१३-४।

कंबु—स० पु० एक०। शख। क० प्रि० १५-३२-४। १५-३३-२।

कंबु-कंठ—स० पु० एक०। शखरूपी गला। क० प्रि० १५-३३-२। रा० ६-५२-१।

कंभिलाइ—क्रियापद। कुम्हला गई। रा० ५-४०-१।

कुँग्ररि—स० स्त्री० एक०। कुमारी; अविवाहित स्त्री। वी० च० १३-६।

कंस—स० पुं० एक०। असुरविशेष, एक राक्षस। यह मथुरा के राजा उग्रसेन के पुत्र और कृष्ण के मातुल रहे। 'हरिवश' मे कस की उत्पत्ति इस प्रकार दी गई है—किसी समय ऋतुस्नाता उग्रसेन की पत्नी सुयामुन नामक पर्वत का दर्शन करने गई थी। यहाँ सौभपति दुर्मिल उन्हें देख काम के वश अधीर हुए। फिर कौशल से परिपाकर और उग्रसेन का रूप बना उन्होने उनके साथ रमण किया था। किंतु उग्रसेनपत्नी को अपने पति की अपेक्षा उनका गौरव अधिक देख संदेह हुआ और उन्होने 'कस्यत्वम्' कहकर परिचय पूछा। परिचय पाते ही दुर्मिल का वह तिरस्कार करने लगी। दुर्मिल ने कहा—अनेकानेक मानव पत्नियो ने व्यभिचार से ही देव सदृश पुत्र उत्पन्न किए है। सुतरा व्यभिचार से तुम्हे भी कोई दोष नही लग सकता। तुमने हमसे 'कस्यत्वम्' कहकर परिचय पूछा है। इसी से तुम्हारे कंस नामक शत्रुविजयी पुत्र उत्पन्न होगा। (हरिवंश, ८५ अ०)। दुराचारी कस वय प्राप्त होने पर अपने पिता को कारारुद्ध कर स्वय राजा बना। यदुवशीय वसुदेव के साथ कंस की भगिनी देवकी का विवाह होते समय आकाशवाणी सुन पडी—देवकी के अष्टम गर्भ से उत्पन्न होनेवाला पुत्र कस को मारेगा। इस प्रकार देववाणी सुनकर, उस असुर ने भगिनी और भगिनीपति वासुदेव को कारारुद्ध किया था। फिर कस ने एक एक कर उनके सात पुत्रो को मार डाला। वासुदेव कौशल से अष्टम पुत्र कृष्ण को वृंदावन मे नदगोप के निकट छोड आए थे। उन्ही श्रीकृष्ण के हाथ कस मारा गया। (हिंदी विश्वकोश)। क० प्रि० ११-८०-२। १६-१७-२। वी० च० २-६। २-४७।

कंसराज—स० पु० एक०। राक्षस राजा कस का देश। क० प्रि० १६-५४-३।

क—स० पु० एक०। जल। वि० गी० १०-१२-५।

ककुटै—क्रियापद। सिकोडे हुए। र० प्रि० ११-१३-२।

ककुद—[सं० क√कु (शब्द) क्विप] स० पु० एक०। बैल के कंधे और पीठ के बीचवाला ऊँचा, गोल और मासल भाग जिसे 'डिल्ला' कहते है। क० प्रि० ६-१३-१।

ककै—(१) क्रियापद। करके। र० प्रि० ३-७३-१। २०-१०-१। १०-१५-१। (२) सयुक्त क्रिया। करके। र० प्रि० ६-२३-२।

कक्षासिखा—स० स्त्री० एक०। काक पक्ष; पाटी। क० प्रि० ११-७-२।

कच—स० पु० बहु०। (१) बाल, केश। क० प्रि० ५-२५-१। १४-१०-४। १६-८४-२। (२) स्तन। क० प्रि० ६-१५-२।

कचनि—स० पु० बहु०। बाल; केश। र० प्रि० ६-२५-३। १२-१३-४। क० प्रि० ६-३६-३।

कच्छवाह—स० पु० एक०। राजपूतो की एक उपजाति। वी० च० ४-८। ८-३४।

कचोरा—स० पु० बहु०। कटोरे, प्याले। क० प्रि० १५-६२-२।

कच्छप—स० पु० एक०। कछुआ। रा० ३७-२-३। छं० मा० २-२०-३। वी० च० १५-१६। वि० गी० १-२०-१। १२-२०-३।

कच्छप-वेप—स० पु० एक०। कूर्मावतार। रा० २०-२०-१।

कछु—(१) विशेषण। विशेष्य—कुटिल। किंचित्। र० प्रि० २-४-२। ३-१३-२। ८-११-२। ८-२३-३। ८-४४-४। ६-१४-१। ६-२०-१। १०-१६-४। ११-२-२। १२-२६-४। १ -३-२। क० प्रि० १०-१३ १। ११-२८-१। १२-६-४। १३-४०-२। १४-४७-४। रा० २४-२७-२। २५-३६-१। ३३-१६-१। ३३-१६-२। ३५-३-१। ३५-३-२। ३५-१७-१। ३७-१-१। ३७-१२-१। वी० ३-५५-१। ५-६७-२। ६-३४-२। ८-७-२। ६-३८-१। १०-६४-१। १०-६४-२। ११-५४-१। १३-३-४। २८-४५-१। वि० गी० २-१८-१। ४-४१-२। ७-५-१। ८-१८-१। ८-२३-२। १०-८-३। ११-१६-१। १३-११-१। १४-५६-१। १७-४२-१। २१-४०-१। (२) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण। (अ) थोडी सख्या या मात्रा का। (आ) जरा, थोडा। उदा० 'बात कहै न सुनै कछु काहू (र० प्रि० १-३७-१)। र० प्रि० १-२७-२। २-४-२। ३-१३-२। ३-२६-१। ४-१६-२। ५-१२-४। ६-३२-४। ७ २४-१। ८-१२-४। ८-२५ १। -२७-२। ८-२६ ३। ८-३४-४। ८-३७ २। ८-४२-३। ६-५-१। १०-१६-४। १०-१७-३। १०-३३-२। ११-२-२। १४-५-१। १४-११-१। १४-१४-३। क० प्रि० ३-५२-१। ११-३-१। ११ २४-१। ११-२८-१। ११-१४-१। ११-५४-२। ११-७८-२। ११-८३-१। १ -७-४। १२-२० १। १३-५-१। १३-२५-२। १३-३४-१। १३-३६-१। १३-४०-१।

१४-५-१ । १४-४७-४ । १५-१२५-१ । रा० १-२६-२ । १-४४-२ । २-२६-३ । ३-२६-२ । ३-३४-४ । ४-५-३ । ४-२७-२ । ५-६-१ । ५-४५-२ । ६-३०-२ । ६-४७-१ । ११-४-४ । ११-३२-४ । १२-३५-१ । १३-४१-४ । १२-६६-२ । १३-११-२ । १३-४१-१ । १३-५७-१ ।

कछु कुटिल—विशेषण । विशेष्य—भृकुटि । किंचित् टेढी । रा० ६-४७-१ ।

कछू—(१) विशेषण । विशेष्य—दिन । कुछ । र० प्रि० १-२४-२ । ३-३७-२ । ६-५३-४ । ७-२४-१ । ८-५२-१ । ६-१७-२ । ११-३०-४ । क० प्रि० १२-४-२ । १३-५-१ । रा० १३ ४१-१ । १३-७६-१ । ३३-२२-२ । वी० च० ५-१३-१ । ६-४-१ । १४-२५-१ । जहाँ० ६२-१ । वि० गी० ३-५-१ । १३-२५-१ । १७-२६-२ । (२) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण । (सस्कृत—किंकश्चित्, प्राकृत–कोथि हिंदी—कुछ) । कोई वस्तु, कोई काम, कोई विशेष बात । उदा० 'न कछू कर कोरो·· ' (र० प्रि० १-२७-२) । क० प्रि० ३-४६-१ । १०-२२-३ । ११-६१-१ । रा० ४-१६-१ । १२-२७-३ । १६-१८-१ । वि० गी० १३-३-१ । १३-३३-२ । १५-२५-२ ।

कछोआ—सं० पुं० एक० । आसाम प्रात का एक जिला । क० प्रि० १-४०-१ ।

कछोधा—स० पु० एक० । एक गढ का नाम । वी० च० २-४४ ।

कछौटी—सं० स्त्री० एक० । कछनी । वि० गी० ९-३८-३ ।

कज्जल—स० पु० एक० । (१) अंजन; काजल । र० प्रि० ३-४३-२ । क० प्रि० ४-१७-२ । १५-३५-१ । (२) श्यामता । र० प्रि० १५-७-१ ।

कज्जलकलित—विशेषण । विशेष्य—लोचन । काजल से सुशोभित । र० प्रि० ३-४३-२ । क० प्रि० ४-१७-२ ।

कज्जल-नीर—स० पु० एक० । कजरारी आँख का आँसू । क० प्रि० ४-२२-१ । ५-२२-२ ।

कज्जल वलित—विशेषण । विशेष्य—चक्का व्यूह । रा० २४-३-१ । २५-१०-१ ।

कटक—स० पु० बहु० । सेना । र० प्रि० १-१७-५ । वि० गी० ११-५४-२ ।

कटाक्ष—(१) सं० पु० एक० । तिरछी नजर । क० प्रि० ६-८-२ । ६-१५-१ । ६-२६-१ । ६-२८-३ । ११-३५-३ । रा० ५-४२-३ । ६-४४-४ । २८-१६-१ । (२) स० पु० बहु० । तिरछी निगाहे । र० प्रि० ८-१८-३ । १२-२१-१ । १४-६-२ । १४-३५-३ । क० प्रि० १३-१०-२ । १३ २०-२ । ५-६२-४ ।

कटाक्ष-बान—सं० पुं० बहु० । तिरछी नजर रूपी शर । र० प्रि० १४-३५-३ ।

कटाछ—[स० कट√अक्ष्+अच्] । सं० पु० एक० । कटाक्ष । छं० मा० । १-७०-६ ।

कटारा—स० पुं० एक० । कटार; एक दुधारा हथियार । रा० १४-४६-३ ।

कटि—[सं० कट्+इन्]। (१) स० स्त्री० एक०। कमर। र० प्रि० ३-११-१। ३-२१-१। १०-३६-३। ६-३१-१। १२-४-२। १३-१४-१। क०प्रि० ६-१४-४। १२-६-१। १५-२१-१। १५-२२-४। रा० ५-४१-१। ११-२८-२। २१-५७-२। २८-१५-४। वी० च० ५-६६। ६-१५। ८-२३। ६-६। ६-३०। १६-३२। २२-८१। २२-८६। ३३-२०। जहाँ० ११६। वि० गी० ३-१०-२। १०-१३-२। (२) स० स्त्री० बहु०। कमर। क० प्रि० ६-६-१। (३) क्रियापद। काटना। रा० ३८-११-१।

कटिकेतटु—सं० पुं० एक०। कमर। र० प्रि० ६-३१-१। क० प्रि० १३-४-१। वी० च० ६-५१-२।

कटी—क्रियापद। कट जाती है। रा० ११-१८-३।

कटु—[सं० कट+टु] विशेपण। विशेष्य—बात। बुरी लगनेवाली, अनिष्ट। र० प्रि० ६-५३-१। क० प्रि० १५-३८-२। वी० च० ६-५१-२।

कटुक—विशेपण। विशेष्य—प्रताप। कटु। वी० च० २६-३१-२।

कटुकर्न—विशेपण। विशेष्य—कवित्त। जो सुनने मे कटु लगे। क० प्रि० ३-४७-२।

कटे—क्रियापद। कटे। रा० १६-११-१। ३६-१५-३। र० प्रि० ६-१२-४। क० प्रि० ६-१६-४।

कठिन—विशेपण। विशेष्य—दु:ख। र० प्रि० ७-२०-४। १४-३४-२। क० प्रि० ६-२०-१। ६-२७-२। १४-३०-३। १४-२७-३। कठोर; अत्यधिक। १५-३८-२। १६-२३-२। क० प्रि० ६-१-२। ६-६६-१। १०-१४-४। १५-२७-२। रा० १-१-१। ५-३६-१। २८-१६-१। ३१-३५-१। ३४-३३-२। शि० न० २०-४। वी० च० १४-४५-१। १४-४८-२। १७-५७-१। २२-८४-१। वी० च० १-२२-४। ८ १८-१। २२-४५-२। वि० गी० ६-२०-२। २१-५४-१। जहाँ० १८६-४।

कठेठो—विशेपण। विशेष्य—बातें। कठोर। वी० च० १-२२-४। र० प्रि० ६-१२-४। क० प्रि० ६-१६-४।

कठोर—विशेपण। विशेष्य—पिनाक। कठिन। र० प्रि० ७-२०-४। १४-३४-२। क० प्रि० ६-२०-१। ६-२७-२। १४-३०-३। १४-२७-३। १५-३८-२। १६-२३-२ रा० ५-३६-१। २८-१६-१। शि० न० २०-४। वी० च० १-२२-४। ८-१८-१। २२-४५-२। जहाँ० १८६-४।

कठोरमन—विशेपण। विशेष्य—लोभ। कठोर मनवाला। वी० च० १-२२-४।

कढ़ीं—विशेपण। विशेष्य—तरवार। तीक्ष्ण। वि० गी० १०७-१।

कतहुँ—(हिं० कत+हूँ) स्थानवाचक क्रियाविशेपण। किसी ओर, कहीं। उदा० 'कतहुँ जाहु...'। रा० ५-६-२।

कथा—[कथ+अड्-टाप्]। स० स्त्री० एक०। (१) कहानी। र० प्रि० १४-३८-२। रा० १-१६-१। ३-४-१।

३४ २६-१ । (२) बात । रा० २-१८-५ । ३-११-२ । ३६-२४-१ ।

कथान—स० स्त्री० बहु० । कहानियाँ । र० प्रि० १४-३४-३ ।

कथा विधान—स० पु० एक० । कल्पित कहानी का प्रबध । वि० गी० ५-१२-१ ।

कथिये—क्रियापद । कहते है; कही जाती है । रा० ३-४-२ ।

कदंब—[√कद+अम्बच्] स० पु० एक० । एक सुदर पेड जिसमे गोल, पीले फूल लगते हैं । क० प्रि० ७-३१-२

कदन—[√कद+णिच+ल्युट] । स० पु० एक० । विनाश । क० प्रि० १६-८-४ ।

कदलि—[कद+कलच्-डीप्] । स० स्त्री० एक० । केले का वृक्ष । रा० २३-३३-१ । र० प्रि० ३-१०-१ । वी० च० २५-२८ । २६-३५ ।

कन—[कण] । स० पु० एक० । कण, बूँद । रा० ३२-४१-२ । वि० गी० १३-१६-२ । १५-८-१ ।

कनक—(१) स० पु० एक० । सोना, धतूरा । क० प्रि० ३-१०-१ । ५-१८-१ । रा० ७-८-२ । २३-१६-३ । वी० च० २०-५ । २०-२६ । २३-८ । २६-१ । २६-२ । २६-३ । २६-२६ । ३३-३० । वि० गी० १५-३१-१ । (२) विशेषण (अ) विशेष्य—कुरग । सोने का । क० प्रि० १५-६२-२ । १५-६६-१ । रा० १८-३१-१ । वी० च० २३-१२-१ । १६-३-१ । (आ) विशेष्य—कलहसिनी । सुनहले रग के । क० प्रि० १५-१७-२ ।

कनक-कचोरा—स० पु० बहु० । सोने के कटोरे । क० प्रि० १५-६२-२ ।

कनक-कलस-रुचि—स० स्त्री० एक० । सोने के कलश की आभा । क० प्रि० १५-६६-१ ।

कनक की पट्टिका—स० स्त्री० एक० । स्वर्णशिला । क० प्रि० १५-३१-२ ।

कनक-कुरंग—स० पु० एक० । स्वर्ण-मृग । रा० २१-१४-२ ।

कनक-केदरु—स० पु० एक० । सोने का थाला । क० प्रि० १५-६८-१ ।

कनक-तुला—स० स्त्री० एक० । सोने की तुला । छ० मा० २-७-१ ।

कनक-पट्टिका—स० स्त्री० एक० । सोने की शिला । क० प्रि० १५-६७-१ ।

कनक-पत्र—स० पु० बहु० । कर्ण फूल । र० प्रि० १५-५-१ ।

कनक-मंदिर—स० पु० एक० । कनक भवन, राजा जनक के महल का नाम । रा० ६-२८-२ ।

कनकमय—विशेषण । विशेष्य—सदन । सोने से बना हुआ । वी० च० २०-२७-१ ।

कनकमृग—विशेषण । विशेष्य—मारीच । सुनहले रग का मृग । रा० १९-२०-१ ।

कनक कन—स० पु० एक० । सोने का कण । वि० गी० १५-३०-१ ।

कनक-बसन—स० पु० एक० । पीताम्बर । क० प्रि० १६-८-२ ।

कनक-सलाका—स० स्त्री० एक०। सोने की सलाई। क० प्रि० १५-६१-१।

कननि—स० पु० वहु०। कणों को। वि० गी० ८-२६-४।

कनियाँ—स० स्त्री० वहु०। कन्याएँ; लडकियाँ; युवतियाँ। र० प्रि० ५-१२-४।

कनेर—स० पु० एक०। एक पौधा जिसमे सफेद, पीले और लाल रग के फूल लगते हैं। र० प्रि० ६-११-३। क० प्रि० १६-६-३।

कनै—स० पु० एक०। छोटा टुकडा। क० प्रि० १६-१-२।

कनौज—स० पु० एक०। राज्यविशेष। रा० ३४-१६-१। जहाँ० १०१।

कर्न—(१) स० पु० एक०। कर्ण, अगदेश का राजा जो अपनी दानवुद्धि के लिये प्रसिद्ध था। वी० च० १-१८। ३-१६। ३-२५। ३-३१। ३-३२। (२) क्रियापद। कराने। रा० ३५-३।

कर्नफूल—स० पु० एक०। कान मे पहनेवाला आभूषण। वी० च० २०-३०।

कर्नाट—स० पु० एक०। कर्नाट देश। जहाँ० १०१।

कन्यका–[कन्या + कन्—टाप्] सं० स्त्री० एक०। पुत्री। रा० ६-२३-२। २०-४-२। ३८-५-१। वि० गी० ८-१२-३।

कन्यनि—सं० स्त्री० वहु०। कन्याएँ। वि० गी० ६-५-२। ८-२३-४।

कन्या—स० स्त्री० वहु०। पाँच कुमारियाँ—अहल्या, द्रौपदी, कुती, तारा और मदोदरी। क० प्रि० ११-१३-२। रा० ६-८-१। वी० च० २-१७। २६-४२। वि० गी० १६-५-२।

कन्व—स० पु० एक०। कण्व ऋषि। रा० २३-५-१।

कन्हर—स० पु० एक०। कन्हरदास; रामशाह का एक दरवारी। वी० च० १८-३०।

कन्हरदास—स० पु० एक०। देखिए—'कन्हर'। वी० च० १८-२६। ३३-२१।

कन्हाई—स० पु० एक०। श्रीकृष्ण। र० प्रि० २-५-४। ३-३८-४। ३-५८-१। ८-५-१। १०-१०-१। १०-२४-४। १२-६-२।

कपट—(क√पट् + अच्) (१) सं० पु० एक०। छल; बनावटी व्यवहार। र० प्रि० ३-८-१। १४-२३-३। १६-४-२। १६-११-१। वी० च० १-२२। ४-२। वि० गी० १५-४८-२। (२) विशेपण। विशेष्य—नकार सर। कपटता से पूर्ण। क० प्रि० १०-५-१।

कपटकृपानी—विशेषण। विशेष्य—बानी। कपट के लिये कृपाणस्वरूप, कपटविनाशक। र० प्रि० १६-११-१।

कपटता—[क√पट् (आच्छादन) +अच् +ता] विशेषण। विशेष्य—कान्ह। कपटी। र० प्रि० ७-४१-१।

कपट-नट—स० पु० एक०। छल कपटवाला नृत्यकार। रा० २३-३२-२।

कपटनिधान—विशेपण। विशेष्य—कान्ह। कपटी। र० प्रि० २-१३-३।

कपट नृत्यकारी की कली—विशेषण। विशेष्य—पुरुषोत्तम की नारी (राजश्री)। कपटतापूर्ण नट की नाट्यशाला। रा० २३-३२-२।

कपटहर—विशेषण। विशेष्य—राधे तेरो नाम, उचाट मश। कपट को दूर करनेवाला। र० प्रि० ४-१८-१।

कपटी—स० स्त्री० एक०। धान की फसल का एक कीड़ा; एक अँगुली की मात्रा। क० प्रि० ६-९-२।

कपटौ—स० पुं० एक०। छल; धोखा। र० प्रि० ५-२१-४।

कपट्ट—स० पु० एक०। बनावटी व्यवहार। र० प्रि० ७-४१-१।

कपत—क्रियापद। काँपते। र० प्रि० ११-१८-२।

कपत है—संयुक्त क्रिया। काँपते हैं। र० प्रि० ११-१८-२।

कपर्द—[क+पर√र्द+क] स० पु० एक०। जटाजूट। वि० गी० ६-४-२।

कपाट—[क√पट्+णिच्+अव्] (१) स० पु० एक०। किवाड। (२) स० पु० वहु०। किवाड। क० प्रि० ६-१६-२।

कपाटि डार्‍यो—संयुक्त क्रिया। नोच लिया। र० प्रि० १४-२३-५।

कपाल—[क√पाल+अण] स० पु० वहु०। मुंड; खोपडी। क० प्रि० ६-२५-१। रा० ५-१०-५। वी० च० ११-२४। वि० गी० ८-२३-२।

कपालक—स० पुं० एक०। कापालिक। वि० गी० १२-७-३।

कपालनाथ—(१) सं० पु० एक०। शिव। वि० गी० ११-४०-३। (२) विशेषण। विशेष्य—विश्वनाथ। कपाली, कपाल धारण किए हुए। (शिव के इस नाम के साथ एक लीला सश्लिष्ट है। वामन पुराण मे लिखा है कि पूर्व काल मे सृष्टि के नष्ट होने पर परब्रह्म सहस्र वर्ष नीद मे पडे थे। नीद टूटने पर उन्होने रजोगुण से पचवदन ब्रह्म की और तमोगुण से पचवदन शंकर की सृष्टि की। शकर ने उत्पन्न होते ही अक्षमाला लेकर योग आरभ कर दिया। भगवान् ने शकर की योगप्रभा देखकर समझा कि इनसे इस प्रकार सृष्टि का कार्य नही चलेगा। तब उन्होने अहंकार की सृष्टि की। ब्रह्म और शंकर अहकार के वशीभूत हुए। दोनो मे भीषण कलह उपस्थित हुआ। शकर ने अपने नख से ब्रह्म का एक मस्तक काट डाला। तभी से ब्रह्मा चतुर्मुख हुए तथा वह छिन्न मस्तक शकर के करतल मे संलग्न रहा। उसी समय से शकर इस नाम से प्रसिद्ध हुए। पीछे उनके शरीर मे ब्रह्महत्या का पाप घुसने लगा जिसे आगे चलकर शिव के तपस्या करने पर विष्णु ने दूर किया (वामन पुराण)। वि० गी० ११ ४०-३।

कपालनि—स० पु० एक०। भाग्यलेख। वि० गी० १४-२७-३।

कपालथली—स० स्त्री० एक०। मुंडमाला। क० प्रि० ६-५४-१।

कपाली [कपाल+इति]—सं० पुं०

एक०। शिव। देखिए 'कपालनाथ'। क० प्रि० ५-२७-३। वी० च० ३२-२६।

कपास [सं० कार्पास]—स० स्त्री० एक०। एक पौधा जिसके डोडे से रुई निकलती है। क० प्रि० ५-६-२।

कपि [सं० कम्प (गति)+इ]—सं० पुं० एक०। (१) बंदर। क० प्रि० १६-४७-३। रा० १४-१६-२। १६-२६-१। २१-५२-२। २२-१७-२। २२-१८-१। (२) सुग्रीव। रा० १२-३८-१। (३) शुक्राचार्य। रा० ३-८-३। र० बा० १-२७-४। (४) हनुमान। रा० १३-७२-१।

कपिकुल—सं० पुं० बहु०। वानरसमूह। रा० २१-५१-१।

कपि-दल—सं० पु० बहु०। वानरसमूह। रा० १७-८-२। १७-४२-१।

कपि पुंज—सं० पु० बहु०। कपिसेना; वानरसमूह। क० प्रि० ६-७३-१। रा० १६-१५-१। १७-२६-१।

कपिला [सं० कपिल+अच्]—सं० स्त्री० एक०। भूरे या सफेद रंग की गाय। वि० गी० ८-३-२।

कपि-सागर—सं० पु० एक०। समुद्र के समान वानरसेना। रा० १४-४०-१।

कपीस—सं० पुं० एक०। वानरश्रेष्ठ। रा० १८-२१-१। २१-२४-२।

कपुर—सं० पुं० एक०। कपूर; कर्पूर। क० प्रि० १५-८४-१।

कपूर—सं० पुं० एक०। घनसार; स्फटिक के रंग रूप का एक गंधद्रव्य जो रखने से कुछ दिनो मे उड जाता है। र० प्रि० ६-४६-४। १३-३-३। क० प्रि० ५-३६-१। ६-१२-१। ११-४८-४। १२-२४-१। रा० ८-१६-४। ३६-१५-४। वी० च० ८-४६। २०-१५। २६-४६। ३२-२८। जहाँ० १५०। १८५।

कपूरधूर—(१) स० पुं० एक०। वस्त्र-विशेष। क० प्रि० ६-१०-३। (२) स० स्त्री० एक०। घनसार की रज। क० प्रि० १०-३४-३।

कपोत—[सं०√कव् (वर्ण)+ओतच्]—स० पुं० एक०। (१) कबूतर। र० प्रि० ८-२३-३। १४-१८-२। १४-२२-१। क० प्रि० ७-६-२। ८-३४-१। १०-३४-१। १४-१७-३। (२) कबूतर का भूरा रंग। क० प्रि० ५१-३१-१।

कपोत-द्युति—स० स्त्री० एक०। कबूतर के भूरे रग की छवि। क० प्रि० १५-३१-१।

कपोतनी—सं० पुं० बहु०। कबूतर। क० प्रि० ५-३४-२।

कपोल [स० √कम्प्+ओलच्]—सं० पु० एक०। गाल। र० प्रि० ५-३१-४। ६-३१-३। ८-३८-१। ११-५-२। क० प्रि० ६-५७-२। ६-१२-२। ११-७१-२। १२-६-२। १३-४१-४। १५-५०-१। १५-५१-४। रा० ६-४३-१। ३२-३६-२। छं० मा० २-३४-५। वी० च० २०-१३। २२-६१। २५-१२। २५-२०।

कपोलनि—सं० पुं० बहु०। गाल। र० प्रि० ३-१३-३। ६-५५-४। १४-७-२। १४-१३-३। क० प्रि० ३-१२-१। ३-१३-४। वि० गी० ८-४२-२।

कपोल-फलक—स० पुं० एक०। गाल-रूपी देश। र० प्रि० ११-५-२।

कपूर—सं० पुं० एक०। कपूर। वी० च० ५-४१।

कब—कालवाचक क्रियाविशेषण। (सं०—कदा, हिं०—कब) (१) किस समय। (२) नही, कदापि नही। उदा०। 'दीने कब ?…' (वी० च० १-५३-२) र० प्रि० १-२३-३। २-८-३। ४-१२-२। ५-२३-१। ६-३४-३। ६-३४-४। ८-१८-१। ११-८-१। क० प्रि० ३-३८-३। ६-६८-४। ९-१७-१। ११-६२-३। १६-८३-१। वी० च० १-५३-२। १३-२०-४। १४-३१-१।

कबंध—[क√बध+अण]। स० पुं० एक०। (१) सिर कटा शरीर। क० प्रि० ८-२९-२। (२) एक गंधर्व जो शाप के कारण राक्षस बना और राम के हाथो मारा गया। क० प्रि० ११-५५-४। रा० १२-३२-२। १९-५१-४। २७-१३-४। वी० च० ८-४४।

कबरी—सं० स्त्री० एक०। चोरी। रा० ११-२८-१। ३१-५-१। वी० च० २५-१। वि० गी० १४-२७-१।

कबहुँ—क्रियाविशेषण, कालवाचक। कब; कभी तो। उदा०— 'जीतियो कबहूँ' (वि० गी० १६-८८-१)। रा० १२-१६-२। १३-४३-२। १५-१५-३। १६-१९-१। १६-२४-३। १८-७-२। ३०-१३-२। ३३-७-२। ३६-२१-१। छं० मा० १-४९-४। वी० च० १-२६-२। २-४५-१। १०-२५-१। १३-७-४। १५-२९-१। १५-२९-२। १७-१५-१। २७-१९-२। २७-२१-१। वि० गी० ६-५७-४। ८-१४-३। १०-८-३। १६-१०४-२। १६-३६-२। २१-१२-१। २१-१३-१।

कबाल—स० पु० एक०। संपत्ति दूसरे को देने का दस्तावेज, बैनामा; दान-पत्र। क० प्रि० ३-१३-२।

कबि—सं० पु० एक०। (१) कवि। रा० १-४२-१। ३-४-६। ६-४५-३। १३-२१-१। १४-४१-३। २९-२४-७। २९-४४-२। ३०-२१-६। (२) शुक्र। रा० १-४२-१। ३१-१९-२।

कबिजन—सं० पु० बहु०। (१) कवि लोग। छं० मा० १-४३-२। (२) कबि—बुध। जन—गन। वि० गी० १-१४-२।

कबित्त—स० पुं० एक०। कवित्त। छं० मा० १-२८-१। २-५-१। २-२३-२। २-२८-१। जहाँ० १२८। वि० गी० १०-१-१। १३-४१-४।

कबिता—सं० स्त्री० एक०। कविता। र० बा० १-३५-५। १-३६-५। जहाँ० १९३। १९८।

कबिराज— स० पु० एक०। श्रेष्ठ कवि। रा० ७-१-२। ३५-८-३। छं० मा० १-३८-३।

कबै—कालवाचक क्रियाविशेषण। किस समय; कब। उदा०—'काहु कबै…' (र० प्रि० ३-७१-४)।

कम—स० पुं० एक०। कर्म। वी० च० २८-६। २६-४३। ३२-१६। ३२-४४। जहां० १६८।

कमंडल—सं० पुं० एक०। साधु सन्यासियो का दरियाई। क० प्रि० १४-३५-४। रा० ७-१५-१। ३२-४८-२। छ० मा० २-४५-३। वी० च० २६-४६। वि० गी० १६-६४-२।

कमठ [सं० √कम्+अठन्]—सं० पुं० एक०। कछुआ। क० प्रि० ६-२१-१। र० बा० १-३७-२।

कमण्डलु—स० पु० एक०। कमडल। वि० गी० ११-११-३। १६-३-२। १६-४६-१। १६-६६-१।

कमनीय [सं० √कम्+अनीयर्]—विशेषण। विशेष्य—कदुक। सुदर। र० प्रि० ४-११-३। ४-१६-२। क० प्रि० १-५८-२। शि० न० ११-४। वी० च० १७-२३-२।

कमल [सं० √कम्+णिङ्+कलच्]—स० पु० एक०। (१) पुष्पविशेष, पकज; सरोज। र० प्रि० ६-६ ३। ६-२५-१। ११-४-३। १२-१६-३। १२-२३-१। क० प्रि० १-४०-१। ३-३६-२। ३-४५-३। ३-५४-२। ५-४६-२। ६-५-४। ७-३२-२। ७-३६-१। ८-४१-४। ११-३५-२। १४-२३-४। १४-३७-१। १४-३७ २। १४-३७-४। १४-४१-२। १४-४३-१। १४-४५-२। १५-७२-१। १५-८४-१। १६-८-४। (२) पुडरीक। क० प्रि० ५-६-२। ५-२७-३। ६-३६-१। (३) स० पु० बहु०। अबुज। र० प्रि० ८-३६-४। क० प्रि० ७-३३-१। ११-३०-२। ११-६६-४। १३-१३-१। १४-८-१। १४-२७-२। १५-६-१। १५-६-२। १५-२४-१। (४) स० पुं० एक०। (अ) पुष्पविशेष—लक्ष्मी देवी के पक्ष मे। (आ) हाथ का एक आभूषण जो कलाई पर बांधा जाता है—प्रवीणराय के पक्ष मे। क० प्रि० १-५८-२। (५) (अ) पुष्पविशेष—लाल रग का बोधक। (आ) जल—सफेद रंग का बोधक। क० प्रि० ५-४६-२। (६) (अ) पुष्पविशेष—शारदा के पक्ष मे। (आ) जल—शरद ऋतु के पक्ष मे। क० प्रि० ७-३४-३।

कमल-कुल—स० पुं० बहु०। पुष्पो का समूह। क० प्रि० ७-३३-१। १४-८-१। रा० ३२-१६-१।

कमल कोस—सं० पु० एक। पकज का अडकोश। क० प्रि० ५-१८ १। १५-८७-२। रा० २६-२०-६।

कमलदल—(१) स० पुं० एक०। कमल का पत्ता। वि० गी० १-१८-२। (२) स० पु० बहु०। कमल की पखुडियाँ। वि० गी० १०-१२-४। रा० ७-१४-३। १३-१६-२। (३) (अ) कमल की पखुडियाँ—कालिका के पक्ष मे। (आ) कमलो के समूह—वर्षा के पक्ष मे। क० प्रि० ७ ३२-२। (४) (अ) कमल की पखुडियाँ—विरहिणी के पक्ष मे। (आ) कमलो के समूह—हेमत के पक्ष मे। क० प्रि० ७-३६-१।

कमल-नयन—(१) स० पु० एक०।

कमल की पंखुड़ी सी आँखोवाला—श्रीकृष्ण। क० प्रि० ११-६९-४। (२) सं० पुं० बहु०। सरोजरूपी नेत्र। क० प्रि० ११-६९-४।

कमल नेत्रा—स० पुं० एक०। श्रेष्ठ कमल। रा० २३-२७-२।

कमलनि—स० स्त्री० एक०। कुमुदिनी। र० प्रि० ११-१६-२।

कमल नैन—स० पुं० एक०। श्रीकृष्ण। र० प्रि० ११-४-३। क० प्रि० ८-४१-४। १६-३६-१।

कमलनैनी— विशेषण। विशेष्य—राधिका। कमल के समान नेत्रवाली। र० प्रि० ११-४-३१।

कमलपानि— विशेषण। विशेष्य—नारायणदास। कमल जैसे हाथोवाला। वी० च० ३२-२४-१।

कमलपुर—स० पुं० एक०। सरोवर। वी० च० १६-१५।

कमल-भव—स० पु० एक०। ब्रह्मा देव 'कमलासन'। र० प्रि० १०-८-१।

कमलमित्र—स० पुं० एक०। सूर्य। जहाँ० ११६।

कमल-मूल—(१) स० पु० एक०। कमल की जड। क० प्रि० १५-१७-१। (२) सं० पुं० बहु०। कमल की जड़े। क० प्रि० १५-१५-३।

कमल लोचनि—सं० स्त्री० एक०। कमल जैसी नेत्रोंवाली। वि० गी० १६-१२३-२।

कमल-वदन—सं० पु० एक०। कमल-रूपी मुख। क० प्रि० १३-१६-४।

कमला—[कमल+टाप्]। सं० स्त्री० एक०। (१) लक्ष्मी देवी। र० प्रि० ६-६-३। ६-१५-१। ७-१२-४। ११-१६-२। १४-२०-३। क० प्रि० ५-१२-१। ६-३६-१। १४-४३-१। १५-१०-३। १५-४१-१। १५-११४-२। (२) कुमुदिनी। क० प्रि० १६-६०-२। (३) लक्ष्मी। रा० ६-४५-४। १२-५-३। ३०-११-२। ३२-१६-१। छ० म० १-७०-४। वी० च० २२-६०। २३-२७। वि० गी० १-२-१। १०-७-३। १०-१७-१।

कमलाकर— (१) स० पु० एक०। कमलो से भरा तालाब। र० प्रि० ६-६ ३। (२) स० पुं० बहु०। (१) कमलो के समूह—चंद्रमा के पक्ष मे। (२) लक्ष्मी के हाथ—नारद के पक्ष मे। क० प्रि० ७-२६-१। (३) (१) लक्ष्मी के हाथ—नरसिह के पक्ष मे। (२) वारागनाओ के हाथ—अमरसिह के पक्ष मे। क० प्रि० ११-३०-२। (४) कमलो के समूह। क० प्रि० १५-११४-१।

कमलाकर—सं० पुं० एक०। (१) सरोवर। वी० च० १६-३२। (२) विशेषण। विशेष्य—पपासर। कमलो की खानि। रा० १२-५०-४।

कमलाग्रजा—स० स्त्री० एक०। लक्ष्मी की बडी बहन—दरिद्रा। र० प्रि० ११-१६-२।

कमलानाथ—स० पु० एक०। विष्णु। वी० च० २७-१९।

कमला-निवास—स० पु० एक०। लक्ष्मी का घर। क० प्रि० १५-१०-३।

कमलापति—स० पु० एक०। (१) नारायण, विष्णु। रा० ५-२८-२। ६-४५-४। (२) राम। रा० १२-५०-४।

कमलासन—स० पु० एक०। (१) ब्रह्मा—स्वर्ग के पक्ष मे। सरोज और आसना अर्थात् विजयसार का वृक्ष—नाग के पक्ष मे। (कमलासन—ब्रह्मा)। ब्रह्मोपनिषद मे लिखा है—ब्रह्मा के अवस्थान के चार स्थान है—नाभि, हृदय, कंठ और मूर्धा। इन चारो स्थानो के क्रमश जाग्रत, स्वप्न, सुपुप्त, और तुरीय अवस्थाओ मे पर-ब्रह्म प्रकट होते हैं। इनके नाम भी क्रमश ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र और पर-माक्षर हैं। 'अग्निपुराण' के मतानुसार जब परब्रह्म ने सृष्टि के पालन की इच्छा से विष्णु की सृष्टि की थी तब विष्णु की सुप्त अवस्थाओ मे उनकी नाभि से एक प्रकाड पद्म बाहर निकला। उस पद्म की कर्णिका मे सुमेरुशैल तथा बीच मे ब्रह्म और भय थे। यहाँ भी ब्रह्म के अवस्थान का स्थान विष्णु की नाभि एव उनका आसन कमल माना गया है। इसलिये ब्रह्म का नाम 'कमलासन' पडा। (१) कमल का सिहासन—ब्रह्मा के पक्ष मे। (२) पद्मासन—एक प्रकार का योगासन जिसमे पालथी मारकर तन-कर बैठते हैं—शिव जी के पक्ष मे। स्त्री० एक०। कमला+सन='कमला' (३) श्रेष्ठ स्त्री। कृष्ण पक्ष के संबंध मे। (४) लक्ष्मीदेवी—रघुनाथ तथा अमरसिह के पक्ष मे। क० प्रि० ११-३३-३।

कमलासन—सं० पु० एक०। ब्रह्मा। वी० च० १५-१७। ३२-१४। वि० गी० ३-१८-४।

कमलासन विलास-विशेषण। विशेष्य—देव को दिवान, बाग, श्लेष से। (१) देव को दिवान के पक्ष मे—जहाँ कमलासन (ब्रह्मा) का विलास है। ब्रह्मोपनिषद् मे लिखा है—नाभि, हृदय, कठ और मूर्धा, इन चारो स्थानो मे क्रमशः जाग्रत, स्वप्न, सुपुप्त और तुरीय अवस्थाओ मे परब्रह्म प्रकट होते हैं। इनके नाम भी क्रमश ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र और परमाक्षर है। अग्नि-पुराण के मतानुसार जब परब्रह्म ने सृष्टि के पालन की इच्छा से विष्णु की सृष्टि की थी, तब विष्णु की सुप्त अवस्था मे उनकी नाभि से एक पद्म बाहर निकला। उस पद्म की कर्णिका मे सुमेरु शैल तथा उसमे ब्रह्म और भव थे। यहाँ भी ब्रह्म के अव-स्थान का स्थान विष्णु की नाभि एवं उनका आसन कमल माना गया है। इसलिये ब्रह्म का नाम कमलासन पडा। (२) बाग के पक्ष मे—जहाँ कमलो का सौदर्य हो। करनानुसारी। विशेष्य—दृग। कानो तक फैले हुए विशाल कटाक्ष। क० प्रि० ६-२२-४१।

कमलिनी दल—स० पु० बहु०। कमलो का समूह। छं० मा० २-३४-५।

कमालौ—स० पु० एक०। पकज। क० प्रि० १४-३७-४।

कमान—(१) स० स्त्री० एक०। धनुप र० प्रि० १४-२६-४। १४-३५-३। क० प्रि० ९-२८-३। रा० १३-३८-४। वी० च० ५-६१। (२) स० स्त्री० बहु०। धनुष। र० प्रि० ३-३४-१। क० प्रि० १६-६४-४।

कमाल—स० पु० एक०। कौशल; निपुणता। क० प्रि० ३-१३-१।

कथा—स० स्त्री० एक० (१)। कहानी। र०प्रि०१-२८-१। छ० मा० १-२४-३। वि० गी० ३-२३-१। ३-२३-२। ६-३८-२। ७-२० १। १३-१६-२। १३-२७-२। १६-३-१। १६-६५-१। १६-८०-१। १६-१२६-१ १७-४१-२। (२) दशा। वि० गी० १६-७५-१।

कर—(१) सं०पु० एक०। हाथ। र० प्रि० ३-६०-३। ४-६-२। ६-४३-२। क० प्रि० १-५३-१। १-५४-१। १-५८-२। ६-७४-४। ९-२०-३। ११-२२-१। १४-११-२। १४-४३-१। १५-१२८-२। १६-८-१। १६-३०-२। १६-४७-३। रा० २-१२-१। २-२०-६। ४-१५-४। ४-२०-१। ६-५४-१। ८-११-१। १२-११-२। १२-६०-२। १२-६७-४। १२-९७-१। १४-१३-१। १७-४०-१। १९-३५-४। २१-३-१। २१-४-१। २६-२०-८। ३०-४-६। ३१-२८-१। ३४-४०-२। ३४-५३-२। ३५-१९-२। ३५-२०-१। ३९-१५-३। ३७-३३-१। वी० च० १६-२८। २२-४। २२-४३। २६-११। २६-२१। २६-४५। २७-२१। २८-१०। २९-३५। ३३-६। वि० गी० १०-१८-२। ११-२२-१। (२) सं० पुं० बहु०। हाथ। र० प्रि० १-२७-२। ५-१०-२। ६-३१-२। ७-२४-४। ११-१३-२। क० प्रि० १-३३-१। ३-१२-१। ६-५-१। ६-५९-३। ८-४७-३। १३-१३-२। १५-९-२। १५-२६-१। १५-२८-२। १५-८४-१। (३) सं० पु० एक०। किरण। क० प्रि० ५-११-१। ११-२५-१। (४) स० पु० बहु०। (१) किरणे—चद्रमा के पक्ष मे; (२) हाथ—नारद के पक्ष मे। क० प्रि० ७-३६-१। (५) सं पु० एक०। हाथी की सूँड क० प्रि० १०-२६-४। १५-१८-१। (६) स० पुं० बहु०। चरण। क० प्रि० ११-३०-२। (७) क्रियापद। करना; करते है। रा० ६-२२-१। ७-३५-१। ३४-४०-२।

कर-कजनि—सं० पु० बहु०। कमलरूपी हाथ। र० प्रि० ११-१३-२।

करकस—[कर्कश] विशेषण। विशेष्य—नरक। कठोर। रा० १९-५१-२।

करका—स० स्त्री० एक०। ओला। क० प्रि० ५-६-१।

कर-कोष—स० पु० एक०। हाथी की सूँड की कुडली। क० प्रि० १०-२६-४।

करज—[सं० कर√जन्+ड] (१) सं० पुं० बहु०। (अ) शत्रु के हाथ—समर के पक्ष मे। (आ) नख—सुरति के पक्ष मे। क० प्रि० ८-४७-३। (२) स० पु० बहु०। नखक्षत। र० प्रि० १०-१०-२।

करज-रेख—स० स्त्री० एक०। नखरेखा। क० प्रि० १२-६-१।

कर जाइ—सयुक्त क्रिया। जाकर कीजिए। रा० ३४-४०-२।

करत—क्रियापद। करता है। र० प्रि० ५-८-२। ६-२१-१। ७-६-१। ७-१७-५। ८-५५-२। १४-१-१। १४-७-२। क० प्रि० ४-२२-८। रा० २-१८-२। ३-२२-१। ६-४०-२। ८-१६-१। १२-१६-१। १५-५-४। २०-४-३। १७-२५-५। १७-२५-६। १८-८-१। १८-३४-४। २१-२६-२। २१-४४-१। २३-९-२। २५-२०-१। २५-२१-२। २७-१०-२। २७-१०-४। २७-१२-१। २७-१८-३। २७-१८-४। ३०-२२-५। ३०-२७-४। ३१-१६ १। ३१-२२-३। ३३-५-२। ३३-१२-२। ३३-४२-२। वि० गी० १७-५०-१।

करत है—सयुक्त क्रिया। करते है। रा० ३०-२४-३। ३४-२२-३।

करत हौ—सयुक्त क्रिया। करते हो। रा० ३३-४२-२।

करता—[स० कर्त्ता] सं० पु० एक०। कर्ता, काव्यकर्ता काव्य की रचना करनेवाला। क० प्रि० ३-२५-५। वि० गी० १५-१३-१। २१-४-३। २१-१३-१।

करतार—[सं० कर्त्तार] (१) स० पु० एक०। करतार (कर्तार); विधाता, ब्रह्मा। र० प्रि० ५-२५-२। क० प्रि० ३-११-४। ६-४७-४। ६-७४-४। रा० २-७-२। ३१-४१-२। ३५-२५-१। (२) सं० पुं० बहु०। प्रकृति—सत, रज, तम,—ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव। क० प्रि० ११-१७-२। (३) सं० पु० एक०। कर्ता। छ० मा० १-७५-६। (४) ईश्वर। रा० ९-१७-२।

करतारि—स० स्त्री० एक०। करताली; ताली। क० प्रि० १५-१००-२।

करतारी—स० स्त्री० एक०। ईश्वर की करनी। रा० च० ४-१९-१।

करति—क्रियापद। करती है। र० प्रि० ११-१६-८। २४-३६-६। १४-३६-६। क० प्रि० १-५०-२। १-५६-२। रा० ३-६-१। २२-९-२। २५-२१-१। २९-१३-४।

करति है—संयुक्त क्रिया। करती है। र० प्रि० ११-१६-८।

कर धरे—सयुक्त क्रिया। कर दिए। रा० ३२-२९-१।

करन—(१) स० पुं० एक०। राजा करणपाल (वीरसिंह के पुत्र)। क० प्रि० १-८-१। १-९-१। (२) क्रियापद। करने। रा० २७-१३-२। ३५-१-२।

करन-तीरथ—स० पुं० एक०। करण-तीर्थ, सूर्यवंशी राजा करणपाल के नाम पर बनाया गया तीर्थस्थल। क० प्रि० १-९-१।

करनफूल—स० पुं० बहु०। कानो के आभूषण। क० प्रि० १५-६४-१।

करनाल—स० पुं० एक०। सिंघा। वि० गी० १२-२-२।

करनि—(१) सं० पु० बहु०। सूंड़। क०

प्रि० ७-११-२। (२) सं० पुं० बहु०। हाथ। क० प्रि० १५-११४-२।

करनीं—सं० स्त्री० बहु०। क्रियाएँ; काम। क० प्रि० ६-१२-२। रा० १४-२२-२।

करने—क्रियापद। करना चाहिए। रा० १५-२-१।

कर पल्लव—सं० पुं० एक०। कररूपी पल्लव; कोमल हाथ। रा० ५-४१-२।

करपूर—सं० पुं० एक०। कर्पूर। रा० १६-२३-७।

करबर—सं० पुं० एक०। करवाल। जहाँ० ३।

करवाल—सं० पुं० एक०। करवाल; कृपाण। वी० च० २-४४। २८-१६। जहाँ० ७।

करवीर—सं० पुं० एक०। एक पौधा जिसमे सफेद, पीले और लाल रग के फूल लगते हैं। रा० ३२-६-२।

करभ [सं० कर√भा+क]—सं० पुं० एक०। (१) ऊँट। क० प्रि० ५-३४-२। वि० गी० १६-२-२। (२) हाथी या ऊँट। क० प्रि० ६-४३-२। (३) हाथी का बच्चा। क० प्रि० ७-६-२। १५-१८-१। १५-१६-ˉ।

करभ सोभ—सं० पुं० एक०। हाथी की शोभा। क० प्रि० १५-१८-१।

करम—सं० पुं० एक०। कर्म, भाग्य। र० प्रि० १५-३-४। क० प्रि० १०-३२-५। (२) सं० पुं० बहु०। (अ) दुष्कार्य—रघुनाथ, बलराम तथा परशुराम के पक्ष मे। (आ) हानिकारक काम—अमरसिंह के पक्ष मे। क० प्रि० ११-३२-२। (३) सं० पुं० एक०। कर्म; काम। रा० ३-६-१। छं० मा० १-६३-६। र० बा० १-२५-४। १-२५-५। वि० गी० ८-२६-१।

करमकंद—सं० पुं० एक०। जन्म मरण का बन्धन। क० प्रि० १६-१०-२।

करमन—सं० पुं० एक०। कर्मण्य। जहाँ० १८।

करवाल—सं० पुं० एक०। तलवार; कृपाण। क० प्रि० ११-३८-४। ११-५२ ४। रा० १६-३५-४।

करवालहि—सं० पुं० एक०। खड्ग; तेगा। क० प्रि० १५-१२६-१।

करषी—क्रियापद। खींचे खींचे फिरे। रा० २१-४१-२।

करस—(१) सं० पुं० बहु०। मुकुट। क० प्रि० १५-२५-४। (२) सं० पुं० एक०। कलश, कगूरा। क० प्रि० १५-६५-२।

करहार—सं० पुं० एक०। (१) कमल की जड, कमलपुष्प के बीच की छतरी जिसमे कमलबीज पैदा होते है। क० प्रि० ५-१६-४। रा० १६-१-२। (२) एक गढ का नाम। वी० च० ३-१०।

करहाटक—सं० पुं० एक०। कमल का बीजकोष। रा० १२-४६-१। ३०-११-२।

करहि—क्रियापद। करते हैं। र० प्रि० १२-२-२। १६-२-२। रा० ३-१७-२।

करहुँ—क्रियापद। करे। र० प्रि० ३-४३-६। ३-३८-४। ३-४३-७। रा० २०-५५-३। ३४-१५-१।

करहूँ—क्रियापद। करे। रा० ७-३६-४।

कराऔं—क्रियापद। कराओ। रा० ३७-८-१।

कराल—(१) सं० पु० एक०। भय। वी० च० १६-१२-३। (२) विशेषण। विशेष्य—दुख। भयकर। क० प्रि० ६-६६-१। रा० १-१-१। ७-२१-३। १०-२८-२। ११-४१-२। १२-४२-३। १३-२२-३। १४-४२-१। १७-३२-२। १९-९-२। २१-४५-२। २७-२१-१। ३४ २९-२। वी० च० ५-९०-१। ६-३२-१। १२ ३५-१। १३-१९-२। १४-११-२। १८-१५-१। १८-१५-२। २९-८-२। जहाँ० ४२-२। वि० गी० ३-८-१। ७-१३-१। ८-२०-१। १३-१२-३। ३-५६-३। ५-८-२। ५-१९-१। ५-२७-३। ५-३२-५। ५-३२-७। ६-२८-५। ६-३१-३। ६-३२-३। ६-३७-५। ६-४८-५। ६-५६-३। ७-२१-२। ७-४५-२। ८-४-२। ८-२९-२। ८-३८-१। १०-१-१। १०-३३-२। १३-१-१। १३-३-३७। १३-५-४। १३-१५-६। १४-२२-१। १४-३९-३। १४-४०-५। २७-२१-४। २९-२१-७। ३०-२१-३। ३०-२५-५। ३०-२६-३। ३०-३१-२। ३१-२८-१। ३१-२९-१। ३३-१४-२। ३४-२०-२। ३५-१३-२। ३६-३-२। ३६ २७-५। ३८-१८-३। ३९-५-२। वी० च० ३-७-३। ३-२७-१। ३-२६-२। ३-५८-२। ३-६२-१। ३-६६-२। ४-२२-२। ४-२४-२। ४-२५-१। ४-२८-२। ५-११-२। ५-२१-३। ५- ३१-२। ५-३४-२। ५-५२-२। ६-३८-१। जहाँ० १५-६। वि० गी० ८-१८-२।

करालनि—विशेषण। विशेष्य—चाल। भयकर। क० प्रि० ३-१३-१।

कराह—[सं० कटाह] सं० पु० एक० कडाह। वि० गी० १३-७०-१। १३-७१-१।

करि—(१) स० पु० एक०। हाथी। र० प्रि० १४-२२-१ (२) स० पु० बहु०। हाथी। क० प्रि० १५-५९-१। वी० च० ५-३४। १०-१०। १५-२२। २७-३। (३) क्रियापद। करके। र० प्रि० १-९-२। १-१०-२। १-१२-२। १-१८-२। १-२७-३। १-५०-२। २-३-२। २-१३-४। २-१७-२। ३-२७-४।

करिआ—स० पु० एक०। मल्लाह। रा० १५-३५-२।

करिके—सयुक्त क्रिया। करके। रा० १२-४१-४।

करिकोमल—संयुक्त क्रिया। हाथी का गण्डस्थल। रा० ३०-१९-२।

करिक्रतु रखवारी—विशेषण। विशेष्य—राम। हाथी, यज्ञ, आदि का रक्षक ताकि कोई हानि न पहुँचा दे। रा० ७-१०-३।

(नीके) करि जानै हौ—सयुक्त क्रिया। (अच्छी) तरह जानते हो। र० प्रि० २-१३-४।

करिजे—क्रियापद। कीजिए। रा० १५-५३-२।

करि डारिये—संयुक्त क्रिया। कर डालिए। रा० २७-७-३।

करि दीजिये—संयुक्त क्रिया। कर दीजिए। रा० १५-२०-१।

करि दीनि—सयुक्त क्रिया। कर दिया। र० प्रि० ६-५५-४।

करि दीने—सयुक्त क्रिया। कर दिया। र० प्रि० ८-२९-२।

करिनि—[स० कर+इनि]। सं० स्त्री० एक०। हथिनी। वी० च० २७-३। रा० २३-२१-२।

करि पायो—सयुक्त क्रिया। कर पाया। र० प्रि० ३-५६-३।

करिवै—क्रियापद। करने को। रा० ३७-७-२।

करिवोकरि—सयुक्त क्रिया। करके। र० प्रि० ३-५६-३।

करिबौ—क्रियापद। करना। र० प्रि० ३-५६-३।

करियतु—क्रियापद। करते। र० प्रि० १४-१९-८।

करिये—क्रियापद। कीजिए। रा० ७-२८-१। १२-३९-२। १५-१-३।

करियै—क्रियापद। करता हूँ। र० प्रि० ३-४९-३। ८-५१-२। १६-१०-१। रा० ६-२१-१। ३५-४-१।

करियौ—क्रियापद। किया। रा० ११-२-१।

करि लए—संयुक्त क्रिया। कर लिए। रा० ३१-२८-१।

करि लीने—संयुक्त क्रिया। कर लिया। र० प्रि० ६-३७-५।

करि लेहु—संयुक्त क्रिया। कर लीजिए। र० प्रि० १-१०-२।

करिहाँ—संयुक्त क्रिया। करके। र० प्रि० १३-५-४।

करि हार्यो है—संयुक्त क्रिया। करके हार गए हैं। र० प्रि० १३-५-४।

करिहै—(१) क्रियापद। करेगा। र० प्रि० ८-१६-२। रा० २६-३५-१। २-२४-१। ७-८-४। २१-४४-१। (२) संयुक्त क्रिया। करेगा; किया है। र० प्रि० ११-८-१।

करिहौ—सयुक्त क्रिया। करोगे। र० प्रि० ५-१७-४।

करी—(१) सं० पु० एक०। हाथी। र० प्रि० ८-२३-३। ११-१८-१। क० प्रि० ५-२२-२। १४-१७-३। १५-१८-१। रा० ३६-३४-४। (२) क्रियापद। करके; किया। र० प्रि० ३-६२-२। ३-७३-४। ५-२६-८। ६-१९-३। ६-३१-३। ७-१८-१। ९-१९-५। १४-१७-२। क० प्रि० १-५-२। ३-१-२। ३-२-२। ३-९-२। ३-४६-१। रा० १-५-२। ३-१८-२। ३-३३-१। ४-२२-२। ५-१४-१। ६-५-१। ६-३०-२। ६-३१-४। ६-३६-१। ७-१०-३। ७-१९-२। ७-२१-३। ७-२४-१। ७-५०-१। ९-११-२। ९-१५-२। १०-७-१। ११-९-२। ११-१५-२। ११-३२-१। १२-७-१। १२-५७-२। १२-६३-२। १३-१९-२। १३-८५-१। १४-१४-२।

१४-२४-२। १६-१२-२। १६-१३-२। १६-३१-२। १९-१०-१। २०-५३-१। २१-१६-२। २१-४५-१। २६-३१-३। २७-२१-३। २९-२१-६। २९-३८-२। वी० च०। ३-२०-२। ३-५९-१। ४-२-२। ४-३०-१। ४-३८-१। ५-१०-१। ६-११-२। ६-३०-२। ७-३१-१।

करी-कर—[सं० कर+इनि+कृ+अप्] सं० पुं० एक०। हाथी की सूँड। क० प्रि० १५-१८-१।

करीजे—क्रियापद। कर लीजिए; करने दीजिए। रा० २-१५-२।

करीर—[सं० कृ+ईरन्] सं० पु० एक०। एक कँटीली झाडी विशेष, जिसमे पत्ते नही होते। यह झाड़ी यमुनातटस्थ स्थानो मे बहुत होती है। इसे टेंटी और कैरमी भी कहते हैं। क० प्रि० १२-६-४।

करील [सं० करीर]—सं० पु० एक०। झाडो के रूप मे उगनेवाला एक कँटीला और बिना पत्ते का पेड। क० प्रि० ३-१३-१।

करीसुर—सं० पुं० एक०। श्रेष्ठ हाथी। रा० ३५-२-७।

करुगा—सं० स्त्री० एक०। छंदविशेष। छ० मा०। १-४४८-५९।

करुन [सं० कृ+उनन्]—सं० पु० एक०। एक काव्यरस। प्रिय व्यक्ति के पीडित या गत होने वा इष्ट वस्तु, वैभव आदि के नष्ट होने और अप्रिय व्यक्ति वा अनिष्ट वस्तु के प्राप्त होने से हृदय मे जो क्षोभ या क्लेश होता है, उसकी व्यंजना से करुण रस की उत्पत्ति होती है। इसका स्थायी भाव 'शोक' है। (काव्यप्रदीप)। र० प्रि० १५-२-१।

करुना—(१) सं० पुं० एक०। करुण रस। र० प्रि० १-१५-१। ११-१-२। १६-२-२। १६-१२-१। १६-१३-२। क० प्रि० ३-५६-१। (२) सं० स्त्री० एक०। दया; रहम। र० प्रि० ६-५५-३। ८-२-२। (३) शोक; दुख। र० प्रि० १०-३३-२। ११-६-४। (४) अनुकंपा। रा० १२-३५-१। १२-४१-४। (५) करुणा—नामविशेष। वि० गी० ८-१-१। ८-४-३। ८-४-५। ८-२५-४। ९-९-१। ९-१३-२। ९-१६-२। १९-६१-१।

करुना कलित—विशेषण। विशेष्य—देव को दिवान प्रवीन रायजू को बाग। क्रमशः करुणा विष्णु से युक्त। क० प्रि० ७-१५-१।

करुना के धाम—विशेषण। विशेष्य—उर। करुणा से पूर्ण। वी० च० २५-७-२।

करुनाजुत—विशेषण। विशेष्य—श्रद्धा। करुणा से युक्त। वि० गी० ९-९-२। ९-१४-२। ९-१६-२।

करुनाधन—सं० पुं० एक०। करुणा-रूपी धन। वि० २१-५२-१।

करुनानिधान—विशेषण। विशेष्य—राम। करुणा की मूर्ति, करुणामय (सृष्टिपालक, सत्य गुणो के स्वामी

विष्णु के अवतार होने के नाते राम का करुणामय होना स्वाभाविक ही है)। रा० १३-३-२ ।

करुनामई—विशेषण। विशेष्य—दृष्टि। करुणा या दया से पूर्ण। रा० २६-३३-२ ।

करुनामय—विशेषण। (१) विशेष्य—करुना। दयालु। रा० १२-४१-४। ११-६-४१ । वी० च० ८-५८-२। १४-१८-१ । २३-२७-१ । (२) विशेष्य—कमला की वासस्थली, वाटिका। रा० ३२-१६-१। श्लेष से—कमला की वासस्थली के पक्ष मे—जहाँ करुणामय (सत्व गुणो से युक्त) विष्णु रहते है। वाटिका के पक्ष मे—करुणा नामक पुष्प से युक्त।

करुना-रस—सं० पु० एक०। (१) दया का भाव। र० प्रि० ६-५५-३। र० ३५-१६-२। (२) विरहशोक का उत्तम उभार। रा० २२-१३-२।

करुना रस भरी—विशेषण। विशेष्य—दुलहिनि। करुणा रस से ओतप्रोत; जिसकी दशा करुणाजनक हो। वी० च० ८-५७-२।

करुना रस भीनी—विशेषण। विशेष्य—[illegible]। [illegible] पूर्ण। र० प्रि० ६-५५-३। [illegible]

करुना-रत्नाकर—सं० पु० एक०। करुणा रूपी समुद्र। र० प्रि० ११-६-४।

करै—क्रियापद। करें; करे। र० प्रि० [illegible]। [illegible]। ८-२६-२। [illegible]। [illegible]। १६-१६-१। [illegible]।

करेंगे—क्रियापद। करूँगा। रा० ४-२२-२।

करे के—संयुक्त किया। करके। रा० ३८-१६-१।

करेनुका—[करेणु+कन्—टाप्]। सं० स्त्री० एक०। (१) हथिनी—कालिका के पक्ष मे। (२) जल और धूल—वर्षा के पक्ष मे। क० प्रि० ७-३२-३। वि० गी० १०-१२-५।

करेरो—विशेषण। विशेष्य—कर। कठोर। र० प्रि० १-२७-२।

करे हैं—सयुक्त क्रिया। किए है। बनाए है। रा० ७-४१-१।

करै—क्रियापद। करते है। र० प्रि० २-६-३। ५-४-१। ६-२६-२। ७-४१-३। २-१२-४। क० प्रि० ३-११-४। रा० ४-२६-४। ५-३८-३। ६-१३-२। ७-३२-२। ९-८-२। ९-९-२। ९-१०-२। ९-१९-२। ९-४४-३। ११-१४-४। १२-२-२। १६-१०-२। १६-२६-४। २१-२१-२। २५-३-४। २९-१-३। ३०-२८-१।

करैगो—कियापद। करेगा; करेगे। र० प्रि० ९-२०-३। रा० १६-२२-२।

करैहु—कियापद। करो। रा० ३६-९-२।

करो—क्रियापद। करो। रा० १२-६-१।

करोर—सं० पु० एक०। करोड। वी० च० ४-१।

करोरि कलालि करै—सयुक्त क्रिया। कलाध्य, बेचैनी, इधर उधर होना। र० प्रि० ८-३२-३।

करौं—क्रियापद। करता हूँ; करूँ। र० प्रि० ३-२३-३। ४-१५-४। ५-४१-२। ८-४९-४। ११-१०-४। ११-७३-४। रा० ४-१२-३। ७-१२-२। ७-१२-३। १५-८-२। (करूँ) १६-१८-२। १६-३०-२। १७-४९-१। १४-५१-६। २४-२७-२। ३३-२४-१। ३४-५०-२। ३५-२-४। ३५-१६-१। ३८-४-३।

करौ—क्रियापद। करो। र० प्रि० ३-६१-२। ३-६२-२। ३-६२-४। ५-१२-२। ८-१३-१। १२-२९-४। १३-४-३। १३-६-४। १३-१६-१। १३-१६-४। रा० २-२०। ३-२४-२। ४-१७-२। ६-१०-१। ७-३४-४। ९-२७-१। १०-९-१। ११-३५-२। १२-४०-२। १३-४४-२। १७-४७-१। १८-६-१। १८-१७-१। १९-३-२। १९-३-३। १९-४-१। २०-२६-३। २१-४४-१। २७-२-१। २७-२-४। २७-४-४। २७-५-४। २७-७-१। ३३-४३-२।। ३६-१७-२। ३६-२१-१। ३९-३०-२। ३९-३३-२। ३९-३४-१।

कर्णतीर्थ—सं० पु० एक०। वीरसिंह के पुत्र कर्णपाल द्वारा निर्मित तीर्थ जो कर्णवरा के नाम से प्रसिद्ध है। वी० च० २-२५।

कर्तमकर्त समर्थ—विशेषण। विशेष्य—मत्री। सब कुछ करने मे समर्थ। वि० गी० १९-१५-१।

कर्ता—(१) स० पु० एक०। भरण पोषण वि० गी० १-३२-१। ११-२८-१। (२) विशेषण। विशेष्य—शिव। ब्रह्मस्वरूप। कूर्म पुराण के मतानुसार समस्त जग विष्णुमय (परब्रह्ममय) है। वे ही हरि, हर, स्वयंभू, नारायण हैं। विष्णु का रजोगुणमय रूप ब्रह्मा के नाम से सृष्टि की उत्पत्ति करता, उनका सत्वगुणसपन्न रूप सृष्टि का पालन करता है। पीछे तमोगुण का आश्रय लेकर रुद्ररूप मे उन सृष्ट वस्तुओ का सहार करता है। इसलिये यहाँ शिव को कर्ता के रूप मे चित्रित करना तर्कसगत ही है। वि० गी० १-३२-१

कर्तार—स० पु० एक०। कर्ता। वि० गी० १८-१७-४।

कर्तार पालक—विशेषण। विशेष्य—मत्री। सृजन करनेवाला। वि० गी० १८-१७-४।

कर्दम—[कर्द+अम]—स० पु० एक०। मास का चारा जो कँटिया मे लगाया जाता है। रा० १४-७-१।

कर्न—सं० पु० एक०। (१) महाभारतोक्त कौरव पक्ष का एक महारथी जो कुंती की अविवाहितावस्था मे उत्पन्न हुआ माना जाता है। क० प्रि० ६-६३-२। ८-१९-२। १२-१५-१। १२-१८-१। १२-२८-१। वि० गी० ९-३५-१। (२) कान। रा० १७-२५-२। ३४-३७-४। वि० गी० ३-१०-२।

कर्नफूल—स० पु० बहु०। कानो के आभूषणविशेष। क० प्रि० १५-८६-३।

कर्नाल—स० पु० बहु०। बड़ी बड़ी

तोपे। रा० ६-१२-१। जहाँ० ४८।

कपूर्रनि [क्रूप्+ऊर+आनि]—स० पु० बहु०। कर्पूर। छ० मा० २-४६-६।

कर्म—स० पु० बहु०। (१) शास्त्रविहित नित्यनैमित्तिक कार्य। र० प्रि० १-४-१। रा० ३४-३३-१। ३६-१-२। (२) कार्य; कर्म। र० प्रि० १२-३०-२। वि० गी० २-१६-२। ३-७-२। ३-३१-१। ४-४-१। ४-३५-२। ७-१३-१। १२-३-२। १६-२०-१। १६-५१-२। १८-८८-१। १६-६-१। १६-४१-१। १६-६३-२। २६-३-७। (३) स० पु० एक०। भाग्य। जहाँ० १-५, १७-१६। २०-२१। २४-८१। (४) कर्तव्य। वी० च० १-५२। १-८। ७-४३। १३-१४। १६-८। ३१-४३। ३१-४४। ३१-६६। ३२-१८।

कर्म अधीन—विशेषण। विशेष्य—जती। कर्म के अधीन रहनेवाले; कर्तव्यपालन करनेवाले। जहाँ० १७-६।

कर्म कारन—विशेषण। विशेष्य—देवपालक। विष्णु; कर्म की प्रवृत्ति रचनेवाले। वि० गी० १८-१४-१।

कर्मतरु—स० पु० एक०। कल्पवृक्ष। जहाँ० १८।

कर्मणि—स० पु० बहु०। (१) कार्य। वि० गी० ११-१२-१। १८-४-३। (२) कर्मो का। वि० गी० १४-५८-१। १७-५१-२। १६-३२-१।

कर्मविनास—सं० पु० एक०। कर्मो का नाश। वि० गी० २०-६५-२।

कर्मबिनासन—विशेषण। विशेष्य—श्री रघुनायक। कर्म (पाप) के विनाशक। रा० ३३-१-२।

कर्मभू—स० स्त्री० एक०। भारतवर्ष। वि० गी० १७-६७-३।

कर्यौ—क्रियापद। कर दिया; किया। र० प्रि० ८-४१-३। १०-१७-२। १३-२२-१। क० प्रि० १-६-२। १-८-१। १-४१-१। २-१५-२। ५-२०-२। ५-२०-५। ५-२०-६। रा० १-१७-२। (बनाया) ५-४१-१। ६-३४-२। ७-२६-१। ७-४०-२। ७-४७-१। १०-३८-२। ११-३-१। १२-२५-२। १४-२४-२। २६-१४-१। ३३-२५-२। ३४-६-१। ३४-१७-१। ३४-२५-१। ३४-३०-१। ३६-३१-१। ३७-६-२। ३६-२७-२।

कल—(१) स० पु० एक०। मधुर ध्वनि, कलरव। र० प्रि० १२-२६-३। क० प्रि० ४-१४-१। १०-२४-४। ११-४१-२। छ० मा० २-३१-१। २-३४-३। वि० गी० १३-४२-२। (२) विशेषण। विशेष्य—ध्वनि। मनोहर, मधुर। र० प्रि० ६-३१-१। १२-२६-३। १४-८-१। क० प्रि० १०-१४-१। १०-३२-४। १०-३४-१। ११-४१-१। ११-४१-२। वी० च० १५-११-२। २१-३०-१। २१-३०-२। २२-१६-२। २३-४-१। २४-२८-२।

कलंक—सं० पु० एक०। (१) दाग;

धब्बा। क० प्रि० ५-२३-२। ६-६६-३। ११-६६-१। १४-२५-२। (२) लाछन; बदनामी। रा० १४-३-२। मुहा० 'कलंक लेना' = बदनाम होना। उदा० 'सो एक रंक मारि क्यो वडे कलंक लीजिए।' (३) नामविशेष। वी० च० ३-२८। वि० गी० १-३७-२।

कलंक अंक—सं० पुं० बहु०। पाप के चिह्न। क० प्रि० ६-६६-३।

कलंक-भूपित—विशेपण। विशेष्य—चंद्रमा। कलक से युक्त; अपराधी। चंद्र के कलंकयुक्त होने के बारे मे पौराणिक मत है :—दक्ष प्रजापति की कन्या असिन्की द्वारा ६० कन्याएँ उत्पन्न हुईं, जिनमे १० धर्म को, १३ कश्यप को, २७ चद्रमा को, भृगु, अगिरा और कुशाशव इन तीनो को दो दो तथा तार्क्ष्य को चार कन्याएँ व्याही थी। एक दिन कृत्तिका आदि ने चंद्र के निकट उपस्थित होकर चद्र और रोहिणी की भर्त्सना की। चंद्र ने नितात क्रुद्ध होकर अभिशाप दिया कि तुमने हमे कटु वाक्य कहे हैं। इसलिये तुम उग्र और तीक्ष्ण कहलाओगी। चद्र द्वारा इस प्रकार अभिशप्त होने पर वे सब दक्ष के यहाँ चली। दक्ष को यह बात मालूम होने पर वे अत्यंत क्रुद्ध हुए। उनकी नाक के अग्र भाग से कामिनी संभाग लोलुप राज्य निकल पड़ा, जिसने चद्र को ग्रसित कर लिया। उससे चंद्र की कला दिन-प्रति-दिन घटने लगी। फिर ब्रह्मा के आदेश से दक्ष ने कहा कि यदि चंद्र अपना दुर्व्यवहार छोड़ सब पत्नियों के साथ समान व्यवहार करेगा तो एक पक्ष क्षय और एक पक्ष वृद्धि लाभ कर सकता है। कालिकापुराण मे लिखा है कि यो दक्षराज का शाप क्षमा हुआ। उसके प्रतिकार के रूप मे चंद्र पर एक मृग बैठा है। उसके कारण कुछ काले गड्ढे पड गए हैं। इसलिये चंद्र कलङ्कित है। किसी प्राचीन मतानुसार चद्र ने गुरु बृहस्पति की पत्नी तारा से दुर्व्यवहार किया; उसी के शाप से इनके शरीर मे कलंक लगा है। इसके सिवा पुराने जमाने की बूढियो का विश्वास है कि चद्र मे एक वृहत् वटवृक्ष है। पति-पुत्र-विहीन एक बुड्ढी उसी वृक्ष के नीचे बैठकर सूत कातती है। चद्र मे धब्बो के दिखाई पडने के इतने कारण प्रचलित हैं जिनमे चंद्र को कलंकी बताया गया है। क० प्रि० ११-६९-१।

कलंक रंक—विशेपण। विशेष्य—सीता पदकज। कलकरहित। रा० १३-३५-३।

कलंक रहित—विशेषण। विशेष्य—जुवति मुख। कलक से रहित; दोषहीन। शि० न० १५-२।

कलंकित—विशेपण। विशेष्य—दमकै। कलकी, कलंक से युक्त, अपराधी।

कलकंठ—सं० पु० एक०। (१) कोयल—काले रग का द्योतक। (२) राजहंस—सफेद रग का द्योतक। क० प्रि० ५-४१-२।

कलगानता—सं० स्त्री० एक० । मधुर संगीत । क० प्रि० १५-३२-२ ।

कलत्त—स० पु० एक० । (१) पत्नी (यहाँ पार्वती) । क० प्रि० १०-१८-१ । रा० १९-५५-१ । २०-२७-१ । ३९-३८-२ । वी० च० १-४३ । १६-९ । २२-७४ । वि० गी० ६-४१-२ । (२) पत्नी या भार्या । छ० मा० १-५७-४ । १-५९-४ । वि० गी० १३-५-१ । १९-५-२ । १९-७१-२ ।

कलत्रनि—स० स्त्री० वहु० । पत्नियाँ । वि० गी० १२-१०-३ । १३-८३-१ । १४-२२-४ ।

कलधुनि—स० स्त्री० एक० । कल कल ध्वनि; कोमल मधुर ध्वनि । छ० मा० २-३४-३ ।

कलधौत—स० पु० एक० । (१) सोना—पीत रंग का द्योतक । (२) चाँदी—सफेद रंग का द्योतक । क० प्रि० ५-४४-१ ।

कलप—(कल्प) । स० पु० बहु । धार्मिक कर्तव्यो के विधिविधान । क० प्रि० १५-१०-२ ।

कलपतरु—(कल्पतरु) । सं० पु० एक० । कल्पवृक्ष; स्वर्गलोक का वृक्ष । र० प्रि० १३-५-३ । क० प्रि० १०-३०-६ । वी० च० २६-३ । ३२-५५ ।

कलपवल्लरी—सं० स्त्री० एक० । कल्पलता । रा० २६-२१-१ ।

कलपवृक्ष—स० पु० एक० । नंदन कानन का एक वृक्ष जो समुद्रमंथन से निकला था । इससे जो कुछ भी माँगा जाय वह प्राप्त होता है । रा० २८-१४-१ । वी० च० १२-१६ । १४-१६ ।

कलपलता—स० स्त्री० एक० । कल्पवृक्ष की शाखा । रा० ३२-४०-२ ।

कलपसाखी—स० पु० एक० । कल्पवृक्ष । रा० २०-४१-१ । २८-१-२ ।

कलभ—(१) स० पु० एक० । हाथी क० प्रि० १५-२५-१ । (२) सं० पु० बहु० । हाथी के बच्चे । क० प्रि० ७-११-२ । रा० ८-३-१ । २०-४०-२ ।

कलमलिय—स० पु० एक० । कुलबुलाना । र० प्रि० १-३७-२ ।

कलरव—स० पु० एक० । (१) कबूतर । क० प्रि० ६-४५-१ । (२) मधुर ध्वनि । क० प्रि० ७-१४-१ । ७-२७-२ । ११-३५-२ । रा० ११-१७-१ ।

कलश—स० पु० एक० । कुंभ । वी० च० १-३ । १-२१ । २०-४ । २२-३५ । २२-७७ । २६-३ । ३२-२६ । ३३-४ । जहाँ० ६-९३ ।

कलस—सं० पु० एक० । मुकुर; मणि, अत्रतस । क० प्रि० १-४-१ । ४-१९-२ । ४-२०-४ । ५-२७-१ । ६-१३-२ । ९-२०-२ । १५-६६-१ । रा० ६-८-५ । ६-३९-१ । ३१-२९-२ ।

कलहंस—स० पु० एक० । (१) राजहंस । क० प्रि० ५-३०-२ । ५-४१-२ । ८-३४-१ । १०-३२-४ । १४-५०-२ । १५-८९-१ । रा० ३-१-५ । (२) छंद का नाम —वार्णिक छंदो मे समवृत्त का एक भेद । छ० मा० १-४४ । ८-४५ ।

कलहंसन की मेघावली—विशेषण। विशेष्य—पुरुषोत्तम की नारी (राजश्री)। आराम चैन रूपी हँसी के लिये मेघमाला के समान लगनेवाली। रा० २३-३२-२।

कलहंसनि—(१) सं०पुं० बहु०। राजहंस। र० प्रि० ६-१५-२। क० प्रि० ६-३६-३। १५-१७-२। (२) स० स्त्री० एक०। राजहंसिनी; मादा हंस। क० प्रि० १०-३२-४। १५-६०-२।

कलह—[सं० कल√हन्+ड] सं० पु० एक०। (१) विवाद; झगड़ा। र० प्रि० ६-५१-१। १०-२५-३। १४-२३-१। रा० १०-२१-१। (२) कलह (नाम-विशेष)। वि० गी० २१-२। २-३-१। २-५-१। २-२४-१। ३-२-१। ४-२-२। ७-१६-१। १२-१३-२।

कलहें—सं० पुं० एक०। विशेषण—मत्र विनोद विलास। कलह। वि० गी० २-५-२१।

कलह के तात—विशेषण। विशेष्य—पाषडा। कलह के पिता। वि० गी० ७-१६-४।

कलहप्रिय—विशेषण। विशेष्य—नारद। कलह करना जिसे प्रिय हो (पुराणो के अनुसार नारद को कलह बहुत अच्छा लगता है)। रा० २८-१५-१।

कलहास—स० पुं० एक०। केशवदास के मत से 'हास' का एक भेद। र० प्रि० १३-२-१। १४-८-२।

कलहें—स० पु० एक०। कलह। वि० गी० ४-३-१।

कला—स० स्त्री० एक० (१) शक्ति। क० प्रि० १-५१-२। (२) प्रकाश; तेज, चमक। क० प्रि० १५-२८-४। १५-३६-४। (३) क्रीडा। र० प्रि० १-२०-२। २-१०-१। (४) विद्या। र० प्रि० १४-२०-३। कला—(५) (अ) चद्रमा का सोलहवाँ भाग। रा० १३-५४-२। (आ) ताल मे मात्रा के हिसाब से काम लेने को कला कहते हैं। यह आठ प्रकार की होती है। बिना इन्हे जाने ताल बिगड़ती है। रा० ३०-३-२। (६) अश। छ० मा० १-३८-१। २-११-१। २-१५-२। २-१६-१। २-२५-२। २-२६-१। २-२६-२। २-२७-१। २-३१-३। २-३१-४। २-३१-५। २-३६-२। २-४४-२। २-४५-१। २-४८-१। २-४६-१। (७) चाल या युक्ति। र० प्रि० १-६-१।

कला कलित—विशेषण। विशेष्य—सीता। चौसठ कलाओ की जानकारी से युक्त। शिवतत्र मे इन सकल कलाओ के नाम मिलते है, यथा—गीतवाद्य, नृत्यनाट्य, चित्र, भूषण-निर्माण, माल्य तथा कुसुमादि से पूजा, पुष्पशय्या, दत, वसन, अगराग, मणि-भूषण का कर्म, शय्या रचना, उदक-वाद्य, चित्रायोग, मालाग्रथन चूडा-निर्माण, वेषभूषाकरण, कर्न-पत्र-भग, गधलेपन, भूषणयोजना, इद्रजाल, कौमारयोजना, हस्तलाघव, विविध सूपादि भक्ष्य प्रस्तुतीकरण, पानक-रस-रायासादि योजना, सूचीकर्म,

द्यूत क्रीडा, प्रहेलिका, प्रतिमाला, दुर्वतक योग, पुस्तकपाठ नाटिका एव आख्यायिका दर्शन, काव्य-समस्या-पूरण, पट्टिका-वेत्र-विकल्प, तक्षण, वास्तुविद्या, रौप्य रत्नादि परीक्षा, धातुवाद, मणि-राग-ज्ञान, वृक्षायुर्वेद योग, मेष कुक्कुट एव लावक युद्धविधि, शुकसारिका प्रलापन, केशमार्जन कौशल, अक्षर-पुष्टिका-कथन, म्लेच्छित कविकल्प, देशभाषा ज्ञान, पुष्पशकटिका-निर्माण-ज्ञान, मानसी काव्य क्रिया, क्रिया विकल्प, छली-तर्क-योग, अभिधान-कोश-छद-ज्ञान, वस्त्र-गोपन, पत्रविशेष, आकर्षणक्रीडा, बालक्रीडा वेत्रादि विद्या का ज्ञान, वैषयी विद्याज्ञान, वैतानिक-विद्या-ज्ञान। कुछ आलोचको के अनुसार शृंगार के अतर्गत ही चौसठ प्रकार की कलाएँ मानी जाती है। यहाँ हम इस अर्थ मे भी ले सकते है। रा० ६-४०-२।

कलानि—(१) स० स्त्री० वहु०। रीतियाँ। क० प्रि० ११-४१-२। (२) क्रीडाएँ। र० प्रि० २-१-१। ३-३७-२।

कलानिधि—(१) सं० पुं० एक०। चद्रमा। चद्रमा के षोडश भागो के बारे मे पुराणो मे यो उल्लेख मिलता है—अमृदा, मनदा, पूषा, तुष्टि, पुष्टि, रति, धृति, शशिनी, चद्रिका, काति, ज्योत्सना, श्री आदि। रा० ६-४०-२।

कलाप [कला√आप (पानी)+अण]—ग० पु० एक०। समूह। रा० ३९-३१-१। क० प्रि० ६-३६-१।

कलिंग—सं० पुं० एक०। कलिंग देश। वि० गी० १२-७-२।

कलिद—(१) स० पु० एक। तरबूज। क० प्रि० ६-३६-१। (२) कलिद पर्वत, जिससे यमुना निकलती हैं। रा० १८-२०-२।

कलिद गिरि—सं० पुं० एक०। काले शृंगोवाला पर्वत, जिससे यमुना निकलती हैं। रा० १५-४०-२।

कलि—[सं० कल्+इन्] (१) सं० पुं० एक०। कलियुग—चार युगों में से चौथा जिसकी आयु ४ लाख ३२ हजार मानव वर्ष मानी जाती है। क० प्रि० ५-२३-२। ६-२४-३। ६-७६-३। रा० २०-५१-१। ३०-२०-२। (२) सं० स्त्री० एक०। (अ) कलिका। जहाँ० १०६। (३) सं० पुं० एक०। कलह। वि० गी० १-१६-१। (४) स० पुं० एक० राजा कलि (कलियुग का अधिपति)। वि० गी० २-३-१। २-५-१। २-१७-१। ७-२-१।

कलिअंकुस—विशेषण। विशेष्य—मुनिनायक। पापो का बाधक। रा० ३९-६-२।

कलिक—स० स्त्री० एक०। कल्कि; दस अवतारो मे से अंतिम। रा० २०-२३-१।

कलिका—(१) स० स्त्री० एक०। अविकसित पुष्प। रा० ३२-९-१। (२) सं० स्त्री० बहु०। कलियाँ। क० प्रि० १४-३३-२। १५-४-२।

कलिका करिकै—सयुक्त क्रिया। कली बनाकर। (गूढार्थ—जब कमल वद होगे, याने सूर्यास्त होने पर, मिलूंगा।) र० प्रि ६-५६-४।

कलिकाल—सँ० पुं० एक०। देखिए—'कलि'। क० प्रि० १-७-१। २-४-२। जहाँ० ५५। वि० गी० २-२-१। ७-१-२। ८-६-२।

कलिजुग—सं० पुं० एक०। कलियुग। वि० गी० ७-१२-१।

कलित कलंक हेतु—विशेषण। विशेष्य—चंद्रमा। कलक के निमित्त विष्णु के परामर्श से देवताओ ने असुरो के साथ मिलकर समुद्र का मंथन किया। उसी समुद्र से चद्र की उत्पत्ति हुई। (महाभारत १-१६)। यह एक देवता गिने जाते हैं। अमृतपान के समय देवताओं की पक्ति मे बैठकर किसी असुर ने अमृत पा लिया था। इन्होने विष्णु से यह बात कह दी। उसी पर असुर राहु रूप मे उन्हे ग्रस लिया करता है। (महाभारत १-१६)। राहु और केतु को एक ही मानकर केशव ने यहाँ केतु नाम लिया है। अन्यत्र भी केशव ने चद्रमा के लिये 'केतु' आदि विशेषण का प्रयोग किया है। रा० ६-४१-१।

कलिनाथ—सं० पु० एक०। महामोह। वि० गी० ५-२४-१।

कलियुग—स० पु० एक० कलिकाल। वी० च० २१-२२। २८-५। २८-३२। ३२-३२।

कली—(१) सं० स्त्री० बहु०। मुँहबँधे फूल। क० प्रि० १५-११-१। (२) स० स्त्री० एक०। अप्राप्तयौवना कन्या। र० प्रि० ६-२०-३। क० प्रि० ३-१३-३। (३) सं० स्त्री० एक०। मुँहबँधा फूल। र० प्रि० ३-४-४। ६-११-३। १४-२०-१। क० प्रि० १५-३४-२। (४) स० स्त्री० एक०। काली देवी। र० प्रि० ११-१६-३।

कलुप—[स० कल्+उषच्]—स० पुं० एक०। पाप। क० प्रि० ६-६६-२। २४-१६-३। वि० गी० ६-६७-१।

कलुप कृपानी—विशेषण। विशेष्य—बानी, गंगा को पानी। (१) बानी के पक्ष मे—राम-भजन-मय होने से पाप-विनाशिनी। (२) गंगा को पानी के पक्ष मे—पापविनाशक। क० प्रि० १४-१६-३।

कलेऊ [सं० कल्यवर्त]—स० पु० एक०। कलेवा; नाश्ता। क० प्रि० १६-३०-२।

कलेवर—सं० पु० एक०। शरीर। क० प्रि० ८-१७ २।

कलेस—[सं० क्लेश]—स० पु० एक०। क्लेश; कष्ट। जहाँ० १। वि० गी० १३-२०-२।

कलेसकारी—विशेषण। विशेष्य—यमदूत। कष्टदाता। रा० ३४-२६-२।

कलोल—(१) सं० स्त्री० एक०। लहर; तरग। क० प्रि० ३-१३-२। (२) सं० पुं० एक०। क्रीडा, केलि। क० प्रि० ३-१३-३। (३) विशेषण। विशेष्य—कपाले। मनोहर। वी० च० २२-६१-१।

कलप—(१) स० पु० एक०। धार्मिक कर्तव्यो का विधिविधान, निश्चित विकल्प। वेद के ८ अगो मे से वह जिसमे यज्ञो, सस्कारो आदि की विधियाँ बताई गई है; ब्रह्मा का एक दिन। आयुर्वेद का विधि-चिकित्सा-अग, स्वर्ग का एक वृक्ष, शराव, शरीर को पुनः नया एवं नीरोग बनाने का उपाय—सकीर्णोपमा के उदाहरण। क० प्रि० १४-४६-१। (२) शरीर। क० प्रि० १४-५०-१। (३) समय। वि० गी० ६-५४-३।

कल्पतरु—सं० पु० एक०। (१) स्वर्ग का एक वृक्ष, जो कामनाओ की पूर्ति करता है। क० प्रि० १-१७-२। वी०च० १-४६ (२) विशेषण। विशेष्य—इंद्रजीत। कल्पवृक्ष के समान दान देता रहनेवाला। (देवलोक का वृक्षविशेष है कल्पतरु। यह वृक्ष माँगने से सकल पदार्थ देता है)। क० प्रि० ४-२०-४।

कल्पद्रुम—स० पुं० एक०। कल्पवृक्ष। वी० च० ३२-३६।

कल्पना—सं० स्त्री० एक०। मन की वह शक्ति जो परोक्ष विषयो का रूपचित्र उसके सामने ला देती है। वि० गी० २१-४४-१।

कल्पवेलि—स० स्त्री० एक०। कल्पवेलि। वि० गी० १३-१७-३। जहाँ० ३।

कल्पलता—स० स्त्री० एक०। सफेद लता। क० प्रि० १५-११७-२।

कल्पवृक्ष—सं० पु० एक०। कल्पतरु। क० प्रि० १-३६-१। १५-११७-२। १६-८७-१। छं० मा० २-६-२।

कल्मष—सं० पुं० एक०। पाप। वि० गी० १७-३७-३।

कल्याण दे—स० स्त्री० एक०। रानी कल्याण दे रामशाह की माता थी जिनके कारण रामशाह और वीरसिंह के बीच की सधि असफल हो गई थी। वी० च० १०-६३। १०-६४।

कल्यान—स० पु० एक०। आचार्य एवं कवि केशव के भाई कल्याणदास। क० प्रि० २ १६-२। वि० गी० ६-११-१।

कवच [क√वञ्च्+अच्]—सं० पुं० एक०। युद्ध के समय शरीर की रक्षा के लिये प्रयुक्त लोहे का आवरण। र० प्रि० १४-२५-५। वी० च० ३-३३। ८-१२। ३३-३२।

कवल [क√वल्+अच्]—(१) स० पु० एक०। फदा। उदा०—"काल सर्प के कवल ते रामनाम छोड़त"। रा० १७-१३-१। (२) स० पु० बहु०। पाँच कौर—भोजन करते समय पहले पाँच कौर खाए जाते हैं। क० प्रि० ११-१२-१।

कवलय—स० पु० एक०। नील कमल। क० प्रि० ७-२३-१।

कवलयनि—सं० पु० बहु०। कमल पुष्प। क० प्रि० ७-२५-२।

कवि [√कव्+इनि]—(१) स० पु० एक०। कविता करनेवाला। र० प्रि० १-१०-१। १-१७-२। ३-१८-२। ३-२४-१। ६-१७-२। ६-३३-२ ६-५७-२। १०-२३-२। १४-८-२। १४-३७-२। १५-१०-१। १६-

६-१। क० प्रि० १-५-१। ३-४५-२। ४-२-१। ४-४-१। ४-१६-२। ७-२७-३। ६-११-२। १०-१५-२। १०-२१-१। ११-२४-२। ११-३१-१। ११-४७-२। ११-७२-२। ११-७५-२। १३-१६-२। १३-२२-२। १४-१-२। १४-२३-३। १५-५-२। १६-६०-४। १६-६८-२। १६-८६-२। (२) स० पु० बहु०। कविता करनेवाले। र० प्रि० १-१३-२। ३-३६-२। ३-४५-२। ८-१-२। ८-१-२। ८-१०-२। ११-७-२। १४-२-२। १६-१५-२। क० प्रि० ११-८१-२। १५-७६-१। १५-८४-१। १६-८७-२। (३) स० पु० एक०। (अ) काव्यकर्ता। (आ) शुक्राचार्य। क० प्रि० १६-६४ ६।

कवि-कुल—(१) सं० पु० एक०। कवि-समूह। र० प्रि० ३-३६-२। (२) स० पु० बहु०। कविगण। र० प्रि० १६-१४-२। क० प्रि० ३-१४-२। ३-५८-१। ४-८-२। ६-२१-२। १०-२-२। ११-४३-१। १२-१-१। १२-१-२। १२-३१-२। १३-३०-२। १४-४४ २। रा० १-३५-४। १-४८-४। २७-२-१। २८-१२-१। छ० मा० १-१-२। १-३३-२।

कविकुल को सुखदानि—विशेषण। विशेष्य—मालती छद। कवियो को सुख देनेवाला। केशवदास ने लिखा लिखा है—आदि नगन पुनि जगन रचि चरन षडच्छर आनि। अमल मालती छद यह कवि कुल को सुख-दानि। छं० मा० १-१०-३।

कवित—स० पु० एक०। काव्य या एक वर्णवृत्त। क० प्रि० १६-५२-२।

कविता [कवि+तल्+टाप]—(१) स० स्त्री० एक०। रसात्मक छंदोबद्ध रचना। र० प्रि० ३-५-१। क० प्रि० १-५-२। १-६१-१। ३-२-२। ३-८-१। ५-१-२। १५-१-१। १५-४७-४। (२) स० स्त्री० एक०। (अ) रचना—गोपकुमारी के पक्ष मे। (आ) लगाम की आवाज—घोडी के पक्ष मे। क० प्रि० ११-८३-२। वी० च० २१-२६।

कविता-अंग—स० पु० बहु०। कवित्व के भेद। क० प्रि० १५-१-१।

कविता के अवतंस—विशेषण। विशेष्य—कविप्रिया। कविता के शिरोमणि; कविता के मुकुट। क० प्रि० १-५-२।

कविता को सिगार—विशेषण। विशेष्य—कविप्रिया। कविताओ का शृंगार, श्रेष्ठ। क० प्रि० ३-२-२।

कवितानि—स० स्त्री० बहु०। रचनाएँ। क० प्रि० ५-२-१। ६-५६-१।

कवित्त—स० पु० एक०। कविता। र० प्रि० १-१४-१। १४-४१-२। १५-१०-१। १६-१-२। क० प्रि० १-५६-२। ३-५-२। ३-२५-१। ३-२५-५। ३-३७-२। ३-३६-२। ३-४१-१। ३-४७-२। ११-१६-२। १५-३२-१। १५-१३१-२। १६-३-१। १६-४-२। १६-३७-२। १६-८८-१। वी० च० २६-४३।

कविन—सं० पुं० एक०। कविता करनेवाले व्यक्ति। क० प्रि० १४-२८-२। १६-६०-३।

कवि-नायक—सं० पुं० बहु०। श्रेष्ठ कवि। र० प्रि० २-१८-१।

कविनि—सं० स्त्री० एक०। यह केशवदास जी की प्रमुख कृति है। इसका रचनाकाल सन् १६०१ है। यह कविशिक्षा की पुस्तक है। केशव ने इसका प्रणयन अपनी साहित्य-शिष्या तथा अपने आश्रयदाता इन्द्रजीत सिंह की प्रधान दरवार पातुर प्रवीणराय के हेतु किया था। फिर भी "समुझें वाला-वालकनु, वर्नन अर्थ अगाध' केशव की दृष्टि मे थी। 'कविप्रिया" मे वंदना, नृपवंश और कविवंश का वर्णन है। तत्पश्चात् काव्यदोषो और अलंकारो का वर्णन किया गया है। अंतिम सोलहवे प्रभाव मे चित्रकाव्य है। शिख-नख-सहित "कविप्रिया" मे ८९६ छंद है। (हिंदी साहित्य कोश, भाग—२)। क० प्रि० १-४-१। १-५-२। १-१-६१-२। ३-१-२। ३-२-२। ३-३-२। १६-८९-२। १६-९०-२। १६-९१-२। १६-९२-२।

कवि-प्रिया—सं० स्त्री० एक०। कवि की प्यारी चीज। क० प्रि० १६-८९-२। १६-९०-२। १६-९१-२।

कविभूप—सं० पुं० बहु०। श्रेष्ठ कवि। र० प्रि० ६-५१-२। क० प्रि० १-६-२।

कविराइ—सं० पुं० बहु०। कविराजगण। क० प्रि० ३-३७-२। १०-७७-२। १०-१९-१। ११-२४-२। ११-५१-२। १४-१४-२। १४-२०-२। १६-९ २।

कविराज—सं० पुं० बहु०। श्रेष्ठ कवि। र० प्रि० ६-३३-२। ७-१९-२। ७-४०-२। ९-१२-२। क० प्रि० ३-३-२। ३-१५-१। ३-५१-१। ९-८-२। १-५७-२। १५-११९-२।

कविराजनि—सं० पुं० बहु०। कविगण। क० प्रि० ८-२३-३।

कविराय—सं० पुं० बहु०। श्रेष्ठ कवि। र० प्रि० ६-११-२।

कविराव—सं० पुं० एक०। कविगण। र० प्रि० ६-२-२। ६-१७-२। ६-५७-१। क० प्रि० ९-१५-१। १२-३-२।

कष्ट [कष्+क्त]—सं० पुं० बहु०। क्लेश; दुःख। र० प्रि० ८-२३-२। क० प्रि० १४-१७-२। रा० ७-११-१। वि० गी० १४-२०-१।

कसकति—क्रियापद। कसकती। र० प्रि० २४-३२-३।

कसि—क्रियापद। कसकर; कसा। र० प्रि० २४-२५-७।

कसिवान—सं० पुं० एक०। कसौटी जिसे कोई कायस्थ अपने पास रखता है कि जेवर वन जाने पर कस रेखा की परख कर ले। क० प्रि० १२-१६-१।

कसी—क्रियापद। कसा; कसकर बाँध लिया। रा० २४-४-१।

कसै—क्रियापद। कसा। रा० २१-५-२।

कसौटी [कषपट्टी]—सं० स्त्री० एक०। जांच, परख। क० प्रि० १५-७६-४।

कस्यप—सं० पुं० एक०। एक ऋषि जिनकी विभिन्न पत्नियों से सुर, असुर, मनुष्य, पशु, पक्षी आदि संपूर्ण प्राणियों की उत्पत्ति मानी जाती है। क० प्रि० ७-२१-२। रा० ६-८-३। १८-३-१ १४-४१-२। १९-१६-२। २३-४-१। वि० गी० १६-५४-३।

कहँ—क्रियाविशेषण, स्थानवाचक। (संस्कृत—कक्ष, प्राकृत—कच्छ, हिंदी—कहाँ) कहाँ, किस जगह। उदाहरण—"कहँ होत···" (वि० गी० १-३४-१) र० प्रि० ५-४-१। ५-१२-४। ६-५५-३। २२-३४-१। क० प्रि० ३-५२-१। १०-१०-१। १०-३२-६। ११-२-३। ११-५०-४। १३-८-३। १४-१६-४। १४-४३-४। १६-५४-३। रा० १-१-३६-२। २-१८-६। ६-४-२। ६-५-२। ६-३०-१। ९-१७-२। ९-२३-१। ९-२७-३। १०-१०-२। १०-२८-१। १२-५७-१। १३-१७-२। १३-३९-२। १६-१९-२। १६-१२-१। १७-१६-१। २०-२५-२। २०-४९-२। २१-३०-२। २२-१३-४। २३-८-४। २४-२४-१। २६-३-१। २७-१२-१। ३२-१९-१। ३६-२४-१। ३६-२४-४। ३८-३-१। ३९-२९-१। ३९-२७-१। छ० मा० २-२५-३। २-४६-२। वि० गी० १-८-५। १-२२-६। १-३३-२। १-३४-२। ५-४२-२। ६-५०-२। १०-७-३। १३-५५-२। १२-५९-१।

कह—क्रियापद। कहकर। रा० ६-३०-१। १४-३२-२। ३४-४३-२।

कहंत—क्रियापद। कहते हैं। रा० १५-५२-१।

कहत—क्रियापद। कहता है। र० प्रि० १-१५-२। ३-४-१। ३-५१-१। ३-५३-१। ४-१७-३। ५-१६-५। ५-२८-२। ५-३९-२। ६-१-२। ६-२-२। ६-५१-२। ६-५४-२। ८-३५-२। ८-४८-२। ९-१५-१। १०-१०-२। ११-७-२। १३-२१-२। १४-३-२। २४-३६-४। १४-३७-२। क० प्रि० ३-३२-२। ३-३७-२। ३-४७-२। ३-५६-२। ४-६-२। ४-८-१। ४-१२-२। ५-४३-२। ६-५-२। रा० ३-२४-१। ३-२६-२। ६-३०-३। ७-४-२। १६-२९-१। २१-५१-१। २५-२७-२। २७-४-२। २७-२२-१। ३७-४-१। वि० गी० १७-२७-३। १७-२७-४। १७-५३-२।

कहत रीझि—सयुक्त क्रिया। रीझकर कहते हैं। रा० ३७-४-१।

कहत सुनत—सयुक्त क्रिया। कहते सुनकर र० प्रि० १३-२१-२।

कहत हुते—सयुक्त क्रिया। कहते थे। रा० २१-५१-१।

कहति—क्रियापद। कहती है। र० प्रि० ५-९-८। १०-२२-५। १०-२५-१। १४-३१-४।

कहति सिहाति है—सयुक्त क्रिया। कहना भला लगता है। र० प्रि० १४-३१-४।

कहते हैं—संयुक्त क्रिया। कहते हैं; कहा जाता है। र० प्रि० ८-४८-२।

कहन—क्रियापद। कहने। र० प्रि० ८-४४-६। रा० १५-२३-१।

कहन आई—संयुक्त क्रिया। कहने के लिये आई। र० प्रि० ८-४४-६।

कहन पाई—क्रियापद। कह पाई थी। रा० १५-२३ १।

कहली—विशेषण। विशेष्य—भूपति। कष्टदायक रा० १८-२०-२।

कहहु—क्रियापद। कहो। र० प्रि० १०-१० २।

कहाँ—क्रियाविशेषण, कालवाचक (हिंदी—कहाँ)। किस जगह। उदाहरण। "कीने कहाँ व्यतीत " (वि० गी० १७-१४-१)। र० प्रि० ३-१६-४। ३-३६ ४। ५-१२-२। ५-२४-४। ६-४७-१। ७-१४ ४। ७-१५-४। ७-१९-४। ७-२६-१। ८-२३-४। ८-३६-२। ८-३७ १। ६-१६-१। १०-११-१। १०-२२-२। ११-३-१। १२-१७-२। १४-२३-२। क० प्रि० ३-३० १। ६-१४-४। १०-८-३। १३-२६-४। १६ ५७ ४। १६-६०-३। रा० ६-२७-३। १०-४-१। १०-४-२। १०-४-३। १५-३९-१। १६-५-४। १६-६-३। १७-१६-१। २१-२५-१। २३-३६-१। २५-१३-१। २९-१३-४। ३२-१५-१। ३४-३८-१। वि० गी० १७-१८-१। १७-४१-१। १८-४-२।

कहा—(१) क्रियाविशेषण, करणवाचक। किस प्रकार; कैसे; क्या। उदाहरण—"कहा कही ..." (रा० ४-२३-२) र० प्रि० २-१५-३। ८-४८-२। ६-१६-३। १०-१०-४। क० प्रि० १६-६२-१। रा० ४-२३-२। १०-४-४। १६-६-१। ३३-२६-१। ३३-४४-१। (२) कियापद। कहा जाता है; कहते है। र० प्रि० ५-३-२। १४-११-४। रा० ५-२५-१। १०-४-४। १२-६८-२। १६-२५-१। १६-२६-२।

कहाई—क्रियापद। कहलाकर। रा० २५-३४-१। २७-१७-३। २७ २६-३। ३६-३६-१।

कहाइहौ—क्रियापद। कहाओगे। रा० १३-६५-४।

कहाउ—कियापद। कहलाओगे। रा० १५-२६-२।

कहाए—क्रियापद। कहलाए। रा० ३८-१०-१।

कहा करिबे—संयुक्त क्रिया। कहा करे; कहते रहे। रा० ५-३५-१।

कहानी—[कथनिका] सं० स्त्री० एक०। कथा। र० प्रि० ४-६-२। ५-२८-१। १६-११-२। क० प्रि० ५-२६-३। वी० च० २६-१६।

कहायौ—क्रियापद। कहे जाते हो। रा० ७-४५-३।

कहावत—क्रियापद। कहलाते है। र० प्रि० ३-५४-४। ९-७-७। १०-५-१। रा० ५ २४-२। १५-२४-२। २५-२०-१। २६-४-३। ३९-७-२।

कहावत है—संयुक्त क्रिया। कहलाते है। रा० ५-२४-२।

कहावत हौ—संयुक्त क्रिया। कहलाते हो। र० प्रि० १०-५-१ ।

कहावहु--क्रियापद। कहाओ। रा० ३९-३-२ ।

कहावै—क्रियापद। कहलाता है। र० प्रि० २-४-४ । ४-१७-४। १०-१०-५ । क० प्रि० ३-७-२। रा० २९-४-२ । २५-१२-२ । २६-७-२ ।

कहि—क्रियापद। कहिए; कहते हैं, कहो; कहा है; कहना; कहने को; कहकर। र० प्रि० १-२-६ । १-२३-१ । २-५-२ । २-१०-२ । ३-२७-२ । ३-५५-१ । ४-४-१ । ४-५-३ । ४-७-३ । ५-३०-३ । ५-३५-१ । ६-३-२ । ६-११-२ । ६-२३-१ । ६-२९-३ । ६-३६-२ । ६-४०-३ । ६-४३-३ । ६-५६-४ । ७-१०-१ । ७-१५-१ । ७-१६-१ । ७-१९-२ । ७-२२-१ । ७-४०-२ । ८-१-२ । ८-५-२ । ८-५-३ । ८-६-२ । ८-८-२ । ८-१०-२ । ८-३६-३ । ८-३८-४ । ८-३९-८ । ८-५४-२ । ९-५-२ । ९-१७-३ । १०-१-१ । १०-३-२ । १०-५-१ । १०-९-२ । १०-२५-३ । १०-३०-२ । ११-८-१ । ११-१३-४ । १३-१७-१ । १४-२१-२ । १४-११-३ । १४-२४-२ । क० प्रि० १-१०-२ । ३-३९-२ । ६-१७-३ । रा० ३-७-२ । ३-१०-२ । ४-७-१ । ४-१६-२ । ५-२२-१ । ४ २६-३ । ४-२७-१ । ६-५-१ । ६-१३-३ । ७-६-४ । ७-९-३ । ७-२३-१ । ७-२९-१ । ९-४-१ । ९-७-१ । ९-८-२ । ९-२४-३ । ९-३३-२ । ९-४४-४ । १०-५-२ । १०-३३-२ । १०-३५-१ । १०-४३-१ । १७-७-१ । १२-१४-४ । १२-२४-३ । १२-२७-३ । १२-४१-१ । १२-६०-१ । १३-१-२ । १३-२२-४ । १३-४२-१ । १३-४७-२ । १३-७१-१ । १३-७१-२ । १३-७७ १ । १३-८५-२ । १३-८६-१ । १३-८७-१ । १३-९५-ˆ । १४-२७-१ । १५-७-२ । १५-१४-१ । १६-७-४ । १६-१७-१ । १६-२४-३ । १८-३५-२ । १८-३६-२ । १९-१८-२ । १९-१९-१ । १९-२२-१ । २०-३२-३ । २०-५४-१ । २३-१३-२ । २४-१०-१ । २४-२२-४ । २४-२८-२ । २५-१३-१ । २५-१०-२ । २५-२४-२ । २५-३९-३ । २८-१४-४ । २९-२५-१ । ३०-१५-२ । ३३-२८-२ । ३४-१४-१ । ३४-१४-२ । ३६-१८-१ । ३७-२१-१ । ३९-१३-३ । वि० गी० । १७-३७-४ ।

कहि आयी—संयुक्त क्रिया। कह गई। रा० १२-२७-३ ।

कहि आयो—संयुक्त क्रिया। कहा था। रा० ३९-१३-२ ।

कहि आवत—संयुक्त क्रिया। कहा जाता था, कहते थे। र० प्रि०। १-२३-१ ।

कहि आवति है—संयुक्त क्रिया। कहते आते हैं; कहलाते हैं। र० प्रि०। १०-५-१ ।

कहि आवै—संयुक्त क्रिया। कही आती। र० प्रि०। ७-१६-१ ।

कहि कहि—संयुक्त क्रिया। कह कहकर। रा० १-२-२ ।

कहि कै—संयुक्त क्रिया। कहकर। रा० ३५-१४-२ ।

कहिजत—क्रियापद। कहियत। क० प्रि० ३-४६-१।

कहि जाइ—संयुक्त क्रिया। कहा जाता है। र० प्रि० ८-६-२।

कहि जात गई—संयुक्त क्रिया। कहकर जाती हुई, कहकर जाने लगी। रा० १३-४७-२।

कहि जाहि—सयुक्त क्रिया। कही जाती है। र० प्रि० ८-८-२।

कहि जै—क्रियापद। कहिए। क० प्रि० ३-४५-२। ३-४७-१। ५-५०-२।

कहिजो—क्रियापद। कहना। क० प्रि०। ३-४६-१।

कहि निहारि—सयुक्त क्रिया। देखकर कहो। रा० ३३-१३-२।

कहि बरनत—सयुक्त क्रिया। कहकर वर्णन करते है। र० प्रि० ६-३-२।

कहिवे—कियापद। कहने। र० प्रि० ६-१७-२। रा० ६-१४-४।

कहिय—क्रियापद। कहलाता है। रा० ४-१०-२।

कहियत—क्रियापद। कहलाता है। र० प्रि० ६-१-२। ६-८-२। ६-२१-२। १०-३३-२। क० प्रि०। ३-४२-३।

कहिये—कियापद। कहिए; बताइए। रा० ५-४ २। ७२२-१। १५-२-२। १६-२१-३। २०-१८-२। ३४-१२-२।

कहियै—क्रियापद। कहिए। र० प्रि० २-२-२। २-१२-२। २-१४-२। ४-४-२। ४-१३-२। ४-१३-४। ६-८-२। ७-२५-२। ८-३१-४। १०-६-२। १० १०-२। १५-२-१। क० प्रि० ६-७-६। रा० २-१४-२। १२-४-३। २१-६-२। २१-७-१। २५-४०-१। ३३-२६-१-३३-३८-२।

कहियो—क्रियापद। कहो; कहा। रा० १३-२८-२। १७-२८-१। १६-१८-२।

कहिलई—संयुक्त क्रिया। कह पाया। रा० १-२-२।

कहि हौ—क्रियापद। कहूँगा। रा० १-२०-४।

कही—क्रियापद। कहा। र० प्रि० ३-६२-३। ८-५७-३।

कही—क्रियापद। कहा। र० प्रि० ३-३१-२। ५-१७-४। ५-१७-५। ६-४४-१। ८-१३-३। ६-१७-२। १२-६-१। १२-१२-१। १२-१२-२। १३-६-३। १६-११-१। १६-३-३। रा० १२-७-१। १२-३३-२। १२-३८-२। १३-७२-१। २३-८६-१। १४-१६-२। १४-३१-१। १५-११-२। १६-२-१। १६-४-४। २०-२-१। २०-१६-१। २१-१६-५। २५-६-२। २७-६-१। ३३-१३-१। ३३-२६-१। ३३-२८-१। ३३-२६-१। ३३-२६-२। ३३-३६-१। ३८-८-२। ३६-६-२।

कही है—सयुक्त क्रिया। कहा है। र० प्रि० ३-६२-३।

कहि गुनि—संयुक्त क्रिया। सोच विचार करके कही है। रा० १३-८६-१।

कहीं परई—संयुक्त क्रिया। कहा जाता; कहना पडता। र० प्रि० ६-१७ २।

कही परति—सयुक्त क्रिया। कहना पडता। र० प्रि० १२-६-१।

कही परै—सयुक्त क्रिया। कहना पडता। रा० ३३-२९-१।

कही है—संयुक्त क्रिया। कहा है, कही गई है। र० प्रि० १३-२०-४।

कहुँ—(१) क्रियापद। कहता हूं। रा० ६-१८-१। ९-१७-२। १३-३० २। १९-२-२। (२) क्रियाविशेषण, स्थानवाचक। कही, किसी स्थान पर (उदा० 'हरि कहुँ' रा० ९-२५-२)। रा० २-३-२। २-२-१ से ४।

कहु—क्रियापद। कहो। क० प्रि० ५-३९-२। रा० १९-१९-२।

कहुँ—स्थानवाचक क्रियाविशेषण। कही (उदा० 'कहुँ जग' रा० ५-१३-१)। रा० ४-२९-१। ४-३०-१। ५-१२-१। ५-१३-१। ५-१४-१। ६-१८-१। १३-५०-१। १३-५०-२। १३-५१-१। १३-५१-२। १४ ८-१। १४-९-१। १५-३७-१।

कहें—क्रियापद। कहते हैं। र० प्रि० १-१९-१। १-२१-१। १-२७-१। ३-२३-२। ३-२८-१। ३-६७-२। ५-२३-२। ६-११-२। ६-३३-२। ११-१२-१। क० प्रि० ३-४१-१। ३-५१-१। ४-७-१। ४-७-२। ४-११-२। ५-२-२। रा० ९-४२-१। ९-४२-२। १०-४२-१। २६-१६-२। २०-३३ १। २०-३३-२। २२-२२-१। २४-८-४। २४-२६-३। २७-२ १। २७-२-२। २७-४-४। ३०-९-४। ३३-४३ २। ३६-२४-१। ३८-१६-४।

कहे देत—संयुक्त क्रिया। कह देते है, वतला देते हैं। र० प्रि० १४ ७-५।

कहे परै—सयुक्त क्रिया। कहना पडता है। र० प्रि० ५-२९-७।

कहे हैं—सयुक्त क्रिया। कहलाते है। र० प्रि० ८-२३-१।

कहे फिरि—सयुक्त क्रिया। फिरकर कहना (यहाँ लौटकर कहते है) र० प्रि० ११-१२-१।

कहै—क्रियापद। कहकर, कहते हैं। र० प्रि० २-९-४। २-१०-४। २-११-१। ३-१८-२। ३-६५-१। ३-७०-२। ३-७२-१। ३-७२-२। ५-१-१। ५ १-२। ५-३-७। ५-७-१। ७-१६ २। ८-१४-८-३५-२। ८-३६-४। ८-४१-२। ९-६-१। ९-१६-१। १३-११-८। क० प्रि० १-१४-२। १-३१-२। ३-२०-२। ५-४५-२। रा० १-३-२। १-१३-२। ४-२१-२। ९-३१-१। ९-४०-१। १४-३७-१। १४-४१-४। १६-७-२। १६-२०-२। १७ १९-१। १७-५१-१। १८-१४-२। २०-१६-३। २०-१८-२। २३-३४-१ २३-३६ २। २३-३७-२। २३-३८-२। २४ २६-१। २४-२६-२। २४-३६-१। २६-६-१। २६-६-२। २६-७-१। २६-१०-१। २९-४४-२। ३२-२७-२। ३७-१-२। ३९-३-२। ३९-३९-४। वि० गी० १७-५३-१।

कहैगौ—क्रियापद। कहेगे। र० प्रि० १३-२-३। रा० २६-५-२।

कहै सुनाइ—सयुक्त क्रिया। सुनाकर कहा। र० प्रि० ५-१-१।

कहै सुनै—सयुक्त क्रिया। कहने सुनने। रा० १-१६-१। १२-१८-१।

कहो—क्रियापद। कहो; कहूँ; कहे। र० प्रि० २-१३-३। २-१३-६। ३-४८-८। ३-६१-४। ५-११-३। ५-१७-४। ५-३५-३। ६-४१-४। ७-३७-४। १३-१७-३। १४-१६-८। क० प्रि० ३-३०-३०-१। ३-५१-२। रा० ३-२४-१। ४-२२-१। ४-२३-२। ७-१६-३। १२-२७-१। १२-२८-२। १२-४१-४। १५-२-१। १६-१८-१। १७-१६-१। १८ १३-२। २०-१-१। २१-१५-१। २१-२४-२। २१-४८-२। २४-२८-१। २५-२३-२। २५-२५-१। २५-४१-२। २६-६-२। ३३-६-२। ३३-३६-२। ३३-३६-२। ३४-६ २। ३४-३०-२। ३५-१७-१। ३६-१०-२। ३६-१८-१। वि० गी० १७-४१-१।

कहौ—क्रियापद। कहूँ। र० प्रि० १-२८-२। २-१५-३। ३-३७-१। ३-६२-३। ३-६६-२। ३-४७-२। ४-१६-२। ४-४५-२। ८-२३-१। ८-३६-२। ८-५४-२। १०-१०-७। ११-४-६। ११-१४-३। १२-३०-२। १३-१६-५। १३-१२-२। रा० १३-६३-१। १६-२०-१। १६-२५-२। १७-२०-१। १७-२५-२। २०-५४-१। २१-१६-१। २२-२१-१। २२-२१-२। २२-२१-३। २२-२१-५। २२-२१-६। २३-३६-१। २४-२६-४। ३१-२२-२। ३२-१५-१। ३४-२६-१। ३७-२४-१।

कहौगी—क्रियापद। कहूँगी। क० प्रि० ३-१२-४।

कहौ—क्रियापद। कहो। र० प्रि० १-२६-४। रा० ३७-१०-१। ३८-४-४।

कहौगी—क्रियापद। कहोगी। र० प्रि० ६-३४-४।

कह्यत्र—क्रियापद। कहा। र० बा० ५-३-६।

कह्यो—क्रियापद। कहा। र० प्रि० १-२७-३। ३-३१-४। ३-४६-४। ३-५७-४। ३-६०-४। ४०-१० २। ५-२३-१। ६-५०-४। ८-३६-४। ६-७-८। ६-१२-१। १०-१३-१। १०-१५-४। ११-१२-३। ११ १३ २। १४-१६-२। क० प्रि० २-१८-१। २-१६-१। ३-२१-२। ४-३-४। ४-८-२। रा० २-१२-२। २-२३-२। ३-३०-१। ४-२१-१। ७-३-१। ७-२१-३। ७-२६-३। ७-३६-१। ७-४८-२। ६-२६-३। १०-४३-२। ११-१२-२। ११-३६-१। १२-१५-१। १२-५३-२। १३-६४-१। १३-६५-१। १३-६६-२। १३-७०-१। १३-७३-१। १५-५-१। १५-४१-४। १६-२०-१। १७-२०-१। १८-२६-२। १६-३७ २। २०-२-२। २२-१३-२। २५-२-६। २ -१ २। ३०-४३-२। ३२-२-१। ३३-७-१। वि० गी० १७-३८-१।

कॉख—सं० पु० एक०। भुजमूल के नीचे का गढा; बगल। रा० १६-६-२।

कॉच [√काच (दीप्ति) ल्युट]—सं० पुं० एक०। शीशा। क० प्रि० ५-२५-१। ५-२७-१। वी० च० ३२-२६। वि० गी० २१-३६-२। २१-४०-४।

कॉँच मनि—सं० पु० एक०। कॉँच की मणि; स्फटिक। वि० गी० १६-८४-२।

काँचरी—सं० स्त्री० एक०। केंचुली। क० प्रि० ५-६-२।

कॉची—स० पु० एक०। काँचीपुर। रा० ३-२३-२।

कॉछन—[वक्ष+अन]—स० पु० बहु०। धोती के छोर जिन्हे जांघो के बीच से ले जाकर पीछे खोसते हैं। लंगोरी। क० प्रि० १३-११-२। वि० गी० ९-३८-३।

कॉटो—स पु० वहु०। कांटे, कंटक। र० प्रि० १०-५-२।

कांति—स० स्त्री० एक०। (१) चमक; दीप्ति। छ० मा० १-७१-५। २-१२। (२) पु० एक०। सौंदर्य बढानेवाली दीप्ति। वि० गी० ६-१२-१।

कॉपत—क्रियापद। काँपते हैं। र० प्रि० ८-३४-१। रा० २६-१८-१।

कॉपति—(१) विशेषण। विशेष्य—ग्रीवा। कपायमान, काँपती हुई। रा० ११-५-३। (२) क्रियापद। काँपती हुई। रा० ११-५-३।

कॉपि देखि—सयुक्त क्रिया। देखकर कांपने लगते हैं। र० प्रि० ८-३४-१।

कॉप्यो—क्रियापद। काँपा किया। क० प्रि० ३-५०-२।

कॉवरु—सं० पु० एक०। कावेरी नदी। वि० गी० ६-५-२।

कॉस [काश]—स० पु० एक०। घास जो शरद मे फूलती है। वी० च० २२-१५।

कॉसा—स० पु० एक०। तांबे और जस्ते के मेल से बनी हुई एक धातु। रा० ३०-२७-३।

का—अव्यय, कारणवाचक क्रिया-विशेपण। क्या। (उदा० 'का लगि ', रा० १२-५४-२)। क० प्रि० ६-४६-५। ११-५१-१। १६-६२-१। १६-६२-२। रा० १२-५५-४। १९-१९-२। ३३-३८-२।

काइ—स० पु० एक०। शरीर, देह। क० प्रि० ८-१०-४। १३-४२-२।

काइथ—स० पु० एक०। कायस्थ—एक हिंदू जाति। क० प्रि० १२-१६-१।

काक—[कै (शब्द करना)+कन्]—स० पु० एक०। कौआ। र० प्रि० ७-२७-२। क० प्रि० ५-२५-१। ५-३४-१। ६-४३-२। वि० गी० १३-३७-२।

काकन—(काक+न)—'काक'। स० पु० बहु०। कौए। र० प्रि० १२-२९-३।

काकपच्छ—स० पु० बहु०। कनपटियो पर लटकनेवाले बालो के पट्टे, जुलफी। क० प्रि० १३-११-२।

काकलीनि—स० स्त्री० बहु०। कोयल की ध्वनियाँ क० प्रि० ६-४६-२।

काकी—स० स्त्री० बहु०। काकियाँ। रा० ३९-१-१। वी० च० १३-६।

काकोदर—स० पु० एक०। साँप। क० प्रि० १०-२६-४।

काग—स० पु० एक०। काक; कौआ। वी० च० १४-४६।

कागनि—स० स्त्री० बहु०। मादा कौआ। क० प्रि० ६-४४-३।

कागर—सं० पुं० एक०। कागज। र० प्रि० ६-७-२।

काछनि—सं० स्त्री० बहु०। जाँघियों के ऊपर पहनने का वस्त्र। वि० गी० ८-३-१।

काछनी—(१) सं० स्त्री० एक०। मूर्तियों आदि को पहनाया जानेवाला एक तरह का घाँघरा। र० प्रि० ५-३६-३। क० प्रि० १३-२०-१। (२) सं० स्त्री० बहु०। घाँघरा। क० प्रि० २४-६-१।

काज—(१) सं० पुं० एक०। कार्य, काम। र० प्रि० ७-८-१। ७-१६-१। ७-४०-१। ११-७-१। क० प्रि० १०-११-१। १०-१३-१। १०-१५-१। १० १८-४। ११-४३-१। १२ ७-२। १३-१-१। रा० ७-४७-१। १०-४-३। १०-४२-२। १४-१-३। १४-३२-४। १५-१८-१। १७-१६-१। १७-१७-२। १७-२५-१। १७-२५-३। २०-२-२। २१-४८-१। २३-१०-१। ३७-६-१। वी० च० १-४७। २-२१। ३-५७। ४-३६। ५-१८। ५-३०। ५-६०। ६-३१। ६-३२। १३-२१। १४-२। १४-५। १४-११। २२-१०। र० प्रि० १-२६-१। १-४६-३। वि० गी० २-१७-२। ३-८-३। ६-३४-१। ६-४४-२। ६-५७-२। १५-३७-२। १६-६१-२।

काज सिद्धि—सं० स्त्री० एक०। छंद में दास गणों से—'भ' गण या 'य' गण—मित्र गणों—'म' गण या 'न' गण का मेल हो जाने से प्राप्त फल, कार्य की सफलता। क० प्रि० ३-२७-३।

काजु—सं० पुं० एक०। कार्य; काम। वि० गी० १६-२०-२।

काजै—सं० पुं० एक०। कार्य; काम। वि० गी० ६-४१-१।

काटत—क्रियापद। काटता है। र० प्रि० १-२३-१। २४-३१-३। रा० १६-२६-२। २०-२३-२।

काटहि—क्रियापद। काट, काटो। रा० ७-५-२।

काटि—क्रियापद। काटकर। रा० ७-२-४। १६-११-१। १६-४५-३।

काटि काटि—संयुक्त क्रिया। काट काट-कर। रा० १४-२-१।

काटिकै—संयुक्त क्रिया। काटकर। रा० ७-२-४।

काटी—क्रियापद। काटा। रा० २७-१३-२।

काटे—क्रियापद। काटा। रा० १६-२६-२। १७-४२-१। १६-११-१। १६-४८-१।

काटौ—क्रियापद। काट दूँ। र० प्रि० ७-४१-१।

काट्यो—क्रियापद। काटा। रा० ३४-५३-२।

काठ—सं० पुं० एक०। (१) चट्टान; पत्थर। र० प्रि० १०-१२-४। १२-१५-४। क० प्रि० ६-१६-४। ६-२१-१। (२) लकड़ी। र० प्रि० ६-३४-१। वि० गी० ६-४७-१।

काठहू—सं० पुं० एक०। लकड़ी भी। र० प्रि० ७-२०-४।

काढ़ति—क्रियापद। काटती; छिपाती। र० प्रि० ८-११-२।

काढ़ि—क्रियापद। काढना। निकालना। र० प्रि ०७-३३-४। ८-२४-१। रा० ७ ६-३। १३-५३-१। ३५-३०-२।

काढ़ि डारि—संयुक्त क्रिया। काटकर अलग कर दिया। रा० १३-५३-१।

कढ़ि दियो—संयुक्त क्रिया। काट दो। रा० ७-६-३।

काढ़ि लियो—संयुक्त क्रिया। काट लिया। रा० ३५-३०-२।

काढ़ी—सं० स्त्री० एक०। खेत। क० प्रि० १४-१५-२।

काढ़े—क्रियापद। निकाले। र० प्रि० ५-१०-६।

काढ़े हैं—संयुक्त क्रिया। निकली है। र० प्रि० ५-१०-६।

काढ़ौ—क्रियापद। निकालो। र० प्रि० १३-६-३।

कातर—विशेषण। विशेष्य—भूपति। डरपोक। वी० च० १-२२-३। रा० १८-२०-२।

कातिक—स० पु० एक०। कार्तिक मास। आश्विन के बाद का महीना। क० प्रि० १०-३१-६।

कातिग—सं० पु० एक०। कार्तिक मास। र० प्रि० १-११-२।

कादंबिनी—स० स्त्री० एक०। मेघमाला; बादलो की लबी पंक्ति। र० प्रि० १३-१२-१। क० प्रि० १२-१७-१।

कान—सं० पु० एक० (१) शब्दबोध की इद्रिय; कर्ण। र० प्रि० ४-१६-१। ५-११-३। क० प्रि० १४-२१-१। मुहा० "कान करे"—सुनना। मुहा० "कान लगाना" ध्यान देना। र० प्रि० ३-२९-२। (२) ध्यान। र० प्रि० ३-२९-२।

कानन—सं० पु० एक०। (१) जंगल, वन। र० प्रि० ९-१६-२। रा० ११-३४-२। १४-२९-२। ३३-४७-२। वि० गी० १३-१७-२। १३-२८-२। १३-६२-२। १६-३९-१। १६-६१-२। १६-७३-२। (२) घर। र० प्रि० ६-२०-२। (३) स० पुं० बहु०। कर्णेंद्रिय। र० प्रि० १६-५-३। क० प्रि० ९-२३-२। रा० १९-२०-३। (४) कानो से। वि० गी० ३-१३-२।

काननहिं—(कानन+हिं)—"कानन"। सं० पुं० एक०। वन ही। र० प्रि० ११-१७-१। ११-१७-३।

काननि—सं० पुं० बहु०। कर्णेंद्रिय। र० प्रि०। १-१३-१। २-८-३। २-१३-१। ४-१५-१। ४-१५-२। ७-१७-१। १५-५-१। वि० गी० १३-७३-१।

कान-रस—स० पुं० एक०। प्रिय-गुण-श्रवण द्वारा उत्पन्न आनद। र० प्रि० ४-१६-१।

कानि—स० स्त्री० एक०। (१) मर्यादा 'मग रोकिया तजि कानि" । र० प्रि० २-७-१। ३-५७-२। १४-१५-१। रा० ३६-६ २। वि० गी० १०-११ २१। १६-६९-२। (२) लवा। रा० १३-२८-६।

कान्ह—सं० पुं० एक०। श्रीकृष्ण; यदुवंशी वसुदेव और देवकी के पुत्र जो विष्णु के आठवें अवतार माने जाते है। र० प्रि० १-२३-१। १-२७-४। २-४-४। २-६-४। २-१३-३। ३-३६-१। ३-४६-१। ४-६-३। ४-१८-२। ५-२-४। ५-११-४। ५-१४-३। ५-१५-३। ५-२१-३। ५-२३-१। ५-२७-४। ५-२८-३। ५-२६-३। ५-३१-३। ६-४१-४। ७-३६-१। ७-४१-१। ८-१३-३। ८-२१-१। ८ २२ ३। ८-३६-४। ८-३७-१। ८-४६-४। ८-५१-३। ८-५२-१। ६-१०-१। ६-१६-१। १०-२२-३। ११-६-४। ११-१२-३। ११-१७-४। १३-८-४। १३-२०-४। १४-१४-४। १४-२२-४। १४-३८-४। क० प्रि० ६-२६-४। ११-४१-१। १२-१२-२। १४-६-३। १४-४५-४। १५-६४-१। १५-६२-१।

कान्ह कुमार—सं० पु० एक०। कुमार कृष्ण। र० प्रि० ५-१५-३। १३-१३-४। क० प्रि०। १५-१११-१।

कान्ह को संकरवन—विशेषण। विशेष्य—राधे तेरो नाम उचाट मंत्र। कृष्ण को आकृष्ट करनेवाला। र० प्रि० ४-१८-२।

कान्हजू—सं० पु० एक० (आदरार्थक) श्रीकृष्ण जी। र० प्रि० ८-२४-४। १५-३-४।

कान्हहि—(कान्ह + हिं)—'कान्हाँ''। स० पु० एक०। श्रीकृष्ण। र० प्रि० ८-३८-३। १०-१५-४।

कापालिक—[कपाल + ठक-इक] स० पु० एक०। शैवमतावलंबी तान्त्रिक साधु जो मद्य मांस खाते है, काली को बलि चढाते हैं और जो खोपडी लेकर भीख माँगते हैं। रा० ५-१०-५। वि० गी०। ८-२०-२। ८-२१-१।

कावेरिहि—स० स्त्री० एक०। नदी विशेष, कावेरी नदी। वि० गी० ६-१८-१।

कम—[कम् (चाहना) णिङ् + घञ्] सं० पु० एक०। (१) कामदेव, मन्मथ। र० प्रि० ३-३८-४। ४-११-३। ४-१८-२। ५-१६-३। ५-२६-२। ६-२०-३। ८-२२-३। ८-४३-४। १०-२४-१। १२-४-४। १४-१६-२। १४-२६-४। १४-२६-४। क० प्रि० ३-११-३। ५-२५-१। ६-१६-१। ६-५२-२। ६-५४-२। ८- -१। ८-३४-४। ६-२६-३। १०-२५-६। ११-३५-४। ११-४१-१। १४-६-३। १४-१५-४। १५-२३-१। १५-४६-१। १५-५४-३। १५-६०-३। १५-७०-२। १५-६२-३। १६-३४-१। १६-३५-१। १६-७६-२। १६-८६-३। रा० ७-१४-८। १२-२०-२। १४-८-१। १६-३०-२। २०-४६-२। २४- -२। २४-८-३। २४-१०-४। २६-२०-२। २६-२१-२। ३०-३४-२। ३०-४१-२। ३१-२-२। ३२-२-२। वी० च० १-४०। १६-१५। २०-१२। २२-२०। २२-२२। २२-७७। २३-३४। २६-११। २६-१२। २६-२३। २८-६। जहाँ० ८-२८-६५। वि० गी० २-१-२। २-२४-१। ३-३-१। ३-१६-१। ३-२६-४। ४-३५-२। ६-३६-१। ६-५५-२। ७-२-१।

७-१६-४। ६-१६-१। ६-५२-१। ६-५३-४। ११-३६-२। १२-१२-४। १२-१३-२। १३-२-१। १६-६-२। (२) इच्छा। र० प्रि० ३-५। ८-२। क० प्रि० ४-१३-२। ५-८०। ६-२०। ६-२६। ६-३०। ६-३३। ७-२६। २६-२२। वी० च० १-६१। १४-१६। २३-१७। ३२-५५। वि० गी० १-६-१। २-१-२। २-३-२। १४-२२-१। १४-५४-४। १४-५५-३। १६-८-२। १७-२७-२। १८-१६-२। १६-१२-२। १६-६५-१। २१-४२-३। (३) प्रयोजन। र० प्रि० १४-२६-४। (४) क्रिया; कर्म। क० प्रि० ३-२४-१। ६-५६-३। ८-१-१। १६-३५-१। १६-३६-१। (५) इंद्रिय या विषयसुख की इच्छा। र० प्रि० १-२०-२। २-१०-१। ३-३७-२। १०-१४-१। १०-१८-२। १०-२४-२। १२-१४-४। १२-२२-४। १४-२०-३। १४-३४-३। १४-३८-२। १६-११-२। क० प्रि० ६-३५-१। ८-१६-१। ६-१०-४। ६-१७-१। १०-१४-३। ११-८४-२। १३-२८-४। १६-३४-१। १६-३४-२। १६-८२-१। १६-८३-१। रा० २-२८-३। ६-१७-४। २५-३-१। २४-७-१। २८-१५-२। २६-६-२। ३२-२५-१। (६) सं० पुं० बहु०। कार्य। र० प्रि० ८-२५-१। रा० ६-३३-१। १६-४-१। १६-११-१। २१-४२-२। वी० च० ३-२४। ३-२६। ३-२७। ३-२६। ३-३०। ४-३। ४-८। ४-२५। ४-३२। ४-४०। ५-६२। ५-८०। ६-१६। ६-२०। ६-२६। ६-३०। ६-३३। ७-२६। २६-२२। र० बा० १-१-५। १-५२ २। छं० मा० १-५५-५। १-६७-५। २-२६-३। २-४४-३। वि० गी० ३-१६-१। ६-३५-२। ८-२६-१। ६-१६-१। ११ ३१-१। १६-२७-२।

काम-अवला—सं० स्त्री० एक०। मदन की स्त्री रति। र० प्रि० १४-२०-३।

काम करि—सं० पु० एक०। काम रूपी हाथी। रा० २३-३३-१।

कामकला—सं० स्त्री० एक०। रतिभाव; शृंगारिक चेष्टा। र० प्रि० १-२०-२। २-१०-१। क० प्रि० १३-२८-३।

काम-कलानि—सं० स्त्री० बहु०। काम-क्रीडाएँ। र० प्रि० ३-३७-२।

कामकली—सं० स्त्री० एक०। कामरूपी कलिका—नायिका के लिये संबोधन। र० प्रि० ५-२३-४। ६-२०-३। ८-४६-३।

काम की कहानी—विशेषण। विशेष्य—बानी। काम की कथा के समान प्रिय लगनेवाली। र० प्रि० २६-११-२।

काम-कुँवर—सं० पु० एक०। काम रूपी युवराज। रा० ३१-२६-२।

कामकुमार—सं० पु०। प्रद्युम्न। जहाँ० २८। वि० गी० ४-४२-१। १३-४२-४।

काम के प्रहसन—विशेषण। विशेष्य—रावे तेरो नाम, उचाटमंत्र। काम या इच्छा को प्रहर्षित करनेवाला। र० प्रि० ४-१८-२।

कामकेलि—सं० स्त्री० एक०। रति क्रीडा। रा० १२-६२-३। वी० च० १५-२२।

कामकैला—सं० पुं० एक०। काम रूपी कोयला (जले हुए कामदेव का भस्मावशेष)। रा० ३२-८-२।

कामक्केला—सं० पुं० एक०। कामकला। वी० च० २३-११। "जानहु कामक्केला जगमगें"।

काम गो—सं० स्त्री० एक०। कामधेनु। रा० २८-२-१।

कामग्रास—सं० पुं० एक०। काम का निवासस्थान। वि० गी० ११-३९-२।

कामजू—सं० पुं० एक०। (आदरार्थक) मदन। र० प्रि० १४-१९-२।

कामथरी—सं० स्त्री० एक०। काम का स्थल। वि० गी० ९-५३-२।

कामदेउ—सं० पु० एक०। मनमथ। क० प्रि० ४-२०-३।

कामदेव—सं० पुं० एक०। मनमथ। क० प्रि० १५-५६-३। १६-७८-१।

कामदेवजू—सं० पुं० एक०। मदन। क० प्रि० १५-६४-३।

कामदेवप्रिय—विशेषण। विशेष्य—केसोराइ। जिसे कामदेव अधिक प्रिय हैं। क० प्रि० ११-४२-३।

कामधेनु—सं० स्त्री० एक०। स्वर्ग की वह गाय जो कामनाओं की पूर्ति करती है। क० प्रि० १६-८७-१। वी० च० १-४९। १२-१८। २७-१५। जहाँ० ११२।

कामना—सं० स्त्री० बहु०। इच्छाएँ; अभिलाषाएँ। र० प्रि० ४-१८-२। ८-२५-२। रा० २-२८-३। छं० मा० २-२६-३। वी० च० ३२-५५। वि० गी० २१-४२-३।

कामना 'को' बरषत—विशेषण। विशेष्य—राधे तेरो नाम, उचाट मन्त्र। कामनाओं का वर्णन करनेवाला। र० प्रि० ४-१८-२।

कामनानि—सं० स्त्री० बहु०। इच्छाएँ। क० प्रि० ११-७९-३।

काम-निसा—सं० स्त्री० एक०। कामरात्रि। र० प्रि० १०-२४-२।

कामली—सं० स्त्री० एक०। स्त्री; नारी। र० प्रि० ४-११-३।

काम पिसाच—सं० पु० एक०। काम रूपी पिशाच। रा० २४-९-४।

कामबन—सं० पुं० एक०। वह वन जहाँ महादेव ने कामदेव को जलाया था। रा० २-२९-१।

कामबाम—सं० स्त्री० एक०। कामदेव की स्त्री, रति। वी० च० २९-३५।

कामबोज—सं० पु० एक०। कामबोज देश। जहाँ० १०१।

काम भय—सं० पुं० एक०। कामदेव का त्रास। र० प्रि० ५-१६-३।

काम भय भीने—विशेषण। विशेष्य—घनश्याम। कामत्रास से भीत। र० प्रि० ५-१६-३।

काम रहित—विशेषण। विशेष्य—जीव। काम या इच्छा शून्य। वि० गी० १७-२७-२।

कामरात—सं० स्त्री० बहु०। कामदेव और रति। क० प्रि० ८-८-१।

कामरू—सं० पु० एक०। कामरूप देश; आसाम। जहाँ० १०१।

कामरूप—सं० पु० एक०। कामदेव का आकार। क० प्रि० १०-२४-३।

कामलता—सं० स्त्री० एक०। कामदेव की लता—नायिका के लिए संबोधन। र० प्रि०। १३-१७-१। रा० ८-१३-१।

काम संजीवनी—सं० स्त्री० एक०। उद्दीपक कामभावना। रा० १९-३२-१।

कामसमुद्र—सं० पुं० एक०। कामरूपी समुद्र। रा० २४-५-२।

कामसर—सं० पुं० बहु०। मनमथ के बाण। क० प्रि० ९-३१-३। १५-३५-२। १५-३६-१। १५-५५-२।

काम सहित—विशेषण। विशेष्य—जीव। इच्छाओं से युक्त। वि० गी० १७-२७-२।

कामसूल—सं० पुं० एक०। काम की पीडा। क० प्रि०। १९-२७-१।

कामसेना—सं० स्त्री० एक०। रामसिंह की वेश्या का नाम। क० प्रि० ११-३५-४।

कामहि—(काम+हिं)—'काम'। सं० पुं० एक०। कार्य। क० प्रि० ६-५६-३।

कामिनि—सं० स्त्री० एक०। कामदेव का अनुभव करनेवाली स्त्री। छं० मा० १-६९-३। वि० गी० १०-८-४।

कामिनि के हेत—विशेषण। विशेष्य—महादेव। गौरी के हितैषी। र० प्रि० ९-२६-३।

कामिनि को कामदेव—विशेषण। विशेष्य—इंद्रजीत। सुंदरियों के लिये कामदेव। क० प्रि० ४-२०-३।

कामिनी—(१) सं० स्त्री० एक०। कामनायुक्त स्त्री; सुंदरी स्त्री। र० प्रि० १०-२४-२। १४-१६-२। १४-२८-३। १४-३८-२। ३-५२-२। क० प्रि० ३-८-४। ४-२०-३। १०-२४-३। ११-४१-२। १६-४८-४। १६-७१-३। (२) सं० स्त्री० बहु०। सुंदरी स्त्रियाँ। र० प्रि० १२-२४-१। क० प्रि०। ९-२६-३। रा० २४-७-२। ३१-२८-१। वि० गी० ५-१८-१। (३) सं० स्त्री० एक०। पत्नी। रा० १२-२०-२। १४-८-२।

कामी—[काम+इनि] (१) सं० पुं० बहु०। लंपट पुरुष। क० प्रि० १६-६२-२। १६-६७-२। (२ विशेषण। विशेष्य—राजा। विषयी; कामुक। रा० १८-९-२। १८-१०-१।

कामै—सं० पुं० एक०। काम, कार्य। वि० गी० ५-७-२।

काय—सं० पुं० एक०। शरीर, देह। क० प्रि० ६-२४-१। ७-१७-१। रा० ५-३१-३। वी० च० १५-१६। वि० गी० १४-५४-१। १०-१५-३। १०-१८-१। १४-५४-२। १४-५६-१।

कायथ—सं० पुं० एक०। कायस्थ; जातिविशेष। वी० च० १४-३९। ३१-३। ३३-२४।

कायर [सं० कातर]—(१) सं० पुं० एक०। डरपोक। वी० च० १४-६०। वि० गी० १६-२९-१। (२) विशेषण। विशेष्य—बालक। डरपोक। रा० ३७-१४-१।

काया—सं० स्त्री० एक०। शरीर। क० प्रि० १५-७०-२। १५-८५-२। वि० गी० ११-५०-१।

कारज—सं० पु० एक०। कार्य। क० प्रि० ६-११-१। ६-१३-१। ६-१३-२। १०१-१। १०-७-१। १०-११-१। १०१६-१। १२-१४-१। १३-६-१। रा० २-१६-२। १५-१-३। १७-२५-१। १६-१५ २। ३३-१६ २। वि० गी० ३-२२-१। १५ २२-१।

कारन—(१) सं० पुं० एक०। हेतु। र० प्रि० २-१२-२। रा० १३-५१-२। क० प्रि० ६-१३ १। ६-२४-१। १६-४७-४। (२) सं० पु० बहु०। किसी बात के होने के हेतु; साधन। क० प्रि० १२ १४-१। वि० गी० १०-११-१। ३-२३-१। १३ ५२-२। १६-११८-१। १७-३१-२। २०-४८-२। २१-१७-१।

कारनहि—(कारन+हि)—सं० पु० एक०। किसी बात के होने का हेतु। क० प्रि० ६-११-१।

कारिका—(१) सं० स्त्री० एक०। श्लोक-बद्ध व्याख्या। क० प्रि० ६-४६-३। (२) सं० स्त्री० बहु०। कोकशास्त्र के नियमो के श्लोक। र० प्रि० ३-४-१। १०-२५-१।

करिकान—सं० स्त्री० बहु०। व्याख्याएँ। क० प्रि० ६-२८-१।

कारी—विशेषण। विशेष्य—छुटी। काले रंग की। रा० २६-५-२। २६-३२-१। वी० च० ८-३६-१। १६-१०-२। वि० गी० १-२७-४। १-३६-२।

कारे—(१) सं० पुं० एक०। काला रंग; कृष्ण वर्ण। क० प्रि० ५-४-१। ५-२५-२। (२) विशेषण। विशेष्य—वेस। काले रंग के। क० प्रि० ५-२५-२। ६-७५-१। ८-३८-१। शि० न० ८-४। वी० च० १७-२६-२। १७-४५-२। १७-५२-१। १७ ५८ २। ३२-५३-१। वि० गी० १-२७-४। (३) विशेषण। विशेष्य—तारे। काले। वी० च० १७-४६-१।

कारो—विशेषण। विशेष्य—मुख। काले रंग का। वि० गी० १३-७७-२।

कातिक—सं० पुं० एक०। आश्विन के बाद का महीना। वि० गी० ६-५-२।

कार्मुक—सं० पु० एक०। धनुष। रा० २०-४६-२।

कार्य—सं० पु० ए०। काम। रा० ३-१३-२।

काल—सं० पु० एक०। (१) समय; वक्त। र० प्रि०। ४-१७ ३। ५-२८-३। ७-११-४। ७-४२-२। ८-१६ ४। क० प्रि० १-२-१। ३-२३-२। ६-२५-२। ६-६६-१। ६-६७-४। ८-१६-२। ८-१६-२। ११-८-२। १३-२७-१। १३-३२-४। रा० १-२४-५। ४-६-३। १०-२०-२। १२ ४२-४। १७-१४-२। १८-१५-२। २१-७-२। ३६-८-४। वी० च० १-३४। १-६१। १३-५। १३-११। १४-३। १४-११। १४-५५। १७-४०। १७-४६। १७-५१। १७-६२। २४-२०। २६-१३। २७-१४। २७-२०। २६-२५। ३०-८। ३१-२५। ३२-७। ३३-३२।

३३-३३ । ३२-३६ । ३३-४७ । जहाँ० १० । १२ । (२) मृत्यु । र० प्रि० १४-४०-१ । १५-७-४ । क० प्रि० ६-४३-२ । ६-५२-१ । वी० च० ११-४७ । ११-५६ । १२-२५ । १२-३० । १२-३५ । १३-४ । १३-८ । २८-१५ । २६-३७ । (३) यमराज । क० प्रि० ६-५४-२ । ६-६७-४ । १६-२०-१ । रा० १८-२८-१ । ३६-१०-१ । वि० गी० १४-६-१ । १४-२६-२ । (४) महाकाल । रा० १८-२३-१ । १६-६-२ । (५) प्रारब्ध । रा० १३-२२-३ । ६) दशा । रा० १-१-१ । (७) शिव । वि० गी० ६ ५६-४ । (८) स० पु० बहु० । बारह महीने । क० प्रि० ७-१-२ ।

कालअहि—सं० पुं० एक० । काल रूपी सर्प । रा० २३-३५-१ ।

कालआखु—स० पुं० एक० । समय रूपी चूहा । रा० २४-२३-२ ।

कालकाल—(१) स० पु० एक० । काल का भी काल (महाकाल) । रा० ५-३६-१ । (२) विशेषण । विशेष्य—पिनाक । काल का भी काल, बहुत भयंकर । रा० ५-३६-१ ।

काल-कुटुंबिनि—स० स्त्री० बहु० । प्रेतिनी; पिशाचिनी । र० प्रि० १५-७-४ ।

कालकूट—स० पु० एक० । देवासुर यज्ञ के समय पृथुमाली नामक कोई असुर देवगण द्वारा मारा गया था । उसके रक्त से अश्वत्थ वृक्ष की भांति एक वृक्ष उत्पन्न हुआ । उसी वृक्ष का नाम 'कालकूट' विष है । यह विष शृंगवेर, कोंकण और मलय पर्वत मे होता है । (हिंदी विश्वकोश, भाग ४ ।) र० प्रि० ६-७-४ । क० प्रि० ५-२७-३ । रा० २३-२४-१ । वी० च० १४-३० । २६-२६ । छं० मा० १-१-२ ।

कालगति—स० स्त्री० । समय का फेर । उदा०—"हम पर कीजत रोष कालगति जानि न जाई ।" रा० ७-२०-३ ।

कालचाल—स० पु० एक० । काल की चाल । वि० गी० १७-८-२ ।

कालचालि—स० स्त्री० एक० । समय का फेर । उदा० । "कालचालि कछु जानि न जाई ।" रा० १७-१२-२ ।

कालदण्ड—स० पु० एक० । यमराज का दंड । रा० ४-६-५ । ५-३६-१ ।

कालफल—सं० पु० एक० । इन्द्रायन । क० प्रि० १६-७१-२ ।

कालबस—स० पु० एक० । विरहावस्था । क० प्रि० १४-४१-२ ।

कालभट—सं० पुं० एक० । यमकिंकर । रा० १३-६१-२ । ।

कालराति—स० स्त्री० एक० । मृत्यु की रात्रि । रा० १२-४२-३ ।

काल-विधान—सं० पु० एक० । समय की क्रीडा । क० प्रि० । ६-२५-२ ।

काल-विरोध—स० पु० एक० । काव्यगत दोष । क० प्रि० ३-१६-१

काल-सत्ता—सं० स्त्री० एक० । काल की सक्ति । वि० गी० २०-१३-१ ।

काल-सर्प—सं० पु० एक०। (१) बड़ा साँप जिसके डसने से मृत्यु ही होती है, कोई बचता नहीं। रा० ३४-३३-१। (२) काल रूपी सर्प। रा० १७-१६-१।

कालहि—(काल+हि) सं० पु० एक०। समय। क० प्रि० १५-१२६-२।

कालिजर—सं० पु० एक०। कालिंजर नाम का एक नगर। वि० गी० ६-५-१।

कालिंद—सं० पु०। वह पर्वत जिससे यमुना नदी निकलती है। वी० च०। २६-४०।

कालिंद नंद—सं० पु० एक०। यम। जहाँ० ४३।

कालिंदी—सं० स्त्री० एक०। एक शाखा नदी—बंगदेश के खुलना जिले में यमुना नामी नदी प्रवाहित है। कालिंदी उसी की शाखा है। वह बसंतपुर के निकट यमुना से अलग है। कलकत्ते से बड़ी बड़ी नौकाएँ उक्त नदीपथ से पूर्वाभिमुख गमन करती हैं (हिंदी विश्वकोश, भाग ४)। क० प्रि०। १५-६६-३। वि० गी० ३-५-२।

कालि—सं० स्त्री० एक०। कालिका। क० प्रि० १६-६७-१।

कालिका—सं० स्त्री० एक०। चंडिका। इनके नामकरण के संबंध में कालिका पुराण में लिखा है-शुंभ और निशुंभ दैत्य के उत्पीड़न से अत्यंत पीड़ित हो इंद्रादि देव हिमालय पर्वत में गंगातीर्थ के निकट पहुँच महामाया का स्तव करने लगे। महामाया ने उनके स्तव से संतुष्ट हो मातंग स्त्री रूप में वहाँ पहुँचकर पूछा—'तुम लोग किसकी आराधना के लिये इस मातंग आश्रम में आए हो?' देवी के पूछते ही उन्होंने कहा—'शुंभ और निशुंभ दैत्य से उत्पीड़ित हो उनके निधन के उद्देश्य से हम महामाया की आराधना करने आए हैं।' वह आविर्भूता देवी प्रथम कृष्णवर्ण रही, क्षणकाल बाद गौर वर्ण धारण किया। किंतु कृष्णवर्ण प्रादुर्भूत होने से वह कालिका नाम से विख्यात हुई। वह भय से रक्षा करती है, इसी से पंडित उन्हें उग्रतारा भी कहते हैं। मस्तक में एकमात्र जटा रहने से उनका नाम एकजटा भी है।—हिंदी विश्वकोश, भाग ४। क० प्रि० ७-३२-४। वि० गी० १०-१२-८। वी० च० ११-१२। १४-३०। २३-८। २३-११।

कालिमा—सं० स्त्री० एक०। कालिख। क० प्रि० ५-२६-१।

काली—(१) सं० स्त्री० एक०। दे० 'कालिका'। क० प्रि० ५-२३-१। जहाँ० १८५। (२) सं० पुं० एक०। कालिय नाग—यमुना में रहनेवाला एक नाग जिसका दमन कृष्ण ने किया था और उसे वृंदावन छोड़कर चले जाने को विवश किया था। र० प्रि० १४-२६-२। क० प्रि० ६-५४-३। १५-६६-३।

काव्य—सं० पुं० एक०। काव्य। वी० च० २२-७४।

१४-३ । ७-६६-२ । ८-७-३ । ६-१४-१ । ११-६० २ । ११-६४-३ । १२-१७-१ । १२-३०-१ । १४-२०-३ । १६-२६-१ । १६-२६-१ । रा० १-२-२ । ४-३०-१ । ५-१-१ । ५-६-२ । ५-८-१ । ५-२२-१ । ५-३८-१ । ५-४४-२ । ७-१०-२ । १४-२५-४ । १६-८ १ । १७ ६-१ । २३-३७-४ । २४-२२-४ । ३३-३-१ । वी० च० ५-१५-१ । ६-१५-१ । ८-३०-१ । ८-३१ २ । ६-३१-१ । ११-११-१ । १३-१-१ । १४-१२ २ । २६-१४-१ । वि० गी० ७-१०-३ । १७-२७-३ । १४-५७-३ ।

काहे—अव्यय । कैसे; क्यो । उदा० "काहे को' " (क० प्रि० ६-१२-४) । र० प्रि० २-६-४ । १२-७-४ । क० प्रि० ११-२८-४ । ११-४६-४ । ११-७४-३ । १२-१६-१ । १६-५७-३ ।

किंकर [किं √कृ+ट]—सं० पुं० बहु० । सेवक । र० प्रि० १०-२४-१ । रा० १३-६६-१ । २१-४६-१ ।

किंकिन—स० स्त्री० एक० । करधनी; एक प्रकार का आभूषण । रा० ११ २८-१ । १४-६-२ । १७-३७-२ । १६-३०-२ ।

किंनर [किम्+नर]—स० पु० एक० । देवताओ की एक योनि जिनका मुँह घोडे के जैसा होना माना जाता है; गाने बजानेवाली एक जाति । क० प्रि० ११-२६-२ । १५-४८-१ । र० बा० १-१८-३ ।

किंनरी—(१) सं० स्त्री० एक० । किन्नर जाति की स्त्री । क० प्रि० १-४७-१ । १५-१२८-२ । (२) सारंगी । क० प्रि० १५-१२८-२ ।

किंपुरुष—(१) सं० पुं० एक० । देवता की एक जाति । वी० च० ३०-४ । वि० गी० ४-३८-१ । (२) विशेषण । विशेष्य—भूपति । पुरुषार्थहीन । रा० १८-१०-२ ।

किंबदंती—[किम् √वद् + णिच] स० स्त्री० एक० । दतकथा । वि० गी० २-२ -३ ।

किंवार—सं० पु० बहु० । दरवाजा । क० प्रि० १-३४-१ । ४-२२-३ ।

किंसुक—[किम्+शुक] स० पुं० एक० । किंशुक; पलाश पुष्प । क० प्रि० ५-३१-१ । ६-८-१ । वी० च० २२-२५ ।

किंसुकश्री—स० पुं० बहु० । पलाश के पुष्प । क० प्रि० ५-३३-३ ।

कि—समुच्चयबोधक क्रियाविशेषण । (१) कैसे, किस प्रकार; क्या । (२) सयोजक शब्द । (३) अथवा, या । उदा०—जम की जमाति सी कि जमावत को सो दल । (क० प्रि० ७ ७-३) । र० प्रि० १-१६-२ । १-२६-४ । ३-२६-२ । ३-३८-४ । ३-४६-१ । ४-११-३ । ४-१३-३ । ५-१५-४ । ६-३८ २ । ७-३२-४ । ८-२२-३ । ८-३८-४ । ८-४३-४ । ८ ४६-४ । ६-१३-२ । १०-१३ ४ । ११-६-४ । ११-४-३ । १४-२६-१ । १४ ३२-४ । क० प्रि० ७ २६ १ । ७-२६-२ । ७-३२-४ । ७-३४-४ । ११-२६-१ । ११-२६ २ । ११-२६-३४ ।

किएँ—क्रियापद। करते हुए; किए। र० प्रि० १-२०-२। ३-२७-२। ३-५८-४। ५-३३-१। ५-३६-३। ७-१४-४। १०-४-१। ११-३-३। ११-६-३। ११-१३-४। क० प्रि० ३-३८-३।

किज्जहु—क्रियापद। करना। र० बा० ५-४।

किज्जिहु—क्रियापद। कीजिए। र० बा० ७-२।

कितने—क्रियाविशेषण, परिमाणवाचक। कितने। उदा०—'कितने पुरुप कीन्हे....'। रा० ६-३०-३।

किरित—सं० स्त्री० एक०। कीर्ति। र० बा० १-३६-४।

किधौं—अव्यय, रीतिवाचक। (१) अथवा; या। (२) तो। उदा०—किधौं दहनदुति सी सुखकरी....'। वी० च० २४-१५-२। र० प्रि० १-२६-२। १-२७-२। १-२६-१। २-६-४। २-१०-४। ३-२६-३। ३-४७-२। ३-५२-२। ३-११-२। ४-१३-३। ४-१८-३। ५-१७-३। ७-८-१। ७-६-१। ७-१२-३। ७-१८-४। ८-२२-३। ८-३४-२। ८-४२-२। ८-४२-३। ८-४६-२। ६-७-१। ६-८-१। १०-१५-४। क० प्रि० ३-३८-४। ७-२४-१। ७-२८-४। ७-३६-४। ७-३८-४। ८-२३-४। १२-४-३। १२-३०-१। १४-६-१ से ४ तक। १५-१५-४। १५-१७-१। १५-२३-३। १५-२५-१। १५-२६-२। १५-३३-४। १५-३६-२। १५-३६-१ से ३ तक। १५-४१-१। १५-४१-२। १५-४२-१। १५-४३-१। १५-४३-३। १५-४३-४। १५-५८-१। १५-५८-२। १५-५०-१ से ४ तक। १५-६२-१ से ४ तक। १५-६८-१ से ४ तक। १५-७१-१ से ३ तक। १५-७८-१। १५-७८-२ से ४ तक। १५-८४-४। १५-८५-१ से ४ तक। १५-६०-१ से ४ तक। १५-६३-१ से ४ तक। रा० ५-१०-३ : ५-१०-६। १२-२७-२। १२-६२-२। १३-४२-२। १३-५४-१। १३-५४-२। १३-७३-१। १३-८२-१। १३-८३-२। १४-३२-३। १४-३२-३। १५-३३-२। १७-५३-१। १६-३१-१। १६-३१-२। १६-३१-३। १६-३१-४। २०-५-२। २०-६-२। २०-७-१। २०-१०-१। २१-१६-४। २१-२४-२। २२-८-२। २२-२१-१ से ४ तक। २३-३३-१। २४-१२-३। ३०-३६-२। ३०-३८-१। ३०-३८-२। ३०-४४-२। ३१-६-१। ३२-२७-१। ३२-२८-२। ३२-३४-१। ३३-५३-४। ३५-५३-४। ३५-८-४। ३६-६-४। ३७-८-१। ३७-१०-१। छ० मा० १-७३-३। १-७६-४। शि० बा० १-१-३। १-१-४। १-२-३। १-३-१। १-६-१। १-७-२। १-७-४। १-६-१। १-११-२ से ४ तक। १-१३-१। १-१३-४। १-१४-१ से ४ तक। १-१५-३। १-१८-१। १-१८-४। १-२०-१ से ४ तक। १-२१-१ से ४ तक। १-२३-१ से ४ तक। १-२४-३। १-२६-१ से ४ तक। १-२७-१ से ४ तक। १-२८-१ से ४ तक। वी० च० ३-१००-१। १२-२७-१। १२-३५-१। १२-५२-१। १२-५३-२। १२-६४-१।

१४-३०-१ से ४ तक। २२-२७-२। २५-१३-२। ३२-४७-१। जहां० ४०-३। १२०-३। १३५-१। वि० गी० १-२२-२। ८-३५-१। १०-२-४। १०-७-१। १०-६-४। १३-४६-२।

किन—प्रश्नवाचक सर्वनाम, अनिश्चयवाचक, कर्त्ताकारक, 'किस' का बहुवचन। 'किस'—'कौन' का विभक्तिसहित रूप। उदा०—"भारतबंधु पुकार सुनी किन आरत हौ तो पुकारत ठाढ़ौ।" रा० १५-२४-४।

किनरी—सं० स्त्री० बहु०। ज्योति से प्रवाह रूप मे निकलनेवाली रेखाएँ। क० प्रि० १५-११-२।

किनारे—सं० पुं० एक०। छोर; कोने। र० प्रि० १३-१६-१।

किन्नर—सं० पु०। देवताओं की एक जाति जिनका मुख घोडे जैसा माना जाता है। रा० १०-१४-२। ११-३१-१। १६-३-२। वी० च० १-३१। १६-२६।

किय—क्रियापद। किया। रा० २६-३१-२।

कियदीह—संयुक्त क्रिया। कर दिया। रा० २६-३०-२।

किये—क्रियापद। किए; करके। र० प्रि० २-५-४। ६-२६-३। ६-४१-१। ११-६-४। ११-११-३। १६-६-३१। रा० ४-२६-३। १०-१६-२। १२-२-६। १२-४०-१। १३-२२-३ २३-६-२। २३-१०-२। २५-११-१। २५-१७-१। २५-३०-२। ३०-२५-२। ३०-३०-१। ३३-५६-४। ३५-४-२।

कियेहुँ—क्रियापद। किया। र० प्रि०। ६-५३-२।

कियो—क्रियापद। किया; कर दिया। र० प्रि०। ३-२५-३। ३-६२-४। ६-२०-३। ६-४३-२। ७-१४-५। ७-३६-१। ११-५-८। १३-१४-४। १६-६-३। क० प्रि०। ३-३८-३। ५-१०-३। रा० ५-१४-२। ५-४२-२। ५-४२-३। ६-६४-३। ७-११-२। ७-२७-२। ७-३६-१। ७-३६-२। ७-४२-१। ६-१-२। १०-२२-२। १२-१-२। १२-१०-१। १२-१३-२। १३-६-१। १६-११-३। १६-१३-३। १६-१४-१। १६-३१-१। १७-१-२। १७-५-२। १७-५६-२। १८-१६-२। २०-१५-२। २१-४८-१। २२-१४-२। ३१-३६-३। ३३-२७-२। ३४-३१-२। ३५-२-२। ३७-४-२। ३६-५-२।

कियौयी—क्रियापद। किया। र० प्रि० ११-८-१।

किरन—सं० स्त्री० एक०। किरण। वी० च०। २१-८। २२-८७। २५-१६। २५-२०।

किरवान—सं० पुं० एक०। कृपाण; तलवार। र० बा० १ २६-३।

किरात—विशेषण। विशेष्य—नैन। दुष्ट, अपवित्र। र० प्रि० १२-२३-३।

किरीट—[कृ+ईटन्] सं० पुं० एक०। मुकुट। र० प्रि० ६-२६-१। र० बा० १-२७-१।

किल—सं० पु० एक०। क्रीडा। क० प्रि० ३-२५-३। ६-५४-३।

किलकत—क्रियापद। हँसते हैं। र० प्रि० ६-३७-१।

किलकिंचित—सं० पुं० एक०। संयोग शृंगार का एक हाव जिसमे नायिका एक साथ कई भाव प्रकट करती है। र० प्रि० ६-१६-२। ६-३६-२।

किलकै—क्रियापद। हँसता है। रा० १३-१८-२।

किलोलनि—सं० पुं० बहु०। कल्लोल; मुद्राएँ। र० प्रि० ११-११-१।

किंवार— सं० पुं० बहु०। दरवाजा। क० प्रि० १०-१६-१। वी० च० २०-७।

किष्किध—सं० स्त्री० एक०। किष्किंध देश, बालि, सुग्रीव की राजधानी। रा० १३-५-२। १३-२६-१।

किसान—[कृषाण, सं० पुं० एक०। खेतिहर। क० प्रि० १-२२-१। ५-२४-१।

किसोरी—सं० स्त्री० एक०। ११ वर्ष से १५ वर्ष तक की उम्रवाली लड़की। क० प्रि० १५-३२-२।

किहिं—अव्यय। क्या। उदा०—"किहि कारन"। र० प्रि० २-१२-२। ६-१६-२।

किहिनि—प्रश्नवाचक सर्वनाम, अनिश्चयवाचक कर्ताकारक (हिं० केहि)। किसकी, किसके। उदा०—"सध्या सी तिहु लोक के किहिनि उपासी आनि"। रा० ५-२७-२।

की—(१) क्रियापद। किया। र० प्रि० १३-१६-३। (२) संबध कारक परसर्ग (स०—कृत; प्रा०—कि; हिं०—की) 'का' का स्त्रीलिंग रूप। उदा०—'साहिजू की साहिवी को रच्छक अनत गति कीनी' (जहाँ० ८-१)। र० प्रि० १-६-२। १-१७-१। १-१८-१। १-२२-१। १-२४-१। २-५-३। २-८-४। २-१२-१। १-१४-२। १-१५-३। ३-४-३। ३-५-२। ३-१०-१। ३-१६-२। ३-१६-१। ३-२२-२। ३-२८-२। ३-३४-४। ३-३८-१। ३-४८-४। ३-५१-२। ३-५२-४। ३-६१-२। ३-६४-३। ३-६५-१। ३-७०-१। ३-७३-१। ३-७४-१। ४-३-१। ४-४-३। ४-६-३। ४-८-१। ४-६-२। ४-११-३। ४-१६-१। ४-१६-२। ५-१-१। ५-२-१। ५-३-१। ५-३-२। ५-३-३। ५-६-२। ५-१०-१। ५-१५-१। ५-२६-१। ५-२८-४। ५-२६-१। ५-३१-२। ५-३१-४। ५-३२-१। ५-३२-४। ५-३३-३। ५-३५-३। ६-१-१। ६-२५-१। ६-२६-३। ६-२८-१। ६-२६-१। ६-३०-१। ६-३२-१। ६-३४-४। ६-४१ १। ६-४६-२। ६-५२-३। ६-५५-१। ६-५७-२। ७-५-३। ७-६-४। ७-१०-२। ७-११-१ से ४ तक। ७-१५-२। ७-१७-१। ७-१८-३। ७-२८-१। ७-३०-३। ७-३१-४। ७-३८-३। ७-४०-३। ७-४२-१। ७-३०-१। ७-४३-१। ७-४४-१। ८-११-२। ८-१४-२। ८-१७-३। ८-१७-४। ८-१८-४। ८-१६-१। ८-२२-३। ८-२४-१। ८-२५-२। ८-२६-१। ८-३२-२। ८-३३-४। ८-३७-२। ८-४२-४। ८-४३-१। ८-४३-४।

९-४-२ । ९-५-३ । ९-७-१ तथा २ । ९-११-३ । ९-११-४ । ९-१३-३ । १०-४-१ । १०-५-३ । १०-१०-४ । १०-११-१ । १०-१२-१ । १०-२२-४ । १०-२७-१ । १०-२७-३ । १०-३१-१ । ११-१६-१ । ११-१७-४ । ११-१८-३ । १२-१-१ । १२-५-३ । १२-६-४ । १२-९-४ । १२-९-५ । १२-१०-३ । १२-१२-२ । १२-१३-१ । १२-३३-४ । १२-२७-२ । १२-२८-१ से ४ तक । १३-५-२ । १३-१२-१ से ४ तक । १३-२०-३ । १४-५-१ । १४-५-३ । १४-१०-१ । १४-१३-३ । १४-१४-३ । १४-१६-२ । १४-१७-१ । १४-२०-१ । १४-२५-१ । १४-३२-१ । १४-३४-१ से ४ तक । १४-३५-१ । १४-३६-४ । १४-३८-२ । १४-३९-४ । १४-४१-२ ।

क० प्रि० १-१४-१ । १-३४-२ । १-४४-१ । १-४६-१ । १-५१-१ । १-५२ १ । १-५३-१ । २-१३-२ । ३-९-२ । ३-११-२ । ३-४६-१ । ३-५२-२ । ४-१०-३ । ५-१२-२ । ५-१३-२ । ५-१५-२ । ५-२६-४ । ५-३३-२ । ५-३४-१ । ५-३७-३ । ५-४२-२ । ६-५-४ । ६-१०-२ । ६-१०-८ । ६-१४-२ । ६-२१-१ । ६-२२-३ । ६-३६-२ । ६-४४-२ । ६-४६-१ । ६-४९-४ । ६-५४-४ । ६-५७-३ । ६-५९-१ । ६-५९-२ । ६-५९-३ । ६-५९-४ । ६-६६-४ । ६-६७-१ । ६-६८-२ से ४ तक । ६-६९-१ । ६-७३-४ । ६-७९-३ । ७-३-४ । ७-५-१ । ७-७-३ । ७-१०-४ । ७-११-२ । ७-१३-२ । ७-२२-१ । ७-३२-२ से ४ तक । ७-३६-१ । ७-३८-४ । ८-३-२ । ८-५-१ । ८-२१-३ । ८-२३-१ । ८-२४-१ से ४ तक । ८-२८-३ । ८-४४-३ । ८-४६-१ से ४ तक ।

९-२-१ । ९-९-१ । ९-१०-१ । ९-१०-३ तथा ४ । ९-१४-३ । ९-२१-२ । ९-२४-१ । ९-२६-४ । ९-३२-२ । १०-१४-४ । १०-२४-६ । १०-२८-६ । ११-५-२ । ११-६-१ । ११-७-२ । ११-१६-१ । ११-२२-४ । ११-२५-२ । ११-२९-२ । ११-३१-४ । ११-३४-४ । ११-३५-४ । ११-४१-१ । ११-४२-१ । ११-४५-१ । ११-४८-२ । ११-५०-३ । ११-५६-६ । ११-५७-१ । ११-५८-३ तथा ४ । ११-६३-१ तथा ३ । ११-६९-४ । ११-७३-४ । ११-७४-३ तथा ४ । ११-७७-१ से ४ तक । ११-८०-४ । ११-८१-१ । ११-८२-४ । ११-८३-१ । १२-६-१ । १२-८-४ । १२-१२-१ । १२-२१-२ । १२ १६-१ से ४ तक । १२-१८-३ । १२-२६-१ । १२-१९-२ । १२-३०-३ । १२-३२-४ । १३-२-१ । १३-३-३ । १३-१०-२ । १३-१६-२ । १३-१८-१ । १३-२६-३ तथा ४ । १३-२९-१ । १३-४२-१ । १४-६-२ । १४-१०-२ । १४-१२-४ । १४-१६-४ । १४-१८-२ । १४-२२-३ । १४-२९-४ । १४ ३१-४ । १५-१२-१ । १५-१३-२ । १५-२७-१ से ४ तक । १५-१९-१ । १५-१९-२ से ४ तक । १५-२२-१ । १५-२५-४ । १५-२८-४ । १५-३२-१ से ४ तक । १५-३४-१ से ४ तक । १५-३६-१ । १५-३९-१ तथा २ । १५-४१-२ ।

१५-४५-१ से ४ तक। १५-४७-२ तथा ३। १५-४९-३। १५-९२-३ तथा ४। १५-९३-४। १५-९९-१। १५-११०-२। १५-१२७-२। १५-१३०-३। १६-६-४। १६-५४-४। १६-५९-१। १६-८९-२। रा० १-१-४। १-२-१। १-५-१। १-६-२। १-१७-३। १-२१-२। १-३०-३। १-४०-१। १-४५-४। १-४६-१ तथा २। १-४८-१। १-५१-२। २-२४-१। २-८-१। ३-११-१। ३-१५-१। ३-१६-२। ३-२४-१। ४-९ ४। ४-२३-१ से ३ तक। ५-१-१। ५-५-१। ५-१२-२ से ४ तक। ५-१४-१। ५-१७-३। ५-४६-१। ६-१-१। ६-२०-४। ६-२३-१ तथा २। ६-३५-२। ६-३९-१। ६-४०-१। ६-४५-३। ६-४६-१। ६-४८-१ तथा २। ६-५२-१ तथा २। ६-५३-२। ६-५६-१। ६-५६-२। ६-५७-१। ६-६२-१। ७-५-२। ७-६-३। ७-८-२। ७-१०-३। ७-११-२। ७-१२-१ तथा २। ७-३७-१। ७-४०-१। ७-५०-१। ७-५२-२। ८-९-१। ८-१२-२। ८-१३-२। ९-३-२। ९-४४-१। ९-५५-२। १०-१८-१ से ४ तक १०-२३-१। १०-२४-१। ११-३-२। ११-४-१। ११-५-१। ११-३५-१। ११-३७-१। १२-५-१। १२-५-४। १२-२०-१ से ४ तक। १२-२४-१। १२-३६-१। १२-३७-२। १२-४०-१। १२-४९-१ तथा ३। १२-५८-१। १२-६२-४। १२-६९-१। १३-११-२। १३-१८-३। १३-१९-१ तथा २। १३-५५-१। १३-६०-१। १३-२६-१ तथा २। १३-४८-१। १३-५१-१। १३-५२-१। १३-५४-१। १३-६०-२। १३-६४-१। १३-८३-१। १३-८५-२। १३-८७-२। १४-४-२। १४-५-१। १४-२२-२। १४-२८-२। १४-२९-४। १४-३०-१। १४-४१-१। १५-५-१। १५-२४-३। १५-३८-१। १५-३९-४। १५-४३-२। १६-८-२। १६-१२-२। १६-१२-३। १६-१३-१। १६-१५-३। १६-३२-३। १७-९-३। १७ १०-२। १७-१२-४। १७-३७-२। १७-४०-३। १७-५१-२। १८-१५-२। १८-२८-१। १८-३५-३ तथा ४। १९-१६-३। १९-२१-३। १९-२६-१। १९-३३-२। १९-३९-२। १९-४०-१। १९-५४-२ तथा ४। २०-२-१। २०-५-१। २०-६-१। २०-३०-१। २०-३१-३। २०-३२-३। २०-३३-१। २०-३४-१। २०-३७-१। २०-४५-१। २१-३७-१। २१-३९-२। २१-४१-२। २१-४२-२। २१-४६-३। २२-४-१। २२-१०-२। २२-२०-१। २२-६१-१। २३-१६-१। २३-१७-१। २३-१८-२। २३-१८-१२। २३-३०-२। २३-३२-२। २३-३३-१। २३-३३-१। २३-३८-१। २४-२९-१। २५-५-२। २५-२५-२। २६-२५-२। २६-२६-१। २६-२९-१। २६-३१-४। २७-१३-२। २७-१९-४। २७-२१-३। २७-२२-२। २७-२६-१। २८-६-२। २८-११-१ से ३ तक। २८-१५-२। २९-१२-२। २९-३-११।

२९-१४-१ । २९-१६-१ । २९-२१-४ । २९-२८-१ । २९-३१-२ । २९-३५-२ । २९-३८-२ । २९-४२-१ । २९-४२-२ । ३०-१-१ । ३०-८-१ । ३०-१२-२ । ३०-१४-२ । ३०-१६-१ । ३०-२६-१ । ३०-२७-३ । ३०-३५-२ । ३०-४१-१ । ३०-४२-१ । ३१-८-१ । ३१-१६-१ । ३१-१९-२ । ३१-२०-१ । ३१-२२-१ से ४ तक । ३१-३९-१ । ३२-४-२ । ३२-६-२ । ३२-८-१ । ३२-९-१ । ३२-१५-२ । ३२-१६-१ । ३२-१८-२ । ३२-१९-२ । ३२-२३-१ । ३२-२४-२ । ३२-२७-२ । ३२-२८-१ । ३२-४०-१ । ३२-४४-१ । ३२-४५-२ । ३३-१४-१ । ३३-१५-१ तथा २ । ३३-१७-१ । ३३-२१-२ । ३३-४६-२ । ३३-४९-१ तथा २ । ३३-५३-१ । ३३-५४-३ । ३३-५६-२ । ३३-५६-३ । ३४-२६-१ । ३४-३२-१ । ३४-४५-२ । ३५-१-२ । ३५-८-१ । ३५-९-१ । ३५-१०-१ से ४ तक । ३५-२४-१ । ३५-२८-१ । ३६-१-४ । ३७-१-२ । ३७-१३-१ । ३७-२१-२ . ३८-५-१ । ३८-१५-२ । ३९ ७-२ । ३९-१२-१ । छ० मा० १-४१-४ । २-३-१ । २-४८-१ । शि० न० २-१ । २-३ । ३-१ । ४ २ । ६-१ । ६-४ । १०-१ । १०-४ । १४-१ से ४ तक । २३-१ से ४ तक । २६-१ से ४ तक । २७-१ से ४ तक । र० बा० २८-२ । ३६-१ । वी० च० १-१०-२ । १-१४-२ । १-३३-३ । १-५५-५ । ३-१३-१ । ३-१४-२ । ३-६५-१ । ४-१८-२ । ४-३९-१ । ४ ५०-१ । ४-५६-१ । ५-१-१ । ५-१५-१ । ५-८७-२ । ५-१००-१ । ६-३६-२ । ६-३८-१ । ६-४३-१ । ७-१५-१ । ७-४२-१ । ८-३६-१ । ८-५४-३ । ९-१-१ । ९-४०-१ । १०-५९-१ । १०-६४-३ तथा ४ । ११-२-१ । ११-१३-१ । १२-१४-१ । १२-१४-३ । १२-२७-१ । १२-२८-१ । १३-२-५ तथा ६ । १४-२९-२ । १४-३०-१ । १४-३०-४ । ११-४३-२ । १४-४५-१ । १५-६-२ । १५-१७-१ । १५-२१-१ । १५-३१-२ । १६-२-१ । १६-७-१ । १६-८ २ । १६-१४-२ । १६-२०-२ । १६-३१-१ । १६-३२-२ । १७-३-२ । १७-१४-२ । १७-३५-१ । १७-५५-१ । १७-७५-१ । १८-१-१ । १८-५-१ । १८ ११-२ । १८-२०-१ । १८-२७-१ । २१-१-१ । २१-९-२ । २१-१०-१ । २१-१३-२ । २९-१०-२ । २९ २०-१ तथा २ । २९-३२-१ तथा २ । २९-३३-१ तथा २ । २९-३५-१ । २९-४० १ ।३१-७-२ । ३१-१२-२ । ३१-२४-१ । ३१-३०-२ । ३१-४३-१ । ३१-७६-२ । ३२-३२-१ । ३२-३८-१ । ३२-३८-३ । ३२-३९-१ । ३२-४३-१ से ४ तक । ३२-४८-१ । ३२-५६-३ । ३३-३-२ । ३३-११-१ । ३३-३६-१ । जहाँ० २-२ । ३-१ से ४ तक । ११-२ । १४-६ । १८-१ तथा ४ । १९-२ । ७१-३ । ७३-४ । ८३-१ । ९४ १ । ९९-४ । १००-४ । १०१-४ । १०९ २ । ११३-१ । १२२-१ से ४ तक । १३७-२ । १४०-१ । १५२-१ से ४ तक ।

१५५-१ तथा २ । १५७-२ । १५८-३ तथा ४ । १६०-४ । १८३-१ । १६१-४ । वि० गी० १-४-२ । १-६-२ । १-१०-१ । १-११-१ । १-१४-१ । १-१७-४ । १-१८-२ । १-२१-१ । २-२-१ । ३-१७-२ । ३-१६-१ । ३-२८-४ । ४-४२-१ । ४-२४-१ । ५-५३-२ । ६-५-२ । ६-२२-२ । ६-२३-१ । ६-६२-१ । ६-६८-१ । ६-७४-४ । ७-१-१ । ७-२०-१ । ८-८-१ । ८-१८-१ । ८-२०-१ । ८-३६-२ । ८-४१-२ । ८-५०-१ ।

कीक—सं० स्त्री० एक० । कोलाहल । क० प्रि० १६-४१-२ ।

कीकदै—क्रियापद । खिलखिलाकर र० प्रि० १४-१६-४ ।

कीच—स० पु० एक० । कीचड़, पंक । र० प्रि० ७-२८-३ । क० प्रि० ४-६-२ । ५-२५-१ । ५-२७-१ । ७-३०-२ ।

कीज—क्रियापद । कीजिए । रा० ३४-३८-१ ।

कीजई—क्रियापद । कीजिए । र० प्रि० १०-३०-१ । रा० १४-३-१ । ३५-३-१ । ३५-३-२ । ३६-२६-१ । वि० गी० १६-१००-१ ।

कीजत—क्रियापद । करते हैं । रा० ७-२०-२ । १३-२८-६ । ३३-२३-१ ।

कीजिय—क्रियापद । कीजिए । रा० २-२०-१ । ३४-३७-४ ।

कीजिये—क्रियापद । कीजिए । रा० ३-६-२ ।

कीजियै—क्रियापद । कीजिए । र० प्रि० ४-१६-८ । क० प्रि० ३-५-२ । रा० ३६-३१-२ ।

कीजै—क्रियापद । करे; करना चाहिए; करो । र० प्रि० १-१४-१ । १-२३-४ । २-८-१ । ४-१६-८ । ७-२६-७ । ७-३०-४ । ७-४१-१ । ८-२७-४ । ८-४६-३ । ८-५२-१ । ८-५२-३ । १०-४-४ । १०-५-४ । १०-१६-२ । १०-२५-५ । १०-३०-१ । १३-१०-१ । १५-३-७ । क० प्रि० २-१८-२ । ३-५-१ । ३-१४-१ । ३-४२-३ । रा० ६-१४-१ । १०-३४-२ । १०-४२-१ । ११-१५-४ । १३-५६-२ । १३-७५-१ । १५-५-१ । १७-२३-२ । १६-८-१ । २१-१-१ । २१-२३-१ । २६-१-१ । २७-७-४ । ३३-१८-१ । ३४-१२-२ । ३४-१३-२ । ३४-१५-२ । ३६-१०-२ । ३६-११-१ । ३७-८-२ । ३७-१२-२ । ३६-७-१ । ३६-३६-२ । वि० गी० ६-५५-४ । १६-१००-१ । १६-१०२-१ ।

कीजौ—क्रियापद । करो । रा० ४-५-१ । ६-२३ २ । १३-४७-१ ।

कीट—स० पु० एक० । कीड़ा । र० प्रि० १-२३-१ । वि० गी० १४-५५-४ ।

कीटक—सं० पु० एक० । कीडा । रा० २४-२६-३ ।

कीति—स० स्त्री० एक० । कीर्ति । छं० मा० २-१२ ।

कीन—क्रियापद । किया । रा० ७-१७-१ । ११-१२-१ । १३ ५-१ । १४-३४-२ । ३१-३-१ ।

कीन आनि—संयुक्त क्रिया। आकर किया। रा० ७-१७-१।

कीनी—क्रियापद। किया। र० प्रि० १-१२-२। ३-२६-२। ७-१५-४। १३-३-४। १४-११-२। १४-२०-७। क० प्रि० १-७-१। ५-१२-१। रा० ६-१६-१। (बना दिया) १०-१२-१। १३-३५-१। ३३-१७-१।

कीने—क्रियापद। किए हो, करके। र० प्रि० ३-२७-२। ३-२८-२। ५-१६-८। ६-३७-४। ११-५-२। १३-५-५। १३-१३-२। १४-६-४। क० प्रि० २-१२-१। ५-१०-१। ५-११-१। रा० १२-५४-१। १८-२-१। २०-३-१। २१-१५-२। ३२-४८-२। ३७-७-२। र० बा० १-२२-४। ५-२०-६। ८-२६-४। ६-१३-१। १२-८-४।

कीने हैं—सयुक्त क्रिया। कर दिया है, किया है। र० प्रि० ६-३७-४।

कीनै हैं—संयुक्त क्रिया। किया है। र० प्रि० ५-१६-८।

कीनों—क्रियापद। किया। र० प्रि० ८-३१-४।

कीनो है—लयुक्त क्रिया। किया है। र० प्रि० १४-२२-८।

कीनौं—क्रियापद। कर लिया। र० प्रि० ३-५५-२। ३-६०-४। ६-३५-४। १४-२२-८। क० प्रि० १-१३-२। ३-२६-२। ५-१०-४। रा० १-२४-२। ५-४२-४। १०-१०-२। १०-४४-२। १२-२६-२। १६-४१-१। २०-३३-३। ३१-४-१। ३४-२०-२।

कीन्ह—क्रियापद। किया। रा० १८-१५-१। ३५-१८-३।

कीन्ही—क्रियापद। किया। क० प्रि० १-८-२। ६-११-२। रा० १३-१७-२। ३२-३८-१। ४-६-३। ४-२३-३। ६-१६-३। २२-२१-७।

कीन्हें—क्रियापद। किया है। रा० ६-३०-३। ७-२५-१। ७-२५-२। २१-२७-२। २३-२७-१। २५-१६-१। १७-२-२। १७-५३-२। २१-४२-२ २६-२०-६। ३०-२६-४। ३६-२०-२।

कीन्हों—क्रियापद। करते हैं। रा० १-१७-२। ६-३३-१।

कीन्हों देइ—संयुक्त क्रिया। कर दिया। रा० २७-११-२।

कीन्हों है—सयुक्त किया। किया है। रा० ४-६-२।

कीन्हो—क्रियापद। किया। रा० ४-६-३। ४-६-६। ५-२०-२। ७-४४-२। ११-१०-२। १२-२२-२। १३-२६-२। १३-३६-१। १३-४५-२। १५-३-१। १६-१२-१। १६-१७-२। २७-११-२। २७-१५-१। ३३-१६-२। ३४-११-२। ३४-२८-१। ३४-५४-२। र० प्रि० १-१०-१।

कीय—क्रियापद। किया है। रा० ६-२७-२। (बना दिया है) २०-२४-२। २५-१०-५।

कीर [की+ईर्+णिच्]—सं० पुं० एक०। (१) शुक। क० प्रि० १२-६-४। १४-१७-३। (२) नगरविशेष। वि० गी० १३-७४-२। १३-८४-१।

कीरकदेस—सं० पु० एक०। कीर देश। वि० गी० १३-५८-१।

कीरतन—सं० पु० एक०। कीर्तन, स्तुति। वी० च० १८-२।

कीरति—(कीर्ति)। सं० स्त्री० एक०। यश, ख्याति। र० प्रि० ५-२१-१। क० प्रि० ५-५-१। ६-३२-४। ११-४०-३। ११-४१-१। १२-२८-४। १५-१२७-३। रा० १३-७६-२। २६-२२-१। २८-१८-२। ३३-१०-२। छ० मा० १-४५-३। १-६३-३। वी० च० ३-४। १६-७। १८-१२। १४। २२-३०। २७-१४। ३१-१४। ३१-१५। ३१-५०। ३२-३०। जहाँ० १०६। वि० गी० ९-१३-१। १०-११-२। १६-६४-१।

कीरति को प्रतिपाल—विशेषण। विशेष्य—दान, कृपान। कीर्ति का प्रतिपालन करनेवाला। क० प्रि० ११-४०-३।

कीरति-टीको—सं० पु० एक०। यश-रूपी तिलक। क० प्रि० १२-२८-४।

कीरतिवेलि—सं० स्त्री० एक०। कीर्ति-लता। रा० ३०-३६-१। वि० गी० १६-१२४-१।

कीरति श्री—स० स्त्री० एक०। कीर्ति की सपत्ति या प्रसिद्धि। रा० ८-१०-१।

कीरतिश्री जयसंजुत—विशेषण। विशेष्य—सु दरी। कीर्ति, धन तथा जयश्री से युक्त। रा० ८-१०-३।

कीरति सहित—विशेषण। विशेष्य—कान्ह। कीर्ति से युक्त। र० प्रि० ८-२१-१।

कीरत्ति—सं० स्त्री० एक०। कीर्ति। वि० १-१८-१।

कीरदेस—सं० पु० एक०। कीर देश। वि० गी० १३-४३-१। १३-५३-१। १३-६८-१। १३-७२-१।

कीर-महीपति—सं० पु० एक०। कीर देश का राजा। वि० गी० १३-४२-४।

कील—सं० पु० एक०। नाक मे पहनने का एक गहना। क० प्रि० ३-१३-१।

कुंकन—सं० स्त्री०। कोकण देश। जहाँ० १०१।

कुंकुम—सं० पु० एक०। केसर, रोली। र० प्रि० ६-४६-२। ८-४-३। ८-२४-२। १०-२७-३। १३-३-१। १४-२२-२। क० प्रि० ६-७४-३। ११-४८-२। १३-२६-३। १५-७८-१। १५-७८-२। १५-८४-३। रा० १६-४। २०-३०-२। २०-३१-४। २१-५३-३। छ० मा० १-४६-६। २-४६-६।

कुंकुम कलित—विशेषण। विशेष्य—रामचन्द्र के चरन। केसर से शोभित। क० प्रि० ११-२६-१।

कुंकुम चंदन चर्चित—विशेषण। विशेष्य—आँगन। जहाँ केसर चदन छिडका गया है। रा० २६-१४-१।

कुंकुम पंक—सं० पु० बहु०। केसर के लेप। र० प्रि० ८-२४-२।

कुंकुम पंक अलंकृत गाढ़ो—विशेषण। विशेष्य—लोचन। केसर के गाढे लेप से युक्त। र० प्रि० ८-२४-२।

कुंकुमा—सं० पु० एक०। कुंकुम। वी० च० १०-१४। २२-४। २३-३१।

२४-१४। २४-१७। १६-१५। २६-१६। २६-४७। २८-३।

कुंचिका—स० स्त्री० एक०। बाँस की रहनी। क० प्रि० ६-८-१।

कुंची—स० स्त्री०। कुंची। उदाहरण—"ज्ञान कपाट कुंची जनु खोलत"। रा० ३२-३-२।

कुंज—[कु+जन् (उत्पन्न होना) +ड] स० पु० एक०। लता आदि से घिरा या ढका हुआ स्थान, कमल पुष्प। र० प्रि० ७-१२-४। ८-२८-२। ११-१४-४। क० प्रि० १२-२४-१। वि० गी० २२-३०। २६-१७। २४-१८।

कुंज कटी—स० स्त्री० एक०। लतागृह। र० प्रि० ७-१२-४।

कुंजजाल—सं० पु० एक०। निकुंज, लतामडप। र० प्रि० ७-११-४।

कुंजनि—स० पु० बहु०। लता आदि से घिरे हुए स्थान। र० प्रि० ६-२२-४।

कुंजबिहारी—[कुंज+वि+हृ+णिनि] विशेषण। विशेष्य—श्रीकृष्ण। कुंजो के बीच विहार करनेवाला। र० प्रि० ९-१४-४।

कुंजर—[कुंज+र] सं० पु० एक०। हाथी। क० प्रि० ६-१२-१। रा० १०-१२-१८। वी० च० १३-१५। छं० मा० १२-२०-१। २१-५३-३। वि० गी० १२-२०-१। २१-५३-३।

कुंजर-पुंज—स० पु० बहु०। बहुत से हाथी। रा० १८-२-२।

कुंड—सं० पु० एक०। (१) कूँड। लोहे की टोपी। क० प्रि० ६-१२-१। (२) छोटा जलाशय। रा० ७-३७-२। (३) हवन की अग्नि या जलसचय के लिये खोदा हुआ गड्ढा। वि० गी० ८-४०-२।

कुंड मृतिका—स० स्त्री० एक०। कुड की मृत्तिका। वि० गी० ८-३१-४।

कुंडल—[स० कुड √ ला (आदाने) +क] (१) सं० पु० एक०। कान का बाला। क० प्रि० ६-५८-१। (२) स० पु० बहु०। कान के बाले। क० प्रि० १५-५१-३। रा० ३-२४-१। वि० गी० १४-२७-१।

कुंडलिया—[कुडलिका] स० स्त्री० एक०। एक मात्रिक छद जो एक दोहे के अंतिम चरण के योग से इस प्रकार बनता है कि दोहे के अंतिम चरण के कुछ अंतिम शब्द छद के आदि मे अविकल आते हैं। छं० मा० २-४०-२। २-४०-३।

कुंडली—स० स्त्री० एक०। चक्राकार। क० प्रि० ८-२६ २। १५-१६-४।

कुंडिन—सं० पु० एक०। कुंडिन नगर। जहाँ० १०१।

कुंत—सं० पुं० एक०। भाला। रा० १९-४६-२।

कुंतल—[कुंत+ला (लेना)+क] स० पु० (१) बाल। रा० १३।२४।१। (२) कुंतल देश। जहाँ० १०१।

कुंती—स० स्त्री० एक०। यदुवंशीय सूरराज की कन्या और वासुदेव की भगिनी। सूरसेन की पितृश्वसा के पुत्र कुंतभोज अपुत्रक थे। उनसे सूरसेन

ने प्रतिज्ञा की—"हम अपनी संतान आपको देंगे। इसी से कुंतभोज ने सूरसेन की प्रथम कन्या पृथा को ले पुत्र की भाँति लालन पालन किया था। कुंतिभोज द्वारा पालित होने पर ही पृथा "कुंती" नाम से विख्यात थी (हिंदी विश्वकोश, भाग ४)। यही पांडुराज की पत्नी और पांडवों की माता है। क० प्रि० १६-५५-३।

कुंतीभोज—सं० पुं० एक०। भोज देश का राजा जिसने पृथा और कुंती को गोद लिया था। जहाँ० १०१।

कुंद—(१) सं० पुं० बहु०। कुंद के फूल। क० प्रि० ५-६-२। १५-३६-२। (२) सं० पु० एक०। एक पौधा जिसके फूल दाँतो के उपमान माने जाते है। क० प्रि० १४-३३-३। १५-८४-२। रा० १३-२४-१। वी० च० १-११। ५-३६। वि० गी० १०-१८ २।

कुंद-कलिका—सं० स्त्री० बहु०। कुंद की कलियाँ। क० प्रि०। १४-३३-२। १५-८४-२।

कुंद द्युति—सं० स्त्री० एक०। कुंद की द्युति। छं० मा०। २-२९-२।

कुंदन—सं० पुं० बहु०। पुष्पविशेष। क० प्रि०। १४-१५-१। १४-५०-१। १५-३४-२। १५-५२-२। १५-८८-४।

कुंभ—[कु+उम्भ (पूर्णकरना)+अच्] सं० पुं० एक०। (१) हाथी के मस्तक पर का ऊँचा गोल भाग। क० प्रि०। ६-१३-२। ८-२७-२। १५-२४-१। १५-२५-२। रा० ३६-१५-३। (२) कुंभकर्ण का पुत्र। रा० १५-६-१। (३) घड़ा। वी० च० ५-३६। ५-४१।

कुंभक—सं० स्त्री०। प्राणायाम के अंतर्गत नाक-मुँह बंद करके श्वास को रोके रखने की क्रिया। रा० १५-२२-२।

कुंभकरन—सं० पुं० एक०। कुंभकर्ण, रावण का भाई। क० प्रि० ११-५५-५। रा० १५-४-२। १८-४-२। १८-१२-१। १८-१४-१। १८-२०-१। १८-२३-१। १९-७-१। १९-५१-५। २१-१६-२। २१-३६-२।

कुंभकरन्न—सं० पु० एक०। कुंभकर्ण। क० प्रि० ११-५२-३। रा० १५-९-२। १८-१-२। १८-१०-१। १९-३५-२।

कुंभकर्न—सं० पुं० एक०। कुंभकर्ण, रावण का भाई जो छह महीने लगातार सोता और छह महीने लगातार जागता था। छं० मा० १-७१-४।

कुंभज—[कुंभ+जन+ड] सं० पुं० एक०। अगस्त्य मुनि। र० प्रि० ८-३-२। वी० १२-१७।

कुंभवार—सं० पुं० एक०। कुंभकार। क० प्रि० २-५-१। वि० गी० १-५-४।

कुंभि—सं० पु० एक०। हाथी। क० प्रि० ६-१३-२।

कुंभिलाइ—क्रियापद। कुम्हिलाई। र० प्रि० ५-२३-४।

कुंभिलाइ गए—संयुक्त क्रिया। कुम्हला गई। र० प्रि० ५-२३-४।

कुंभिलात जात—संयुक्त क्रिया। कुम्हला जाता है। र० प्रि० ८-२१-३।

कुंभिलानिये—क्रियापद । कुम्हिलाई, मुरझा गई । र० प्रि० ८-४९-३ ।

कुंभिलानियै जाति—संयुक्त क्रिया । कुम्हला जाती हैं, मुरझा रही हैं । र० प्रि० ८-४९-३ ।

कुँवर—सं० पुं० एक० । (१) राजकुमार । रा० ६-३०-४ । र० बा० १-५-१ । १-४३-३ । १-४४-१ । (२) कुमार, अविवाहित व्यक्ति । वी० च० ३-४६ । ३-४८ । ३-४९ । ३-५२ । ३-६३ । ४-४६ । ५-१६ । ५-१९ । ५-५० । ५-५१ । ५-७३ । ५-९६ । ५-९७ । १०-२६ । १३-१ । १४-४ । १४-११ । १४-२४ । १९-७ । १९-९ । २१-१५ । (३) विशेषण । विशेष्य—कान्ह । कुमार । र० प्रि० ५-२९-३ । ५-३१-३ । ५-२१-१ । ११-१७-४ । १३-१४-४ । १४-२२-४ ।

कुँवर मनि—विशेषण । विशेष्य—नृपकुँवर । कुमारों मे श्रेष्ठ, जेठा राजकुमार । रा० २-१८-३ ।

कुँवरि—(१) सं० स्त्री० एक० । कुमारी, अनव्याही कन्या । र० प्रि० ६-२८-१ । क० प्रि० १५-६४-१ । (२) सं० पुं० एक० । (कुँवर) । श्रीकृष्ण । र० प्रि० ११-१५-१ । (३) विशेषण । विशेष्य—राधे । कुमारी । र० प्रि० ३-४३-४ । १४-२०-४ । क० प्रि० ४-१७-४ ।

कुंहिलाइ—क्रियापद । कुम्हला गई । क० प्रि० ३-३६-२ ।

कु—विशेषण । विशेष्य—बाम । बुरा । र० प्रि० ७-१७-३ । ७-२३-१ । ७-४१-१ । १२-१८-१ । १३-१९-१ । १४-२०-४ । क० प्रि० ५-१३-३ । ५-१५-२ । ६-३३-१ । ६-४२-४ । ६-५४-१ । ११-७६-१ । रा० ३१-१२-१ । वी० च० २१-२१-२ । २८-३१-१ । २९-३१-३ । ३१-६१-२ । वि० गी० ५-१२-१ । ८-२५-३ । १३-५३-४ । १४ ७-१ । १५-२६-२ । १६-२९-१ । २१ ४४-१ ।

कुकन्या—सं० स्त्री० एक० । परस्त्री । रा० १३-५८-१ ।

कुकर्म—सं० पुं० एक० । बुरा काम, पाप कर्म । रा० २५-१६-२ ।

कुक्कुट सिखा—सं० स्त्री० एक० । मुर्गे की शिखा । क० प्रि० ५-२९-१ ।

कुगन्ध—सं० पुं० एक० । दुर्गंध । रा० २०-३३-३ । २०-३३-४ ।

कुच—[कुच् (संपर्क)+क] सं० पुं० बहु० । (१) स्तन, उरोज । र० प्रि० ६-२५-३ । ६-४९-२ । ६-५२-३ । १३ ५-३ । १४-२५-२ । क० प्रि० ३-८-१ । ६-१०-३ । ६-१३-२ । ६-२०-१ । ६-३६-३ । ६-७४-३ । ११-२०-१ । ११-४८-२ । १५-२४-१ । १५-२५-४ । १५-८४-१ । रा० २८-१६-१ । वी० च० ८-१८ । २२-४८ । २२-७८ । २३-१६ । (२) प्रस्थान (फारसी) वि० गी० ११-२-१ ।

कुच कुंकुम—सं० पुं० एक० । स्तनो पर का केसर । क० प्रि० ११-४८-२ ।

कुचनि—सं० पु० बहु० । स्तन । र० प्रि०

७-१६-४ । छ० मा० २-४५-५ । वी० च० १८-१२ ।

कुठौर—स ० पु ० एक० । बुरी जगह । र० प्रि० ७ २७-३। क० प्रि० ६-५७-१ । वि० गी० १४-७-१ ।

कुठौरनि—सं० पुं० बहु० । बुरे स्थान। र० प्रि० १२-१८-१ ।

कुतर्क—सं० पु ० एक० । कुविचार । वि० गी० ३-६-३ ।

कुतर्कनि—सं० पु ० बहु० । बुरे विचार । वि० गी० १७-२०-१ ।

कुतुबदीन—सं० पुं० एक० । कुतुबुद्दीन ऐबक । जहाँ० ३७ ।

कुतुबशाह—स ० पु० एक० । सुलतान कुतुबशाह । जहाँ० ३७ ।

कुदाता—विशेषण । विशेष्य—राम । कृपण। (रावण द्वारा ही दी गई गाली । उसका यह अर्थ भी दे सकते हैं—'कु' अर्थात् पृथ्वी देनेवाले) । रा० १३-५८-१ ।

कुदान—स ० पुं० एक० । (अ) बुरा दान । (आ) पृथ्वीदान । क० प्रि० ६-२०-१ ।

कुदाव—सं० पु० एक० । कार्यसिद्धि का अनुपयुक्त अवसर । रा० १७-१६-२ ।

कुदेव—स ० पु ० एक० । (कु = पृथ्वी) पृथ्वी का देव अर्थात् ब्राह्मण । रा० ३६-३१-२ ।

कुद्दाल—सं० पु० एक० । कुदारी । मिट्टी खोदने का एक औजार जो फावडे से कम चौडा होता है। क० प्रि० ६-६-२ ।

कुधरन—(कु + धरन) स ० स्त्री० एक० । पृथ्वी । क० प्रि० १६-७४-२ ।

कुनारि—स ० स्त्री० एक० । कर्कशा स्त्री या दुश्चरित्रा स्त्री । क० प्रि० ६-३३-१ ।

कुपुर—स ० पुं० एक० । वह जगह जहाँ बुरे लोग रहते है । क० प्रि० ६-३३-१ ।

कुपुरनि—सं० पुं० बहु० । दुश्चरित्र व्यक्तियो के रहने की जगहे । क० प्रि० ६-३४-२ ।

कुपुरुष—(१) सं० पुं० बहु० । (अ) बुरे लोग । (आ) पृथ्वी के लोग । क० प्रि० ६-२०-१ । रा० १५-२१-२ । (२) विशेषण । विशेष्य—भूपति । कम पुरुषार्थवाला । रा० १८-१०-२ ।

कुवलय—सं० पुं० एक० । भूमंडल, कुवलय, कमल, नील कमल । वी० च० १५-२२ । ३३-४६ । वि० गी० १०-२१-१ ।

कुबादी—विशेषण । विशेष्य—भूपति । कटुभाषी । रा० १८-१०-४ ।

कुबाग—स ० स्त्री० एक० । (अ) बुरी स्त्री । रा० ६-३०-२ । (आ) पृथ्वी रूपी स्त्री । रा० ६-३०-२ ।

कुबुद्धि—(१) सं० स्त्री० एक० । दुर्बुद्धि । रा० ३०-१६-६ । वी० च० १-२२ । वि० गी० १३-५३-४ । (२) विशेषण । विशेष्य—लोभ । हीन बुद्धिवाला । वी० च० १-२२-३ ।

कुबेर—[कुव् (आच्छादित करना) + एरक्] । स ० पु ० एक० । विश्रवा के पुत्र पक्षाधिपति । महामुनि विश्रवा ने भरद्वाज मुनि की कन्या इलविला का पाणिग्रहण किया था । इलविला

के गर्भ और विश्रवा से कुवेर ने जन्म लिया। पितामह ब्रह्मा ने इनका बुद्धि-चातुर्य देखकर और संतुष्ट होकर कहा था—'हम आशीर्वाद देते हैं, तुम धनपति बन सब से पूजित हो।' ब्रह्मा के इस अमोघ वरप्रभाव से ये धन के अधिपति बन गये। (वायु पुराण, हिंदी विश्वकोश, भाग ५)। क० प्रि० ११-५६-३। रा० १६-२-१। १७-४६-३। १८-१५-१। वी० च० १-२५। १२-१८। १३-३। २७-१६। जहाँ० ११३।

कुवेर विपत्तिकारी—विशेषण। विशेष्य—अतिकाय। जिसने कुवेर पर विपत्ति ढाही है। रा० १७-३२-१।

कुबैनी—सं० स्त्री० एक०। मछली लाने की दलिया। क० प्रि० १५-५२-२।

कुबोल—सं० पुं० बहु०। कटु या अमंगल वचन। र० प्रि० ७-४१-१।

कुब्जा—सं० स्त्री० एक०। कुबड़ी। वी० च० २६-२४।

कुमंडल—सं० पुं० एक०। पृथ्वीमंडल। क० प्रि० १४-३५-४। वि० गी० १६-४६-१।

कुमंत्री—विशेषण। विशेष्य—भूपति। बुरे मंत्री युक्त। रा० १८-१०-२।

कुमकुमा—(कुंकुमा)। सं० स्त्री० एक०। केसर। लाख का पोला गोला जिसमे गुलाल भरकर मारते हैं। र० प्रि० १३-३-१।

कुमकुमानि—(कुंकुमानि) सं० स्त्री० बहु०। रोली। क० प्रि० १५-८४-३।

कुमति—(१) सं० स्त्री० एक०। दुर्बुद्धि। अपनी बुराई करनेवाली बुद्धि। र० प्रि० १३-१६-३। क० प्रि० १५-१२४-१। छ० मा० १-२४-४। वि० गी० १६-२६-१। (२) विशेषण। विशेष्य—कौरव। हीन बुद्धिवाले। वी० च० १-४०-५।

कुमतिन—सं० स्त्री० बहु०। कुबुद्धिवालो के लिए। वि० गी० ५-११-१।

कुमतिहित—विशेषण। विशेष्य—इन्द्रजित। हीन बुद्धिवालो का भी हितैषी। वी० च० ७-४६-२।

कुमार—(१) सं० पु० एक०। पुत्र। लडका। र० प्रि० ६-२८-२। १४-२६-४। क० प्रि० १३-२-२। १६-६६-१। रा० ५-३०-१। ५-३१-४। वी० च० २-२३। २-२६। २-३६। ३-५१। ३-६३। ५-८। ५-१५। ५-३१। ५-४३। ५-४६। ५-६१। ५-७०। १०-२६। १२-२२। १२-३६। १४-२। १४-७१। १४-५६। १६-१०। १६-३५। ३३-१७। (२) सं० पु० बहु०। पुत्र। बेटे। क० प्रि० १-३०-१। ८-१०-४। ८-३४-४। ८-३५-४। (३) सं० पु० एक०। कार्तिकेय। वी० च० १-१। २७-२३। (४) विशेषण। विशेष्य—रामचंद्र। कम उम्रवाला। रा० ५-३९-१।

कुमारललिता—सं० स्त्री० एक०। छंद विशेष। सात अक्षरो का एक वृत्त जिसमे एक जगण एक सगण और अंत मे गुरु होता है।

कुमारह—सं० पुं० एक०। कुमार, बेटा या सुत। छ० मा० २-२९-५।

कुमारि—स० स्त्री० एक०। बेटी। कन्या। र० प्रि० १-२-१। १-२०-१। ३-४-२। ३-५८-१। ३-७१-१। ४-४-१। ४-११-३। ६-५५-१। क० प्रि० १३-२-१। १५-८-४। १५-२५-४।

कुमारिका—(१) सं० स्त्री० एक०। कन्या, पुत्री। र० प्रि० ३-४-४। ५-२६-१। (२) सं० स्त्री० बहु०। कन्याएँ। युवतियाँ। र० प्रि० १४-३५-१। क० प्रि० ९-२८-१।

कुमारिकाऊ—(कुमारिका+ऊ) सं० स्त्री० बहु०। युवतियाँ। क० प्रि० ६-३६-३।

कुमारिकानि—स० स्त्री० बहु०। लड़कियाँ। र० प्रि० ५-२६-१। १४-२६-४।

कुमारिनि—सं० स्त्री० बहु०। कन्याएँ। र० प्रि० ७-५-२।

कुमारी—सं० स्त्री० एक०। बेटी। र० प्रि० ६-३५-१। १२-४-४। क० प्रि० १४-१५-४। १५-२२-४।

कुमारी कृपा—सं० स्त्री० एक०। नदी विशेष। वि० गी० ६-२१-२।

कुमिलावन—[कु+म्लान] क्रियापद। कुम्हला जाना। र० प्रि० ८-२१-३।

कुमुद—(१) सं० पु० एक०। रक्त कमल। क० प्रि० ३-५५-१। १५-५५-१। (२) सं० पुं० बहु०। एक तरह का बंदर। रा० १९-४६-३।

कुमुदिनी—सं० स्त्री० एक०। कमल। वी० च० ११-२३। ११-२५।

कुमुद्धतीहि—सं० स्त्री० एक०। कुमुदवती नदी। वि० गी० ६-१८-२।

कुम्हेंडे—सं० पुं० एक०। कुम्हड़े की बतिया। बेजान चीज। र० प्रि० १०-५-३।

कुम्दिनी—सं० स्त्री० एक०। कुमुद पुष्प। कोकवेली। रा० ५-११-१।

कुरंग—[कु+√रग (गति)+अच] (१) सं० पुं० एक०। तामडे रंग का हिरण। क० प्रि० ६-२५-१। (२) सं० पु० बहु०। हिरण। क० प्रि० १५-५५-२। १५-५६-२। रा० १२-१३-१। ३२-४४-२। ३९-१-२। वी० च० २६-२५।

कुरंग अंगनानि—सं० स्त्री० बहु०। मृगी। क० प्रि० १४-२९-३।

कुरंगनि—सं० पुं० बहु०। हिरण। क० प्रि० १५-७१-१।

कुरंगमद—सं० पुं० एक०। कस्तूरी। क० प्रि० १५-८४-१।

कुरंगमीत—स० पुं० बहु०। हिरण। क० प्रि० १४-१५-१।

कुरमा—स० पु० एक०। कुटुंब। परिवार। क० प्रि० ६-७६-३।

कुरर—[√कु+क्ररच्] स० पुं० एक०। टिट्टिभ। क० प्रि० ८-३४-१।

कुरु—सं० पुं० एक०। कुरु देश। जहा० १०१।

कुरुखेत—(कुरुक्षेत्र)—स० पु० एक०—दिल्ली के पश्चिम करनाल जिले का एक मैदान जहाँ कौरवो-पाडवो मे सग्राम हुआ था; कुरुक्षेत्र। क० प्रि० १-२-२। वी० च० १४-५। वि० गी० ३-१६-२। ६-४-२।

कुरूप—(१) स० पु० एक०। अवस्था का भद्दा रूप। क० प्रि० ५-१३-३। ५-१५-२। ५-२५-१। (२) विशेषण। विशेष्य—देवता। असुदर। क० प्रि० ६-४२-४। रा० ६-५६-७। २८-१५-१। वी० च० १-२२-४। वि० गी० १६-१५-१।

कुलग—सं० पु० एक०—मुर्गा। क० प्रि० ८-३४-१।

कुल—(१) स० पु० एक०। वश, गोत्र। र० प्रि० १-७-२। ३-५७-२। ५-२१-१। ६-४१-१। ८-२६-४। क० प्रि० १-७-१। २-५-१। ४-२०-४। ६-१०-४। ६-२०-२। रा० ५-२२-४। ६-२४-२। ७-३३-४। १०-२२ १। १५-३७-२। १८-११-२। १६-४-२। ३४-३६-४। ३४-१६-१। र० बा० १-५-२। १-२०-६। १-३६-२। १-५०-३। १-५२-६। छ० मा० २-३७-८। वि० गी० १-१६-१। १-२५-१। २-१५-१। २-१८-२। ६-२५-१। ६-२६-२। ८-१७-२। ६-५-१। ६-४७-३। १०-११-३। १३-१५-१। १३-१७-३। १३-१८-२। १४-४-१। १७-१०-१। २०-३८-१। २१-२८-४। २१-५८-१। वी० च० १-२। १-३। २-२७। २-३३। २-४५। ३-५। ३-३३। ५-१७। ५-१०८। ७-३३। ७-४६। ७-६२। ८-४०। १०-५। १०-४१। १०-५८।

११-६। १२-२४। १३-५। १३-६। १३-११। १३-२०। १४-१०। १४-३४। १४-४६। १५-५०। १५-२२। १५-२८। १६-१६। १७-१६। १८-८। १८-१६। २१-२२। २१-२३। २१-२४। २२-२५। २२-७०। २५-१६। २६-५०। ३०-४। ३१-६। ३१-३०। ३१-३६। ३१-७०। ३१-७३। ३१-६०। ३२-१। ३३-३३। ३३-३४। ३३-४७। ३३-४८। (२) स० पु० वहु०। समूह। र० पि० ३-३६-२। रा० ३२-३-२। ३२-३६-१। क० प्रि० ३-५४-२। ७-३३-१। १०-२४-४। १४-८-१। (३) स० पुं० वहु०। कमल के अनेक प्रकार। क० प्रि० १२-३२-४।

कुलअवतस—विशेपण। विशेष्य—देवानन्द सुत। कुल को भूपित करनेवाला। क० प्रि० २-५-२।

कुल इष्ट देव—विशेपण। विशेष्य—वसिष्ठ। सूर्य कुल के प्रिय। रा० २१-३६-१।

कुल कन्या—स० स्त्री० एक०। ऊँचे कुल मे जन्मी हुई लडकी। रा० ११-२२-१।

कुल कलि अवनीप के—विशेपण। विशेष्य-जहाँगीर। राजाओ के कुल के कलि। जहाँ० १०-६-१।

कुलकानि—स० स्त्री० एक०। वश मर्यादा। र० प्रि० १३-१८-१। १४-२५-३।

कुलकानि-सोच—स० पु० एक०। कुल मर्यादा का भय। र० प्रि० १४-२५-३।

कुल को कलसु—विशेपण। विशेष्य—कुल का कलश। जहाँ० ६-१।

कुल को निज भूषन—विशेषण। विशेष्य—विभीषण। कुल का एकमात्र भूषण। क० प्रि० ११-५२-१। रा० ३७-१६-१।

कुलक्षण—स० पु० बहु०। बुरे क्षण। वी० च० ३-२७।

कुलजा—स० स्त्री० एक०। उत्तम वंश मे जन्मी स्त्री, उत्तमवंशजा। क० प्रि० ४-१८-२।

कुलटनि—स० पुं० बहु०। व्यभिचारिणी। क० प्रि० ४-१२-२। ७-२५-१।

कुलटा [कुल√अट्+टाप्]—(१) स० स्त्री० एक०। वेश्या। अनेक पुरुषो से स्नेह करनेवाली स्त्री। र० प्रि० १४-३२-३। क० प्रि० ४-१८-१, ६-२६-१। (२) सं० स्त्री० बहु०। व्यभिचारिणी। र० प्रि० २-८-४। ८-१४-२। वि० गी० २४-१७-२।

कुलटानि—स० स्त्री० बहु०। व्यभिचारिणी। क० प्रि० ७-२३-१।

कुलतत्र—स० पु० एक०। वंश की मर्यादा। वि० गी० ८-४४-१।

कुलतिय—सं० स्त्री० एक०। उच्च कुल की नारी। क० प्रि० ६-३५-१।

कुलतिय हास—सं० पुं० एक०। उत्तम वंशजा की हँसी। क० प्रि० ६-३५-१।

कुलदीपक—सं० पुं० एक०। कुल को प्रकाशित करनेवाला। वी० च० १५-२८।

कुल-दीपति—जोति—स० स्त्री० एक०। वंश के प्रकाश। र० बा० १-३६-२।

कुल दूषन—विशेषण। विशेष्य-विभीषन। क० प्रि० ११-५२-१। रा० १६-३५-१।

कुलदेवी—सं० स्त्री० एक०। वह देवी जिसकी पूजा कुल विशेष मे होती आ रही हो। रा० २२-८-३। छ० मा० १-७३-५। वी० च० ३-५।

कुल द्वेषी—विशेषण। विशेष्य—भूपति। अपने कुल मे ही द्वेष रखनेवाला। रा० १८-१०-१।

कुल-धर्म—स० पुं० एक०। कुल का क्रमागत धर्म, कुल रीति। रा० २४-६-१। वि० गी० ७-१६-१।

कुल नारिनि—स० स्त्री० बहु०। कुलवती स्त्रियाँ। र० प्रि० ८-१४-२।

कुलनास—स० पुं० एक०—छंद के आरंभ मे शत्रु-गण—र गण या स गण—तथा उदास गण—ज गण या त गण—का मेल होने से प्राप्त फल। वंश मिट्टी मे मिल जाना। क० प्रि० ३-२८-४।

कुलनि—(१) (कुल+नि)—"कुल"। सं० पुं० एक०। वंश। क० प्रि० १३-११-४। (२) सं० पु० बहु०। समूह। क० प्रि० १५-१७-१।

कुल भूषन—विशेषण,। विशेष्य—मधुकर साहि। (गहरवार) कुल का भूषण। वि० गी० १-१५-२।

कुल-लाडिल—स० पुं० एक। वंश का प्यारा। दुलारा। र० बा० १-१७-६। १-२३ ५। १-५०-६।

कुल लाडिलहु—विशेषण। विशेष्य—रतनसेन। कुल का लाडला। र० बा० १७-६। २३-५। ५०-६।

कुलवधू—स० स्त्री० एक०। कुलांगना, कुलकन्या। क० प्रि० ४-१२-१।

कुल-सोभ—स० पुं० एक०। वंश की शोभा। वि० गी० १३-१५-१।

कुलहीन—विशेषण। विशेष्य—भूपति। जिसका कोई कुल न हो। रा० १८-१०-२।

कुलाचल—सं० पुं० बहु०। पर्वत-विशेष —अष्टकुलाचल—हिम, मलय, महेन्द्र सह्य, शुक्ति, ऋक्ष, विन्ध्य, परियात्र। क० प्रि० ११-१६-१।

कुलाल [कुल√अल् (गति)+अण्]—सं० पुं० एक०। कुम्हार। क० प्रि० ६-७-२।

कुलालचक्र—सं० पुं० एक०। कुम्हार का चक्र। जहाँ० ४५।

कुलाहल—(कोलाहल)—सं० पुं० एक०। शोर, हल्ला। र० प्रि० ११-१०-१।

कुलि—सं० पुं० एक०। कलि(संस्कृत)। वि० गी० ६-३३-१।

कलि—वेंकट, काभि।

कुलिसकोन—सं० पुं० बहु०। वज्र के छ: कोण। क० प्रि० ११-१५-१।

कुली खाँ—सं० पुं० एक०। मधुकरशाह से पराजित पठान योद्धा। वी० च० २-२।

कुलीन [कुल+ख-ईन] विशेषण। विशेष्य —नायक। श्रेष्ठ, पवित्र आचरणवाला। वेदस्मृति, प्रवृत्ति आदि प्राचीन ग्रंथो मे विद्वान् और सत्कुलोत्पन्न व्यक्ति को ही कुलीन कहा है। मनु संहिता के अनेक स्थल पर कुलीन शब्द का उल्लेख है। मेधातिथि ने कुलीन शब्द की इस प्रकार व्याख्या की है।—"सत्कुले जाता विद्यादिगुणयोगिन कुलीना" —(मनुमान्य)। र० प्रि० २-१-२।

कुवचन—विशेषण। विशेष्य—भरतार। अनिष्ट वचन बोलनेवाले। रा० ९-१६-४।

कुवलय—(१) सं० पुं० एक०। नील कमल। क० प्रि० ५-३६-१। १५-५६-४। रा० ३०-२१-६। (२) सं० पुं० एक०। (अ) कुमुदिनी। (आ) पृथ्वी मडल। क० प्रि० ७-२४-१। (३) सं० पु० एक०। (अ) कुमुदिनी—शरद ऋतु के पक्ष मे। (आ) भूमडल—शारदा के पक्ष मे। क० प्रि० ७-३४-१। (४) सं० पु० एक०। (अ) कुमुदिनी—चन्द्रमा के पक्ष मे। (आ) भूमडल—सीता के पक्ष मे। क० प्रि० १४-३६-३।

कुवलय दुखदाई—विशेषण। विशेष्य—प्रभातकर, दसमुखमुख। (अ) दसमुख मुख के अर्थ मे—पृथ्वी मडल को दुख देनेवाला। (आ) प्रभातकर के पक्ष मे—कुमुदो को दुःख देनेवाला। क० प्रि० ७-२४-१।

कुवलयहितु—विशेषण। विशेष्य—चन्द्रमा तथा सीता। श्लेष से—चन्द्रमा के पक्ष मे—कुमुदिनी का हितैषी (चन्द्रमा उदित होने पर कुमुदिनी खिलती है)। २ सीता के पक्ष मे—भूमडल (कु=पृथ्वी+वलय=मडल) की हितैषिणी। रा० ९-४०-३।

कुवास—सं० पुं० एक०। दुर्गंध। र० प्रि० ७-२३-१। क० प्रि० ११-७६-१।

कुशलव—सं० पुं० बहु०। राम के पुत्र, कुश और लव। रा० ३९-९-४।

कुस—(१) सं० पुं० एक०। रघुनाथ के दो पुत्रो मे से एक। क० प्रि०—८-३१-४। रा० ३३-५६-३। ३५-२५-३। ३५-२४-४। ३५-२७-४। ३५-२८-१। ३५-२९-१। ३५-३१-१। ३६-१५-१। ३६-१८-१। ३६-२३-१। ३८-१६-३। ३८-१८-२। ३९-६-२। ३९-९-४। ३९-२४-१। वि० गी० ८-३८-८। छ० मा० २-४५-३। (२) नुकीली पत्तियो-

वाली एक घास, जो यज्ञ आदि कृत्यो के लिए आवश्यक है। रा० ७-१५-१ ६-४४-२। वी० च० २-२१। २-२२। २-२३। वि० गी० ३-६-२। ३-१०-२।

कुसदीप—सं० पुं० एक०। कुश द्वीप, पुराणानुसार सात द्वीपो मे से एक, जो चारो ओर घृत समुद्र से घिरा है। वि० गी० ४-१८-१। ४-२१-१।

कुसमुद्रिका—(१) सं० स्त्री० एक०। कुश की अँगूठी। वी० च० ५-३०। (२) स० स्त्री० एक०। पवित्री। रा० ७-१५-१।

कुसल [कुश+लच्]—(१) स० स्त्री० एक०। क्षेम, खैरियत, मगल। रा० १३-२८-२। १३-२८-३। २०-५३-१। २०-५४-१। ३३-३-१। वि० गी० ३-२१-२। ६-२-२। १६-४६-२। (२) विशेषण। विशेष्य—प्रश्न। कुशल समाचार सूचित, मगलसूचक। "पप्रच्छ कुशल राज्ये राज्याश्रम मुनि मुनि"। रघुवश मे कुशल शब्द को व्यवहार करने का निर्दिष्ट नियम रखा है। कुशल शब्द केवल ब्राह्मण को मगल प्रश्न करने मे व्यवहृत होता है। क्षत्रिय से अनामय, वैश्य से क्षेम और शूद्र से आरोग्य शब्द व्यवहार करके मगल प्रश्न करना चाहिए।

"ब्राह्मण कुशल पृच्छेत् क्षत्रबन्धुमनामयम्। वैश्य क्षेम समागम्य शूद्रमारोग्यमेवच" (मनु० २-१२७)।

वि० गी० ६-२८-२। (३) विशेषण। विशेष्य—कुलालचक्र। चतुर। क० प्रि० ६-७-२। १५-७०-२। जहाँ० ४५-२। ११४-१।

कुसल प्रश्न—सं० पुं० वहु०। कुशल समाचार। वी० च० १०-३६।

कुसलमति—स० स्त्री० एक०। कुशलमति। वि० गी० ६-५४-१।

कुसलव—सं० पुं० वहु०। रामचद्र के दो पुत्र—कुश और लव। क० प्रि० १३-११-४। वी० च० ३३-३५। जहाँ० १८५।

कुसलात—स० स्त्री० एक०। कुशल समाचार। क० प्रि० ११-५२-३।

कुसावर्त—स० पुं० एक०। कुशावर्त। वि० गी० ६-७ १।

कुसावती—स० स्त्री० एक०। राम के पुत्र कुश की राजधानी। रा० ३६-२४-१।

कुसुम [√कुस+उम]—स० पुं० वहु०। पुष्प, फूल। क० प्रि० ४-१०-१। ५-२८-१। ५ ३१-१। ६-१८-१। ७-१४-१। ११-२५-१। १३-२६-२। १५-२६-२ १५-६३-२। १५-८२-१। रा० ८-१३-१। २० ३-१ ३१-२७-१। वी० च० ५-३५। २०-३२। २१-१०। २२-३२। २३-१२। २३-२३। २४-१७। २५-१। २६-२१। वि० गी० १०-१६-१। १०-१६-३। १६-३७-१।

कुसुम कदुक—स० पुं० एक०। फूल रचित गेद। रा० २७-१८-१।

कुसुमकर—स० पु० एक०—कुसुम समान हस्त या हाथ। छ० मा० २-३१।

कुसुम पूजित—विशेषण। विशेष्य—नख। फूलो से पूजित। क० प्रि० ११-२५-१।

कुसुमविचित्रा—स० स्त्री० एक०—एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे न

गण, य गण, न गण, य गण का क्रम होता है। छं० मा० १-३८-२। १-४४८-३७।

कुसुमराज—सं० पु० एक०। सुगन्धित पुष्प। रा० ६-४७-२।

कुसुमसर—सं० पुं० एक०। पुष्प ही जिनके बाण है – अर्थात् कामदेव। क० प्रि० १-५५-२।

कुसुमालि—सं० स्त्री० एक०। फूल। रा० ११-२८-१।

कुसुमावली—सं० स्त्री० बहु०। पुष्पों का समूह। रा० ८-१३-१। २०-३-१।

कुसूल—[√कुस (घेरना) + ऊलच्] सं० पुं० एक०। एक देवयोनि। कुधूल। वि० गी० ११-४०-३।

कुस्वामी—सं० पुं० एक०। दुष्ट स्वभाव का मालिक। क० प्रि० ६-३३-१।

कुहु—[कुह + ऊङ] (१) सं० स्त्री० एक०। अमावास्या। वी० च० २५-२। (२) सं० स्त्री० एक०। नदी विशेष। वि० गी० ४-२४-१।

क्रुद्ध—विशेषण। विशेष्य—श्रीराम। क्रोधित। रा० ३४-४६-२। ३७-१३-१।

कूकर—सं० पुं० एक०। कुत्ता। क० प्रि० ६-७३-४। १३-८-४। रा० ३४-२-१। ३४-१०-२।

कूकरन—सं० पुं० बहु०। कुत्ता। क० प्रि० ८-३४-२।

कूकरियौ—(कूकरिया) सं० स्त्री० एक०। कुतिया, कुत्ते की मादा। क० प्रि० ६-४४-४।

कूच—सं० पुं० एक०। यात्रा। वी० च० ४-१७। ४-२७। ४-७४। ६-५५। ७-२२।

कृच्छ उपवास—सं० पुं० बहु०। चन्द्रायण व्रत आदि शरीर को कृश करनेवाले उपवास। रा० ६-१६-३।

कूजत [√कूज (अव्यक्त शब्द)]—क्रियापद। कूजते। र० प्रि० १०-२०-२।

कूजि—क्रियापद। कूजना। र० प्रि० ३-४०-७।

कूजि कूजि उठै—संयुक्त क्रिया। कूज उठते है, कूजने लगते है। र० प्रि० ३-४०-७।

कूजै—क्रियापद। कूजना। र० प्रि० १२-२६-३।

कूदि—क्रियापद। कूदकर। रा० १६-१-१। १७-४८-२।

कूदि गए—संयुक्त क्रिया। छलाँग मारते हुए कूदकर गए। रा० १६-१-१।

कूप [√कू (शब्द) + पक्] (१) सं० पुं० एक०। कुँआ। र० प्रि० ५-२०-३। क० प्रि० ६-६०-१। ६-६१-३। ७-४-१। १३-६-२। १६-६४-१। वी० च० १-३२। जहाँ० १६। वि० गी० १६-१२। (२) सं० पु० एक०। गड्ढा, छेद। क० प्रि० १५-२३-१। (३) सं० पु० बहु०—कुएँ। क० प्रि० १५-५६-२। १५-६२-३।

क्रूर—विशेषण। विशेष्य–कुठार। क्रूर कर्म करनेवाला, हृदयहीन, कठोर। क० प्रि० ६-४३-२। रा० ७-३६-३।

कूरम—सं० पुं० एक०। कछुआ। वि० गी० ४-३५-३।

कूरम वेश—स० पुं० एक० । कूर्मावतार। वि० गी० ४-३५-३ ।

कूर्म--सं० पुं० एक० । कछुआ । छ० २-३१-२ ।

कूल [सं०√कूल (आवृत करना) + अच्] स० पुं० एक० । तट, छोर, किनारा। र० प्रि० ८-२८-२। वी० च० ८-६ । वि० गी० ६-१०-१ ।

कृच्छ [सं० √ कृत + रक् छकार आदेश] विशेषण । विशेष्य--उपवास । शरीर को कृश करनेवाले या कष्ट देनेवाले ।

कृत--(१) स० पुं० एक० । सतयुग--चारो युगो मे से पहला । क० प्रि० ६-२४-४ । (२) स० पुं० एक० । कर्म-फल । क० प्रि० ११-६४-२ । १३-४२-२ ।

कृतघ्न—(१) सं० पुं० एक० । नामविशेष वि०गी०११-४१-२ । १६-१५-१ ।(२) विशेषण। विशेष्य—मन्त्री । किये हुये उपकार को न माननेवाला, अकृतज्ञ। ' कृत कृतोपकारादिकम् हन्ति" । उपकार का प्रत्युपकार न करने या उपकारी का अपकार करनेवाले को भी कृतघ्न ही कहते है । प्राथचित विवेक मे लिखा है --भर्तृ पिडापहर्ता चपितृ पिंडापहारक यस्मात् गृहीत्वाविद्या च दक्षिणा तु प्रयच्छिति । पुत्रान् स्त्रियश्च यौ द्वेष्टि यश्चैतान धातयेन्नर । कृतस्थ दोप अदति सकामान्न करोति य । न स्मरेच्छ कृत यस्यु आशमान यस्तु दूपयेत् । सर्वास्तानविधि सार्थं-कृतवान् वीन्मनु ॥

प्रभु अथवा पितृपिंड अपहरण करनेवाला, विद्या शिक्षा करके दक्षिणा न देनेवाला, पुत्र व स्त्री को द्वेप अथवा वध करनेवाला, उपकारी-निन्दा अथवा उसकी अभिलाषा पूर्ण न करनेवाला किंवा कृत उपकार भूल जानेवाला और सकल आश्रम दूषित करनेवाला व्यक्ति कृतघ्न कहलाता है ।
रा० च० १८-६-२ ।

कृतघनी–विशेषण। विशेष्य–राम । अकृतज्ञ (रावण द्वारा दिया गया गाली वचन)। उसका यह अर्थ भी लगा सकते है कि भक्तो के समस्त अच्छे-बुरे कामो को नाश करनेवाले। क० प्रि० ३-५-२ । रा० १३-५८-१ ।

कृतमालाका—सं० स्त्री० एक० । नदी विशेष । वि० ६-१६-१ ।

कृतया--स० स्त्री० एक० । राक्षसी । रा० ११-४२-२ ।

कृतयुग--सं० पुं० एक० । चारो युगो मे से पहला सतयुग । रा० १-२-१। वी० च० २८-५ । २८-३२ । ३०-१२ । ३३-३२। जहाँ० ४६ ।

कृतात सोदरी--सं० स्त्री० एक० । नदी विशेप । वि० गी० ६-२२-२ ।

कृति—(१) सं० स्त्री० एक० । जादू । क० प्रि० १२-२४-३ ।(२)काम । वी० च० २-५० (३) विशेपण । विशेष्य–दान। कृतार्थ करनेवाला । वी० च० १-३४-१ ।

कृति—[√ कृ + क्तिन्] सं० स्त्री० एक० । कृत्तिका नक्षत्र, २७ नक्षत्रो मे से तीसरा । क० प्रि० १-१८-२ ।

कृत्या—सं० स्त्री० एक० । एक शक्ति या देवी जो अधिचार द्वारा किसी को अनुष्ठान विशेष से उत्पन्न की जाती है । क० प्रि० ५-२३-१ ।

कृत्रिम—विशेषण । विशेष्य—पर्वत । बनावटी । रा० ३२- १-१ । वी० च० २४-१-२ । वि० गी० १५-४५-१ ।

कृपण—[सं० कृप्+अन] सं० पुं० एक० —लोभी । वी० च० १-२२ ।

कृपा—(१) सं० स्त्री० एक० । प्रत्युपकार की इच्छा न रखते हुए पर-दु ख-निवारण की इच्छा, दया । क० प्रि० २-७-१ । २-१८-२ । २-२०-१ । १५-६८-२ । रा० ११-६-२ । ११-१५-२ । १२-३६-२ । १३-४६-२ । १६-२२-१ । वि० गी० २-२०-१ । ८-४४-२ । ६-१८-१ । ११-१८-२ । ११-२५-२ । ११-३१-२ । १३-१४-२ । १३-२०-१ । १३-२५-२ । १३-६१-१ । १५-३३-१ । १५-४४-२ । १६-१२६-२ । १६-२-२ । १६-१०-२ । २०-५७-१ । २१-२-२ । (३) सं० पुं० एक० । कृपाचार्य । अश्वत्थामा के मामा और कौरव-पक्ष के एक महारथी । क० प्रि० ८-१६-२ । १२-१८-१ ।

कृपान [कृप् (सामार्थ्य) + आनच्]—(१) सं० पुं० एक० । (अ) तलवार । समर के पक्ष मे । (आ) (कृपा + न)–'कृपा' । सं० स्त्री० एक० । दया । सुरति के पक्ष मे । क० प्रि० ८-४७-३ । (२) सं० पुं० एक० । तलवार । क० प्रि० ६-२०-३ । ११-४०-४ । रा० १-४३-६ । वी० च० २-२४ । ६-६ । १०-४ । १८-२७ । २६-१३ । १६-१६ । ३२-३८ । ३३-४२ । जहाँ० ७२ ८३, ६७, १२८, १२६, १५६, १६१ । वि० गी० १-१६-२ । (३) विशेषण । विशेष्य—कर । कृपा न करनेवाले । क० प्रि० ६-२०-३ ।

कृपान निधान सं० पुं० एक० । तलवार चलाने की रीति । रा० १-२४-२ ।

कृपानिधान—(१) सं० पु० एक० । कृपा की सपत्ति या निलय । वि० गी० ११-४१-२ । (२) विशेषण । विशेष्य—रामचन्द्र । दयावान , दयालु । रा० २८-२०-१ । ३३-३६-१ । वि० गी० ११-४१-२ ।

कृपानी—सं० स्त्री० एक० । छोटी तलवार, छुरी । र० प्रि० १६-११-१ । क० प्रि० ५-२६-४ । १५-४२-२ ।

कृपा पात्र—सं० पुं० एक० । जो कृपा के योग्य हो । वि० गी० ११-२८-२ ।

कृपायान कर पति—विशेषण । विशेष्य—रामचन्द्र । कृपाण या कृपाणधारियो के स्वामी । रा० २८-४-३ ।

कृपाराम—सं० पु० एक० । वीरसिंह के दरबार का प्रमुख योद्धा । वी० च० १४-५६ । १८-२७ । ३२-४८ । ३२-५१ । ३३-२० ।

कृपाल—विशेषण । विशेष्य—साहि । कृपालु, दयाशील । क० प्रि० ६-२०-३ । वी० च० ३३-४२-३ । जहाँ० १३१-३ । वि० गी० ११-१६-१ ।

कृपालु—[कृपा √ला (आदाने) + डु] विशेषण । विशेष्य—श्री रघुनाथजू । कृपा रखनेवाला (भक्तो पर) । क० प्रि० ६-१४-१ । रा० २७-४-३ । छ० मा० १-४१-३ । जहाँ० १-६४-१ । वि० गी० १३-३०-१ ।

कृपालु सुभाउ—विशेषण । विशेष्य—प्रभु । कृपापूर्ण स्वाभाव वाले । वि० गी० १६-२१-१ ।

कृषि- [कृष्+इन्]—सं० स्त्री० एक०। खेती। जहाँ० १६।

कृष्णराय—सं० पुं० एक०। वीरसिंह का दरबारी। वी० च० १-५८। १४-६०।

कृष्न—(१) सं० पुं० एक०। वसुदेव और देवकी के पुत्र जो विष्णु के आठवे अवतार माने जाते है। रा० २०-२२-२। (२) विशेषण। विशेष्य—वर्न। श्यामल। वी० च० १८-५३-२। १७-६०-१।

कृष्ना—(१) सं० स्त्री०एक०। कृष्णा नदी। वि० गी० ६-१३-२। १६-१०४-१। (२) विशेषण। विशेष्य—भुजग। काले रंग की। रा० २४-२१-३।

कृष्नावतार—सं० पुं० एक० (देखे, 'कृष्न')। रा० १३-४-२।

कृस—(१) सं० पुं० एक०। कृश। वि० गी० १०-१८-२। (२) विशेषण। विशेष्य—कटि, पतली। रा० २८-१५-४। वि० गी० १०-१८-२।

कृसनानुरागी—विशेषण। विशेष्य—द्रिग। कृष्णा के अनुरागी, कृष्ण पर केंद्रित। क० प्रि० ६-२२-४।

कृसानु—[√कृश+आनुक्]-(१) सं० पुं० एक०। आग। रा० १२-४२-२। (२) सं० पुं० एक०—शिव। वि० गी० ६-५७।

कृस्न -[√कृष्+नक्]-(कृष्ण) (१) सं० पुं० एक० यदुवश के देवकी-वसुदेव के पुत्र जो विष्णु के आठवें अवतार माने जाते है। र० प्रि० ६-१५-१। क० प्रि० ५-२५-२। ५-३८-१। ११-४४-१। वि० गी० ८-२। (२) सं० पुं० एक० (अ) अँधेरा पाख। श्याम वर्ण का बोधक। (आ) शुक्ल पक्ष। श्वेत वर्ण का बोधक। क० प्रि० ५-३८-२। (३) विशेषण। विशेष्य—कृष्ण घन। काले। क० प्रि० १४-४८-१

कृस्नदत्त—(कृष्णदत्त)—सं० पुं० एक०। कृष्णदत्त मिश्र हरिनाथ के पुत्र। क० प्रि० २-१३-१।

कृस्नदत्त मिश्र—सं० पुं० एक०। केशव के दादा। क० प्रि० १-१८-२। वी० च० २-३२।

कृस्नदास—सं० पुं० एक०—वीरसिंह देव का पुत्र। वी० च० १-४६। २-५१। ३३-१८। वि० गी० १-५-३।

कृस्नादास मिश्र—सं० पुं० एक०। कृष्णदास मिश्र। वि० गी० १-१८-२।

कृस्न-नदीवर—सं० पुं० एक० (१) गगा—सफेद रंग का बोधक। (२) समुद्र—काले रंग का बोधक। क० प्रि० ५-३२-१।

कृस्नपक्ष—सं० पुं० एक०। अँधेरा पाख। क० प्रि० ४-५-२।

कृस्तित—विशेषण। विशेष्य—जू जीव। अपवित्र, धनलोलुप। रा० १८-६-२। वी० च० १-२२-३।

के—संबंध कारक। उदा०—"महादेव के देव" (छ० मा० १-२-१)। र० प्रि० १-६-२। १-२०-४। १-२२-३। २-४-१। २-६-२। २-६-४। २-१०-४। २-१३-१। २-२७-२। ३-७-३। ३-१३-३। ३-२३-४। ३-२७-४। ३-३६-१। ३-५४-४। ३-६१-४। ३-७०-१। ३-७१-४। ४-६-१। ४-६-३। ४-१०-२। ४-१६-१। ५-२-१। ५-३-४। ५-१०-२। ५-१४-४।

५-१६-१ । ५-१८-२ । ५-२६-२ । ५-२७-१ । ५-२६-२ । ५-३१-१ । ५-३२-२ । ५-३३-२ । ५-३४-१ । ५-३६-१, २ । ५-३७-१ । ५-३८-१ । ६-१-२ । ६-२-१ । ६-४-१ । ६-८-१ । ६-२२-२ । ६-२५-१ । ६-३१-१ । ६-३२-१ । ६-३३-१ । ६-३८-२ । ६-४१-१ । ६-५३-४ । ६-५७-१ । ७-१८-४ । ७-२४-१ । ७-२६-१ । ७-३०-१ । ७-३१-१ । ७-३६-१ । ८-२-१ । ८-७-४ । ८-१३-२ । ८-१८-४ । ८-२१-३ । ८-२३-२ । ८-२७-२ । ८-२६-४ । ८-५२-१ । ८-५५-१ । ८-५६-१ । ६-४-३ । ६-५-४ ६-७-१ । ६-७-२ । ६-८-१ । ६-६-२ । ६-१८-२ । ६-१६-२ । ६-२१-१ । १०-७-२ । १०-८-१ । १०-१७-३ । १०-१६-१ १०-२१-१ । से ४ । ११-३-३ । ११-४-४ । ११-६-१ । ११-१६-३ । ११-४-१ । १२-१०-२ । १२-१४-४ । १२-१५-१ । १२-१६-३, ४ । १२-१८-४ । १२-३०-१ । १३-३-१ । १३-६-२ । १३-१८-२ । १३-२०-१ । १३-२२-१ । १४-६-२ । १४-७-३ । १४-१८-१ । १४-२६-२ । १४-२६-४ । १४-२८-२ । १४-२६-१ । १४-३१-२ । १४-३२-४ । १४-३६-१ ।

१-३०-१ । १-३३-१ । १-३८-१ । १-५५-१ । २-१-१ । ३-११-३ । ३-१६-२ । ३-१६-१ । ३-३०-१ । ३-३४-२ । ३-३६-२ । ३-३६-१ । ३-३५-१, २ । ३-५६-१ । ३-५८-२ । ४-५-१ । ४-२०-१ । ४-२१-१ । ५-२-१ । ५-१३-२ । ५-१३-३ । ५-१४-१ । ५-१४-३ । ५-१६-४ । ५-२६-१ । ५-२७-१ । ५-२७-२ । ५-२७-४ । ५-३७-१ । ६-५-३ । ६-७-३ । ६-७-४ । ६-११-१ । ६-१२-१ । ६-१३-१ । ६-१६-१ । ६-२०-१ । ६-२१-१ । ६-२५-२ । ६-२८-२ । ६-३६-१ से ३ । ६-३८-३ । ६-४२-४ । ६-५१-१ । ६-५४-१ । ६-६१-१ । ६-६४-२ । ६-६६-१, ३ । ६-७१-३ । ६-७३-४ । ६-७६-१ से ४ । ७-१-२ । ७-७-१ । ७-११-१ । ७-१७-२ । ७-२६-२ । ७-२८-१ । ८-३-१ । ८-८-१ । ८-१०-१ से ४ । ८-१२-४ । ८-१८-४ ८-२३-२ । ८-२३-४ । ८-२६-३ । ८-२८-१, ३, ४ । ८-३१-४ । ८-३४-१ । से ४ । ८-४०-२ । ८-४२-४ । ६-६-४ । ६-११-१ । ६-१६-१ । ६-१८-३ । ६-२६-३ । १०-१४-३ । १०-१७-१ ११-६-२ । १२-६-२ । ११-६-२ । ११-२५-३, ४ । ११-३०-४ । ११-३१-१ । ११-३२-२ । ११-३४-२ । ११-४०-४ । ११-४२-२ । ११-४४-२ । ११-५०-२ । ११-५२-३ । ११-५५-४ । ११-५५-५, ७ । ११-६१-१ । ११-६४-२,४ । ११-७३-१,२ । ११-८२-३ । ११-८५-२,४ । १२-६-१ । १२-११-१ । १२-३०-४ । १३-२-२ । १३-३-१,४ । १३-११-१ । १३-१२-१ । १३-१६-१ । १३-२६-१ । १४-१०-४ । १४-१४-२ । १४-१६-२ १४-१८-४ । १४-१६-१ । १४-२०-४ । १४-२२-२ । १४-२७-१ । १४-२८-२ । १४-२६-२ । १४-३४-१ । १४-३५-४ । १४-३६-३ । १४-४३-१,४ । १४-५१ । १५-२८-१ । १५-३८-३,४ । १५-५८-१ । १५-५८-१ से ४ । १५-६६-२ । १५-६८-१ । १५-८२-१ । १५-

८८-४। १५-१००-१। १५-१०५-१ से ४ । १५-१०७-१ । १५-११५-२। १५-१२७-३। १५-१३०-१। १६-१-१। १६-२-२ । १६-६-१,३ १६-२६-१। १६-३१-१। १६-३३-२। १६-३५-१ । १६-३६-१ । १६-५१-२ । १६-५३-१,२ ।

१-१-२,३। १-१०-४। १-२२-३। १-३५-२ । १-४८-४ । २-१-१। २-५-१। २-५-१ । २-६-१। २-१३-१। २-२४-१ से ४। २-२६-१,३ । २-५-२ । ३-२८-१ । ३-२६-४ । ३-३१-२ । ३-३३-३। ४-१-१ । ४-३-२। ४-१२-२, ४-१४-३ ४-२२-४। ५-२-१। ५-७-१। ५-८-२। ५-६-१। ५-१०-३ । ५-१७-१,४। ५-२४-२। ५-२७-१,२ । ५-२८-१ । ५-२६-२ । ५-३०-१। ५-३१-१। ५-३५-२। ५-३६-२। ५-४३-२। ६-१-१। ६-११-२। ६-१७-४। ६-१८-२,४। ६-२०-१। ६-२१-२ । ६-२२-१। ६-२५-३। ६-२६-१। ६-३८-४। ६-४०-२। ६-४४-१। ६-४७-२। ६-५६-१। ६-५६-२। ६-५६-१। ६-६१-१। ६-६०-४। ७-५-१। ७-६-४। ७-८-४। ७-१२-३ । ७-१८-२। ७-२०-२। ७-३१-१। ७-३३-२। ७-३६-१। ७-४१-१,४। ७-५२-१ । ७-५४-१। ८-५-१। ८-७-१। ८-१२-३ । ८-१८-१। ६-२२-२। ६-२६-४। ६-२७-२। ६-३३-४। ६-३५-२। ६-३७-२। ६-४०-३। ६-४१-४। ६-४५-१। १०-३-२। १०-८-१। १०-१४-४। १०-१५-२,३। १०-१७-२ । १७-१७-७। १०-२६-२। ११-६-१। ११-१६-१। ११-२६-१। ११-३३-२। ११-३४-१,२ । ११-३६-१। १२-१-२। १२-२-१। १२-११-२ । १२-१४-१।

१२-२०-१। १२-२५-१। १२-४६-३। १२-५५-१। १२-६०-२। १२-६१-२। १२-६७-१,३। १३-७-२। १३-१५-२। १३-२२-२। १३-६५-२। १४-२६-१। १४-३१-२। १४-३२-३। १४-३५-२। १४-३८-१,३ । १४-४१-२ । १५-१६-१ । १५-२४-१। १५-२५-३। १६-६-१। १६-६-१ । १६-२६-१। १६-३२-३,४। १७-१-१। १७-८-२। १७-१३-१। १७-२५-३। १७-२६-१। १७-३८-२। १८-७-१। १८-१२-२। १८-१६-३। १८-१८-२ १८-२८-२। १८-३२-४। १६-१३-१। १६-१४-२। १६-१६-२। १६-३२-१,२। १६-३६-१। १६-४५-२। १६-५१-६। १६-२३-२। १६-५४-१। २०-४-२। २०-५-१। २०-७-१। २०-११-३। २०-२५-१। २०-२७-१। २०-२८-१। २०-२६-२। २०-३४-२। २०-३६-२। २०-३८-२। २०-४०-३। २०-४२-२। २०-४३-१। २०-४६-२। २१-४-१। २१-१८-२। २१-१६-१। २१-२१-१। २१-३१-१। २१-३५-२। २१-५६-२। २२-७-२। २२-१०-२। २२-११-३। २२-२७-४। २३-२-२। २३-७-१। २३-१४-१। २३-२०-१। २४-८-२। २४-१०-१। २४-१७-१। २५-६-१। २५-२६-२। २५-१६-२। २५-२५-२। २६-१-२। २६-५-१। २६-११-१। २६-१२-१। २६-१३-२। २६-१५-१। २६-१६-१। २६-२६-२। २६-३३-१। २६-३६-१। २७-३३-१। २६-३६-१। २७-३-२। २७-५-१। २७-६-१। २७-७-३। २७-८-१। २७-२३-४। २७-२३-२। २७-२५-१। २७-२६-४। २८-२-१।

२८-५-२ । २८-१३-१ । २८-१९-११ । २९-७-१ । २९-१५-१ । २९-२०-३ । २९-२०-४ । २९-२१-१ । २९-२३-१ । २९-२४-३ । २९-२५-१ । २९-३२-२ । २९-३९-१ । २९-४१-१ । २९-४४-२ । २९-४५-२ । ३०-११-२ । ३०-१४-१ । ३०-१७-१ । ३०-१८-४ । ३०-२०-३ । ३०-२१-२ । ३०-२२-३,४ । ३०-२३-१,२ । ३०-४६-२ । ३१-१-३ । ३१-६-२ । ३१-१६-२ । ३१-२४-१ । ३१-२६-२ । ३१-२७-१ । ३१-२८-१ । ३१-३२-१ । ३१-३२-२ । ३१-३३-४ । ३१-३६-१ । ३१-३६-२ । ३२-२-१ । ३२-३-१,२ । ३२-४-१ ।

१-७-२ । १-१२-३ । १-४३-४ । १-४५-३ । १-५८-६ । १-६३-३ । १-६४-३ । २-४-१ । २-१६-१ । २-२९-१ । २-४८-६ ।

१-१-१ । १-९-१ से ४ । १-११-१ । १-२३-४ । १-२८-१,४ ।

१-२-१ । १-२७-१ । २-२३-१ । ३-७-१ । ४-३२-२ । ६-३५-१ । ६-८५-१ । ७-१६-२ । ७-५९-२ । ८-२३-२ । ८-४२-८ । ९-३२-५ । १०-३८-२ । १०-४१-१ । ११-११-१ । ११-३३-१ । १२-७-२ । १२-२६-१ । १३-१९-१ से ४ । १४-२३-१ । १५-२०-१ । १६-१२-२ । १७-२१-२ । १७-२६-२ । १८-१२-१ । १८-१२-३ । १८-२३-१ । २१-२३-१ । २१-३५-२ । २२-१-२ । २३-३३-१,२ । २४-३-१ । २४-१९-१ । २५-१-१ । २६-२२-९ । २६-३८-२ । २७-१५-१ । २७-१८-१ । २८-२१-१ । २९-१४-१ । २९-१६-१ । ३१-४७-१ । ३१-८-१ । ३२-२६-१से४ । ३३-६-१ । ३३-३२-१ । ३३-५१-१ ।

५-२-७ । १७-२-४ । ३६-१-४ । ५४-१ । ६०-२ । ७३-१ । ८५-१ । ८९-२ । ९८-१ । १००-१ से ३ । १०२-१ से ४ । १०४-२ । १३३-१ । से ४ । १७२-१ से ४ । १८१-२ ।

८-४८-१ । ९-४१-२ । ९-५०-२ । १३-३९-१ । १६-४३-२ । १७-२-१ । १७-४४-१ । १८-४-३ । १८-८-१ । १८-९-१ । १९-१-१ । १९-६-१ । १९-९-१ । १९-६७-१ । २०-२-१ । २०-६-१ । २०-९-१ । २१-२०-१ । २१-४४-२ । २२-४७-२ ।

केकरा—सं० पुं० एक० । गोलाकर क्षुद्र जल-जन्तु जिसके आठ पग होते हैं । रा० ३७-३-१ ।

केंकरे—सं० पु० एक० । वेणी (केकम—ए) वि० गी० १२-१२-१ ।

केका—[के√कै (शब्द) + उ] सं० स्त्री० एक० । मोर की बोली । र० प्रि० ११-१७-३ । ११-१८-३ । क० प्रि० ६-४६-१ । १६-४१-१ । रा० १३-८८-२ । १४-२९-२ ।

केकि—सं० पु० एक० । मोर । रा० ३२-१८-२ ।

केकिन—सं० पु० बहु० । मोर । क० प्रि० ६-४६-१ ।

केकिराज—सं० पुं० । मोर । रा० ३२-१८-२

केकी—(१) सं० पुं० एक० । मोर । र० प्रि० ११-१०-१ । क० प्रि० ४-१४-२ । ५-२५-१ । ६-४५-१ । ८-३४-१ । १०-३४-१ । १६-४१-१ (२) सं० पुं० बहु० । मोर, मयूर । र० प्रि० १०-२४-१ । रा० ३०-२१-१ । जहाँ० ९५ । वि० गी० १०-६-३ । १७-६-३ ।

केतक—[√ कित् + ण्वुल] सं० पुं० एक०। केवड़े का वृक्ष। रा० १२-४१-२।

केतक पुज—सं० पुं० बहु०। प्रफुल्लित केवडो का समूह। रा० ३१-५१-१।

केतकि—स० स्त्री० एक०। केवडा—सुगधित पुष्प विशेष। क० प्रि० ५-१६-३। ६-१६-२। (२) सं० स्त्री० बहु०। केवडे के पुष्प। क० प्रि० ७-३१-२। रा० १२-४१-२।

केतकी—सं० स्त्री० एक०। केवडा पुष्प। र० प्रि० १०-२२-१। ११-१६-३। क० प्रि० १२-२४-१। १४-८-३। १५-८७-१। १५-८८-४। वी० च० २३-६। २४-१८।

केतकी पुज—(१) सं० स्त्री० एक०। केवडे के पुष्पो का गुच्छा। क० प्रि० ७-३१-२।

केतिक—सं० पुं० एक०। पुन्नाग पुष्प विशेष। क० प्रि० ६-१६-२।

केतु—[स √ चाय (देखना) + तु, कि आदेश] (१) सं० पुं० एक०। सौर मडल का नवाँ ग्रह जो पुराणो के अनुसार सैंहिकेय राक्षस का कबध है और जिसका सिर राहु हुआ। क० प्रि० १४-२३-१। (२) सं० पुं० एक०। पताका। रा० १८-२७-१। २०-३२-४।

केतु अरि—विशेषण। विशेष्य—चन्द्रमा। जिसका शत्रु केतु हो। विष्णु के परामर्श से देवताओ ने असुरो के साथ मिलकर समुद्र मथन किया, उसी से चन्द्र की उत्पत्ति हुई। यह एक देवता गिने जाते है। अमृत पान के समय देवताओ की पक्ति मे बैठकर किसी असुर ने अमृत पी लिया था। उन्होने विष्णु से यह बात कह दी। उसी पर असुर राहु रूप से इन्हे ग्रास किया करता है (महाभारत १/१६)। राहु और केतु को एक ही मानकर केशव ने यहाँ केतु नाम लिया है। रा० ६-४१-१।

केतु त्रिविक्रम के जस की—विशेषण। विशेष्य—त्रिवेनिहि। त्रिविक्रम के यश की पताका। रा० २०-३२-४।

केतुमाल—स० पुं० एक०। खड विशेष, जबू द्वीप के नौ खण्डो मे से एक खण्ड। ब्राह्माड पुराण के अनुसार इसमे सात पर्वत और कई नदियाँ है। देवर्षि प्राय: इन्ही नदियो मे स्नान करना पसद करते है। इस खड मे प्राय जंगली जानवर भी रहते है। वि० गी० ४-३५-३।

केदार—सं० पु० एक०। स्कन्द पुराण का एक खण्ड जिसमे केदारनाथ का माहात्म्य वर्णित है।१

केदारु—सं० पुं० एक०। थाला। क० प्रि० १५-६८-१।

केर—सं० पुं० बहु०। केले, फल-विशेष। र० प्रि० १४-२२-१।

केरल—सं० स्त्री० एक०। केरल देश। जहाँ० १०१।

केरि फूल—सं० पु० एक०। केले का पुष्प। रा० ३२-३०-२।

केरी—सं० स्त्री० एक०। केला। वी० च० २३-२६।

केलि [सं० केल् + इन]—(१) सं० स्त्री० एक०। क्रीडा, रति, हँसी-मजाक। र० प्रि० १-२०-२। ५-३-३। ६-५१-१। ११-११-१। क० प्रि० १०-३०-६।

११-४१-२। १४-८-३। १६-४८-१। १६-६६-४। रा० २७-१३-२। ३०-३२-२। ३२-३८-१। (२) स० स्त्री० वहु०। क्रीडाएँ। र० प्रि० ५-२६-३। छ० मा० २-३७-८। वि० गी० ४-३३-१।

केलिकल—स० स्त्री० एक। कामकला छ० मा० १-६६-५।

केलि-कलह—सं० पुं० एक०। हँसी मजाक मे होनेवाला विवाद। र० प्रि० ६-५१-१।

केलिकल्पतरु—विशेषण। विशेष्य—क्वार। केलि की समस्त कामनाये पूर्ण करने को कल्प-वृक्षवत् (देवलोक का वृक्ष-विशेष है। यह वृक्ष माँगने से सकल पदार्थ देता है।) निगम कल्पतरोर्गलितम् पलम्।—भागवत १-१-३। क० प्रि० १०-३०-६।

केलि-किलोलनि—स० पुं० वहु०। रति की मुद्राएँ। र० प्रि० ११-११-१

केलिथली—स० स्त्री० एक०। क्रीडा-स्थल, रासलीला का स्थान। रा० ११-२२-२। वि० गी० ४-४२-१।

केलि-विधान—सं० पुं० एक०। क्रीडाओ की व्यवस्था। क० प्रि० १६-४६-१।

केली—स० स्त्री० एक०। खेल। वी० च० २५-२०। ३२-३५।

केवरो—स० पु० एक०। सफेद केतकी। क० प्रि० ५-६-१।

केवारि—सं० पुं० एक०। केसरी। वि० गी० ६-३३-२। १०-१८-२।

केस—(१) सं० पुं० वहु०। सिर के वाल। र० प्रि० ३-१२-१। ३-४०-३। १२-४-१। १४-२६-१। क० प्रि० ४-१०-१। ५-१२-२। ५-१४-४। रा० १६-२६-१। १६-३०-२। ३२-३-२। वी० च० १७-५३। २२-४६। ३३-११। वि० गी० ८-१०-२। (२) स० पुं० वहु०। (अ) वाल—गोप कुमारी के पक्ष मे। (आ) गर्दन के वाल—घोडी के पक्ष मे। क० प्रि० ११-८३-१।

केसकी—स० पुं० एक०। (१) सिंह—जगली हाथी के पक्ष मे। केसर की क्यारियाँ—राम के पक्ष मे। रा० १३-८८-१। (२) सिंह। रा० १४-२६-२। १८-२४-१। १६-३२-३। (३) केसकी नाम का वानर जो राम की सेना मे था और जो हनुमान का पिता था। रा० १६-४६-२।

केसपास—स० पु० वहु०। केश-समूह। र० प्रि० ३-४३-१। क० प्रि० ४-१७-१। १५-७५-४।

केसर—[के √सृ + अच्] (१) स० पुं० एक०। फूलो के वीच का सीका या रेशा। क० प्रि० ५-१८-१। १२-२४-१। (२) स० पु० एक०। पुन्नाग—पुष्प विशेष। क० प्रि० १३-२६-२। १५-८७-१। १५-८८-४।

केसरि—(१) स० पु० एक०। पुन्नाग। क० प्रि० ५-२८-१। १४-८-२। (२) सं० पु० एक०। कुकुम। र० प्रि० ५-३४-४। १५-५-२। (३) स० पुं० एक०। (अ) सिंह—हिरण के पक्ष मे। (आ) पुन्नागपुष्प—नायिका के पक्ष मे। र० प्रि० ११-१७-१।

केसव—स० पुं० एक०। केशवदास। हिंदी के एक प्रमुख आचार्य जिनका समय भक्ति काल के अतर्गत पडता है, पर

जो अपनी रचना मे पूर्णतया शास्त्रीय तथा रीतिवद्ध है। इनके परिवार की वृत्ति पुराण की थी। ये भरद्वाज गोत्रीय कादंनी शाखा के यजुर्वेदी, मिश्र उपाधि-धारी ब्राह्मण थे। ओडछाधिपति महराज इन्द्रजीतसिंह इनके प्रधान आश्रयदाता थे, जिन्होंने २१ गाँव इन्हे भेट मे दिये थे। वीरसिंहदेव का आश्रय भी इन्हे प्राप्त था। तत्कालीन जिन विशिष्ट जनो से इनका घनिष्ठ परिचय था, उनके उल्लिखित नाम ये है—अकवर, टोडरमल, वीरवल और उदयपुर के राणा अमरसिंह। तुलसीदास जी से इनका साक्षात्कार महाराज इन्द्रजीत सिंह के साथ काशीवास के समय सभव हुआ। उच्च कोटि के रसिक होने पर भी ये पूरे आस्तिक थे। ये व्यवहार-कुशल, वाग्विदग्ध और विनोदी थे। अपने पाडित्य का इन्हे अभिमान था। नीति-निपुण, निर्भीक एव स्पष्टवादी केशव की प्रतिभा सर्वतोमुखी थी। साहित्य और सगीत, धर्मशास्त्र और राजनीति, ज्योतिप और वैद्यक, सभी विपयो का इन्होने गभीर अध्ययन किया था।

केशवदास की प्राप्य प्रामाणिक रचनाएँ, रचनाक्रम के अनुसार ये है—(१) रसिक प्रिया (१५९१ ई०), (२) कविप्रिया, तथा (३) रामचद्रिका (दोनो का रचनाकाल १६०१ ई०)। (४) वीर चरित्र (१६१० ई०), (५) जहाँगीर जसचद्रिका (१६१२ ई०) (६) रतनवावनी का रचनाकाल अज्ञात है, पर यह उनकी सर्वप्रथम रचना है। और (७) छद माला, (८) शिख-नख, (९) विज्ञान गीता—ये भी आपकी प्रसिद्ध रचनाएँ है।

र० प्रि० १-५-२ । १-१३-२ । १-२६-१ । २-३-२ । २-६-१ । २-१०-२ । २-२७-४ । ३-१०-३ । ३-२३-३ । ३-३१-२ । ३-४४-३ । ३-५१-१ । ३-६०-१ । ३-६९-२ । ३-७१-३ । ४-३-२ । ४-५-३ । ४-८-३ । ४-३०-२ । ५-११-२ । ५-१७-१ । ५-२३-१ । ५-३६-३ । ६-६-६ । ६-२३-२ । ६-४७-४ । ६-५४-१ । ७-१०-१ । ७-१५-१ । ७-४२-२ । ८-४-२ । ८-२८-२ । ८-४९-४ । ९-५६-२ । १०-१२-१ । ११-१-१ । ११-१६-१ । १२-३-२ । १२-२४-१ । १३-३-३ । १३-१३-२ । १४-२-१ । १४-३९-२ । १४-४०-२ । १५-१-२ । क० प्रि० १-५-१ । १-३९-२ । ३-८-३ । ३-११ २ । ३-१९-१ । ३-३८-१ । ४-१-१ । ४-६-२ । ५-१५-३ । ५-३७-२ । ६-१०-२ । ६-२३-२ । ७-२१-२ । ८-१३-१ । ८-१८-१ । ९-१४-३ । ९-३०-१ । १०-२४-५ । ११-२-६ । १२-३-१ । १३-४-५ । १३-६-६ । १४-६-१ । १४-२१-४ । १५-१३-४ । १५-७१-१ । १५-९२-३ । १६-३-१ । रा० १-७-२ । १-२४-५ । २-९-२ । २-२०-२ । ४-९-४ । ४-१९-३ । ५-१७-२ । ५-२४-४ । ५-४२-२ । ६-५-१ । ६-४४-२ । ७-२-२ । ७-१५-३ । ७-४५-५ । ८-५-२ । ९-४४-४ । १०-१८-४ । ११-५-१ । १२-४१-१ ।

१३-६२-२ । १४-४१-२ । १५-२४-१ । १६-१७-१ । १७-४७-२ । १६-३२-२ । १६-५३-२ । २१-५१-२ । २२-३-२ । २४-८-२ । २५-३६-३ । २६-२२-१ । २७-८-१ । ३०-२३-२ । ३२-२५-१ । ३१-५-१ । वी० च० १-३ । १-५ । १-६ । १-११ । १-२६ । ८-४० । १-५५ । ६-५४ । ७-४० । ७-५८ । ८-३५ । ८-५५ । ६-६ । ११-५० । १३-१२ । २२-७० । २४-१६ । २६-२२ । २६-३६ । २७-२८ । २८-३५ ३२-२६ । ३३-४६ । जहाँ० ३, ५, ६, १०, १८, २०, २३, ३०, ३४, ४४, ८५, ६७, १००, १०१, १०६, १३३, १५०, १६०, १६८, १६१, २०० । वि० गी० १-२-३ । १-४-१ । २-४-३ । ३-१६-४ । ३-३१-२ । ४-१३-१ । ४-१५-२ । ५-२०-३ । ६-३२-२ । ६-५४-२ । ७-१८-४ । ६-२-१ । ६-४६-१ । १०-१-१ । १०-६-१ । १०-१७-१ । १२-१०-१ । १३-३६-२ । १४-२२-१ । १५-१६-१ । १५-५५-२ । १६-४१-२ । १७-३४-२ । १७-६८-२ । १८-८-३ । २०-४२-१ । २१-५५-३ । (२) चामर । र० बा० १-४-६ । १-५-६ । १-१०-५ । १-१२-३ । १-२१-२ । १-३२-४ । १-३६-५ । १-३८-३ । १-४५-५ । १-५५-३ । छ० मा० १-१२-२ । १-३४-२ । १-३४-४ । १-५६-२ । १-६६-६ । १-६६-२ । १-७३-५ । २-७-२ । २-१५-१ । २-१८-४ । २-४५-५ (३) स० पु० एक० । विष्णु भगवान । छ०मा०१-२४-४ । वि० गी० ३३-२८ ।

केसवदासु—स० पु० एक० । देखिए—"केसव" ।

केसवमिश्र—सं० पु० एक० । रामशाह और वीरसिंह के बीच संधि करने के लिये भेजा हुआ ब्राह्मण । वी० च० १०-३३ । १०-३४ । १०-३८ । १०-४० । ११-४६ ।

केसवराइ—(१) स० पुं० एक० । कवि केशवदास—देखिए "केसव" । र० प्रि० ३-४२-२ । ६-२१-२ । ६-५७-२ । १३-१६-१ । (२) स० पु० एक० । श्रीकृष्ण । र० प्रि० ३-७३-१ । १३-१६-१ । वि० गी० १-३१ । १५-१७ । १३-२२ । ३३-२८ ।

केसवराज—स० पु० एक० । श्रीकृष्ण । क० प्रि० १६-३०-१ ।

केहरि—सं० स्त्री० एक० । कस्तूरी । वी० च० १३-४ । जहाँ० ५७ ।

केसरि—सं० स्त्री० एक० । एक सुगंध द्रव्य । वी० च० ५-२४ । २५-२१ । २५-२३ ।

केसववस—सं० पुं० एक० । केशवदास का कुल । क० प्रि० १-५-१ ।

केसववसन—स० पुं० एक० । श्रीकृष्ण का वस्त्र—पीतांबर । क० प्रि० ५-१८-१ ।

केसी—सं० पुं० एक० । कृष्ण के हाथों मारा गया एक अश्वरूप दानव । र० प्रि० १-२-३ । १४-२६-१ ।

केसो—स० पुं० एक० । देखिए "केसव" । रा० १८-१०-२ ।

केसोराइ—(१) सं० पुं० एक० । केशवदास । देखिए "केसव" । र० प्रि० ५-२७-३ । ६-२८-३ । ६-१६-३ । १२-२४-४ । क० प्रि० ४-१०-४ । ६-१२-३ । १०-२०-३ । १५-७६-४ । (२)

सं० पुं० एक० । श्रीकृष्ण । र० प्रि० ३-४८-४ । ६-३७-३ । क० प्रि० ४-१०-४ । ११-४२-३ । ६-१२-३ । (३) स० पु० एक० । ईश्वर । क० प्रि० ११-३१-४ । ६-१४-२ । १०-१४-४ । (४) स० पु० एक० । किंवलक । क० प्रि० १४-४१-२ ।

केसौ--स० पु० एक० । कवि केशवदास । वि० गी० १-१-६ ।

केसौदास--स० पु० एक० । कवि केशवदास । छं० मा० १-७८-३ । वि० गी० ६-४७-४ । १०-१४-४ । १०-१६-४ । १०-१८-३ । १०-१६-२ । १०-२०-३ । १०-२१-४ । १४-७-३ । १४-५६-४ । १६-७-२ । २१-४५-४ ।

केहरि--स० पु० एक० । सिंह । र० प्रि० ८-२३-३ । क० प्रि० १०-२६-४ । १४-१७-३ । रा० ११-२८-२ । ३४-४८-२ ।

केहरी--स० पु० एक० । सिंह । र० प्रि० १४-२२-१ ।

केहि--अव्यय । कैसे, किस । उदा०--"केहि कारन ‥ " (रा० १३-४२-२ ।) रा० ५-२१-२ । ७-१८-२ । १३-६८-१ । १३-७४-१ ।

केहै--क्रियापद । कहिहै, कह देगे । र० प्रि० ७-२१-३ ।

कै--अव्यय (स० किम), विधेयवाचक । या, वा, अथवा, तो । उदा० 'कै है रस ।' क० प्रि० १६-५७-१ । (२) क्रियापद । करके । र०प्रि० १-२३-२ । १-२४-३ । ३-७-१ । २-२८-३ । ३-२६-१ । ३-४४-४ । ३-६०-३ । ३-७१-३ । ५-१६-५ । ५-२६-१, २ । ५-२६-४,६,८ । ५-३०-१ । ५-३१-२, ५ । ५-३४-३ । ६-२०-३ । ६-३५-२ । ६-४३-१, २ । ६-५०-१ । ६-५३-३ । ७-२१-१ । ७-२४-२ । ७-३०-३ । ७-३६-२ । ७-५१-३ । ८-७-२ । ८-१७-२ । ६-४-१ । १०-१०-२, ४ । १०-१०-६, ८ । १०-११-१ । १०-२७-६ । ११-३-१ । ११-४-५ । ११-१०-३ । ११-१२-२ । १२-३-३ । १२-२२-२ । १२-२६-४ । १३-६-३ । १३-८-१ । १३-८-२ । १३-१८-७ । १४-५-२ । १४-१७-४, ५ । १४-२३-५ । १४-२८-१ । १६-६-४ । क० प्रि० २-२१-२ । ३-११-१ । ३-१२-२ । ३-२५-६ । ३-३४-१ । ३-३८-४ । ३-४५-१ । ३-४६-३ । ३-४८-२ । ३-४६-२ । ५-१५-२ । ५-३५-३ । ६-७-२,४ । ६-७६-२, ३ । ७-२४-४, ६, ७ । ८-२८-६ । ६-१२-७ । १०-१६-१ । १६-४७-१ । १६-५८-१ । १६-५६-२ । रा०--१-१-२ । २-१२-१ । ३-२५-२ । ३-३२-२ । ४-४-१ । ४-२४-१ । ५-४२-१ । ६-६०-१, २ । ६-६३-२ । ६-६६-१, २ । ७-२-४ । ७-६-१ । ७-८-३ । ७-१२-२ । ७-२३-३, ४ । ७-२६-२ । ६-३६-२ । १०-३-१ । १०-१३-१ । १०-१६-१ । १०-२७-२ । १०-२८-२ । १०-३७-२ । १०-४३ । ११-७-२ । ११-८-२ । १२-६-१ । १२-२०-३ । १२-२७-२ । १२-३४-२ । १३-२२-३ । १३-५२-१ । १३-५३-२ । १३-६५ । १३-६६-३ । १४-४-२ । १५-४०-४ । १६-४-३ । १६-१०-४ ।

१७-११-२ । १८-५-१ । १८-३५-४ । १९-१६-२ । १९-२१-१ । १९-२५-१ । १९-२७-२ । १९-२८-१, २ । १९-३६-१ । १९-४८-४ । १९-५५-१ । २०-१-२ । २०-२८-३ । २०-३१-३ । २०-३७-२ । २१-३-२ । २३-३-१ । २३-६-१ । २४-२९-१ । २६-२-२ । २६-३०-२ । २६-३३-२ । २६-३४-3, ४ । ३०-२७-४ । ३३-७-१ । ३३-५-१ । ३३-२५-१ । ३४-३५-२ । ३६-३३-३ । ३६-३४-१ । ३८-१६-१, २ । ३९-१८-१। जहाँ० १४०-१, १८२-२ । १९२-२। वि० गी० १३-५१-१ । १३-५२-१ । १३-५४-२ । १६-४५-१ । १६-४६-१ । १६-५४-३ । (३) परसर्ग सवधसूचक (हि. के) उदा०—"हाथ के लीनो ." (रा० ५-४२-१) । क० प्रि० ५-३५-३ । रा० ६-६३-१ । ७-३-२ । ७-८-१ । २१-९-१ ।

कैकै—सयुक्त क्रिया—करके । रा० ३८-८-२ ।

कैटव—सं० पु० एक० । विष्णु द्वारा मारा गया एक दैत्य । रा० ४-१५-१ । १९-५१-३ ।

कैटभ—सं० पुं० एक० । राक्षस, मघु का भाई, जो कृष्ण के हाथों मारा गया था। क० प्रि० ६-७४-१ । ११-५५-३ ।

कैटभ-वपु—स० पुं० एक० । कैटभ नामक राक्षस का शरीर। क०प्रि० ११-५५-३ ।

कैदियो—सं० क्रिया । कर दिया । र० प्रि० ५-३०-४ ।

कैधौ—अव्यय, रीतिवाचक । या, वा, अथवा । उठा लिया । उदा० "कैधो है अमरसिंह रा० । ५-४२-१ । क० प्रि० ११-३२-६) ।

कैसहुँ—अव्यय, रीतिवाचक । क० प्रि० ११-३३-६ । ११-४०-४ । किस प्रकार । रा० १२-६२-२ । १४-३२-३ । २०-१०-२ । २०-४०-४ । उदा० कैसहुँ पीठ मे दीठ परी । २६-२१-२ । ३४-१८-२ । (क० प्रि० ११-४८-२) छ० मा० १-७६-४ । वी० च० १२-५३-२ । १९-१२-१ । २१-१-१ ।

कैमास—सं० पुं० एक० । पृथ्वीराज चौहान का मत्री । वी० च० २९-१३ ।

कैलास [के – लास + अण्]—सं० पुं० एक० । हिमालय की एक चोटी जो पुराणो मे शिव और कुबेर का वास-स्थान मानी जाती थी । रा० ५-३६-१ । वी० च० ५-३७ । १७-२० । २१-२ ।

कैलीनो—सयुक्त क्रिया । उठा लिया । रा० ५-४२-१ ।

कैसहुँ—अव्यय, रीतिवाचक । किस प्रकार । उदा० "कैसहुँ पीठ मे दीठि परी ।" क० प्रि० ११-४८-२, र० प्रि० ३-७५-२ । ५-२-२ । ६-३८-१ । ९-१४-१ । ११-१५-१ । १२-१०-१ । १२-११-१ । १२-२३-३ । १२-११-२ । १२-२६-२ । क० प्रि० ८-१८-१ । ११-७३-१ । ११-७५-१ । रा० ७-३४-४ । १०-१८-२ । १५-३५-१ । छ० मा० १-७४-५ । १-७५-५ वि० गी० ८-२-२ । १६-७४-१ ।

कैसिकी—सं० स्त्री० एक० । कैशिकी । नाटक की चार प्रवृत्तियो मे से एक जिसमे

नृत्य, गीतादि का विशेष वर्णन हो। र० प्रि० १५-१-१ । १५-२-२ ।

कैसे—क्रिया विशेषण, रीतिवाचक। किस प्रकार से, किस रीति से। उदा० कैसे किये (र० प्रि २-५-४) । र० प्रि० २-५-४ । २-८-२ । ३-१३-१ । ३-२४-१ । ४-६-१ । ४-१८-१ । ५-१३-३ । ८-५-४ । ८-१५-१ । ८-३३-३ । ८-५-२ । ६-८-२ । ६-११-४ । ११-१३-४ । १२-४-३ । १२-६-२ । १२-७-३ । १२-१५-४ । १४-२६-३ । १४-३६-४ । क० प्रि० ६-१६-२ । ६-१६-४ । ७-७-४ । ८-२६-३ । ८-४२-२ । ६-१०-४ । १०-१०-२ । ११-४३-४ । ११-५६-२ । १६-३२-२ । १६-५४-३ । १६-५५-१ । १६-५७-१ । रा० २-२-२ । २-२६-१ । ४-२१-४ । ५-३६-४ । ७-२२-१ । १४-१-३,४ । १५-७-२ । १५-२०-१ । १६-२७-२ । २०-४६-१,२ । २१-३१-२ । २७-२४-४ । २६-३६-२ । ३०-६-४ । ३०-१०-१ । ३३-३६-१ । वी० च० १-२२-६ । १-३६-१ । २-१४-२ । ५-७६-१ । ५-८२-१ । ७-५७-२ । १०-२-२ । १३-१६-१ । १३-२१-६ । २६-४३-२ । ३०-४-२ । ३२-५३-२ । जहाँ० १२१-२ । १५६-३ । वि० गी० ६-५५-१२ । ६-३१-२ । १५-३८-२ । १६-२६-२ १६-७३-२ । २०-२५-१ ।

कैसो—क्रियाविशेषण, रीतिवाचक। के समान, की तरह। उदा० "आनन आन हो कैसो..." (क० प्रि० ११-५४-१) र० प्रि० १-२७-१ । ३-३४-२ । ७-३२-४ । ८-१८-२ । क० प्रि० ११-५४-१ । ११-६६-३ । १४-४५-१ से ४ । रा० २-१०-४ । १३-३८-१ । २४-२६-४ । वी० च० ४-४७-१ । ६-४४-३ । ८-६१-१ । १४-२८-४ । १५-४-१ । १६-६-१ । १४-३१-२ । १७-२६-१ । २६-३०-१ । २३-३४-२ । २२-६०-२ । वि० गी० १६-६१-२ ।

को—क्रियापद। की। रा० १६-१६-२ ।

कोवरे (कोमल)—विशेषण। विशेष्य—मुख। कोमल, मृदुल। रा० १२-१५-४ ।

कोवरो—विशेषण। विशेष्य—मुख। कोमल। क० प्रि० ६-१६-४ ।

को—(१) प्राणिवाचक, प्रश्नवाचक, सर्वनाम, कर्त्ताकारक। उदा० "कहत विदूषक सो कछू सो पुनि को नृप एह।" (रा० ३-२६-२) र० प्रि० १-२७-४ ; २-१२-२ । २-१७-४ । ४-३-२ । ५-१५-२ । ७-१२-३ । ८-२६-४ । ८-३८-४ । ११-३-४ । १२-२२-३ । क० प्रि० १-३८-२ । ८-१६-१ । ८-२३-१ । १०-४-२ । १५-१३-३ । १६-३२-१ । १२-२८-१ । १६-५४-१ । १६-६६-१ । १६-५७-२ । १६-६०-२, १६-६६-१, २ । रा० च० ३-४-४ । ३-१८-१ । ३-२२-२ । ३-२६-२ । ४-३-१ । ४-१०-१ । ५-१७-१ । ६-२६-१ । ६-३०-२ । ६-४५-२ । ६-५८-१ । ६-६४-२ । ७-१५-४ । ६-३२-१ । ११-३३-४ । १४-१-२ । १५-५-२ । १५-६-१ । १६-७-१ । १६-७-२ । १६-६-३ । १६-१४-३ । १६-३१-२ । १६-३१-३, ४ । १८-२३-१ । १६-५३-१ । २१-१५-१ । २१-५०-२ । २१-५१-१ २३-१३-२ । २३-१५-२ । २३-२६-१ ।

२३-२७-१ । २५-१५-२ । २५-३६-२ । २७-१५-३ । ३३-३३-२ । ३५-८-१ । ३६-१६-१ । ३६-२५-१ । ३६-२४-३ । ३७-१६-१ । वि० गी० १६-१०४-२ । (२) अव्यय । क्या । उदा० "को कामो हित· · " । क० प्रि० १६-६०-२ । ६-४४-४ । ६-४३-१ । (३) परसर्ग । सम्प्रदान और कर्मकारक । उदा० "मुगल पठान को " (जहाँ०७५-१-४) र० प्रि०—१-१२-२ । १-२३-३ । १-२५-२ । १-२७-४ । २-८-१ । २-११-२ । ३-७-१ । ३-११-१ । ३-१०-१,२। ३-३९-२। ३-४०-१। ३-४३-१ । ३-४६-३ । ३-५४-३ । ३-६१-४ । ४-१२-१ । ४-१८-२ । ५-१०-४ । ५-२२-४ । ५-२५-२ । ५-२६-१ । ५-३०-२ । ६-२३-४ । ६-१२-१ । १०-२२-२ । १०-२७-१ to ४ । ११-१८-१ । १२-१-१ । १४-६-४ । १४-१३-१ to ४ । १४-२३-४ । १४-२१-२ । १४-४०-१ । क० प्रि० १-२५-१ । १-३४-१ २-१७-१ । ३-२-२ । ३-६-२ । ३-८-३ । ३-१०-२ । ३-२२-१ । ३-२४-१ । ३-२-२ । ३-२८-८ । ३-३४-१ । ४-६-४ । ४-१४-१ । ४-१६-१ to ४ । ४-२१-४ । ५-१०-२ । ५-१३-३ । ५-१९-३ । ५-२५-२ । ६-५-४ । ६-१२-१ । ६-२२-१ to ४ । ६-२७-२ । ६-२७-३ । ६-२७-४ । ६-३४-३ । ६-३८-२, ४ । ६-३९-१,२, ४ । ६-४४-४ । ६-४६-३ । ६-५१-१ । ६-५५-१ । ६-५६-१,३ । ६-६१-१ । ६-६५-२ । ६-६६-१ to ४ । ६-६८-२,४ । ६-७०-४ । ६-७२-१, ४ । ६-७४-४ । ६-५-४ । ७-७-१, २, ३ । ७-११-२, ४ । ७-१३-१ । ७-१७-३, ४ । ७-२१-१ । ७-२४-२ । ७-२८-४ । ७-३०-२ । ७-३४-१ । ७-३८-१ । ८-५-३ । ८-१२-१ to ४ । ८-१४-४ । ८-१६-३, ४ । ८-१८-२ । ८-२१-३ । ८-२६-३ । ८-२८-१ । ८-३५-३ । ८-३६-२ । ८-४४-६ । ९-३-२ । ९-१०-२ । ९-११-१ । ९-१२-४ । ९-१७-१ ९-२०-१ । ९-२३-२ । ९-२५-१ । ९-२६-३, ४ । ९-३१-१ । ९-३२-१ । १०-५-२ । १०-९-२ । १०-११-२ । ११-२३-१ से ४ । ११-२६-१, ३ । ११-३०-४ । ११-३१-३ । ११-३८-२, ३ । ११-४०-३ । ११-४२-४ । ११-४३-१ to ४ । ११-६४-४ । ११-४६-१ to ४ । ११-५०-१, २ । ११-५१-१ । ११-५२-२ । ११-५८-४ । ११-६१-२ । ११-६२-१ । ११-६४-१ । ११-६५-२ । ११-६६-४ । ११-६६-२, ३ । ११-७४-२, ३ । ११-७७-२ । ११-८२-३ । १२-६-१ । १२-५-१ । १२-११-२ । १२-१३-१ । १२-१५-१ to ४ । १२-२७-३ । १२-३२-१ । १३-३-२ । १३-९-१ । १३-११-१ । १३-१६-४ । १३-२०-३ । १३-२१-१ । १३-१५-३ । १३-५६-१ । १३-५८-३ । १३-४१-३ । १४-८-१ । १४-१०-३ । १४-१२-१ । १४-२२-१, २ । १४-३२-१ । १४-३६-१, ४ । १४-३७-१ । १४-५१-१ से ४ । १५-१०४-१ । १५-१११-२ । १५-११८-२ । १५-१२०-२ । १५-१२७-४ । १५-१३०-४ । १६-५२-२ to ५ । १६-५६-१ । १६-६३-१ । १६-६४-३, ४ । १६-६६-

२ । १६-६७-१ । १६-८२-२ । १६-६०-२ । १६-६१-२ । रा० १-१-१ to ४ । १-३-१ से ४ । १-२६-२ । १-३६-३ । २-४-२ । ३-१-६, ३ । ३-१२-१ । ६-३०-१ । ३-३४-२ । ४-६-३ । ४-१६-४ । ४-२१-१ से ४ । ५-७-१ । ५-८-१ । ५-२१-२ । ५-२३-२ । ५-३७-२ । ५-४२-४ । ५-४३-१ । to ४ । ५-४६-१ । ६-३७-२ । ६-४-२ । ६-५-१ । ६-१६-२ । ६-२४-१ । ६-५४-२ । ६-५५-२ । ६-६०-२ से ४ । ६-६१-१ से ४ । ७-१-२ । ७-८-४ । ७-१५-१ । ७-२०-२ । ७-२०-५ । ७-२६-२ । ७-२८-२ । ७-३१-१ । ७-४४-१ । ७-४६-२ । ७-४७-२ । ७-५७-१ । ७-५१-१ । ७-५४-१ to ४ । ८-१२-१ । ६-१-२ । ६-१३-१, २ । ६-११-४ । ६-३६-२ । ६-४१-३ । ६-४४-३ । १०-५-१ । १०-१०-३ । १०-१८-१ । १०-२३-१ । १०-२४-२ । १०-२५-१ to ४ । १०-२८-१ । १०-३०-२ । १०-३१-१ । १०-३३-१ । १०-३४-२ । १०-३५-१ । १०-३७-२ । १०-४१-२ । १०-४४-१ । ११-८-२ । ११-२३-१ । १२-६-२ । १२-१३-१ । १२-१८-१ । १२-१६-३,४ । १२-२३-२ । १२-४१-२,४ । १२-४६-१ । १२-६२-१ से ४ । १२-६३-१ । १२-६७-१ । १२-६७-५ । १३-६-२ । १३-१७-१ । १३-२७-२ । १३-३१-४ । १२-३६-४ । १३-३८-१ । १३-३८-२ से ४ । १३-४०-१ । १३-४१-१ । १३-५०-१ । १३-५१-१ । १३-५२-१ । १३-५८-११ १३-६१-१ । १३-६३-२ । १४-४-२ ।`१४-४-२ । १४-११-३ । १४-२२-१ । १४-२३-२ । २१-४०-२ । २१-४१-२ । २१-४७-४ । २१-४८-१ । २१-५२-२ । २१-५२-१ । २१-६-२ । २२-८-१ । २२-६-२ । २२-१३-१ । २२-१३-२ । २२-१४-१ । २२-७-३ । २३-६-१ । २३-२०-१ । २३-२१-१ । २३-३१-१ । २४-६-२ । २४-७-२ । २४-८-१ । २४-६-२ । ३४-१०-३ । २४-१८-१ । २४-२५-१ । २४-३०-१ । २५-६-२ । २५-२४-१ । २५-२६-३ । २६-१-२ । २६-६-२ । २६-६-२ । २६-११-१ । २६-३०-१ । २६-३२-१ । २६-३४-४ । २७-३-२ । २७-५-२ । २७-६-१ । २६-१४-२ । २६-१७-२ । २६-२६-१ । २६-३६-२- । ३०-६-४ । ३०-३६-२ । ३०-३६-१ । ३०-४२-१ । ३०-४३-२ । ३१-२-१ । ३१-१५-२ । ३२-४-१ । ३२-१६-१ । ३२-१६-२ । ३२-३४-१ । ३२-४१-१ । ३३-५३-१ । ३४-८-२ । ३४-१६-१ । ३४-२१-२ । ३४-२६-२ । ३४-३१-२ । ३४-३५-२ । ३४-४५-२ । ३५-१२-२ । ३५-२०-१ । ३७-१०-१ । ३८-५-४ । ३८-७-२ । ३८-१२-२ । ३८-१३-१ । ३८-१८ २ । ३६-८-२ । ३६-२६-२ । ३६-२६-३, ४ । ३६-३२-१ । ३६-३४-२ । ३६-३८-१ । ३६-३६-२ । छ मा० १-२ १ । १-४-१ । १-५-१ । १-७-२ । १-३८-३ । १-२२-२ । १-७६-१ । २-२५-२ । २-४८-२ । शि० न० १-३ २-२ । ५-१ । १६-३ । वी० च० १-२-३ । १-२३-१ । १-४१-१ । १-६४-६ । २-७-१ । २-२२-२ । २-२४-२ ।

२-६७-१,२ । ६-५०-१ । १०-३२-१ । १०-४२-१ । १४-३६-२ । १४-४०-१ । १४-६०-१ । १४-६४-२ । १४-६४-३ । २३-१-१ । २६-११-१ २६-२६-१ । ३१-८६-३ । ३१-६३-१ । ३२-३-१ । ३२-४७-१ ३२-४७-२ । ३२-४७-३ । ३२-४७-४ । जहाँ० ३-१ । ७१-१ । ७५-१ । ७५-२ । ७५-३ । ७५-४ । वि० गी० १-५-१ १-५-२ । १-५-३ । १-५-४ । १-२२-१ । १-२२-२ । १-२२-३ । १-२२-४ । १-२६-१ । १-२६-२ । १-२७-१ । १-४-३ । १-४-५ । २-७-२ । २-४-४ । २-१०-३ । २-२८-२ । ३-५-२ । ३-२६-४ । ३-२७-१ । ३-२७-२ । ४-१-१ । ४-४-१ । ४-५-१ । ४-६-१ । ४-१२-१ । ४-३४-१ । ४-३५-१ । ४-३६-१ । ४-३७-१ । ४-४०-२ । ४-४०-३ । ६-६५-१ से ६-६५-४ । ६-७६-१, २ । ६-७५-१ से ४ । ६-३-२ । ७-१४-४ । ८-१-२ । ८-१३-२ । ८-१६-३ । ६-१६-२ । ६-१०-१ । १४-१-२ । २१-५८-१ । ६८-१ ।

कोई—(१) स० पु० एक । कोई सैनिक । र० वा० १-३६-१ । १-३६-२ । १-३६-३ । १-३६-४ । (२) अनिश्चयवाचक, प्रश्नवाचक, सर्वनाम; कर्त्ताकारक । (सस्कृत—कोपि, प्राकृत—कोनि) । (अ) अज्ञात मनुष्य या पदार्थ । (आ) अनिर्देशित व्यक्ति या वस्तु । (इ) एक भी (मनुष्य) । उदाहरण—'कुल महँ होइ बडो लघु कोई" । (रा० ६-२४-२) । रा० १२-६६-१ ।

कोउ—(१) अनिश्चयवाचक सर्वनाम, एकवचन, कर्त्ताकारक । कोई । उदा० । "द्विज सूरमी नहिं कोउ विचारे, तब जग केवल नाम उधारे" (रा० २६-८-२) । "जो कोउ तहाँ—" (वि० गी० ४-३३-२) । र० प्रि० १-२७-१ । ३-१०-४ । २-५२-३ । २-७०-४ । ७-६-२ । ७-२१-३ । ८-२७-४ । ६-१४-२ । ११-३-४ । १४-३५-४ । रा० २६-८-२ । ३३-५-२ । २३-५०-१ । वी० च० ६-१५-१ । वि० गी० २१-२६-१ । (२) अनिश्चयवाचक, प्रश्नवाचक सर्वनाम, बहुवचन, कर्ताकारक । उदा०—"आसिप देहु इन्हे सब कोऊ, सूरज के कुलमडल दोऊ ।" (रा० ५-२६-२) । र० प्रि० २-४-२ । ३-१०-४ । ३-५२-३ । ५-३२-२ । ५-३५-३ । ८-१६-१ । १२-१६-२ । क० प्रि० ६-२१-३ । १०-२२-४ । ११-८२-४ । १३-११-१ । १६-३१-२ । रा० ३-११-१ । ५-२६-२ । ७-३३-४ । ७-४५-३ । ६-३४-४ । १२-५८-२ । १३-३०-२ । १३-४२-२ । १३-५०-२ । १४-४४-१ । १४-४२-४ । १७-१०-२ । १८-२-२ । २०-३३-२ । २१-४४-२ । २२-१०-१ । २६-६-१ । २६-१०-१ । २६-३५-१ । २७-८-३ । ३३-४७-१ । ३४-१३-२ । ३४-१६-२ । ३४-२०-१ । ३४-८-३ । ३६-१८-१ । ३६-२८-१ । ३६-३-२ । वी० च० १-४१-१ । १-६४-५ । २-३१-१ । ७-२६-१ । ८-७-२ । ८-३१-२ । १४-११-१ । १४-१८-२ । २२-४८-१ । २६-१५-२ । ३२-५०-१ । ३२-५२-४ । वि० गी० ६-५-१ । ६-३८-१ । १३-६१-२ । १४-४०-१ ।

कोक [कुक् (आदान) + अच्]—(१) सं० पुं० एक० । चक्रवाक । क०प्रि० ७-२३-

१। ७-२५-१ । ८-३४-१ । १४-१७-३ । (२) सं० पुं० एक० । कोकदेव का "काम-सूत्र"। र० प्रि० २-१-१। ३-४-१ । १४-३५-१ । क० प्रि० ६-२८-१ । १६-६२-१। (३) सं० पुं० एक० । मेढक । क० प्रि० १६-४१-१। (४) सं० पुं० बहु० । चक्रवाक। र०प्रि० ८-२३-३। वी०च० ११-२४। रा० ५-१०-२। (५) काम-शास्त्र के प्रसिद्ध आचार्य कोकदेव। रा० १३-५१-२ ।

कोक-कलानि—सं० स्त्री० बहु० । काम-क्रीडाएँ। र० प्रि० २-१-१ ।

कोक कलानि प्रवीन—विशेषण। विशेष्य—नायक। कामशास्त्र मे पडित । र० प्रि० २-१-१ ।

कोक-कारिकान—स० स्त्री० बहु० । कोक-शास्त्र के सिद्धात । क० प्रि० ६-१८-१ ।

कोकनद—(१) सं० पु० एक० । लाल कमल। क० प्रि० ७-२३-१। ७-२६-१। रा० ५-१०-२। वी० च० ११-२४। १५-१४। (२) सं० पु० बहु०—(अ) लाल कमल। (आ) कोकशास्त्र पाठी। क० प्रि० ७-२४-१। (३) सं० पु० बहु०। (अ) चक्रवाक—चन्द्रमा के पक्ष मे। (आ) विषय-वार्ताएँ—नादर के पक्ष मे। क० प्रि० ७-२६-२ ।

कोकनदमोदकर—विशेषण। विशेष्य—मदन वदन प्रभातकर। श्लेष से-(१) मदन वदन के पक्ष मे—कोकशास्त्रप्रेमियो को आनन्द देनेवाला (२) प्रभातकर के पक्ष मे—कमलो को आनन्द देनेवाला। क० प्रि० ७-३४-१।

कोकनि—(कोक+नि)—"कोक"। सं० पु० एक०। कामशास्त्र। र० प्रि० १०-२५-१। क० प्रि० ६-४६-३ ।

कोकिल [कुक् (आदान) इलच्]—सं० पु० एक० । कोयल । पक्षी-विशेष; काले रग की एक चिडिया जो अपनी बोल की मिठास के लिए प्रसिद्ध है। र०प्रि० ६-६-२। ८-२३-३ । ११-१०-१। १२-२६-३। क० प्रि० ३-५५-२। ४-१४-१ । ५-२४-२ । ५-३०-१। ५-४१-२। ७-१४-२। ७-२७-२, १०-२४-४ । १०-३४-१। ११-४१-१। १४-१७-१। १६-४८-१। रा० १-३०-१ । ३-१-८ । ११-२६-१ । ३०-२१-१ । ३०-३३-२। ३२-३-२ । छ० मा० २-३४-३। वि० गी० १३-३७-२। १३-४२-२।

कोकिल-कलरव—सं० पु० एक०। कोयल की मधुर ध्वनि। क० प्रि० ७-२७-२ ।

कोकिल कुल—सं० पु० एक० । कोयलो का समूह । रा० ११-१७-१ । २८-६-२ ।

कोकिला—स० स्त्री० एक० । कोयल। र० प्रि० १३-१२-४ । क० प्रि० ६-४४-१ । ६-४६-२ । ७-६-२ । १२-१७-४ । १५-४३-३ । छ० मा० २-३१। वी० च० २२-१६ । वि० गी० १६-६-३ ।

कोकिलाली—स० स्त्री० बहु० । कोयलो की पक्ति। रा० १७-५४-१ ।

कोकू—स० स्त्री० एक०। मादा चकवा। क० प्रि० १६-४१-१ ।

कोजे—क्रियापद। करे। रा० ३७-११-१ ।

कोर—स० पुं० एक० । शहरपनाह । नगर के रक्षार्थ वनायी गई चहार-दीवारी । क० प्रि० ६-१६-२ । ७-४-१ । रा० ८-३-१ । २६-२६-१ । वी० च० १६-८ । १६-१६ ।

कोटि [कुट् + इञ्]—विशेषण । विशेष्य—असिध अनेक । करोड़ो । र० प्रि० ७-३३-२ । १४-६-२ । क० प्रि० १२-३२-२ । १३-२०-२ । १८-१०-२ । १५-१९-३ । १५-२३-४ । १५-७३-४ । रा० १७-५६-१ । १९-१७-३ । १८-३८-१ । वी० च० १-४६-५ । ६-४०-२ । ३३-११-२ । जहाँ० २१-६ ।

कोटिक—विशेषण । विशेष्य—रावनादिक । करोड़ो । र० प्रि० ८-२३-१ । ११-११-४ । १२-२४-१ । क० प्रि० १४-१७ २ । रा० २१-४३-३ । वि० गी० १४-२०-१ ।

कोटि कोटि—विशेषण । विशेष्य--जन्म । करोड़ो रा० २०-३३-४ । २७-२७-१ ।

कोटिन—विशेषण । विशेष्य—गज । करोड़ो । रा० २३-२६-२ ।

कोठरी—सं० पु० एक० । छोटा कमरा । वी० च० १६-१४ ।

कोढ [कुठ् (प्रतिघात) + अच्]—स० पु० एक० । (१) एक प्रकार का रोग । रा० २४-८-३ । (२) कोढ की खाज—दु ख देनेवाली वस्तु या घटना । रा० २४-८-३ । उदा० —"ऐसे मे कोढ की खाज जो 'केसव' मारन काम के वाने निनारे" ।

कोढि—(१) सं० स्त्री० एक० । कुष्ट । वी० च० ३०-४ । (२) विशेषण । विशेष्य—भूपति । कोढ रोग से पीडित । रा० १३-१०-१ ।

कोतवाली [कोटपाली]—स० स्त्री० एक० । पहरेदारी । रा० १६-२३-१ ।

कोते—क्रियापद । वढाते । र० प्रि० ३-७-३ ।

कोदंड—[कु (शब्द) विच् = को + दंड] स० पु० एक० । धनुष - विशेष । रा० ३-१६-१ । ०-१६-२ । ५-८३-१ । १७-५५-२ । १६-६-१ । २७-११-२ । ३५-१५-१ ।

कोदंड मंडित—विशेषण । विशेष्य—मेघनाथ । धनुष लिए हुए । रा० १७-३२-१ ।

कोना—सं० पु० एक० । वह स्थान जहाँ जल्दी किसी की निगाह न जाय । रा० २४-२६-२ ।

कोनो—सं० पु० एक० । कोना—कमरे आदि का वह स्थान जहाँ दो दीवारें मिलती हो । र० प्रि० ५-३२-२ ।

कोप—[कुप् + घञ्] स० पु० एक० । क्रोध, कोप, रोप । र० प्रि० १४-२२-४ । १६-१३-३ । क० प्रि० ६-२६-१ । १५-८-२ । रा० २-२३-१ । ७ १२-३ । ७-२१-३ । ७-२७-२ । छं० मा० १-५४-४ । वि० गी० ६-५५-१ १०-३-१ । १०-६-१ । ११-२०-१ । १५-७-१ । १८-२६-१ । २१-५३-१ ।

कोप के निकेत—विशेपण । विशेष्य—नैन । क्रोधयुक्त । क० प्रि० ६-२६-१ ।

कोपर—[कपाल] सं० पु० एक० । वड़े थाल जैसा एक पात्र जिसको उठाने के लिए दोनो ओर कुडे लगते हैं । रा० २१-५३-२ ।

कोपराग—सं० पु० एक० । क्रोध का भाव । क० प्रि० १५-७-२ ।

कोपसील—विशेषण । विशेष्य—संखनि । क्रोध करनेवाले । र० प्रि० ३-८-२ ।

कोपानल—सं० पु० एक० । कोपरूपी अग्नि । रा० १४-३१-२ ।

कोपि—जल पारावत, जल कपोत । क० प्रि० १५-१३-४ ।

कोपिकै—संयुक्त क्रिया । कोप करके, गुस्से मे आकर, क्रुद्ध होकर, रुष्ट होकर । र० प्रि० ६-४०-१ ।

कोपीन मंडित—विशेषण । विशेष्य—सन्यासी । कोपीन धारण किए हुए । वि० गी० ८-२५-१ ।

कोमल—[√कु + कलच्, मुर] विशेपण । विशेष्य—कमलपानी । मृदुल । र० प्रि० २-६-२ । ३-२८-२ । ३-५४-२ । ६-२५-१ । ७-११-१ । ७-१२-२ । ८-२१-३ । ८-२२-४ । १०-८-१ । १०-२६-१ । १२ २३ २ । १४-८-१ । २४-३४-२ । क० प्रि० ३-८-१ । ६-१-२ । ६-२४-२ । ६-३६-१ । १०-३०-२ । १४-६-४ । १४-२३-४ । १४-२७-२ । १४-३२-१ । १४-४१ २ । १४-४३-१ । १५-८-१ । १५-६-१ । १५-१०-३ । १५-१७-१ । १५-१६-१ । १५-८-१ । १५-४६-१ । १५-७२-१ । १५-७५-१ । १५-१००-२ । १६-६६-२ । रा० ७-५-१ । ७-१४-२ । ६-४१-४ । २१-५३-२ । २३-३३-१ । २६-२२-४ । ३०-३२-२ । ३१-२५-२ । ३२-३ २ । छं० मा० १-८६-५ । र० बा० १४-२ । वी० च० १७-४८-१ । १७-५०-२ । १७-५३-१ । १७-५६-१ । २२-१८-१ । २२ ४३-२ । २२-७३-२ । ३३-३५-१ । वि० गी० ८-१५-४ । १०-१६-१ । २०-४८-२ ।

कोमल कमल-पानि—विशेषण । विशेष्य—राम । कमल सम कोमल हाथवाला । रा० ५-३६-४ ।

कोमल सब्द निवंत—विशेषण । विशेष्य—काव्य । रा० ३१-२५-२ । वी० च० २२-७३-२ ।

कोमले—विशेषण । विशेष्य—कवल कले बासा । कोमल । रा० २०-४१-१ ।

कोयल—सं० पु० एक० । काले रंग की एक चिड़िया जो अपनी बोली की मिठास के लिए प्रसिद्ध है । रा० ३०-३२-२ ।

कोया—सं० पु० एक० । आँख का कोना । क० प्रि० ३-८-२ ।

कोरक सं० पु० बहु० । कलियाँ । क० प्रि० १६-६-३ ।

कोरा—विशेषण । विशेष्य—कर । कोमल । र० प्रि० १-२७-२ ।

कोरि – विशेपण । विशेष्य-विचार । करोड । र० प्रि० ५-२-३ । ११-१२-१ । ११-१५-१ । १२-१८-३ । १३-४-३ । क० प्रि० १५-३६-४ । वी० च० ६-१४-१ । २६-२३-१ ।

कोरि कोरि—विशेषण । विशेष्य—कपीस । करोडो । रा० १८-२१-१ ।

कोल—(१) सं० पु० एक० । (अ) सुअर । (आ) एक जाति-विशेष जो जंगी है। क० प्रि० ५-२३-१ । (२) सं० पु० एक० । सुअर । क० प्रि० ६-४३-१ । (३) सं० पु० एक० । वराह भगवान् । क० प्रि० १६-५५-१ ।

कोलनि—सं० पु० बहु० । भील या भिल्ल । क० प्रि० १२-१६-४ ।

कोलापुर—सं० पु० एक० । कोल्हापुर । वि० गी० ६-५-१ ।

कोलाहल [कोल—आ√हल्+अच्]—सं० पु० एक० । बहुत से लोगों के एक साथ बोलने से होनेवाला शोर, हल्ला । क० प्रि० ८-३५-४ । रा० १७-५६-२ । १६-२-१ ।

कोविद—[कु (शब्द)+विद्, को√विद] (१) सं० पु० एक० । पंडित । वी० च० २४-१४ । (२) विशेषण । विशेष्य—कवि । पंडित । क० प्रि० ११-४७-२ ।

कोविद कपट—विशेषण । विशेष्य—संखनि । कपट में चतुर । र० प्रि० ३-८-१ ।

कोश—(कुश्+घञ्) (१) सं० पु० एक० । खजाना । क० प्रि० ८-४-२ । रा० १६-६-८ । (२) सं० पु० एक० । कुंडली, चल्लू । क० प्रि० १०-२६-४ । (३) सं० पु० एक० । (अ) खजाना—दान के पक्ष में । (आ) म्यान —कृपान के पक्ष में । क० प्रि० ११-८०-२ ।

कोस—सं० पु० एक० । पुष्पकोष । क० प्रि० १२-३२-४ । १४-४१-२ । (२) सं० पु० एक० । पुष्प के मूल भाग । क० प्रि० १३-२६-२ । (३) सं० पु० एक० । ढेर, समूह । क० प्रि० १४-१५-१ । (४) सं० पु० एक० खजाना । रा० १८-६-४ । १८-५५-२ । छं० मा० १-७१-६ । वी० च० २२-७० । ३१-३४ । ३१-४५ । ३१-४६ । (५) फासला । वी० च० ८-५ । १०-१२ । १६-६ ।

कोस-साकन—सं० पु० बहु० । पुष्प-कोष में स्थित मधु की बूँदें । क० प्रि० १३-२६-२ ।

कोसल—सं० पु० एक० । एक प्राचीन जनपद, अयोध्या । रा० ३६-४-१ । जहाँ० १०१ ।

कोस हीन—विशेषण । विशेष्य—कुलमेव । कोषहीन । वी० च० ३१-७०-१ । ३१-७६-१ ।

कोसु—सं० पु० एक० । दूरी की एक नाप जो लगभग दो मील के बराबर होती है । क० प्रि० १६-७१- ।

कोसों—क्रियापद । कोसूँ, गाली दूँ । र० प्रि० ८-३६-३ ।

कोह—सं० पु० एक० । क्रोध, रोष—एक व्यभिचारी भाव । र० प्रि० ६-१२-२ । वि० गी० ११-४-१ । १२-३-१ । १२-१८-१ ।

कौ—(१) अव्यय, कारणवाचक । (अ) क्यों, (आ) के लिए । उदा०—काहे कौ डराने हो...(र० प्रि० २-१३-२) । र० प्रि० ७-१४-१ । ८-८-४ । ७-१७-४ । ८-१२-४ । १२-११-३ । (२)

परसर्ग, कर्म और संप्रदान कारक। को उदा०—"निवेदन कौ भवभार···" (क० प्रि० ५-३५-४)। रा० ६-५३-२। १७-७-२।

कौंतेय—सं० पु० एक०। कुन्ती का पुत्र, अर्जुन। वि० गी० १७-२३-२।

कौडी [कपर्दिकी]—स० स्त्री० एक०। शंख आदि के वर्ग का एक कीडा जिसका अस्थिकाय विनिमय के साधन के रूप मे काम मे लाया जाता है। क० प्रि० ५-६-१।

कौतिक [कुतुक+अण्]—सं० पु० एक०। कुतूहल, उत्सुकता। क० प्रि० १०-२२।

कौतुक—स० पु० एक०। कुतूहल। क०प्रि० ६-७६-३।

कौन—प्रश्नवाचक, प्राणिवाचक, एकवचन, बहुवचन, कर्ताकारक। (संस्कृत=कः, किं, प्राकृत=कवण)। एक प्रश्नवाचक सर्वनाम जिसका प्रयोग व्यक्ति या वस्तु के सम्बन्ध मे परिचय पाने के लिए किया जाता है। उदा०—"बानी जगरानी की उदारता बखानी जाय ऐसी मति उदित उदार कौन की भई। र० प्रि० २–९-३। २-१०-१। २-१३-४। २-१५-१। २-२२-४। ३-३२-३। ३-४८-४। ५-१०-३। ५-११-२। ५-३५-३। ६-४०-३। ७-९-४। ७-३१-४। ८-१७-३। ८-४९-४। ९-११-१। ९-१३-२। १ -१०-३। ११-९-१। १३-१८-१। १४-७-३। १४-११-४। १४-२३-४। क० प्रि० ३-४६-२। ६-२४-३। ६-२७-२। ६ ५१-३। ६-६९-१। ९-१४-३। १०-१६-४। ११-६२-१। १४-६६-१। १६-२७-२। १६-४९-४। १६-७१-३। रा० १-२-१ १-४२-२। २-५-१। ३-२०-२। ३-२४-१। ५-२८-१। ६ ३-१। ६-६-१। ७-६-१। ७-१०-१। ७-३२-१। ९-३३। १०-४-२। १२-२७-१। १२-२८-२। १२-५५-४। १२-६९-१। १३-२२-४। १३-४२-२। १३-३८ १। १३-७३-१। १४ १-१। १५-५-२। १६-४-१। १६-५-२। १५-५-१। १५-११-१। १५-१३-३। १६-२४-३। १५-३१-४। १७-५८-२। १८-१९-२। १८-३६-२। १९-१५-२। २१-१४-१। २२-२१-४। २४-२१-१ २५-१-२। २५-१८-२। २५·२०-२। २५-२७-२। २६-४ २। २६-२६-१। २९-४४-२। ३३-१३-२। ३३-५४ २। ३४-१२-२। ३५-१८-२। ३५ ३५-३। ३६-३२-१। ३७- ०-१। ३८-३-१। ३८-१० २। छं० भा० १-१६-२। १-३३-२। १-३७-३। वी० च० २-१८-६। २-१९-१। ३-३- १। ५-४-१। ५-१५-१। ६-१३ ३। ९-३२-१। १०४०-१। १०-४५-२। २६-३७-२। २९-१८-१। ३२-३८-३। ३२-४७-२। ३२-५५ ३। जहाँ० ४०-४। ५२-२। ६४-२। ६८-२। ७०-२। ७२-२। ७६-१। ७८-२। ८०-२। ८५-२। ८७-१। ९२-२। ९४-२। १२०-२। १३५-१। १५६-३। वि०गी० ६-३४-२। ६-६६-२। ८-१०-१। ८-२६-१। १०-५-१। १३-२-३। १३-५-२। १३-

१२-१ । १४-३२-२ । १५-१०-२। १५-४०-३ । १६-४१-२ । १६-४२-३ । १६-६ ४ । १६-१०-१ । १६-१६-२ । १६-४७-२ । २१-२२-१ ।

कौनहुँ—प्रश्नवाचक, प्राणिवाचक सर्वनाम, सम्प्रदान कारक । (हि० कौन + हुँ प्रत्यय)) । उदा०—"कौनहु पूरव पुन्य हमारे, आजु फले जु इहाँ पगु धारे ।" (रा०/३३-१३-१)। र०प्रि० ७-१६-१ । ६-१२-१ । १०-६-१ । ११-७-१ । १२-२४-१ । १४-१५-२ । क० प्रि० ११-४५-१ । ११-४५-२ । ११-४६-१ १२-२६-१ । १४-७-१ । रा० १२-५४-४ । १६-४-१ । ३३-१६-१ । ३८-३-२ । वी० च० १३-४-५ । १३-२१-५। जहाँ० १७४-२ । वि० गी० ८-३६-२ । १६-२१-२ । २६-८४-१ । १६-२८-१ ।

कौनि प्रश्नवाचक, प्राणिवाचक सर्वनाम, कर्मकारक । किसने । रा० २१-३८ २ ।

कौने—प्रश्नवाचक, प्राणिवाचक सर्वनाम, एकवचन, कर्म और संप्रदान । र० प्रि० ३-६१-४ । ५-२३-१ । १०-१६-४ । क० प्रि० ६-१०-२ ।

कौपीन—[कूप + खल्] सं० पु० एक० । लँगोटी । वि० गी० ८-२५-१ ।

कौर—स० पु० एक० । कवल । रा० १८-४-१ ।

कौरव—सं० पु० बहु० । धृतराष्ट्र के पुत्र । वी० च० १–४० ।

कौसल्या :—सं० स्त्री० एक० । रामचंद्र की माता । रा० ८-२८-२ । ३६-१७-१ ।

कौसिक—सं० पु० एक० । विश्वामित्र । एक ऋषि जो ऋग्वेद के अनेक मन्त्रो के निर्माता के रूप मे प्रसिद्ध हैं । ऋग्वेद के अनुसार कुश वंश के राजा कुशिक वंश के थे । परन्तु परवर्ती साहित्य मे महाराज गाधि के पुत्र माने गए है । विश्वामित्र की जन्म-कथा बडी रोचक है । सर्वप्रथम गाधि के यहाँ एक सत्यवती नामक कन्या उत्पन्न हुई थी जिसे उन्होने ऋषि रुचीक को समर्पित कर दिया । रुचीक ने सत्यवती को एक बार दो चरु लाकर दिए और उनमे से एक चरु खाने को कहा । रुचीक के जाते ही गाधि स्त्री-सहित उनके आश्रम मे उपस्थित हुए; आदर-सत्कार के अनन्तर सत्यवती ने अपनी माता को दोनो चरु लाकर दिए । सत्यवती की माता ने श्रेष्ठ लाभ की सम्भावना से रुचीक की पत्नी का चरु खा लिया । इस चरु के ही खाने से उनके विश्वरथ नामक ब्राह्मण-गुण-सम्पन्न पुत्र जन्मा जो आगे चलकर ब्रह्मतेज के कारण विश्वामित्र के नाम से विख्यात हुआ । सत्यवती के दूसरे चरु खाने से 'यमदग्नि' नामक पुत्र हुआ । (हिन्दी साहित्य कोश, भाग—२ । क० प्रि० ७-५-२ ।

कौसिकी—सं० स्त्री० एक० । नदी विशेष । वि० गी० ६-२०-२ ।

क्यो—क्रिया-विशेषण (सं० = किम्; हि० = क्यो) । कारणवाचक । (१) किस कारण

(२) किसलिए (३) किस प्रकार (४) कैसे ? उदा० क्यो बाज जीवै ?" (रा० १३-६३) । र० प्रि० २-४-३ । ३-२६-२ । ३-६४-२ । ३-६४-३ । ४-६-२ । ४-१३-४ । ४-१५-४ । ५-१०-१ । ५-११-१ । ५-१३-१ । ५-२७-३ । ५-३६-१ । ६-३४-२ । ६-४७-४ । ७-८-२ । ७-१५-१ । ८-५-४ । ८-१६-२ । ८-१८-२ । ८-१८- । ८-१६-४ । ८-२४-१ । ८-२७-२ । ८-४६-४ । ८-५३-१ । ८-४६-४ । ८-५३-१ । १०-२-२ । ११-३-१ । १०-१०-२ । १०-२७-२ । ११-२-१ । ११-१०-४ । ११-१२-१ । १२-४-२ । १२-७-४ । १२-८-१ । १२-१२-४ । १२-२३-४ । १३-१५-४ । १४-६-१ । क० प्रि० ६-४०-३ । ६-६६-३ । ११-२८-२ । ११-३०-२ । ११-६६-१ । १२-२७-२ से ४ । १३-१-१ । १३-१०-४ । १३-१८-१ । १४-१-१ । १४-१०-१ से ४ । ३-२-१ । १५-१-१ । १६-६०-१ । १६-५६-३ । १६-८६-४ । रा० १-७-२ । ५-४-२ । ७-१६-३ । ७-३०-१ । ७-३४-३ । ७-११-१ । ६-२६-३ । ६-२८-२ । छं० मा० १-७५-४ ।

क्रतु—[कृ + कतु] स० पु० एक० । यज्ञ । रा० ७-१०-३ ।

क्रम—(१) सं० पु० एक० । नियमित व्यवस्था । क०प्रि० ३-४५-१ । (२) सं० पु० एक० । क्रमालकार । केशव के अनुसार इसकी परिभाषा यो है—जहाँ पूर्व पूर्व के प्रति उत्तरोत्तर वस्तुओ की विशेषण के रूप मे स्थापना या निषेध किया जाय । क० प्रि० ६-१-२ । ६-४-२ । ११-१-१ । (३) स० पु० एक० । कर्म । वि० गी० १४-२-२ । १६-२२-२ । (४) सं० पु० एक० । अनुक्रम या नियमित व्यवस्था । छं०मा० २१-३३-१ । २१-३३-२ । (५) सं० पु० एक० । कर्मणो । वि० गी० ६-७०-१ ।

क्रमही—सं०पु० एक० । नियमित व्यवस्था । छं० मा० १-१७-१ ।

क्रमहीन—सं० पु० एक०—काव्यगत दोष-विशेष, जिसमे कुछ व्यक्तियो के गुणो का क्रम से वर्णन किया जाय, पुनः गुणियो का नाम लेते समय क्रम-भंग हो जाय । क० प्रि० ३-४५-२ ।

क्रयविक्रय—सं० पु० एक० । लेन-देन । वी० च० ३१-७ ।

क्रीडागिरि—सं० स्त्री० एक० । कृत्रिम पर्वत । रा० ३२-२७-२ ।

क्रीडासरवर—सं० पु० एक० । क्रीडा करने का सरोवर । रा० ३२-३८-१ ।

क्रिया—(१) सं० स्त्री० एक० । कर्म, व्यापार, चेष्टा । क० प्रि० १३-२१-१ । (२) सं०स्त्री० एक० । धार्मिक सस्कार । रा० १०-१२-१ ।

क्रिया कर्म हीन—विशेषण । विशेष्य—परम पुरुष । क्रिया कर्म जो न करता हो । पुराणो के अनुसार निर्गुण नित्य होने के कारण परब्रह्म क्रिया कर्म नही करता । उसका त्रिविध सगुण रूप ब्रह्मा, विष्णु

तथा महेश ही कार्य करता है। वि० गी० १७-२७-४ ।

क्रूर स्वर--स०पु० एक०। क्रूर स्वर वर्णन। वर्ण्यालंकार का एक भेद। क० प्रि० ६-२-२। ६-४३-२।

क्रोध—(१) स० पु० एक०। किसी अनुचित कर्म, अपकार आदि मे दूसरे का अपकार करने का तीव्र मनोविकार। र० प्रि० ६-६-१। ६-२६-१। क० प्रि० ६-३५-१। ७-११-३। ८-१६-१। ८-२१-१। (२) सं० पु० एक०। गुस्सा। रा० २४-२२-२। ३६-६-२। १-२६-३। वि० गी० १-६-१। १-२६-१। ६-५४-२। ६-१६-२। ६-५५-१। ६-५५-८। ११-४०-१। १२-११-१। १४-२२-१। १४-५५-४। १४-५५-५। १६-१०५-१। १६-१२-२। १६-६५-१। २०-३६-१। २१-४८-३। (३) स० पु० एक०। नाम विशेष। वि०गी० ६-३२-१। ६-१६-२। १२-११-१। १२-१२-४।

क्रोधमय- विशेपण। विशेष्य--रौद्र रस। क्रोध से युक्त। र० प्रि० १४-२१-१।

क्रोधाधिक अहिलीन—विशेषण। विशेष्य-राज श्री। क्रोध आदि मे लीन रहनेवाली। वि० गी० १६-१०५-१।

क्रोधी—विशेषण। विशेष्य—भूपति। बहुत जल्दी क्रोध मे आ जानेवाला। रा० १८-१०-१।

क्रौंच द्वीप—सं० पु० एक०। पुराणानुसार सात द्वीपो मे से एक। विष्णु पुराण के अनुसार यह द्वीप दधिमंडोद समुद्र से घिरा हुआ है और द्युतिमान राजा यहाँ का अधिपति था। पर भागवत के अनुसार यह क्षीर सागर से घिरा हुआ है। प्रियव्रता का पुत्र घृतराष्ट्र इसका राजा था। इस द्वीप के ७ खण्ड या वर्ग हैं। प्रत्येक वर्ग मे एक नदी और एक पहाड़ है। वि० गी० ४-१४-२।

क्वार—सं० पु० एक०। आश्विन महीना। क० प्रि० १०-३०-६।

क्षत्रिन—स०पु० बहु०। क्षत्रियो को। वि० गी० ७-२४-३।

क्षत्र—(१) सं० पु० एक०। राजा। रा० ७-३६-१। (२) सं० पु० बहु०। क्षत्रिय जाति। वि० गी० ६-४०-२।

क्षत्रिन—स०पु० एक०। क्षत्रियो को। रा० ६-३४-३।

क्षत्रिय—स० पु० एक०। हिन्दुओ के चार वर्णो मे से दूसरा। योद्धा जाति। क० प्रि० ५-३२-१। रा० ५-२२-१। ६-३३-३। ७-३६-४। ७-६-१। ७-३४-२। ७-३५-१। ७-३५-३। ३७-११-२। ३६-३३-३। छं० मा० १-४६-१। १-५०-६। २-१३-१। २-३१-१।

क्षत्रिय वंश—सं०पु० एक०। क्षत्रिय कुल। रा० ७-२८-२।

क्षमा—स० स्त्री० एक। सहनशीलता, परकृत अपराध को विना क्रोध किये सहनेवाली चित्तवृत्ति। क०प्रि० १६-११-२। छं० मा० २-१२। वि०गी० ६-१३-१।

क्षमा दया को गेहु—विशेषण। विशेष्य—

जहाँगीर । क्षमावान एवं दयालु । जहाँ २ ११७-१ ।

क्षमादया सती - विशेषण । विशेष्य–सीता । क्षमा और दया गुण-युक्त सती, साध्वी । क० प्रि० १५-११-२ ।

क्षमी—विशेषण । विशेष्य–जीव । क्षमावान । पुराणो के अनुसार क्षमा का लक्षण—बाह्य, आध्यात्मिक आदि दैविक दुःख उत्पन्न होने पर कोप या निवारण की चेष्टा न करने का नाम क्षमा है । वृहस्पति । किसी व्यक्ति से निन्दित व अपमानित होते हुए भी उसकी निन्दा या हिंसा न करना, और वाक्य, मन तथा शरीर निर्दोष रखकर सहना ही क्षमा कहलाता है—(मत्स्य पुराण)। निंदा, अतिक्रम, अनादरोद्रेक, बंध, वध और समस्त परित्याग करने का नाम ही क्षमा है । (कूर्म पुराण)। जैन शास्त्रानुसार दस धर्मों मे पहला धर्म । इसको साधु और गृहस्थ भी पालता है । क्रोध को पैदा न होने देना ही क्षमा है । (तत्वार्थ सूत्र)। रा० २८-३-१ ।

क्षरि के पूर पूरी—विशेषण । विशेष्य—निम्नगा । दुग्ध (या स्वच्छ सफेद जल) की धारा से परिपूर्ण । रा० २८-२-१ ।

क्षार-समुद्र—सं० पु० एक० । खारा, समुद्र, लवण समुद्र । वि० गी० ४-२९-२ ।

क्षिति[√क्षि + क्तिन]—सं० स्त्री० एक० । पृथ्वी । रा० १३-१५-२ । वि० गी० २-१०-३ ।

क्षितिनाथ—सं० पु० बहु० । राजा लोग । रा० ६-६५-२ ।

क्षिति मंडल—सं० पु० एक० । पृथ्वी । रा० ७-२६-१ ।

क्षिप्र—विशेषण । विशेष्य–नृपनायक । दुःखी वि० गी० १६-२७-२ ।

क्षिप्रासेन—सं०पु० एक० । क्षिप्रासेन । वि० गी० ६-१४-२ ।

क्षीर—[√ भख (खाना) ईख् घ=क] (१) सं० पु० एक० । क्षीर सागर । क० प्रि० १५-३५-१ । १५-७८-२ । (२)सं० पु०एक० । क्षीर । रा० २८-२-१ । वि० गी० १०-१७-४ । १८-८-३ ।

क्षीर सागर—सं० पु० एक० । पुराण वर्णित सात समुद्रो मे से एक । वि० गी० १०-१७-४ । १८-८-३ ।

क्षुद्रा—सं०पु०एक० । भूज । रा० १८-३-२ । १८-३१-२१ ।

क्षुद्र—[√क्षुद् + रक्] (१) सं० पु०एक० । मधुमक्खी । क० प्रि० ५-२५-२ । (२) विशेषण । विशेष्य—क्षत्रिय । अधम, नीच । रा० ७-३७-३ । । वी० च० १-४०-६ । वि० गी० ३-१०-१ । ५-११-१ । ७-१०-४ ।

क्षुद्र घंटिका—स० स्त्री० एक० । एक तरह की करधनी जिसमे घंटियाँ या घुंघुरू लगे रहते हैं । क० प्रि० १५-८६-१ । रा० १८-२०-२ ।

क्षुधा—सं० स्त्री० एक० । भूख । रा० ६-२४-३ । वि० गी० ३-३०-१ । ५-११-१ । १६-६६-२ । २०-६३-२ ।

क्षुत्पिपास—सं० स्त्री० एक०। भूख प्यास। रा० ६-६-१।

क्षेम—[√क्षि + मन्] सं० पु० एक०। सुरक्षा। मगल। क० प्रि० ११-२७-१।

क्षोम—सं० पु० एक०। समुद्र विशेष। वि० गी० ४-२६-१।

क्षेत्र—सं० पु० एक०। भूमि। वि० गी० ७-१७-२।

क्षोभ—[√क्षुभ + घञ्] स० पु० एक०। व्याकुलता। वि० गी० ११-४१-२। (क्षोम) सं०पु० एक०। नाम विशेष। वि० गी० १३-२-२।

ख

खंग—सं० पु० एक०। तलवार। रा०१३-१७-१।

खंजन—[√खञ्ज + ल्यु – अन] (१) स० पु एक०। एक प्रसिद्ध चिडिया जो मैदानी प्रदेशो मे केवल जाडे मे दिखाई देती है। साहित्य मे इसे चंचल आँख के उपमान के रूप ˘ लेते है। र० प्रि० ६-४१-२। ८ २२-१। क० प्रि० १४ ६-१। १५-५५-२। १५-५६-३। १५.५८-४। ५-२०-१। ६-२६-२। ६-२७-१। १३-१८-४। रा० ११-२६-२। १३-२२-१। १३-२४-२। वी० च० २२-४८। वि० गी० १०-१८-२। १६-६-१।

खंजन-नयन—सं० पु० बहु०। खंजन रूपी नेत्र। क० प्रि० १६-५८-४।

खंजरीट—[खञ्ज √ऋ गति) + कीटन्] सं०पु० एक०। चांजन। क० प्रि० १४-२९-४। (२) सं० पु० बहु०। खंजन। र० प्रि० १४-२‌-१।

खंजरीर—सं० पु० एक। खंजन पक्षी। रा० १२-६२-१।

खंड—सं०पु०एक० (१) भाग, टुकडा। रा० ३२-२६-२। ३६-२-२। ३६-८-२। र० बा० १-७-५। छ० मा० १-५८-५। १-७८-४। वि० गी० ४-६-४। ४-८-४-१३-२। ४-१९-२१। ४-२२-३। ४-२५-२। ४-३०-२। ४-३४-१। ४-३५-१। ४-३५-३। ४-३६-२। १२-६-२१। १२-६-३। (२) खंड-विशेष। वि० गी० १५- २२-१।

खंडखंडी—क्रियापद। खंड खंड कर डाली। रा० १९-४८-३।

खंडन—[खण्ड + ल्युट – अन] क्रियापद। खण्डन करना, तोडना। रा० ४-९-३।

खंडनपाषंड—विशेषण। विशेष्य—खग्ग। पाखंडो का नाश करने वाला। वी० च० १५-२४-२।

खंडनि—सं० पु० बहु०। खंडो। वि० गी० ४-१०-२।

खंड परसु—सं० पु० एक० । शिवजी रा० २-१४-१

खंडरे—क्रियापद । खंडित कर देता है । रा० ३५-१९-४ ।

खंडल—[खण्ड√ला + क] स० पु० एक० । खेत । र० बा० १-४०-६ ।

खंडही—सं० पु० एक० । भाग । छ० भा० १-७८-४ ।

खंडित—(१) विशेषण । विशेष्य—चीर । टुकडे किए हुए । वि० गी० ११-११-३ । (२) क्रियापद । खंडित किया, तोडा । रा० ४-६-२ ।

खंडिता—सं० स्त्री० एक० । नायिका-विशेष—नायक मे अन्य स्त्री के संभोग के चिह्न देखकर कुपित हुई नायिका । र० प्रि० ७-२-२ । ७-१६-२ ।

खंडियै—क्रियापद । खडन किया । र० बा० १३-५ ।

खंडियौ—क्रियापद । खडित कर दिया, काटा । रा० ३५-१९-२ ।

खंडिल—क्रियापद । खंडन करना । र० बा० १९-२ ।

खंडे—क्रियापद । खडित करते, काटते है । रा० १९-४९-२ ।

खंड्यो—कियापद । तोडा । रा० ७.१०-४ । १९-५१-३ । ३३-१९-२ । ३६-२२-१ ।

खंधार—सं० पु० एक० । कंधार देश जो भारत के उत्तर पश्चिम मे है । जहाँ० ६९ ।

खंभ—सं० पु० बहु० । खंभो । वि० गी० १६-७२-१ ।

खंभहि—सं० पु० एक० । खंभे का । वि० गी० १६-६८-१ ।

ख—स० पु० एक० । आकाश । क० प्रि० १६-१०-२ । वि० गी० १०-१२-२ ।

खग—(१) सं० पु० एक० । पक्षी । क० प्रि० ७-१६-१ । ग० १-३३-२ । वि०गी० २-४२-१ । ६-३१ । (२ सं० पु० बहु० । पक्षी । र० प्रि० ३-४०-४ । वि० गी० १२-२१-२ । १६-९१-२ ।

खगपति—विशेषण । विशेष्य- संपाति । पक्षियो का राजा गरुड । गरुड के समस्त पक्षियो पर आधिपत्य पाने की कथा महाभारत मे इस प्रकार लिखी है—किसी समय प्रजापति कश्यप ने पुत्रकामना से एक बडे यज्ञ का आयोजन किया था । उनके यज्ञानुष्ठान का संवाद सुनकर देव, ऋषि, गंधर्व प्रभृति सभी उपस्थित हो गये । कश्यप देख-भाल कर सबको कोई न कोई कार्य सौंपने लगे । देवराज इन्द्र और अंगुष्ठ-प्रमाण बालखिल्य मुनि काष्ठ लाने को रखे गये थे । इन्द्र के साथ काष्ठ लेने सब चल दिये । बालखिल्य मुनि एक तो अतिशय क्षुद्र थे । उस पर कुछ खाया पीया नही । इसी से वह अलग काष्ठ लाने मे असमर्थ थे । वे गिरते गिरते चलने लगे । इन्द्र ने उनका उपहास किया तो बालखिल्य मुनि ने चिढकर दूसरे यज्ञ का अनुष्ठान लगा दिया । याग का प्रधान उद्देश्य वर्तमान इन्द्र से अधिक बलशाली द्वितीय इन्द्र बनाना

था। इन्द्र यह सुनते ही डर गये और कश्यप के निकट पहुँचकर विवरण कहने लगे। कश्यप ने वालखिल्य के यज्ञ-स्थान पर उपस्थित होकर उन्हे सात्वना दी और कहा "तुम्हारा आयोजन मिथ्या नही होगा। तुम्हारे यज्ञ फल से इन्द्र से अधिक बलशाली कोई उत्पन्न हो जाएगा। परंतु वह साधारण लोगो का इन्द्रत्व पाकर केवल पक्षियो पर आधिपत्य चलावेगा। कश्यप के कहने से वालखिल्य संतुष्ट हो गये। पश्चात् विनता के गर्भ से गरुड ने जन्म लिया था। तव उन्होने थोडे दिनो मे ही उसी यज्ञ के फल से पक्षियो पर अपना आधिपत्य जमा लिया (भरत १/३१)। रा० १३-३७-२।

खगेस सुमान—सं० पु० एक० । नाम विशेष। वि० गी० १-२०-४।

खरग—(खड्ग) सं० पु० एक० । तलवार। क० प्रि० १६-६४-२ । र० वा० १-५०-३ । रा० १०-१४-३ । ६-१५-२। ३८-१६-३ । वी० च० १४-२५। १५-२४। २६-२३।

खजाना—सं० पु० एक० । निधि, कोष या भंडार। र०प्रि० ९-८-१। जहाँ०५५।

खजूर [खर्जूर]—सं० पु० एक० । ताड जाति का एक पेड । वी०च० २३-३०।

खटिका—सं० स्त्री० एक० । खडिया। मुलायम मिट्टी या एक तरह के चूने का पत्थर जो लिखने और सफेदी के काम मे आता है। क० प्रि० ५-८-३।

खडग [खड्+गन]—(१) सं० पु० एक० । तलवार। क० प्रि० ११-६-१। (२) सं० पु० बहु० । तलवार क० प्रि० १५-५९-१ । वी० च० २-४१।

खड्डा—सं० पु० एक० । तलवार। रा० चं० २८-१७-२।

खण्डित करौ—संयुक्त क्रिया । खण्डित करता हूँ, मारता हूँ। रा० १९-५१-६।

खत—सं० स्त्री० एक० । चिट्ठी (अरबी)। र० वा० १-४-४। १-५-१।

खत्री—सं० पु० बहु० । क्षत्रिय कुल। वी० च० ६-१७। ८-५४।

खद्योत—सं० पु० एक० । जुगुनू, सूर्य। क० प्रि० ५-२८-१। वी० च० ११-९।

खवर—(१) सं० पु० एक० । समाचार। रा० २-३७-२। (२) सं० पु० एक०। खोज। रा० १२-१-१। १२-२-१। १२-३-६। १२-४-१। १२-२१-२। १८-२२-२। १९-५१-४। १९-९-२। र० वा० १-४६-२।

खर—[ख + र] सं० पु० एक० । गधा। क० प्रि० ५-३४-१ । ६-४३-२ । रा० ३-३२-२। छं० मा० १-५०-४। २-३१-४। (२) सं० पु० एक०। (अ) राक्षस-विशेष। रावण का भाई—रामचन्द्र तथा अमरसिंह के पक्ष मे। (आ) 'धेनुक' नामक राक्षस जो गधे का शरीर धरकर सालवन मे वलराम से लडा था—वल-

राम के पक्ष मे। क० प्रि० ११-३२-२। रा० १२-१-१ । १२-३-१ ।

खरक—सं० पु० एक० । गोशाला । क० प्रि० ५-१८-४ । जहाँ० ५६ ।

खरग—सं० पु० एक० । खड्ग (संस्कृत) । छं० मा० २-८-२ । र० बा० १-१६-५ ।

खरदूषन—सं० पु० बहु० । खर और दूषन नामक राक्षस जो रावण के भाई थे। क० प्रि० ११-५५-४ ।

खर दूषण के दूषण—विशेषण । विशेष्य—राम, ब्रजराज, परशुराम, अमरसिंह । श्लेष से—(१) राम के पक्ष मे-जो खर दूषण नामक राक्षसो को मारनेवाले है। खर रावण का भ्राता तथा विश्रवा और राका का पुत्र था। उसके एक और भाई का नाम दूषण था। ये दोनो रावण की भगिनी सूर्पनखा के साथ पचवटी वन मे रहते थे। लक्ष्मण के हाथो सूर्पनखा के नाक कान काटे जाने पर खर दूषण राम से लड़ पडे और उन्ही के बाणो से निहत हुए। (रामायण, अरण्यकाड)। (२) ब्रजराज के पक्ष मे—जो धेनुक राक्षस के अत्याचारो के विनाशक है। (३) परशुराम के पक्ष मे—जो महापापो के विनाशक है। (४) अमरसिंह के पक्ष मे—जो राम के प्रसिद्ध भक्त है। क० प्रि० ११-३२-२ ।

खरसान—सं० पु० एक० । सिकलीगर वा कुदेरे का सान या मरसान । क० प्रि० ६-६-२ ।

खरात्मज—विशेषण । विशेष्य—मकराक्ष। खर का पुत्र । रा० १७-३६-२ ।

खरी—(१) सं० स्त्री० एक० । मादा गधा । क० प्रि० ६-१४ २ । (२) सं० स्त्री० एक० । खरिया, कंडे की राख । र०प्रि० १२-२-४३ । (३)विशेषण । विशेष्य-अनुरागी। अत्यन्त । र०प्रि० ८-४६-१ । वी० च० ६-४२-२ । ६-२५-२ । २४-२६-२ । १७-२७-१ । १८-२७-१ । १६-५-१ । २२-५७-१ । २३-८-` क० प्रि० ६-४४-२ ।

खरी खरे—विशेषण । विशेष्य—उपचार। अत्यन्त अच्छे । र० प्रि० ८-४६-१ ।

खरे—(१) विशेषण । विशेष्य—आन । खूब, अत्यन्त, सुन्दर । रा० ५-६-३ । २६-२२-२ । वी० च० ६-३६ १ । १०-३-१ । १७-४६-१ । २२-४७-१ । वि० गी० २४-३४-२ । (२) विशेषण । विशेष्य—उपचार । अच्छे, अत्यन्त लाभदायक । र० प्रि० ८-४६-१ । (३) विशेषण । विशेष्य—खलवदन । चोखे क० प्रि० ६-१६-१ ।

खर्व—सं० पु० एक० । शिव । रा० १२-१७-२ ।

खल—सं० पु० एक० । (१) घाती । छ० मा० १-५०-४ । (२) विशेषण । विशेष्य - दसकठ । दुष्ट । रा० ७ ७-१ ।

खलतरु—सं० पु० बहु० । शत्रु रूपी वृक्ष । क० प्रि० ४-२०-१ ।

खलताई—स० स्त्री०एक० । खलई, दुष्टता । र० प्रि० ३-६४-३ ।

खलदायक—विशेषण । विशेष्य—गनेस । दुष्टों को मारनेवाला । र० प्रि० १-१-४ ।

खलनि—सं० पु० एक० । जगत् । क० प्रि० ८-३५-१ ।

खलप्रिय—विशेषण । विशेष्य—राजा । दुष्ट । वी० च० ३०-३-२ ।

खल-भल—स०पु० एक० । दुष्ट की ताकत । र० बा० १-१६-३ ।

खलु—विशेषण । विशेष्य—भूपति । दुष्ट । रा० १८-१०-१ ।

खवाइ—क्रियापद । खिलाते । र० प्रि० ३-१०-४ । ३-१९-२ ।

खवाइवो—क्रियापद । खिलाना । र० प्रि० ६-२२-२ ।

खवाइ मरो—संयुक्त क्रिया । खिलाते मरे, खिलाते-खिलाते परेशान हो जाय । र० प्रि० ३-१०-४ ।

खवाय—क्रियापद । खिलाकर । क० प्रि० ३-१२-२ ।

खवाव—क्रियापद । खिलाओ । र० प्रि० ८-४-८ ।

खवावत—क्रियापद । खिलाते । र० प्रि० १२-११-४ । १२-८-३ । १४-६-१ ।

खवावति है—संयुक्त किया । खिलाती है । र० प्रि० ६-५२-४ । ९-५-३ ।

खवावे—क्रियापद । खिलावे । र० प्रि० १३-१३-४ ।

खवायौ—क्रियापद । खिलाओ, खिलाकर । र० प्रि० १३-३-५ ।

खवासिनि—स० स्त्री० एक० । दहेज मे वधू के साथ जानेवाली लौडी । र० प्रि० १०-१२-१ ।

खाचि—क्रियापद । खीचकर । रा० १२-१८-२ ।

खाइँ—क्रियापद । खाये, खाता है । र०प्रि० १-२७-२ । ५-९-४ । ५-२३-२ ।

खाइयो—क्रियापद । खाये । रा० १४-१९-१ ।

खाई—(१) सं० स्त्री० एक० । किले, परकोटे आदि के चारो ओर रक्षार्थ खुदी हुई नहर । क० प्रि० ७-४-१ । रा० २५-५-२ । (२) क्रियापद । खाकर । रा० ६-१६-४ । ७-२१-१ ।

खाई लियो—सयुक्त क्रिया । खा लिया है । रा० ७-२१-१ ।

खाउ—क्रियापद । खाओ । रा० १२-३६-१ ।

खाएं—क्रियापद । खिलाने पर । र० प्रि० ३-६१-३ । ६-४४-१ । रा० २७-२०-३ ।

खागे—क्रियापद । छेदता है । रा० १४-२७-२ ।

खाज—[सं० खर्जु] स० स्त्री० एक । कोढ की खाज । रा० २४-८-३ ।

खाट—[खट्वा] सं० पु० एक० । खटिया । रा० ९-१८-३ ।

खाड—सं० स्त्री० एक० । शक्कर । क० प्रि० ५-७-१ ।

खाडेराइ—(खाडेराय) सं० पु० एक० । हरिसिंहदेव के पुत्र । वी० च० २-५१ । ३३-१९ ।

खात—क्रियापद । खाकर, खाते हुए । र० प्रि० २-४-४ । ५-३४-३ । ६-३२-३ । ६-५०-२ । ८-२९-३ । ९-५-३ । १३-१४-३ । १४-३९-१ । रा० ३-२२-२ ।

खात खवावति है—संयुक्त क्रिया । खाना खिला रही थी । र० प्रि० ९-५-३ ।

खाति—क्रियापद। खाती। र० प्रि० १४-३१-६।

खान—(१) सं० पु० एक०। सरदार। क० प्रि० १-२५-१। १२-२४-२। (२) सं० पु० एक०। निधि, खजाना। क० प्रि० १५-४५-२। जहाँ० ४-६३-६४-८३।

खानजहाँ—स० पु० एक०। राजा। वी० च० ६-२२। ६-६। १०-५।

खामसूद—सं० पु० एक०। मदूदखा। र० वा० १-२०-१।

खायो—क्रियापद। खाया। र० प्रि० ५-६-८।

खार समुद्र—सं० पु० एक०। क्षार समुद्र। जहाँ० २०।

खारिक—[सं० क्षारक] सं० पु० एक०। छुहारा। र० प्रि० १४-३६-१। ३-१०-४। क० प्रि० ६-४६-१।

खाल—स० पु० एक०। त्वचा, चमड़ा। क० प्रि० ६-२५-२। रा० १४-२-२। वी० च० १७-४८।

खालियत—क्रियापद। खोलत। र० प्रि० ६-८-२।

खाहिं—क्रियापद। खाये। रा० ६-१८-२।

खाहु—क्रियापद। खाओ। र० प्रि० ३-६१-३। ८-१३-४। ८-२७-३। रा० १४-२-२।

खित्त—सं० पु० एक०। खेत या रणक्षेत्र। र० वा० १-४६-५। १-३०-५।

खित्तहि—सं० पु० एक०। रणक्षेत्र। र० प्रि० १-३०-५।

खिन—सं० पु० एक०। र० प्रि० ६-१०-४।

खिमिर—सं० पु० एक०। र० वा० १-५२-४।

खिलावति—क्रियापद। खिलाती। र० प्रि० ३-१७-३।

खिलौननि—सं० पु बहु०। खेलने की चीजें, काठ। क० प्रि० ११-३८-३।

खिलौना—सं० स्त्री० एक०। गुड़िया। वी० च० १८-१६।

खिसाइ—क्रियापद। खिसियाना। र० प्रि० १४-१७-४।

खिसाइ रहे—संयुक्त क्रिया। खिसिया गए, लज्जित हो गए। र० प्रि० १४-१७-४।

खिसियायि—क्रियापद। खिसियाना, संकुचित होना, लज्जित होना। र० प्रि० १०-२२-६।

खीर—सं० पु० एक०। (१) दूध मे पकाया हुआ चावल, दूध मे पकायी हुई सूजी, लौकी मखाना। रा० ३०-२८-२। (२) क्षीर, चूर्ण। र० प्रि० ६-१४-३। रा० ७-३१-३।

खुजावौ—क्रियापद। खुल जाना। र० प्रि० ५-११-५।

खुटिला—सं० स्त्री० एक०। कर्णफूल। क० प्रि० १५-६६-१। १५-८६-३।

खुथी—सं० स्त्री० एक०। हाथी। क० प्रि० ११-६१-२।

खुरी—सं० स्त्री० एक०। सुम। रा० ५-१२-४।

खूंर—सं० पु० एक०। दिशा। र० प्रि० १२-१८-१।

खूटी—क्रियापद। खूटना। क० प्रि० ३-११-३।

खुट्यो—क्रियापद। खूटा, कम हो गया। र० प्रि० ५-२१-२। रा० ७-४५-४।

खेचर—विशेषण। विशेष्य—सब सारस-हंस। आकाशगामी। रा० १०-१४-१ वी० च० ११-७। १७-२७। वि० गी० १०-६-२।

खेत—सं० पु० एक०। रणक्षेत्र। रा० ३८-१६-१। र० बा० १-१७-३। १-२६-२। वी० च० ८-४०। १३-२। वि० गी० ७-५-२। १२-१२-१।

खेद—[√खिद्+घञ्] (१) सं० पु० एक०। डर। रा० १८-७१-१। (२) सं० पु० एक०। दुःख, शोक। वि० गी० २१-४८-२।

खेल—[केलि] (१) सं० पु० एक०। क्रीडा। र० प्रि० ३-७०-३। ३-७१-२। ५-२८-१। ८-३६-१। क० प्रि० ११-३८-३। १५-२१-१। रा० ६-१८-३। १६-२८-१। वी० च० २८ १६। (२) सं० पु० बहु०। क्रीडाएँ। र० प्रि० ५-१०-३।

खेलत—क्रियापद। खेलते हैं। र० प्रि० ५-२८-१। ६-३२-१। ६-३६-१। ६-४६-१। ७-३३-२। रा० ८-३-१। २४-३-२। २६-१६-४। २८-१०-२।

खेलत हैं—संयुक्त क्रिया। खेलते है। रा० ३६-१६-४।

खेलति—क्रियापद। खेलती, खेल रही है। र० प्रि० ८-७०-३। ५-७२-२। ८-३७-१। रा० १-३६-४। ३१-११-२।

खेलन—क्रियापद। खेलने। र० प्रि० ५-१०-५। १३-१०-४।

खेलि—क्रियापद। खेलना या क्रीडा। र० प्रि० ५-२६-८। ५-१७-२।

खेलने—(१) सं० स्त्री० एक०। क्रीड़ा। क० प्रि० १५-२३-२। (२) क्रियापद। खेलना। र० प्रि० ५-१४-२। ५-१६-८।

खेलियत—क्रियापद। खेला जाता है। र० प्रि० ५-१० ५।

खेलिये—क्रियापद। खेलना। र० प्रि० ५-१७-२। ८-२३-१। रा० ३६-३०-१।

खेलु—सं० पु० एक०। क्रीडा। र० प्रि० १२-१५-२।

खेले—क्रियापद। खेले। र० प्रि० ३-२२-२।

खेलौ—क्रियापद। खेलो। र० प्रि० ५-१०-५।

खेवत—क्रियापद। खेते हैं। रा० ३२-३१-१।

खैंचत—क्रियापद। खींचते हैं। रा० २४-८-१।

खैंचि—क्रियापद। खींचना। रा० १२-३२-२।

खैंचि-खैंचि—संयुक्त क्रिया। खींच खींचकर रा० १४-२-२।

खैंचेहि—क्रियापद। खींचा। रा० १२-३३-१।

खैचै—क्रियापद। खाइये। र०प्रि०। ७-२६-७।

खैबो—क्रियापद। खाना। र०प्रि० ६-२२-२।

खैल भैल—सं० पु० एक०। खलबली। क० प्रि० ८-३५-१।

खैहै—क्रियापद। खाते हैं। क० प्रि० ६-३८-१। रा० २४-१३-१।

खैरि—(१) सं० स्त्री० एक०। दोष। र० प्रि० ८-३६-१। ६-१६-२। क० प्रि० ८-४०-२०। ११-५६-१। (२) सं० स्त्री० बहु०। दोष। र० प्रि०। ६-८-१।

(३) सं० स्त्री०बहु० । गलियाँ । र० प्रि० ६-८-१ ।

खौलत—क्रियापद । खौलता है । रा० ३२-३-२ ।

खौलियत हे—संयुक्त क्रिया । खौलते हैं । र० प्रि० ६-८-२ ।

खौलिये—क्रियापद । खौलना । रा० ३६-३०-२ ।

खौलियो—क्रियापद । खौलना । रा० १२-६३-१ । ३४-२५-२ ।

खौले—क्रियापद । खौलकर । रा० १३-१७-१ ।

खौलो—क्रियापद । खौलूँगा । रा० १८-२३-२ ।

खौरि—[सं० क्षौर] सं० स्त्री० बहु० । (१) रेखाएँ । क० प्रि० । ८-२३-३ । (२) तिलक । जहाँ ४३ ।

ख्याति—[√ख्या + क्तिन्] सं० स्त्री० एक० शोहरत । क० प्रि० १-७-२ ।

ग

गं—स० पु० एक० । गणेश । क० प्रि० १६-१०-१ ।

गंग [√गम् (जाना) + गन् – टाप्]—सं० स्त्री० एक० । गंगा नदी—पुराणो के अनुसार गगा एक पुण्य सरिता का का नाम है । पुराणो मे गगा देवी के रूप मे वर्णित हुई है । विष्णुपदी, मदाकिनी, सुरसरि, देवापगा, हरिनदी आदि गंगा के पर्याय हैं । ऋग्वेद मे भी गंगा का उल्लेख मिलता है । गंगा की उत्पत्ति एव स्थिति के सम्बन्ध मे निम्नलिखित दो कथाएँ प्रचलित हैं—(१) गगा की उत्पत्ति विष्णु के चरणो से हुई थी । ब्रह्मा ने उन्हे अपने कमडल मे भर लिया था । ऐसी प्रसिद्धि है कि विराट अवतार के आकाश-स्थित तीसरे चरण को धोकर ब्रह्मा ने अपने कमंडल मे रख लिया था । इसके सम्बन्ध मे एक भिन्न व्याख्या मिलती है । समस्त आकाश मे स्थित मेघ का ही पौराणिक-गण विष्णु जैसा वर्णन करते हैं । मेघ से वृष्टि होती है और उसी से गंगा की उत्पत्ति हुई । (२) गंगा का जन्म हिमालय की कन्या के रूप मे सुमेरु-तनया अथवा मैना के गर्भ से हुआ था । किसी विशेष कारण से गंगा ब्रह्मा के कमण्डल मे जा छिपी । 'देवी भागवत' के अनुसार लक्ष्मी, सरस्वती और गंगा तीनो नारायण की पत्नियाँ हैं । पारस्परिक कलह के कारण उन्होने एक दूसरे को शाप देकर नदी के रूप मे अवतरित होकर मृत्यु-लोक मे निवास करने को बाध्य कर दिया था । फलस्वरूप तीनो ही पृथ्वी पर अवतरित हुईं । पुराणो मे गंगा शातनु की पत्नी और भीष्म की माता है । (हिन्दी साहित्य कोश,

भाग-२) क० प्रि० ७-१३-४ । १६-४०-१ । रा० २-१०-४ । ६-१६-१ । १४-११-४ । २०- ५-२ । ३१-८-२ । ३३-३७-१ । ३३-४६-२ । वि० गी० । १-४-४ । १-२६-६ । ३-१८-४ । ११-६-६ ।

गंगा तरंग—सं० पु० बहु० । गगा की लहरें । रा० १४-३६-२ ।

गंगतीर—सं० पु० एक० । गगा का तट । रा० १०-३१-१ । १०-३७-२ ।

गंग देक जुत—विशेषण । विशेष्य—जती । गगा जल से युक्त । जहाँ० १७-५ ।

गंगधारी—(१) सं० पु० एक । गंगा को धारण करनेवाला-शिव । छ० मा० १-१-१ । (२) विशेषण । विशेष्य—महादेव । गंगा को धारण करनेवाला । वाल्मीकि रामायण के मत मे गंगा हिमालय की कन्या है। सुमेरु तनया मनोरमा या मैना के गर्भ से इनकी उत्पत्ति हुई। देवताओ ने किसी कार्य-वश हिमालय से गंगा को भिक्षा रूप मे प्राप्त कर लिया था। (कृत्तिवासी रामायण के मत मे देवगण शिव के साथ व्याहने के लिए गंगा को ले गए थे।) पापाणी मेनका ने गगा को न देखकर जलमयी होने का शाप दिया। तभी से यह ब्रह्मा के कमंडल मे रहने लगी। इधर सगर राजा के दुष्कर्मी पुत्र कपिल मुनि के शाप से गगा धारण के लिए भगीरथ ने पुन महादेव की तपस्या की।(भागवत के मत मे गगा को धारण करने के लिए वसुन्धरा ने महादेव की आराधना की।) भगीरथ की तपस्या से संतुष्ट होकर शिव जी ने गंगा को अपने सर पर धारण करने का भार ले ले लिया। गगा ने सोचा कि अबकी मेरी धारा के साथ बहते-बहते शिव जी मेरे साथ आ जायेंगे। इसलिए यह अच्छा ही हुआ। लेकिन महादेव की फैली जटा से वह बाहर न निकल सकी। यों गंगा को धारण करने के कारण महादेव का नाम गंगाधर पडा। पुन' भगीरथ ने गंगा को न देखकर भस्म हो जाने के कारण सगर वंश के राजा पवित्र गगा को पृथ्वी पर लाने की चेष्टा करने लगे। किन्तु उनकी चेष्टाएँ निष्फल हुईं। बहुत दिन के बाद सगर वंश के राजा भगीरथ अपने मंत्रियो के ऊपर राजपाट अर्पण कर पहले-पहल ब्रह्मा की तपस्या करने लगे। उनकी कठोर तपस्या के हजार वर्ष बाद ब्रह्मा सतुष्ट हुए और भगीरथ की इच्छा की पूर्ति करने को तैयार हुए। भगीरथ का यह अभिप्राय था कि गगा को पृथ्वी पर पर लाने से उनके पूर्वपुरुष मोक्ष पा जायें। लेकिन जब गगा स्वर्ग से पृथ्वी पर आयेगी तो यह निश्चय है कि उनका भार पृथ्वी न सह सकेगी। इसलिए फिर तपस्या की, जिससे संतुष्ट होकर शिव ने गंगा को धीरे-धीरे बिन्दु सरोवर मे छोडा जिसके स्पर्श से सगर के लडके पवित्र होकर स्वर्ग सिधारे। (रामायण, आदि०, ४२, ४३, ४४ सर्ग) । छ०मा० १-१-१ ।

गंगहि—स० स्त्री० एक० । गगा नदी मे । वि० गी० ५-६-२ ।

गंगा—[√गम्+गन्—टाप्] सं० स्त्री० एक० । नदी विशेष । भारतवर्ष की एक प्रधान और पवित्रतम नदी जिसका भगीरथ के तप से स्वर्ग से पृथ्वी पर आना बताया जाता है । र० प्रि० ७ ६-३ । क० प्रि० ५-१२-३ । ७-५-२ । ७-१८-२ । ७-२८-१ । ११-८-१ । १४-११-४ । १४-१५-३ । १५-१६-३ । वी० च० ५-२४ । ५-३० । ५-३४ । ५-३६ । ६-२३ । ११-३४ । १५-२३ । १५-३१ । १६-३० । २१-३५ । २२-३४ । २२-५५ । २४-८ । २७-११ । २७-२४ । २८-६ । ३२-२६ । ३३-४१ । जहाँ० ५ । १२ । १७ । ११० । १११ । ११६ । १६० । वि० गी० ५-१७-१ । ६-१-२ । ६-२१-२ । ६-४६-१ । ६-४७-१ । ६-५१-१ । ८-३-१ । ११-८-१ । ११-५३-२ । ११-२१-१ । १२-२२-२ ।

गंगाघट—सं० पु० एक० । गंगा-जल से भरा हुआ घडा । क० प्रि० ३-४-२ ।

गंगा-जल—सं० पु० एक० । (१) गंगा का पानी । क० प्रि० ११-३१-३ । रा० ४-२३-१ । ६-१७-१ । ६-४६-२ । वी० च० २१-१० । २२-६ । २२-१६ । २६-३ । ३२-३४ । वि० गी० १०-१८-३ । (२) एक प्रकार का सफेद चमकीला रेशमी कपडा । रा० ६-४६-१ ।

गंगाजू—सं० स्त्री० एक० । गंगा नदी । र० प्रि १६-११-१ । क० प्रि० ५-२७-२ । १४-३३-२ । १५-१०-१ । १५-७६-२ । रा० २०-३१-२ । २५-२५-२ । वि० गी० १०-१५-४ । ११-४४-२ । ११-५४-१ ।

गंगातट—सं० पु० एक० । गंगा नदी का किनारा । वि० गी० ६-५२-१ । २१-७०-२ ।

गंगादिक—सं० स्त्री० एक । नदी विशेष । क० प्रि० ७-३ ३ ।

गंगाधर—स० पु० एक० । शिव । वि०गी० २१-६५-२ ।

गंगानीर—सं० पु० एक० । गंगा का जल । रा० २८-११-३ ।

गंगा-मग—सं० पुं० बहु० । स्वर्गलोक, भूलोक तथा पाताल जिनसे होकर गंगा बहती है । क० प्रि० ११-८-१ ।

गंगासागर—सं० पु० एक० । गगासागर का तीर्थ । रा० १४-६-२ ।

गंगाहि—स० स्त्री०एक० । गगा नदी । वि० गी० ६-५०-२ ।

गंगे—सं० स्त्री० एक० । गगा नदी । वि० गी० ११-४५-२ । ११-४५-१ । ११-४६-२ । ११-४७-२ । ११-४७-१ । ११-४८-२ । ११-४६-२ । ११-५०-२ । ११-५१-२ । ११-५२-२ ।

गंगेस—स० पु०एक० । शिव महेश्वर । क० प्रि० ११-८-१ ।

गंगेस दग—सं० पु० बहु० । शिव के नेत्र । क० प्रि० ११-८-१ ।

गंगोदक छंद—स० पु० एक० । चौबीस अक्षरो का एक वर्णवृत्त जिसमे आठ गण होते हैं । छ मा० १-७१-२ । १-७२-१ ।

गंज्यो—क्रियापद । भग किया, गर्व को तोडा । रा० ४-६-१ ।

गंड—सं० पु० एक० । गंड स्थान । वि०गी० २१-२२ ।

गंडकी—सं० स्त्री० एक० । नदी विशेष । वि० गी० ६-२०-२ ।

गंध- [गंध् (गति) + अच्] सं०स्त्री०एक० । वास, बू । क० प्रि० १०-२५-४ । वि० गी० ३-१६-२ । १८-२१-२ । १६-७-४ ।

गंधक—सं० पु० एक० । एक तीक्ष्ण गंध-युक्त पीतवर्ण खनिज पदार्थ जो दवा, बारूद आदि बनाने के काम आता है । क० प्रि० ५-१७-१ ।

गंधफलिनि—सं० स्त्री० एक० । गंधफली । चंपे की कली । 'एतस्य कलिका गंधफली स्यादथ केसरे' (अमरकोश, २-६४ ।) 'गंध फलं खाद्यमस्य '—व्याख्या-सुधा । प्रियंगो स्त्री गंधफली चंपकस्य चकोरके रुद्र । गंधफली प्रियंगु (काकुनी) और चंपे की कली दोनों को कहते है । चंपे की कली को गंधफली इसलिये कहते हैं कि उसमें सुगंध ही फल होता है । (हिन्दी विश्वकोश) । र० प्रि० १०-२२-२ ।

गंधमाला—सं० स्त्री० एक० विभिन्न प्रकार की गंध रा० १४-६-१ ।

गंधर्व—सं० पु० एक० । गंधर्व देवताओं की जाति-विशेष है, जिसका निवास स्वर्ग तथा अन्तरिक्ष था । इनका मुख्य-कार्य देवताओं के लिए सोम-रस तैयार करना था । गंधर्व स्त्रियों के अपूर्व अनुरागी थे और उन पर अपूर्व अनुराग रखते थे । अथर्व वेद में ६३३३ गंधर्वों का उल्लेख किया गया है । इन्हें औषधि तथा वनस्पतियों का विशेषज्ञ बताया गया है । "विष्णु पुराण" के अनुसार गंधर्वों की उत्पत्ति ब्रह्मा से तथा "हरिवंश" के अनुसार ब्रह्मा की नाक से हुई थी (हिन्दी साहित्य कोश, भाग-२) । क०प्रि० ११-५६-२ । रा० १२-१४-१ । १७-४६-२ । र० बा० १-१८-२ । वी० च० १-३१ । १६-२६ । ३२-५१ ।

गंधर्वकुल—सं० पु० बहु० । गंधर्व जाति के लोग । रा० १६-६-२ ।

गंधवाह—सं० पु० एक० । वायु । र० प्रि० ३-३४-२ ।

गंधसालिका—सं०स्त्री०एक० । गंधशाला; सुगंधित पदार्थ रखने का स्थान । रा० २६-३५-१ ।

गंधार—सं० पु० एक० । गांधार देश । जहाँ० ६६ ।

गंधासन—सं० पु० एक० । वायु । क० प्रि० ८-५-३ ।

गंधु—सं० स्त्री एक० । वास, बू । क० १५-४३-४ ।

गंभीर—विशेषण । विशेष्य —बानी । निर्भ-यतायुक्त । र० प्रि० ५४-२४-२ । क० प्रि० १-३०-१ । ४-२२-१ । रा० १३-६१-१ । वी० च० ३-२४-१ । २-३२-१ । २-४०-१ । २-४८ १ । ६-१८-२ । ८-३८-१ । १२-२-२ । १७-८-१ । २४-७७-२ । २७-८१-२ । ३३-१७-२ । जहाँ० ६६-१ । ७४ १ । वि० गी० १४-३०-१ ।

गंभीरता—सं० स्त्री० एक० । गहराई । क० प्रि० ७-१८-१ ।

गंवार—सं० पु० एक० । देहाती । वि० गी० १३-७-२ ।

गंवावति—क्रियापद । बिताती । र० प्रि० ४-६-७ ।

गइ—क्रियापद। गई। क० प्रि० ३-३८-२। ३-३८-३। रा० २४-१८-२।

गइन—सं० स्त्री० बहु०। गायो को। वि० गी० ६-२४-१।

गई—क्रियापद। गई, जाती रही। र० प्रि० ३-२१-२। ३-२७-२। ३-६६-४। ३-७३-४। ४-३-१। ४-३१-४। ५-३४-४। ५-३५-१। ५-१६-४। ७-६-१। ८-३७-३। ८-३८-२। ९-१३-२। ११-१४-४। १३-१७-४। १४-६-२। १४-१०-१। १४-३८-३। १६-६-२। १६-६-२। १६-६-३। क० प्रि० ३-३६-२। ३-५७-२। रा० २-२८-४। ५-५-१। ५-२६-२। ६-३२-३। ११-३-२। १५-५-२। १२-२७-२। १२-५६-१। १४-२३-१। १४-३८-४। १५-५-४। १५-६-२। १६-१२-१। १६-२५-१। २४-१३-४। २४-१३-३। २६-२४-२। ३०-१९-६। ३०-१६-७। ३०-४२-१।

गई गड़ि—सयुक्त क्रिया। गड गई। र०प्रि० १६-६-१।

गई खै—संयुक्त क्रिया। (गई ख्वै) गिर गया। रा० ३-३४-१।

गई हुती—सयुक्त क्रिया। गई थी। र० प्रि० ३-७३-४।

गई है—संयुक्त क्रिया। गई है। र० प्रि० ११-१४-४।

गएं क्रियापद। गए। र० प्रि० ५-२३-४। ११-१४-४। ३-४४-२। ४-८-२। ५-२८-४। ७-६-३। ८-३४-२। १२-७-१। १४-३६-३। १५-५-६। क० प्रि० १-२३-१। १-२३-२। ३-११-२। ३-३६-२। रा० चं० २-१५-१। ५-७-२। ५-१७-३। ५-३८-१। ६-६-१। ६-१६-२। ६-३७-१। ७-२-१। ८-१७-२। ८-१७-१। ९-७-१। ९-२१-१। ९-३१-२। ९-४६-२। १०-४-१। १०-४-२। १०-१०-३। १०-३३-१। १०-४४-२। ११-९-२। १२-४३-१। १२-४६-२। १२-५१-१। १३-५-२। १३-६-२। १३-१३-१। १३-२६-१। १३-३१-२। १३-३६-१। १३-४१-१। १४-२ -। १४-२२-५। १४-३०-२। १४-३२-४। १५-१-४। १५-३०-१। १५-३१-१। १७-६-१। १७-२१-२। १७-५०-१। १७-५२-१। १८-१-१। १८-३५-४। १९-३३-२। १६-३६-२। १६-३१-१। १६-४१-२। २०-२-१। २०-१२-२। २०-२६-१। २०-२८-१। २०-२२-२। २३-३-२। २३-४०-२। २५-३-२। २५-१२-१। २५-१२-२। २७-१६-४। २७-१७-२। २६-५-१। २६-३५-१। २६-४५-२। २६-३२-१। २६-३६-२। २६-३८-१। ३०-१८-२। ३०-१७-२। ३२-३२-२। ३२-४७-२। ३२-३६-२। ३३-१५-१। ३३-४४-२। ३३-५६-१। ३४-१०-१। ३४-२६-२। ३४-२९-२। ३४-४१-१। ३५-२२-२। ३५-१०-१। ३६-६-१। ३६-३६-१। ३७-५-७। ३८-२-१। ३६-६-१। ३९-८-१।

गरवार—एक पर्वतीय जाति। जहां० १००।

गगन—[√गम् + युच—अन, ग आदेश]—स० पु० एक०। आकाश। र० प्रि० ५-२८-३। १ -२१-४। रा० ५-१३-

१ । ७-५१-३ । १३-३३-१ । २७-५-३ । ३०-१८-५ । ३१-२१-१ । र० बा० १-८-६ । वी० च० ११-२६ । ११-२७ । १२-११ । १२-२१ । २२-३४ । २२-३५ । २२-६६ । २५-७ । २५-१३ ।

गगन सिंधु—सं० स्त्री० एक० । आकाश-गंगा । वी० च० २२-३४ ।

गच्छे - क्रियापद । चली जाती है । रा० २६-१३-२ ।

गज—[√गज् (मत्त होना) + अच्] सं० पु० एक० । (१) हाथी । क० प्रि० ५-३६-१ । ६-३१- । ८-३२-३ । १५-१७-३ । १५-४०-१ । रा० ३-६-२ । ५-२०-३ । ६-१०-२ । ६-६५-२ । ८-१४-१ । १५-२४-३ । १६-२४-२ । १६-४६-२ । २१-२७-१ । ३-२७-२ । २३-४६-१ । ३४-३८-२ । ३६-६-३ । ३६-१६-१ । वी० च० १-१ । ३-३४ । ४-१४ । ४-५१ । ५-३३ । ५-३४ । ५-४० । ५-६१ । ५-६८ । ७-४० । ८-१० । ८-२६ । ८-१३ । ६-१७ । ६-२४ । १२-८ । १२-१० । १२-१२ । १२-१६ । १२-३१ । १३-२ । १३-३ । १४-२० । १४-३१ । १४-३३ । १४-५२ । १४-५८ । १६-८ । १६-४१ । १७-५ । १७-६ । १६-२ । १६-३ । १६-५ । २०-४ । २०-५ । २१-२३ । २६-२० । २६-२७ । २६-३६ । २७-७ । २७-२८ । २६-२८ । ३१-६६ । ३२-२८ । ३३-३२ । ३३-३३ । ३३-४८ । जहाँ० १२३ । १५० । १८७ । र० बा० १-२४-१ । १-४४-३ । वि० गी० १-२०-३ । ६-५१-१ । १०-१६-२ । १६-७२-१ । १६-७५-१ । (२) लोहे के छड़-जैसी लकड़ी, जिससे बन्दूक भरी जाती है, एक तरह का तीर । क० प्रि० ४-१६-२ । (३) कुवलयागज—एक हस्तिरूप-धारी असुर जो कृष्ण के हाथों मारा गया । क० प्रि० १६-१७-१ ।

गजकुंभ—सं० पु० एक० । हाथियों के सिर का कुछ उभरा हुआ भाग जो उनके दोनों ओर होता है । रा० ११ २८-१ ।

गजगमनी— विशेपण । विशेष्य—वृषभानुजी की बेटी । हाथी की सी सुन्दर चाल-वाली । र० प्रि० १२-१४-२ ।

गजगामिनि—सं० स्त्री० एक० । हाथी के चाल वाली । वि० गी० ६-४७-२ । १०-८२ ।

गजदंत—सं० पुं० एक० । हाथी के दाँत । रा० ६-४०-१ ।

गजदंतमयी—विशेषण । विशेष्य—मंचन की अवली । हाथीदाँत की बनायी गयी । रा० ३-१५-१ ।

गजनि—सं० पु० बहु० । हाथी । क० प्रि० १५-१६-२ ।

गजपाल—सं० पु० एक० । हाथी (संस्कृत) । वि० गी० १६-६७-२ । १६-६८-३ । १६-७२-१ ।

गजबदन—सं० पु० एक० । हाथी जैसे मुखवाला, गणेश । र० बा० १-१-१ । (२) विशेपण । विशेष्य—गणेश । हाथी जैसा मुखवाला । पार्वती के पुत्र गणेश को गजानन होने की कथा 'ब्रह्मवैवर्त' पुराण मे इस तरह है—दक्ष कन्या

सती ने प्राण त्याग करके जब हिमालय मे जन्म लिया तब महादेव ने उनसे विवाह किया था। पश्चात् सन्तानोत्पत्ति न होने के कारण शिव के आदर्श से पार्वती ने विष्णु की तपस्या की। विष्णु ने सन्तुष्ट होकर पुत्र वरदान दिया। थोडे दिन बाद पार्वती को एक पुत्र पैदा हुआ। सब लोग नवजात शिशु को देखने के लिए कैलाश मे उपस्थित हुए। शनि भी कैलाश पहुँचे। स्त्री के शाप के कारण शनि जिस ओर देखते वह भस्म हो जाता था। शनि महाराज उसी भय से पार्वतीनन्दन को देखने के लिए घर के अन्दर न गये। लेकिन पार्वती ने शनि से अनुरोध किया कि वह बालक को देखें। शनि ने सब कथा कही लेकिन पार्वती ने हँसी मे बात उडा दी। शनि ने विवश होकर बालक की ओर नजर फेरी तो बालक का मस्तक उड गया। पार्वती रोकर व्याकुल होने लगीं। विष्णु तक यह समाचार पहुँचा। विष्णु ने आते समय देखा कि राह मे कोई हाथी परम सुख से सो रहा था। उन्होने हाथी का मस्तक काटकर ले आकर छिन्न मस्तक का बालक के शरीर मे लगा दिया। तब से गणेश गजानन हो गये।

स्कन्द पुराण के गणेश खड मे इसका उपाख्यान अन्य प्रकार से लिखा गया है। सिंदूर नामक किसी दैत्य ने पार्वती के गर्भ मे अष्ट मास को प्रवेश करके गणेश का मस्तक काट डाला था। परन्तु उससे बालक के जीवन का कोई अनिष्ट न हुआ। प्रसव के पीछे नारद ने आकर के बालक से ही उसका कारण पूछा था। उसने नारद को सब कथा खोल करके सुना दी। नारद ने उसको समस्तक होने का अनुरोध किया था। बालक ने अपने तेज से ही गजासुर का मस्तक काट अपने स्कन्ध से जोड लिया, इसी से उसका नाम "गजानन" या "गजमुख" पड़ा है। भाद्रमास की चतुर्थी तिथि को गजमुख का जन्मोत्सव होता है। (हिन्दी विश्वकोश, भाग ६) र० प्रि० १-१-१।

गजमुख--सं० पु० एक०। (१) हाथी के के मुखवाला--गणेश। र० प्रि० १-१-१ क० प्रि० १-१-१। ५-२८-२। ६-६८-४। (२) (अ) गणेश--शिव समाज के पक्ष मे। (आ) हाथियो के मुख--वसन्त के पक्ष मे। क० प्रि० ७-२८-२। (२) विशेषण। विशेष्य--गणेश। हाथी के मुखवाला (देखो 'गजबदन')। रा० १-१-४।

गजमोति--सं० पु० एक०। कवि-समय-समर्थित मोती जिसको हाथी के मस्तक से निकाला जाता है। रा० ६-३६-१। ६-५६-२। २६-१५-१। ३६-१५-३। बहुवचन--गजमोतिन। क० प्रि० १५-२८-१।

गजमोतिनजुत--विशेषण। विशेष्य--मरकत मनि के थार। गजमुक्ताओ से भरे। गजमुक्ता एक प्रकार की मोती है जो हाथी के मस्तक मे पाई जाती है। रा० २६-१५-१।

गजरद--सं० पु० एक०। हाथी का दाँत। क० प्रि० ११-७-२।

गजरा—सं० पु० एक० । कलाई पर पहनने का एक गहना । क० प्रि० १५-२८-१ ।

गजराज—सं० पु० एक० । (१) बहुत बडा हाथी, गजेन्द्र । र० प्रि० १४-२५-१ । क० प्रि० ४-२०-२ । ८-३४-३ । ६-२७-१ १५-१९-३ । १४-३१-३ । १५-८६-२ । रा० १०-१७-१ । २१-४-२ । ३४-१७-२ । ३५-२६-२ । (२) श्रेष्ठ हाथी । र० बा० १-३८-१ । छं० मा० २-२०-२ । स० पु० बहु० । हाथी । क० प्रि० ८-२८-४ । ४-२०-२ । १५-६०-१ ।

गजश्रवन—सं०पु० बहु० । हाथी के कान । क० प्रि० ६-२६-२ ।

गजा—स० पु० एक० । नगाडे की चोट, वह लकडी जिससे नगाडा बजाया जाता है । रा० १६-५३-४ ।

गडि—क्रियापद । गड़ जाना । र० प्रि० ३-२४-४ । ८-३७-३ । १०-१२-३ । १४-६-१ । रा० १२-३५-१ ।

गढ़—[स० गर्त=खाई] (१) स० पु० एक० । कोट, किला । क०प्रि० १-२४-१ । १-४०-१ । ६-२-२ । ६-३-४ । वी०च० ३-१६ । ३-२६ । ६-२० । ६-४६ । ६-५५ । ७-६ । ६-६ । ६-१६ । ६-५३ । १४-४६ । २६-१६ । (२) स० पु० बहु० । किले । क० प्रि० ८-२८-२ । ११-३८-३

गढ़कुंडार—सं० पु० एक० । राजा सहनपाल की राजधानी । क० प्रि० १-१०-२ । वी० च० २-२६ । ६-६१ ।

गढतरु—स०पु०एक० । किले रूपी वृक्ष । क० प्रि० ४-२२-३ ।

गढा—सं० स्त्री० बहु० । छोटे किले । क० प्रि० २-१९-२ ।

गढोई—स० पु० एक० । गढपति, क़िलेदार । रा० २७-२-४ ।

गण—[√गण् (गिनना) + अच्] स० पु० बहु० । समूह । छ० मा० २-३१-३

गणपति—स० पु० एक० । (१) गणेश । वी० च० १-१ । ५-४३ । १३-१६ । २७-२३ । (२) सेनापति । वी० च० १८-१५ । २७-२३ ।

गणपतिवाहन—सं० पुं० एक० । चूहा । जहाँ० । १-३६ ।

गणिका—[स √गण् + ठन्=इक, टाप] सं० स्त्री० एक० । वेश्या । वी० च० १-४५ ।

गणेश—सं० पु० एक० । पार्वतीनन्दन, जिनका सिर हाथी का है । छ० मा० २-३१ ।

गणेश दे—सं० स्त्री०एक० । रानी गणेश दे, मधुकर शाह की स्त्री । वी० च० २-३५ ।

गति—[गम् + क्तिन्] (१) सं० स्त्री० एक० । चाल, गमन । र० प्रि० १-१२-१ । ३-१६-१ । ३-२१-२ । ३-३४-३ । ३-५४-१ । ७-२८-३ । १४-२५-१ । १४-३६-४ । १५-६-४ । क० प्रि० १-४४-२ । ३-११-३ ८-३७-२ । ६-१४-३ । ६-२ -२ । १०-२५-२ । १०-२७-१ । ११-७६-४ । १२-२१-१ । १३-२०-२ । १३-२६-४ । १४-८-१ । १५-१७-३ । १५-६६-२ । १५-८६-१ १५-६०-४ । रा० । १-४८-३ । १३-२५-२ । १३-२६-२ । र० बा० १-६-२ । छं० मा० १-६८-४ । २-४६-४ ।

वि० गी० । १०-६-२ । १०-१०-१ । (२) सं० स्त्री० एक० । नृत्य का ढंग । क० प्रि० १-४८-२ । (३) सं० स्त्री० एक० । रास्ता । क० प्रि० ६-५-२ । (४) सं० स्त्री० एक० । स्थिति, हालत । र० प्रि० ६-४६-३ । ७-११-४ । ११-१०-१ । १२-६-४ । क० प्रि० ६-६७-१ । ६-६७-३ । ६-७३-४ । ८-४३-२ । ६-२०-४ । १०-३४-५ । ११-३८-३ । १५-६४-२ १५-१२७-२ । १६-७४-१ । १६-७४-२ रा० ४-१६-१ । ४-२३-३ । १२-५०-३ । २४-११-२ । ३२-११-१ । वि० गी० । १३-५-४ । १३-५७-१ । १४ २५-२ । १६-३६-२ । १६-३६-३ । १७-६६-२ । २०-२०-२ । (५) सं० स्त्री० एक० । योग्यता । क० प्रि० १५-४-१ । (६) सं० स्त्री० एक० । (अ) चाल—देवी के पक्ष मे (आ) रागिनी—प्रवीणराय की वाणी के पक्ष मे । क० प्रि० ११-८२-१ । (७) सं० स्त्री० एक० (अ) मुक्ति—गंगा के पक्ष मे (आ) प्रवाह-वाणी के पक्ष मे । क० प्रि० १४-१६-१ । (८) सं० स्त्री० एक० । अवस्था, उम्र । र० प्रि० । ३ १६-१ (६) सं० स्त्री० एक० । मन की चेतना । र० प्रि० । ३-१६-१ । ४-८-१ । ११-१५-३ । १२ ६-१ । १२-११-२ । (१०) सं० स्त्री० एक० । चमक, प्रकाश । र० प्रि० ३-१६-२ । १४-१०-२ । (११) सं० स्त्री० एक० । सुध-बुध । र०प्रि० १४-३६-४ । (१२) सं० स्त्री० एक० । मोक्ष । र०प्रि० १४-३६-४ । रा० ६-१३-२ । ११-२५-२ । (१३) सं० स्त्री० एक० । शक्ति । रा० ७-४६-२ । ७-५०-२ । ७-५२-२ । ७-५०-१ । (१४) सं० स्त्री० एक० बहाव । रा० १-२६-१ । (१५) सं० स्त्री० एक० । शरण । वी० च० १-१ । १-६ । (१६) सं०स्त्री० बहु० । पाँच प्रकार की मुक्तियाँ—सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, सायुज्य और सारिष्ट । क० प्रि० । ११-१२-१ । (१७) सं० स्त्री० बहु० । चाले । र०प्रि० ८-१७-२ । १४-१०-१ । (१८) सं० स्त्री० बहु० हवा की त्रिविध अवस्थाएँ–शीतल, मंद, सुगंध । र० प्रि० १३-१२-२ । (१६) नाट्य की भंगिमाएँ। र०प्रि० १४-६-२ ।

गतिकाढ़ो—विशेषण । विशेष्य—नींद । गति में चपला से भी आगे निकल जानेवाली । क० प्रि० ८-४२-२ ।

गतिनि—सं० स्त्री० बहु० । नृत्य की पद्धतियाँ । क० प्रि० १५-१५-१ ।

गतिललित—विशेषण । विशेष्य—बानी, गंगा का पानी । (अ) बानी के पक्ष मे—सुन्दर प्रवाह युक्त । (आ) गंगा के पानी के पक्ष मे—सुन्दर गति अर्थात् मुक्ति-प्रदायिनी । क० प्रि० १५-१६-१ ।

गदा—सं० स्त्री० एक० । लोहे का बना एक पुराना हथियार जिसके सिर पर नोकदार बडा लट्टू लगा होता है । क० प्रि० १२-१८-२ । रा० १८-२६-१ । १६-१०-२ । १६-३३-२ । १६-४६-२ । वी० च० १४-२८ । १६-२८ । वि० गी० १६-६६-२ ।

गन—(१) सं० पु० एक० । छन्द शास्त्र मे तीन अक्षरो का समूह । क० प्रि० ३-१७-१ । ३-१७-२ । ३-२१-१ । ३-२४-१ । ३-२५-६ । ३-२८-३ । ३-३१-२ । १६-२-२ । (२) सं० पु० एक० । बादल । क० प्रि० ६-२५-१ । (३) सं० पु० एक० । नक्षत्रो की तीन कोटियो मे मे एक । क० प्रि० १५-१२-२ । (४) सं० पु० बहु० । गण, समूह । रा० १-४३-१, ११-३४-२ । १३-७-२ । २५-३६-२ । २७-२३-२ । ३५-३०-१ । ३१-१२-२ । र० बा० १-१०-२ । छं० मा० २-२३-५ । २-४२-४ । २-४३-१ । वि० गी० १६-६६-१ ।

गनक—स० पु० एक० । ज्योतिषी । रा० ३०-२५-२ । वी० च० २२-१० । ३२-५६ । ३३-३० ।

गनत—क्रियापद । गिनती करना । र० प्रि० ७-३२-३ । रा० १-४४-४ ।

गननायक—सं० पु० एक० । गणनायक, गणपति । र० बा० १-१-२ ।

गनपति—सं० पु० एक० । गणो के स्वामी, गणेश । र० प्रि० १४-१६-३ । क० प्रि० ५-१०-१ । छं० मा० २-२६-३ ।

गनाऊँ—क्रियापद । गिनती करूँ । र० प्रि० ५-१२-२ ।

गनि—क्रियापद । समझकर । र० प्रि० ६-३०-२ । ८-२०-१ । क० प्रि० ३७-१ । रा० २१-२८-४ । ३ -४५-२ ।

गनिका—सं स्त्री० एक० । वेश्या । क० प्रि० ४-१२-१ । ४-६२-३ ।

गनिये—क्रियापद । समझिये, गिना जाता है । रा० ३६-२०-२ ।

गनु—स० पु० बहु० । समूह । रा० २२-८-३ ।

गने—क्रियापद । गिने । रा० ६-६४-२ । ७-१०-२ ।

गनेस—सं पु० एक० । गणेश जी (शिव-पार्वती के पुत्र) । क० प्रि० ६-६२-१ । ११-५-२ । ८-२८-२ । रा० १-४-३ । २०-१०-२ । वि० गी० १-१६-४ ।

गनै—क्रियापद । गिने । रा० १-४२-२ । ६-२९-१ । २३-२२-२ । २४-६-४ । २४-२१-१ । २६-१६-१ । २७-१४-३ । ३५-८-१ । ३६-१६-१ । ३६-३४-३ । २-६-३ । २-१०-१ । २-१५-१ । ३-१५-१ ।

गनो—क्रियापद । समझो । रा० १३-२४-१ । १५-७-३ । १८-१७-२ ।

गनौ—समझूँ । र० प्रि० १३-११-१ । १३-१९-२ ।

गमक—स० स्त्री० एक० । सगीत के स्थान विशेष पर स्वर के कप को गमक कहते हैं । ये १५ प्रकार की है । रा० ३०-३-२ ।

गमन—(१) सं० पु० एक० । (अ) चाल—कालिका के पक्ष मे । (आ) आवागमन—वर्षा के पक्ष मे । क० प्रि० ७-३२-३ । (२ सं० पु० एक० । द्विरागमन—विवाह के बाद वधू का पति के घर जाना । क० प्रि० १०-२८-३ ।

गयंद [स० गजेन्द्र]—सं० पु० एक० । गजेन्द्र, हाथी । र० प्रि० ७-२८-३ । क० प्रि० ६-५३-१ । ७-११-२ । रा०

१७-३०-२ । २०-४०-२ । २१-३३-२ । ३७-३-१ । वी० च० ४-१८ । ४-५४ । ५-७५ । ६-५२ । ११-३० । १४-४६ । १५-२० । जहाँ० ७६ । वि० ६६-२०-२ । १२-२-१ । १२-२१-१ ।

गय—(१) सं० पु० एक० । दरियायी हाथी । क० प्रि० ७-१२-१ । ८-१-२ । ११-२५-४ । रा० २६-११-२ । र० १-४-२ । १-६-२ । छं० १-१६-३ । (२) सं० पुं० एक० । गाय । वी० ३-३४ । ७-१३ । ८-४३ । ८-८२ । ६-३१ । १२-२१ । १३-१४ । १६-१७ ३१-१४ । ३२-४६ । ३३-३६ । ३३-४८ । ज० १३३ । १५८ ।

गय गजाधर—सं० पु० एक० । कवि केशवदास के वंशज व्यक्ति । क० प्रि० २-८-१ ।

गया—सं० स्त्री० एक० । मगध की एक पुरी और प्रसिद्ध तीर्थ स्थान । 'वायुपुराण' के अनुसार यहाँ पिंडदान आदि करनेवाले की एक हजार पीढ़ियाँ तर जाती है । क० प्रि० २-७-२ ।

गयो—क्रियापद । चला गया, गया । र० प्रि० १-२६-४ । ५-२१-२ । ६-२०-२ । ७-१६-१ । ६-५-२ । १०-२७-८ । ११-१०-२ । १६-७-२ । क० प्रि० १-२१-१ । १-२६-२ । ३-३४-२१ । रा० ५-४१-४ । ५-४१-१ । ६-३३-१ । ६-५५-२ । १०-२१-२ । १०-४०-१ । १२-२६-१ । १२-२६-२ । १२-३५-१ । १४-३४-२ । १५-२७-२ । १५-४०-४ । १५-४१-१ । १६-४-१ । १६-५-२ । १६-६-४ । १६-४-२ । १७-७-२ । १७-१०-१ । १७-४१-२ । १७-४२-२ । १७-४८-२ । १७-५०-१ । १८-२६-१ । १८-३०-२ । १६-२-१ । १८-१६-१ । १६-२४-१ २०-४७-३ । २७-७-३ । २६-१५-२ । ३१-१-१ । ३४-१६-२ । ३४-१६-१ । ३४-२६-३ । ३४-४८-१ । ३४-५३-२ । ३५-११-२ । ३६-२-१ । ३८-१४-१ । ३८-१४-२ ।

गयौ—क्रियापद । गया । रा० ३७-६-१ ।

गरजत—क्रियापद । गरजता है । क० प्रि० ३-४८-२ ।

गरम [सं० घर्म]—विशेषण । विशेष्य—दिन । ताप से युक्त । क० प्रि० १०-३२५ ।

गरल [सं० गृ (निगलना) + अलच्]—सं० पु० एक० । जहर, विष । क० प्रि० १४-३३-३ ।

गररुचि—सं० स्त्री० एक० । विष की आर्या स्त्री । रा० २५-२५-३ ।

गरा—सं० स्त्री० एक० । गला । रा० १५-४३- । ३८-१६ ३ ।

गरिधौ—सं० पुं० एक० । गिराधव, ब्रह्मा । वि० ११-५२-१ ।

गरिमा—सं० स्त्री० एक० । (गरिमा + हि) गरिमा , आठ सिद्धियों मे से एक जिससे अपना देह चाहे जितना बढ़ाया जा सकता है) । क० प्रि० ६-७१-४ । १-३-२ ।

गरीब—सं० । निर्धन । वी० ५-५२ ।

गरीब निवाज—विशेषण । विशेष्य—अकबर । गरीबों मे निवास करनेवाला । वी० च० ७-५३-१ ।

गरु—सं० स्त्री० एक० । गला । रा० । ३७-२१-२ ।

गरुड़—[गरुत् √डी (उडना) + उ] । सं० पु० एक० । विष्णु का वाहन

गरुत्मंत। छं०मा० २-३-११। वी०च० १४-२२।

गरुड़-ध्वज—सं० पु० एक०। विष्णु। क० प्रि० १६-१९ २।

गरुड़-ध्वजे—सं० पुं० एक०। वह छत्र जिसके ऊपर गरुड की प्रतिमा बनी हो। वि० गी० १६-१०५-२। १८-२६-२।

गरुर—(१) सं० पु० एक०। गर्व, घमंड। र०प्रि० ७-३०-४। (२) सं० पु० एक०। गरुड। विनता के गर्भ से उत्पन्न कश्यप के पुत्र जो पक्षीराज और विष्णु के वाहन माने गये हैं। क० प्रि० ६-५३-२।

गरुवो[गुरु]—विशेपण। विशेष्य—दोप। भारी। क० प्रि० ११-६९-१।

गरुवो गुरु को दोष दूषित—विशेषण। विशेष्य—चन्द्रमा। गुरु के भारी दोप से युक्त। (गुरु या वृहस्पति की स्त्री तारा से बुरा आचरण करने के कारण चन्द्रमा कलंकित हो गया था।) क० प्रि० ११-६९-१।

गरे—सं० पु० एक०। गला। र० प्रि० ५-१७-२।

गर्ग—[√गृ (स्तुति करना)+ग] सं० पु० एक०। एक मंत्रकार ऋषि (सं) वि० १६-५४-१।

गर्जे—क्रियापद। गरजने लगे। रा० १७-३०-२१।

गर्दभ—[गर्द् (शब्द करना)+अभच] सं० पु० एक०। गधा। (सं)। वि० १३-७७-१।

गर्व—सं० पु० एक०। गर्व, घमंड। वि० गी० ६-६९-२।

गर्भ—सं० पु० एक०। उदर। वि० गी० १४-२०-१। १७-४७-१। १७-४८-१।

गर्भ मोचन—सं० पु० एक०। प्रसव। रा० ३३-४०-२।

गर्भ संजोगी—विशेपण। विशेष्य—वनवारी। (अ फलगर्भा या फलो से युक्त वाटिका। (आ) गर्भवती वनवासिनी कन्या के पक्ष मे। रा० १-३५-१।

गर्भ सहित—विशेपण। विशेष्य—वनवारी। श्लेप से (१) फलनेवाली, बीजांकुर सहित फलो से युक्त। पुष्पवाटिका के पक्ष मे (२) वनवासिनी कन्या के पक्ष मे। रा० १-३४-४।

गर्भ—सं० पु० एक०। घमंड, अहंकार। क० प्रि० ९-१६-३। १४-१९-२। १५-३३-१। र० प्रि० ५-१?-२। ६-१३-१। ६-४२-१। रा० २८-१३-२। ३६-३३-२। ३८-१४-२। ३९-३२-२। (२) सं० पु० बहु०। अहंकार। र० प्रि० ६-२७-१।

गर्भ प्रहारी—विशेपण। विशेष्य—रामदेव। भक्तो के गर्व का नाश करने वाला। रा० ३९-१३-१। ३६-८-१।

गर्वहारी—विशेपण। विशेष्य—रावन। दूसरो का गर्व करनेवाला। रा० १९-१-२।

गल—सं० पु० एक०। गला, कंठ। र० प्रि० ६-१९-१। रा० १०-३३-२।

गल सुई—सं० स्त्री० एक०। गाल के नीचे खाने के छोटे गोल मुलायम तकिये। रा० १२-६२-२। ३०-१४-२।

गली—(१) सं० स्त्री० एक०। सड़क से कम चौड़ा रास्ता जिसके दोनों ओर मकानो की कतार हो। क० प्रि० ३-

१३-४ । वी० च० १३-२१ । १९-२० । (२) सं० स्त्री० एक० । कुल मर्यादा । क० प्रि० १६-३८-१ ।

गलीन -- सं० स्त्री० बहु० । गलियाँ । र० प्रि० ७-३३-२ ।

गवश—स० पु० एक० । राम की सेना का एकवीर । रा० १९-४६-२ । २१-३३-२ ।

गवाक्ष—सं० पु० एक० । राम की सेना का वीर । रा० १९-४६-३ । २१-३३-२ ।

गवार—सं० पु०एक० । मूर्ख । जहाँ० १९ ।

गहत—क्रियापद । ग्रहण करते हैं । रा० २७-१७-३ । २८-१८-१ ।

गहति है—संयुक्त क्रिया । ग्रहण करती है । र० प्रि० ११-१७-८ ।

गहरवार—(१) स० पुं० एक० । केशव के आश्रयदाता राजाओं का वंश । वी० च० १-३ । २-४५ । (२) सं० पुं० एक० । पंख विशेष । र० प्रि० १-७-२ । क० प्रि० १-७-२ ।

गहरवार कुल कलस—विशेषण । विशेष्य—वीरसिंह । गहरवार वंश का शिरोमणि । वी० च० ५-३-२ ।

गहवर [गह्वर]—सं० पुं० एक० । अन्धकारपूर्ण गुफा । रा० ९-२५-१ ।

गहि—क्रियापद । पकडना । र० प्रि० ३-६०-८ । ५-२-१ । ५-३४-६ । ८-४२-६ । ८-३७-२ । १२-९-१ । १४-२६-२ । रा० ७-६-२ । १०-३८-१ । १२-३७-१ । १३-२८-६ । १४-२०-१ । १५-२४-२ । १७-४०-१ । १७-४६-६ । १९-२८-१ । २०-८-१ । ३४-१०-१ । ३८-६-२ । ३८-७-१ ।

गहिए—क्रियापद । ग्रहण कीजिए । रा० १७-२७-२ ।

गहिवे --क्रियापद । ग्रहण कीजिए । रा० २०-१३-२ ।

गहिये—क्रियापद । पकडता है । र० प्रि० ४-१३-१ ।

गहियो—क्रियापद । ग्रहण किया है । रा० ११-१-२ । १७-२८-१ ।

गहिरवार—सं० पु० एक० । गहरवार वंश सूर्य वंश की एक शाखा मात्र है । वि० गी० १-१५-२ ।

गहिल्यावौ—सं० क्रि० । पकडकर लाओ । रा० ३८-६-१ ।

गहिहै—क्रियापद । पकडेगा । रा० १९-५-१ ।

गही—क्रियापद । पकड़ा । र० प्रि० ४-१३-१ । ६-५३-१ । ८-२४-२ । रा० २४-२८-२ । वी० च० २९-३६-२ ।

गहे—क्रियापद । पकड लिया । र० प्रि० ३-५४-२ । क० प्रि० ३-१२-२ । रा० २-८-१ । ७-१३-२ । ८-१७-१ । १५-३२-१ । १६-२१-२ । १९-११-१ । १९-२७-१ । १९-२९-१ । १९-२९-२ । २०-४३-१ । ३१-२६-१ । ३०-१०-२ ।

गहै—क्रियापद । गहे । रा० १५-९-२ । ३२-२३-२ । ३८-११-१ ।

गहो—क्रियापद । पकडो । र० प्रि० ७-१७-५ । रा० ७-१९-४७ । १५-२-१ । १६-१८-१ । १६-२९-३ । १८-१२-२ । २६ १-२ ।

गहोगी—क्रियापद । गहूँगी । क० प्रि० ३-११-२ ।

गह्यो—क्रियापद । पकड़ा । रा० १५-२४-१ । (रक्षा करो) ।

गाइ—(१) सं० स्त्री० एक० । गाय, गौ । क० प्रि० ८-१०- । ११-४३-१ । रा० १३-३८-४ । १६-२७-१ । ७-३-१ । (२) सं० स्त्री० बहु० । गाइनि, गायें । र० प्रि० ५-१८-३ । ६-४३-४ । ७-३०-४ । क० प्रि० ११-८०-१ । रा० १३-३६-४ । १६-२७-१ । २७-५-१ ।

गाइयो—क्रियापद । गाते हैं । रा० १६-३३-१ ।

गाइहै—क्रियापद । गावेगा । रा० १-१६-१ । गाई (१) सं० स्त्री० एक० । गाय । वी० च० २-१८ । जहाँ० २० । ७७ । १६२ । (२) क्रियापद । गाई जाती है । बतायी, कही । र० प्रि० १०-१०-१ । रा० ५-२४-३ । ६-१८-३ । १५-३६-३ । २०-३१-१ ।

गांउ—सं० पु० एक० । ग्राम, छोटी बस्ती । र० प्रि० ७-३०-४ । क० प्रि० ६-५६-१ । रा० १-३३-३ । वी० चं० ३-१७ । ३-३४ । ३-३५ । ३-४६ । ३-३ । ४-४० । ६-१६ । ८-४ । १०-४ । १०-७ । १०-११ । १०-२४ वि० गी० ३-२४-४ ।

गाठ—सं० स्त्री० बहु० । ग्रंथियाँ । र० प्रि० २-१५-४ । २-१६-२ ।

गाठि—स० स्त्री० एक० । रस्सी, धागा आदि का फंदा कसने या जोड़ने से पड़ी हुई गुत्थी । र० प्रि० ८-११-४ । १४-११-४ । छ० मा० २१-२१-१ ।

गाँठिनी—स० स्त्री० बहु० । गुत्थियाँ । क० प्रि० १०-३१-३ ।

गाँव—सं० पु० बहु० । अनेक ग्राम । छं० मा० १-४५-४ ।

गाइ—क्रियापद । (१) गाये हैं, गाते हैं । र० प्रि० ३-५६-४ । ८-४४-४ । (२) कहा गया है । रा० १३-३६-४ ।

गाइबो—क्रियापद । गाना । र० प्रि० ३-७-२ ।

गाइय—क्रियापद । गाते है, कहते हैं । रा० १-४८-१ ।

गाइयत—क्रियापद । गाया जाता है । र० प्रि० ११-९-२ ।

गाइयहु—क्रियापद । गाया जाता है । र० बा० १७-५ ।

गाऊँ—(१) सं० पु० एक० । ग्राम । रा० ५-२३-२ । १६-२७-१ । (२) क्रियापद । गाता हूँ । रा० १५-८-२ । वि० गी० ९-१०-३ ।

गाइयें—क्रियापद । गाइये । क० प्रि० ३-२८-८ ।

गाए—क्रियापद । गाय । र० प्रि० ५-२०-२ ७-१७-२ क० प्रि० ४-२०-४ । रा० ९-१०-२ । ९-१८-२ । ७-५२-३ । ११-४५-१ । २०-१४-२ ।

गाए हो—संयुक्त क्रिया । गाती है । र० प्रि० ७-१७-२ ।

गाज—[सं० गर्ज] सं० पु० एक० । बिजली । रा० ९-१०-१ ।

गाजत—क्रियापद । गरजते हैं । र० प्रि० ६-२६-२ । १०-२१ ३ । रा० ६-६-४ । १३-१६-१ । १९-५०-१ । २७-५-३ । २८-१४-१ । ३६-२७-२ ।

गाजति—क्रियापद। गरजती। र० प्रि० १०-२४-३।

गाजहीं—क्रियापद। गरजते। रा० ७-२-१। १६-३६-२।

गाजि—क्रियापद। गरजकर। रा० १८-११-१। १६-३६-१। २०-२६-२। ३५-१४-१।

गाजी—सं० पुं० एक०। योद्धा। वी० च० ६-१३। ६-३६।

गाजे—क्रियापद। गाये। रा० १८-२८-१।

गाजैं—क्रियापद। गरजते हैं। (ललकारते हैं)। रा० १-४१-२। ६-१३-१ १०-१-२। १०-१४-२। १०-१४-१। १०-१६-२। १३-७-३। १३-१२-१। १७-३६-२। १७-६७-२। २१-२७-१। ३४-४६-२। १७-५१-२।

गाढ—विशेषण। विशेष्य—तम सृष्टि। सघन, घनी। वी० च० ११-१४-१।

गाढो—विशेषण। विशेष्य—ताप। अति प्रचंड। क० प्रि० ८-४३-३।

गाढे—विशेषण। विशेष्य—गढ़। दुर्गम। जहाँ० ७-३।

गात—(१) सं० पु० एक०। शरीर, गात्र। र० प्रि० ३-२६-३। ३-४८ १। ५-७-१। ५-७-२। ५-६-३। ५-२६-३। ६-३२-१। ७-२४-१। ७-२६-१। ८-२६-२। १३-१२-३। क० प्रि० ४-११-२। ३-१०-३। ७-३८-४। ८-३८-२। ६-१०-१। ६-२७-१। ६-७-३। ६-३७-३। १०-१८-२। १०-२५-२। १२-१७-३। १४-२३-१। १६-१६-१। १६-४७-२। रा० ५-१०-१। ६-३१-४। १३-२-२। १३-२८-३। १३-३६-१ २०-३५-२। २०- ३-२। २३-१८-१। ३०-३६-१। ३६-१८-१। वी० च० २-१३। ५-१६। ७-१। ७-६। ११-४१। १५-८। १७-२८। २१-७। २२-३८। २६-१५। २८-२। २६-२०। ३१-२०। ३१-४८। जहाँ० ५६। छं० मा० १-१६-४। वि० गी० ३-१६-२। १०-८-१। (२) सं० पु० एक०। मन। क० प्रि० ११-५७-४।

गातनि—सं० पुं० बहु०। शरीरो को। वि० गी० ६-४-३। ६-५-२।

गातु—सं० पु० एक०। शरीर। र० प्रि० ७-१४-२।

गाथ—(१) सं० पुं० एक। अवैदिक स्तोत्र, श्लोक। क० प्रि० ३-२६-१। (२) स० स्त्री० एक० (यश, प्रशंसा)। र० प्रि० ७-३१-२। क० प्रि० ८-२४-१। रा० ३५-१०-१। (३) सं० पुं० एक०। समाचार। र० प्रि० ५-३-४। रा० ३३-७-१। ३५-१-२। (४) सं० पुं० एक०। गाथा, कहानी। वी० च० ४-५६। ५-१०। ५-१५। ५-१७ ७-१४। ८-२४। ८-३४। १०-५६। १४-४३। १४-४५। २६-१२। ३१-४३। ३१-६०। ३२-५। जहाँ० १२५। १७३। वि० गी० १-२८-२। १-३०-१ १-६-२। २-६-१ ७-४-२। ८-७-१। ६-१६-२। ११-१८-१। ११-३५-३। १४-६४-२। १६-५६-१। १७-११-२। २१-२३-२।

गाथा—(१) सं० स्त्री० एक० । प्राकृत भाषा का मात्रिक छंद । र० प्रि० १०-१०-१ । (२) कथा । छं० मा० २-१२-१ ।

गाथान—सं० स्त्री० बहु० । स्तुतियाँ । छं० मा० २-१६-३ ।

गाधि—सं० पु० एक० । राजा गाधि । (विश्वामित्र के पिता जो इन्द्र के अंश से उत्पन्न माने जाते हैं)। रा० १-२४-१ । ७-४१-४ । वि० गी० १३-१-२ । १३-२८-१ । १३-३२-२ । १३-४९-१ । १३-५०-१ । १३-५१-१ । १३-५२-२ । १३-६९-१ । १३-७८-२ । १३-७९-२ । १३-८०-२ । १३-८२-१ । १३-८६-२ । १३-८७-१ ।

गाधि के नंद—विशेषण । विशेष्य—तिहारे गुरु (विश्वामित्र) । गाधि मुनि का पुत्र (कान्यकुब्ज के चन्द्रवंशीय राजा कुशिक के पुत्र थे गाधि) । रा० ७-४१-४ ।

गान—सं० पु० एक० । गाना, गीत । र० प्रि० ६-६-५ । १०-२६-१ । क० प्रि० १४-२१-१ । रा० ६-४०-३ । ९-१८-१ । १९-३-२ । वि० गी० ९-११-१ ।

गानगुन—सं० पुं० एक० । गुणगान, प्रशंसा । रा० ९-१४-१ ।

गानहि—स० पु० एक० । गाना । छ० मा० १-६०-६ ।

गानु—सं० पुं० एक । गीत । क० प्रि० १५-४८-१ ।

गाय—सं० स्त्री० एक० । गौ । रा० ५-३१-२ । २३-१०-२ । २७-२-४ । वी० च० ३३-४४ । ३३-३५ । ३३-४७ । वि० गी० ८-३-२ । ९-२५-४ । १०-१४-२ ।

गायक—सं० पुं० एक० । गवैया । वी० च० ६-१८ ।

गायत्री—सं० स्त्री० एक० । एक मंत्र । वह वैदिक मंत्र जिसका उपदेश उपनयन संस्कार मे द्विज बालकों को दिया जाता है । वि० गी० १९-३८-१ ।

गायत्री संजुक्त—विशेषण । विशेष्य—विप्र, हरि भक्त । गायत्री से युक्त । गायत्री द्विजो का उपास्य एक दैविक मंत्र है । लौकिक छदशास्त्र मे जिस सम वृत्ति का प्रत्येक चरण ६ अक्षरो का आता है, उसे गायत्री कहा जाता है । लेकिन वास्तविक पक्ष मे वह मंत्र अपने गायको और पाठकों का वरण करने से भी उक्त नाम पाता है । बृहदारण्यक उपनिषद् मे गायत्री शब्द का अर्थ 'प्राण' है । इसलिए प्राण रक्षा करने वाले मंत्र को गायत्री कहते हैं । वि०गी० १९-३८-१ ।

गायो—क्रियापद । गाया है । र० प्रि० ३-४८-४ । क० प्रि० ५-१३-१ । रा० ६-२०-२ । ११-११-२ । १२-३०-२ । १२-६७-३ । २४-१२-१ ।

गारि—सं० स्त्री० एक० । गाली, निन्दा, अशिष्ट शब्द । र० प्रि० २-१५-२ । ६-३५-२ । रा० ३९-१-४ । वि० गी० १३ ७६-४ ।

गारिहु—सं० स्त्री० एक० । गाली । र० प्रि० २-१४-१ ।

गारी—सं० स्त्री० एक० । अशिष्ट शब्द । र० प्रि० ७-२३-४ । क० प्रि० ११-७६-४ । रा० ४-१९-३ । ६-२५-३ । ६-२९-२ ।

गरूड—सं० पु० एक० । गरुड पक्षी । वह मंत्र जिसका देव गरुड़ है। वि० गी० २१-२७ २ ।

गावई—क्रियापद । गाते हैं । रा०५-३६-१ । १६-६५-२ ।

गावत—क्रियापद । गाते हैं । र० प्रि० ५-११-८ । ८-४३-२ । रा० १४-३०-१ । १८-८-१ । २०-१३-१ । २७-२५-१ । २७-२६-२ । ३३-४-२ ।

गावति—क्रियापद । गाती है । र० प्रि० ५-३२-५ । १४-१६-१ । क० प्रि० १-५६-१ । रा० २२-१०-२ ।

गावन—क्रियापद । गाकर । गाने । रा० १८-३-१ ।

गावही—क्रियापद । गाने लगे । रा० १३-३३-४ ।

गावै क्रियापद । गाया करते है । रा० १-३५-४ । ८-१६-३ ।

गावैं—क्रियापद । गाते हैं । र० प्रि० ६-२६-२ । रा० १-१४-१ । १-१५-१ । २५-२४-२ । ६-१३-२ । १३-४८ २ । १३-१५-२ । २४-१६-२ । १३-६०-२ । २०-३७-१ । २२-३-२ । २६-२४-४ । ३०-२-४ । २६-१०-२ । ३०-१८-४ ।

गाहत—क्रियापद । पकडते । र० प्रि० १६-५-१ ।

गाहत ही—क्रियापद । पकडते ही (खरोच लगते ही) । र० प्रि० । ६-१०-२ ।

गाहा—सं० स्त्री० एक० । गाथा । छं०मा० २-१४-१ ।

गाहियो—क्रियापद । मथ डाला । रा० ३५-२७-१ ।

गिनै—क्रियापद । गिनते । रा० ३६-१५-२ ।

गिरत —क्रियापद । गिरता है । र० प्रि० ७-३२-५ । रा० ३२-११-२ । ३२ ३७-२ ।

गिरराज—सं० पु०एक० । बडा पर्वत । रा० ४-६-३ ।

गिरा--सं० स्त्री० एक० । (१) सरस्वती देवी । र० प्रि० १२-२६-३ । १४-१६-१ । १६-११-४ । क० प्रि० ६-६२-१ १५-४१-४ । १५-७६-२ । रा० १६-६-१ । ३२-२६-१ । (२) सं० स्त्री० एक० । सरस्वती नदी । रा० १६-६-१ । ३२-२६-१ । (३) सं० स्त्री० एक० । वाणी, बोली । रा० ३३-४६-१ । वी० च० २३-२६ । वि० गी० १३-१-१ । १४-४-२ ।

गिरापति—सं० पु० एक० । ब्रह्मा । वी० च० २७-२२ ।

गिरावत—क्रियापद । गिराता है । रा० २४-८-२ ।

गिरावन—सं० पु० एक० । सरस्वती वाटिका । रा० ३२-१५-२ ।

गिरि—[√गृ + कि] (१) सं० पु० एक० । पर्वत । र० प्रि० ५-२०-४ । क० प्रि० ४-१६-२ । ६-१६-१ । ६-६०-१ । ६-६१-३ । ६-७५-१ । ७-१-१ । ७-८-२ । ७-१६-१ । १४-५०-२ । १५-२४-२ । रा० ८-१५-१ । १५- १-२ । २७-१६-१ । ३६-६-१ । छं० मा० १-५१-४ । २-२३-५ । २-४०-४ । वी० च० १-४६ । ६-१५ । १२-११ । १८-१८ । २२-२६ । वि० गी० १६-६८-२ । २६-१२-१ । (२) सं० पुं० बहु० ।

पर्वत। क० प्रि० ८-२४-१। (३) मैनाक पर्वत। क० प्रि० ८-३१-१। (४) सं० पु० बहु०। सपूत पर्वत। हिमालय, उदयाचल, विन्ध्या, लोकालोक गंधमादन, कैलाश। क० प्रि० ११-१७-२। (५) क्रियापद। गिरा। क०प्रि० ६-३२-३। १४-१४-१। रा० ३८-१५-२।

गिरिगन—सं० पु० बहु०। पर्वत समूह। रा० १५-२८-१। २७-१६-२। ३०-१६-४।

गिरिग्राम—सं० पु० बहु०। पहाड़ो का समूह। रा० १७-३६-२।

गिरिजा—सं०स्त्री०एक०। पार्वती। हिमालय की कन्या। क० प्रि० १५-११-२। वि० गी० १०-२०-२।

गिरिजा को भरतार—सं० पुं० एक०। पार्वती के पति, महेश्वर। क० प्रि० १५-१११-२।

गिरिधर—सं० पु० एक०। श्री कृष्ण। र० प्रि० १२-२२-३।

गिरिधरदास—सं० पु० एक०। वीरसिंह का दरबारी। वी० च० ६-४३।

गिरधारी—सं० पु० एक०। श्री कृष्ण। र० प्रि० ६-५०-२।

गिरिधावनी—सं० स्त्री० एक०। पार्वती की वाटिका। रा० ३२-१५-३।

गिरिबर—सं० पु एक०। पवित्र पहाड़। रा० १३-७-१। १४-३८-२। १६-२६-१।

गिरिबेष—विशेषण। विशेष्य- षणमुख। क्रौंच पहाड़ को तोड़नेवाले। रा० ७-२६-२।

गिरिराज—सं० पु० एक०। बड़ा पहाड़, हिमालय। र० प्रि० १४-४८-१। रा० ४-६-३। ७-४८-३। १४-३७-३। १६-४३-२।

गिरिराज गंड—सं० पु० एक०। संदर नामक हाथी का गाल। रा० १३-३८-३।

गिरि शृङ्ग—सं० पु० एक०। गिरि शृंग (संस्कृत)। वि० गी० १८-२८-३।

गिरिसुन्दरी—सं० स्त्री० एक०। पहाड़ी कन्या। क० प्रि० १५-१०६-२।

गिरि—क्रियापद। गिरी, गिर पड़ी। रा० ३३-५२-२। ३५-३०-१। ३६-३४-४। ३६-२३-२। ३८-१६-३।

गिरीस—सं० पु० एक०। (१) बड़ा पर्वत, श्रेष्ठ पर्वत। रा० १२-१३-२। छं० मा० २-२६-८। वि० गी० ४-६-४। १८-४-२। १६-५४-२। (२) शिव जी। क० प्रि० ६-६२-१।

गिरीसनि—सं० पु० बहु०। अनेक पर्वत (संस्कृत)। वि० गी० १२-२०-२।

गिरे—क्रियापद। गिरे, गिरते हैं। रा० १४-३८-२।

गिरै—क्रियापद। गिरे, गिर गये। रा० १७-५२-१।

गिरो—क्रियापद। गिरा। रा० २५-२३-३। ३५-२३-२।

गिरयो—क्रियापद। गिरा, गिर गया। रा० १३-१-२। १७-२६-२। ३५-२०-२।

गी—सं० स्त्री० एक०। सरस्वती देवी। क० प्रि० १६-१०-१।

गीत—सं० पु० एक०। (१) भगवद्गीता। क० प्रि० ६-६१-१। (२) सं० पु० बहु०। गान। र० प्रि० ३-५-१। १०-

३४-४ । ५-२०-१ । क० प्रि० ८-२१-१ । ९-२६-३ । १०-१४-१ । १०-३४-४ । १६-५५-२ । (३) सं० पु० एक०। गाना । र० प्रि० ५-३-३ । ७-२३-४ । रा० ६-१३-२ । १३-५१-१ । १३-६०-२ । २६-१०-२ । क० प्रि० ११-७६-४ । १५-१००-२ । छ० मा० १-१२-५ । वि० गी० ५-११-१ । ६-५४-४ । १०-१७-४ । (४) सं० स्त्री० एक० । प्रशसा । क० प्रि० १४-२९-३ । १४-१५-४ । १४-५०-४ । (५) सं० पु० एक० । कथित वृत्तात । र० प्रि० २-८-२ । (६) सं० पु० एक० । विरुदावली । रा० २०-३-२ । ३०-१८-४ ।

गीतनि—सं० पु० बहु० । गीतो का । छ० मा० २-४६-५ ।

गीतविधान—सं० पु० एक० । गाना बनाना । रा० ९-६-१ ।

गीता—स० स्त्री० एक० । (१) कीर्ति, यश । १४-२७-४ । (२) स० स्त्री० एक० । विज्ञानगीता । वि० गी० १-७-२ । १७-३९-२ । १९-३५-१ ।

गीताज्ञान—सं० पु० एक० । विज्ञान गीता का ज्ञान । वि० गी० १-१२-२ ।

गीति—(१) सं० स्त्री० एक० । रागिनी । रा० २३-३१-१ । (२) सं० स्त्री० एक० । विज्ञान गीता । वि० गी० १०-१४-३ ।

गीतिका छंद—सं० पु० एक० । गीतिका के प्रत्येक चरण मे १४-१२ की यति से २६ मात्राएँ होती हैं । अत मे कमश लघु गुरु होते हैं । इस छंद के प्रत्येक चरण के तीसरे, दसवें, सत्रहवे और चौबीसवें मात्रा के स्थान पर लघु वर्ण होते हैं और अंत मे रगण (दीर्घ, लघु, दीर्घ) । छं०मा० १-६२-२ । ४-४८-६ ।

गीध—सं० पु० एक० । गिद्ध, जटायु । रा० १२-२३-१ । १२-२८-१ । १३-३६-१ । वी० च० ८-४९ ।

गीधौ—स० पु० एक० । जटायु पक्षी को भी । वि० गी० ११-२५-२ ।

गीरपति-सं० पु० एक० । वृहस्पति । जहाँ० ११-४ ।

ग्रीव—सं० स्त्री० एक० । गर्दन । वी० च० २२-७२ । ८-१७ । १७-५० । १७-५५ ।

गुंग—(१) सं० पु० एक० । गूंगा । वी०च० १४-७ । १९-४ । २६-२४ । ३०-४ । (२) सं० पु० एक० । गगा । वि० गी० १६-२९-२ ।

गुंजन—सं० पु० एक० । गुजार, कलरव । क० प्रि० ८-३४-४ । ११-५७-१ ।

गुच्छ—[√गु + क्विप् + क] सं० पु० एक० । गुलदस्ता । क० प्रि० ६-१३-१। रा० १९-३२-१ । गुच्छ फल, रीठा । क० प्रि० १५-२४-२ ।

गुजरात—सं० पु० एक० । गुजरात देश । जहाँ० ६३-६५-६६ ।

गुरु—विशेषण । (१) विशेष्य—मान । उत्तम कोटि का । र० प्रि० ९-२-१ (२) विशेष्य—ज्ञान गटी । भारी, बडी । र० प्रि० १-१-५ । ९-३-२ । क० प्रि० ६-१-२ । व० ११-१८-३ । ३५-२७-२ ।

गुण—सं० पु० एक० । (१) स्वभाव । वी० च० १-२८ । २-१५ । २-३२ । २-४० । ४-८ । ९-६ । ९-१० । १०-९ । ११-३४ । १६-१६ । २०-३१ । २१-१९ ।

२६-३४। ३१-७२। ३१-७४। ३१-८०। ३१-८८। ३२-३१। ३२-३५। ३२-४१। ३३-१४। ३३-४८। (२) सं० स्त्री० एक०। रस्सी। वी० च० २१-४। २६-३८।

गुणगीता—सं० स्त्री० बहु०। गुणगान। रा० ११-२७-२।

गुदराने—क्रियापद। निवेदन करने। रा० १५-१६-१। २-७-१।

गुदरैनी—सं० स्त्री० एक०। परीक्षा। रा० ३०-२१-४।

गुन—(१) सं० पु० एक०। स्वभाव, सद्गुण। क० प्रि० १-१७-२। १-४२-१। ३-२१-१। ५-१३-१। ६-१५-२। ६-२७-३। ८-१५-२। ६-८-१। १२-८-१। रा० १-३-४। ११-४४-४। ३-१०-४। ६-६-१। १२-८-१। १७-४७-२। २१-६१-१। २५-१६-१। २६-२३-४५। ३०-८-१। ३६-१-१। ३६-७-१। ३८-२-२। (२) सं० पु० बहु०। सद्गुण। र० प्रि० २-१-१। २-१-३। २-१८-२। ६-२५-२। ७-४-१। ८-१७-२। १३-११-१। क० प्रि० ६-३२-२। ६-७२-४। ७-३-३। ८-४४-२। १०-८-३। ११-२२-२। ११-२३-४। ११-३०-२। ११-६८-२। १३-२१-१। १४-१-१। १४-२४-१। १४-३६-१। १६-४६-२। (३) सं० पु० बहु०। पर राष्ट्र के साथ व्यवहार करने के छ अंग—संधि, विग्रह, आसन, यान, द्वैवी भाव, मैत्री। क० प्रि० ८-२०-१। (४) सं० पु० एक०। प्रत्यंचा, डोरी। र० प्रि० २८

६-१। १४-३५-२। क० प्रि० ६-२८-३। १४-११-१। (५) सं० पु० एक० निपुणता। र० प्रि० ५-२१-२। ८-३६-३। १२-२६-३। क० प्रि० ११-२-१। १५-५४-३। १६-६४-३। (६) सं० पु० बहु०। सत्व गुण, रजो गुण, तमो गुण। क०प्रि० ११-८-१। (७) सं०पु० एक०। (अ) प्रत्यंचा—रामचन्द्र, परशुराम तथा समर सिंह के पक्ष मे। (आ) सद्भाव—बलराम के पक्ष मे। क०प्रि० ११-३२-१। (८) सं० पुं० बहु० (अ) सद्भाव—रामचन्द्र, परशुराम तथा समरसिंह के पक्ष मे। (आ) सौन्दर्यादि लक्षण—बलराम के पक्ष मे। क० प्रि० ११-३२-३। (९) सं०पु०बहु० (अ) सद्भाव—कृष्ण, शिव तथा रघुनाथ के पक्ष मे। (आ) युद्धवीरता और दानवीरता—राजा अमरसिंह के पक्ष मे। (इ) वाद-विवाद—ब्रह्मा के पक्ष मे। क० प्रि० ११-३३-१। सं० पु० बहु०। बुरे गुण, अवगुण। र० प्रि० २-१५-३। ८-३१-१। (११) सं० पु० एक०। उपकार या एहसान। र० प्रि० १३-१५-४। (१२) विशेषण। विशेष्य—धूरजटी। समान गुणवाला। रा० ११-१८-४। (१३) सं०पु० एक० मलाई। रा० २५-६-२। (१४) सं० पु० एक०। स्वभाव, धर्म। रा० २४-१-१। २४-१२-१। छं० मा० १-५६-५। १-६०-३। १-६५-४। २-१०-१। २-२४-६। २-२४-३। वि० गी० १-१५-१। १-३६-४। ४४२-८। ६-६६-२। (१५) सं० पु० एक०। रस्सी। रा० २३-२६-१। (१६) सं० पु० एक०। गति। रा० २६-४५-१।

गुन-अधिकोपमा—सं० स्त्री० एक०। उपमालंकार का एक भेद–बडे से बडे या अच्छे से अच्छे उपमान ले और फिर उपमेय को उससे भी अधिक अच्छा वर्णन करें तो 'गुणाधिकोपमा' होता है। क० प्रि० १४-२४-२।

गुन कथन—सं० पु० एक०। गुणगान—शृंगार रस मे नायक की दस दशाओ मे से एक। र० प्रि० ८-९-१। ८-२०-२।

गुण गन—सं० पु० वहु०। गुणो का समूह। रा० ३०-२२-१।

गुनगनजुत—विशेषण। विशेष्य—वीरसिंह। गुणो से युक्त। वी० च० ३२-४१-२।

गुनगनप्रतिपालक—विशेषण। विशेष्य—दशरथ नृप के सुत। गुणी। सत्य गुण से युक्त। रा० ३६-८-१।

गुनगनवलित—विशेषण। विशेष्य—वाजि। समस्त शुभ चिह्नो से युक्त। क० प्रि० ८-३६-४। जहाँ०। ४४-४।

गुनगन-मंडित—विशेषण। विशेष्य-पडित। सद्‌गुणो के समूह से युक्त, गुणी। रा० ११-१७-३। १९-४१-३। १९-४९-३।

गुनगनमंडित पंडित—विशेषण। विशेष्य-सुक। वडे गुणी पंडित। रा० ११-१७-३।

गुनगन माला—विशेषण। विशेष्य-बाला। अतिगुणवनी, गानवाद्य मे अति निपुण। रा० ३०-२-१।

गुनगनमनिमाला—विशेषण। विशेष्य—जनक। सर्वगुण रूपी मणियो से युक्त। रा० ६-२७-१।

गुनगार्थाहि—सं०स्त्री०एक०। गुनगाथ। क० प्रि० ९-५-१।

गुनगान—सं० पु० एक०। ग्वालो का दिवाली गान। क० प्रि० १०-३१-३।

गुनगुन—स० पु० वहु०। शालिहोत्र शास्त्रानुसार समस्त शुभ चिह्न। क० प्रि० ८-२६-४। (२) सं० पु० एक०। चाल-चलन। र० प्रि० ८-२१-१। ८-२०-१। क० प्रि० १५-१४-१।

गुनग्राम—विशेषण। विशेष्य—पितु। अच्छे गुणो का भंडार, गुणी। रा० २१-४१-१। वी० च० ९-४३-१। ३२-३५-१। वि० गी० ९-३७-२। १६-४९-२।

गुनग्रामयुता—विशेषण। विशेष्य—राधा करनी। सद्‌गुणो से युक्त। छ० मा० २-४८-६।

गुनतरु—सं० पु० एक०। गुणस्वी वृक्ष। क० प्रि० ११-२२-२।

गुन-दोष—सं० पुं० वहु०। सद्‌गुण और अवगुण। क० प्रि० १२-८-१।

गुनन—स०पु० बहु०। सद्‌गुण। क० प्रि० १२-२१-१।

गुनन सो बलित—विशेषण। विशेष्य–गति। गुणो से युक्त। क० प्रि० १२-२१-१।

गुननि—(१) स० पु० बहु०। धर्म। क० प्रि० १-५३-१। ३-४५-१। १०-१४-१। १४-३४-१। (२) सं० पु०एक०। गुण। वि० गी० १४-३-२।

गुननिधि—विशेषण। विशेष्य—प्रतापरुद्र। गुणी। गुणो का निधि। क० प्रि० १-१७-२।

गुन पक्षी—सं० स्त्री० एक०। गुण रूपी पक्षी, सद्‌गुण रूपी पक्षी। "किधौ रति कीर्ति नैकि निकुज बसे गुन पक्षिन को जहाँ पुज"। रा० ३०-३९-१।

गुन भरे—विशेषण। विशेष्य—गुरगिगिरद। श्रेष्ठ गुणो से युक्त। वी० च० १७-२७-१।

गुनमनिवैरागर—विशेषण। विशेष्य—इन्द्रजोत। गुणो की खनि। क० प्रि० ४-२०-१।

गुनमानिये—क्रियापद। गिनती करूँ, कहूँ। रा० २२-२१-८।

गुन मानिहों—क्रियापद। कृतज्ञ हूँगा, एहसान मानूँगा। रा० १२-८-१।

गुनवंत—(१) विशेषण। विशेष्य—तम। सगुण रूप। रा० २०-१५-२। (२) विशेषण। विशेष्य—सद्गुणो से युक्त। र० बा० ६-३।

गुनवृद्ध—विशेषण। विशेष्य—बात। गुणवती। क० प्रि० १-४१-१। १-४२-१।

गुन संगा—सं० पु० एक०। गुणो के साथ। रा० ३०-२-१।

गुन सतपुरुष—स० पु० एक०। गुण रूपी सत्पुरुष। उदा० "गुन सतपुरुषनि करत छरी।" रा० २३-३२-१।

गुनसतपुरुषनि कारन—विशेषण। विशेष्य—पुरुषोत्तम की नारी (राजश्री)। गुणरूपी सत्पुरुषो के लिए दंडकारिणी साँटी। रा० २३-३२-१।

गुनसत्वं—स० पु० एक०। सत्व गुण। रा० २०-१८-१।

गुनसिंध—विशेषण। विशेष्य—जहाँगीर। गुनी। जहाँ० १६०-४।

गुनसुख सद्मिनी—विशेषण। विशेष्य—पद्मिनी। गुणो और सुखो का घर। वी० च० ८-१४-२।

गुनहिं—सं० पु० एक०। स्वभाव, चालचलन। क० प्रि० ११-२-१।

गुनाधिक—सं०पुं० एक०। अलकार विशेष (देखिए—गुनअधिकोपमा)। क० प्रि० १४-२-१। १४-२-२।

गुनाह—सं० पु० एक०। पाप। वी० च० ७-३१।

गुनि—(१) सं० स्त्री० एक०। तान। क० प्रि० ५-१२-१। (२) सं०स्त्री० एक०। गुणवाला व्यक्ति। रा० १-२४-४। छं० मा० १-७२-५। वि० गी० ८-३४-१। १३-३७-१। १४-३४-२। (३) विशेषण। विशेष्य—जगजन। गुणो से युक्त। रा० १-३५-२। वि० गी० १-१-१। १३-३७-१। १४-३५-२। (४) क्रियापद। हिसाब लगाकर, गणना करके, समझकर। क० प्रि० ५-१२-१। रा० १-२४-५। ७-२२-३। १२-३३-१। १३-८६-१। १७-४-१। १७-१७-१। २०-४६-२। २१-७-२। २६-१५-१। ३३-५६-१।

गुनि जन जन लीना—विशेषण। विशेष्य—वनवारी। (अ) संसार के गुणी जन जहाँ घूमते-फिरते हैं—पुष्प वाटिका के पक्ष मे। (आ) संसार भर के गुणियो के प्रेम मे लीन—वनवासिनी कन्या के पक्ष मे। रा० १-३५-२।

गुनिन—सं० पु० बहु०। सद्गुण। क० प्रि० ११-२२-२।

गुनियत—क्रियापद। समझता। र० प्रि० ५-१८-२।

गुनियत है—संयुक्त क्रिया। मानना चाहिए। र० प्रि० ५-१८-१।

गुनिये—क्रियापद । विचार कीजिए । रा० ३२-१९-२ ।

गुनियै—क्रियापद । विचार कीजिए, सोचिये । रा० २-१४-१ । ७-४५-१ । ३०-२१-२ ।

गुनी—विशेषण । विशेष्य—जीव । गुणवान । रा० २८-४-२ । जहाँ० ११४-१ । वि० गी० १-५-२ ।

गुनै—क्रियापद । विचार करता है । रा० १-१६-१ । ३९-३९-४ ।

गुनौ—क्रियापद । समझो । रा० ६-२७-३ । ११-१४-२ । १६-१९-२ । २१-११-२ ।

गुपाल—सं० पु० एक० । गोपाल, कृष्ण । र० प्रि० ३-३४-४ । ३-४९-४ । ३-५२-१ । ५-३७-२ । ७-६-३ । ८-१७-४ । १३-५-४ । १३-१४-४ । क० प्रि० १३-४१-४ । वि० गी० ६-२३ । १०-२१ । ११-५४ । १४-३४ । १५-२९ ।

गुपालहिं—सं० पु० एक० । श्रीकृष्ण । र० प्रि० ८-३४-४ । ९-५-१ । १४-१६-३ । क० प्रि० १५-१२६-२ ।

गुपालिका—सं० स्त्री० एक० । राधा । क० प्रि० १५-८६-२ ।

गुप्तोत्तर—सं० पु० एक० । गूढोत्तर—एक अर्थालंकार जिसमे किसी प्रश्न का उत्तर कोई गूढ अर्थ लिए हुए दिया जाता है । क० प्रि० १६-४६-२ ।

गुफा—सं० स्त्री० एक० । गुहा । वी० च० २४-५ ।

गुमान—सं० पु० एक० । घमंड । रा० १८-११-१ ।

गुमानी—सं० पु० बहु० । घमण्डी लोग । वि० गी० ५-१०-२ ।

गुर—(१) सं० पु० एक० । गुण । रा० ७-१६-४ । १७-२६-२ । (२) सं० पु० एक० । गुरु, उपाध्याय । क० प्रि० ६-५९-१ । वी० च० २९-२२ । ३१-५३ । ३३-५० । जहाँ० ७३ । १९२ । (३) सं० पु० एक० । गुरु ग्रह । वी० च० १८-१६ । (४) सं० पु० एक० । बृहस्पति । वी० च० ४-४३ । ३३-१५ । ३३-४० । (५) सं० पु० एक० । गुल, फूल । क० प्रि० १०-३२-३ । (६) विशेषण । विशेष्य—नरपति । बडे, श्रेष्ठ । वी० च० ३१-८८-१ ।

गुराई—सं० स्त्री० एक० । गोराई, गोरापन, सुन्दरता । र० प्रि० ७-२९-१ । क० प्रि० ५-१९-४ । १५-३०-२ १५-४९-४ । १५-८८ १ ।

गुरु—[√गृ (उपदेश करना) + कु] (१) सं० पु० एक० । पूज्य व्यक्ति । र०प्रि० १३-९-२ । क० प्रि० २-२०-१ । ८-७-२ । ११-२४-१ । ११-४३-२ । वि० गी० ६-३८-१ । ७-१०-२ । ६-२८-१ । १५-२-३ । १६-६२-३ । १६-६४-१ । १६-८७-१ । १९-८-१ । १९-९-१ । १९-४३-२ । (२) सं० पु० एक० । दो मात्राओ का अक्षर गुरु कहा जाता है । क० प्रि० ३-३२-२ । छं० मा० १-८-२ । १-१३-३ । १-१४-१ । १-१६-१ । १-१७-१ । १-१८-१ । १-१९-१ । १-२३-१ । १-२४-१ । १-२६-१ । १-२७-१ । १-२८-१ । १-२९-१ । १-३०-१ । १-३१-१ । १-३६-१ । १-३८-१ । १-४०-१ । १-४४-१ । १-४६-१ । १-४७-१ । १-

४८-१ । १-५०-१ । १-५३-१ । १-५५-१ । १-५८-१ । १-६०-१ । १-६३-१ । १-६४-१ । १-६५-१ । १-७४-१ । १-७८-१ । २-१२-१ । २-१२-२ । २-१४-२ । २-१६- । २-२४-१ । २-२६-७ । २-३०-१ । २-३०-२ । २-३५-१ । २-४२-१ । २-४७-१ । (३) सं० पु० एक० । सुरगुरु, वृहस्पति । क० प्रि० ६-३५-२ । वि० गी० ३-७-१ । ३-१५-२ । (४) सं० पुं० वहु० । गुरुजन, बुजुर्ग । क० प्रि० १६-७२-४ । रा० ३-१०-१ । ४-२४-१ । ६-२८-२ । २६-२०-१ । ३३-५५-२ । ५) सं० पुं० एक०। विश्वामित्र। रा० ७-१०-३ । (६) सं० पुं० एक० । मंत्र का उपदेश करने वाला । छं० मा० १-६७-५ । २-३१-३ । वि० गी० ८-१२-४ ।

गुरु अपराध—सं० पु० एक० । गुरु जी के अपराध, गुरु जी के प्रति किया गया अपचार । रा० ७-७-२ ।

गुरु गण—सं० पु० वहु० (१) शिक्षक लोग । (२) वृहस्पति । रा० १-४२-३ ।

गुरुगण अनन्त—विशेषण । विशेष्य—गणेश । असंख्य महान गुणवाले । र० प्रि० १-१-५ ।

गुरु गेहन—सं० पु० वहु० । गुरुओ के घर । वि० गी० १४-२०-३ ।

गुरुजन—स० पु० एक०। अपने से वड़े श्रद्धा के पात्र व्यक्ति । रा० २८-१५-२ ।

गुरु दक्षिणा—स० स्त्री० एक० । गुरु-दक्षिणा, भेंट (सं०)। वि०गी० ८-४६-२ ।

गुरु दण्ड—सं० पु० एक० । गुरु का दण्ड । (सं०) । वि० गी० । १४-२०-३ ।

गुरुदेव—सं०पु०एक० । गुरु, पूज्य व्यक्ति । क० प्रि० १६-७४-२ ।

गुरु दोष—सं० पु० ए० । गुरु के प्रति किया गया अन्याय या अपराध । रा० ७-२५-३ ।

गुरु नारी—स० स्त्री० एक० । गुरु पत्नी । रा० १३-४३-२ ।

गुरुमान—सं० पु० एक० । मान का एक भेद जिसमे नायिका नायक के शरीर पर दूसरी नायिका के संयोग-चिह्न देखकर अथवा नाम सुनकर रूठती है । र० प्रि० ६-३-२ । ६-६-२ ।

गुरु सुखकारी—विशेषण । विशेष्य—वश । गुरु को आनन्द पहुँचाने वाला, नम्र, विनयशील । रा० ७-१०-३ ।

गुरु स्त्री—सं० स्त्री० एक० । पूज्य व्यक्ति की पत्नी । रा० ३६-३२-१ ।

गुरु—(१) सं० पुं० एक० । शिक्षक, विद्या सिखानेवाला । क० प्रि० ११-६६-१ । (२) सं०पुं० एक० । पूज्य (स्यानिक) । वि० गी० १६-६३-१ । (३) सं० पुं० एक० । दो मात्राओ का वर्ण । छं० मा० १-५७-१ ।

गुरुन—सं० पुं० वहु० । पूज्य । वि० गी० ६-६८-२ ।

गुर्बिनी—विशेषण । विशेष्य—सीता । गर्भवती । रा० ३३-३४-२ । ३३-४०-१ ।

गुलम—सं० पुं० एक० । पुष्प विशेष । रा० १२-४१-२ ।

गुलाब—(फारसी) (१) सं० पुं० एक० । पुष्प विशेष । क० प्रि० ९-१६-२ ।

१२-२४-१ । वी० गी० २१-१० । २३-१६ । (२) सं० पुं० एक० । गुलाब जल । क० प्रि० ६-१७-२ ।

गुलाबति—(गुलाब + ति) । 'गुलाब' । सं०पु० एक० । पुष्प-विशेष । र० प्रि० ४-५-२ ।

गुलाम—सं० पु० एक० । क्रीतदास । वी० च० ५-६३ । ६-२१ । ६-२६ । ७-६२ । ६-६ । जहाँ० २०० ।

गुवारि—सं० स्त्री० एक० । ग्वालिन । र० प्रि० ६-५५-२ ।

गुवाल—सं० पु० एक० । ग्वाल । र० प्रि० ७-२६-४ ।

गुवालि—स० स्त्री० एक० । ग्वालिन । र० प्रि० १४-१० ४ ।

गुह—सं०पु० एक० । केवट, गुह (व्यक्ति-विशेष) । रा० १०-१३-२ ।

गुहा—सं० स्त्री बहु० । गुफाएँ । क० प्रि० १५-५२-१ ।

गुहा—स० स्त्री० एक० । गुफी (सं०) । वि० गी० १६-६८-२ ।

गुहि—क्रियापद । गुहा, गूँथा । र०प्रि० ४-६-१ । ८-३६-३ । १३-३-३ ।

गुहें—क्रियापद । गुहे । रा० १३-५१-१ ।

गूंग—विशेषण । विशेष्य भूपति । जो बोल न सके । मूक । रा० १८-१०-३ ।

गूजर—[गुर्जर] । स० पु० एक० । एक निम्न जाति । वी०च० ३-१८ । ६-३६ । ८-२० । १२-६ ।

गूढ—[स० √गुह (छिपाना) + क्त । सं० पु० एक० । भेद की बात । र० प्रि० २-१३-२ । वि० गी० ६-८-२ । १३-१-१ । १४-४-२ । विशेषण । विशेष्य—गिरा । अपना रूप छिपाए हुए । र० प्रि० २-१०-१ । ३-१६-३ । ३-६६-२ । ३-७१- । ६-५४-१ । ८-२३-३ । ८-४३-१ । १२-२२-२ । क प्रि० ११-८२-३ । १२-२ -१ । १५-१५-२ । २५-६२-१ । १६-४६-२ । १६-१५-१ । रा० २१-४१-१ । ३६-३०-२ । वी० च० १७-५१-१ । २६-२७-२ । वि०गी० २-१६-१ । ३-७-४ । ६-१०-२ । ७-२०-२ । ८-१७-१ । ९-८-२ । ११-३५-३ । १२-१-१ । १३-५३-४ । १४-४-२ । १६-१-२ । १६-४८-१ । १७-३३-२ ।

गूढ अगूढ—विशेषण । विशेष्य—प्रयोग । साधारण असाधारण । र०प्रि० १-२८-२ ।

गूढ गेह—सं० पु० एक० । यक्ष गृह । रा० १६-२४-१ ।

गूढवली—सं० स्त्री० एक० । गुप्त यज्ञस्थल । रा० २१-४१-१ ।

गृद्ध—स० पु० एक० । (१) गीध । रा० ३७-२-४ । (२) गीदड़ । वि० गी० १२-२०-४ । (३) विशेषण । विशेष्य—मराल । बड़े बड़े । रा० ३७-२-४ ।

गृह—[गृह् + क] । सं० पु० एक० । घर, मकान । र०प्रि० ३-६-१ । ६-६-५ । ७-८-१ । ७-१०-२ । ७-१७-४ । क० प्रि० ६-२६-१ । ७-१६-२ । रा० २६-२२-४ ३०-१६-३ । ३०-३२-१ । वी० च० २-१२ । २२-११ । २६-४४ । ३१-१६ । वि० गी० १७-३६-२ । १८-८७-१ ।

गृह अग्रज—सं० पु० एक० । अग्रज घर, श्रेष्ठ घर । रा० ३०-३२-१ ।

गृहकाज—सं० पुं० एक० । घर का काम । र० प्रि० ७-८-१ ।

गृहतिथि—सं० स्त्री० एक० । गृहस्थ । वी० च० २३-२२ । २३-२३ ।

गृहथित—विशेषण । विशेष्य—वनवारी । (अ) चारो ओर परिखा एवं चहार-दीवारी से सुरक्षित—पुष्प-वाटिका के पक्ष मे । (आ) घर मे रहने वाली (कन्या) —वनवासियो के पक्ष मे । रा० १-३४-३।

गृहदीप्ति—सं० स्त्री० एक० । गृह दीप्ति, घर की शोभा । रा० २२-८-२ । छं० मा० १-७३-४ ।

गृहदेवी— सं० स्त्री० एक० । गृहिणी । रा० २२-८-२ । छं० मा० १-७३-४ ।

गृह द्वार—सं० पु० एक० । घर का मार्ग । र० प्रि० ७-१०-२ ।

गृहस्थ—सं० पु० एक० । ब्रह्मचर्य पालने के बाद विवाह करके दूसरे आश्रम मे प्रवेश करके रहनेवाला । क० प्रि० १४-४७-१ ।

गृही—सं० पुं० एक० । गृहस्थी । वि० गी० २१-४६-२ ।

गेंडुआ—सं० पुं० एक० । तकिया । रा० १२-६२-२ ।

गेंद—सं० पु० एक० । कंदुक । रा० १६-२८-१ ।

गेरु—सं० स्त्री० एक० । खानो से निकलने-वाली एक तरह की मिट्टी जो रँगने और दवा के भी काम आती है । क० प्रि० ५-३२-२ ।

गेह—सं० पु० एक० । घर, मकान । र० प्रि० १२-२८-१ । क० प्रि० १-४६-१ । ६-२२-४ । १३-३३-१ । १६-६०-२ । रा० २२-१३-१ ।

गेहु—सं० पु० एक० । मकान, घर । र० प्रि० १२-२६-१ । कवि० प्रि० १२-२३-१ । १२-२३-३ । १५-२३-१ । छं० मा० १-६६-७ । वी० च० १९-२४ । २०-११ । २०-३० । जहाँ० ११७ ।

गैल—सं० स्त्री० एक० । रास्ता, गली । र० प्रि० १४-१७-३ । क० प्रि० ८-३५-१ । १६-३८-२ ।

गैलो—सं० स्त्री० एक० । गली, रास्ता । र० प्रि० १२-२७-३ ।

गो—(१) सं० स्त्री० एक० । सुरगौ, कामधेनु । क० प्रि० ६-६२-२ । (२) सं० स्त्री० एक० । गाय । क० प्रि० १६-९-१ । १६-४०-१ । (३) सं० पु० एक० । सूर्य । क०प्रि० १६-१०-१। (४) सं० पु० एक० । चन्द्र । क० प्रि० १६-१०-१ । (५) सं० पु० एक० । गोविंद । क० प्रि० १६-४०-१ ।

गोकुल—सं० पु० एक० । वृन्दावन के पास का एक गाँव जो नन्द का वास-स्थान था और जहाँ कृष्ण और बलराम का पालन-पोषण हुआ था । र० प्रि० २-८-४ । ३-७३-४ । ५-३०-१ । ६-४१-१ । ६-५६-१ । ७-३०-४ । ८-१४-२ । ८-२९-४ । क० प्रि० १०-२२-२ । १२-२४-४ ।

गोकुल—सं० पु०एक० । गायो का समूह । वी० च० १४-३४ । १५-२९ । जहाँ० १६ ।

गोकुलनाथ—सं० पुं० एक० । श्रीकृष्ण र० प्रि० ८-२९-४ ।

गोडवाना—सं० पुं० ए०। गोडवाना देश। जहाँ० ६६।

गोत—[√गो (पालन करना)+क] सं० पुं० एक०। कुल, आदि पुरुष के नाम से प्राप्त वंश-संज्ञा। क० प्रि० ३-२७-२।

गोल—सं० पुं० एक०। वि० गी० १३-२१-१।

गोतो—स० पुं० एक०। वंश। र० प्रि० ८ ३६-२।

गोत्र-सुता—सं० स्त्री० एक०। पार्वती। क० प्रि० ३-९-४।

गोद—सं० स्त्री० एक०। पहलू, अंक, अंचल। क० प्रि० १५-५४-२। वि० गी०। १२-३७-१।

गोदान—सं० पुं० एक०। गाय को दान के रूप मे देना। वि० गी० १-२९-१।

गोदानन—सं० पुं० बहु०। गायो का दान आदि। र० प्रि० १-१४-४।

गोदावरी—दक्षिण भारत की एक प्रधान नदी। वि० गी० ६-६-१। ६-२१-१।

गोध—[गो√धृ+क] स० स्त्री० एक। गोह, छिपकली की जाति का एक जहरीला जन्तु जो आकार मे नेवले के बराबर होता है। क० प्रि० ५-३४-१।

गोधनमूत—सं० पुं० ए०। गोमूत्र। क० प्रि० ५-१७-१।

गोनौ—सं० पुं० एक०। गौना, द्विरागमन। र० प्रि० ५-३२-४।

गोप—(१) स० पुं० एक०। ग्वाल। र० प्रि० ३-३८-१। क० प्रि० ११-८३-४। १६-३८-२। (२) सं० पु० बहु०। ग्वाल। र० प्रि० ५-३८-१। ६-२३-२। ६-५०-२। ६-५६-१। ७-३३-१।

गोप कुमारनि—सं० पुं० बहु०। ग्वाल। र० प्रि० ८-१९-२।

गोपकुमारी—सं० स्त्री० एक०। गोपिका, राधिका। र० प्रि० १४-१६-४।

गोपनि—सं० पु० बहु०। ग्वाल। र० प्रि० ५-३७-२।

गोपवधू—स० स्त्री० एक०। गोपिका। र० प्रि० ७-१२-४।

गोपसभा—सं० स्त्री० एक०। ब्रजवासियो की गोष्ठी। र० प्रि० ६-५६-१। क० प्रि० ११-४६-१।

गोपसुता—(१) स० स्त्री० एक०। गोप कन्या, राधिका। र० प्रि० ३-३८-१। ५-३७-२। (२) सं० स्त्री० बहु०। गोपिकाएँ। र० प्रि० ६-३२-४। (३) ग्वाल की पत्नी। छं० मा० २-४८-६। विशेषण। विशेष्य—राधा करनी। सुरज्ञान और पद्मावती का पुत्र एवं नारायण के अश से संभूत वृषभान गोप की पुत्री। छं० मा० २-४८-६।

गोपाचल—सं० पु० एक०। ग्वालियर के पास का एक पर्वत। क० प्रि० ७-३-४। वी० च० ३-१२। ३-६३। ४-७। ४-१२। ४-५५। ६-३५। ९-६। जहाँ० ६३-६६।

गोपाचल गढ—सं०पु० एक०। गढ-विशेष। क० प्रि० ३-८-२।

गोपाल—सं० पु० एक०। श्रीकृष्ण। र० प्रि० ५-३०-१। १५-५-३। क० प्रि० १०-२२-२। १६-१५-१। १६-३८-२।

गोपालहि—सं० पुं० एक० । गौ का पालन-पोषण करने वाला । कृष्ण । छं० मा० १-७६-६ ।

गोपिका—सं० स्त्री० एक० । ग्वालिन । र० प्रि० ३ ३४-४ । १४-३६-४ ।

गोपिकानि—सं० स्त्री० बहु० । ग्वालिने, गोपवधुएँ । क० प्रि० ६-५६-४ ।

गोपिकै—सं० स्त्री० एक० । ग्वालिन । र० प्रि० १४-१६-३ ।

गोपिन—स० स्त्री० बहु० । गोपिकाएँ । छं० मा० १-६७-६ । वि० गी० ६-३६-२ ।

गोपी—सं० स्त्री० एक० । गोपिका । र० प्रि० ५-३०-१ । ६-४४-१ । ६-५-१ । क० प्रि० १०-२२-२ । १६-३८-२ । १६-५२-१ ।

गोविंद—सं० पु० एक० । श्रीकृष्ण । वि० गी० ६-३६-२ ।

गोमति—स० स्त्री० एक० । नदी विशेष, मध्य देश की एक नदी जो बनारस और गाजीपुर जिले की सीमा पर गगा मे मिलती है। वि० गी० ६-६-१ । ६-२६-१ ।

गोरस—सं० पु० एक० । दही, मट्ठा । र० प्रि० ८-३८-४ । १४-२०-४ । १६-९-४ । क० प्रि० ३-३८-४ । १६-२४-१ ।

गोरी—[गौरी] (१) सं० स्त्री० एक० । सुन्दरी स्त्री । क० प्रि० १५-३०-२ । १५-३२-४ । १५-४१-४ । १५-७८-३ । (२) विशेषण । विशेष्य—ग्वाली । गौर वर्ण की । र० प्रि० १२-४-१ । क० प्रि० ९-२८-२ । २५-२२-३ । २५-२९-१ । २५-३०-२ । १५-३२-४ । १५-४२-४ । १५-७८-३ ।

गोरी गोरी—विशेषण । विशेष्य—व्रज की कुमारिका । अत्यन्त गोरी । र० प्रि० १४-३५-२ । क० प्रि० ९-२९-२ ।

गोरे—विशेषण । विशेष्य—कपोल । गोरे रंग के । क० प्रि० ९-१०-१ । १५-२७-१ । १५-५१-४ । वी० च० २२-६१-१ ।

गोरोचना—सं० स्त्री० एक० । एक सुगन्धित पदार्थ जिसकी उत्पत्ति गाय के पित्त से मानी जाती है । क० प्रि० ५-१७-१ । १५-८७-२ ।

गोल—सं० पु० एक० । मंडली, झुण्ड, भीड । क० प्रि० ३-१३-४ । (२) विशेषण । विशेष्य—कपोल । गोलाकार । क० प्रि० १५-३३-१ । १५-५१-४ । वी० च० २२-६६-१ ।

गोलकी—सं० पु० एक०। वह सन्दूक जिसमे कार्य-विशेष के लिए धन एकत्र किया जाय । काठ का गेद । क० प्रि० ३-१३-४ ।

गोला—स० पु० एक० । (१) गेद । वी० च० १९-११ । १९-१३ । १९-१८ । (२) गोली । वी०च० ५-६१ । ५-६२ ।

गोविन्द—[गो√विद् (लाभ) + श, नुम्] सं० पु० एक० । श्री कृष्ण । र० प्रि० ६-५६-१ । ७-३०-४ । क० प्रि० ११-४६-१ । १६-१९-१ । वी० च० ५-६ ।

गोविन्ददास—स० पुं० एक० । एक ब्राह्मण जो वीरसिंह के द्वारा रामशाह

के पास भेजा गया था । वी० च० ३-४१ । ३-४५ । ५-११ ।

गोविन्दु—सं० पुं० एक । विष्णु । वी० च० १५-७५ । २१-१६ ।

गोस—सं० पु० एक० । खरगोश, एक जतु जिसके कान बहुत लबे होते हैं । क० प्रि० ८-३४-२ ।

गोह—सं० पु० एक० । घर । छं० मा० १-२६-३ । वि० गी० १-६-४ । ८-११-१ । १३-३६-१ । १४-३६ १ । १४-३४-१ । १६-८१-१ । १७-६७-३ । २०-५६-२ ।

गौ—सं० स्त्री० एक० । गाय । वी० च० १३-४ । २२-१५ । २२-१६ । वि० गी० १-१७-१ ।

गौड—सं० पु० एक० । मायापुरी के एक प्रसिद्ध गौड । वि० ३-१८-१ ।

गौतम—सं० पु० एक० । ऋषि विशेष । वि० गी० १६-५५-४ ।

गौने सं० पु० एक० । द्विरागमन । र० प्रि० ३-६१-३ । ।

गौर—विशेषण । विशेष्य—लक्ष्मन । गौर वर्ण के । रा० ५-२६-१ । वि० गी० १६-४८-१ ।

गौर प्रधानि प्रभामनि—विशेषण। विशेष्य—अग । गौर वर्ण की प्रभा से युक्त । वी० च० २६-४-७ ।

गौरा—सं० स्त्री० एक० । पार्वती । र० प्रि० १६-११-४ । क० प्रि० १५-३२-२ ।

गौरा जू—सं० स्त्री० एक० । पार्वतीजी । र० प्रि० १२-८-१ ।

गौरि—सं० स्त्री० एक० । पार्वती । र० प्रि० १-१-२ । क० प्रि० ५-१६-४ । ६-६२-१ । ८-६८-२ । १०-४-१ । १०-२२-१ ।

गौरी—सं० स्त्री० एक० । (१) पार्वती । (२) राग-विशेष जो सन्ध्या को गाया जाता है । क० प्रि० १-४६-१ । छं० मा० २-१२-१ ।

गौरीनंद—विशेषण। विशेष्य-गणेश। पार्वती का पुत्र । र० प्रि० १-१-१ ।

गौरी संजुत—विशेषण । विशेष्य—चन्द्र-कला, नयनविचित्र । (अ) पार्वती से युक्त । (आ) गौरी राग से युक्त । क० प्रि० १-४६-१ ।

ग्यान—सं० पु० एक० । ज्ञान, सच्ची जान-कारी । र० प्रि० ५-२०-४ ।

ग्यारह—विशेषण । विशेष्य—सुत । दस और एक (११) । क० प्रि० १-२६-१ । १३-२२-२ ।

ग्रंथ—(१) सं० पुं० एक० । किताब । छं० मा० २-१६-४ । वी० च० ३३-३० । (२) सं० पु० बहु०—अनेक ग्रंथ । वि० गी० ८-१६-२ ।

ग्रंथि—सं० स्त्री० बहु० । ग्रथियाँ । वि० गी० २०-५२-२ ।

ग्रन्थ—सं० पु० एक० । प्रबन्ध-काव्य । र० प्रि० १४-४-१ । क० प्रि० ४-८-१ । १६-४५-२ ।

ग्रन्थनि—(१) सं० पु० बहु० । धर्म-ग्रन्थ । र० प्रि० ३-८५-१ । (२) सं० पुं० बहु० । काव्य । क० प्रि० ११-१३-१ ।

ग्रसि—क्रियापद । पकड़कर । रा० ३८-१८-२ ।

ग्रसी क्रियापद । ग्रसी हो, पकड़ी हुई सी । रा० १६-८-१ । २४-७-२ ।

ग्रसै—क्रियापद । लगे । रा० १०-८-१ । ११-२०-२ । २४-६-१ ।

ग्रह– सं० पुं० बहु० । नवग्रह—सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु । क० प्रि० ११-२०-२ । १६-६०-१ ।

ग्रहनि—सं० पुं० बहु० । नवग्रह । क० प्रि० १५-७३-१ ।

ग्रहनि को ईस—सं० पुं० एक० । सूर्य । क० प्रि० ६-६२-१ ।

ग्राम— १) सं० पुं० एक० । गाँव, छोटी बस्ती । क० प्रि० १-९-२ । १६-५५-४ । (२) सं० पुं० बहु० । ग्राम । क० प्रि० २-११-२ । २-२०-४ । छं० मा० १-५९-३ । वी० च० ५-७१ । ६-२० । ७-२९ । ७-६६ । १५-२ । २०-३२ । २३-३ । २३-३३ । २६-२२ । २६-२३ । ३१-६३ । ३१-९४ । ३२-४९ । ३२-५१ । वि० गी० ५-१८-२ । ७-१७-२ । १६-३०-१ । १८-८-१ ।

ग्रामसिंह—सं० पु० एक । कुत्ता । वी० च० २६-२२ ।

ग्राह—सं० पु० एक० । मगर । क० प्रि० ५-३४-१ ।

ग्राह गोध—सं० स्त्री० एक० । छिपकली । क० प्रि० ५-३४-१ ।

ग्रीव—[सं० √गृ (निगलना) + वन्]—सं० स्त्री० एक० । गर्दन । र० प्रि० ३-३४-३ । १०-८-४ । १२-९-१ । क० प्रि० ११-८-१ । १५-३३। वि० गी० १४-५-२ । १६-६७-२ ।

ग्रीव रेख—सं० स्त्री० बहु० । गले पर की लकीरें । क० प्रि० ११-८-१ ।

ग्रीवा—सं० स्त्री० एक० । गला । क० प्रि० १५-३२-४।

ग्रीष्म—[√ग्रस् + मक्] (१) सं० पु० एक० । गीष्म ऋतु । गरमी का मौसम । र० प्रि० ५-३७-१ । क० प्रि० ७-२९-२ । ७-३०-४ । (२) सं० पु० एक० । अग्नि । र० प्रि० ६-३४-१ ।

ग्रीष्म ऋतु—सं० पु० एक० । षट् ऋतुओ मे एक । वी० च० १५-४ । १५-१२ ।

ग्लानि—सं० स्त्री० एक० । एक संचारी भाव —थकान, मानसिक खेद, भूख, प्यास आदि के कारण प्राप्त शारीरिक कष्ट आदि से उत्पन्न शरीर के अंगो की शिथिलता, कार्य मे अनुत्साह, खिन्नता आदि क्लेशो को ग्लानि कहते हैं । र० प्रि० ६-१२-१ ।

ग्वारि—(१) सं० स्त्री० एक० । ग्वालो की जाति । र० प्रि० १४-२०-४ । (२) सं० स्त्री० एक० । ग्वालिन । र० प्रि० ९-११-२ । १४-१७-४ । क० प्रि० १२-१४-४ ।

ग्वाल—[गोपाल] सं० पु० एक० । ग्वाला, गोप । र० बा० १-४०-६ ।

ग्वालि—सं० स्त्री० एक० । गोपिका । र० प्रि० ५-२-१ । ७-२९-४ । ८-२६-४ । १२-४-४ ।

घ

घंटा— [घंट + अच्] सं० पु० एक०। कांसे के गोल पट्ट, जिसे मुँगरी से पीटकर पूजन मे या समय की सूचना के लिए बजाते हैं। क० प्रि० ६-७५-३। वी० च० १८-१। २२-१५। २६-२७। ३२-५३।

घंटिका—[घटा + कन् इत्व] सं० स्त्री० एक०। छोटी घटी। वी० च० १६-३२। २२-८६।

घूँघट—सं० पु०एक०। परदा। वी० च० ८-२७। ८-२८। १७-२८। ३२-१४।

घूघरु—सं० पु० एक०। पैरो का आभूषण। वी०च० ३२-५३।

घट—घडा। र० प्रि० ८-४१-४। क० प्रि० १५-२४-२। वी० च० २०-११। (२) सं० पु० एक०। शरीर, देह। क० प्रि० ७ २६-३। वी० च० १-३१। २-२०। वि० गी० ८-४-२। (३) स० पु० बहु०। घड़े। क० प्रि० ७-६-४।

घटत—क्रियापद। घटता है। र० प्रि० १४-२२-६।

घटना—(१) स० स्त्री० एक०। काम। क० प्रि० १२-१०-३। (२) सं० स्त्री० बहु० (अ) चेष्टाएँ—हेमन्त के पक्ष मे (आ) रचना प्रकृति—विरहिणी के पक्ष मे। क० प्रि० ७-२६-३।

घटा—स० स्त्री० एक०। जल भरे काले बादलो का समूह। र० प्रि० १४-२८-२। वी० च० ८-३६। ६-६१। १४-१५। १४-५४।

घटाइ—क्रियापद। घटाकर, छोटा करके। रा० १४-४-२।

घटिका—[√घट् + णिच् + ण्वुल्] सं० स्त्री०एक०। २४ मिनट का समय। छ० मा० १-६४-४। वी० च० १६-१८।

घटी—(१) स० स्त्री० एक०। घडी, क्षण। र० प्रि० ७-३६-३। (२) क्रियापद। घट गयी, कम हो गयी। र० प्रि० ८-११-१। छ० मा० ११-१८-२।

घटै—क्रियापद। घटता है, कम हो जाता है। र० प्रि० २-६४-४। १४-२८ २। रा० ५-२२-२।

घट्यो—क्रियापद। घट गया। कम हो गया। रा० २८-१४-१। ३८-१४-१।

घन—[√हन् + अच् घनादेश] (१) सं० पुं० एक। (अ) घनसार–श्वेतवर्ण का द्योतक। (आ) बादल–श्यामवर्ण का द्योतक। क० प्रि० ५-२६-१। (२) सं० पु० एक०। शरीर। क० प्रि० ६-२२-३। (३) सं० पु० एक०। लुहार का बडा हथौडा। र० प्रि० ११-४-४। क० प्रि० ११-३-४। (४) स० पु० बहु०। बादल। र० प्रि० ५-८-३। ६-२८-४। १०-२१-४। ११-४ ४। १३-११-२। १४-२८-२। १६-७-२। क० प्रि० ३-५०-१। ५-२१-२।

६-२७-२ । ७-३१-२ । ७-५-१ । ८-२८-२ । ८-४१-३ । १०-२८-१ । १३-२-४ । १४-४८-१ । १५-४१-३ । वी० च० । ८-९ । ८-३६ । ८-४७ । ११-६ । १२-१० । १२-११ । १३-२ । १६-८ । १८-१ । २२-५४ । २४-६ । २७-१२ । जहाँ० ३२ । वि० गी० २१-४५-४ । (५) विशेषण । विशेष्य—जुही । बहुत अधिक । रा० ३२-२४-२ । वी० च० । ८-४७-१ । १८-१-१ ।

घन दामिनी—सं०स्त्री० एक० । बादलो मे स्थित बिजली । क० प्रि० १५-४१-३ ।

घन माला—सं० स्त्री० एक० । काले बादलो की पंक्ति, मेघमाला । र० प्रि० ७-२८-१ ।

घननि—सं० पु० बहु० । बादल, मेघ । र० प्रि० १०-२७-१ । ११-१८-३ । क० प्रि० १६-२९-११ ।

घनढा—सं० पु० एक० । बादलों का रूप-रस—पानी । क० प्रि० ८-३३-१ ।

घनवाहन—सं० पु० एक० । इन्द्र । र० प्रि० १४-२६-३ ।

घनसार—सं० पु० एक० । कपूर । र० प्रि० ८-१८-३ । ८-२८-१ । ८-३९-१ । ९-८-३ । १०-२७-३ । १२ २४-३ । १४-५-१ । क० प्रि ३-५३-२ । ४-१०-१ । ५-५-२ । ६-३७-२ । ६-१७-१ । ६-३८-२ । ९-१६-३ । १३-२९-३ । वी च० ५-२४ । ८-१६ । २१-१ । २५-२३ । वि० गी० ८-१२-१ ।

घनसारमय—विशेषण । विशेष्य—वन । कर्पूर से युक्त । क० प्रि० ३-५३-२ ।

घनसारही के—विशेषण । विशेष्य—वन । कर्पूर से बने हुए । क० प्रि० ४-१०-१ ।

घनसारु—सं० पु० एक० । कपूर । र० प्रि० १-२५-२ ।

घनस्याम—(१) सं० पुं० एक० । श्याम-वर्णवाला श्रीकृष्ण । र० प्रि० ३-५२-२ । ५-१६-३ । ६-२६-४ । ७-१७-४ । ७-२८-१ । ८-२८-१ । ९-८-३ । ११-४-४ । ११-१८-३ । १२-५-१ । १४-२६-३ । १४-२२-४ । १४-३२-४ । क० प्रि० ३-४०-१ । ४-१०-१ । ८-४१-३ । वि० गी० १८-१६-१ । (२) सं० पु० एक० । (अ) रामचन्द्र जी । (आ) काला बादल । क० प्रि० १३-३-३ । (३) सं० पु० एक० । (अ) श्रीकृष्ण । (आ) काला बादल । र० प्रि० १२-१४-१ । क० प्रि० १५-६२-२ । (४) विशेषण । विशेष्य—घनत । खुद मले । रा० १३-८८-३ ।

घनाँ—विशेषण । विशेष्य—सुख । अत्यधिक । र० प्रि० ३-४८-३ । ८-२८-१ । क० प्रि० ९-१६-३ । १२-६-१ । रा० ३०-८-१ । ३०-९-१ । वी० च० ८-६०-१ । १३-१२-५ । २२-१-२ । वि० गी० १०-११-६ ।

घनाघन—(१) सं० पु० एक० । बरसने-वाला बादल । र० प्रि० ६-२६-४ । (२) स० पु० बहु० । बादल ही बादल । वि० गी० १०-६-१ ।

घनाघन वेष—सं० पु० एक० । बरसनेवाले बादल का रूप । र० प्रि० ६-२६-४ ।

घनी--विशेषण। विशेष्य—सुन्दर। अत्यधिक। र० प्रि० ९-८-३। र० प्रि० ९-८-३। क० प्रि० ६-१६-४। रा० ११-१९-१। १०-२३ २। ३१-११-१। ३२-१५-४। ३२-४५-२। छं० मा० १-५९-५। १-६६-३। वी० च० ४-७-७। ६-१४ २। ६-५१-२। ११-७-२। १३-६-६। १६-३२-२। १७-१७-२। १७-२२-१। १७-२५-२। १८-१८-२। २ -४-१। २०-३।-२। २२-४५-१। २२-५७-२। २३-२६-२।

घनु--सं० पु० एक०। बादल। क० प्रि० ५-१९-२।

घने— १) विशेषण। विशेष्य—कविराज। श्रेष्ठ। रा० ८-१-३। (२) विशेषण। विशेष्य–घन। बहुत अधिक। र० प्रि० ६-५०-२। ९-८-३। ११-४-४। १४-१०-१। १५-७-१। २-१०-१। क० प्रि० ६-७५ ३। ९-१६-१। १३-१६-२। रा० १३-१३-१। १३-१३-२। १२-१०-३। २१-४०-१। २६-१६-२। ३१-१५-२। ३२-४१-२। ३५-१५-१। वी० च० ४-१४-१। ५-३२-१। ५-३३-२। ४-४८-२। ९-५१-१। १०-३४-१। १०-४६-२। १८-२-१। १८-६-१। १८-१५ २। २०-३-२। २१-३२-१। २५-३-१। ३१-४-१। वि० गी० ९-५१-१। १४-६२-४। (३) विशेषण। विशेष्य—नैन। जल से भरे हुए। रा० ८-४१-३।

घनो—विशेषण। विशेष्य—कुन्तल। बहुत अधिक। रा० १३-२४-१। वी०च० १-३७-६। ३६-७-१। वि०गी० ११-६-२।

घर—सं० पु० एक०। गृह, मकान। र० प्रि० २-१५-२। ५-१५-१। ५-४-१। ५-१८-२। ६-२३-४। ७-१६-। ७-१७-२। ८-३४-४। १२-३-४। १२-१४-१। १३-११-३। १४-३२-४। क० प्रि० १-३१-१। ३-३८-२। ७-५-३। ७-२१-१। १०-३०-१। १०-३१-२। १०-३४-६। १०-३५-३। १३-१०-१। १६-६४-१। वी० च० १-४३। १-५५। ३-३०। ३-२। ३-५६। ३-६१। ३-६३। ४-३३। ५-३। ५-६। ५-७। ५-१०। ५-११। ५-१८। ५-१०१। ५-१०६। ६-१५। ६-२५। ६-५१। ६-५६। ७-१८। ७-३७। ७-४०। ८-२। ८-४७। ९-३६। ९-४१। ९-४८। १०-१०। १०-१४। १०-१५। ११-९। ११-४८। १३-३। १३-४। १३-५। १३-८। १३-९। १३-१५। १३-५१। १६-१६। १६-२१। १८-३। १८-१५। १८-१६। १८-१७। १९-२०। २२-२१। २६-३८। २८-१२। २८-२६। ३३-४३। (२) सं० पु० बहु०। गृह। र० प्रि० ५-३०-२। क० प्रि० १२-११-१। छं० मा० १-४६-३। २-४८-३। वि० गी० ८-४२-३। १०-१९-२। ११-१६-२। १३-२९-२। १३-३५-२। १३-३५-३। १३-४४ २। १३-४६-२। १४-४३-१। १५-५९-१। १६-३४-१। १६-७६-१। २१-५२-३। २१-५२-४। २१-५२-२। २१-५२-४। २१-५३-४। २१-५५-५। २१-५४-१।

घर-घर—सं० पु० एक०। प्रत्येक मकान।

र० प्रि० ३-४८-३ । ५-१८-१ । क० प्रि० १६-५-१ ।

घरनि—सं० स्त्री० ए० । गृहिणी, पत्नी । क० प्रि० ६-४४-४ ।

घरनि—सं० पु० बहु० । मकानों को । र० प्रि० । १-१३-५ । वि० गी० १६-३४-२ ।

घरनी—सं० स्त्री० एक० । (घरणी) वह सती जिसके पास घर हो, अर्थात् गृहिणी । वि० गी० १८-१३-६ ।

घरनीनि—सं० स्त्री० बहु० । गृहिणी । र० प्रि० ६-८-३ । १४-३२-४ ।

घरमार—सं० पु० एक० । घड़ी या घंटा, जिसे ठोककर समय सूचित किया जाता है । क० प्रि० ६-२२-३ ।

घरषे—क्रियापद । घर्षण करे । रा० ७-२२-३ ।

घरहो—सं० पु० एक० । मकान । वि० गी० ४-४२-३ ।

घरिक—सं० पुं० एक० । घरी या घड़ी, क्षण । र० प्रि० ६-८-३ । १२-१४-१ ।

घरियाल—सं० पुं० एक० । घंटा । क० प्रि० १६-६-४ ।

घरी—सं० स्त्री० एक० । (१) शुभ मुहूर्त । (२) घड़ा । (३) घड़ी । क० प्रि० १६-६४-६ ।

घरीक—सं० स्त्री० एक० । घड़ी, क्षण । र० प्रि० ७-२३-३ । क० प्रि० ६-१७ १ । ११-७६-३ ।

घरीनि—सं० स्त्री० बहु० । पल, क्षण । क० प्रि० ७-६-१ ।

घसाई—क्रियापद । घसी । र० प्रि० ५-३७ २ ।

घसि—क्रियापद । घिसकर । र० प्रि० ४-६-४ । रा० १६-१७-१२ ।

घसे—क्रियापद । घिसा । र० प्रि० ४-५-१ । क० प्रि० ६-१७-१ ।

घस्यो—क्रियापद । लगाया । र० प्रि० ८-१८-१ ।

घहराती—क्रियापद । घर-घर आवास करती । र० प्रि० १४-२८ २ ।

घाइ—सं० पु० एक० । क्षत, घाव । क० प्रि० २-१६-४ ।

घाइनि—सं० स्त्री० बहु० । आघात, प्रहार । क० प्रि० ६-२२-३ ।

घाउ—सं० पु० एक० । घाव । र० १-४०-५ ।

घाट—[सं० घट्ट] सं० पु० एक० । नाव आदि से उतरने के स्थान । वि० गी० ७-१८-४ ।

घार—सं० स्त्री० एक० । स्थिति, तौर-तरीका । र० प्रि० १४-३२-१ ।

घातक सकाम—विशेषण । विशेष्य—हर । काम को मारनेवाले । काम दहन का कारण पुराणों मे इस प्रकार वर्णित है—कभी ताडकासुर के भय से देवता काँप उठे । उन्होंने सोचा कि महादेव का पुत्र ही इस असुर का नाश कर सकता है । लेकिन तब महादेव सती को खोकर हिमालय पर कठोर तपस्या कर रहे थे । इसलिए इन्द्र ने कन्दर्प को बुलाकर महादेव का योग तोडने को कहा । तद-नुसार मदन ने हिमालय जाकर महादेव पर पुष्पवाण छोडा । पुष्पवाण के आघात से महादेव ने घबराकर क्रोध से

आँखे खोल दी । कन्दर्प उसी समय भस्म हो गए । पश्चात् पर्वतसुता से व्याह किया । क० प्रि० ११-४४-२१ ।

घातैं—सं० पु० एक० । स्वार्थ । र० प्रि० १०-१२-१ ।

घाम—सं० पु० एक० । धूप । र० प्रि० ५-२०-२ । क० प्रि० ६-३१-२ । ६-२६-१ । १२-६-१ । १५-१०-२ ।

घायक दरिद्र—विशेषण । विशेष्य गणेश । दरिद्रता को दूर करनेवाले । र० प्रि० १-१-४ ।

घालि—क्रियापद । तोडकर, नष्ट करके । रा० २७-१२-२ । 'मासो घालि'=मुझे बीच मे डालकर, मेरे माध्यम से । र० प्रि० ६-११-३ ।

घालिबे के नाते—सं० पु० एक० । तोडने के लिए या नाश करने के लिए । वि० गी० । १-२२-२ ।

घालिबो—क्रियापद । घालने, नष्ट करने । र० प्रि० ७-१७-७ ।

घिनात—क्रियापद । घृणा पैदा होती । र० प्रि० १४-३१-२ । १४-३२-८ ।

घिरि—क्रियापद । घेर कर । रा० ११-२७-३ ।

घिरी—क्रियापद । घेर लिया । रा० १५-४३-२ ।

घी—स० पु ०एक० । गलाया हुआ मक्खन । क० प्रि० १६-१५-१ ।

घुनघुने—विशेषण । विशेष्य-गट । घुनो से घुना हुआ । र० प्रि० १४-३२-१ ।

घुसत—क्रियापद । घुसते । र० प्रि० ७-१७-८ ।

घूँघट [सं० गुठ]—सं० पु० एक० । अवगुंठन, दुपट्टे या चादर का किनारा जो लज्जा के अवसर पर परदे के रूप मे मुण्ड पर खीच लिया जाता है । र० प्रि० ७-३३ ३ । ७-४१-८ । ८-४१-४ । छ भा० १-६६-५ ।

घुँघुरानि—सं० स्त्री० बहु० । घुँघुरू-चाँदी, पीतल आदि का गोल पोला दाना जिसके भीतर कंकडी भरी होती है और हिलने से बजता है । ऐसे दानो के बने हुए पावो मे पहनने के गहने । क० प्रि० ६-७५-३ ।

घूक—सं०पु०एक० । उल्लू पक्षी । क० प्रि० ७-२३-२ ।

घूघरी—सं० स्त्री० बहु० । घुँघरू । क० प्रि० १५-८६-१ ।

घूघू—सं० पु० एक० । घुघ्घू, उल्लू । र० प्रि० । ७-१७-४ । क० प्रि० ६-४४-४ ।

घूर्णा—सं० पु० एक० । छंद । छं० मा० २-१२ ।

घूमत—क्रियापद । घूमना । र० प्रि० ३-४४-३ । (झूमना) ।

घृत—सं पु० एक० । घी । क० प्रि० ६-४८-१ ।

घृतव्यंता—सं० स्त्री० एक० । नदी विशेष । वि० गी० ४-२०-२ ।

घृना—सं० स्त्री० एक० । नफरत । क० प्रि० ३-५६-१ ।

घेरि—क्रियापद । घेर कर । र० प्रि० १५-७-१ । रा० २७-६-३ । ३६-८-१ ।

घेरे—क्रियापद । घेर लिया । रा० १६-४३-८ ।

घेरो—क्रियापद । घेर लो । र० प्रि० १२-१४-१ ।

घेरु—(१) सं० पु० एक० । वदनामी, चुगली । र० प्रि० २-६-३ । १६-३-२ । क० प्रि० १३-४०-२ । (२) सं०-पु० एक० । (अ) घेर-घिराव । (आ) वदनामी । र० प्रि० ३-४८-२ ।

घोटक—सं० पु० एक० । घोडा । वी० च० ८-२६ । ८-५१ । १२-३३ । १४-५२ । २६-२० । २६-२८ ।

घोड़े—सं० पु० बहु० । अश्व । वि० गी० १३-४१-२ ।

घोत—क्रियापद । गरजता । र० प्रि० १५-७-१ ।

घोर—(१) सं० स्त्री० एक० । गरज-ध्वनि । र० प्रि० १०-२७-१ । क० प्रि० ७-३१-२ । १२-२६-१ । (२) विशेषण । विशेष्य-कर्म । वहुत भयंकर । र० प्रि० ८-१७-३ । १०-२७-१ । १४-२८-१ । क० प्रि० ६-४०-३ । १३-२-४ । रा० ३-६-१ । ६-२३-३ । १३-१३-१ । १३-१५-१ । १३-३६-४ । वी० च० ८-६-३ । ८-३८-१ । १०-६-२ । १०-४५-१ । १८-२५-२ । २४-६-२ । वि० गी० १०-७-१ । १६-१५-२ । (३) क्रियापद । घेरना, घिरा हुआ । रा० १५-४२-२ ।

घोरनि—सं० स्त्री० बहु० । ध्वनियाँ । र० प्रि० ११-१८-३ ।

घोरहि—सं० पुं० बहु० । बाजि । क० प्रि० ११-५६-५ ।

घोरि—(१) सं० स्त्री० एक० । घटा, वादलो की पंक्ति । क० प्रि० १३-२-४ । (२) क्रियापद । घोलकर । र० प्रि० ५-२८-५ । २-२८-१ । रा० ७-२१-२ ।

घोरे—सं० पुं० बहु० । घोड़े, तुरंग । क० प्रि० ६-५६-१ ।

घोलियत—क्रियापद । घोलते । र० प्रि० ६-८-६ ।

घोष—(१) सं० पुं० एक० । ध्वनि, घोषणा । र० प्रि० ३-४८-३ । ७-३२-२ । १४-२८-२ । वि० गी० १२-२-१ । (२) सं० पुं० एक० । अहीरों की बस्ती । वि० गी० ३-६-१ ।

घ्राननि—सं० पु० वहु० । सुगन्ध । क० प्रि० १३-१६-२ ।

च

चंक्रमन—[सं०, √क्रम (गति) यङ् द्वित्वादि + ल्युट – अन] सं०पु०एक० । भ्रमण, चक्कर । र० प्रि० ५-२०-२ । चक्रमन-क०प्रि० ६-७-२ । १५-२०-१ । ३०

चंचरी—[√चर् (गति) + यङ्, द्वित्वादि + टक् । सं० स्त्री० एक० । छंद विशेष—वर्णिक छंदो मे समवृत्त का एक भेद । उसका लक्षण रगण, सगण,

जगण, जगण, भगण, रगण के योग से बताया गया (संस्कृत)। छं० १-५९-२। १-६२-१। १-पृ० सं० ४४८-५८।

चंचरीक—सं० पु० एक०। भ्रमर। रा० ३-१९-१। ७-३-८। वी० १५-१९-२। १६-१५-२।

चंचल—[√चंच् (चलना) + अलच (१) सं० स्त्री० एक०। चचला, लक्ष्मी। वी० २५-१९-२।(१) पु०एक०। चंचल वर्णन। वर्णालंकार का भेद जिसमे अस्थिर चीजो का वर्णन होता है। क० प्रि० ६-१-२। (२ वि० विशेष्य-बनवारी) (१) श्लेष से-पुष्पवाटिका के पक्ष मे-जिसके पत्रादि डोलते हो। वनवासिनी कन्या के पक्ष मे—चपल स्वभाववाली। रा० । १-३४-१। चलायमान या डोलनेवाले। र० प्रि० २-६-१। क० प्रि० ६-१-२। रा० १-४९-१। वी० ६-१३-१। वि० गी० १०-५-२। (२) (विशेष्य-पावसकाल) चंचल हाथियो के लिए सुखदायक वि० गी० १०-५-२।

चंचलता—सं० स्त्री० एक०। अस्थिरता। रा०। २३-२३-२। वि० गी० १४-१७-१।

चंचला—सं० स्त्री० एक०। लक्ष्मी (दे० चंचल)। रा०। ३१-१-४।

चंचु—[√चंच् + उन्] । सं० स्त्री० एक०। चोच। रा० २७-१३-३।

चंड—[√चंड् + अच्] वि० (विशेष्य-कर) तीव्र, प्रचंड। क० प्रि० ७-३०-१। ११-६९-२।

चंडकर—सं० पुं० बहु०। श्लेष से-शवर के पक्ष मे—बलवान भुजाएँ। ग्रीष्म के पक्ष मे-तीव्र किरण वाले सूर्य। क० प्रि० ७-३०-१।

चंडकर वलित—वि० (विशेष्य-शवर समूह) श्लेष से-शवर समूह के पक्ष मे-बलवान भुजाओ से युक्त। ग्रीष्म के पक्ष मे-तीव्र किरणोवाले सूर्य से युक्त। क० प्रि० ७-३०-१।

चंडकर-मंडल—सं० पु० एक० सूर्य। क० प्रि० ११-६९-२।

चंडाल—[√चंड् + आलच्] सं० पु० एक०। चण्डाल। वि० गी० १३-३७-१। चंडार-वि० गी० ८-३-२। चंडारु-वि० गी०। १३-४६-१।

चंडिका—[सं० चंडिक + टाप्] सं० स्त्री० एक०। दुर्गा। रा० १-४-२। २०-५-२। आठ भैरवियो मे से एक-कालिका देवी। वी० १५-५-१। २६-५-१

चंडीसुर—सं० पुं० एक०। चंडीसुर (एक राक्षस) वि० गी० ६-४-१।

चंडु—सं० पुं० एक०। बन्दर। वी० २२-११-१। "शुभ ग्रह जोग नखत तिथि जान। सौमन चंडु सुनायो।"

चंद—[√चंद (आह्लादित करना) णिच् + अच्] १—सं० पुं० एक०। चन्द्रमा (सौर-मंडल का एक उपग्रह)। र० प्रि० १-१-२। ३-२३-१। ४-४-४। ५-२८-१। ७-३१-४। क० प्रि० ३-८-१। ३-२२-२। ६-४२-३। ७-३६-२। वी० २-३३-१। ज० ७, ३२, ३५, ४२। २—चंद नामक एक दरबारी। क० प्रि० १३-३७-२। ३-पुं० वहु०।

चन्द्रमा। क० प्रि० १५-७५-४। रा० ४-६-२। ६-५६-६। ६-२६-२। १३-१८-२। चंदजू (आदरार्थक प्रयोग) क० प्रि० ६-७-३। चंदहि–चंद्र को–वि० गी० १०-१०-२।

चंद-दुति—सं० स्त्री० एक०। चन्द्रमा की ज्योति, चाँदनी। र० प्रि० ५-२८-१।

चंदन—१–सं०पुं०एक० (चंद+न)। चंद, चंद्रमा। र० प्रि० ८-३१-१। २–लाल चंदन-र० प्रि० २-१२-१। ३–एक सुगंध-वृक्ष जिसकी लकड़ी एक प्रधान गंध द्रव्य है। उस लकडी को घिसकर बनाया हुआ लेप। र० प्रि० १-२५-२। ३-४४-२। ५-२७-२। ५-५६-२। क० प्रि० ४-१०-३। ४-११-१। ५-७-१। ७-३६-२। रा० १-२८-२। ३-२७-१। ४-९-२। ६-६०-३। छं० १-७२-५। वी० ५-२४। ज० १११। चंदनु—सुगंधित लेप। क० प्रि० १५-७८-१।

चंदन चर्चित—वि० (विशेष्य–अंग) चंदन के लेप से युक्त। वी० १६-९-२। १६-२३-२।

चंदन चित्र—सं० स्त्री० एक०। चन्दन से बनाई गई तिलक रचना। रा० ३२-३९-२।

चंदन चित्र तरंग–वि०(विशेष्य–सिंधुराज)। जिसके शरीर पर चंदन की चित्र-विचित्र तरंगें सी दिखलाई पडती हैं। रा० ३-२७-१ (प्राचीन काल मे) मलयगिरि से चंदन काट कर समुद्र की तरंगो द्वारा अन्यान्य देशों मे ले जाया जाता था।

चंदन तरंग तरंगित—वि० (विशेष्य–नागर, सागर) श्लेष से–– नागर के पक्ष मे-चंदन लेप से तरंगवत् चित्रित। सागर के पक्ष मे–चंदन वृक्षों से तरंगित। रा० १४-४१-४। उदा० "चंदन नीर तरंग तरंगित नागर कोइ कि सागर सो है।"

चंदन बात—सं० पुं०एक०। मलय पवन। रा० १२-५०-१।

चंदन भरे—वि० (विशेष्य–सुँडनि) चंदन से युक्त। वी० १६-११-१।

चंदन वृंद—सं०पुं० बहु०। चन्दनादि वृक्ष समूह। उनका लेप। क० प्रि० ९-१६-१।

चंदनहि—सं० पुं० एक० (चंदनहि) चंदन को, सुगंधित लेप को। क० प्रि० १२-१२-२।

चंद बधू—सं० स्त्री० एक०। बीर बहूटी; बरसाती लाल कीडा। वि० गी० १०-७-३।

चंदमुख–सं० पु० एक०। चंद्रबिंब र० प्रि० ३ २३-२ चन्द्रमा रूपी मुख। क० प्रि० १४-२१-४। १५-७५-४।

चंद मुख-रुख—सं० पु० एक०। चन्द्रमा रूपी चेहरे की शोभा। क० प्रि० १५-७५-४।

चंद मुखि—सं० स्त्री० एक०। चन्द्रमा जैसे मुखवाली। क० प्रि० ६-३६-१। चंदमुखी–र० प्रि० १२-१३-४। क० प्रि० ९-१४-१। १४-२१-४।

चंदयुत—वि० (विशेष्य–गनेस) चंद्रमा से युक्त (ललाट पर चन्द्रमा धारण करने वाले)। र० प्रि० १-१-२।